[illegible]

महर्षिवेदव्यासप्रणीतम्

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

(सचित्र 'तत्त्वप्रबोधिनी' सरल-हिन्दी-टीका-सहितम्)

प्रथमः खण्डः

[illegible]



दयालोक प्रकाशन संस्थान
[illegible]

।। श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ।।

महर्षिवेदव्यासप्रणीतम्

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

(सचित्रं 'तत्त्वप्रबोधिनी' सरल-हिन्दी-टीका-सहितम्)

षष्ठः खण्डः

दशमः स्कन्धः पूर्वार्धः



टीकाकर्त्री

श्रीमती दयाकान्ति देवी

धर्मपत्नी—श्रीलोकमणिलाल

दयालोक प्रकाशन संस्थान

१४, पन्नालाल मार्ग, इलाहाबाद, २११००२

प्रकाशक—दयालोक प्रकाशन संस्थान, १४, पन्नालाल मार्ग, इलाहाबाद

विक्रमसंवत् २०४६, प्रथम संस्करण १०००



प्राप्ति—स्थान
दयालोक प्रकाशन संस्थान
१४, पन्नालाल मार्ग, इलाहाबाद—२११००२



मूल्य : ४०० रूपये मात्र



मुद्रक—
शाकुन्तल मुद्रणालय
३४, बलराम हाउस इलाहाबाद

नम्र निवेदन

यह हमारे संस्करण का छठा खंड श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध का पूर्वार्ध है। दशम स्कन्ध सब से महत्त्वपूर्ण माना जाता है। उसमें भी इसका पूर्वार्ध। पूर्वार्ध में ही भगवान् श्रीकृष्ण का पूर्णावतारत्व प्रकट किया गया है। जिसका तत्त्व न जानने के कारण कतिपय लोग भगवान् श्रीकृष्ण के चरित्र पर आक्षेप करते हैं। अतः इस पर थोड़ा प्रकाश डालना आवश्यक है।

श्रीकृष्ण पूर्णावतार थे (श्रीमद्भागवत १।३।१३) के अनुसार श्रीकृष्ण परब्रह्म के बीसवें अवतार थे, किन्तु "एते चांशकला राजन् कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्।" इस भागवत सिद्धान्त के प्रमाण से वे पूर्णावतार थे। पर ब्रह्म के स्वभाव का विरुद्ध धर्माश्रयत्व दिखलाने वाली श्रुतियाँ कहती हैं—'अणोरणीयान् महतो महीयान्।' 'अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः' इत्यादि। अर्थात् परब्रह्म सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है और महान् से भी महान् है। उसके हाथ-पैर नहीं है किन्तु वह सब को पकड़ लेता है और बहुत तेजी से दौड़ता है। उसकी आँखें नहीं हैं, पर वह सब को देखता है। उसके कान नहीं हैं, पर सब कुछ सुनता है। वह सब को जानता है, पर उसे कोई नहीं जानता। इत्यादि।

अब भगवान् श्रीकृष्ण के विरुद्ध धर्मों पर दृष्टिपात करें—कहाँ तो उनकी असमर्थता और अंगों की कोमलता इतनी थी कि जब वे बछड़े की पूँछ पकड़ते तो बछड़ा उन्हें कहीं से कहीं खींच ले जाता। यथा 'वत्सैरितस्तत उभावभिकृष्यमाणौ (श्रीमद्भागवत १०।८।२४) और कहाँ उनमें सामर्थ्य इतनी थी कि अनायास गोवर्धन पर्वत को उठा लिया। वे हलके इतने थे कि यशोदा जी उन्हें गोद में लेकर दूध पिलाती थी, पर उसी शैशव में भारी इतने हुए कि पूतना और तृणावर्त राक्षस को भी ले पड़े। उन्होंने ब्रह्मा जी को उसी क्षण अपने ही स्वरूप में एकत्व तथा अनेकत्व, द्विभुजत्व तथा चतुर्भुजत्व दिखलाया। इस प्रकार विरुद्धधर्माश्रयत्व जो परब्रह्म का ही चिह्न है भगवान् श्रीकृष्ण में कूट कूट कर भरा था।

परब्रह्म अपनी इच्छा से अपने में ही प्रपंच का प्रादुर्भाव करते हैं, यह ब्रह्म की पूर्ण शक्ति है। सो भगवान् कृष्ण ने भी दो बार यशोदा को अपने मुखारविन्द में तीनों लोक का दर्शन कराया। (दे० भागवत १०।७।३५–३६)। इत्यादि उदाहरणों एवं प्रमाणों से उनका पूर्णावतारत्व सिद्ध होता है।

उनकी रासलीला के सम्बन्ध में कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि यदि श्रीकृष्ण भगवान् के अवतार थे तो भगवान् सत्यमूर्ति एवं न्यायमूर्ति माने गये हैं। तब पर-नारी गोपियों को उन्होंने रासलीला के लिये कैसे प्रेरित किया? पर-नारियों के साथ विहार करना साक्षात् अन्याय है।

इसका उत्तर यह है कि भगवान् श्रीकृष्ण ने गोपियों को रासलीला के लिए प्रेरित नहीं किया, प्रत्युत "रजन्येषा घोररूपा" इत्यादि श्लोकों में उन्होंने रासलीला न रचने के लिए बहुत मना किया। परन्तु जब वेद-ऋचाओं (श्रुतियों) की अवतार एवं परमात्मा श्रीकृष्ण में परम अनुरक्त (जीवात्मा परमात्मा में अनुरक्त हो यह जीव का परम लक्ष्य माना गया है) गोपियों ने उनकी एक भी न सुनी तब भक्तवश्य भगवान् ने रासलीला में सम्मिलित हो नृत्य, गीत आदि किये।

"कामं क्रोधं भयं स्नेहमैक्यं सौहृदमेव च। नित्यं हरौ विदधतो यान्ति तन्मयतां हि ते" अर्थात् काम, क्रोध, भय, स्नेह, ऐक्य, बन्धुत्व—इनमें से चाहे किसी भाव से भगवान् से जो पूर्ण प्रेम करता है वह अन्त में भगवत् स्वरूप को प्राप्त करता है। भागवत के ही इस श्लोक के प्रमाण से यदि गोपियों ने काम भाव से ही भगवान् से प्रेम किया तो क्या क्षति है। पुनः भागवत के ही अनुसार सत्य संकल्प श्रीकृष्ण भगवान् ने अनुरागिणी गोपियों से घिरे रहने पर भी अपने में ही वीर्य को रोक कर सारी चाँदनी रात (जो एक वर्ष की हुई थी) प्रेम की बातों में ही बिता डाली-- "एवं शशांकांशुविराजिता निशाः स सत्यकामोऽनुरताबलागणः। सिषेव आत्मन्यवरुद्धसौरतः सर्वाः शरत्काव्यकथारसाश्रयः।" (भागवत दशम स्कन्ध)। एक और बात है—जिस समय भगवान् ने रासलीला की थी, उस समय उनकी बाल्यावस्था सात वर्ष की ही थी—"यः सप्तहायनो बालः"—भागवत दशम स्कन्ध। इस दृष्टि से उनकी रासलीला बाललीला ही कही जायेगी। भले उनके भगवदीय गुण के कारण गोपियों को रासलीला में परितृप्ति मिल गई हो। अतः श्रीकृष्ण और उनके चरित्र पर अंगुली उठाना सूर्य पर थूकने के समान ही है।

अन्त में मैं इस संस्करण के प्रकाशन में सहायता करने वाले अपने आराध्य पतिदेव श्री लोकमणि लाल गुप्त जी तथा आचार्य श्री तारिणीश झा को कृतज्ञता पूर्वक धन्यवाद देना अपना कर्तव्य मानती हूँ। भागवत महापुराण के मुद्रक श्री उपेन्द्र त्रिपाठी को भी धन्यवाद देती हूँ।

कागज आदि के मूल्य में अत्यधिक वृद्धि होने के कारण विवश होकर इस खण्ड का मूल्य बढ़ाना पड़ा है।

गंगा दशहरा
सं० २०४९, कालि सं० ५०९३
श्रीकृष्ण संवत् ५११८
सन् १९९२ ई०

निवेदिका
दयाकान्ति देवी

श्रीहरि: शरणम्

विषय-सूची

१. नम्र निवेदन — २. विषय-सूची

दशमः स्कन्धः

(पूर्वार्धः)

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य

दशमः स्कन्धः

पूर्वार्धः





यद् भक्तिं न विना मुक्तिर्यः सेव्यः सर्वयोगिनाम् ।
तं वन्दे परमानन्दघनं श्रीनन्दनन्दनम् ॥


RADHA KRISHNA (OM)
S. S. BRIJBASI & SONS

श्रीगणेशाय नमः

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

प्रथमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

राजोवाच— कथितो वंशविस्तारो भवता सोमसूर्ययोः ।
राज्ञां चोभयोवंश्यानां चरितं परमाद्भुतम् ॥१॥

पदच्छेद— कथितः वंश विस्तारः भवता सोम सूर्ययोः ।
राज्ञाम् च उभय वंश्यानाम् चरितम् परम अद्भुतम् ॥

शब्दार्थ—

कथितः	१२.	वर्णन किया	राज्ञाम्	९.	राजाओं के
वंश	५.	वंश के	च	३.	और
विस्तारः	६.	विस्तार (तथा)	उभय	७.	दोनों
भवता	१.	आपने	वंश्यानाम्	८.	वंशों के
सोम	२.	चन्द्र	चरितम्	११.	चरित का
सूर्ययोः ।	४.	सूर्य (दोनों)	परम अद्भुतम् ॥	१०.	अत्यन्त अद्भुत

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! आपने चन्द्र और सूर्य दोनों वंश के विस्तार तथा दोनों वंश के राजाओं के अत्यन्त अद्भुत चरित का वर्णन किया ॥

द्वितीयः श्लोकः

यदोश्च धर्मशीलस्य नितरां मुनिसत्तम ।
तत्रांशेनावतीर्णस्य विष्णोर्वीर्याणि शंस नः ॥२॥

पदच्छेद— यदोः च धर्मशीलस्य नितराम् मुनि सत्तम ।
तत्र अंशेन अवतीर्णस्य विष्णोः वीर्याणि शंस नः ॥

शब्दार्थ—

यदोः	७.	यदुवंश का (वर्णन किया)	तत्र	८.	उसी वंश में
च	३.	और	अंशेन	९.	अपने अंश बलराम जी के साथ
धर्म	६.	धर्म परायण	अवतीर्णस्य	१०.	अवतीर्ण हुये
शीलस्य	४.	आपने स्वभाव से ही	विष्णोः	११.	भगवान् श्रीकृष्ण के
नितराम्	५.	अत्यन्त	वीर्याणि	१२.	परम पवित्र चरित्र
मुनि	१.	हे मुनि	शंस	१४.	सुनाइये
सत्तम ।	२.	श्रेष्ठ	नः ॥	१३.	हमें

श्लोकार्थ—हे मुनि श्रेष्ठ ! आपने स्वभाव से ही धर्मपरायण यदुवंश का वर्णन किया । उसी वंश में अपने अंश बलराम जी के साथ अवतीर्ण हुये भगवान् श्रीकृष्ण के परम पवित्र चरित्र हमें सुनाइये ॥

तृतीयः श्लोकः

अवतीर्य यदोर्वंशे भगवान् भूतभावनः ।
कृतवान् यानि विश्वात्मा तानि नो वद विस्तरात् ॥३॥

पदच्छेद— अवतीर्य यदोः वंशे भगवान् भूत भावनः ।
कृतवान् यानि विश्वात्मा तानि नः वद विस्तरात् ॥

शब्दार्थ—

अवतीर्य	७.	अवतार लेकर	कृतवान्	९.	कर्म किये
यदोः	५.	यदु के	यानि	८.	जो
वंशे	६.	वंश में	विश्वात्मा	३.	सर्वात्मा
भगवान्	४.	भगवान् श्रीकृष्ण ने	तानि नः	१०.	उनका हम लोगों को
भूत	१.	समस्त प्राणियों के	वद	१२.	श्रवण कराइये
भावनः ।	२.	जीवनदाता (एवम्)	विस्तरात् ॥	११.	विस्तार से

श्लोकार्थ—समस्त प्राणियों के जीवनदाता एवम् सर्वात्मा भगवान् श्रीकृष्ण ने यदु के वंश में अवतार लेकर जो कर्म किये उनका हम लोगों को विस्तार से श्रवण कराइये ॥

चतुर्थः श्लोकः

निवृत्ततर्षैरुपगीयमानाद् भवौषधाच्छ्रोत्रमनोऽभिरामात् ।
क उत्तमश्लोकगुणानुवादात् पुमान् विरज्येत विना पशुघ्नात् ॥४॥

पदच्छेद— निवृत्त तर्षैः उपगीयमानात् भव औषधात् श्रोत्र मनः अभिरामात् ।
कः उत्तम श्लोक गुण अनुवादात् पुमान् विरज्येत विना पशुघ्नात् ॥

शब्दार्थ—

निवृत्त	२.	रहित (मुमुक्षु जनों द्वारा)	कः	१४.	कौन
तर्षैः	१.	तृष्णा की प्यास से	उत्तम श्लोक	९.	भगवान् श्रीकृष्ण के
उपगीयमानात्	३.	गाये जाने वाले	गुण	१०.	गुणों का
भव	४.	भवरोग की	अनुवादात्	११.	वर्णन करने से
औषधात्	५.	ओषधि (तथा)	पुमान्	१५.	मनुष्य
श्रोत्र	६.	श्रवण (और)	विरज्येत	१६.	विमुख हो सकता है
मनः	७.	मन को	विना	१३.	अतिरिक्त
अभिरामात् ।	८.	आह्लाद देने वाले	पशुघ्नात् ॥	१२.	पशुघाती या आत्मघाती के

श्लोकार्थ—तृष्णा की प्यास से रहित मुमुक्षुजनों द्वारा गाये जाने वाले, भवरोग की ओषधि, श्रवण और मन को आह्लाद देने वाले भगवान् श्रीकृष्ण के गुणों का वर्णन करने से पशुघाती या आत्मघाती के अतिरिक्त कौन मनुष्य विमुख हो सकता है ॥

पञ्चमः श्लोकः

पितामहा मे समरेऽमरञ्जयैर्देवव्रताद्यातिरथैस्तिमिङ्गिलैः ।
दुरत्ययं कौरवसैन्यसागरं कृत्वातरन् वत्सपदं स्म यत्प्लवाः ॥५॥

पदच्छेद— पितामहाः मे समरे अमरञ्जयैः देवव्रत आद्यि अतिरथैः तिमिङ्गिलैः ।
दुरत्ययम् कौरव सैन्य सागरम् कृत्व अतरत् वत्स पदम् स्म यत् प्लवाः ॥

शब्दार्थ—

पितामह	८.	दादा पाण्डव	दुरत्ययम्	१०.	अपार
मे	७.	मेरे	कौरव सैन्य	९.	कौरव सेनारूपी
समरे	१.	कुरुक्षेत्र के युद्ध में	सागरम्	११.	सागर को
अमरञ्जयैः	२.	देवताओं को जीत लेने वाले	कृत्वा अतरत्	१५.	मानकर पार कर गये
देवव्रत	३.	भीष्म पितामह	वत्स पदम्	१४.	बछड़े के खुर के समान
आद्यि	४.	आदि	स्म	१६.	थे
अतिरथैः	६.	अतिरथियों से	यत्	१२.	जिन श्रीकृष्ण के
तिमिङ्गिलैः ।	५.	तिमिङ्गिल मच्छों की भाँति	प्लवाः ॥	१३.	चरणों की नौका के सहारे

श्लोकार्थ—कुरुक्षेत्र के युद्ध में देवताओं को जीत लेने वाले भीष्म पितामह आदि तिमिङ्गिल मच्छों की भाँति अतिरथियों से मेरे दादा पाण्डव कौरव सेनारूपी अपार सागर को जिन श्रीकृष्ण के चरणों की नौका के सहारे बछड़े के खुर के समान मानकर पार कर गये थे ॥

षष्ठः श्लोकः

द्रौण्यस्त्रविप्लुष्टमिदं मदङ्गं सन्तानबीजं कुरुपाण्डवानाम् ।
जुगोप कुक्षिं गत आत्तचक्रो मातुश्च मे यः शरणं गतायाः ॥६॥

पदच्छेद— द्रौणि अस्त्र विप्लुष्टम् इदम् मत् अङ्गम् सन्तान बीजम् कुरु पाण्डवानाम् ।
जुगोप कुक्षिम् गतः आत्तचक्रः मातुः च मे यः शरणम् गतायाः ॥

शब्दार्थ—

द्रौणि	८.	अश्वत्थामा के	जुगोप	१६.	रक्षा की थी
अस्त्र विप्लुष्टम्	९.	ब्रह्मास्त्र से जले हुये	कुक्षिम् गतः	१५.	गर्भ में प्रवेश करके
इदम्	१०.	इस	आत्तचक्रः	१३.	चक्र धारण करके
मत्	११.	मेरे	मातुः	२.	माता के
अङ्गम्	१२.	शरीर की	च	१४.	और
सन्तान बीजम्	७.	वंश बीजरूप (तथा)	मे यः	१.	जिन्होंने मेरी
कुरु	५.	कौरवों (और)	शरणम्	३.	शरण में
पाण्डवानाम् ।	६.	पाण्डवों के	गतायाः ॥	४.	जाने पर

श्लोकार्थ—जिन्होंने मेरी माता के शरण में जाने पर कौरवों और पाण्डवों के वंश बीजरूप तथा अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र से जले हुये इस मेरे शरीर की चक्र धारण करके और गर्भ में प्रवेश करके रक्षा की थी ॥

सप्तमः श्लोकः

वीर्याणि तस्याखिलदेहभाजामन्तर्बहिः पूरुषकालरूपैः ।
प्रयच्छतो मृत्युमुतामृतं च माया मनुष्यस्य वदस्व विद्वन् ॥७॥

पदच्छेद— वीर्याणि तस्य अखिल देहभाजाम् अन्तः बहिः पूरुष कालरूपैः ।
प्रयच्छतः मृत्युम् उत अमृतम् च माया मनुष्यस्य वदस्व विद्वन् ॥

शब्दार्थ—

वीर्याणि	१४. लीलाओं का	प्रयच्छतः	१०. दान कर रहे हैं
तस्य	११. उन	मृत्युम् उत	९. मृत्यु का अथवा
अखिल	२. समस्त	अमृतम्	८. जो अमृतत्व
देहभाजाम्	३. शरीर धारियों के	च	१५. और
अन्तः	४. भीतर	माया	१२. माया से
बहिः	६. बाहर	मनुष्यस्य	१३. मनुष्यरूप धारण करने वाले
पूरुष	५. आत्मा रूप से और	वदस्व	१६. वर्णन कीजिये
कालरूपैः ।	७. कालरूप से रहकर	विद्वन् ॥	१. हे विद्वन् !

श्लोकार्थ—हे विद्वन् ! समस्त शरीर धारियों के भीतर आत्मा रूप से और बाहर कालरूप से रहकर जो अमृतत्व अथवा मृत्यु का दान कर रहे हैं उन माया से मनुष्यरूप धारण करने वाले श्रीकृष्ण की लीलाओं का और चरित्र का वर्णन कीजिये ॥

अष्टमः श्लोकः

रोहिण्यास्तनयः प्रोक्तो रामः सङ्कर्षणस्त्वया ।
देवक्या गर्भसम्बन्धः कुतो देहान्तरं विना ॥८॥

पदच्छेद— रोहिण्याः तनयः प्रोक्तः रामः सङ्कर्षणः त्वया ।
देवक्याः गर्भ सम्बन्धः कुतः देहान्तरम् विना ॥

शब्दार्थ—

रोहिण्याः	२. रोहिणी के	देवक्याः	५. देवकी के (पुत्ररूप में)
तनयः	३. पुत्र के रूप में	गर्भ	१०. गर्भ
प्रोक्तः	७. बताया है तो	सम्बन्धः	११. सम्बन्ध
रामः	४. बलराम और	कुतः	१२. कैसे माना जाय
सङ्कर्षणः	६. संकर्षण नाम	देहान्तरम्	८. दूसरे शरीर के
त्वया ।	१. आपने	विना ॥	९. विना

श्लोकार्थ—आपने रोहिणी के पुत्र के रूप में बलराम और देवकी के पुत्र रूप में संकर्षण नाम बताया है । तो दूसरे शरीर के विना गर्भ सम्बन्ध कैसे माना जाय ? ॥

नवमः श्लोकः

कस्मान्मुकुन्दो भगवान् पितुर्गेहाद् व्रजं गतः ।
क्व वासं ज्ञातिभिः सार्धं कृतवान् सात्वतांपतिः ॥९॥

पदच्छेद— कस्मात् मुकुन्दः भगवान् पितुः गेहात् व्रजम् गतः ।
क्व वासम् ज्ञातिभिः सार्धम् कृतवान् सात्वताम् पतिः ॥

शब्दार्थ—

कस्मात्	६.	क्यों	क्व	१२.	कहाँ
मुकुन्दः	२.	श्रीकृष्ण	वासम्	१३.	निवास
भगवान्	१.	भगवान्	ज्ञातिभिः	१०.	गोपबन्धुओं के
पितुः	३.	पिता का	सार्धम्	११.	साथ
गेहात्	४.	घर छोड़कर	कृतवान्	१४.	किया
व्रजम्	५.	व्रज में	सात्वताम्	८.	भक्तवत्सल
गतः ।	७.	चले गये	पतिः ॥	९.	प्रभु ने

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण पिता का घर छोड़कर व्रज में क्यों चले गये । भक्तवत्सल प्रभु ने गोपबन्धुओं के साथ कहाँ निवास किया ? ॥

दशमः श्लोकः

व्रजे वसन् किमकरोन्मधुपुर्यां च केशवः ।
भ्रातरं चावधीत् कंसं मातुरद्धातदर्हणम् ॥१०॥

पदच्छेद— व्रजे वसन् किम् अकरोत् मधुपुर्याम् च केशवः ।
भ्रातरम् च अवधीत् कंसम् मातुः अद्धा अतदर्हणम् ॥

शब्दार्थ—

व्रजे	२.	व्रज में	भ्रातरम्	११.	भाई
वसन्	५.	रहकर	च	८.	और
किम्	६.	कौन-कौन सी	अवधीत्	१३.	(क्यों) मार दिया
अकरोत्	७.	लीलायें कीं	कंसम्	१२.	मामा कंस को
मधुपुर्याम्	४.	मधुपुरी में	मातुः	१०.	अपनी माँ के
च	३.	और	अद्धा	९.	वस्तुतः
केशवः ।	१.	ब्रह्मा और शंकर का भी शासन करने वाले प्रभु ने	अतदर्हणम् ॥	१४.	वह मामा होने के कारण वध के योग्य नहीं थे

श्लोकार्थ—ब्रह्मा और शंकर का भी शासन करने वाले प्रभु ने व्रज में और मधुपुरी में रहकर कौन-कौन सी लीलायें कीं ? और वस्तुतः अपनी माँ के भाई मामा कंस को क्यों मार दिया ? वह मामा होने के कारण वध के योग्य नहीं थे ॥

एकादशः श्लोकः

देहं मानुषमाश्रित्य कति वर्षाणि वृष्णिभिः ।
यदुपुर्यां सहावात्सीत् पत्न्यः कत्यभवन् प्रभोः ॥११॥

पदच्छेद— देहम् मानुषम् आश्रित्य कति वर्षाणि वृष्णिभिः ।
यदुपुर्याम् सह अवात्सीत् पत्न्यः कति अभवन् प्रभोः ॥

शब्दार्थ—

देहम्	२. शरीर	यदुपुर्याम्	४. द्वारकापुरी में
मानुषम्	१. मानव	सह	६. साथ
आश्रित्य	३. धारण करके	अवात्सीत्	९. निवास किया और
कति	७. कितने	पत्न्यः कति	११. पत्नियाँ कितनी
वर्षाणि	८. वर्षों तक	अभवन्	१२. थीं
वृष्णिभिः ।	५. यदुवंशियों के	प्रभोः ॥	१०. प्रभु की

श्लोकार्थ—मानव शरीर धारण करके द्वारकापुरी में यदुवंशियों के साथ कितने वर्षों तक निवास किया और प्रभु की पत्नियाँ कितनी थीं ॥

द्वादशः श्लोकः

एतदन्यच्च सर्वं मे मुने कृष्ण विचेष्टितम् ।
वक्तुमर्हसि सर्वज्ञ श्रद्दधानाय विस्तृतम् ॥१२॥

पदच्छेद— एतत् अन्यत् च सर्वम् मे मुने कृष्ण विचेष्टितम् ।
वक्तुम् अर्हसि सर्वज्ञ श्रद्दधानाय विस्तृतम् ॥

शब्दार्थ—

एतत्	६. यह	विचेष्टितम् ।	१०. लीलायें
अन्यत्	८. अन्य	वक्तुम्	१२. बताने के
च	७. और	अर्हसि	१३. योग्य हैं
सर्वम्	९. सब	सर्वज्ञ	२. सब-कुछ करने के कारण
मे	३. मुझ	श्रद्दधानाय	४. श्रद्धालु को
मुने	१. हे मुने ! आप	विस्तृतम् ॥	११. विस्तार से
कृष्ण	५. भगवान् श्रीकृष्ण की		

श्लोकार्थ—हे मुने ! आप सब-कुछ जानने के कारण मुझ श्रद्धालु को भगवान् श्रीकृष्ण की यह और अन्य सब लीलायें विस्तार से बताने के योग्य हैं ॥

त्रयोदशः श्लोकः

नैषातिदुःसहा क्षुन्मां त्यक्तोदमपि बाधते ।
पिबन्तं त्वन्मुखाम्भोजच्युतं हरिकथामृतम् ॥१३॥

पदच्छेद— न एषा अतिदुःसहा क्षुत् माम् त्यक्त उदम् अपि बाधते ।
पिबन्तम् त्वत् मुख अम्भोज च्युतम् हरि कथा अमृतम् ॥

शब्दार्थ—न	१५.	नहीं	बाधते ।	१६.	सताती है
एषा	१०.	यह	पिबन्तम्	७.	पान करते हुये
अति	८.	अत्यधिक	त्वत् मुख	१.	आपके मुख
दुःसहा	९.	कठिनाई से सहने योग्य	अम्भोज	२.	कमल से
क्षुत्	११.	भूख	च्युतम्	३.	झरती हुई
माम्	१४.	मुझे	हरि	४.	भगवान् की
त्यक्त	१३.	त्याग कर देने पर	कथा	६.	लीला कथा का
उदम् अपि	१२.	जल का भी	अमृतम् ॥	५.	सुधामयी

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! आपके मुख कमल से झरती हुई भगवान् की सुधामयी लीला कथा का पान करते हुये अत्यधिक कठिनाई से सहने योग्य यह भूख जल का भी त्याग कर देने पर मुझे नहीं सताती है ॥

चतुर्दशः श्लोकः

एवं निशम्य भृगुनन्दन साधुवादं वैयासकिः स भगवानथ विष्णुरातम् ।
प्रत्यर्च्य कृष्णचरितं कलिकल्मषघ्नं व्याहर्तुमारभत भागवतप्रधानः ॥१४॥

पदच्छेद—एवम् निशम्य भृगुनन्दन साधुवादं वैयासकिः सः भगवान् अथ विष्णुरातम् ।
प्रत्यर्च्य कृष्णचरितम् कलि कल्मषघ्नम् व्याहर्तुम् आरभत भागवत प्रधानः ॥

शब्दार्थ—एवम्	९.	इस प्रकार	प्रत्यर्च्य	१२.	उनका अभिनन्दन करके
निशम्य	१०.	सुनकर	कृष्ण	१५.	श्रीकृष्ण की
भृगुनन्दन	१.	हे शौनक जी !	चरितम्	१६.	लीलाओं का
साधुवादम्	८.	समयोचित प्रश्न	कलि	१३.	कलियुग के
वैयासकिः	६.	शुकदेव जी ने	कल्मषघ्नम्	१४.	पापों को धोने वाली
सः	४.	उन	व्याहर्तुम्	१७.	वर्णन करना
भगवान्	५.	महाराज	आरभत	१८.	आरम्भ किया
अथ	११.	तदनन्तर	भागवत	२.	भगवत्प्रेमियों में
विष्णुरातम् ।	७.	भगवान् की लीला विषयक	प्रधानः ॥	३.	अग्रगण्य

श्लोकार्थ—हे शौनक जी ! भगवत् प्रेमियों के अग्रगण्य उन महाराज शुकदेव जी ने भगवान् की लीला विषयक समयोचित प्रश्न इस प्रकार सुनकर तदनन्तर उनका अभिनन्दन करके कलियुग के पापों को धोने वाली श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन करना आरम्भ किया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

सम्यग्व्यवसिता बुद्धिस्तव राजर्षिसत्तम ।
वासुदेवकथायां ते यज्जाता नैष्ठिकी रतिः ॥१५॥

पदच्छेद— सम्यक् व्यवसिता बुद्धिः तव राजर्षि सत्तम ।
वासुदेव कथायाम् ते यत् जाता नैष्ठिकी रतिः ॥

शब्दार्थ—

सम्यक्	५. ठीक ही	**वासुदेव**	८. भगवान् की
व्यवसिता	६. निश्चय किया है	**कथायाम्**	९. कथा में
बुद्धिः	४. बुद्धि ने	**ते**	१०. आपकी
तव	३. आपकी	**यत्**	७. जो कि
राजर्षि	१. हे राजर्षि	**जाता**	१२. उत्पन्न हो गयी है
सत्तम ।	२. शिरोमणि	**नैष्ठिकी रतिः ॥**	११. स्वभाविक प्रीति

श्लोकार्थ—हे राजर्षि शिरोमणि ! आपकी बुद्धि ने ठीक ही निश्चय किया है, जो कि भगवान् की कथा में स्वाभाविक प्रीति उत्पन्न हो गई है ॥

षोडशः श्लोकः

वासुदेवकथाप्रश्नः पुरुषांस्त्रीन् पुनाति हि ।
वक्तारं पृच्छकं श्रोतॄंस्तत्पादसलिलं यथा ॥१६॥

पदच्छेद— वासुदेव कथा प्रश्नः पुरुषान् स्त्रीन् पुनाति हि ।
वक्तारम् पृच्छकम् श्रोतॄन् तत् पाद सलिलम् यथा ॥

शब्दार्थ—

वासुदेव	१. भगवान् श्रीकृष्ण की	**वक्तारम्**	६. वक्ता
कथा	२. कथा के सम्बन्ध में	**पृच्छकम्**	७. प्रश्नकर्ता (एवम्)
प्रश्नः	३. किये गये प्रश्न ही	**श्रोतॄन्**	८. श्रोता को
पुरुषान्	४. पुरुषों	**तत् पाद**	९. भगवान् के चरणों के
स्त्रीन्	५. स्त्रियों	**सलिलम्**	१०. जल (गंगाजी के)
पुनाति हि ।	१२. पवित्र कर देते हैं	**यथा ॥**	११. समान

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण की कथा के सम्बन्ध में किये गये प्र न ही पुरुषों, स्त्रियों, वक्ता, प्रश्नकर्ता एवम् श्रोता को भगवान् के चरणों के जल गंगाजी के समान पवित्र कर देते हैं ॥

सप्तदशः श्लोकः

भूमिर्दृप्तनृपव्याजदैत्यानीकशतायुतैः ।
आक्रान्ता भूरिभारेण ब्रह्माणं शरणं ययौ ॥१७॥

पदच्छेद— भूमिः दृप्त नृप व्याज दैत्य अनीक शतायुतैः ।
आक्रान्ता भूरि भारेण ब्रह्माणम् शरणम् ययौ ॥

शब्दार्थ—

भूमिः	६. पृथ्वी को	आक्रान्ता	९. आक्रान्त कर रखा था
दृप्त नृप	४. घमंडी राजाओं का	भूरि	७. अपने भारी
व्याज	५. रूप धारण करके	भारेण	८. भार से
दैत्य	२. दैत्यों के	ब्रह्माणम्	१०. तब वह ब्रह्मा जी की
अनीक	३. दल ने	शरणम्	११. शरण में
शतायुतैः ।	१. लाखों	ययौ ॥	१२. गयी

श्लोकार्थ—लाखों दैत्यों के दल ने घमंडी राजाओं का रूप धारण करके पृथ्वी को अपने भारी भार से अक्रान्त कर रखा था । तब वह पृथ्वी ब्रह्माजी की शरण में गई ॥

अष्टादशः श्लोकः

गौर्भूत्वाश्रुमुखी खिन्ना क्रन्दन्ती करुणं विभोः ।
उपस्थितान्तिके तस्मै व्यसनं स्वमवोचत ॥१८॥

पदच्छेद— गौः भूत्वा अश्रुमुखी खिन्ना क्रन्दन्ती करुणम् विभोः ।
उपस्थित अन्तिके तस्मै व्यसनम् स्वम् अवोचत ॥

शब्दार्थ—

गौः	१. गौ रूपधारी पृथ्वी ने	उपस्थित	९. पहुँचकर
भूत्वा	४. होकर	अन्तिके	८. समीप
अश्रुमुखी	२. अश्रुयुक्त मुख तथा	तस्मै	१०. उनसे
खिन्ना	३. खिन्न मन	व्यसनम्	१२. कष्ट कहानी
क्रन्दन्ती	६. क्रन्दन करती हुई	स्वम्	११. अपनी
करुणम्	५. करुणा	अवोचत ॥	१३. सुनाई
विभोः ।	७. ब्रह्माजी के		

श्लोकार्थ—गौ रूपधारी पृथ्वी ने अश्रुयुक्त मुख तथा खिन्न मन होकर करुण क्रन्दन करती हुई ब्रह्माजी के समीप पहुँच कर अपनी कष्ट कहानी सुनाई ॥

एकोनविंशः श्लोकः

ब्रह्मा तदुपधार्याथ सह देवैस्तया सह।
जगाम सत्रिनयनस्तीरं क्षीरपयोनिधेः ॥१६॥

पदच्छेद— ब्रह्मा तत् उपधार्य अथ सह देवैः तया सह।
जगाम सत्रिनयनः तीरम् क्षीर पयोनिधेः ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्मा तत्	२. ब्रह्माजी ने उसे	सह।	७. साथ (और)
उपधार्य	३. सुनकर तथा	जगाम	१२. गये
अथ	१. तदनन्तर	सत्रिनयनः	८. शिवजी के साथ
सह	५. साथ	तीरम्	११. तट पर
देवैः	४. देवताओं के	क्षीर	६. क्षीर
तया	६. उस पृथ्वी के	पयोनिधेः ॥	१०. सागर के

श्लोकार्थ—तदनन्तर ब्रह्माजी ने उसे सुनकर तथा देवताओं के साथ उस पृथ्वी के और शिवजी के साथ क्षीरसागर के तट पर गये ॥

विंशः श्लोकः

तत्र गत्वा जगन्नाथं देवदेवं वृषाकपिम्।
पुरुषं पुरुषसूक्तेन उपतस्थे समाहितः ॥२०॥

पदच्छेद— तत्र गत्वा जगन्नाथम् देव देवम् वृषाकपिम्।
पुरुषम् पुरुष सूक्तेन उपतस्थे समाहितः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१. वहाँ	वृषाकपिम्।	७. भगवान् विष्णु की
गत्वा	२. जाकर	पुरुषम्	६. परमात्मा
जगन्नाथम्	३. संसार के स्वामी	पुरुषसूक्तेन	८. पुरुष सूक्त के द्वारा
देव	४. देवों के	उपतस्थे	६. स्तुति करते हुये
देवम्	५. आराध्य देव	समाहितः ॥	१०. समाधिस्थ हो गये

श्लोकार्थ—वहाँ जाकर संसार के स्वामी देवों के आराध्यदेव परमात्मा भगवान् विष्णु की पुरुष सूक्त के द्वारा स्तुति करते हुये समाधिस्थ हो गये ॥

एकविंशः श्लोकः

गिरं समाधौ गगने समीरितां निशम्य वेधास्त्रिदशानुवाच ह ।
गां पौरुषीं मे शृणुतामराः पुनर्विधीयतामाशु तथैव मा चिरम् ॥२१॥

पदच्छेद— गिरम् समाधौ गगनने समीरिताम् निशम्य वेधाः त्रिदशान् उवाच ह ।
गाम् पौरुषीम् मे शृणुत अमराः पुनः विधीयताम् आशु तथा एव मा चिरम् ॥

शब्दार्थ—गिरम्	३.	वाणी द्वारा	पौरुषीम्	११.	भगवान् की
समाधौ	१.	समाधि में	मे	१०.	मुझसे
गगने	२.	अकाश	शृणुत	१३.	सुनो
समीरिताम्	४.	कही बात	अमराः	९.	हे देवताओ !
निशम्य	५.	सुनकर	पुनः	१४.	और फिर
वेधाः	६.	ब्रह्माजी ने	विधीयताम्	१७.	करो
त्रिदशान्	७.	देवताओं से	आशु	१५.	तत्काल
उवाच ह ।	८.	कहा	तथा एव	१६.	वैसा ही
गाम्	१२.	वाणी	मा चिरम् ॥	१८.	देर मत करो

श्लोकार्थ—समाधि में आकाशवाणी द्वारा कही बात सुनकर ब्रह्मा जी ने देवताओं से कहा । हे देवताओ ! मुझसे भगवान् की वाणी सुनो । और फिर तत्काल वैसा ही करो, देर मत करो ॥

द्वाविंशः श्लोकः

पुरैव पुंसावधृतोधराज्वरो भवद्भिरंशैर्यदुषूपजन्यताम् ।
स यावदुर्व्या भरमीश्वरेश्वरः स्वकालशक्त्या क्षपयंश्चरेद् भुवि ॥२२॥

पदच्छेद— पुरा एव पुंसा अवधृतः धरा ज्वरः भवद्भिः अंशैः यदुषु उपजन्यताम् ।
सः यावत् उर्व्याःभरम् ईश्वर-ईश्वरः स्वकाल शक्त्या क्षपयन् चरेत् भुवि ॥

शब्दार्थ—पुरा एव	४.	पहले से ही	सः	७.	वे परमात्मा
पुंसा	१.	भगवान् को	यावत्	१२.	जब-तक
अवधृत	५.	मालूम है	उर्व्याःभरम्	१०.	पृथ्वी का भार
धरा	२.	पृथ्वी का	ईश्वर-ईश्वरः	६.	ईश्वर के भी ईश्वर
ज्वरः	३.	कष्ट	स्वकाल	८.	अपनी काल
भवद्भिः	१५.	(तब-तक) आप लोग	शक्त्या	९.	शक्ति के द्वारा
अंशैः	१६.	अपने अंशों के साथ	क्षपयन्	११.	नष्ट करते हुये
यदुषु	१७.	यदुकुल में	चरेत्	१४.	विचरण करें
उपजन्यताम् ।	१८.	जन्म लेकर रहो	भुवि ॥	१३.	पृथ्वी पर

श्लोकार्थ—भगवान् को पृथ्वी का कष्ट पहले से ही मालूम है । ईश्वर के भी ईश्वर वे परमात्मा अपनी काल-शक्ति के द्वारा पृथ्वी का भार नष्ट करते हुये जब-तक पृथ्वी पर विचरण करें तब-तक आप लोग अपने अंशों के साथ यदुकुल में जन्म लेकर रहो ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

वसुदेवगृहे साक्षात् भगवान् पूरुषः परः ।
जनिष्यते तत्प्रियार्थं सम्भवन्तु सुरस्त्रियः ॥२३॥

पदच्छेद— वसुदेव गृहे साक्षात् भगवान् पूरुषः परः ।
जनिष्यते तत् प्रियार्थम् सम्भवन्तु सुरस्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

वसुदेव	१.	वसुदेव जी के	जनिष्यते	७.	प्रकट होंगे
गृहे	२.	घर में	तत्	८.	उनकी और
साक्षात्	३.	साक्षात्	प्रियार्थम्	९.	उनकी प्रिया की सेवा के लिये
भगवान्	६.	परमात्मा	सम्भवन्तु	११.	जन्म ग्रहण करें
पूरुषः	५.	पुरुष	सुरस्त्रियः ॥	१०.	देवाङ्गनायें
परः ।	४.	परम			

श्लोकार्थ—वसुदेव जी के घर में साक्षात् परम पुरुष परमात्मा प्रकट होंगे । उनकी और उनकी प्रिया की सेवा के लिये देवाङ्गनायें जन्म ग्रहण करें ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

वासुदेवकलानन्तः सहस्रवदनः स्वराट् ।
अग्रतो भविता देवो हरेः प्रियचिकीर्षया ॥२४॥

पदच्छेद— वासुदेव कला अनन्तः सहस्र वदनः स्वराट् ।
अग्रतः भविता देवः हरेः प्रिय चिकीर्षया ॥

शब्दार्थ—

वासुदेव	४.	भगवान् की	अग्रतः	११.	पहले
कला	५.	कला होने के कारण	भविता	१२.	जन्म लेंगे
अनन्तः	६.	अनन्त हैं	देवः	१०.	देव
सहस्र	२.	सहस्र	हरेः	७.	भगवान् का
वदनः	३.	मुख शेष जी भी	प्रिय	८.	प्रिय कार्य
स्वराट् ।	१.	स्वयं प्रकाश	चिकीर्षया ॥	९.	करने की इच्छा से वे

श्लोकार्थ—स्वयं प्रकाश सहस्र मुख शेष जो भगवान् की कला होने के कारण अनन्त हैं । भगवान् का प्रिय करने की इच्छा से वे देव पहले जन्म लेंगे ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत् ।
आदिष्टा प्रभुणांशेन कार्यार्थे सम्भविष्यति ॥२५॥

पदच्छेद— विष्णोः माया भगवती यया सम्मोहितम् जगत् ।
आदिष्टा प्रभुणा अंशेन कार्य अर्थे सम्भविष्यति ॥

शब्दार्थ—

विष्णोः	१.	भगवान् की	आदिष्टा	८.	आज्ञा से
माया	३.	योग माया	प्रभुणा	७.	प्रभु की
भगवती	२.	ऐश्वर्यशालिनी	अंशेन	११.	अंशरूप से
यया	४.	जिसने	कार्य	९.	उनका कार्य
सम्मोहितम्	६.	मोहित कर रखा है	अर्थे	१०.	सम्पन्न करने के लिये
जगत् ।	५.	सारे संसार को	भविष्यति ॥	१२.	अवतार ग्रहण करेगी

श्लोकार्थ—भगवान् की ऐश्वर्यशालिनी योगमाया जिसने सारे संसार को मोहित कर रखा है । प्रभु की आज्ञा से उनका कार्य सम्पन्न करने की इच्छा से अंशरूप से अवतार ग्रहण करेगी ॥

षड्विंशः श्लोकः

इत्यादिश्यामरगणान् प्रजापतिपतिर्विभुः ।
आश्वास्य च महीं गीर्भिः स्वधाम परमं ययौ ॥२६॥

पदच्छेद— इति आदिश्य अमर गणान् प्रजापति पतिः विभुः ।
आश्वास्य च महीम् गीर्भिः स्वधाम परमम् ययौ ॥

शब्दार्थ—

इति	६.	इस प्रकार	**आश्वास्य**	११.	समझा-बुझाकर
आदिश्य	७.	उपदेश देकर	**च**	८.	और
अमर	४.	देवताओं के	**महीम्**	१०.	पृथ्वी को
गणान्	५.	समूह को	**गीर्भिः**	९.	अपनी वाणीसे
प्रजापति	१.	प्रजापतियों के	**स्वधाम**	१२.	अपने धाम को
पतिः	२.	स्वामी	**परमम्**	१३.	परम
विभुः ।	३.	भगवान् ब्रह्माजी	**ययौ ॥**	१४.	चले गये

श्लोकार्थ—प्रजापतियों के स्वामी भगवान् ब्रह्माजी देवाओं के समूह को इस प्रकार उपदेश देकर और अपनी वाणी से पृथ्वी को समझा-बुझाकर अपने परम धाम को चले गये ॥

सप्तविंशः श्लोकः

शूरसेनो यदुपतिर्मथुरामावसन् पुरीम् ।
माथुराञ्छूरसेनांश्च विषयान् बुभुजे पुरा ॥२७॥

पदच्छेद— शूरसेनः यदुपतिः मथुराम् आवसन् पुरीम् ।
माथुरान् शूरसेनान् च विषयान् बुभुजे पुरा ॥

शब्दार्थ—

शूरसेनः	३. शूरसेन	माथुरान्	७. माथुर मण्डल
यदुपतिः	२. यदुवंशी राजा	शूरसेनान्	९. शूरसेन मण्डल का
मथुराम्	४. मथुरा	च	८. और
आवसन्	६. रहकर	विषयान्	१०. राज्य शासन
पुरीम् ।	५. पुरी में	बुभुजे	११. करते थे
		पुरा ॥	१. प्राचीनकाल में

श्लोकार्थ—प्राचीनकाल में यदुवंशी राजा मथुरा पुरी में रहकर माथुर मण्डल और शूरसेन मण्डल का राज्य-शासन करते थे ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

राजधानी ततः साभूत् सर्वं यादवभूभुजाम् ।
मथुरा भगवान् यत्र नित्यं संनिहितो हरिः ॥२८॥

पदच्छेद— राजधानी ततः सा अभूत् सर्व यादव भू भुजाम् ।
मथुरा भगवान् यत्र नित्यम् संनिहितः हरिः ॥

शब्दार्थ—

राजधानी	६. राजधानी	मथुरा	३. मथुरा ही
ततः	१. उसी समय से	भगवान्	९. भगवान्
सा	२. वह	यत्र	८. जहाँ
अभूत्	७. हो गई	नित्यम्	११. नित्य
सर्वयादव	४. समस्त यदुवंशी	संनिहितः	१२. विराजमान रहते हैं
भूभुजाम् ।	५. पृथ्वीपतियों की	हरिः ॥	१०. श्री हरि

श्लोकार्थ—उसी समय से वह मथुरा ही समस्त यदुवंशी पृथ्वीपतियों की राजधानी हो गई । जहाँ भगवान् श्री हरि नित्य विराजमान रहते हैं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

तस्यांतु कर्हिचिच्छौरिर्वसुदेवकृतोद्वहः ।
देवक्या सूर्यया सार्धं प्रयाणे रथमारुहत् ॥२९॥

पदच्छेद— तस्याम् तु कर्हिचित् शौरिः वसुदेव कृत उद्वहः ।
देवक्या सूर्यया सार्धम् प्रयाणे रथम् आरुहत् ॥

शब्दार्थ—

तस्याम् तु	२.	उस मथुरा में	देवक्या	८.	देवकी के
कर्हिचित्	१.	एक वार	सूर्यया	७.	नव विवाहिता पत्नी
शौरिः	३.	शूरसेन के पुत्र	सार्धम्	९.	साथ
वसुदेवः	४.	वसुदेव जो	प्रयाणे	१०.	घर जाने के लिये
कृत	६.	करके	रथम्	११.	रथ पर
उद्वहः ।	५.	विवाह	आरुहत् ॥	१२.	सवार हुये

श्लोकार्थ—एक बार उस मथुरा में शूरसेन के पुत्र वसुदेव जो विवाह करके अपनी नववधू पत्नी देवकी के साथ घर जाने के लिये रथ पर सवार हुये ॥

त्रिंशः श्लोकः

उग्रसेनसुतः कंसः स्वसुः प्रियचिकीर्षया ।
रश्मीन् हयानां जग्राह रौक्मैः रथशतैर्वृतः ॥३०॥

पदच्छेद— उग्रसेन सुतः कंसः स्वसुः प्रिय चिकीर्षया ।
रश्मीन् हयानाम् जग्राह रौक्मैः रथ शतैः वृतः ॥

शब्दार्थ—

उग्रसेन	१.	उग्रसेन के	रश्मीन्	८.	लगाम
सुतः	२.	पुत्र	हयानाम्	७.	उसके घोड़ों की
कंसः	३.	कंस ने	जग्राह	९.	पकड़ ली
स्वसुः	४.	अपनी चचेरी बहन को	रौक्मैः रथ	११.	सोने के रथों से
प्रिय	५.	प्रसन्न	शतैः	१०.	यद्यपि वह सैकड़ों
चिकीर्षया ।	६.	करने की इच्छा से	वृतः ॥	१२.	घिरा हुआ था

श्लोकार्थ—उग्रसेन के पुत्र कंस ने अपनी चचेरी बहन को प्रसन्न करने की इच्छा से उसके घोड़ों की लगाम पकड़ ली । यद्यपि वह सैकड़ों सोने के रथों से घिरा हुआ था ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

चतुःशतं पारिबर्हं गजानां हेममालिनाम् ।
अश्वानामयुतं सार्धं रथानां च त्रिषट्शतम् ॥३१॥

पदच्छेद — चतुः शतम् पारिबर्हम् गजानाम् हेम मालिनाम् ।
अश्वानाम् अयुतम् सार्धम् रथानाम् च त्रिषट् शतम् ॥

शब्दार्थ—

चतुः	४. चार	अयुतम्	७. दस हजार
शतम्	५. सौ	सार्धम्	९. साथ
पारिबर्हम्	१. वैवाहिक उपहार स्वरूप	रथानाम् च	१२. रथ प्रदान किये
गजानाम्	६. हाथी	त्रिषट्	१०. अठारह
हेम	२. सोने के	शतम् ॥	११. सौ
मालिनाम् ।	३. हारों से विभूषित		
अश्वानाम्	८. घोड़ों के		

श्लोकार्थ—वैवाहिक उपहार स्वरूप सोने के हारों से विभूषित चार सौ हाथी, दस हजार घोड़ों के साथ अठारह सौ रथ प्रदान किये ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

दासीनां सुकुमारीणां द्वे शते समलङ्कृते ।
दुहित्रे देवकः प्रादाद् याने दुहितृवत्सलः ॥३२॥

पदच्छेद— दासीनाम् सुकुमारीणाम् द्वे शते सम्अलङ्कृते ।
दुहित्रे देवकः प्रादात् याने दुहितृ वत्सलः ॥

शब्दार्थ—

दासीनाम्	१०. दासियाँ	दुहित्रे	४. अपनी कन्या देवकी को
सुकुमारीणाम्	९. सुकुमारी	देवकः	३. देवक ने
द्वे	७. दो	प्रादात्	११. प्रदान कीं
शते	८. सौ	याने	५. विदा के समय
सम्अलङ्कृते ।	६. विभूषित	दुहितृ	१. पुत्री पर
		वत्सलः ॥	२. स्नेह करने वाले

श्लोकार्थ—पुत्री पर स्नेह करने वाले देवक ने अपनी कन्या देवकी को विदा के समय विभूषित दो सौ सुकुमारी दासियाँ प्रदान कीं ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

शङ्खतूर्यमृदङ्गाश्च नेदुर्दुन्दुभयः समम् ।
प्रयाणप्रक्रमे तावद् वरवध्वोः सुमङ्गलम् ॥३३॥

पदच्छेद— शङ्ख तूर्य मृदङ्गाः च नेदुः दुन्दुभयः समम् ।
प्रयाण प्रक्रमे तावत् वर वध्वोः सुमङ्गलम् ॥

शब्दार्थ—

शङ्ख	७. शङ्ख	प्रयाण	२. विदाई
तूर्य	८. तुरही	प्रचक्रमे	३. के समय
मृदङ्गाः	९. मृदङ्ग	तावत्	१. तभी
च	१०. और	वर	४. वर
नेदुः	१३. बजने लगे	वध्वोः	५. वधू के
दुन्दुभयः	११. दुन्दुभियाँ	सुमङ्गलम् ॥	६. मङ्गल के लिये
समम् ।	१२. एक साथ		

श्लोकार्थ—तभी विदाई के समय वर-वधू के मङ्गल के लिये शङ्ख, तुरही, मृदङ्ग और दुन्दुभियाँ एक साथ बजने लगीं ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

पथि प्रग्रहिणं कंसमाभाष्याहाशरीरवाक् ।
अस्यास्त्वामष्टमो गर्भो हन्ता यां वहसेऽबुध ॥३४॥

पदच्छेद— पथि प्रग्रहिणम् कंसम् आभाष्य आह अशरीरवाक् ।
अस्याः त्वाम् अष्टमः गर्भः हन्ता याम् वहसे अबुध ॥

शब्दार्थ—

पथि	१. मार्ग में	त्वाम्	१३. तुझे
प्रग्रहिणम्	२. रथ हाँकते समय	अष्टमः	११. आठवाँ
कंसम्	३. कंस को	गर्भः	१२. गर्भ (बालक)
आभाष्य	४. सम्बोधित करके	हन्ता	१४. मारने वाला होगा
आह	६. कहा	याम्	८. जिसे तू
अशरीरवाक् ।	५. आकाश वाणी ने	वहसे	९. लिये जा रहा है
अस्याः	१०. इसी का	अबुध ॥	७. अरे मूर्ख

श्लोकार्थ—मार्ग में रथ हाँकते समय कंस को सम्बोधित करके आकाश वाणी ने कहा—अरे मूर्ख ! जिसे तू लिये जा रहा है, इसी का आँठवाँ गर्भ (बालक) तुझे मारने वाला होगा ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

इत्युक्तः स खलः पापो भोजानां कुलपांसनः ।
भगिनीं हन्तुमारब्धः खड्गपाणिः कचेऽग्रहीत् ॥३५॥

पदच्छेद— इति उक्तः सः खलः पापः भोजानाम् कुल पांसनः ।
भगिनीम् हन्तुम् आरब्धः खड्गपाणिः कचे अग्रहीत् ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	ऐसा	भगिनीम्	८.	बहिन के
उक्तः	२.	सुनते ही	हन्तुम्	१३.	उसे मारने के लिये
सः	५.	वह	आरब्धः	१४.	तैयार हो गया
खलः	७.	दुष्ट	खड्गः	१२.	तलवार लेकर
पापः	६.	पापी	पाणिः	११.	हाथ में
भोजानाम्	३.	भोज	कचे	९.	केश
कुल पांसनः ।	४.	वंश का कलंक	अग्रहीत् ॥	१०.	पकड़कर

श्लोकार्थ—ऐसा सुनते ही भोजवंश का कलंक वह पापी दुष्ट बहिन के केश पकड़कर हाथ में तलवार लेकर उसे मारने के लिये तैयार हो गया ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

तं जुगुप्सितकर्माणं नृशंसं निरपत्रपम् ।
वसुदेवो महाभाग उवाच परिसान्त्वयन् ॥३६॥

पदच्छेद— तम् जुगुप्सित कर्माणम् नृशंसम् निरपत्रपम् ॥
वसुदेवः महाभागः उवाच पसिान्त्वयन् ।

शब्दार्थ—

तम्	५.	उससे	वसुदेवः	७.	वसुदेव जी
जुगुप्सित	१.	पाप	महाभागः	६.	महात्मा
कर्माणम्	२.	कर्म करने वाले	उवाच	९.	इस प्रकार बोले
नृशंसम्	३.	अत्यन्त क्रूर	परिसान्त्वयन् ॥	८.	सान्त्वना देते हुये
निरपत्रपम् ।	४.	निर्लज्ज			

श्लोकार्थ—पाप कर्म करने वाले अत्यन्त क्रूर और निर्लज्ज उससे महात्मा वसुदेव जी सान्त्वना देते हुये इस प्रकार बोले ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

श्लाघनीयगुणः शूरैर्भवान् भोजयशस्करः ।
स कथं भगिनीं हन्यात् स्त्रियमुद्वाहपर्वणि ॥३७॥

पदच्छेद— श्लाघनीय गुणः शूरैः भवान् भोज यशस्करः ।
स: कथम् भगिनीम् हन्यात् स्त्रियम् उद्वाह पर्वणि ।।

शब्दार्थ—

श्लाघनीय	२. प्रशंसित	सः	११. ऐसे
गुणः	३. गुणों वाले (तथा)	कथम्	१२. कैसे
शूरैः	१. शूरवीरों द्वारा	भगिनीम्	७. अपनी बहिन
भवान्	६. आप	हन्यात्	१३. मारेंगे
भोज	४. भोजवंश की	स्त्रियम्	८. स्त्री को
यशस्करः ।	५. कीर्ति को बढ़ाने वाले	उद्वाह	९. विवाह के
		पर्वणि ।।	१०. अवसर पर

श्लोकार्थ—शूरवीरों के द्वारा प्रशंसित गुणों वाले तथा भोजवंश की कीर्ति को बढ़ाने वाले आप अपनी बहिन स्त्री को विवाह के अवसर पर कैसे मारेंगे ।।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

मृत्युर्जन्मवतां वीर देहेन सह जायते ।
अद्य वाब्दशतान्ते वा मृत्युर्वै प्राणिनां ध्रुवः ॥३८॥

पदच्छेद-- मृत्युः जन्मवताम् वीर देहेन सह जायते ।
अद्य वा अब्द शत अन्ते वा मृत्युर्वै प्राणिनाम् ध्रुवः ।।

शब्दार्थ—

मृत्युः	३. मृत्यु तो	अद्य	७. आज हो
जन्मवताम्	२. जन्म लेने वालों की	अब्दशतअन्ते	९. सौ वर्ष बाद हो
वीर	१. हे वीरवर !	वा	८. अथवा
देहेन	४. शरीर के	मृत्युर्वै	११. मृत्यु तो
सह	५. साथ ही	प्राणिनाम्	१०. प्राणियों की
जायते ।	६. उत्पन्न होतो है	ध्रुवः ।।	१२. निश्चित ही है

श्लोकार्थ—हे वीरवर ! जन्म लेने वालों की मृत्यु तो शरीर के साथ ही उत्पन्न होती है । आज हो अथवा सौ वर्ष बाद हो प्राणियों की मृत्यु तो निश्चित ही है ।।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

देहे पञ्चत्वमापन्ने देही कर्मानुगोऽवशः।
देहान्तरमनुप्राप्य प्राक्तनं त्यजते वपुः ॥३९॥

पदच्छेद— देहे पञ्चत्वम् आपन्ने देही कर्म अनुगः अवशः।
देह अन्तरम् अनुप्राप्य प्राक्तनम् त्यजते वपुः ॥

शब्दार्थ—

देहे	१. शरीर के	देह	८. शरीर को
पञ्चत्वम्	२. पञ्चतत्त्वों में	अन्तरम्	७. दूसरे
आपन्ने	३. मिल जाने पर	अनुप्राप्य	९. प्राप्त करके
देही	४. जीवात्मा	प्राक्तनम्	१०. पुराने
कर्मअनुगः	५. कर्म के अनुसार	त्यजते	१२. छोड़ देता है
अवशः।	६. परतन्त्र होकर	वपुः ॥	११. शरीर को

श्लोकार्थ—शरीर के पञ्चतत्त्वों में मिल जाने पर जीवात्मा कर्म के अनुसार परतन्त्र होकर दूसरे शरीर को प्राप्त करके पुराने शरीर को छोड़ देता है ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

व्रजंस्तिष्ठन् पदैकेन यथैवैकेन गच्छति।
यथा तृणजलूकैवं देही कर्मगतिं गतः ॥४०॥

पदच्छेद— व्रजन्तिष्ठन् पदा एकेन यथा एव एकेन गच्छति।
यथा तृण जलूका एवम् देही कर्म गतिम् गतः ॥

शब्दार्थ—

व्रजन्	२. चलते समय	यथा	९. जैसे
तिष्ठन्	५. रख कर	तृण	११. अगले तिनके को पकड़ कर ही पहले के तिनके को छोड़ती है
पदा	४. पैर को	जलूका	१०. जोंक
एकेन	३. एक	एवम्	१२. उसी प्रकार
यथा	१. जैसे	देही	१३. जीव भी
एव	६. ही	कर्म	१४. कर्म की
एकेन	७. दूसरा पैर	गतिम्	१५. को
गच्छति।	८. उठाता है और	गतः ॥	१६. प्राप्त करता है

श्लोकार्थ—जैसे चलते समय मनुष्य एक पैर को रख कर ही दूसरा पैर उठाता है और जैसे जोंक अगले तिनके को पकड़ कर ही पहले के तिनके को छोड़ती है उसी प्रकार जीव भी कर्म की गति को प्राप्त करता है ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

स्वप्ने यथा पश्यति देहमीदृशं मनोरथेनाभिनिविष्टचेतनः ।
दृष्टश्रुताभ्यां मनसानुचिन्तयन् प्रपद्यते तत् किमपि ह्यपस्मृतिः ॥४१॥

पदच्छेद— स्वप्ने यथा पश्यति देहम् ईदृशम् मनोरथेन अभिनिविष्ट चेतनः ।
दृष्ट श्रुताभ्याम् मनसा अनुचिन्तयन् प्रपद्यते तत् किम् अपि हि अपस्मृतिः ॥

शब्दार्थ—

स्वप्ने	५. स्वप्नावस्था में	श्रुताभ्याम्	१०. सुने हुये विषयों का
यथा	१. जैसे	मनसा	११. मन से
पश्यति	८. देखता है	अनुचिन्तनयन्	१२. चिन्तन करते हुये
देहम्	७. शरीर को	प्रपद्यते	१७. प्राप्त करता है
ईदृशम्	६. उसी प्रकार के	तत्	१६. उसी स्थिति को
मनोरथेन	३. मनोरथों में	किम्	१३. कभी कभी तो जाग्रत् में
अभिनिविष्ट	४. संलग्न होकर	अपिहि	१४. भी
चेतनः ।	२. कोई पुरुष	अपस्मृतिः ॥	१५. पूर्वस्थिति को भूलकर
दृष्ट	९. देखे (और)		

श्लोकार्थ—जैसे कोई पुरुष मनोरथों में संलग्न होकर स्वप्नावस्था में उसी प्रकार के शरीर को देखता है। देखे और सुने हुये विषयों का मन से चिन्तन करते हुये कभी, कभी जाग्रत् में भी पूर्वस्थिति को भूलकर उसी स्थिति को प्राप्त करता है ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

यतो यतो धावति दैवचोदितं मनोविकारात्मकमाप पञ्चसु ।
गुणेषु मायारचितेषु देह्यसौ प्रपद्यमानः सह तेन जायते ॥४२॥

पदच्छेद—यतः यतः धावति दैव चोदितम् मनः विकार आत्मकम् आप पञ्चसु ।
गुणेषु माया रचितेषु देही असौ प्रपद्यमानः सह तेन जायते ॥

शब्दार्थ—

यतः यतः	११. जिस जिसका	**गुणेषु**	५. गुणों से युक्त
धावति	१२. चिन्तन करता हुआ	**माया**	३. माया के द्वारा
दैव	८. कर्मों की वासना से	**रचितेषु**	४. रचे हुये
चोदितम्	९. प्रेरित हुआ	**देही**	२. जीव का
मनः	१०. यह मन	**असौ**	१. इस
विकार	६. अनेक विकारों का	**प्रपद्यमानः**	१५. वैसा सोचता हुआ
आत्मकम्	७. पुञ्ज	**सह**	१७. साथ
आप	१४. प्राप्त करता है	**तेन**	१६. उसी शरीर के
पञ्चसु ।	१३. पाञ्चभौतिक शरीर को	**जायते ॥**	१८. उत्पन्न होता है

श्लोकार्थ—इस जीव का माया के द्वारा रचे हुये गुणों से युक्त, अनेक विकारों का पुञ्ज, कर्मों की वासना से प्रेरित हुआ यह मन जिस-जिसका चिन्तन करता हुआ पाञ्चभौतिक शरीर को प्राप्त करता है, वैसा सोचता हुआ उसी शरीर के साथ उत्पन्न होता है ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

ज्योतिर्यथैवोदकपार्थिवेष्वदः समीरवेगानुगतं विभाव्यते ।
एवं स्वमायारचितेष्वसौ पुमान् गुणेषु रागानुगतो विमुह्यति ॥४३॥

पदच्छेद— ज्योतिः यथा एव उदक पार्थिवेषु अदः समीर वेग अनुगतम् विभाव्यते ।
एवम् स्वमाया रचितेषु असौ पुमान् गुणेषु राग अनुगतः विमुह्यति ॥

शब्दार्थ—

ज्योतिः	५.	चमकीली वस्तुयें	एवम्	१०.	इसी प्रकार
यथा एव	१.	जिस प्रकार	स्वमाया	१३.	अपनी माया द्वारा
उदक	४.	जल में प्रतिबिम्बित	रचितेषु	१४.	रचित
पार्थिवेषु	३.	घड़े आदि में भरे	असौ	११.	यह
अदः	२.	यहाँ	पुमान्	१२.	पुरुष
समीर	६.	वायु के	गुणेषु	१५.	गुणों में (शरीरों में)
वेग	७.	चलने के	राग	१६.	राग के
अनुगतम्	८.	साथ चलती हुई	अनुगतः	१७.	कारण
विभाव्यते ।	९.	प्रतीत होती है	विमुह्यति ॥	१८.	मोहित सा हो रहा है

श्लोकार्थ—जिस प्रकार यहाँ घड़े आदि में भरे जल में प्रतिबिम्बित चमकीली वस्तुयें वायु के चलने के साथ चलती हुई प्रतीत होती हैं उसी प्रकार यह पुरुष अपनी माया द्वारा रचित गुणों में शरीरों में राग के कारण मोहित सा हो रहा है ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

तस्मान्न कस्यचित् द्रोहमाचरेत् स तथाविधः ।
आत्मनः क्षेममन्विच्छन् द्रोग्धुर्वै परतो भयम् ॥४४॥

पदच्छेद— तस्मात् न कस्यचित् द्रोहम् आचरेत् सः तथा विधः ।
आत्मनः क्षेमम् अन्विच्छन् द्रोग्धुः वै परतः भयम् ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१.	इसलिये	आत्मनः	२.	अपना
न	९.	नहीं	क्षेमम्	३.	कल्याण
कस्यचित्	७.	किसी से भी	अन्विच्छन्	४.	चाहने वाला
द्रोहम्	८.	द्रोह	द्रोग्धुः	१२.	द्रोह करने वाले को
आचरेत्	१०.	करे	वै	११.	क्योंकि
सः तथा	५.	वह मनुष्य ऐसा	परतः	१३.	दूसरे लोक में भी
विधः ।	६.	होने के कारण	भयम् ॥	१४.	भय होता है

श्लोकार्थ—इसलिये अपना कल्याण चाहने वाला वह मनुष्य ऐसा होने के कारण किसी से भी द्रोह नहीं करे । क्योंकि द्रोह करने वाले को दूसरे लोक में भी भय होता है ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

एषा तवानुजा बालाकृपणा पुत्रिकोपमा।
हन्तुं नार्हसि कल्याणीमिमां त्वं दीनवत्सलः ॥४५॥

पदच्छेद— एषा तव अनुजा बाला कृपणा पुत्रिका उपमा।
हन्तुम् न अर्हसि कल्याणीम् इमाम् त्वम् दीनवत्सलः ॥

शब्दार्थ—

एषा	१. यह	हन्तुम्	१२. मारने
तव	२. तुम्हारी	न	१४. नहीं हैं
अनुजा	३. बहिन देवकी	अर्हसि	१३. योग्य
बाला	४. बच्ची	कल्याणीम्	११. कल्याणी को
कृपणा	५. बहुत दीन	इमाम्	१०. इस
पुत्रिका	६. कन्या के	त्वम्	९. आप
उपमा।	७. समान है	दीनवत्सलः ॥	८. दीनों पर स्नेह करने वाले

श्लोकार्थ—यह तुम्हारी बहन देवकी बच्ची बहुत दीन और कन्या के समान है। दीनों पर स्नेह करने वाले आप इस कल्याणी को मारने योग्य नहीं हैं ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

एवं स सामभिर्भेदैर्बोध्यमानोऽपि दारुणः।
न न्यवर्तत कौरव्य पुरुषादाननुव्रतः ॥४६॥

पदच्छेद— एवम् सः सामभिः भेदैः बोध्यमानः अपि दारुणः।
न न्यवर्तत कौरव्य पुरुष आदान् अनुव्रतः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२. इस प्रकार	न	११. (अपने निश्चय से) नहीं
सः	३. वे वसुदेव जी के	न्यवर्तत	१२. लौटा
सामभिः	४. सामनीति आदि	कौरव्य	१. परीक्षित्
भेदैः	५. भेद नीति से	पुरुषादान्	८. एवं राक्षसों का
बोध्यमानः	६. समझाये जाने पर		
अपि दारुणः।	७. भी क्रूर	अनुव्रतः ॥	९. अनुयायी होने के कारण

श्लोकार्थ— इस प्रकार वे वसुदेव जी के सामनीति आदि भेदनीति से समझाये जाने पर भी एवं क्रूर राक्षसों का अनुयायी होने के कारण अपने निश्चय से नहीं लौटा ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

निर्बन्धं तस्य तं ज्ञात्वा विचिन्त्यानकदुन्दुभिः ।
प्राप्तं कालं प्रतिव्योढुमिदं तत्रान्वपद्यत ॥४७॥

पदच्छेद— निर्बन्धम् तस्य तम् ज्ञात्वा विचिन्त्य आनकदुन्दुभिः ।
प्राप्तम् कालम् प्रतिव्योढुम् इदम् तत्र अन्वपद्यत ॥

शब्दार्थ—

निर्बन्धम्	४. हठ को	**प्राप्तम्**	७. प्राप्त हुये
तस्य	२. उस कंस के	**कालम्**	८. इस समय को
तम्	३. ऐसे	**प्रतिव्योढुम्**	९. टाल देना चाहिये
ज्ञात्वा	५. जानकार	**इदम्**	११. इस निश्चय पर
विचिन्त्य	६. विचार किया कि	**तत्र**	१०. तब वे
आनकदुन्दुभिः ।	१. वसुदेव जी ने	**अन्वपद्यत ॥**	१२. पहुँचे

श्लोकार्थ—वसुदेव जी ने उस कंस के ऐसे निश्चय को जानकर विचार किया कि प्राप्त हुये इस समय को टाल देना चाहिये । तब वे इस निश्चय पर पहुँचे ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

मृत्युर्बुद्धिमतापोह्यो यावद् बुद्धिबलोदयम् ।
यद्यसौ न निवर्तेत नापराधोऽस्ति देहिनः ॥४८॥

पदच्छेद— मृत्युः बुद्धिमता अपोह्यः यावत् बुद्धि बल उदयम् ।
यदि असौ न निवर्तेत न अपराधः अस्ति देहिनः ॥

शब्दार्थ –

मृत्युः	६. मृत्यु को	**यदि**	८. फिर भी
बुद्धिमता	१. बुद्धिमान् पुरुष को	**असौ न**	९. वह न
अपोह्यः	७. टालना चाहिये	**निवर्तेत**	१०. टल सके तो
यावत्	२. जहाँ-तक	**न**	१३. नहीं
बुद्धि	३. बुद्धि और	**अपराधः**	१२. कोई दोष
बल	४. बल	**अस्ति**	१४. है
उदयम् ।	५. साथ दे	**देहिनः ॥**	११. प्राणी का

श्लोकार्थ—बुद्धिमान् पुरुष को जहाँ-तक बुद्धि और बल साथ दे मृत्यु को टालना चाहिये । वह टल न सके तो प्राणी का कोई दोष नहीं है ॥

एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

प्रदाय मृत्यवे पुत्रान् मोचये कृपणामिमाम् ।
सुता मे यदि जायरेन् मृत्युर्वा न म्रियेत चेत् ॥४९॥

पदच्छेद— प्रदाय मृत्यवे पुत्रान् मोचये कृपणाम् इमाम् ।
सुताः मे यदि जायेरन् मृत्युः वा न म्रियेत चेत् ॥

शब्दार्थ—

प्रदाय	३.	प्रदान करके	मे	८.	मेरे
मृत्यवे	१.	मृत्यु रूप कंस को	यदि	७.	यदि
पुत्रान्	२.	पुत्र	जायेरन्।	१०.	उत्पन्न हों
मोचये	६.	बचा लूँ	मृत्युः	१३.	मृत्यु रूप यह कंस
कृपणाम्	५.	दीन देवकी को	वा	११.	अथवा
इमाम् ।	४.	इस	न म्रियेत	१४.	न मरे
सुताः।	९.	सन्तान	चेत् ॥	१२.	सम्भव है

श्लोकार्थ—मृत्यु रूप कंस को पुत्र प्रदान करके इस दीन देवकी को बचा लूँ। यदि मेरे पुत्र उत्पन्न हों। अथवा सम्भव है मृत्यु रूप यह कंस न मरे ॥

पञ्चाशत्तमः श्लोकः

विपर्ययो वा किं न स्याद् गतिर्धातुर्दुरत्यया ।
उपस्थितो निवर्तेत निवृत्तः पुनरापतेत् ॥५०॥

पदच्छेद— विपर्ययः वा किम् न स्यात् गतिः धातुः दुरत्यया ।
उपस्थितः निवर्तेत निवृत्तः पुनः आपतेत् ॥

शब्दार्थ—

विपर्ययः	४.	विपरीत	दुरत्यया ।	३.	कठिन विधान वश
वा	१.	अथवा	उपस्थितः	८.	उपस्थित मृत्यु
किम्	६.	क्यों	निवर्तेत	९.	टल जाती है और
न स्यात्	७.	नहीं होगी (क्योंकि कभी-कभी)	निवृत्तः	१०.	टली हुई मृत्यु
गतिः	५.	गति (स्थिति)	पुनः	११.	पुनः
धातुः	२.	विधि के	आपतेत् ॥	१२.	लौट आती है

श्लोकार्थ—अथवा विधि के कठिन विधान वश विपरीत गति (स्थिति) क्यों नहीं होगी क्योंकि कभी-कभी उपस्थित मृत्यु टल जाती है और टली हुई मृत्यु पुनः लौट आती है ॥

एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

अग्नेर्यथा दारुवियोगयोगयोरदृष्टोऽन्यन्न निमित्तमस्ति ।
एवं हि जन्तोरपि दुर्विभाव्यः शरीरसंयोगवियोगहेतुः ॥५१॥

पदच्छेद— अग्नेः यथा दारु वियोग योगयोः अदृष्टतः अन्यत् न निमित्तम् अस्ति ।
एवम् हि जन्तोः अपि दुर्विभाव्यः शरीर संयोग वियोग हेतुः ॥

शब्दार्थ—

अग्नेः	२.	वन की अग्नि का	एवम्	११.	इसी प्रकार
यथा	१.	जिस प्रकार	हि	१०.	निश्चय ही
दारु	३.	किस लकड़ी से	जन्तोः	१२.	प्राणी का
वियोग	३.	वियोग	अपि	१३.	भी
योगयोः	५.	संयोग होगा यह	दुर्विभाव्यः	१८.	जानना कठिन है
अदृष्टतः	६.	अदृष्ट के सिवा	शरीर	१४.	किस शरीर से
अन्यत् न	७.	अन्य नहीं	संयोग	१५.	संयोग अथवा
निमित्तम्	८.	किसी कारण के अधीन	वियोग	१६.	वियोग होगा, इसका
अस्ति	९.	है	हेतुः ॥	१७.	कारण

श्लोकार्थ—जिस प्रकार वन की अग्नि का किस लकड़ी से वियोग अथवा संयोग होगा यह अदृष्ट के सिवा अन्य किसो के अधीन नहीं है । निश्चय ही इसी प्रकार प्राणी का भी किस शरीर से संयोग अथवा वियोग होगा, इसका कारण जानना कठिन है ॥

द्विपञ्चाशत्तमः श्लोकः

एवं विमृश्य तं पापं यावदात्मनिदर्शनम् ।
पूजायामास वै शौरिर्बहुमानपुरःसरम् ॥५२॥

पदच्छेद— एवम् विमृश्य तम् पापम् यावत् आत्म निदर्शनम् ।
पूजयामास वै शौरिः बहुमान पुरः सरम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	५.	इस प्रकार	निदर्शनम् ।	४.	अनुसार
विमृश्य	६.	विचार करके	पूजयामास	१२.	बड़ी प्रशंसा को
तम्	११.	उस कंस की	वै	२.	निश्चय ही
पापम्	१०.	पापी	शौरिः	७.	वसुदेव जी ने
यावत्	१.	तब	बहुमान	८.	बहुत सम्मान
आत्म	३.	बुद्धि के	पुरः सरम् ॥	९.	पूर्वक

श्लोकार्थ—तब निश्चय ही बुद्धि के अनुसार इस प्रकार विचार करके वसुदेव जी ने बहुत सम्मान पूर्वक पापी उस कंस की बहुत प्रशंसा की ॥

त्रिपञ्चाशत्तमः श्लोकः

प्रसन्नवदनाम्भोजो नृशंसं निरपत्रपम् ।
मनसा दूयमानेन विहसन्निदमब्रवीत् ॥५३॥

पदच्छेद— प्रसन्नवदन अम्भोजः नृशंसम् निरपत्रपम् ।
मनसा दूयमानेन विहसन् इदम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

प्रसन्नवदन	३.	प्रसन्न मुख	मनसा	१.	मन से
अम्भोजः	४.	कमल से	दूयमानेन	२.	दुःखी होते हुये
नृशंसम्	६.	क्रूर और	विहसन्	५.	हँसते हुये से वसुदेव जी ने
निरपत्रपम् ।	७.	निर्लज्ज	इदम् अब्रवीत् ॥	८.	उस कंस से ऐसा कहा

श्लोकार्थ—मन से दुःखी होते हुये प्रसन्न मुख कमल से हँसते से वसुदेव जी ने उस कंस से ऐसा कहा ॥

चतुःपञ्चाशत्तमः श्लोकः

वसुदेव उवाच—न ह्यस्यास्ते भयं सौम्य यद् वागाहाशरीरिणी ।
पुत्रान् समर्पयिष्येऽस्या यतस्ते भयमुत्थितम् ॥५४॥

पदच्छेद— न हि अस्याः ते भयम् सौम्य यद् वाक्आह अशरीरिणी ।
पुत्रान् समर्पयिष्ये अस्याः यतः ते भयम् उत्थितम् ॥

शब्दार्थ—

न हि	१.	नहीं है	पुत्रान्	९.	पुत्रों को
अस्याः	४.	इस देवकी से तो	समर्पयिष्ये	१०.	मैं आपको सौंप दूंगा
ते	५.	तुम्हें	अस्याः	८.	इसके
भयम्	६.	भय	यतः	११.	जिससे
सौम्य यत्	१.	हे सौम्य ! जैसा कि	ते	१२.	तुम्हें
वाक् आह	३.	वाणी ने कहा है कि	भयम्	१३.	भय
अशरीरिणी ।	२.	आकाश	उत्थितम् ॥	१४.	उत्पन्न हो गया है

श्लोकार्थ—हे सौम्य ! जैसा कि आकाशवाणी ने कहा है कि इस देवकी से तो तुम्हें भय नहीं है। इससे पुत्रों को मैं तुम्हें सौंप दूंगा । जिससे तुम्हें भय उत्पन्न हो गया है ॥

पञ्चपञ्चाशत्तमः श्लोकः

श्री शुक उवाच—स्वसुर्वधान्निववृते कंसस्तद्वाक्यसारवित् ।
वसुदेवोऽपि तं प्रीतः प्रशस्य प्राविशद् गृहम् ॥५५॥

पदच्छेद— स्वसुः वधात् निववृते कंसः तत् वाक्य सारवित् ।
वसुदेवः अपि तम् प्रीतः प्रशस्य प्राविशद् गृहम् ॥

शब्दार्थ—

स्वसुः	५.	बहिन को	वसुदेवः	८.	वसुदेव जी
वधात्	६.	मारने का विचार	अपि	९.	भी
निववृते	७.	छोड़ दिया	तम्	१०.	उससे
कंसः	१.	कंस ने	प्रातः	११.	प्रसन्न होकर
तत्	२.	उनके	प्रशस्य	१२.	उसकी प्रशंसा करके
वाक्य	४.	वचनों को सुनकर	प्राविशद्	१४.	चले गये
सारवित् ।	३.	सार युक्त	गृहम् ॥	१३.	घर को

श्लोकार्थ—कंस ने उनके सारयुक्त वचनों को सुनकर बहिन को मारने का विचार छोड़ दिया। वसुदेव जी भी उससे प्रसन्न होकर तथा उसकी प्रशंसा करके घर को चले गये ॥

षट्पञ्चाशत्तमः श्लोकः

अथ काल उपावृत्ते देवकी सर्वदेवता ।
पुत्रान् प्रसुषुवे चाष्टौ कन्यां चैवानुवत्सरम् ॥५६॥

पदच्छेद— अथ काले उपावृत्ते देवकी सर्वदेवता ।
पुत्रान् प्रसुषुवे चाष्टौ कन्यां च एव अनुवत्सरम् ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	इसके बाद	पुत्रान्	९.	पुत्रों को
काल	२.	समय	प्रसुषुवे	१३.	जन्म दिया
उपावृत्ते	३.	बीतने पर	च	१०.	और
देवकी	६.	देवकी ने	अष्टौ	८.	आठ
सर्व	४.	सब	कन्याम्	११.	एक कन्या
देवता ।	५.	देवस्वरूप	च एव	१२.	को भी
			अनुवत्सरम् ॥	७.	प्रत्येक वर्ष के क्रम से

श्लोकार्थ—इसके बाद समय बीतने पर सब देव स्वरूप देवकी ने प्रत्येक वर्ष के क्रम से आठ पुत्रों को और एक कन्या को भी जन्म दिया ॥

सप्तपञ्चाशत्तमः श्लोकः

कीर्तिमन्तं प्रथमजं कंसायानकदुन्दुभिः ।
अर्पयामास कृच्छ्रेण सोऽनृतादतिविह्वलः ॥५७॥

पदच्छेद— कीर्तिमन्तम् प्रथमजम् कंसाय आनकदुन्दुभिः ।
अर्पयामास कृच्छ्रेण सः अनृतात् अति विह्वलः ॥

शब्दार्थ—

कीर्तिमन्तम्	४. कीर्तिमान् को	कृच्छ्रेण	२. कष्टपूर्वक
प्रथमजम्	३. प्रथम पुत्र	सः	७. क्योंकि वे
कंसाय	५. कंस को	अनृतात्	८. झूठ बोलने के भय से
आनकदुन्दुभिः ।	१. वसुदेव जी ने	अति	९. अत्यन्त
अर्पयामास	६. समर्पित कर दिया	विह्वलः ॥	१०. व्याकुल हो रहे थे

श्लोकार्थ—वसुदेव जी ने कष्टपूर्वक प्रमथ पुत्र कीर्तिमान् को समर्पित कर दिया । क्योंकि वे झूठ बोलने के भय से अत्यन्त व्याकुल हो रहे थे ॥

अष्टपञ्चाशत्तमः श्लोकः

किं दुःसहं नु साधूनां विदुषां किमपेक्षितम् ।
किमकार्यं कदर्याणां दुस्त्यजं किं धृतात्मनाम् ॥५८॥

पदच्छेद— किम् दुः सहम् नु साधूनाम् विदुषाम् किम् अपेक्षितम् ।
किम् अकार्यम् कदर्याणाम् दुस्त्यजम् किम् धृत आत्मनाम् ॥

शब्दार्थ—

किम्	२. कुछ भी	**किम्**	९. कौन सा
दुःसहम्	३. दुः सह	**अकार्यम्**	१०. कार्य नहीं कर सकता
नु	४. नहीं है	**कदर्याणाम्**	८. नीच पुरुष
साधूनाम्	१. सज्जन पुरुषों के लिये	**दुस्त्यजम्**	१४. त्यागना असम्भव नहीं है
विदुषाम्	५. ज्ञानियों को	**किम्**	१३. कुछ भी
किम्	६. किसी वस्तु की	**धृत**	१२. धारण करने वालों के लिये
अपेक्षितम् ।	७. अपेक्षा नहीं होती	**आत्मनाम् ॥**	११. भगवान् को हृदय में

श्लोकार्थ—सज्जन पुरुषों के लिये कुछ भी दुःसह नहीं है । ज्ञानियों को किसी वस्तु की अपेक्षा नहीं होती । नीच पुरुष कौन सा कार्य नहीं कर सकता । भगवान् को हृदय में धारण करने वालों के लिये कुछ भी त्यागना असम्भव नहीं है ॥

एकोनषष्टितमः श्लोकः

दृष्ट्वा समत्वं तच्छौरेः सत्ये चैव व्यवस्थितिम् ।
कंसस्तुष्टमना राजन् प्रहसन्निदमब्रवीत् ॥५९॥

पदच्छेद— दृष्ट्वा समत्वम् तत् शौरेः सत्ये च एव व्यवस्थितिम् ।
कंसः तुष्ट मनाः राजन् प्रहसन् इदम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	८.	देखकर	कंसः	९.	कंस ने
समत्वम्	३.	इस प्रकार सम-भाव	तुष्ट	१०.	सन्तुष्ट
तत् शौरेः	२.	उन वसुदेव जी का	मनाः	११.	मन से
सत्ये	५.	सत्य में	राजन्	१.	हे परीक्षित् !
च	४.	और	प्रहसन्	१२.	हँसते हुये
एव	६.	भी	इदम्	१३.	इस प्रकार
व्यवस्थितिम् ।	७.	स्थिति को	अब्रवीत् ॥	१४.	कहा

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! उन वसुदेव जी का इस प्रकार सम-भाव और सत्य में स्थिति को देखकर कंस ने सन्तुष्ट मन से हँसते हुये इस प्रकार कहा ॥

षष्टितमः श्लोकः

प्रतियातु कुमारोऽयं न ह्यस्मादस्ति मे भयम् ।
अष्टमाद् युवयोर्गर्भान्मृत्युर्मे विहितः किल ॥६०॥

पदच्छेद— प्रतियातु कुमारः अयम् न हि अस्मात् अस्ति मे भयम् ।
अष्टमात् युवयोः गर्भात् मृत्युः मे विहितः किल ॥

शब्दार्थ—

प्रतियातु	३.	ले जाइये	अष्टमात्	१०.	आठवें
कुमारः	२.	सुकुमार बालक को	युवयोः	९.	आपके
अयम्	१.	आप इस	गर्भात्	११	गर्भ से उत्पन्न सन्तान से
न हि	६.	नहीं	मृत्युः	१३.	मृत्यु
अस्मात्	४	इससे	मे	१२.	मेरी
अस्ति	७.	है	विहितः	१४.	बताई गई है
मे भयम् ।	५.	मुझे भय	किल ॥	८.	क्योंकि निश्चय ही

श्लोकार्थ—आप इस प्रकार सुकुमार बालक को ले जाइये । इससे मुझे भय नहीं है । क्योंकि निश्चय ही आप दोनों के आठवें गर्भ से उत्पन्न सन्तान से मेरी मृत्यु बताई गई है ॥

एकषष्टितमः श्लोकः

तथेति सुतमादाय ययावानकदुन्दुभिः ।
नाभ्यनन्दत तद्वाक्यमसतोऽविजितात्मनः ॥६१॥

पदच्छेद— तथा इति सुतम् आदाय ययौ आनकदुन्दुभिः ।
न अभ्यनन्दत तत् वाक्यम् असतः अविजित आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

तथा	१.	ठीक है	न	१३.	नहीं किया
इति	२.	इस प्रकार कह कर	अभ्यनन्दत	१२.	अभिनन्दन
सुतम्	३.	पुत्र को	तत्	७.	उन्होंने
आदाय	४.	लेकर	वाक्यम्	११.	वचन का
ययौ	६.	चले गये	असतः	८.	दुष्ट तथा
आनकदुन्दुभिः ।	५.	वसुदेव जी	अविजित	९.	असंयत
			आत्मनः ॥	१०.	मन वाले उस कंस के

श्लोकार्थ—ठीक है। इस प्रकार कह कर पुत्र को लेकर वसुदेव जी चले गये। उन्होंने दुष्ट तथा असंयत मन वाले उस कंस के वचन का अभिनन्दन नहीं किया ॥

द्विषष्टितमः श्लोकः

नन्दाद्या ये व्रजे गोपा याश्चामीषां च योषितः ।
वृष्णयो वसुदेवाद्या देवक्याद्या यदुस्त्रियः ॥६२॥

पदच्छेद— नन्द आद्याः ये व्रजे गोपा याः च अमीषाम् च योषितः ।
वृष्णयः वसुदेव आद्याः देवकी आद्याः यदु स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

नन्द आद्याः	३.	नन्द आदि	वृष्णयः	१०.	वृष्णिवंशी यादव
ये	२.	जो	वसुदेव	८.	वसुदेव
व्रजे	१.	व्रज में रहने वाले	आद्या	९.	आदि
गोपाः	४.	गोप	देवकी	११.	देवकी
याः च	५.	और जो	आद्या	१२.	आदि
अमीषाम्	६.	उनकी	यदु	१३.	यदुवंश की
च योषितः ।	७.	स्त्रियाँ हैं वे	स्त्रियः ॥	१४.	स्त्रियाँ देवता हैं

श्लोकार्थ—व्रज में रहने वाले जो नन्द आदि गोप और जो उनकी स्त्रियाँ हैं वे, वसुदेव आदि ष्वृिणवंशी यादव और देवकी आदि यदुवंश की स्त्रियाँ सब देवता हैं ॥

त्रिषष्टितमः श्लोकः

सर्वे वै देवताप्राया उभयोरपि भारत ।
ज्ञातयो बन्धुसुहृदो ये च कंसमनुव्रताः ॥६३॥

पदच्छेद— सर्वे वै देवता प्रायाः उभयोः अपि भारत ।
ज्ञातयः बन्धु सुहृदः ये च कंसम् अनुव्रताः ॥

शब्दार्थ—

सर्वे	११.	ये सब	ज्ञातयः	५.	बान्धव
वै	१.	निश्चय ही	बन्धुः	४.	बन्धु
देवता	१३.	देवता	सुहृदः	६.	सगे सम्बन्धो
प्रायाः	१४.	ही हैं	ये	८.	जो
उभयोः	३.	नन्द वसुदेव दोनों के	च	७.	और
अपि	१२.	भी	कंसम्	९.	कंस के
भारत ।	२.	हे परीक्षित्	अनुव्रताः ॥	१०.	सेवक हैं

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! निश्चय ही नन्द, वसुदेव, दोनों के बन्धु-बान्धव, सगे सम्बन्धी और जो कंस के सेवक हैं, वे सब भी देवता ही हैं ॥

चतुःषष्टितमः श्लोकः

एतत् कंसाय भगवञ्छशंसाभ्येत्य नारदः ।
भूमेर्भारायमाणानां दैत्यानां च वधोद्यमम् ॥६४॥

पदच्छेद— एतत् कंसाय भगवान् शशंस अभ्येत्य नारदः ।
भूमेः भारायमाणानां दैत्यानाम् च वध उद्यमम् ॥

शब्दार्थ—

एतत्	७.	यह	भूमेः	८.	पृथ्वी का
कंसाय	३.	कंस के	भारायमाणानां	९.	भार बढ़ जाने के कारण
भगवान्	१.	भगवान्	दैत्यानाम्	१०.	दैत्यों के
शशंस	५.	बताया कि	च	६.	और
अभ्येत्य	४.	पास पहुँच कर	वध	११.	वध की
नारदः ।	२.	नारद जीने	उद्यमम् ॥	१२.	तैयारी की जा रही है

श्लोकार्थ—भगवान् नारद जी ने कंस के पास पहुँच कर बताया कि यह पृथ्वी का भार बढ़ जाने के कारण दैत्यों के वध की तैयारी की जा रही है ॥

पञ्चषष्टितमः श्लोकः

ऋषेर्विनिर्गमे कंसो यदून् मत्वा सुरानिति ।
देवक्या गर्भसम्भूतं विष्णुं च स्ववधं प्रति ॥६५॥

पदच्छेद— ऋषेः विनिर्गमे कंसः यदून् मत्वा सुरान् इति ।
देवक्याः गर्भं सम्भूतम् विष्णुम् च स्ववधम् प्रति ॥

शब्दार्थ—

ऋषेः	२.	देवर्षि नारद के	देवक्याः	९.	देवकी के
विनिर्गमे	३.	चले जाने पर	गर्भ	१०.	गर्भ से
कंसः	४.	कंस ने	सम्भूतम्	११.	उत्पन्न हुये
यदून्	५.	यदुवंशियों को	विष्णुम्	१२.	भगवान् विष्णु को
मत्वा	७.	मान लिया	च	८.	और
सुरान्	६.	देवता	स्ववधम्	१३.	अपने वध का
इति ।	१.	इस प्रकार	प्रति ॥	१४.	कारण समझ लिया

श्लोकार्थ—इस प्रकार देवर्षि नारद के चले जाने पर कंस ने यदुवंशियों को देवता मान लिया । और देवकी के गर्भ से उत्पन्न भगवान् विष्णु को अपने वध का कारण समझ लिया ॥

षट्षष्टितमः श्लोकः

देवकीं वसुदेवं च निगृह्य निगडैर्गृहे ।
जातं जातमहन् पुत्रं तयोरजनशङ्कया ॥६६॥

पदच्छेद— देवकीम् वसुदेवम् च निगृह्य निगडैः गृहे ।
जातम् जातम् अहन् पुत्रम् तयोः अजन शङ्कया ॥

शब्दार्थ—

देवकीम्	१.	देवकी	जातम्	८.	उत्पन्न
वसुदेवम्	३.	वसुदेव को	जातम्	९.	उत्पन्न हुए प्रत्येक
च	२.	और	अहन्	१३.	मारता गया
निगृह्य	५.	बाँधकर	पुत्रम्	१०.	पुत्र को
निगडैः	४.	जंजीरों से	तयोः	७.	फिर वह
गृहे ।	६.	घर में डाल दिया	अजन	११.	भगवान् विष्णु की
			शङ्कया ॥	१२.	शङ्का से

श्लोकार्थ—देवकी और वसुदेव को जंजीरों से बाँधकर घर में डाल दिया । फिर वह उत्पन्न हुये प्रत्येक पुत्र को भगवान् विष्णु की शङ्का से मारता गया ॥

सप्तषष्टितमः श्लोकः

मातरं पितरं भ्रातॄन् सर्वांश्च सुहृदस्तथा।
घ्नन्ति ह्यसुतृपो लुब्धा राजानः प्रायशो भुवि ॥६७॥

पदच्छेद— मातरम् पितरम् भ्रातॄन् सर्वान् च सुहृदः तथा।
घ्नन्ति हि असुतृपः लुब्धाः राजानः प्रायशः भुवि ॥

शब्दार्थ—

मातरम्	६.	माता	घ्नन्ति हि	१३.	मार डालते हैं
पितरम्	७.	पिता	असुतृपः	३.	प्राणों का पोषण करने वाले
भ्रातॄन्	८.	भाई	लुब्धाः	४.	लोभी
सर्वान्	१२.	सबको भी	राजानः	५.	राजा अपने स्वार्थ के लिये
च	११.	और	प्रायशः	२.	प्रायः
सुहृदः	९.	इष्ट मित्र बन्धु	भुवि ॥	१.	पृथ्वी में
तथा।	१०.	तथा			

श्लोकार्थ—पृथ्वी पर प्रायः प्राणों का पोषण करने वाले लोभी राजा अपने स्वार्थ के लिये माता, पिता भाई, इष्ट मित्र-बन्धु तथा और सबको भी मार डालते हैं ॥

अष्टषष्टितमः श्लोकः

आत्मानमिह सञ्जातं जानन् प्राग् विष्णुना हतम्।
महासुरं कालनेमिं यदुभिः स व्यरुध्यत ॥६८॥

पदच्छेद— आत्मानम् इह सञ्जातम् जानन् विष्णुना हतम्।
महा असुरं कालनेमिम् यदुभिः सः व्यरुध्यत ॥

शब्दार्थ—

आत्मानम्	२.	अपने को	महा	५.	महान्
इह	१०.	और अब मैं यहाँ	असुरम्	६.	असुर
सञ्जातम्	११.	उत्पन्न हुआ हूँ	कालनेमि	७.	कालनेमि था
जानन्	३.	यह जानते हुये कि मैं	यदुभिः	१२.	यदुवंशियों से
प्राक्	४.	पहले	सः	१.	कंस ने
विष्णुना	८.	भगवान् विष्णु ने	व्यरुध्यत ॥	१३.	विरोध कर लिया
हतम्।	९.	मुझे मारा था और			

श्लोकार्थ—कंस ने यह जानते हुये कि मैं पहले महान् असुर कालनेमि था, भगवान् विष्णु ने मुझे मारा था और अब मैं यहाँ उत्पन्न हुआ हूँ । यदुवंशियों से विरोध कर लिया ॥

एकोनसप्ततितमः श्लोकः

उग्रसेनं च पितरं यदुभोजान्धकाधिपम् ।
स्वयं निगृह्य बुभुजे शूरसेनान् महाबलः ॥६९॥

पदच्छेद— उग्रसेनम् च पितरम् यदु भोज अन्धक अधिपम् ।
स्वयम् निगृह्य बुभुजे शूरसेनान् महाबलः ॥

शब्दार्थ—

उग्रसेनम्	८. उग्रसेन को	स्वयम्	९. स्वयं
च	१. और	निगृह्य	१०. कैद करके
पितरम्	७. अपने पिता	बुभुजे	१२. राज्य करने लगा
यदुभोज	४. यदु भोज	शूरसेनान्	११. शूरसेन देश का
अन्धक	५. अन्धक वंश के	महा	२. महान्
अधिपम् ।	६. अधिनायक	बलः ॥	३. बलवान् कंस

श्लोकार्थ—और महान् बलवान् कंस यदु, भोज, अन्धक वंश के अधिनायक अपने पिता उग्रसेन को स्वयं कैद करके शूरसेन देश का राज्य करने लगा ॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

द्वितीयः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— प्रलम्बबकचाणूरतृणावर्तमहाशनैः ।
मुष्टिकारिष्टद्विविदपूतनाकेशिधेनुकैः ॥१॥

पदच्छेद— प्रलम्ब बक चाणूर तृणावर्त महाशनैः ।
मुष्टिक अरिष्ट द्विविद पूतना केशि धेनुकैः ।।

शब्दार्थ—

प्रलम्ब	१.	प्रलम्बासुर	मुष्टिक	६.	मुष्टिक
बक	२.	बकासुर	अरिष्ट	७.	अरिष्टासुर
चाणूर	३.	चाणूर	द्विविद	८.	द्विविद
तृणावर्त	४.	तृणावर्त	पूतना केशि	९.	पूतना, केशी और
महाशनैः ।	५.	अघासुर	धेनुकैः ।।	१०.	धेनुक आदि थे

श्लोकार्थ—उस कंस के साथी प्रलम्बासुर, बकासुर, चाणूर, तृणावर्त, अघासुर, मुष्टिक, अरिष्टासुर, द्विविद, पूतना, केशी और धेनुक आदि थे ।।

द्वितीयः श्लोकः

अन्यैश्चासुरभूपालैर्बाणभौमादिभिर्युतः ।
यदूनां कदनं चक्रे बली मागधसंश्रयः ॥२॥

पदच्छेद— अन्यैः च असुर भूपालैः बाण भौम आदिभिः युतः ।
यदूनाम् कदनम् चक्रे बली मागध संश्रयः ।।

शब्दार्थ—

अन्यैः	५.	अन्य	युतः ।	११.	युक्त होकर
च	४.	और	यदूनाम्	१२.	यदुवंशियों का
असुर	६.	दैत्य	कदनम्	१३.	संहार
भूपालैः	१०.	राजाओं से	चक्रे	१४.	करने लगा
बाण	७.	बाणासुर	बली	१.	अत्यन्त बलवान कंस
भौम	८.	भौमासुर	मागध	२.	मगध नरेश की
आदिभिः	९.	आदि	संश्रयः ।।	३.	सहायता पाकर

श्लोकार्थ—अत्यन्त बलवान् कंस मगध नरेश की सहायता पाकर और अन्य दैत्य बाणासुर, भौमासुर आदि राजाओं से युक्त होकर यदुवंशियों का संहार करने लगा ।।

तृतीयः श्लोकः

ते पीड़िता निविविशुः कुरुपाञ्चालकेकयान् ।
शाल्वान् विदर्भान् निषधान् विदेहान् कोशलानपि ॥३॥

पदच्छेद— ते पीडिताः निविविशुः कुरु पाञ्चाल केकयान् ।
शाल्वान् विदर्भान् निषधान् विदेहान् कोशलान् अपि ॥

शब्दार्थ—

ते	१.	वे लोग	शाल्वान्	६.	शाल्व
पीडिताः	२.	भयभीत होकर	विदर्भान्	७.	विदर्भ
निविविशुः	१२.	भाग गये	निषधान्	८.	निषध
कुरु	३.	कुरु	विदेहान्	९.	विदेह और
पाञ्चाल	४.	पाञ्चाल	कोशलान्	१०.	कोशल देशों में
केकयान्	५.	केकय	अपि ॥	११.	भी

श्लोकार्थ—वे लोग भयभीत होकर कुरु, पाञ्चाल, केकय, शाल्व, विदर्भ, निषध, विदेह और कोशल देशों में भी भाग गये ॥

चतुर्थः श्लोकः

एके तमनुरुन्धाना ज्ञातयः पर्युपासते ।
हतेषु षट्सु बालेषु देवक्या औग्रसेनिना ॥४॥

पदच्छेद— एके तम् अनुरुन्धानाः ज्ञातयः परि उपासते ।
हतेषु षट्सु बालेषु देवक्याः औग्रसेनिना ॥

शब्दार्थ—

एके	१.	कुछ	हतेषु	१०.	मार डाले
तम्	३.	ऊपर से उसके	षट्सु	८.	छः
अनुरुन्धाना	४.	अनुसार करते हुये	बालेषु	९.	बालक
ज्ञातयः	२.	लोग	देवक्या	७.	देवकी के
परि उपासते ।	५.	उसकी सेवा में लगे रहे	औग्रसेनिना ॥	६.	जब कंस ने

श्लोकार्थ—कुछ लोग ऊपर से उसके अनुसार काम करते हुये उसकी सेवा में लगे रहे । जब कंस ने देवकी के छः बालक मार डाले ॥

पञ्चमः श्लोकः

सप्तमो वैष्णवं धाम यमनन्तं प्रचक्षते ।
गर्भो बभूव देवक्या हर्षशोकविवर्धनः ॥५॥

पदच्छेद— सप्तमः वैष्णवम् धाम यम् अनन्तम् प्रचक्षते ।
गर्भः बभूव देवक्याः हर्ष शोक विवर्धनः ॥

शब्दार्थ -

सप्तमः	१. देवकी के सातवें	गर्भः	२. गर्भ में
वैष्णवम्	३. भगवान् के	बभूव	८. वे पधारे
धाम	४. अंशस्वरूप शेष जी	देवक्याः	९. जो देवकी के
यम्	५. जिन्हें	हर्ष	१०. हर्ष और
अनन्तम्	६. अनन्त भी	शोक	११. शोक को
प्रचक्षते ।	७. कहते हैं	विवर्धनः ॥	१२. बढ़ाने वाले थे

श्लोकार्थ—देवकी के सातवें गर्भ में भगवान् के अंशस्वरूप शेष जी, जिन्हें अनन्त भी कहते हैं, वे पधारे । जो देवकी के हर्ष और शोक को बढ़ाने वाले थे ॥

षष्ठः श्लोकः

भगवानपि विश्वात्मा विदित्वा कंसजं भयम् ।
यदूनां निजनाथानां योगमायां समादिशत् ॥६॥

पदच्छेद— भगवान् अपि विश्वात्मा विदित्वा कंसजम् भयम् ।
यदूनाम् निज नाथानाम् योगमायाम् सम् आदिशत् ॥

शब्दार्थ—

भगवान्	२. भगवान् ने	यदूनाम्	६. यदुवंशियों को
अपि	३. भी	निज	४. स्वयं को
विश्वात्मा	१. विश्व के आत्मा	नाथानाम्	५. स्वामी मानने वाले
विदित्वा	९. जानकर	योगमायाम्	१०. योगमाया को
कंसजम्	७. कंस के द्वारा	सम्	११. यह
भयम् ।	८. भयभीत	आदिशत् ॥	१२. आदेश दिया

श्लोकार्थ—विश्वात्मा भगवान् ने भी स्वयं को स्वामी मानने वाले यदुवंशियों को कंस के द्वारा भयभीत जानकर योगमाया को यह आदेश दिया ॥

सप्तमः श्लोकः

गच्छ देवि व्रजं भद्रे गोपगोभिरलङ्कृतम् ।
रोहिणी वसुदेवस्य भार्याऽऽस्ते नन्दगोकुले ।
अन्याश्च कंससंविग्ना विवरेषु वसन्ति हि ॥७॥

पदच्छेद-- गच्छ देवि व्रजम् भद्रे गोप गोभिः अलङ्कृतम् ।
रोहिणी वसुदेवस्य भार्या आस्ते नन्द गोकुले ।
अन्याः च कंस संविग्ना विवरेषु वसन्ति हि ॥

शब्दार्थ-- गच्छ	६.	जाओ	आस्ते	१२.	निवास करती हैं
देवि	१.	हे देवि !	नन्द	७.	वहाँ नन्द बाबा के
व्रजम्	५.	व्रज में	गोकुले	८.	गोकुल में
भद्रे	२.	कल्याणी तुम	अन्याः	१४.	उसकी अन्य पत्नियाँ
गोपगोभिः ।	३.	ग्वालों और गौओं से	च	१३.	और
अलङ्कृतम्।	४.	सुशोभित	कंस	१५.	कंस से
रोहिणी	११.	रोहिणी	संविग्ना	१६.	डरकर
वसुदेवस्य	९.	वसुदेव की	विवरेषु	१७.	गुप्त स्थानों में
भार्या	१०.	पत्नी	वसन्ति हि	१८.	रहती हैं

श्लोकार्थ—हे देवि कल्याणी ! तुम ग्वालों और गौओं से सुशोभित व्रज में जाओ । वहाँ नन्द बाबा के गोकुल में वसुदेव की पत्नी रोहिणी निवास करती हैं । और उनकी अन्य पत्नियाँ कंस से डर कर गुप्त स्थानों में रहती हैं ॥

अष्टमः श्लोकः

देवक्या जठरे गर्भं शेषाख्यं धाम मामकम् ।
तत् संनिकृष्य रोहिण्या उदरे संनिवेशय ॥८॥

पदच्छेद— देवक्या जठरे गर्भम् शेष आख्यम् धाम मामकम् ।
तत् संनिकृष्य रोहिण्याः उदरे संनिवेशय ॥

शब्दार्थ—देवक्याः	५.	देवकी के	मामकम् ।	१.	इस समय मेरा
जठरे	६.	उदर में	तत्	८.	उसे वहाँ से
गर्भम्	७.	गर्भरूप से स्थित है	संनिकृष्य	९.	निकालकर तुम
शेष	२.	शेष	रोहिण्याः	१०.	रोहिणी के
आख्यम्	३.	नामक	उदरे	११.	पेट में
धाम	४.	अंश	संनिवेशय ॥	१२.	रख दो

श्लोकार्थ—इस समय मेरा शेष नामक अंस देवकी के उदर में गर्भ रूप में स्थित है । उसे वहाँ से निकालकर तुम रोहिणी के पेट में रख दो ॥

नवमः श्लोकः

अथाहमंशभागेन देवक्याः पुत्रतां शुभे ।
प्राप्स्यामि त्वं यशोदायां नन्दपत्न्यां भविष्यसि ॥९॥

पदच्छेद— अथ अहम् अंश भागेन देवक्याः पुत्रताम् शुभे ।
प्राप्स्यामित्वम् यशोदायाम् नन्दपत्न्याम् भविष्यसि ॥

शब्दार्थ—

अथ	२. अब	प्राप्स्यामि	७. बनूँगा (और)
अहम्	३. मैं	त्वम्	८. तुम
अंशभागेन	४. अपने अंशों सहित	यशोदायाम्	११. यशोदा के गर्भ से
देवक्याः	५. देवकी का	नन्द	९. नन्द बाबा की
पुत्रताम्	६. पुत्र	पत्न्याम्	१०. पत्नी
शुभे ॥	१. हे कल्याणी	भविष्यसि ॥	१२. जन्म लेना

श्लोकार्थ—हे कल्याणी ! अब मैं अपने अंशों सहित देवकी का पुत्र बनूँगा । और तुम नन्द बाबा की पत्नी यशोदा के गर्भ से जन्म लेना ॥

दशमः श्लोकः

अर्चिष्यन्ति मनुष्यास्त्वां सर्वकामवरेश्वरीम् ।
धूपोपहारबलिभिः सर्वकामवरप्रदाम् ॥१०॥

पदच्छेद— अर्चिष्यन्ति मनुष्याः त्वाम् सर्वकामवरेश्वरीम् ।
धूप उपहार बलिभिः सर्वकामवर प्रदाम् ॥

शब्दार्थ—

अर्चिष्यन्ति	९. पूजा करेंगे	धूप	६. धूप दीप
मनुष्याः	४. सभी मनुष्य	उपहार	७. उपहार तथा
त्वाम्	५. तुम्हारी	बलिभिः	८. नैवेद्य आदि से
सर्व	१. समस्त	सर्वकाम	१०. तुम समस्त
काम	२. कामनाओं को	वर	११. वर दान
वरेश्वरीम् ।	३. पूर्ण करने वाली जानकर	प्रदाम ॥	१२. देने में समर्थ होओगी

श्लोकार्थ—समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली जानकर सभी मनुष्य तुम्हारी धूप दीप, उपहार तथा नैवेद्य आदि से पूजा करेंगे । तुम समस्त वरदान देने में समर्थ होओगी ॥

एकादशः श्लोकः

नामधेयानि कुर्वन्ति स्थानानि च नरा भुवि ।
दुर्गेति भद्रकालीति विजया वैष्णवीति च ॥११॥

पदच्छेद— नामधेयानि कुर्वन्ति स्थानानि च नराः भुवि ।
दुर्गाइति भद्रकालीइति विजया वैष्णवी इति च ॥

शब्दार्थ—

नामधेयानि	१०.	अनेक नामों से	दुर्गेति	५.	दुर्गा
कुर्वन्ति	११.	पुकारेंगे	भद्रकालीइति	६.	भद्रकाली
स्थानानि	३.	अनेक स्थान बनाकर	विजया	७.	विजया
च	४.	और	वैष्णवी	९.	वैष्णवी आदि
नराः	२.	लोग	च ॥	८.	और
भुवि ।	१.	पृथ्वी में			

श्लोकार्थ—पृथ्वी में लोग अनेक स्थान बनाकर और दुर्गा, भद्रकाली, विजया और वैष्णवी आदि अनेक नामों से पुकारेंगे ॥

द्वादशः श्लोकः

कुमुदा चण्डिका कृष्णा माधवी कन्यकेति च ।
माया नारायणीशानी शारदेत्यम्बिकेति च ॥१२॥

पदच्छेद— कुमुदा चण्डिका कृष्णा माधवी कन्यका इति च ।
माया नारायणी ईशानी शारदा इति अम्बिका इति च ॥

शब्दार्थ—

कुमुदा	१.	कुमुदा	माया	७.	माया
चण्डिका	२.	चण्डिका	नारायणी	८.	नारायणी
कृष्णा	३.	कृष्णा	ईशानी	९.	ईशानी
माधवी	४.	माधवी	शारदा	१०.	शारदा
कन्यका	५.	कन्या	इति	१३.	आदि
इति	६.	इत्यादि तथा	अम्बिकाइति	१२.	अम्बा
च ।	१४.	और भी अनेक नामों से पुकारेंगे	च ॥	११.	और

श्लोकार्थ—कुमुदा, चण्डिका, कृष्णा, माधवी, कन्या इत्यादि तथा माया नारायणी, ईशानी, शारदा और अम्बा आदि और भी अनेक नामों से पुकारेंगे ॥

त्रयोदशः श्लोकः

गर्भसंकर्षणात् तं वै प्राहुः संकर्षणं भुवि।
रामेति लोकरमणाद् बलं बलवदुच्छ्रयात् ॥१३॥

पदच्छेद— गर्भ संकर्षणात् तम् वै प्राहुः संकर्षणं भुवि।
रामेति लोक रमणात् बलम् बलवत् उच्छ्रयात् ॥

शब्दार्थ—

गर्भ	३.	देवकी के गर्भ से	**रामेति**	१०.	राम कहेंगे (और)
संकर्षणात्	४.	खींचे जाने के कारण	**लोक**	८.	लोक
तम्	२.	शेष जी को	**रमणात्**	९.	रञ्जन करने के कारण
वै	१.	निश्चय ही	**बलम्**	१३.	बलभद्र भी (कहेंगे)
प्राहुः	७.	कहेंगे	**बलवत्**	११.	बलवानों में
संकषणं	६.	संकर्षण	**उच्छ्रयात् ॥**	१२.	श्रेष्ठ होने कारण
भुवि।	५.	पृथ्वी पर लोग			

श्लोकार्थ—निश्चय ही शेष जी को देवकी के गर्भ से खींचे जाने के कारण पृथ्वी पर लोग संकर्षण कहेंगे। लोक रञ्जन करने के कारण राम कहेंगे। और बलवानों में श्रेष्ठ होने के कारण बलभद्र कहेंगे ॥

चतुर्दशः श्लोकः

सन्दिष्टैवं भगवता तथेत्योमिति तद्वचः।
प्रतिगृह्य परिक्रम्य गां गता तत् तथाकरोत् ॥१४॥

पदच्छेद— सन्दिष्टा एवम् भगवता तथा इति ओमिति तत् वचः।
प्रतिगृह्य परिक्रम्य गाम् गता तत् तथा अकरोत् ॥

शब्दार्थ—

सन्दिष्टा	३.	आदेश दिया तब माया ने	**प्रतिगृह्य**	९.	उसे स्वीकार करके
एवम्	२.	इस प्रकार	**परिक्रम्य**	१०.	उनकी परिक्रमा करके और
भगवता	१.	जब भगवान् ने	**गाम्**	११.	पृथ्वी लोक में
तथा	४.	जो आज्ञा	**गता**	१२.	जाकर
इति	५.	ऐसा कहकर	**तत्**	१३.	उसने
ओमिति	८.	शिरोधार्य	**तथा**	१४.	वैसा ही
तत्	६.	उनकी	**अकरोत् ॥**	१५.	किया
वचः।	७.	बात			

श्लोकार्थ—जब भगवान् ने आदेश दिया तब माया ने जो आज्ञा ऐसा कहकर उनकी बात शिरोधार्य की। उसे स्वीकार करके उनकी परिक्रमा करके और पृथ्वी लोक में जाकर उसने वैसा ही किया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

गर्भे प्रणीते देवक्या रोहिणीं योगनिद्रया ।
अहो विस्रंसितो गर्भ इति पौरा विचुक्रुशुः ॥१५॥

पदच्छेद— गर्भे प्रणीते देवक्याः रोहिणीम् योगनिद्रया ।
अहो विस्रंसितः गर्भः इति पौराः विचुक्रुशुः ॥

शब्दार्थ—

गर्भे	४.	गर्भ ले जाकर	अहो	१०.	हाय
प्रणीते	६.	रख दिया	विस्रंसितः	१२.	नष्ट हो गया
देवक्याः	३.	देवकी का	गर्भः	११.	बेचारी देवकी का गर्भ
रोहिणीम्	५.	रोहिणी के उदर में	इति	९.	कहने लगे
योग	१.	योग	पौराः	७.	तब पुरवासी लोग
निद्रया ।	२.	माया ने	विचुक्रुशुः ॥	८.	दुःख के साथ

श्लोकार्थ—योग माया ने देवकी का गर्भ ले जाकर रोहिणी के उदर में रख दिया । तब पुरवासी लोग दुःख के साथ कहने लगे—हाय बेचारी देवकी का गर्भ नष्ट हो गया ॥

षोडशः श्लोकः

भगवानपि विश्वात्मा भक्तानामभयङ्करः ।
आविवेशांशभागेन मन आनकदुन्दुभेः ॥१६॥

पदच्छेद— भगवान् अपि विश्वात्मा भक्तानाम् अभयङ्करः ।
आविवेश अंश भागेन मनः आनकदुन्दुभेः ॥

शब्दार्थ—

भगवान्	४.	भगवान्	आविवेश	१०.	प्रकट हो गये
अपि	५.	भी	अंश	६.	अपनी समस्त कलाओं
विश्वात्मा	३.	विश्वरूप	भागेन	७.	सहित
भक्तानाम्	१.	भक्तों को	मनः	९.	मन में
अभयङ्करः ।	२.	अभय करने वाले	आनकदुन्दुभेः ॥	८.	वसुदेव जी के

श्लोकार्थ—भक्तों को अभय करने वाले विश्वरूप भगवान् भी अपनी समस्त कलाओं सहित वसुदेव जी के मन में प्रकट हो गये ॥

सप्तदशः श्लोकः

स बिभ्रत् पौरुषं धाम भ्राजमानो यथा रविः ।
दुरासदोऽतिदुर्धर्षो भूतानां सम्बभूव ह ॥१७॥

पदच्छेद— सः बिभ्रत् पौरुषम् धाम भ्राजमानः यथा रविः ।
दुरासदः अति दुर्धर्षः भूतानाम् सम्बभूव ह ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	वसुदेव जी	रविः ।	५.	सूर्य के
बिभ्रत्	४.	धारण करने के कारण	दुरासदः	१०.	तेजस्वी और
पौरुषम्	२.	भगवान् की	अति	९.	अत्यधिक
धाम	३.	ज्योति को	दुर्धर्षः	११.	प्रभावशाली
भ्राजमानः	७.	तेजस्वी हो गये	भूतानाम्	८.	वे प्राणियों में
यथा	६.	समान	सम्बभूव ह ॥	१२.	हो गये

श्लोकार्थ—वसुदेव जी भगवान् की ज्योति को धारण करने के कारण सूर्य के समान तेजस्वी हो गये । वे प्राणियों में अत्यधिक तेजस्वी और प्रभावशाली हो गये ॥

अष्टादशः श्लोकः

ततो जगन्मङ्गलमच्युतांशं समाहितं शूरसुतेन देवी ।
दधार सर्वात्मकमात्मभूतं काष्ठा यथाऽऽनन्दकरं मनस्तः ॥१८॥

पदच्छेद— ततः जगत् मङ्गलम् अच्युत अंशम् समाहितम् शूरसुतेन देवी ।
दधार सर्वआत्मकम् आत्मभूतम् काष्ठा यथा आनन्दकरम् मनस्तः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तब	दधार	१२.	उसी प्रकार धारण किया
जगत्	२.	जगत् का	सर्वआत्मकम्	४.	सर्वात्मा एवम्
मङ्गलम्	३.	मङ्गल करने वाले	आत्मभूतम्	५.	आत्मस्वरूप
अच्युत	६.	भगवान् के	काष्ठा	१४.	प्राची दिशा
अंशम्	७.	उस अंश को	यथा	१३.	जैसे
समाहितम्	९.	आधान किये जाने पर	आनन्दकरम्	१५.	चन्द्रमा को धारण करती है
शूरसुतेन	८.	वसुदेव जी के द्वारा	मनस्तः ॥	११.	मन से
देवी ।	१०.	देवी देवकी ने विशुद्ध			

श्लोकार्थ—तब जगत् का मङ्गल करने वाले सर्वात्मा एवम् आत्मस्वरूप भगवान् के उस अंश को वसुदेव जी के द्वारा आधान किये जाने पर देवी देवकी ने विशुद्ध मन से उसी प्रकार धारण किया जैसे प्राची दिशा चन्द्रमा को धारण करती है ॥

एकोनविंशः श्लोकः

सा देवकी सर्वजगन्निवासनिवासभूता नितरां न रेजे ।
भोजेन्द्रगेहेऽग्निशिखेव रुद्धा सरस्वती ज्ञानखले यथा सती ॥१६॥

पदच्छेद— सा देवकी सर्व जगन्निवास निवासभूता नितराम् न रेजे ।
भोजेन्द्र गेहे अग्नि शिखा इव रुद्धा सरस्वती ज्ञानखले यथा सती ॥

शब्दार्थ—सा	१.	वह	भोजेन्द्र	७.	कंस के
देवकी	२.	देवकी	गेहे	८.	कारागार में
सर्व	३.	समस्त	अग्नि	१६.	दीपक का
जगन्निवास	४.	संसार के निवास स्थान	शिखेव	१७.	प्रकाश नहीं फैलता
निवासभूता	५.	भगवान् का निवास स्थान	रुद्धा	१५.	अवरुद्ध
नितराम्	६.	अत्यधिक	सरस्वती	१४.	श्रेष्ठ विद्या और
न	११.	नहीं हुई	ज्ञानखले	१३.	ज्ञानखल की
रेजे ।	१०.	सुशोभित	यथा	१२.	जैसे
			सती ॥	६.	होती हुई

श्लोकार्थ—वह देवकी समस्त संसार का निवास स्थान भगवान् के निवास स्थान होती हुई कंस के कारागार में अत्यधिक सुशोभित नहीं हुई जैसे ज्ञानखल की श्रेष्ठ विद्या और अवरुद्ध दीपक का प्रकाश नहीं फैलता है ॥

विंशः श्लोकः

तां वीक्ष्य कंसः प्रभया जितान्तरां विरोचयन्तीं भवनं शुचिस्मिताम् ।
आहैष मे प्राणहरो हरिर्गुहां ध्रुवं श्रितो यन्न पुरेयमीदृशी ॥२०॥

पदच्छेद—ताम्वीक्ष्य कंसः प्रभया अजित अन्तराम् विरोचयन्तीम् भवनम् शुचिस्मिताम् ।
आह एषः मे प्राण हरः हरिः गुहाम् ध्रुवम् श्रितः यत् न पुरा इयम् ईदृशी ॥

शब्दार्थ—ताम् वीक्ष्य	८.	उस देवकी को देखकर	एषः	११.	इसके
कंसः	१.	कंस ने	मे प्राण	१३.	मेरे प्राणों को
प्रभया	४.	अपनी कान्ति से	हरः हरिः	१४.	हरने वाले भगवान् ने
अजित	३.	भगवान्को धारण किये	गुहाम्	१२.	गर्भ में
अन्तराम्	२.	गर्भ में	ध्रुवम्	१०.	निश्चय ही
विरोचयन्तीं	६.	जगमगाते हुये	श्रितः	१५.	प्रवेश किया है
भवनम्	५.	वंदी गृह को	यत्	१६.	क्योंकि
शुचिस्मिताम्	७.	पवित्र मुसकान से युक्त	न	१६.	नहीं थी
आह	६.	कहा	पुरा इयम्	१७.	पहले यह
			ईदृशी ॥	१८.	ऐसी

श्लोकार्थ—कंस ने गर्भ में भगवान् को धारण किये अपनी कान्ति से बन्दीगृह को जगमगाते हुये पवित्र मुसकान से युक्त उस देवकी को देखकर कहा—निश्चय ही इसके गर्भ में मेरे प्राणों को हरने वाले भगवान् ने प्रवेश किया है । क्योंकि पहले यह ऐसी नहीं थी ॥

एकविंशः श्लोकः

किमद्य तस्मिन् करणीयमाशु मे यदर्थतन्त्रो न विहन्ति विक्रमम् ।
स्त्रियाः स्वसुर्गुरुमत्या वधोऽयं यशः श्रियं हन्त्यनुकालमायुः ॥२१॥

पदच्छेद — किम् अद्य तस्मिन् करणीयम् आशु मे यत् अर्थतन्त्रः न विहन्ति विक्रमम् ।
स्त्रियाः स्वसुः गुरुमत्याः वधः अयम् यशः श्रियम् हन्ति अनुकालम् आयुः ॥

शब्दार्थ —किम्	४.	क्या	स्त्रियाः	१०.	यह स्त्री
अद्य	१.	आज	स्वसुः	११.	बहन और
तस्मिन्	३.	इसके प्रति	गुरुमत्याः	१२.	गर्भवती है अतः
करणीयम्	५.	करना चाहिये	वधः	१४.	वध तो
आशु मे	२.	तत्काल मुझे	अयम्	१३.	इसका
यत्	६.	जिससे	यशः श्रियम्	१५.	मेरा यश लक्ष्मी और
अर्थतन्त्रः	७.	स्वार्थ वश होकर	हन्ति	१८.	नष्ट कर देगा
न विहन्ति	९.	नष्ट न हो	अनुकालम्	१७.	तत्काल
विक्रमम् ।	८.	मेरा पराक्रम	आयुः ॥	१६.	आयु को

श्लोकार्थ—आज तत्काल मुझे इसके प्रति क्या करना चाहिये । जिससे स्वार्थ वश होकर मेरा पराक्रम नष्ट न हो । यह स्त्री, बहन और गर्भवती है । अतः इसका वध तो मेरा यश लक्ष्मी और आयु को तत्काल नष्ट कर देगा ॥

द्वाविंशः श्लोकः

स एष जीवन् खलु सम्परेतो वर्तेत योऽत्यन्तनृशंसितेन ।
देहे मृते तं मनुजाः शपन्ति गन्ता तमोऽन्धं तनुमानिनो ध्रुवम् ॥२२॥

पदच्छेद— सः एष जीवन् खलु सम्परेतः वर्तेत यः अत्यन्त नृशंसितेन ।
देहे मृते मनुजाः शपन्ति गन्ता तमः अन्धम् तनुमानिनः ध्रुवम् ॥

शब्दार्थ—सः एष	२.	वह ऐसा मनुष्य तो	देहे मृते	९.	शरीर के मर जाने पर
जीवन्	३.	जीते जी	तम् मनुजाः	१०.	उसे लोग
खलु	१.	निश्चय ही	शपन्ति	११.	गाली देते हैं
सम्परेतः	४.	मरे के समान है	गन्ता	१६.	जाता है
वर्तेत	८.	व्यवहार करता है	तमः	१५.	घोर नरक में
यः	५.	जो	अन्धम्	१४.	अन्धकारमय
अत्यन्त	६.	अत्यन्त	तनुमानिनः	१३.	देहाभिमानियों के योग्य
नृशंसितेन ।	७.	क्रूरता का	ध्रुवम् ॥	१२.	निश्चय ही वह

श्लोकार्थ—निश्चय ही वह ऐसा मनुष्य तो जीते जी मरे के समान है, जो अत्यन्त क्रूरता का व्यवहार करता है । शरीर के मर जाने पर उसे लोग गाली देते हैं । निश्चय ही वह देहाभिमानियों के योग्य अन्धकारमय घोर नरक में जाता है ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

इति घोरतमाद् भावात् सन्निवृत्तः स्वयं प्रभुः ।
आस्ते प्रतीक्षंस्तज्जन्म हरेर्वैरानुबन्धकृत् ॥२३॥

पदच्छेद— इति घोर तमाद् भावात् सन्निवृत्तः स्वयम् प्रभुः ।
आस्ते प्रतीक्षन् तत् जन्म हरेः वैर अनुबन्धकृत् ॥

शब्दार्थ—

इति	२.	इस प्रकार	आस्ते	१४.	करने लगा
घोर	४.	कठिन	प्रतीक्षन्	१३.	प्रतीक्षा
तमाद्	३.	अत्यन्त	तत्	११.	उनके
भावात्	५.	निर्णय से	जन्म	१२.	जन्म की
सन्निवृत्तः	७.	हट गया (और)	हरेः	८.	भगवान् से
स्वयम्	६.	स्वयम्	वैर	९.	वैर की
प्रभुः ।	१.	सामर्थ्यवान् (वह कंस)	अनुबन्धकृत् ॥	१०.	गांठ बाँधकर

श्लोकार्थ—सामर्थ्यवान् वह कंस इस प्रकार अत्यन्त कठिन निर्णय से स्वयम् हट गया । भगवान् से वैर की गाँठ बाँधकर उनके जन्म की प्रतीक्षा करने लगा ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

आसीनः संविशंस्तिष्ठन् भुञ्जानः पर्यटन् महीम् ।
चिन्तयानो हृषीकेशमपश्यत् तन्मयं जगत् ॥२४॥

पदच्छेद— आसीनः संविशन् तिष्ठन् भुञ्जानः पर्यटन् महीम् ।
चिन्तयानः हृषीकेशम् अपश्यत् तत् मयम् जगत् ॥

शब्दार्थ—

आसीनः	१.	वह स्थित रहते हुये	चिन्तयानः	८.	चिन्तन करता हुआ
संविशन्	२.	उठते	हृषीकेशम्	७.	श्रीकृष्ण का
तिष्ठन्	३.	बैठते	अपश्यत्	१२.	देखने लगा
भुञ्जानः	४.	खाते और	तत्	१०.	उन श्रीकृष्ण
पर्यटन्	६.	घूमते हुये	मयम्	११.	मय
महीम् ।	५.	पृथ्वी पर	जगत् ॥	९.	समस्त संसार को

श्लोकार्थ—वह स्थित रहते हुये, उठते, बैठते, खाते और पृथ्वी पर घूमते हुये श्रीकृष्ण का चिन्तन करता हुआ समस्त संसार को उन श्रीकृष्णमय देखने लगा ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

ब्रह्मा भवश्च तत्रैत्य मुनिभिर्नारदादिभिः ।
देवैः सानुचरैः साकं गीर्भिर्वृषणमैडयन् ॥२५॥

पदच्छेद— ब्रह्मा भवः च तत्र एत्य मुनिभिः नारद आदिभिः ।
देवैः सानुचरैः साकम् गीर्भिः वृषणम् ऐडयन् ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्मा	२. ब्रह्मा	देवैः	८. समस्त देवताओं ने
भवः च	३. और शङ्कर जी	सानुचरैः	७. अनुचरों सहित
तत्र	१. वहाँ कारागार में	साकम्	६. साथ ही
एत्य	९. जाकर	गीर्भिः	११. सुमधुर वाणी से
मुनिभिः	५. ऋषियों सहित	वृषणम्	१०. श्रीहरि की
नारदआदिभिः	४. नारद इत्यादि	ऐडयन् ॥	१२. स्तुति की

श्लोकार्थ—वहाँ कारागार में ब्रह्मा और शंकर जी, नारद इत्यादि ऋषियों सहित साथ ही अनुचरों सहित समस्त देवताओं ने जाकर श्रीहरि की सुमधुर वाणी से स्तुति की ॥

षड्विंशः श्लोकः

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये ।
सत्यस्य सत्यमृतसत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः ॥२६॥

पदच्छेद — सत्यव्रतम् सत्य परम् त्रिसत्यम् सत्यस्य योनिम् निहितम् च सत्ये ।
सत्यस्य सत्यम् ऋत सत्यनेत्रम् सत्य आत्मकम् त्वाम् शरण् प्रपन्नाः ॥

शब्दार्थ—

सत्यव्रतम्	१. हे सत्य संकल्प	सत्यस्य	९. आप सत्य के भी
सत्य परम्	२. सत्य ही आपकी प्राप्ति का साधन है	सत्यम्	१०. सत्य (परमार्थ सत्य हैं)
त्रिसत्यम्	३. उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय में आप ही सत्य हैं	ऋतसत्यनेत्रम्	११. मधुर वाणी और समदर्शन के प्रवर्तक हैं
सत्यस्य	४. आप ही सत्य के	सत्य	१२. हे सत्य
योनिम्	५. कारण हैं	आत्मकम्	१३. स्वरूप परमात्मा, हम
निहितम्	८. स्थित हैं	त्वाम्	१४. आपकी
च	६. और	शरणम्	१५. शरण में
सत्ये ।	७. सत्यरूप में	प्रपन्नाः ॥	१६. आये हैं

श्लोकार्थ—हे सत्य संकल्प ! सत्य ही आपकी प्राप्ति का साधन है । उत्पत्ति-स्थिति प्रलय में आप ही सत्य के कारण हैं और सत्यरूप में स्थित हैं । आप परमार्थ सत्य हैं । आप मधुर वाणी और समदर्शन के प्रवर्तक हैं । हे सत्य स्वरूप परमात्मा ! हम आपकी शरण में आये हैं ॥

सप्तविंशः श्लोकः

एकायनोऽसौ द्विफलस्त्रिमूलश्चतूरसः पञ्चविधः षडात्मा ।
सप्तत्वगष्टविटपो नवाक्षो दशच्छदी द्विखगो ह्यादिवृक्षः ॥२७॥

पदच्छेद — एक अयनः असौ द्विफलः त्रिमूलः चतूरसः पञ्चविधः षडात्मा ।
सप्तत्वक् अष्टविटपः नव अक्षः दशच्छदी द्विखगः हि आदि वृक्षः ॥

शब्दार्थ—एक	४.	एक	सप्तत्वक्	११.	सात धातुरूपी छाल वाला
अयनः	५.	प्रकृतिरूप आश्रय वाला	अष्ट विटपः	१२.	आठ शाखाओं वाला
असौ	१.	यह संसार रूपी	नव	१३.	नव
द्विफलः	६.	दो फलों वाला	अक्षः	१४.	द्वार वाला
त्रिमूलः	७.	तीन अरों वाला	दशच्छदी	१५.	दश प्राणरूपी पत्ते वाला है
चतूरसः	८.	चार रसों वाला	द्विखगः हि	१६.	इस पर दो पक्षी विराजमान हैं
पञ्चविधः	६.	पाँच प्रकार से जानने योग्य	आदि	२.	सनातन
षडात्मा ।	१०.	छः स्वभाव वाला	वृक्षः ॥	३.	वृक्ष

श्लोकार्थ—यह संसार रूपी सनातन वृक्ष एक प्रकृति रूप आश्रय वाला, दो फलों वाला, तीन अरों वाला, चार रसों वाला, पाँच प्रकार से जानने योग्य, छः स्वभाव वाला, सात धातुरूपी छाल वाला, आठ शाखाओं वाला, नव द्वार वाला, दस प्राणरूपी पत्ते वाला है । इस पर दो पक्षी विराजमान हैं ॥

अष्टविंशः श्लोकः

त्वमेक एवास्य सतः प्रसूतिस्त्वं संनिधानं त्वमनुग्रहश्च ।
त्वन्मायया संवृतचेतसस्त्वां पश्यन्ति नाना न विपश्चितो ये ॥२८॥

पदच्छेद— त्वम् एक एव अस्य सतः प्रसूतिः त्वम् सत्निधानम् त्वम् अनुग्रहः च ।
त्वत् मायया संवृत्त चेतसः त्वाम् पश्यन्ति नाना न विपश्चितः ये ॥

शब्दार्थ—त्वम्	३.	आप	त्वत्	११.	आपकी
एकएव	४.	एक मात्र ही	मायया	१२.	माया से
अस्य	२.	इस संसार वृक्ष के	संवृत	१३.	आवृत्त हो रहा है
सतः	१.	कार्यरूप	चेतसः	१०.	जिसका चित्त
प्रसूतिः	५.	कारण हैं	त्वाम्	१४.	वे ही आपको
त्वम्	६.	आप में ही	पश्यन्ति	१६.	देखते हैं
सत्निधानम्	७.	इसका प्रलय होता है	नाना	१५.	अनेक रूपों में
त्वम् अनुग्रहः	८.	आप ही इसके पालक हैं	न	१८.	वे नहीं देखते हैं
च ।	६.	और	विपश्चितः ये ॥	१७.	जो विद्वान् हैं

श्लोकार्थ—कार्यरूप इस संसार वृक्ष के आप ही एक मात्र कारण हैं । आप में ही इसका प्रलय होता है । आप ही इसके पालक हैं । और जिनका चित्त आप की माया से आवृत हो रहा है, वे ही आपको अनेक रूपों में देखते हैं । जो विद्वान् हैं वे नहीं देखते है ॥

एकोनत्रिंश श्लोकः

बिभर्षि रूपाण्यवबोध आत्मा क्षेमाय लोकस्य चराचरस्य।
सत्त्वोपपन्नानि सुखावहानि सतामभद्राणि मुहुः खलानाम् ॥२९॥

पदच्छेद— बिभर्षि रूपाणि अवबोध आत्मा क्षेमाय लोकस्य चराचरस्य।
सत्त्व उपपन्नानि सुखावहानि सताम् अभद्राणि मुहुः खलानाम् ॥

शब्दार्थ—

बिभर्षि	७.	धारण करते हैं	सत्त्व	९.	सत्वमय होते हैं जो
रूपाणि	६.	अनेकों रूप	उपपन्नानि	८.	विशुद्ध अप्राकृत
अवबोधः	१.	आप ज्ञानस्वरूप !	सुखालहानि	११.	सुख देते हैं और
आत्मा	२.	आत्मा हैं	सताम्	१०.	सन्त पुरुषों को
क्षेमाय	५.	कल्याण के लिये	अभद्राणि	१४.	कष्ट देते हैं
लोकस्य	४.	संसार के	मुहुः	१३.	बार-बार
चराचरस्य।	३.	आप चराचर	खलानाम् ॥	१२.	दुष्टों को

श्लोकार्थ—आप ज्ञानस्वरूप आत्मा हैं। आप चराचर संसार के कल्याण के लिये अनेकों रूप धारण करते हैं। आपके वे रूप विशुद्ध अप्राकृत सत्त्वमय होते हैं जो सन्त पुरुषों को सुख देते हैं और दुष्टों को बार-बार कष्ट देते हैं ॥

त्रिंशः श्लोकः

त्वय्यम्बुजाक्षाखिलसत्त्वधाम्नि समाधिनाऽऽवेशितचेतसैके।
त्वत्पादपोतेन महत्कृतेन कुर्वन्ति गोवत्सपदं भवाब्धिम् ॥३०॥

पदच्छेद— त्वयि अम्बुज अक्ष अखिलसत्त्व धाम्नि समाधिना आवेशित चेतसा एके।
त्वत्पाद पोतेन महत् कृतेन कुर्वन्ति गोवत्स पदम् भव अब्धिम् ॥

शब्दार्थ—

त्वयि	४.	आपके	त्वत्पाद	१२.	आपके चरण कमलरूपी
अम्बुज	१.	कमल के समान कोमल	पोतेन	१३.	जहाज से
अक्ष	२.	नेत्रों वाले प्रभु	महत्	१०.	सन्तजनों द्वारा
अखिल सत्त्व	५.	समस्त प्राणियों के	कृतेन	११.	बताए गये
धाम्नि	६.	आश्रय स्वरूप रूप में	कुर्वन्ति	१८.	कर लेते हैं
समाधिना	८.	पूर्ण एकाग्रता से	गोवत्स	१६.	गाय के बछड़े के
आवेशित	९.	लगा पाते हैं (और)	पदम्	१७.	खुर के समान पार
चेतसः	७.	अपना चित्त	भव	१४.	भव
एके।	३.	विरले लोग ही	अब्धिम् ॥	१५.	सागर को

श्लोकार्थ—कमल के समान कोमल नेत्रों वाले प्रभु ! विरले लोग ही आपके समस्त प्राणियों के आश्रय स्वरूप रूप में अपना चित्त पूर्ण एकाग्रता से लगा पाते हैं और सन्तजनों द्वारा बताये गये आपके चरण कमल रूपी जहाज से भवसागर को गाय के बछड़े के खुर के समान पार कर लेते हैं ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

स्वयं समुत्तीर्य सुदुस्तरं द्युमन् भवार्णवं भीममदभ्रसौहृदाः ।
भवत्पदाम्भोरुहनावमत्र ते निधाय याताः सदनुग्रहो भवान् ॥३१॥

पदच्छेद— **स्वयम् समुत्तीर्य सुदुस्तरम् द्युमन् भव अर्णवम् भीमम् अदभ्र सौहृदाः ।**
भवत् पदाम्भोरुह नावम् अत्र ते निधाय याताः सत् अनुग्रहः भवान् ॥

शब्दार्थ—**स्वयम्**	८.	स्वयं	भवत्	१०.	आपके
समुत्तीर्य	९.	पार करके	पदाम्भोरुह	११.	चरण कमलों की
सुदुस्तरम्	४.	कष्ट से पार करने योग्य	नावम्	१२.	नौका को
द्युमन्	१.	हे प्रकाश स्वरूप प्रभो !	अत्र ते	१३.	यहीं वे
भव	६.	संसार	निधाय	१४.	स्थापित कर
अर्णवम्	७.	सागर को	याताः	१५.	जाते हैं
भीमम्	५.	अत्यन्त भयंकर	सत्	१६.	सत्पुरुषों पर
अदभ्र	२	समस्त प्राणियों से	अनुग्रहः	१८.	महान् कृपा है
सौहृदाः ।	३.	स्नेह करने वाले आपके भक्तजन	भवान् ॥	१७.	आपकी

श्लोकार्थ—हे प्रकाश स्वरूप प्रभो ! समस्त प्राणियों से स्नेह करने वाले आपके भक्तजन कष्ट से पार करने योग्य अत्यन्त भयंकर संसार सागर को स्वयं पार करके वे आपके चरण कमलों की नौका को यहीं स्थापित कर जाते हैं । सत्पुरुषों पर आपकी महान् कृपा है ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

येऽन्येऽरविन्दाक्षविमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः ।
आरुह्य कृच्छ्रेण परं पदं ततः पतन्त्यधोऽनादृतयुष्मदङ्घ्रयः ॥३२॥

पदच्छेद— **ये अन्ये अरविन्दाक्ष विमुक्त मानिनः त्वयि अस्तभावाद् अविशुद्ध बुद्धयः ।**
आरुह्य कृच्छ्रेण परम् पदम् ततः पतन्ति अधः अनादृत युष्मद् अङ्घ्रयः ॥

शब्दार्थ—**ये**	८.	जो	आरुह्य	१२.	पहुँचने के
अन्ये	९.	अन्य लोग हैं वे	कृच्छ्रेण	१०.	बड़े कष्ट पूर्वक
अरविन्दाक्ष	१	हे कमलनयन !	परम् पदम्	११.	ऊँचे पद पर
विमुक्त	२.	अपने को मुक्त	ततः	१३.	बाद
मानिनः	३.	मानने वाले	पतन्ति	१८.	गिर जाते हैं
त्वयि	४.	आपके प्रति	अधः	१७.	नीचे
अस्तभावाद्	५.	भक्ति-भाव से रहित	अनादृत	१६.	अनादर करने के कारण
अविशुद्ध	६.	अशुद्ध	युष्मद्	१४.	आप के
बुद्धयः ।	७.	बुद्धि वाले	अङ्घ्रयः ॥	१५.	चरण कमलों का

श्लोकार्थ—हे कमलनयन ! अपने को मुक्त मानने वाले आपके प्रति भक्ति-भाव से रहित अशुद्ध बुद्धि वाले जो अन्य लोग हैं वे बड़े कष्ट पूर्वक ऊँचे पद पर पहुँचने के बाद आपके चरण कमलों का अनादर करने के कारण नीचे गिर जाते हैं ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तथा न ते माधव तावकाः क्वचिद् भ्रश्यन्ति मार्गात्त्वयि बद्धसौहृदाः ।
त्वयाभिगुप्ता विचरन्ति निर्भया विनायकानीकपमूर्धसु प्रभो ॥३३॥

पदच्छेद— तथा न ते माधव तावकाः क्वचित् भ्रश्यन्ति मार्गात् त्वयि बद्धसौहृदाः ।
त्वया अभिगुप्ताः विचरन्ति निर्भयाः विनायक अनीकप मूर्धसु प्रभो ॥

शब्दार्थ—

तथा	६.	ज्ञानाभिमानियों की भाँति	बद्धसौहृदाः ।	४.	प्रीति बाँध ली है
न	१०.	नहीं होते हैं	त्वया	१२.	आप के द्वारा
ते	५.	वे	अभिगुप्ताः	१३.	रक्षित लोग
माधव	१.	हे भगवन् !	विचरन्ति	१८.	विचरण करते हैं
तावकाः	२.	आपके निज जन	निर्भयाः	१७.	निर्भय होकर
क्वचित्	८.	कभी भी	विनायक	१४.	विघ्न डालने वालों की
भ्रश्यन्ति	९.	पतित	अनीकप	१५.	सेना के सरदारों के
मार्गात्	७.	साधन मार्ग से	मूर्धसु	१६.	सिर पर पैर रखकर
त्वयि	३.	जिन्होंने आप में	प्रभो ॥	११.	हे प्रभो !

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! आपके निजजन जिन्होंने आप में प्रीति बाँध ली है । वे ज्ञानाभिमानियों की भाँति साधन मार्ग से कभी भी पतित नहीं होते हैं । हे प्रभो ! आपके द्वारा रक्षित लोग विघ्न डालने वालों की सेना के सरदारों के सिर पर पैर रखकर निर्भय होकर विचरण करते हैं ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

सत्त्वं विशुद्धं श्रयते भवान् स्थितौ शरीरिणां श्रेयउपायनं वपुः ।
वेदक्रियायोगतपःसमाधिभिस्तवार्हणं येन जनः समीहते ॥३४॥

पदच्छेद — सत्त्वम् विशुद्धं श्रयते भवान् स्थितौ शरीरिणाम् श्रेयउपायनम् वपुः ।
वेदक्रिया योगतपः समाधिभिः तव अर्हणम् येन जनः समीहते ॥

शब्दार्थ—

सत्त्वम्	६.	सत्त्व रूप	वपुः ।	७.	शरीर का
विशुद्धम्	५.	विशुद्ध	वेद क्रिया	१०.	वेद कर्मकाण्ड
श्रयते	८.	आश्रय लेते हैं	योगतपः	११.	अष्टाङ्ग योग तपस्या और
भवान्	१.	आप	समाधिभिः	१२.	समाधि के द्वारा
स्थितौ	२.	संसार की स्थिति के लिये	तव अर्हणम्	१३.	आप की आराधना
शरीरिणाम्	३.	शरीरधारियों को	येन जनः	९.	जिससे भक्त जन
श्रेय उपायनम्	४.	परम कल्याण प्रदान करने वाले	समीहते ॥	१४.	करते हैं

श्लोकार्थ—आप संसार की स्थिति के लिये शरीरधारियों को परम कल्याण प्रदान करने वाले विशुद्ध सत्त्वमय शरीर का आश्रय लेते हैं । जिससे भक्त जन वेद, कर्मकाण्ड, अष्टाङ्गयोग, तपस्या और समाधि के द्वारा आपकी आराधना करते हैं ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

सत्त्वं न चेद्धातरिदं निजं भवेद् विज्ञानमज्ञानभिदापमार्जनम् ।
गुणप्रकाशैरनुमीयते भवान् प्रकाशते यस्य च येन वा गुणः ॥३५॥

पदच्छेद— सत्त्वम् न चेत् धातः इदम् निजम् भवेत् विज्ञानम् अज्ञानभिदा अपमार्जनम्
गुण प्रकाशैः अनुमीयते भवान् प्रकाशते यस्य च येन वा गुणः ॥

शब्दार्थ—सत्त्वम्	४.	विशुद्ध सत्त्वमय	अपमार्जनम् ।	९.	नष्ट करने वाला
न	६.	न	गुण प्रकाशैः	१७.	गुणों की प्रकाशक वृत्तियों से
चेत्	२.	यदि	अनुमीयते	१८.	अनुमान ही होता है
धातः	१.	हे प्रभो !	भवान्	१६.	आपका तो
इदम्	३.	आपका यह	प्रकाशते	१५	प्रकाशित होते हैं ऐसे
निजम्	५.	निज स्वरूप	यस्य	१३.	जिसके हैं
भवेत्	७.	हो तो	च	११.	और
विज्ञानम्	१०.	अपरोक्ष ज्ञान ही न हो	येन वा	१४.	अथवा जिसके द्वारा
अज्ञानभिदा	८.	अज्ञान और तत्कृत भेद-भ व को	गुणः ॥	१२.	ये गुण

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! यदि आपका यह विशुद्ध सत्त्वमय निजस्वरूप न हो तो अज्ञान और तत् कृत भेद-भाव को नष्ट करने वाला अपरोक्ष ज्ञान ही न हो । और ये गुण जिसके हैं अथवा जिसके द्वारा प्रकाशित होते हैं ऐसे आपका तो गुणों की प्रकाशक वृत्तियों से अनुमान ही होता है ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

न नामरूपे गुणजन्मकर्मभिर्निरूपितव्ये तव तस्य साक्षिणः ।
मनोवचोभ्यामनुमेयवर्त्मनो देव क्रियायां प्रतियन्त्यथापि ॥३६॥

पदच्छेद — न नामरूपे गुण जन्म कर्मभिः निरूपितव्ये तव तस्य साक्षिणः ।
मनः वचोभ्याम् अनुमेय वर्त्मनाः देव क्रियायाम् प्रतियन्ति अथापि हि ॥

शब्दार्थ—न	११.	नहीं किया जा सकता	मनः वचोभ्याम्	२.	मन और वेदवाणी के द्वारा
नामरूपे	९.	नाम और रूप का	अनुमेय	४.	अनुमान मात्र होता है
गुण-जन्म	७.	आपके गुण जन्म और	वर्त्मनः	३.	आपके मार्ग का
कर्मभिः	८.	कर्म आदि के द्वारा आपके	देव	१.	हे प्रभो !
निरूपितव्ये	१०.	निरूपण	क्रियायाम्	१३.	क्रिया योगादि के द्वारा
तव तस्य	५.	आप उनके	प्रतियन्ति	१४.	आपको प्राप्त करते हैं
साक्षिणः ।	६.	साक्षी हैं	अथापि हि ॥	१२	फिर भी निश्चय ही आपके भक्तजन

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! मन और वेदवाणी के द्वारा आपके मार्ग का अनुमान मात्र होता है । आप उनके साक्षी हैं । आपके गुण, जन्म और कर्म आदि के द्वारा आपके नाम और रूप का निरूपण नहीं किया जा सकता । फिर भी निश्चय ही आपके भक्तजन क्रियायों आदि के द्वारा आपको प्राप्त करते हैं ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

शृण्वन् गृणन् संस्मरयंश्च चिन्तयन् नामानि रूपाणि च मङ्गलानि ते ।
क्रियासु यस्त्वच्चरणारविन्दयोराविष्टचेता न भवाय कल्पते ॥३७॥

पदच्छेद— शृण्वन् गृणन् संस्मरयन् च चिन्तयन् नामानि रूपाणि च मङ्गलानि ते ।
क्रियासु यः त्वत् चरणारविन्दयोः आविष्ट चेताः न भवाय कल्पते ॥

शब्दार्थ — शृण्वन्	७.	श्रवण	क्रियासु	१२.	आराधना में ही
गृणन्	८.	कीर्तन	यः	१.	जो पुरुष
संस्मरयन्	९.	स्मरण	त्वत्	२.	आपके
च चिन्तयन्	१०.	और ध्यान करते हैं	चरणारविन्दयोः	११.	और आपके चरण कमलों को
नामानि	४.	नामों	आविष्ट	१४.	लगाये रहते हैं
रूपाणि	६.	रूपों का	चेताः	१३.	चित्त
च	५.	और	न	१७.	नहीं
मङ्गलानि	३.	मङ्गलमय	भवाय	१६.	संसार चक्र में
ते ।	१५.	इन्हें	कल्पते ॥	१८.	आना पड़ता है

श्लोकार्थ—जो पुरुष आपके मङ्गलमय नामों और रूपों का श्रवण, कीर्तन, स्मरण और ध्यान करते हैं। और आप के चरण कमलों की आराधना में ही चित्त लगाये रहते हैं उन्हें संसार चक्र में नहीं आना पड़ता है ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

दिष्ट्या हरेऽस्या भवतः पदो भुवो भारोऽपनीतस्तव जन्मनेशितुः ।
दिष्ट्याङ्कितां त्वत्पदकैः सुशोभनैर्द्रक्ष्याम गां द्यां च तवानुकम्पिताम् ॥३८॥

पदच्छेद—दिष्ट्या हरेः अस्याः भवतः पदः भुवः भारः अपनीतः तव जन्मना ईशितुः ।
दिष्ट्या अङ्किताम् त्वत् पदकैः सुशोभनैः द्रक्ष्याम गाम् द्याम् च तव अनुकम्पिताम् ॥

शब्दार्थ—दिष्ट्या	५.	भाग्यवश	दिष्ट्या	९.	यह बड़े सौभाग्य की बात है
हरे	१.	दुःखों को हरने वाले प्रभो !	अङ्किताम्	१३.	चिह्नों से युक्त
अस्याः	७.	इसका	त्वत्	१०.	हम लोग आपके
भवतः पदः	४.	आपका चरण कमल ही है	पदकैः	११.	चरण कमलों के द्वारा
भुवः	३.	यह पृथ्वी तो	सुशोभनैः	१२.	विभूषित सुन्दर सुन्दर
भारः अपनीतः	८.	भार दूर हो गया	द्रक्ष्याम	१५.	देखेंगे और आप
तव जन्मना	६.	आपके अवतार से	गाम्	१४.	पृथ्वी को
ईशितुः ।	२	आप सर्वेश्वर हैं	द्याम्	१८.	द्युलोक को भी कृतार्थ करेंगे
			च तव	१६.	अपनी
			अनुकम्पिताम् ॥	१७	कृपा से

श्लोकार्थ—दुःखों को हरने वाले प्रभो ! आप सर्वेश्वर हैं। यह पृथ्वी तो आपका चरण ही है। भाग्यवश आपके अवतार से इसका भार दूर हो गया। यह बड़े सौभाग्य की बात है। हम लोग आपके चरण कमलों के द्वारा विभूषित सुन्दर सुन्दर चिह्नों से युक्त पृथ्वी को देखेंगे। और आप अपनी कृपा से द्युलोक को भी कृतार्थ करेंगे ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

न तेऽभवस्येश भवस्य कारणं विना विनोदं बत तर्कयामहे ।
भवो निरोधः स्थितिरप्यविद्यया कृता यतस्त्वय्यभयाश्रयात्मनि ॥३९॥

पदच्छेद— न ते अभवस्य ईश भवस्य कारणम् विना विनोदम् बत तर्कयामहे ।
भवः निरोधः स्थितिः अपि अविद्यया कृता यतः त्वयि अभय आश्रय आत्मनि ॥

शब्दार्थ—न	७.	कुछ नहीं कहा जा सकता है	तर्कयामहे ।	१०.	कह सकते हैं ।
ते	३.	आपके	भवः	११.	जगत् की
अभवस्य	२.	आप अजन्मा हैं	निरोधः	१३.	प्रलय
ईश	१.	हे प्रभो !	स्थितिः	१२.	स्थिति और
भवस्य	४.	जन्म के	अपि अविद्यया	१४.	भी अविद्या
कारणम्	५.	कारण के	कृता यतः	१५.	कृत ही है जो
विना	६.	सम्बन्ध में	त्वयि अभय	१६.	आप अभय स्वरूप
विनोदम्	९.	उसे लीला विनोद ही	आश्रय	१८.	स्थित हैं
बत	८.	वस्तुतः	आत्मनि ॥	१७.	परमात्मा में

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आप अजन्मा हैं । आपके जन्म के कारण के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा जा सकता है । वस्तुतः उसे लीला विनोद ही कह सकते हैं । जगत् की स्थिति और प्रलय भी अविद्या कृत ही है । जो अभय स्वरूप परमात्मा में स्थित है ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

मत्स्याश्वकच्छपनृसिंहवराहहंसराजन्यविप्रविबुधेषु कृतावतारः ।
त्वं पासि नस्त्रिभुवनं च यथाधुनेश भारं भुवो हर यदूत्तम वन्दनं ते ॥४०॥

पदच्छेद—मत्स्य अश्व कच्छप नृसिह वराह हंस राजन्य विप्र विबुधेषु कृतअवतारः त्वम् ।
त्वं,पासि नः त्रिभुवनम् यथा अधुना ईश भारम् भुवः हर यदूत्तम वन्दनम् ते ॥

शब्दार्थ—मत्स्य	१.	मत्स्य	पासि	१३.	रक्षा की है
अश्व	२.	हयग्रीव	नः	१०.	हमारी
कच्छप	३.	कच्छप	त्रिभुवनम्	११.	तीनों लोकों की और
नृसिह	४.	नृसिह	यथा	१२.	जिस प्रकार
वराह हंस	५.	वराह हंस	अधुना	१४.	उसी प्रकार अब
राजन्य	६.	राम	ईश	१५.	हे परमात्मा ! आप
विप्र विबुधेषु	७.	परशुराम और वामन	भारम् भुवः	१६.	पृथ्वी का भार
कृत अवतारः ।	८.	अवतार धारण करके	हर यदूत्तम	१७.	हरण कीजिये हे यदुनन्दन
त्वम्	९.	आप ने	वन्दनम् ते ॥	१८.	हम आपके चरणों की वन्दना करते हैं

श्लोकार्थ—मत्स्य, हयग्रीव, कच्छप, नृसिह, वराह हंस, राम, परशुराम और वामन अवतार धारण करके हमारी और तीनों लोकों की रक्षा जिस प्रकार की है उसी प्रकार अब हे परमात्मा ! आप पृथ्वी का भार हरण कीजिये । हे यदुनन्दन ! हम आपके चरणों की वन्दना करते हैं ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

दिष्ट्याम्ब ते कुक्षिगतः परः पुमानंशेन साक्षाद् भगवान् भवाय नः ।
मा भूद्भयं भोजपतेर्मुमूर्षोर्गोप्ता यदूनां भविता तवात्मजः ॥४१॥

पदच्छेद—दिष्ट्या अम्ब ते कुक्षिगतः परः पुमान् अंशेन साक्षात् भगवान् भवाय नः ।
मा भूद् भयम् भोजपते मुमूर्षोः गोप्ता यदूनाम् भविता तव आत्मजः ॥

शब्दार्थ—दिष्ट्या	२.	यह बड़े सौभाग्य की बात है	मा	१२.	नहीं
अम्ब	१.	माता जी !	भूत्	१३.	होना चाहिये क्योंकि
ते कुक्षिगतः	३.	आपकी कोख में	भयम्	११.	भय
परः पुमान्	८.	श्रेष्ठ पुरुष	भोजपतेः	१०.	अब कंस ने भी
अंशेन	९.	अंशों के साथ पधारे हैं	मुमूर्षोः	१४.	वह मरने वाला है
साक्षात्	६.	स्वयम्	गोप्ता	१७.	रक्षक
भगवान्	७.	भगवान्	यदूनाम्	१६.	यदुवंश का
भवाय	५.	कल्याण करने के लिये	भविता	१८.	होगा
नः ।	४.	हम सबका	तव आत्मजः ॥	१५.	आपका पुत्र

श्लोकार्थ—माता जी ! यह बड़े सौभाग्य की बात है कि आपकी कोख में हम सबका कल्याण करने के लिये स्वयम् भगवान् श्रेष्ठ पुरुष अंशों के सहित पधारे हैं । अब कंस से भी भय नहीं होना चाहिये । क्योंकि वह मरने वाला है । आपका पुत्र यदुवंश का रक्षक होगा ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

श्री शुक उवाच—इत्यभिष्टूय पुरुषं यद्रूपमनिदं यथा ।
ब्रह्मेशानौ पुरोधाय देवाः प्रतिययुर्दिवम् ॥४२॥

पदच्छेद— इति अभिष्टूय पुरुषम् यद्रूपम् अनिदम् यथा ।
ब्रह्म ईशानौ पुरोधाय देवाः प्रतिययुः दिवम् ॥

शब्दार्थ—इति	१.	इस प्रकार	ब्रह्म	८.	ब्रह्मा और
अभिष्टूय	३.	स्तुति करके	ईशानौ	९.	शङ्कर जी को
पुरुषम्	२.	भगवान् की	पुरोधाय	१०.	आगे करके
यद्रूपम्	४.	उसका जो रूप है	देवाः	७.	देवगण
अनिदम्	५.	वह ऐसा है नहीं कहा जा सकता	प्रतिययुः	१२.	चले गये
यथा ।	६.	लोग जैसा कहते हैं वैसा ही है	दिवम् ॥	११.	स्वर्ग में

श्लोकार्थ—इस प्रकार भगवान् की स्तुति करके उसका जो रूप है वह ऐसा है नहीं कहा जा सकता लोग जैसा कहते हैं वैसा ही है । देवगण ब्रह्मा और शंकर जी को आगे करके स्वर्ग में चले गये ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे गर्भगतविष्णोः ब्रह्मादिकृतस्तुतिः नाम द्वितीयः अध्यायः ॥२॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

तृतीयः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्री शुक उवाच — अथ सर्वगुणोपेतः कालः परमशोभनः ।
यर्ह्येवाजनजन्मर्क्षं शान्तर्क्षग्रहतारकम् ॥१॥

पदच्छेद— अथ सर्व गुण उपेतः कालः परम शोभनः ।
यर्हि एव अजन जन्म ऋक्षं शान्त ऋक्ष ग्रहतारकम् ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	यर्हि एव	८.	उस समय
सर्व	२.	समस्त	अजन जन्म	९.	भगवान् का जन्म हुआ
गुण	३.	गुणों से	ऋक्षं	१०.	नक्षत्र (रोहिणी) था
उपेतः	४.	युक्त	शान्त	१४.	शान्त थे
कालः	७.	समय आया	ऋक्ष	११.	आकाश में नक्षत्र
परम	५.	बहुत	ग्रह	१२.	ग्रह (और)
शोभनः ।	६.	सुहावना	तारकम् ॥	१३.	तारे

श्लोकार्थ—तदनन्तर समस्त गुणों से युक्त बहुत सुहावना समय आया । उस समय भगवान् का जन्म नक्षत्र रोहिणी था । आकाश में ग्रह और तारे शान्त थे ॥

द्वितीयः श्लोकः

दिशः प्रसेदुर्गगनं निर्मलोडुगणोदयम् ।
मही मङ्गलभूयिष्ठपुरग्रामव्रजाकरा ॥२॥

पदच्छेद— दिशः प्रसेदुः गगनम् निर्मल उडुगण उदयम् ।
मही मङ्गल भूयिष्ठ पुर-ग्राम व्रज आकरा ॥

शब्दार्थ—

दिशः	१.	दिशायें	मही	७.	पृथ्वी के
प्रसेदुः	२.	स्वच्छ प्रसन्न थीं	मङ्गल	११.	मङ्गलमय
गगनम्	३.	आकाश में	भूयिष्ठ	१२.	हो रही थी
निर्मल	४.	निर्मल	पुर-ग्राम	८.	बड़े-बड़े, नगर-गाँव
उडुगण	५.	तारे	व्रज	९.	अहीरों की बस्तियाँ
उदयम् ।	६.	जगमगा रहे थे	आकरा ॥	१०.	हीरे आदि के खानें

श्लोकार्थ—दिशायें स्वच्छ प्रसन्न थीं । आकाश में तारे जगमगा रहे थे । पृथ्वी के बड़े-बड़े नगर, गाँव, अहीरों की बस्तियाँ, हीरे की खानें मङ्गलमय हो रही थीं ॥

तृतीयः श्लोकः

नद्यः प्रसन्नसलिला ह्रदा जलरुहश्रियः ।

द्विजालिकुलसंनादस्तबका वनराजयः ॥३॥

पदच्छेद— नद्यः प्रसन्न सलिलाः ह्रदाः जलरुह श्रियः ।
द्विज अलिकुल संनाद स्तबकाः वन राजयः ॥

शब्दार्थ—

नद्यः	१.	नदियों का	द्विज	७.	पक्षी और
प्रसन्न	३.	निर्मल हो गया था	अलिकुल	८.	भौंरों का समूह
सलिला	२	जल	संनाद	९.	गुनगुना रहा था
ह्रदाः	४.	सरवरों में	स्तबकाः	१२.	पुष्पों के गुच्छों से युक्त थीं
जलरुह	५.	कमल	वन	१०.	वन में
श्रियः ।	६.	खिल रहे थे	राजयः ॥	११.	वृक्षों की डालियाँ

श्लोकार्थ—नदियों का जल निर्मल हो गया था। सरोवरों में कमल खिल रहे थे। पक्षी और भौंरों का समूह गुनगुना रहा था। वन में वृक्षों की डालियाँ पुष्पों के गुच्छों से युक्त थीं ॥

चतुर्थः श्लोकः

ववौ वायुः सुखस्पर्शः पुण्यगन्धवहः शुचिः ।

अग्नयश्च द्विजातीनां शान्तास्तत्र समिन्धत ॥४॥

पदच्छेद— ववौ वायुः सुख स्पर्शः पुण्य गन्धवहः शुचिः ।
अग्नयः च द्विजातोनाम् शान्ताः तत्र समिन्धत ॥

शब्दार्थ—

ववौ	८.	बह रही थी तथा	अग्नयः	१०.	अग्निहोत्रादि अग्नियाँ
वायुः	४.	वायु	च	११.	और
सुख	७.	सुखदान करती हुई	द्विजातीनाम्	९.	ब्राह्मणों की
स्पर्शः	५.	अपने स्पर्श से	शान्ताः	१२.	शान्त हुई
पुण्य	६.	पुण्यात्माओं को	तत्र	१.	उस समय
गन्धवहः	३.	शीतलमन्दसुगन्ध	समिन्धत ॥	१३.	प्रज्ज्वलित हो उठी थीं
शुचिः ।	२.	परम पवित्र			

श्लोकार्थ—उस समय परम पवित्र शीतल-मन्द-सुगन्ध वायु अपने स्पर्श से पुण्यात्माओं को सुखदान करती हुई बह रही थी। तथा ब्राह्मणों की शान्त हुई अग्निहोत्रादि अग्नियाँ प्रज्वलित हो उठी थीं ॥

पञ्चमः श्लोकः

मनांस्यासन् प्रसन्नानि साधूनामसुरद्रुहाम् ।
जायमानेऽजने तस्मिन् नेदुर्दुन्दुभयो दिवि ॥५॥

पदच्छेद— मनांसि आसन् प्रसन्नानि साधूनाम् असुर द्रुहाम् ।
जायमाने अजने तस्मिन् नेदुः दुन्दुभयः दिवि ॥

शब्दार्थ—

मनांसि	४. मन	जायमाने	९. अवतार के समय
आसन्	६. हो गये	अजने	८. भगवान् के
प्रसन्नानि	५. प्रसन्न	तस्मिन्	७. उस समय
साधूनाम्	३. सन्त पुरुषों के	नेदुः	१२. बजने लगीं
असुर	१. असुरों से	दुन्दुभयः	११. दुन्दुभियाँ
द्रुहाम् ।	२. द्रोह करने वाले	दिवि ॥	१०. स्वर्ग में

श्लोकार्थ—असुरों से द्रोह करने वाले सन्त पुरुषों के मन प्रसन्न हो गये । उस भगवान् के अवतार के समय स्वर्ग में दुन्दुभियाँ बजने लगीं ॥

षष्ठः श्लोकः

जगुःकिन्नरगन्धर्वास्तुष्टुवुः सिद्धचारणाः ।
विद्याधर्यश्च ननृतुरप्सरोभिः समं तदा ॥६॥

पदच्छेद— जगुः किन्नर गन्धर्वाः तुष्टुवुः सिद्ध चारणाः ।
विद्याधर्यः च ननृतुः अप्सरोभिः समम् तदा ॥

शब्दार्थ—

जगुः	४. गाने लगे (तथा)	विद्याधर्यः	९. विद्याधर
किन्नर	२. किन्नर और	च	८. और
गन्धर्वाः	३. गन्धर्व	ननृतुः	१२. नाचने लगे
तुष्टुवुः	७. स्तुति करने लगे	अप्सरोभिः	१०. अप्सराओं के
सिद्ध	५. सिद्ध और	समम्	११. साथ
चारणाः ।	६. चारण	तदा ॥	१. उस समय

श्लोकार्थ—उस समय किन्नर और गन्धर्व गाने लगे । तथा सिद्ध और चारण स्तुति करने लगे । और विद्याधर-अप्सराओं के साथ नाचने लगे ॥

सप्तमः श्लोकः

मुमुचुर्मुनयो देवाः सुमनांसि मुदान्विताः ।
मन्दं मन्दं जलधरा जगर्जुरनुसागरम् ॥७॥

पदच्छेद - मुमुचुः मुनयः देवाः सुमनांसि मुदा अन्विताः ।
मन्दम् मन्दम् जलधराः जगर्जुः अनु सागरम् ॥

शब्दार्थ—

मुमुचुः	६.	वर्षा करने लगे	मन्दम्	१०.	धीरे
मुनयः	२.	ऋषि-मुनि	मन्दम्	११.	धीरे
देवाः	१.	देवता	जलधराः	७.	जल से भरे बादल
सुमनांसि	५.	पुष्पों की	जगर्जुः	१२.	गर्जन करने लगे
मुदा	३.	आनन्द से	अनु	९.	पास आकर
अन्विताः।	४.	भर कर	सागरम् ॥	८.	समुद्र के

श्लोकार्थ—देवता, ऋषि-मुनि आनन्द में भरकर पुष्पों की वर्षा करने लगे। जल से भरे बादल समुद्र के पास जाकर धीरे-धीरे गर्जन करने लगे ॥

अष्टमः श्लोकः

निशीथे तमउद्भूते जायमाने जनार्दने ।
देवक्यां देवरूपिण्यां विष्णुः सर्वगुहाशयः ।
आविरासीद् यथा प्राच्यां दिशीन्दुरिव पुष्कलः ॥८॥

पदच्छेद— निशीथे तम उद्भूते जायमाने जनार्दने ।
देवक्यां देवरूपिण्याम् विष्णुः सर्व गुहाशयः ।
आवरिासीत् यथा प्राच्याम् दिशि इन्दुः इव पुष्कलः ॥

शब्दार्थ—

निशीथे	५.	रात्रि में	सर्व	८.	सबके
तम	३.	अन्धकार से	गुहाशयः।	९.	हृदय में विराजमान
उद्भूते	४.	युक्त	आविःआसीत्	१२.	प्रकट हुये
जायमाने	२.	अवतार के समय	यथा	११.	उसी प्रकार
जनार्दने।	१.	भगवान् के	प्राच्याम् दिशि	१४.	पूर्व दिशा में
देवक्या	७.	देवकी के गर्भ से	इन्दुः	१६.	चन्द्रमा का उदय होता है
देवरूपिण्याम	६.	देव रूपिणी	इव	१३.	जैसे
विष्णुः	१०.	भगवान् विष्णु	पुष्कलः ॥	१५.	समस्त कलाओं से युक्त

श्लोकार्थ—भगवान् के अवतार के समय अन्धकार से युक्त रात्रि में देव रूपिणी देवकी के गर्भ से सबके हृदय में विराजमान भगवान् विष्णु उसी प्रकार प्रकट हुये जैसे पूर्व दिशा में समस्त कलाओं से युक्त चन्द्रमा का उदय होता है ॥

नवमः श्लोकः

तमद्भुतं बालकमम्बुजेक्षणं चतुर्भुजं शङ्खगदार्युदायुधम् ।
श्रीवत्सलक्ष्मं गलशोभिकौस्तुभं पीताम्बरं सान्द्रपयोदसौभगम् ॥९॥

पदच्छेद— तम् अद्भुतम् बालकम् अम्बुज ईक्षणम् चतुर्भुजम् शङ्ख गदा अरि उद् आयुधम् ।
श्रीवत्स लक्ष्मम् गल शोभि कौस्तुभम् पीताम्बरम् सान्द्रपयोद सौभगम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	१५.	उस	श्रीवत्स	७.	वक्षः स्थल पर श्रीवत्स का
अद्भुतम्	१६.	आश्चर्यमय	लक्ष्मम्	८.	चिह्न
बालकम्	१७.	बालक को देखा	गल	९.	गले में
अम्बुज	१.	कमल के समान	शोभि	११.	सुशोभित
ईक्षणम्	२.	नेत्रों वाले	कौस्तुभम्	१०.	कौस्तुभ मणि से
चतुर्भुजम्	३.	चार भुजाओं वाले	पीताम्बरम्	१४.	पीताम्बर पहने
शङ्ख	४.	शङ्ख	सान्द्रपयोद	१२.	घने बादलों के समान
गदा अरि	५.	गदा-पद्म-चक्र	सौभगम् ॥	१३.	सुन्दर शरीर पर
उद्आयुधम् ।	६.	लिये हुये			

श्लोकार्थ—वसुदेव जी ने कमल के समान नेत्रों वाले, चार भुजाओं वाले, शङ्ख गदा-पद्म-चक्र लिये हुये, वक्षः स्थल पर श्रीवत्स का चिह्न, गले में कौस्तुभ मणि से सुशोभित, घने बादलों के समान सुन्दर शरीर पर पीताम्बर पहने उस आश्चर्यमय बालक को देखा ॥

दशमः श्लोकः

महार्हवैदूर्यकिरीटकुण्डलत्विषा परिष्वक्तसहस्रकुन्तलम् ।
उद्दामकाञ्च्यङ्गदकङ्कणादिभिर्विरोचमानं वसुदेव ऐक्षत ॥१०॥

पदच्छेद— महार्ह वैदूर्य किरीट कुण्डल त्विषा परिष्वक्त सहस्र कुन्तलम् ।
उद्दाम काञ्ची अङ्गद कङ्कण आदिभिः विरोचमानम् वसुदेवः ऐक्षत ॥

शब्दार्थ—

महार्ह	१.	बहुमूल्य	उद्दाम	९.	चमचमाती
वैदूर्य	२.	वैदूर्य मणि से	काञ्ची	१०.	करधनी
किरीट	३.	किरीट और	अङ्गद	११.	बाजू बन्द
कुण्डल	४.	कुण्डल की	कङ्कण	१२.	कङ्कण
त्विषा	५.	कान्ति से	आदिभिः	१३.	आदि से
परिष्वक्त	६.	सुन्दर	विरोचमानम्	१४.	सुशोभित उस बालक को
सहस्र	८.	सूर्य की किरणों के समान चमक रहे थे	वसुदेवः	१५.	वसुदेव जो ने
कुन्तलम् ।	७	घुंघराले बाल	ऐक्षत ॥	१६.	देखा

श्लोकार्थ—बहुमूल्य वैदूर्य मणि के किरीट और कुण्डल की कान्ति से सुन्दर घुंघराले बाल सूर्य की किरणों के समान चमक रहे थे । चमचमाती करधनी, बाजूबन्द, कङ्कण आदि से सुशोभित उस बालक को वसुदेव जी ने देखा ॥

एकादशः श्लोकः

स विस्मयोत्फुल्लविलोचनो हरिं सुतं विलोक्यानकदुन्दुभिस्तदा।
कृष्णावतारोत्सवसम्भ्रमोऽस्पृशन्मुदा द्विजेभ्योऽयुतमाप्लुतो गवाम् ॥११॥

पदच्छेद—सः विस्मयः उत्फुल्ल विलोचनः हरिम् सुतम् विलोक्य आनकदुन्दुभिः तदा।
कृष्ण अवतार उत्सव सम्भ्रमः अस्पृशन्मुदा द्विजेभ्यः अयुतम् आप्लुतः गवाम्॥

शब्दार्थ—सः	५.	उन	कृष्ण	१०.	श्री कृष्ण के
विस्मयः	२.	आश्चर्य से	अवतारः	११.	अवतार का
उत्फुल्ल	३.	खिले हुये	उत्सव	१२.	उत्सव मानाने की
विलोचनः	४.	नेत्रों वाले	सम्भ्रमः	१३	उतावली में
हरिम्	७.	भगवान् को	अस्पृशन् मुदा	१४.	तत्काल प्रसन्नतापूर्वक
सुतम्	८.	पुत्र रूप में	द्विजेभ्यः	१५.	ब्राह्मणों को
विलोक्य	९.	देखकर	अयुतम्	१६.	दस हजार
आनकदुन्दुभिः	६.	वसुदेव जो ने	आप्लुतः	१८.	संकल्प कर दिया
तदा।	१.	उस समय	गवाम्॥	१७.	गायों का

श्लोकार्थ—उस समय आश्चर्य से खिले हुये नेत्रों वाले उन वसुदेव जी ने भगवान् को पुत्र रूप में देखकर श्रीकृष्ण के अवतार का उत्सव मनाने को उतावली में तत्काल प्रसन्नतापूर्वक ब्राह्मणों को दस हजार गायों का संकल्प कर दिया॥

द्वादशः श्लोकः

अथैनमस्तौदवधार्य पूरुषं परं नताङ्गःकृतधीः कृताञ्जलिः।
स्वरोचिषा भारत सूतिकागृहं विरोचयन्तं गतभीः प्रभाववित् ॥१२॥

पदच्छेद—अथ एनम् अस्तौत् अवधार्य पूरुषम् परम् नत अङ्गः कृत धीः कृतअञ्जलिः।
स्वरोचिषा भारत सूतिका गृहम् विरोचयन्तम् गतभीः प्रभाववित्॥

शब्दार्थ—अथ	१६.	फिर	धीः	११.	अपनी बुद्धि को
एनम्	१७.	भगवान् की	कृतअञ्जलिः।	१५.	हाथ जोड़कर
अस्तौत्	१८.	स्तुति करने लगे	स्वरोचिषा	२.	अपनी कान्ति से
अवधार्य	८.	निश्चय हो जाने पर तथा	भारत	१.	हे परीक्षित्!
पूरुषम्	७.	पुरुष परमात्मा के बारे में	सूतिका	३.	सूतिका
परम्	६	परम	गृहम्	४.	गृह को
नत	१४.	झुकाकर तथा	विरोचयन्तम्	५.	प्रकाशित करने वाले
अङ्ग	१३.	मस्तक	गतभीः	१०.	वसुदेव जी का भय जाता रहा
कृत	१२.	स्थिर करके	प्रभाववित्॥	९.	उनका प्रभाव जान लेने पर

श्लोकार्थ—हे परीक्षित्! अपनी कांन्ति से सूतिका गृह को प्रकाशित करने वाले परम पुरुष परमात्मा के बारे में निश्चय हो जाने पर तथा उनका प्रभाव जान लेने पर वसुदेवजी का भय जाता रहा। उन्होंने अपनी बुद्धि को स्थिर करके मस्तक झुकाकर हाथ जोड़कर फिर भगवान् की स्तुति करने लगे॥

त्रयोदशः श्लोकः

वसुदेव उवाच—विदितोऽसि भवान् साक्षात् पुरुषः प्रकृतेः परः।
केवलानुभवानन्दस्वरूपः सर्वबुद्धिदृक् ॥१३॥

पदच्छेद— विदितः असि भवान् साक्षात् पुरुषः प्रकृतेः परः।
केवल अनुभव आनन्द स्वरूपः सर्व बुद्धि दृक् ॥

शब्दार्थ—

विदितः	१.	मैं जान गया कि	केवल	९.	केवल
असि	७.	हैं	अनुभव	१०.	अनुभव और
भवान्	२.	आप	आनन्द	११.	आनन्दरूप हैं
साक्षात्	५.	साक्षात्	स्वरूपः	८.	आपका स्वरूप
पुरुषः	६.	पुरुषोत्तम	सर्व	१२.	आप समस्त
प्रकृतेः	३.	प्रकृति से	बुद्धि	१३.	बुद्धियों के
परः।	४.	परे	दृक् ॥	१४.	एकमात्र साक्षी हैं

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! मैं जान गया कि आप प्रकृति से परे साक्षात् पुरुषोत्तम हैं। आपका स्वरूप केवल अनुभव और आनन्द स्वरूप है। आप समस्त बुद्धियों के एकमात्र साक्षी हैं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

स एव स्वप्रकृत्येदं सृष्ट्वाग्रे त्रिगुणात्मकम्।
तदनु त्वं ह्यप्रविष्टः प्रविष्ट इव भाव्यसे ॥१४॥

पदच्छेद— सः एव स्वप्रकृत्या इदम् सृष्ट्वा अग्रे त्रिगुण आत्मकम्।
तत् अनु त्वम् हि प्रविष्टः अप्रविष्टः इव भाव्यसे ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	आप	तत्	९.	तत्
एव	२.	ही	अनु	१०.	पश्चात्
स्वप्रकृत्या	४.	अपनी प्रकृति से	त्वम् हि	११.	आप
इदम्	५.	इस	अप्रविष्टः	१२.	उसमें प्रविष्ट न होकर भी
सृष्ट्वा	८.	सृष्टि करके	प्रविष्टः	१३.	प्रविष्ट के
अग्रे	३.	सर्ग के आदि में	इव	१४.	समान
त्रिगुण	६.	निर्गुण	भाव्यसे ॥	१५.	जान पड़ते हैं
आत्मकम्	७.	स्वरूप जगत् की			

श्लोकार्थ—आप ही सर्ग के आदि में अपनी प्रकृति से इस निर्गुण स्वरूप की सृष्टि करके तत् पश्चात् आप उसमें प्रविष्ट न होकर भी प्रविष्ट के समान जान पड़ते हैं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

यथेमेऽविकृता भावास्तथा ते विकृतैः सह ।
नानावीर्याः पृथग्भूता विराजं जनयन्ति हि ॥१५॥

पदच्छेद— यथा इमे अविकृताः भावाः तथा ते विकृतैः सह ।
नानावीर्याः पृथक् भूताः विराजम् जनयन्ति हि ॥

शब्दार्थ—

यथा	१. जैसे	सह ।	८. साथ रहते हैं
इमे	२. ये	नाना	११. अनेक
अविकृताः	४. पृथक् पृथक् हैं	वीर्याः	१२. कार्यों को उत्पन्न करके
भावः	३. कारण तत्त्व	पृथक्	९. वे अलग-अलग
तथा	५. उसी प्रकार	भूताः	१०. रहकर भी
ते	६. वे इन्द्रियादि	विराजम्	१३. ब्रह्माण्ड को
विकृतैः	७. सोलह विकारों के	जनयन्ति हि ॥	१४. उत्पन्न करते हैं

श्लोकार्थ—जैसे ये कारण तत्त्व पृथक्-पृथक् हैं । उसी प्रकार वे इन्द्रियादि सोलह विकारों के साथ रहते हैं । वे अलग-अलग रहकर भी अनेक कार्यों को उत्पन्न करके ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करते हैं ॥

षोडशः श्लोकः

सन्निपत्य समुत्पाद्य दृश्यन्तेऽनुगता इव ।
प्रागेव विद्यमानत्वान्न तेषामिह सम्भवः ॥१६॥

पदच्छेद— सन्निपत्य समुत्पाद्य दृश्यन्ते अनुगताः इव ।
प्राक् एव विद्यामानत्वात् न तेषाम् इह सम्भवः ॥

शब्दार्थ—

सन्निपत्य	१. इसमें मिलकर	एव	७. ही
समुत्पाद्य	२. इसे उत्पन्न करके	विद्यमानत्वात्	८. वहाँ विद्यमान होने से
दृश्यन्ते	५. दिखाई देते हैं	न	१२. नहीं हो सकती है
अनुगताः	३. वे अनुप्रविष्ट के	तेषाम्	९. उनको
इव ।	४. समान	इह	१०. यहाँ
प्राक्	६. पहले के जैसे	सम्भवः ॥	११. उत्पत्ति

श्लोकार्थ—इसमें मिलकर इसे उत्पन्न करके वे अनुप्रविष्ट के समान दिखाई देते हैं । पहले के जैसे ही वहाँ विद्यमान होने से उनकी यहाँ उत्पत्ति नहीं हो सकती है ॥

सप्तदशः श्लोकः

एवं भवान् बुद्ध्यनुमेयलक्षणैर्ग्राह्यैर्गुणैः सन्नपि तद्गुणाग्रहः ।
अनावृतत्वाद् बहिरन्तरं न ते सर्वस्य सर्वात्मन आत्मवस्तुनः ॥१७॥

पदच्छेद— **एवम् भवान् बुद्धि अनुमेय लक्षणैः ग्राह्यैः गुणैः सन् अपि तत्गुण आग्रहः ।**
अनावृतत्वात् बहिः अन्तरम् न ते सर्वस्य सर्व आत्मनः आत्म वस्तुनः ॥

शब्दार्थ—**एवम्**	१.	इस प्रकार	अनावृतत्वात्	१०.	गुणों में रहने के कारण
भवान् बुद्धि	२.	आप के बुद्धि के द्वारा	बहिः	१२.	बाहर है न
अनुमेय	४.	अनुमान ही होता है	अन्तरम्	१३.	भीतर है (क्योंकि)
लक्षणैः	३.	गुणों के लक्षणों का	न ते	११.	आप में न तो
ग्राह्यैः	६.	ग्रहण से	सर्वस्य	१४.	आप सब के
गुणैः	५.	उन गुणों के	सर्व	१५.	आप सब कुछ हैं
सन्अपि	७.	भी	आत्मनः	१६.	सबके अन्तर्यामी और
तत् गुण	८.	आपके गुणों का	आत्म	१७.	आत्म
आग्रहः ।	९.	ग्रहण नहीं होता	वस्तुनः ॥	१८.	स्वरूप हैं

श्लोकार्थ—इस प्रकार बुद्धि के द्वारा आपके गुणों के लक्षणों का अनुमान ही होता है । उन गुणों के ग्रहण से भी आपके गुणों का ग्रहण नहीं होता । गुणों में रहने के कारण आप में न तो बाहर है न भीतर है । क्योंकि आप सबके सब कुछ हैं । सबके अन्तर्यामी और आत्म स्वरूप हैं ॥

अष्टादशः श्लोकः

य आत्मनो दृश्यगुणेषु सन्निति व्यवस्यते स्वव्यतिरेकतोऽबुधः ।
विनानुवादं न च तन्मनीषितं सम्यग् यतस्त्यक्तमुपाददत् पुमान् ॥१८॥

पदच्छेद— **यः आत्मनः दृश्य गुणेषु सन् इति व्यवस्यते स्व व्यतिरेकतः अबुधः ।**
विना अनुवादम् न च तत् मनीषितम् सम्यक् यतः त्यक्तम् उपाददत् पुमान् ॥

शब्दार्थ—**यः आत्मनः**	१.	जो अपने इन	**विना**	१२.	अलावा
दृश्य गुणेषु	२.	दृश्य गुणों को	**अनुवादम्**	११.	वाक् विलास के
सन्	५.	हुआ	**न च**	१३.	कुछ नहीं सिद्ध होते
इति	७.	वह	**तत् मनीषितम्**	१०.	विचार करने पर वे
व्यवस्यते	६.	सत्य समझता है	**सम्यक्**	९.	भलीभाँति
स्व	३.	अपने से	**यतः**	१४.	क्योंकि
व्यतिरेकतः	४.	पृथक् मानता	**त्यक्तम्**	१५.	बाधित विषय को सत्य मानने वाला
अबुधः ।	८.	अज्ञानी है	**उपाददत् पुमान् ॥**	१६.	व्यक्ति बुद्धिमान् कैसे हो सकता है

श्लोकार्थ—जो अपने इन दृश्य गुणों को अपने से पृथक् मानता हुआ सत्य समझता है वह अज्ञानी है । भलीभाँति विचार करने पर वे वाक् विलास के अलावा कुछ नहीं सिद्ध होता है । क्योंकि बाधित विषय को सत्य मानने वाला व्यक्ति बुद्धिमान् कैसे हो सकता है ॥

एकोनविंशः श्लोकः

त्वत्तोऽस्य जन्मस्थितिसंयमान् विभो वदन्त्यनीहादगुणादविक्रियात् ।
त्वयीश्वरे ब्रह्मणि नो विरुध्यते त्वदाश्रयत्वादुपचर्यते गुणैः ॥१९॥

पदच्छेद—त्वत्तः अस्य जन्म स्थिति संयमान् विभो वदन्ति अनीहात् अगुणात् अविक्रियात् ।
त्वयि ईश्वरे ब्रह्मणि नः विरुध्यते त्वत् आश्रय त्वात् उपचर्यते गुणैः ॥

शब्दार्थ—त्वत्तः	२.	लोग आप में ही	त्वयि	१०.	आप
अस्य	३.	इस जगत् की	ईश्वरे	१२.	परमात्मा में यह बात
जन्मस्थिति	४.	सृष्टि स्थिति	ब्रह्मणि	११.	पर ब्रह्म
संयमान्	५.	और प्रलय	नो	१४.	नहीं है (क्योंकि)
विभो	१.	हे प्रभो !	विरुध्यते	१३.	असंगत
वदन्ति	६.	बताते हैं	त्वत्	१५.	आपके
अनीहात्	७.	वह इच्छारहित	आश्रयत्वात्	१६.	आश्रय होने के कारण
अगुणात्	८.	गुण रहित और	उपचर्यते	१८.	आरोप किया जाता है
अविक्रियात् ।	९.	विकार रहित हैं	गुणैः	१७.	गुणों का आप में ही

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! लोग आप में ही इस जगत् की सृष्टि, स्थिति और प्रलय बताते हैं । वह इच्छा-रहित, गुण रहित और विकार रतिह है । आप परब्रह्म परमात्मा में यह बात असंगत नहीं है । क्योंकि आपके आश्रय होने के कारण गुणों का आप में ही आरोप किया जाता है ।।

विंशः श्लोकः

स त्वं त्रिलोकस्थितये स्वमायया बिभर्षि शुक्लं खलु वर्णमात्मनः ।
सर्गाय रक्तं रजसोपबृंहितं कृष्णं च वर्णं तमसा जनात्यये ॥२०॥

पदच्छेद— सः त्वम् त्रिलोक स्थितये स्वमायया बिर्भषि शुलकम् खलु वर्णम् आत्मनः ।
सर्गाय रक्तम् रजसः उपबृंहितम् कृष्णम् च वर्णम् तमसा जनात्यये ।।

शब्दार्थ—सः त्वम्	२.	जैसे आप	सर्गाय	१०.	उत्पत्ति के लिये
त्रिलोक	४.	तीन लोकों की	रक्तम्	१२.	रक्त वर्ण
स्थितये	५.	रक्षा करने के लिये	रजसः	११.	रजः प्रधान
स्वमायया	६.	अपनी माया से	उपबृंहितम्	१८.	स्वीकार करते हैं
बिर्भषि	९.	धारण करते हैं	कृष्णम्	१६.	कृष्ण
शुक्लम्	७.	सत्त्वमय शुक्ल	च	१३.	और
खलु	१.	निश्चय ही	वर्णम्	१७.	वर्ण
वर्णम्	८.	वर्ण	तमसा	१५.	तमोगुण प्रधान
आत्मनः ।	३.	स्वयम्	जनात्यये ।।	१४.	प्रलय के समय

श्लोकार्थ—निश्चय ही जैसे आप स्वयम् तीनों लोकों की रक्ष करने के लिये अपनी माया से सत्त्वमय शुक्ल वर्ण धारण करते हैं । उत्पत्ति के लिये रजः प्रधान रक्त वर्ण और प्रलय के समय तमोगुण प्रधान कृष्ण वर्ण स्वीकार करते हैं ।।

एकविंशः श्लोकः

त्वमस्य लोकस्य विभो रिरक्षिषुर्गृहेऽवतीर्णोऽसि ममाखिलेश्वर।
राजन्यसंज्ञासुरकोटियूथपैर्निर्व्यूह्यमाना निहनिष्यसे चमूः ॥२१॥

पदच्छेद— त्वम् अस्य लोकस्य विभो रिरक्षिषुः गृहे अवतीर्णः असि मम अखिलेश्वरः ।
राजन्य संज्ञा असुर कोटि यूथपैः निर्व्यूह्यमाना निहनिष्यसे चमूः ।।

शब्दार्थ—

त्वम्	३.	आपने	अखिलेश्वरः ।	१.	सबके स्वामी
अस्य	४.	इस	राजन्य	१२.	राजा
लोकस्य	५.	संसार की	संज्ञा	१३.	नाम देने वाले
विभो	२.	हे प्रभो !	असुर	१५.	असुर
रिरक्षिषुः	६.	रक्षा के लिये	कोटि	१४.	करोड़ों
गृहे	८.	घर में	यूथपैः	१६.	सेनापतियों की
अवतीर्णः	९.	अवतार लिया	निर्व्यूह्यमाना	११.	बड़ी सेना वाले
असि	१०.	है	निहनिष्यसे	१८.	संहार करेंगे
मम	७.	मेरे	चमूः ।।	१७.	सेना का आप

श्लोकार्थ—सबके स्वामी हे प्रभो ! आपने इस संसार की रक्षा के लिये मेरे घर में अवतार लिया है। बड़ी सेनाओं वाले अपने को राजा नाम देने वाले करोड़ों असुर सेनापतियों की सेना का आप संहार करेंगे ।।

द्वाविंशः श्लोकः

अयं त्वसभ्यस्तव जन्म नौ गृहे श्रुत्वाग्रजांस्ते न्यवधीत् सुरेश्वर।
स तेऽवतारं पुरुषैः समर्पितं श्रुत्वाधुनैवाभिसरत्युदायुधः ॥२२॥

पदच्छेद— अयम् तु असभ्यः तव जन्म नौ गृहे श्रुत्वा अग्रजान् ते न्यवधीत् सुरेश्वर ।
सः ते अवतारम् पुरुषैः समर्पितम् श्रुत्वा अधुना एव अभिसरति उद् आयुधः ।।

शब्दार्थ—

अयम् तु	२.	यह कंस तो	सः	१४.	वह
असभ्यः	३.	बड़ा दुष्ट है	ते अवतारम्	१२.	आपका अवतार
तव जन्म	४.	आपका अवतार	पुरुषैः	१०.	दूतों के द्वारा
नौ गृहे	५.	हमारे घर में	समर्पितम्	११.	कथित
श्रुत्वा	६.	सुनकर इसने	श्रुत्वा	१३.	सुनकर
अग्रजान्	८.	बड़े भाइयों को	अधुना एव	१५.	अभी-अभी ही
ते	७.	आपके	अभिसरति	१८.	दौड़ा आयेगा
न्यवधीत्	९.	मार डाला है	उद्	१७.	लेकर
सुरेश्वर ।	१.	हे देवों के आराध्य देव !	आयुधः ।।	१६.	हाथ में शस्त्र

श्लोकार्थ—हे देवों के आराध्य देव ! यह कंस तो बड़ा दुष्ट है। हमारे घर में आपका अवतार सुनकर इसने आपके बड़े भाइयों को मार डाला है। दूतों के द्वारा कथित आपका अवतार सुनकर वह अभी-अभी हाथ में शस्त्र लेकर दौड़ा आयेगा ।।

त्रयोविंशः श्लोकः

श्री शुक उवाच—अथैनमात्मजं वीक्ष्य महापुरुषलक्षणम् ।
देवकी तमुपाधावत् कंसाद् भीता शुचिस्मिता ॥२३॥

पदच्छेद— अथ एनम् आत्मजम् वीक्ष्य महापुरुष लक्षणम् ।
देवकी तम् उपाधावत् कंसात् भीता शुचिस्मिता ।।

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	देवकी	१०.	देवकी
एनम्	४.	अपने इस	तम्	११.	उनकी
आत्मजम्	५.	पुत्र को	उपाधावत्	१२.	स्तुति करने लगीं
वीक्ष्य	६.	देखकर	कंसात्	७.	कंस से
महापुरुष	२.	महापुरुषों के	भीता	८.	भयभीत होकर
लक्षणम् ।	३.	लक्षणों से युक्त	शुचिस्मिता ।।	९.	पवित्र भाव से मुसकराते हुये

श्लोकार्थ—तदनन्तर महापुरुषों के लक्षणों से युक्त अपने इस पुत्र को देखकर कंस से भयभीत होकर पवित्र भाव से मुसकारती हुई देवकी उनकी स्तुति करने लगीं ।।

चतुर्विंशः श्लोकः

देवक्युवाच—रूपं यत् तत् प्राहुरव्यक्तमाद्यं ब्रह्म ज्योतिर्निर्गुणं निर्विकारम् ।
सत्तामात्रं निर्विशेषं निरीहं स त्वं साक्षात् विष्णुरध्यात्मदीपः॥२४॥

पदच्छेद— रूपम् यत् तत् प्राहुः अव्यक्तम् आद्यम् ब्रह्म ज्योतिः निर्गुणम् निर्विकारम् ।
सत्तामात्रम् निर्विशेषम् निरीहम् सः त्वम् साक्षात् विष्णुः अध्यात्म दीपः ।।

शब्दार्थ—

रूपम्	३.	रूप को	सत्तामात्रम्	१२.	विशुद्ध सत्ता के रूप में कहा गया है
यत्	२.	जिस	निर्विशेषम्	१०.	विशेषण रहित
तत्	१.	वेदों ने आपके	निरीहम्	११.	इच्छा रहित
प्राहुः	९.	बताया है (जिसे)	सः	१३.	ऐसे
अव्यक्तम्	४.	अव्यक्त	त्वम्	१६.	आप
आद्यम्	५.	सब का कारण	साक्षात्	१७.	साक्षात्
ब्रह्मज्योतिः	६.	ब्रह्म ज्योति स्वरूप	विष्णुः	१८.	विष्णु भगवान् हैं
निर्गुणम्	७.	गुणों से रहित और	अध्यात्म	१४.	बुद्धि आदि के
निर्विकारम् ।	८.	विकारहीन	दीपः ।।	१५.	प्रकाशक

श्लोकार्थ—वेदों ने आपके जिस रूप को अव्यक्त, सबका कारण, ब्रह्म ज्योति स्वरूप, गुणों से रहित और विकारहीन बताया है । जिसे विशेषण रहित, इच्छा रहित, विशुद्ध सत्ता के रूप में कहा गया है । ऐसे बुद्धि आदि के प्रकाशक आप साक्षात् विष्णु भगवान् हैं ।।

पञ्चविंशः श्लोकः

नष्टे लोके द्विपरार्धावसाने महाभूतेष्वादिभूतं गतेषु ।
व्यक्तेऽव्यक्तं कालवेगेन याते भवानेकः शिष्यते शेषसंज्ञः ॥२५॥

पदच्छेद— नष्टे लोके द्विपरार्ध अवसाने महाभूतेषु आदि भूतम् गतेषु ।
व्यक्ते अव्यक्तम् कालवेगेन याते भवान् एकः शिष्यते शेष संज्ञः ॥

शब्दार्थ—नष्टे	४.	नष्ट हो जाने पर	व्यक्ते	१०.	व्यक्त जगत् के
लोके	५.	लोकों के	अव्यक्तम्	११.	अव्यक्त में
द्विपरार्ध	२.	दो परार्ध	कालवेगेन	१.	काल शक्ति के प्रभाव से
अवसाने	३.	समाप्त हो जाने और	याते	१२.	लीन हो जाने पर
महाभूतेषु	७.	महाभूत	भवान्	१५.	आप ही
आदि	८.	आदि में	एकः	१४.	एक मात्र
भूतम्	६.	भूतों के	शिष्यते	१६.	शेष रह जाते हैं
गतेषु ।	९.	लीन हो जाने पर	शेष संज्ञः ॥	१३.	शेष नाम वाले

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! कालशक्ति के प्रभाव से दो परार्ध समाप्त हो जाने पर लोकों के नष्ट हो जाने पर भूतों के महाभूत आदि में लीन हो जाने पर व्यक्त जगत् के अव्यक्त में लीन हो जाने पर शेष नाम वाले एक मात्र आप ही शेष रह जाते हैं ॥

षड्विंशः श्लोकः

योऽयं कालस्तस्य तेऽव्यक्तबन्धो चेष्टामाहुश्चेष्टते येन विश्वम् ।
निमेषादिर्वत्सरान्तो महीयांस्तं त्वेशानं क्षेमधाम प्रपद्ये ॥२६॥

पदच्छेद— यः अयम् कालः तस्य ते अव्यक्तबन्धो चेष्टाम् आहुः चेष्टते येन विश्वम् ।
निमेष आदिः वत्सरान्तः महीयान् तम् त्वा ईशानम् क्षेम धाम प्रपद्ये ॥

शब्दार्थ—यः अयम्	२.	जो यह	निमेष आदि	४.	निमेष से लेकर
कालः	७.	काल है	वत्सरान्तः	५.	वर्ष पर्यन्त का
ते तस्य	३.	उसकी	महीयान्	६.	सीमातीत
अव्यक्तबन्धों	१.	प्रकृति के प्रवर्तक प्रभो	तम् त्वा	१७.	उन
चेष्टाम्	११.	उसे आपकी लीला मात्र	ईशानम्	१३.	सर्वशक्तिमान् और
आहुः	१२.	कहते हैं	क्षेम	१४.	परम कल्याण के
चेष्टते	१०.	चेष्टा कर रहा है	धाम	१५.	आश्रय
येन	८.	जिससे	प्रपद्ये ॥	१६.	आपकी मैं शरण लेती हूँ
विश्वम् ।	९.	यह सारा विश्व			

श्लोकार्थ—हे प्रकृति के प्रवर्तक प्रभो ! जो यह आपका निमेष से लेकर वर्ष पर्यन्त का सीमातीत काल है, जिससे यह सारा विश्व चेष्टा कर रहा है, उसे आपकी लीलामात्र कहते हैं । सर्वशक्तिमान् और परम कल्याण के आश्रय आपकी मैं शरण लेती हूँ ॥

सप्तविंशः श्लोकः

मर्त्यो मृत्युव्यालभीतः पलायन् लोकान् सर्वान्निर्भयं नाध्यगच्छत् ।
त्वत्पादाब्जं प्राप्य यदृच्छयाद्य स्वस्थः शेते मृत्युरस्मादपैति ॥२७॥

पदच्छेद— मर्त्यः मृत्यु व्यालभीतः पलायन् लोकान् सर्वान् निर्भयम् न अध्यगच्छत् ।
त्वत् पाद अब्जम् प्राप्य यदृच्छया अद्य स्वस्थः शेते मृत्युः अस्मात् अपैति ।।

शब्दार्थ—मर्त्यः	१.	मरणधर्मा मानव	त्वत् पाद	१२.	आपके चरण
मृत्यु	२.	मृत्युरूप	अब्जम् प्राप्य	१३.	कमलों को प्राप्त करके
व्यालभीतः	३.	सर्प से भयभीत होकर	यदृच्छया	११.	सहज ही
पलायन्	६.	भागते हुये कहीं भी	अद्य	१०.	वही आज
लोकान्	५.	लोकों में	स्वस्थः	१४.	सुख पूर्वक
सर्वान्	४.	समस्त	शेते	१५.	सो रहा है
निर्भयम्	७.	अभय स्थान	मृत्युः	१७.	मृत्यु भी
न	८.	नहीं	अस्मात्	१६.	इससे
अध्यगच्छत् ।	९.	प्राप्त कर पाता है	अपैति ।।	१८.	दूर भाग गयी है

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! मरणधर्मा मानव मृत्युरूप सर्प से भयभीत होकर समस्त लोकों में भागते हुये कहीं भी अभयस्थान नहीं प्राप्त कर पाता है । वही आज सहज ही आपके चरण कमलों को प्राप्त करके सुखपूर्वक सो रहा है । इससे मृत्यु भी दूर भाग गयी है ।।

अष्टाविंशः श्लोकः

स त्वं घोरादुग्रसेनात्मजान्नस्त्राहि त्रस्तान् भृत्यवित्रासहासि ।
रूपं चेदं पौरुषं ध्यानधिष्ण्यं मा प्रत्यक्षं मांसदृशां कृषीष्ठाः ॥२८॥

पदच्छेद—सः त्वम् घोरात् उग्रसेन आत्मजात् नः त्राहि त्रस्तान् भृत्य वित्रासहा असि ।
रूपम् च इदम् पौरुषम् ध्यान धिष्ण्यम् मा प्रत्यक्षम् मांसदृशाम् कृषीष्ठाः ।।

शब्दार्थ—सः त्वम्	४.	ऐसे आप	रूपम्	१३.	चतुर्भुजरूप
घोरात्	७.	भयंकर कंस से	च	१०.	और
उग्रसेन	५.	उग्रसेन के	इदम्	११.	आपका यह
आत्मजात्	६.	पुत्र	पौरुषम्	१२.	ऐश्वर्यमय
नः त्राहि	९.	हमलोगों की रक्षा करिये	ध्यान	१४.	ध्यान का
त्रस्तान्	८.	भयभीत	धिष्ण्यम्	१५.	विषय है इसे
भृत्य	१.	आप भक्त	मा प्रत्यक्षम्	१७.	मत प्रकट
वित्रासहा	२.	भयहारी	मांसदृशाम्	१६.	चर्मचक्षु वालों के सामने
असि ।	३.	हो अतः	कृषीष्ठाः ।।	१८.	कीजिये

श्लोकार्थ—आप भक्तभयहारी हो । अतः ऐसे आप उग्रसेन के पुत्र भयंकर कंस से भयभीत हम लोगों की रक्षा करिये । और आपका यह ऐश्वर्यमय चतुर्भुजरूप ध्यान का विषय है । इसे चर्म चक्षुवालों के सामने मत प्रकट कीजिये ।।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

जन्म ते मय्यसौ पापो मा विद्यान्मधुसूदन।
समुद्विजे भवद्धेतोः कंसादहमधीरधीः ॥२९॥

पदच्छेद— जन्म ते मयि असौ पापः मा विद्यात् मधुसूदनः।
समुद्विजे भवत् हेतोः कंसात् अहम् अधीर धीः ॥

शब्दार्थ—

जन्म	५.	जन्म की बात	समुद्विजे	१२.	बहुत डर रही हूँ
ते	४.	आपके	भवत्	९.	आपके
मयि	३.	मुझसे	हेतोः	१०.	लिये
असौ पापः	२.	इस पापी कंस को	कंसात्	११.	कंस से
मा	७.	न हो	अहम्	८.	मैं
विद्यात्	६.	मालूम	अधीर	१३.	मैं अधीर
मधुसूदनः।	१.	हे मधुसूदन!	धीः ॥	१४.	बुद्धि हो रही हूँ

श्लोकार्थ—हे मधुसूदन! इस पापी कंस को मुझसे आपके जन्म की बात मालूम न हो। मैं आपके लिये कंस से बहुत डर रही हूँ। मैं अधीर बुद्धि हो रही हूँ॥

त्रिंशः श्लोकः

उपसंहर विश्वात्मन्नदो रूपमलौकिकम्।
शङ्खचक्रगदापद्मश्रिया जुष्टं चतुर्भुजम् ॥३०॥

पदच्छेद— उपसंहर विश्व आत्मन् अदः रूपम् अलौकिकम्।
शङ्ख चक्रगदा पद्म श्रिया जुष्टम् चतुर्भुजम् ॥ ॥

शब्दार्थ—

उपसंहर	१२.	छिपा लीजिये	शङ्ख	४.	शङ्ख
विश्व	१.	हे विश्व-	चक्र-गदा	५.	चक्र-गदा और
आत्मन्	२.	रूप परमात्मा	पद्म	६.	कमल की
अदः	३.	अपने इस	श्रिया	७.	शोभा से
रूपम्	११.	रूप को	जुष्टम्	८.	युक्त
अलौकिकम्।	९.	अलौकिक	चतुर्भुजम्॥	१०.	चतुर्भुज

श्लोकार्थ—हे विश्वरूप परमात्मा! अपने इस शङ्ख, चक्र, गदा और कमल की शोभा से युक्त अलौकिक चर्तुभुज रूप को छिपा लीजिये॥

एकत्रिंशः श्लोकः

विश्वं यदेतत् स्वतनौ निशान्ते यथावकाशं पुरुषः परो भवान् ।
बिभर्ति सोऽयं मम गर्भगोऽभूदहो नृलोकस्य विडम्बनं हि तत् ॥३१॥

पदच्छेद - विश्वम् यदेतत् स्वतनौ निशान्ते यथा अवकाशम् पुरुषः परः भवान् ।
बिभर्ति सः अयम् मम गर्भगः अभूत् अहो नृलोकस्य विडम्बनम् ति तत् ॥

शब्दार्थ—

विश्वम्	४.	विश्व को	बिभर्ति	८.	धारण करते हैं
यदेतत्	३.	इस	सः	९.	वही
स्वतनौ	५.	अपने शरीर में	अयम्	१२.	आप
निशान्ते	१.	प्रलय के समय	मम गर्भगः	१३.	मेरे गर्भवासी
यथा	७.	समान	अभूत्	१४.	हुये
अवकाशम्	६.	आकाश के	अहो	१५.	आश्चर्य है
पुरुषः	११.	पुरुष	नृलोकस्य	१८.	अद्भुत
परः	१०.	परम	विडम्बनम्	१७.	मनुष्य लीला है
भवान् ।	२.	आप जो	हि तत् ॥	१६.	यह आपकी

श्लोकार्थ—प्रलय के समय आप जो इस विश्व को अपने शरार में आकाश के समान धारण करते हैं, वही परम पुरुष आप मेरे गर्भवासी हुये, आश्चर्य है। यह आपकी अद्भुत मनुष्य लीला है ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

श्री भगवानुवाच—त्वमेव पूर्वसर्गेऽभूः पृश्निः स्वायम्भुवे सति ।
तदायं सुतपा नाम प्रजापतिरकल्मषः ॥३२॥

पदच्छेद— त्वम् एव पूर्व सर्गे अभूः पृश्निः स्वायम्भुवे सति ।
तदा अयम् सुतपाः नाम प्रजापतिः अकलमषः ॥

शब्दार्थ—

त्वम् एव	४.	आप ही	तदा	७.	उस समय
पूर्व सर्गे	१.	पूर्व सृष्टि में	अयम्	८.	ये वसुदेव
अभूः	६.	थी	सुतपाः	९.	सुतपा
प्रश्निः	५.	पृश्नि	नाम	१०.	नाम के
स्वायम्भुवे	२.	स्वायम्भुवमन्वन्तर में	प्रजापतिः	१२.	प्रजापति थे
सति ।	३.	होने पर	अकलमषः ॥	११.	निष्पाप

श्लोकार्थ—पूर्व सृष्टि में स्वायम्भुवमन्वन्तर होने पर आप ही पृश्नि थीं। उस समय ये वसुदेव सुतपा नाम के निष्पाप प्रजापति थे। ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

युवां वै ब्रह्मणाऽऽदिष्टौ प्रजासर्गे यदा ततः ।
सन्नियम्येन्द्रियग्रामं तेपाथे परमं तपः ॥३३॥

पदच्छेद— युवाम् वै ब्रह्मणा आदिष्टौ प्रजासर्गे यदा ततः ।
सन्नियम्य इन्द्रिय ग्रामम् तेपाथे परमम् तपः ॥

शब्दार्थ—

युवाम् वै	३.	तुम दोनों को	सन्नियम्य	९.	दमन करके
ब्रह्मणा	२.	ब्रह्मा जी ने	इन्द्रिय	७.	इन्द्रियों के
आदिष्टौ	५.	आज्ञा दी	ग्रामम्	८.	समूह का
प्रजासर्गे	४.	सन्तान उत्पन्न करने की	तेपाथे	१२.	की
यदा	१.	जब	परमम्	१०.	आपने परम
ततः ।	६.	तब	तपः ॥	११.	तपस्या

श्लोकार्थ—जब ब्रह्मा जी ने तुम दोनों को सन्तान उत्पन्न करने की आज्ञा दी । तब इन्द्रियों के समूह का दमन करके आपने परम तपस्या की ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

वर्षवातातपहिमघर्मकालगुणाननु ।
सहमानौ श्वासरोधविनिर्धूतमनोमलौ ॥३४॥

पदच्छेद— वर्ष वात-आतप हिम-धर्म काल गुणान् अनु ।
सहमानौ श्वासरोध विनिर्धूत मनः मलौ ॥

शब्दार्थ—

वर्ष	१.	तुम दोनों ने वर्ष	सहमानौ	७.	सहन किया (और)
वात-आतप	२.	वायु-घाम	श्वासरोध	८.	प्राणायाम के द्वारा
हिम-घर्म	३.	शीत-गर्मी आदि	विनिर्धूत	११.	धो डाला
काल	४.	काल के	मनः	९.	मन के
गुणान्	६.	गुणों का	मलौ ॥	१०.	मल
अनु ।	५.	विभिन्न			

श्लोकार्थ—तुम दोनों ने वायु-घाम-शीत-गर्मी आदि काल के विभिन्न गुणों को सहन किया और प्राणायाम के द्वारा मन के मल को धो डाला ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

शीर्णपर्णानिलाहारावुपशान्तेन चेतसा ।
मत्तः कामानभीप्सन्तौ मदाराधनमीहतुः ॥३५॥

पदच्छेद— शीर्ण पर्ण अनिल आहारौ उपशान्तेन चेतसा ।
मत्तः कामान् अभीप्सन्तौ मत् आराधनम् ईहतुः ॥

शब्दार्थ—

शीर्ण	१. सूखे	मत्तः	७. मुझसे
पर्ण	२. पत्ते और	कामान्	८. अभीष्ट वस्तु
अनिल	३. वायु	अभीप्सन्तौ	९. पाने की इच्छा से
आहारौ	४. भक्षण करके	मत्	१०. मेरी
उपशान्तेन	५. शान्त	आराधनम्	११. आराधना (तथा)
चेतसा ।	६. चित्त तुमने	ईहतुः ॥	१२. चेष्टा की

श्लोकार्थ—सूखे-पत्ते और वायु भक्षण करके शान्त चित्त से मुझसे अभीष्ट वस्तु पाने की इच्छा करते हुए मेरी आराधना की ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

एवं वां तप्यतोस्तीव्रं तपः परमदुष्करम् ।
दिव्यवर्षसहस्राणि द्वादशेयुर्मदात्मनोः ॥३६॥

पदच्छेद— एवम् वाम् तप्यतोः तीव्रम् तपः परम दुष्करम् ।
दिव्य वर्ष सहस्राणि द्वादश ईयुः मत् आत्मनोः ॥

शब्दार्थं—

एवम्	२. ऐसा	दिव्य	४. अलौकिक तथा
वाम्	८. तुम लोगों के	वर्ष	११. वर्ष
तप्यतोः	७. करते करते	सहस्राणि	१०. हजार
तीव्रम्	५. घोर	द्वादश	९. बारह
तपः	६. तप	ईयुः	१२. बीत गये
परम दुष्करम् ।	३. परम दुष्कर और	मत् आत्मनः ॥	१. मुझमें चित्त लगाकर

श्लोकार्थं—मुझमें चित्त लगाकर ऐसा परम दुष्कर और अलौकिक घोर तप करते करते तुम लोगों के बारह हज़ार वर्ष बीत गये ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

तदा वां परितुष्टोऽहममुना वपुषानघे ।
तपसा श्रद्धया नित्यं भक्त्या च हृदि भावितः ॥३७॥

पदच्छेद— तदा वाम् परितुष्टः अहम् अमुना वपुषा अनघे ।
तपसा श्रद्धया नित्यम् भक्त्या च हृदि भावितः ॥

शब्दार्थ—

तदा	९.	उस समय	तपसा	२.	तपस्या
वाम्	१०.	तुम दोनों पर	श्रद्धया	३.	श्रद्धा
परितुष्टः	११.	प्रसन्न होकर	नित्यम्	५.	प्रेममयी
अहम्	१२.	मैं	भक्त्या	६.	भक्ति से
अमुना	१३.	इसी	च	४.	और
वपुषा	१४.	शरीर से (प्रकट हुआ था)	हृदि	७.	हृदय में
अनघे ।	१.	हे निष्पाप देवि !	भावितः ॥	८.	भावना करने पर

श्लोकार्थ—हे निष्पाप देवि ! तपस्या, श्रद्धा और प्रेममयी भक्ति से हृदय में भावना करने पर उस समय तुम दोनों पर प्रसन्न होकर मैं इसी शरीर से प्रकट हुआ था ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

प्रादुरासं वरदराड् युवयोः कामदित्सया ।
व्रियतां वर इत्युक्ते मादृशो वां वृतः सुतः ॥३८॥

पदच्छेद— प्रादुरासम् वरदराड् युवयोः काम दित्सया ।
व्रियताम् वरः इति उक्ते मादृशः वाम् वृतः सुतः ॥

शब्दार्थ—

प्रादुरासम्	७.	मैं प्रकट हुआ	वरः	५.	वर
वरदराड्	४.	वर देने वालों का राजा	इति उक्ते	८.	मेरे ऐसा कहने पर
युवयोः	१.	तुम दोनों की	मादृशो	१०.	मेरे समान
काम	२.	अभिलाषा	वाम्	९.	तुम दोनों ने
दित्सया ।	३.	पूर्ण करने के लिये	वृतः	१२.	माँगा
व्रियताम्	७.	माँग लो	सुतः ॥	११.	पुत्र

श्लोकार्थ—तुम दोनों की अभिलाषा पूर्ण करने के लिये वर देने वालों का राजा मैं प्रकट हुआ । वर माँग लो, मेरे ऐसा कहने पर तुम दोनों ने मेरे समान पुत्र माँगा ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

अजुष्टग्राम्यविषयावनपत्यौ च दम्पती ।
न वव्राथेऽपवर्गं मे मोहितौ मम मायया ॥३९॥

पदच्छेद— अजुष्ट ग्राम्य विषयौ अनपत्यौ च दम्पती ।
न वव्राथे अपवर्गम् मे मोहितौ मम मायया ॥

शब्दार्थ—

अजुष्ट	२.	तुम्हारा संबन्ध नहीं हुआ था	वव्राथे	१२.	माँगा
ग्राम्य विषयौ	१.	विषय भोगों से	अपवर्गम्	१०.	मोक्ष
अनपत्यौ	४.	निःसन्तान थे	मे	९.	मुझसे
च	५.	और	मोहितौ	८.	मोहित होकर तुमने
दम्पती ।	३.	तुम दोनों तब-तक	मम	६.	मेरी
न	११.	नहीं	मायया ॥	७.	माया से

श्लोकार्थ—विषय भोगों से तुम्हारा सम्बन्ध नहीं हुआ था । तुम दोनों तब तक निः सन्तान थे और मेरी माया से मोहित होकर तुमने मुझसे मोक्ष नहीं माँगा ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

गते मयि युवां लब्ध्वा वरं मत्सदृशं सुतम् ।
ग्राम्यान् भोगानभुञ्जाथां युवां प्राप्तमनोरथौ ॥४०॥

पदच्छेद— गते मयि युवाम् लब्ध्वा वरम् मत् सदृशम् सुतम् ।
ग्राम्यान् भोगान् अभुञ्जाथाम् युवाम् प्राप्त मनोरथौ ॥

शब्दार्थ—

गते	८.	जाने के बाद	सुतम् ।	४.	पुत्र प्राप्ति का
मयि	७.	मेरे	ग्राम्यान	१२.	विषयों का
युवाम्	१.	तुम दोनों मुझसे	भोगान्	१३.	भोग
लब्ध्वा	६.	पाकर तथा	अभुञ्जाथाम्	१४.	करने लगे
वरम्	५.	वर	युवाम्	९.	तुम दोनों
मत्	२.	मेरे	प्राप्त	१०.	सफल
सदृशम्	३.	समान	मनोरथौ ॥	११.	मनोरथ होकर

श्लोकार्थ—तुम दोनों मुझसे मेरे समान पुत्र प्राप्ति का वर पाकर तथा मेरे जाने के बाद तुम दोनों सफल मनोरथ होकर विषयों का भोग करने लगे ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

अदृष्ट्वान्यतमं लोके शीलौदार्यगुणैः समम् ।
अहं सुतो वामभवं पृश्निगर्भ इति श्रुतः ॥४१॥

पदच्छेद— अदृष्ट्वा अन्यतमम् लोके शील औदार्य गुणैः समम् ।
अहम् सुतः वाम् अभवम् पृश्नि गर्भ इति श्रुतः ॥

शब्दार्थ—

अदृष्ट्वा	७.	न देखकर	अहम्	८.	मैं ही
अन्यतमम्	६.	दूसरा कोई	सुतः	१०.	पुत्र
लोके	१.	संसार में	वाम्	९.	तुम दोनों का
शील	२.	शीलस्वभाव	अभवम्	११.	हुआ तब मैं
औदार्य	३.	उदारता और	पृश्नि गर्भ	१२.	पृश्निगर्भ
गुणैः	४.	अन्यगुणों में	इति	१३.	इस नाम से
समम् ।	५.	अपने समान	श्रुतः ॥	१४.	विख्यात हुआ

श्लोकार्थ—संसार में शील स्वभाव उदारता और अन्य गुणों में अपने समान दूसरा कोई न देखकर मैं ही तुम दोनों का पुत्र और तब मैं पृश्नि गर्भ इस नाम से विख्यात हुआ ।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

तयोर्वां पुनरेवाहमदित्यामास कश्यपात् ।
उपेन्द्र इति विख्यातो वामनत्वाच्च वामनः ॥४२॥

पदच्छेद— तयोः वाम् पुनः एव अहम् अदित्याम् आस कश्यपात् ।
उपेन्द्रः इति विख्यातः वामनत्वात् च वामनः ॥

शब्दार्थ—

तयोः	१.	उन्हीं	कश्यपात्	३.	कश्यप और
वाम्	२.	तुम दोनों के	उपेन्द्रः	९.	उपेन्द्र
पुनः	६.	फिर	इति	१०.	इस नाम से
एव	५.	ही	विख्यातः	११.	विख्यात हुआ
अहम्	७.	मैं	वामनत्वात्	१३.	शरीर छोटा होने के कारण
अदित्याम्	४.	अदिति से	च	१२.	और
आस	८.	उत्पन्न हुआ	वामनः ॥	१४.	वामन कहलाया

श्लोकार्थ—उन्हीं तुम दोनों के कश्यप और अदिति से ही फिर मैं उत्पन्न हुआ और उपेन्द्र इस नाम से विख्यात हुआ तथा शरीर छोटा होने के कारण वामन कहलाया ।

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

तृतीयेऽस्मिन् भवेऽहं वै तेनैव वपुषाथ वाम् ।
जातो भूयस्तयोरेव सत्यं मे व्याहृतं सति ॥४३॥

पदच्छेद— तृतीये अस्मिन् भवे अहम् वै तेन एव वपुषा अथवाम् ।
जातः भूयः तयोः एव सत्यम् मे व्याहृतम् सति ॥

शब्दार्थ—

तृतीये	४. तीसरे	वाम् जातः	९. तुम दोनों का पुत्र हुआ
अस्मिन्	३. इस	भूयः	१०. फिर से
भवे	५. जन्म में	तयोः	११. उन्हीं तुम दोनों का
अहम	६. मैं	एव	१२. ही मैं पुत्र हूँ
वै	२. निश्चय ही	सत्यम्	१५. सूक्ष्म
तेन एव	७. उसी	मे	१४. यह मेरी
वपुषा	८. रूप से	व्याहृतम्	१६. वाणी
अथ	१. तदनन्तर	सति ॥	१३. हे सतो

श्लोकार्थ—तदनन्तर निश्चय ही इस तीसरे जन्म में मैं उसी रूप से तुम दोनों का पुत्र हुआ। फिर से उन्हीं तुम दोनों का मैं पुत्र हूँ। हे सती ! यह मेरी सूक्ष्म वाणी है ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

एतद् वां दर्शितं रूपं प्राग्जन्मस्मरणाय मे ।
नान्यथा मद्भवं ज्ञानं मर्त्यलिङ्गेन जायते ॥४४॥

पदच्छेद— एतत् वाम् दर्शितम् रूपम् प्राक् जन्म स्मरणाय मे ।
न अन्यथा मत् भवम् ज्ञानम् मर्त्य लिङ्गेन जायते ॥

शब्दार्थ—

एतत्	३. अपना यह	न	१५. नहीं
वाम्	२. तुम्हें	अन्यथा	९. अन्यथा
दर्शितम्	८. दिखाया है	मत्	१०. मेरे
रूपम्	४. रूप	भवम्	११. अवतार विषयक
प्राक	५. पूर्व	ज्ञानम्	१२. ज्ञान
जन्म	६. जन्म के	मर्त्य	१६. मनुष्य
स्मरणाय	७. स्मरण के लिये	लिङ्गेन	१४. शरीर से
मे ।	१. मैंने	जायते ॥	१६. हो सकता है

श्लोकार्थ—मैंने तुम्हें अपना यह रूप पूर्व जन्म के स्मरण के लिये दिखाया है। अन्यथा मेरे अवतार विषयक ज्ञान मनुष्य शरीर से नहीं हो सकता है ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

युवां मां पुत्रभावेन ब्रह्मभावेन चासकृत्।
चिन्तयन्तौ कृतस्नेहौ यास्येथे मद्गतिं परम् ॥४५॥

पदच्छेद— युवाम् माम् पुत्र भावेन ब्रह्म भावेन च असकृत्।
चिन्तयन्तौ कृतस्नेहौ यास्येथे मत् गतिम् परम् ॥

शब्दार्थ—

युवाम्	१.	तुम दोनों	चिन्तयन्तौ	८.	चिन्तन के द्वारा
माम्	२.	मेरे प्रति	कृतस्नेहौ	७.	स्नेह और
पुत्र भावेन	३.	पुत्र-भाव	यास्येथे	१२.	प्राप्ति होगी
ब्रह्म भावेन	४.	ब्रह्मभाव रखना	मत्	९.	तुम्हें मेरे
च	५.	और इस प्रकार	गतिम्	११.	पद की
असकृत्	६.	बार-बार	परम् ॥	१०.	परम

श्लोकार्थ—तुम दोनों मेरे प्रति बार-बार पुत्र भाव और ब्रह्मभाव रखना। इस प्रकार बार बार स्नेह और चिन्तन के द्वारा तुम्हें मेरे परम पद की प्राप्ति होगी ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इत्युक्त्वाऽऽसीद्धरिस्तूष्णीं भगवानात्ममायया।
पित्रोः सम्पश्यतोः सद्यो बभूव प्राकृतः शिशुः ॥४६॥

पदच्छेद— इति उक्त्वा आसीत् हरिः तूष्णीम् भगवान् आत्ममायया।
पित्रोः सम्पश्यतोः सद्यः बभूव प्राकृतः शिशुः ॥

शब्दार्थ—

इति	२.	इतना	पित्रोः	८.	पिता-माता के
उक्तम्	३.	कहकर	सम्पश्यतोः	९.	देखते-देखते
आसीत्	५.	हो गये (तब)	सद्यः	१०.	तत्काल
हरिः	१.	भगवान्	बभूव	१३.	बना लिया
तूष्णीम्	४.	चुप	प्राकृत	११.	साधारण
भगवान्	६.	भगवान् ने	शिशुः ॥	१२.	बालक का रूप
आत्ममायया।	७.	अपनी योग माया से			

श्लोकार्थ—भगवान् इतना कहकर चुप हो गये। तब भगवान् ने अपनी योग माया से पिता-माता के देखते देखते तत्काल साधारण बालक का रूप बना लिया ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

ततश्च शौरिर्भगवत्प्रचोदितः सुतं समादाय स सूतिकागृहात् ।
यदा बहिर्गन्तुमियेष तर्ह्यजा या योगमायाजनि नन्दजायया ॥४७॥

पदच्छेद— ततः च शौरिः भगवत् प्रचोदितः सुतं समादाय सुति का गृहात् ।
यदा बहिः गन्तुम् इ येष तर्हि अजाया योगयाया अजनि नन्द जायया ॥

शब्दार्थ—

ततः	२.	तब	यदा	६.	जब
च	१.	और	बहिः गन्तुम्	१०.	बाहर निकलने की
शौरिः	४.	वसुदेव जी ने	इयेष	११.	इच्छा की
भगवत्	५.	भगवान् की	तर्हि	१२.	तब
प्रचोदितः	६.	प्रेरणा से	अजा	१५.	अजा (जन्म रहित)
सुतम् समादाय	७.	बालक को लेकर	या योग	१६.	जो योग
सः	३.	उन	माया अजनि	१७.	माया है उसने जन्म लिया
सूतिकागृहात् ।	८.	सूतिकागृह से	नन्द	१३.	नन्द की
			जायया	१४.	पत्नी यशोदा के गर्भ से

श्लोकार्थ—और उन वसुदेव जी ने भगवान् को प्रेरणा से बालक को लेकर सूतिकागृह से बाहर निकलने की इच्छा की । तब नन्द पत्नी यशोदा के गर्भ से अजा (जन्म रहित) जो योग माया है उसने जन्म लिया ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

तया हृतप्रत्ययसर्ववृत्तिषु द्वाःस्थेषु पौरेष्वपि शायितेष्वथ ।
द्वारस्तु सर्वाः पिहिता दुरत्यया बृहत्कपाटायसकीलश्रृङ्खलैः ॥४८॥

पदच्छेद— तया हृत प्रत्यय सर्ववृत्तिषुद्वाः स्थेषु पौरेषु अपि शायितेषु अथ ।
द्वारस्तु सर्वाः पिहिताः दुरत्ययाः बृहत् कपाट आयस कीलशृंखलैः ॥

शब्दार्थ—

तया	२.	उसी योग माया ने	द्वारस्तु	११.	दरवाजे
हृत	७.	हर ली (और)	सर्वाः	१०.	सभी
प्रत्यय	६.	चेतना	पिहिताः	१२.	बन्द थे
सर्ववृत्तिषु	५.	समस्त इन्द्रियों की	दुरत्ययाः	६.	अति मजबूत
द्वाः स्थेषु	६.	द्वार पाल और	बृहत्	१३.	उनके बड़े-बड़े
पौरेषु अपि	४.	पुरवासियों की भी	कपाट	१४.	किवाड़
शायितेषु	८.	वे सो गये	आयस	१५.	लोहे की
अथ ।	१.	तदनन्तर	कीलश्रृंखलैः ॥	१६.	कीलों से जड़े हुये थे ॥

श्लोकार्थ—तदनन्तर उसी योग माया ने द्वारपाल और पुरवासियों की समस्त इन्द्रियों की चेतना हर ली । और वे सो गये । अति मजबूत सभी दरवाजे बन्द थे । उनके बड़े-बड़े किवाड़ लोहे की कीलो से जड़े हुए थे ।

एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

ताः कृष्णवाहे वसुदेव आगते स्वयं व्यवर्यन्त यथा तमो रवेः।
ववर्ष पर्जन्य उपांशुगर्जितः शेषोऽन्वगाद् वारि निवारयन् फणैः ॥४९॥

पदच्छेद— ताः कृष्ण वाहे वसुदेवे आगते स्वयम् व्यवर्यन्त यथा तमः रवेः।
ववर्ष पर्जन्य उपांशु गर्जितः शेषः अन्वगात् वारि निवारयन् फणैः ॥

शब्दार्थ—ताः	४. वे ही दरवाजे	ववर्ष	१३. फुहारें छोड़ने लगे और
कृष्ण वाहे	१. श्रीकृष्ण को लेकर जाने वाले	पर्जन्यः	१०. उस समय बादल
वसुदेवे	२. वसुदेव जी के	उपांशु	११. धीरे-धीरे
आगते	३. सामने आने पर	गर्जितः	१२. गरजकर
स्वयम्	५. उसी प्रकार स्वयम्	शेषः	१४. शेषनाग
व्यवर्यन्त	६. खुल गये	अन्वगात्	१८. पीछे-पीछे चलने लगे
यथा	७. जैसे	वारि	१६. जल को
तमः	९. अन्धकार दूर हो जाता है	निवारयन्	१७. रोकते हुये
रवेः।	८. सूर्योदय होने पर	फणैः ॥	१५. अपने फनों से

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण को लेकर जाने वाले वसुदेव जी के सामने आने पर वे ही दरवाजे उसी प्रकार स्वयम् खुल गये जैसे सूर्योदय होने पर अन्धकार दूर हो जाता है। उस समय बादल धीरे-धीरे गरज कर फुहारे छोड़ने लगे और शेष नाग अपने फनों से जल को रोकते हुये पीछे पीछे चलने लगे ॥

पञ्चाशत्तमः श्लोकः

मघोनि वर्षत्यसकृद् यमानुजा गम्भीरतोयौघजवोर्मिफेनिला।
भयानकावर्तशताकुला नदी मार्गं ददौ सिन्धुरिव श्रियः पतेः ॥५०॥

पदच्छेद— मघोनि वर्षति असकृत् यमअनुजा गम्भीर तोय ओघजव ऊर्मिफेनिला।
भयानक आवर्त शत आकुला नदी मार्गं ददौ सिन्धुः इव श्रियः पतेः ॥

शब्दार्थ—मघोनि	२. बादलों के	आवर्त	१०. भँवरों से
वर्षति	४. बरसने से	शत	८. सैकड़ों
असकृत्	३. बार-बार	आकुला	११. व्याप्त
यमअनुजा	१. उस समय यमुना	नदी मार्गं	१२. उस नदी ने श्रीकृष्ण को मार्ग
गम्भीरतोय	५. गहरे जल वाली	ददौ	१६. दे दिया
ओघजवः	६. तेज प्रवाह वाली और	सिन्धुः	१३. समुद्र द्वारा
ऊर्मिफेमिना।	७. तरंगों से फेनिल थी	इव	१५. भाँति
भयानक	९. भयानक	श्रियः पतेः ॥	१४. सीता पति राम की

श्लोकार्थ—उस समय यमुना बादलों के बार-बार बरसने से गहरे जल वाली, तेज प्रवाह वाली और तरंगों से फेनिल थी। सैकड़ों भयानक भँवरों से व्याप्त उस नदी ने श्रीकृष्ण को समुद्र द्वारा सीता पति राम की भाँति मार्ग दे दिया ॥

एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

नन्दव्रजं शौरिरुपेत्य तत्र तान् गोपान् प्रसुप्तानुपलभ्य निद्रया ।

सुतं यशोदाशयने निधाय तत्सुतामुपादाय पुनर्गृहादगात् ॥५१॥

पदच्छेद— नन्द व्रजम् शौरिः उपेत्य तत्र तान् गोपान् प्रसुप्तान् उपलभ्य निद्रया ।
सुतम् यशोदा शयने निधाय तत् सुताम् उपादाय पुनः गृहान् अगात् ॥

शब्दार्थ—

नन्द व्रजम्	२.	नन्द बाबा के व्रज में	सुतम्	९.	अपने पुत्र को
शौरिः	१.	वसुदेव जी ने	यशोदा	१०.	यशोदा जी की
उपेत्य	३.	पहुँचकर	शयने	११.	शय्या पर
तत्र	४.	वहाँ	निधाय	१२.	रखकर
तान् गोपान्	५.	उन गोपों को	तत् सुताम्	१३.	उनकी कन्या को
प्रसुप्तान्	७.	सोया हुआ	उपादाय	१४.	लेकर
उपलभ्य	८.	पाया	पुनः गृहान्	१५.	वे पुनः बन्दी गृह
निद्रया ।	६.	नींद में	अगात् ॥	१६.	लौट आये

श्लोकार्थ—वसुदेव जी ने नन्द बाबा के व्रज में पहुँचकर वहाँ उन गायों को नींद में सोया हुआ पाया । अपने पुत्र को यशोदा जी की शय्या पर रखकर उनकी कन्या को लेकर वे पुनः बन्दी गृह लौट आये ॥

द्वापञ्चाशत्तमःश्लोकः

देवक्याः शयने न्यस्य वसुदेवोऽथ दारिकाम् ।

प्रतिमुच्य पदोर्लोहमास्ते पूर्ववदावृतः ॥५२॥

पदच्छेद— देवक्याः शयने न्यस्य वसुदेवः अथ दारिकाम् ।
प्रतिमुच्य पदोः लोहम् आस्ते पूर्ववत् आवृतः ॥

शब्दार्थ—

देवक्याः	४.	देवकी की	प्रतिमुच्य	९.	डालकर
शयने	५.	शय्या पर	पदोः	७.	अपने पैरों में
न्यस्य	६.	सुला दिया	लोहम्	८.	बेड़ियाँ
वसुदेवः	२.	वसुदेव जी ने	आस्ते	१२.	हो गये
अथ	१.	तदनन्तर	पूर्ववत्	१०.	पहले के समान
दारिकाम् ।	३.	उस कन्या को	आवृतः ॥	११.	बन्दीगृह में बन्द

श्लोकार्थ—तदनन्तर वसुदेव जी ने उस कन्या को देवकी की शय्या पर सुला दिया । अपने पैरों में बेड़ियाँ डालकर पहले के समान बन्दीगृह में बन्द हो गये ॥

त्रिपञ्चाशत्तमः श्लोकः

यशोदा नन्दपत्नी च जातं परमबुध्यत ।

न तल्लिङ्गं परिश्रान्ता निद्रयापगतस्मृतिः ॥५३॥

पदच्छेद— यशोदा नन्द पत्नी च जातम् परम् अबुध्यत ।

न तत् लिङ्गम् परिश्रान्ता निद्रया अपगत स्मृतिः ॥

शब्दार्थ—

यशोदा	४.	यशोदा को	न	१४.	नहीं हुआ
नन्द	२.	नन्द	तत्	१२.	उस सन्तान के
पत्नी	३.	पत्नी	लिङ्गम्	१३.	पुत्र या पुत्री होने का ज्ञान
च	१.	और	परिश्रान्ता	८.	अत्यधिक थकान और
जातम्	५.	सन्तान उत्पत्ति का तो	निद्रया	६.	योगमाया द्वारा
परम्	६.	भलीभाँति	अपगत	११.	हरण हो जाने के कारण
अबुध्यत ।	७.	ज्ञान हुआ पर	स्मृतिः ॥	१०.	स्मृति के

श्लोकार्थ—और नन्द पत्नी यशोदा को सन्तान उत्पत्ति का तो भलीभाँति ज्ञान हुआ पर अत्यधिक थकान और योगमाया द्वारा स्मृति के हरण हो जाने के कारण उस सन्तान के पुत्र या पुत्री होने का ज्ञान नहीं हुआ ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमे स्कन्धे

पूर्वार्धे कृष्णजन्मनि तृतीयः अध्यायः ॥३॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

चतुर्थः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—बहिरन्तःपुरद्वारः सर्वाः पूर्ववदावृताः ।
ततो बालध्वनिं श्रुत्वा गृहपालाः समुत्थिताः ॥१॥

पदच्छेद— बहिः अन्तः पुर द्वारः सर्वाः पूर्ववत् आवृताः ।
ततः बाल ध्वनिम् श्रुत्वा गृहपालाः समुत्थिताः ॥

शब्दार्थ—

बहिः	२.	बाहरी और	ततः	८.	इसके बाद
अन्तः	३.	भीतरी	बाल	९.	नवजात शिशु के
पुर	१.	नगर के	ध्वनिम्	१०.	रोने की ध्वनि
द्वारः	५.	दरवाजे	श्रुत्वा	११.	सुनकर
सर्वाः	४.	सब	गृहपालाः	१२.	द्वारपाल
पूर्ववत्	६.	पहले के समान	समुत्थिताः॥	१३.	उठ खड़े हुये
आवृताः ।	७.	बन्द हो गये			

श्लोकार्थ—नगर के बाहरी और भीतरी सब दरवाजे पहले के समान बन्द हो गये । इसके बाद नवजात शिशु के रोने की ध्वनि सुनकर द्वारपाल उठ खड़े हुये ॥

द्वितीयः श्लोकः

ते तु तूर्णमुपव्रज्य देवक्या गर्भजन्म तत् ।
आचख्युर्भोजराजाय यदुद्विग्नः प्रतीक्षते ॥२॥

पदच्छेद— ते तु तूर्णम् उपव्रज्य देवक्याः गर्भ जन्म तत् ।
आचख्युः भोजराजाय यत् उद्विग्नः प्रतीक्षते ॥

शब्दार्थ—

ते तु	१	वे	तत् ।	७.	उस
तूर्णम्	२.	शीघ्रता पूर्वक	आचख्युः	९.	वर्णन किया
उपव्रज्य	४.	गये और	भोजराजाय	३.	कंस के पास
देवक्याः	५.	देवकी के	यत्	१०.	जिसकी कंस
गर्भ	६.	गर्भ से	उद्विग्नः	११.	बेचैनी से
जन्म	८.	सन्तान की उत्पत्ति का	प्रतीक्षते ॥	१२.	प्रतिक्षा कर रहा था

श्लोकार्थ—वे शीघ्रता पूर्वक कंस के पास गये और देवकी के गर्भ से सन्तान की उत्पत्ति का वर्णन किया । जिसकी कंस बेचैनी से प्रतीक्षा कर रहा था ॥

तृतीयः श्लोकः

स तल्पात् तूर्णमुत्थाय कालोऽयमिति विह्वलः ।
सूतीगृहमगात् तूर्णं प्रस्खलन् मुक्तमूर्धजः ॥३॥

पदच्छेद— सः तल्पात् तूर्णम् उत्थाय कालः अयम् इति विह्वलः ।
सूतीगृहम् अगात् तूर्णम् प्रस्खलन् मुक्त मूर्धजः ॥

शब्दार्थ—

सः	५.	वह (कंस)	विह्वलः ।	४.	व्याकुल होता हुआ
तल्पात्	६.	पलंग से	सूतीगृहम्	१३.	बन्दी गृह
तूर्णम्	७.	शीघ्रता पूर्वक	अगात्	१४.	जा पहुँचा
उत्थाय	८.	उठ खड़ा हुआ	तूर्णम्	१२.	शीघ्रता से
कालः	२.	मेरा काल है	प्रस्खलन्	११.	गिरता-पड़ता
अयम्	१.	यह तो	मुक्त	९.	खुले हुये
इति	३.	ऐसा सोचकर	मूर्धजः ॥	१०.	बालों वाला वह

श्लोकार्थ—यह तो मेरा काल है। ऐसा सोचकर व्याकुल होता हुआ वह कंस पलंग से शीघ्रता पूर्वक उठ खड़ा हुआ। खुले हुये बालों वाला वह गिरता-पड़ता शीघ्रता से बन्दी गृह जा पहुँचा ॥

चतुर्थः श्लोकः

तमाह भ्रातरं देवी कृपणा करुणं सती ।
स्नुषेयं तव कल्याण स्त्रियं मा हन्तुमर्हसि ॥४॥

पदच्छेद— तम् आह भ्रातरम् देवी कृपणा करुणम् सती ।
स्नुषा इयम् तव कल्याण स्त्रियम् मा हन्तुम् अर्हसि ॥

शब्दार्थ—

तम्	५.	अपने उस	स्नुषा	११.	पुत्र वधू के समान है
आह	७.	कहा	इयम्	९.	यह कन्या तो
भ्रातरम्	६.	भाई कंस से	तव	१०.	तुम्हारी
देवी	२.	देवकी ने	कल्याण	८.	हे मेरे हितैषी भाई !
कृपणा	३.	दुःख और	स्त्रियम्	१२.	स्त्री जाति की है
करुणम्	४.	करुणा के साथ	मा	१५.	नहीं है
सती ।	१.	सती	हन्तुम्	१३.	यह मारने के
			अर्हसि ॥	१४.	योग्य

श्लोकार्थ—सती देवकी ने दुःख और करुणा के साथ अपने उस भाई कंस से कहा—हे मेरे हितैषी भाई ! यह कन्या तो तुम्हारी पुत्र वधू के समान है। स्त्री जाति की है। यह मारने के योग्य नहीं है ॥

पञ्चमः श्लोकः

बहवो हिंसिता भ्रातः शिशवः पावकोपमाः ।
त्वया दैवनिसृष्टेन पुत्रिकैका प्रदीयताम् ॥५॥

पदच्छेद— बहवः हिंसिताः भ्रातः शिशवः पावक उपमाः ।
त्वया दैव निसृष्टेन पुत्रिका एका प्रदीयताम् ॥

शब्दार्थ—

बहवः	७. बहुत से	त्वया	२. तुमने
हिंसिताः	९. मार डाले	दैव	३. दैव
भ्रातः	१. हे भैया !	निसृटेन	४. वश
शिशवः	८. बालक	पुत्रिका	११. कन्या
पावक	५. अग्नि के	एका	१०. यही एक
उपमाः ।	६. समान तेजस्वी	प्रदीयताम् ॥	१२. मुझे दे दो

श्लोकार्थ—हे भैया ! तुमने दैववश अग्नि के समान तेजस्वी बहुत से बालक मार डाले । यही एक कन्या मुझे दे दो ॥

षष्ठः श्लोकः

नन्वहं ते ह्यवरजा दीना हतसुता प्रभो ।
दातुमर्हसि मन्दाया अङ्गेमां चरमां प्रजाम् ॥६॥

पदच्छेद— ननु अहम् ते हि अवरजा दीना हत सुता प्रभो ।
दातुम् अर्हसि मन्दायाः अङ्ग इमाम् चरमाम् प्रजाम् ॥

शब्दार्थ—

ननु	३. अवश्य	दातुम्	१३. देने में
अहम् ते	४. मैं तुम्हारी	अर्हसि	१४. समर्थ हो
हि अवरजा	५. छोटी बहन हूँ	मन्दायाः	९. मुझ मन्दभागिनी को तुम
दीना	८. अत्यन्त दीन हूँ	अङ्ग	२. भाई
हत	७. मरने से	इमाम्	१०. इस
सुता	६. पुत्रों के	चरमाम्	११. अन्तिम
प्रभो ।	१. मेरे समर्थ भाई	प्रजाम् ॥	१२. सन्तान को

श्लोकार्थ—मेरे समर्थ भाई ! अवश्य ही मैं तुम्हारी छोटी बहिन हूँ । पुत्रों के मरने से अत्यन्त दीन हूँ । मुझ मन्दभागिनी को तुम इस अन्तिम सन्तान को देने में समर्थ हो ।

सप्तमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— उपगुह्यात्मजामेवं रुदत्या दीनदीनवत् ।
याचितस्तां विनिर्भर्त्स्य हस्तादाचिच्छिदे खलः ॥७॥

पदच्छेद— उपगुह्य आत्मजाम् एवम् रुदत्याः दीन दीनवत् ।
याचितः ताम् विनिर्भर्त्स्य हस्तात् आचिच्छिदे खलः ॥

शब्दार्थ—

उपगुह्य	३.	गोद में छिपाकर	याचितः	७.	देवकी ने याचना की
आत्मजाम्	२.	कन्या को	ताम्	९.	उसको
एवम्	१.	इस प्रकार	विनिर्भर्त्स्य	१०.	झिड़ककर कन्या को
रुदत्याः	६.	रोते हुये	हस्तात्	११.	हाथ से
दीन	५.	दीन होकर	आचिच्छिदे	१२.	छीन लिया
दीनवत् ।	४.	दुःख पूर्वक	खलः ॥	८.	दुष्ट कंस ने

श्लोकार्थ—इस प्रकार कन्या को गोद में छिपाकर दुःख पूर्वक दीन होकर रोते हुये देवकी ने याचना की । दुष्ट कंस ने उसको झिड़ककर कन्या को हाथ से छीन लिया ॥

अष्टमः श्लोकः

तां गृहीत्वा चरणयोर्जातमात्रां स्वसुः सुताम् ।
अपोथयच्छिलापृष्ठे स्वार्थोन्मूलितसौहृदः ॥८॥

पदच्छेद— ताम् गृहीत्वा चरणयोः जातमात्राम् स्वसुः सुताम् ।
अपोथयत् शिला पृष्ठे स्वार्थ उन्मूलित सौहृदः ॥

शब्दार्थ—

ताम्	२.	उस कंस ने	अपोथयत्	९.	दे मारा
गृहीत्वा	६.	पकड़कर	शिला	७.	शिला
चरणयोः	५.	पैरों को	पृष्ठे	८.	तल पर
जातमात्राम्	३.	नवजात	स्वार्थ	१०.	स्वार्थ ने
स्वसुः	१.	बहिन की	उन्मूलित	१२.	उखाड़ फेंका था
सुताम् ।	४.	पुत्री के	सौहृदः ॥	११.	उसके सौहर्द को

श्लोकार्थ—उस कंस ने बहिन की उस नवजात पुत्री के पैरों को पकड़ कर शिला तल पर दे मारा । स्वार्थ ने उसके सौहार्द को उखाड़ फेका था ॥

नवमः श्लोकः

सा तद्धस्तात् समुत्पत्य सद्यो देव्यम्बरं गता ।
अदृश्यतानुजा विष्णोः सायुधाष्टमहाभुजा ॥९॥

पदच्छेद— सा तत् हस्तात् समुत्पत्य सद्यः देवी अम्बरम् गता ।
अदृश्यत अनुजा विष्णोः स आयुधा अष्ट महा भुजा ॥

शब्दार्थ—

सा	४.	वह	**अदृश्यत**	११.	अदृश्य हो गई (और)
तत्	१.	उसके	**अनुजा**	१०.	बहिन
हस्तात्	२.	हाथ से	**विष्णोः**	९.	भगवान् विष्णु की
समुत्पत्य	३.	छूट कर	**सआयुधा**	१५	आयुध लिये दिखाई दी
सद्यः	६.	तत्काल	**अष्ट**	१२.	अपनी आठ
देवी	५.	देवी	**महा**	१३.	विशाल
अम्बरम्	७.	आकाश में	**भुजा ॥**	१४.	भुजाओं में
गता ।	८.	चली गई			

श्लोकार्थ—उसके हाथ से छूटकर वह देवी तत्काल आकाश में चली गई । भगवान् विष्णु को बहिन अदृश्य हो गई और अपनी आठ विशाल भुजाओं में आयुध लिये दिखाई दी ॥

दशमः श्लोकः

दिव्यस्रगम्बरालेपरत्नाभरणभूषिता ।
धनुःशूलेषुचर्मासिशङ्खचक्रगदाधरा ॥१०॥

पदच्छेद— दिव्य स्रक् अम्बर आलेप रत्न आभरण भूषिता ।
धनुः शूलेषु चर्म असि शङ्ख चक्र गदाधरा ॥

शब्दार्थ—

दिव्य	१.	वह दिव्य	**धनुः**	८.	उसके हाथों में धनुष
स्रक्	२.	माला	**शूलेषु**	९.	त्रिशूल
अम्बर	३.	वस्त्र	**चर्म**	१०.	ढाल
आलेप	४.	चन्दन (और)	**असि**	११.	तलवार
रत्न	५.	मणिमय	**शङ्ख**	१२.	शङ्ख
आभरण	६.	आभूषणों से	**चक्र**	१३.	चक्र
भूषिता ।	७.	विभूषित थीं	**गदाधरा ॥**	१४.	गदा आदि से सुशोभित थे

श्लोकार्थ—वह देवी दिव्य माला, वस्त्र, चन्दन और मणिमय आभूषणों से विभूषित थी । उसके हाथों में धनुष त्रिशूल, ढाल, तलवार, शङ्ख, चक्र, गदा आदि सुशोभित थे ॥

एकादशः श्लोकः

सिद्धचारणगन्धर्वैरप्सरःकिन्नरोरगैः ।
उपाहृतोरुबलिभिः स्तूयमानेदमब्रवीत् ॥११॥

पदच्छेद— सिद्ध चारण गन्धर्वैः अप्सरः किन्नर उरगैः ।
उपाहृत उरु बलिभिः स्तूयमाना इदम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

सिद्ध	१.	सिद्ध	उपाहृत	९.	समर्पित करके
चारण	२.	चारण	उरु	७.	बहुत सी
गन्धर्व	३.	गन्धर्व	बलिभिः	८.	भेंट सामग्री
अप्सरः	४.	अप्सरा	स्तूयमाना	१०.	स्तुति कर रहे थे, देवी ने
किन्नर	५.	किन्नर (और)	इदम्	११.	यह
उरगैः ।	६.	नाग गण	अब्रवीत् ॥	१२.	कहा

श्लोकार्थ—सिद्ध, चारण, गन्धर्व, अप्सरा, किन्नर और नागगण बहुत सी भेंट सामग्री समर्पित करके स्तुति कर रहे थे, देवी ने यह कहा ॥

द्वादशः श्लोकः

किं मया हतया मन्द जातः खलु तवान्तकृत् ।
यत्र क्व वा पूर्वशत्रुर्मा हिंसीः कृपणान् वृथा ॥१२॥

पदच्छेद— किम् मया हतया मन्द जातः खलु तव अन्तकृत् ।
यत्र क्व वा पूर्व शत्रुः मा हिंसीः कृपणान् वृथा ॥

शब्दार्थ—

किम्	३.	तुझे क्या मिलेगा	यत्र क्वा	६.	जिस किसी स्थान पर
मया हतया	२.	मुझे मारने से	पूर्वशत्रुः	५.	पूर्व जन्म का शत्रु
मन्द	१.	रे मूर्ख !	मा	११.	मत
जातः	८.	पैदा हो चुका है	हिंसीः	१२.	मार
खलु तव	४.	निश्चय ही तेरे	कृपणान्	१०.	निर्दोष बालकों को
अन्तकृत् ।	७.	तुझे मारने के लिये	वृथा ॥	९.	व्यर्थ ही

श्लोकार्थ—रे मूर्ख ! मुझे मारने से तुझे क्या मिलेगा । निश्चय ही तेरे पूर्व जन्म का शत्रु जिस किसी स्थान पर तुझे मारने के लिये पैदा हो चुका है । व्यर्थ ही निर्दोष बालकों को मत मार ॥

त्रयोदशः श्लोकः

इति प्रभाष्य तं देवी माया भगवती भुवि ।
बहुनामनिकेतेषु बहुनामा बभूव ह ॥१३॥

पदच्छेद — इति प्रभाष्य तम् देवी माया भगवती भुवि ।
बहुनाम निकेतेषु बहु नामा बभूव ह ॥

शब्दार्थ—

इति	३. इस प्रकार	भुवि ।	७. पृथ्वी के
प्रभाष्य	४. कहकर	बहुनाम	८. विभिन्न नाम वाले
तम्	२. उस कंस से	निकेतेषु	९. अनेक स्थानों पर
देवी	१. वह देवी	बहु	१०. अनेक
माया	६. योगमाया अन्तर्ध्यान हो गई	नामा	११. नामों से
भगवती	५. भगवती	बभूव ह ॥	१२. प्रसिद्ध हुई

श्लोकार्थ—वह देवी उस कंस से इस प्रकार कहकर भगवती योगमाया अन्तर्ध्यान हो गई । पृथ्वी के विभिन्न नाम वाले अनेक स्थानों पर अनेक नामों से प्रसिद्ध हुई ॥

चतुर्दशः श्लोकः

तयाभिहितमाकर्ण्य कंसः परमविस्मितः ।
देवकीं वसुदेवं च विमुच्य प्रश्रितोऽब्रवीत् ॥१४॥

पदच्छेद— तया अभिहितम् आकर्ण्य कंसः परम विस्मितः ।
देवकीं वसुदेवम् च विमुच्य प्रश्रितः अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

तया	१. उसके	देवकी	७. देवकी
अभिहितम्	२. इस कथन को	वसुदेवम्	९. वसुदेव को
आकर्ण्य	३. सुनकर	च	८. और
कंसः	४. कंस ने	विमुच्य	१०. छोड़ दिया और
परम	५. अत्यधिक	प्रश्रितः	११. नम्रता पूर्वक
विस्मितः ।	६. आश्चर्य चकित होकर	अब्रवीत् ॥	१२. इस प्रकार बोला

श्लोकार्थ—उसके इस कथन को सुनकर कंस ने अत्यधिक आश्चर्य चकित होकर देवकी और वसुदेव को छोड़ दिया और नम्रता पूर्वक इस प्रकार बोला ॥

पञ्चदशः श्लोकः

अहो भगिन्यहो भाम मया वां बत पाप्मना ।
पुरुषाद इवापत्यं बहवो हिंसिताः सुताः ॥१५॥

पदच्छेद— अहो भगिनि अहो भाम मया वाम् बत पाप्मना ।
पुरुषाद इव अपत्यम् बहवः हिंसिताः सुताः ॥

शब्दार्थ—

अहो भगिनि	१.	हे मेरी प्यारी बहिन !	पुरुषाद	७.	राक्षस
अहो भाम	२.	हे बहनोई जी	इव	८.	जैसे
मया	४.	मैंने	अपत्यम्	९.	बच्चों को मारता है वैसे ही
वाम्	५.	तुम्हारे साथ	बहवः	१०.	मैंने बहुत से
बत	३.	खेद है	हिंसिताः	१२.	मार डाले
पाप्मना ।	६.	बड़ा पाप किया	सुताः ॥	११.	बालक

श्लोकार्थ—हे मेरी प्यारी बहिन ! हे बहनोई जी ! खेद है कि मैंने तुम्हारे साथ बड़ा पाप किया । राक्षस जैसे बच्चों को मारता है वैसे ही मैंने आपके बहुत से बालक मार डाले ॥

षोडशः श्लोकः

स त्वहं त्यक्तकारुण्यस्त्यक्तज्ञातिसुहृत् खलः ।
काँल्लोकान् वै गमिष्यामि ब्रह्महेव मृतः श्वसन् ॥१६॥

पदच्छेद— सः तु अहम् त्यक्त कारुण्यः त्यक्त ज्ञाति सुहृत् खलः ।
कान् लोकान् वै गमिष्यामि ब्रह्महा इव मृतः श्वसन् ॥

शब्दार्थ—

सः	५.	इस प्रकार का	कान्	१२.	किन अधम
तु अहम्	७.	मैं	लोकान् वै	१३.	लोकों में
त्यक्त	२.	रहित	गमिष्यामि	१४.	जाऊँगा
कारुण्यः	१.	करुणा से	ब्रह्महा	८.	ब्रह्मघाती के
त्यक्त	४	त्याग करने वाला	इव	९.	समान
ज्ञातिसुहृत्	३.	भाई-बन्धु-हितैषियों का	मृतः	११.	मरे हुये जैसा
खलः ।	६	दुष्ट	श्वसन् ॥	१०.	जीवित होने पर भी

श्लोकार्थ—करुणा से रहित, भाई-बन्धु-हितैषियों का त्याग करने वाला इस प्रकार का दुष्ट मैं ब्रह्मघाती के समान जीवित होने पर भी मरे हुये के समान किन अधम लोकों में जाऊँगा ॥

सप्तदशः श्लोकः

दैवमप्यनृतं वक्ति न मर्त्या एव केवलम् ।
यद्विश्रम्भादहं पापः स्वसुर्निहतवाञ्छिशून् ॥१७॥

पदच्छेद— दैवम् अपि अनृतम् वक्ति न मर्त्याः एव केवलम् ।
यत् विश्रम्भात् अहम् पापः स्वसुः निहतवान् शिशून् ॥

शब्दार्थ—

दैवम्	४.	देवता	यत्	७.	उसी पर
अपि	५.	भी	विश्रम्भात्	८.	विश्वास करके
अनृतम् वक्ति	६.	झूठ बोलते हैं	अहम् पापः	९.	मुझ पापी ने
न	३.	नहीं	स्वसुः	१०.	अपनी बहिन के
मर्त्याः एव	२.	मनुष्य ही	निहतवान्	१२.	मारा
केवलम् ।	१.	केवल	शिशून् ॥	११.	बालकों को

श्लोकार्थ—केवल मनुष्य ही नहीं देवता भी झूठ बोलते हैं। उसी पर विश्वास करके मुझ पापी ने अपने बहिन के बच्चों को मारा ॥

अष्टादशः श्लोकः

मा शोचतं महाभागावात्मजान् स्वकृतम्भुजः ।
जन्तवो न सदैकत्र दैवाधीनास्तदासते ॥१८॥

पदच्छेद— मा शोचतम् महाभागौ आत्मजान् स्वकृतम् भुजः ।
जन्तवः न सदा एकत्र दैव अधीनाः तत् आसते ॥

शब्दार्थ—

मा	६.	मत करो (क्योंकि)	न	९.	नहीं
शोचतम्	५.	तुम शोक	सदा	१०.	सदा रह सकते
महाभागौ	१.	हे महाभागे !	एकत्र	८.	एक साथ
आत्मजान्	४.	पुत्रों के लिये	दैव	१२.	भाग्य के
स्वकृतम्	२.	अपने किये हुये का	अधीनाः	१३.	अधीन
भुजः ।	३.	भोग करने वाले	तत्	११.	वे
जन्तवः	७.	प्राणी	आसते ॥	१४.	हैं

श्लोकार्थ—हे महाभागे ! अपने किये हुये का भोग करने वाले पुत्रों के लिये तुम शोक मत करो। क्योंकि प्राणी एक साथ नहीं रह सकते । वे भाग्य के अधीन हैं ॥

एकोनविंशः श्लोकः

भुवि भौमानि भूतानि यथा यान्त्यपयान्ति च।
नायमात्मा तथैतेषु विपर्येति यथैव भूः ॥१९॥

पदच्छेद— भुवि भौमानि भूतानि यथा यान्ति अपयान्ति च।
न अयम् आत्मा तथा एतेषु विपर्येति यथा एव भूः ॥

शब्दार्थ—

भुवि	१. पृथ्वी पर	न	१०. नहीं है
भौमानि	४. पदार्थ	अयम् आत्मा	८. यह आत्म तत्त्व
भूतानि	३. भौतिक	तथा	९. वैसा
यथा	२. जैसे	एतेषु	१३. इन सबसे
यान्ति	५. बनते	विपर्येति	१४. भिन्न है
अपयान्ति	७. बिगड़ते रहते हैं	यथा एव	१२. समान ही
च।	६. और	भूः॥	११. वह पृथ्वी के

श्लोकार्थ—पृथ्वी पर जैसे भौतिक पदार्थ बनते और बिगड़ते रहते हैं, यह आत्मतत्त्व वैसा नहीं है। वह पृथ्वी के समान ही इन सबसे भिन्न है ॥

विंशः श्लोकः

यथा नैवंविदो भेदो यत आत्मविपर्ययः।
देहयोगवियोगौ च संसृतिर्न निवर्तते ॥२०॥

पदच्छेद— यथा न एवम् विदः भेदः यतः आत्म विपर्ययः।
देहयोग वियोगौ च संसृतिः न निवर्तते ॥

शब्दार्थ—

यथा	५. होती	देह	९. शरीर के
न	४. नहीं	योग	१०. संयोग तथा
एवम्	१. इस प्रकार	वियोगौ	११. वियोग होने पर भी
विदः	२. जानने वालों में	च	८. और जिससे
भेदः	३. भेद बुद्धि	संसृतिः	१२. आवागमन से
यतः आत्म	६. जिससे कि आत्मा के	न	१४. नहीं मिलता है
विपर्ययः।	७. विपरीत ज्ञान होता है	निवर्तते॥	१३. छुटकारा

श्लोकार्थ—इस प्रकार जानने वालों में भेद बुद्धि नहीं होती। जिससे की आत्मा के विपरीत ज्ञान होता है। और जिससे शरोर के संयोग तथा वियोग होने पर भी आवागमन से छुटकारा नहीं मिलता है ॥

एकविंशः श्लोकः

तस्माद् भद्रे स्वतनयान् मया व्यापादितानपि ।
मानुशोच यतः सर्वः स्वकृतं विन्दतेऽवशः ॥२१॥

पदच्छेद— तस्मात् भद्रे स्वतनयान् मया व्यापादितान् अपि ।
मा अनुशोच यतः सर्वः स्वकृतम् विन्दते अवशः ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१. इसलिये	मा	८. मत
भद्रे	२. हे बहिन !	अनुशोच	९. शोक करो
स्व	६. अपने	यतः	१०. क्योंकि
तनयान्	७. पुत्रों के लिये	सर्वः	११. सभी प्राणियों को
मया	३. मेरे द्वारा	स्वकृतम्	१२. अपने कर्मों का फल
व्यापादितान्	४. मारे जाने पर	विन्दते	१४. भोगना पड़ता है
अपि ।	५. भी	अवशः ॥	१३. विवश होकर

श्लोकार्थ—इसलिये हे बहिन ! मेरे द्वारा मारे जाने पर भी अपने पुत्रों के लिये मत शोक करो । क्योंकि सभी प्राणियों को विवश होकर अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है ॥

द्वाविंशः श्लोकः

यावद्धतोऽस्मि हन्तास्मीत्यात्मानं मन्यतेऽस्वदृक् ।
तावत्तदभिमान्यज्ञो बाध्यबाधकतामियात् ॥२२॥

पदच्छेद— यावत् हतः अस्मि हन्ता अस्मीति आत्मानम् मन्यते अस्वदृक् ।
तावत् तत् अभिमानी अज्ञः बाध्य बाधकताम् इयात् ॥

शब्दार्थ—

यावत्	३. जब तक	दृक् ।	२. न जानने के कारण
हतः	६. मैं मारा	तावत्	१०. तब तक
अस्मि	७. जाता हूँ ऐसा	तत्	११. वैसा
हन्ता	४. मैं मारने	अभिमानी	१२. अभिमान करने वाला
अस्मीति	५. वाला हूँ ऐसा (तथा)	अज्ञः	१३. वह अज्ञानी
आत्मानम्	८. अपने बारे में	बाध्य	१४. बाध्य
मन्यते	९. मानता है	बाधकताम्	१५. बाधक भाव को
अस्व	१. अपने स्वरूप को	इयात् ॥	१६. प्राप्त होता है

श्लोकार्थ—अपने स्वरूप को न जानने के कारण जब तक मैं मारने वाला हूँ ऐसा तथा मैं मारा जाता हूँ ऐसा अपने बारे में मानता है । तब तक वैसा अभिमान करने वाला वह अज्ञानी बाध्य, बाधक भाव को प्राप्त होता है ।

त्रयोविंशः श्लोकः

क्षमध्वं मम दौरात्म्यं साधवो दीनवत्सलाः ।

इत्युक्त्वाश्रुमुखः पादौ श्यालः स्वस्रोरथाग्रहीत् ॥२३॥

पदच्छेद— क्षमध्वम् मम दौरात्म्यम् साधवः दीन वत्सलाः ।
इति उक्त्वा अश्रुमुखः पादौ श्यालः स्वस्रोः अथ अग्रहीत् ॥

शब्दार्थ—

क्षमध्वम्	६. क्षमा करो	उक्त्वा	८. कह कर
मम	४. मेरी	अश्रुमुखः	१०. अश्रु पूर्ण मुख वाले
दौरात्म्यम्	५. यह दुष्टता	पादौ	१३. चरणों को
साधवः	१. साधु स्वभाव वाले	श्यालः	११. कंस ने
दीन	२. दीनों के	स्वस्रोः	१२. बहिन देवकी और वसुदेव के
वत्सलाः ।	३. रक्षक तुम दोनों	अथ	९. तब
इति	७. ऐसा	अग्रहीत् ॥	१४. पकड़ लिया

श्लोकार्थ—साधु स्वभाव वाले दीनों के रक्षक तुम दोनों मेरी यह दुष्टता क्षमा करो। ऐसा कहकर तब अश्रु पूर्ण मुख वाले कंस ने बहिन देवकी और वसुदेव के चरणों को पकड़ लिया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

मोचयामास निगडाद् विश्रब्धः कन्यकागिरा ।

देवकीं वसुदेवं च दर्शयन्नात्मसौहृदम् ॥२४॥

पदच्छेद— मोचयामास निगडात् विश्रब्धः कन्यका गिरा ।
देवकीम् वसुदेवम् च दर्शयन् आत्म सौहृदम् ॥

शब्दार्थ—

मोचयामास	८. छोड़ दिया (और)	वसुदेवम्	६. वसुदेव को
निगडात्	७. बन्धन से	च	५. और
विश्रब्धः	३. विश्वास करके	दर्शयन्	११. प्रदर्शित करने लगा
कन्यका	१. कन्या योगमाया के	आत्म	९. अपना
गिरा ।	२. वचनों पर	सौहृदम् ॥	१०. प्रेम
देवकीम्	४. देवकी		

श्लोकार्थ—उस कन्या योग माया के वचनों पर विश्वास करके देवकी-वसुदेव को बन्धन से छोड़ दिया और अपना प्रेम प्रदर्शित करने लगा ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

भ्रातुः समनुतप्तस्य क्षान्त्वा रोषं च देवकी ।
व्यसृजद् वसुदेवश्च प्रहस्य तमुवाच ह ॥२५॥

पदच्छेद— भ्रातुः समनुतप्तस्य क्षान्त्वा रोषम् च देवकी ।
व्यसृजत् वसुदेवश्च च प्रहस्य तम् उवाच ह ॥

शब्दार्थ—

भ्रातुः	२. भाई को	व्यसृजत्	७. उसके अपराध को भुला दिया
समनुतप्तस्य	३. पश्चात्ताप करते देखकर	वसुदेवम्	९. वसुदेव जी
क्षान्त्वा	५. शान्त करके उसे क्षमा कर दिया	च	८. और
रोषम्	४. अपना क्रोध	प्रहस्य	१२. हंसते हुये
च	६. और	तम्	११. उससे
देवकी ।	१. देवकी ने	उवाच	१३. बोले
		ह ॥	१०. तब निश्चय ही

श्लोकार्थ—देवकी ने भाई को पश्चात्ताप करते देखकर अपना क्रोध शान्त करके उसे क्षमा कर दिया । और उसके अपराध को भुला दिया । तब निश्चय ही वसुदेव जी उससे हंसते हुये बोले ॥

षड्विंशः श्लोकः

एवमेतन्महाभाग यथा वदसि देहिनाम् ।
अज्ञानप्रभवाहंधीः स्वपरेति भिदा यतः ॥२६॥

पदच्छेद— एवम् एतत् महाभाग यथा वदसि देहिनाम् ।
अज्ञान प्रभव अहम् धीः स्वपरेति भिदा यतः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	५. ऐसा ही है	अज्ञान	८. अज्ञान
एतत्	४. यह	प्रभव अहम्	९. जनित अहं मैं
महाभाग	१. हे मनस्वी कंस !	धीः	१०. बुद्धि के कारण ही
यथा	२. तुम जैसा	स्व-परेति	११. अपने, पराये का
वदसि	३. कहते हो	भिदा	१२. भेद मान बैठता है
देहिनाम् ।	७. जीव	यतः ॥	६. क्योंकि

श्लोकार्थ—हे मनस्वी कंस ! तुम जैसा कहते हो यह ऐसा ही है । क्योंकि जीव अज्ञान जनित अहं मैं बुद्धि के कारण ही अपने-पराये का भेद मान बैठता है ॥

सप्तविंशः श्लोकः

शोकहर्षभयद्वेषलोभमोहमदान्विताः ।
मिथो घ्नन्तं न पश्यन्ति भावैर्भावं पृथग्दृशः ॥२७॥

पदच्छेद— शोक हर्ष भय द्वेष लोभ मोह मद अन्विताः ।
मिथः घ्नन्तम् न पश्यन्ति भावैः भावम् पृथक् दृशः ॥

शब्दार्थ—

शोक	३.	शोक	मिथः	११.	फिर वे परस्पर
हर्ष	४.	हर्ष	घ्नन्तम्	१४.	नाश करने वाले भगवान् को भी
भय	५.	भय	न	१५.	नहीं
द्वेष	६.	द्वेष	पश्यन्ति	१६.	देखते हैं
लोभ	७.	लोभ	भावैः	१२.	एक वस्तु से
मोह	८.	मोह (और)	भावम्	१३.	दूसरी वस्तु का
मद	९.	मद से	पृथक्	१.	भेद
अन्विताः ।	१०.	युक्त हो जाते हैं	दृशः ॥	२.	दृष्टि हो जाने पर तो वे

श्लोकार्थ—भेद दृष्टि हो जाने पर तो वे शोक, हर्ष, भय, द्वेष, लोभ, मोह और मद से युक्त हो जाते हैं। फिर वे परस्पर एक वस्तु से दूसरी वस्तु का नाश करने वाले भगवान् को भी नहीं देखते हैं ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—कंस एवं प्रसन्नाभ्यां विशुद्धं प्रतिभाषितः ।
देवकीवसुदेवाभ्यामनुज्ञातोऽविशद् गृहम् ॥२८॥

पदच्छेद— कंसः एवम् प्रसन्नाभ्याम् विशुद्धम् प्रतिभाषितः ।
देवकी वसुदेवाभ्याम् अनुज्ञातः अविशत् गृहम् ॥

शब्दार्थ—

कंसः	४.	कंस से	देवकी	६.	देवकी और
एवम्	२.	इस प्रकार	वसुदेवाभ्याम्	७.	देसुदेव
प्रसन्नाभ्याम्	१.	प्रसन्न वसुदेव देवकी	अनुज्ञातः	८.	अनुमति लेकर वह
विशुद्धम्	३.	निष्कपट भाव से	अविशत्	१०.	चला गया
प्रतिभाषितः ।	५.	बातचीत की	गृहम् ॥	९.	अपने महल में

श्लोकार्थ—प्रसन्न वसुदेव-देवकी ने इस प्रकार निष्कपट भाव से कंस से बातचीत की। तब वह देवकी और वसुदेव से अनुमति लेकर अपने महल में चला गया ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

तस्यां रात्र्यां व्यतीतायां कंस आहूय मन्त्रिणः ।
तेभ्य आचष्ट तत् सर्वं यदुक्तं योगनिद्रया ॥२९॥

पदच्छेद— तस्याम् रात्र्याम् व्यतीतायाम् कंसः आहूय मन्त्रिणः ।
तेभ्यः आचष्ट तत् सर्वम् यत् उक्तम् योग निद्रया ॥

शब्दार्थ—

तस्याम्	१.	उस	आचष्ट	१०.	कह सुनाया
रात्र्याम्	२.	रात के	तत्	८.	वह
व्यतीतायाम्	३.	बीत जाने पर	सर्वम्	९.	सब
कंसः	४.	कंस ने	यत्	११.	जो कुछ
आहूय	६.	बुलाया (और)	उक्तम्	१४.	कहा था
मन्त्रिणः ।	५.	मन्त्रियों को	योग	१२.	योग
तेभ्यः	७.	उनसे	निद्रया ॥	१३.	निद्रा ने

श्लोकार्थ—उस रात के बीत जाने पर कंस ने मन्त्रियों को बुलाया, और उनसे वह सब कुछ कह सुनाया, जो कुछ योगनिद्रा ने कहा ॥

त्रिंशः श्लोकः

आकर्ण्य भर्तुर्गदितं तमूचुर्देवशत्रवः ।
देवान् प्रति कृतामर्षा दैतेया नीतिकोविदाः ॥३०॥

पदच्छेद — आकर्ण्य भर्तुः गदितम् तम् ऊचुः देव शत्रवः ।
देवान् प्रति कृत अमर्षाः दैतेयाः न अति कोविदाः ॥

शब्दार्थ—

आकर्ण्य	३.	सुनकर	देवान्	५.	देवताओं के
भर्तुः	१.	कंस के	प्रति	६.	प्रति
गदितम्	२.	इस कथन को	कृत	८.	भाव रखने वाले
तम्	१३.	कंस से	अमर्षाः	७.	शत्रुता का
ऊचुः	१४.	बोले	दैतेयाः	४.	दैत्य होने के कारण
देव	११.	देवों के	न अति	१०.	रहित
शत्रवः ।	१२.	शत्रु वे	कोविदाः ॥	९.	विद्वत्ता से

श्लोकार्थ—कंस के इस कथन को सुनकर दैत्य होने के कारण देवताओं के प्रति शत्रुता का भाव रखने वाले, विद्वत्ता से रहित, देवों के शत्रु वे कंस से बोले ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

एवं चेत्तर्हि भोजेन्द्र पुरग्रामव्रजादिषु ।
अनिर्दशान् निर्दशांश्च हनिष्यामोऽद्य वै शिशून् ॥३१॥

पदच्छेद— **एवम् चेत् तर्हि भोजेन्द्र पुरग्राम व्रज आदिषु ।**
अनिर्दशान् निर्दशान् च हनिष्यामः अद्य वै शिशून् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	३. ऐसी बात है	अनिर्दशान्	११. उससे अधिक के
चेत्	२. यदि	निर्दशान्	९. दस दिन के
तर्हि	४. तो हम	च	१०. और
भोजेन्द्र	१. हे भोजराज !	हनिष्यामः	१५. मार डालेंगे
पुर	५. बड़े बड़े नगरों में	अद्य	१४. आज ही
ग्राम	६. छोटे छोटे गाँवों में	वै	१३. निश्चय ही
व्रज	७. अहीरों की बस्तियों	शिशून् ॥	१२. बच्चों को
आदिषु ।	८. आदि में		

श्लोकार्थ—हे भोजराज ! यदि ऐसी बात है तो हम बड़े बड़े नगरों में, छोटे छोटे गाँवों में, अहीरों की बस्तियों आदि में दस दिन के और उससे अधिकके बच्चों को निश्चय ही आज ही मार डालेंगे ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

किमुद्यमैः करिष्यन्ति देवाः समरभीरवः ।
नित्यमुद्विग्नमनसो ज्याघोषैर्धनुषस्तव ॥३२॥

पदच्छेद— **किम् उद्यमैः करिष्यन्ति देवाः समर भीरवः ।**
नित्यम् उद्विग्न मनसः ज्या घोषैः धनुषः तव ॥

शब्दार्थ—

किम्	५. क्या	नित्यम्	१०. सदा
उद्यमैः	४. उद्योग करके ही	उद्विग्न	११. घबराये हुये
करिष्यन्ति	६. करेंगे	मनसः	१२. मनवाले रहते हैं
देवाः	३. देवगण	ज्या	८. डोरी
समर	१. समर	घोषैः	९. टङ्कार सुनकर
भीरवः ।	२. भीरु	धनुषः तव ॥	७. वे तो आपके धनुष की

श्लोकार्थ—समर भीरु देवगण उद्योग करके ही क्या करेंगे । वे तो आपके धनुष की डोरी की टङ्कार सुनकर सदा घबराये हुये मन वाले रहते हैं ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

अस्यतस्ते शरव्रातैर्हन्यमानाः समन्ततः ।
जिजीविषव उत्सृज्य पलायनपरा ययुः ॥३३॥

पदच्छेद— अस्यतः ते शरव्रातैः हन्यमानाः समन्ततः ।
जिजीविषवः उत्सृज्य पलायनपराः ययुः ॥

शब्दार्थ—

अस्यतः	१. युद्ध भूमि में	जिजीविषवः	५. जीने की इच्छा वाले देवता
ते	२. आपकी	उत्सृज्य	६. युद्ध भूमि छोड़कर
शरव्रातैः	३. बाण वर्षा से	पलायनपराः	८. भागने में तत्पर
हन्यमानाः	४. मारे जाते हुये	ययुः ॥	९. हो जाते हैं
समन्ततः ।	७. चारों ओर		

श्लोकार्थ—युद्ध भूमि में आपकी बाण वर्षा से मारे जाते हुये, जीने की इच्छा वाले, देवता लोग युद्ध भूमि छोड़कर चारों ओर भागने में तत्पर हो जाते हैं ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

केचित् प्राञ्जलयो दीना न्यस्तशस्त्रा दिवौकसः ।
मुक्तकच्छशिखाः केचिद् भीताः स्म इति वादिनः ॥३४॥

पदच्छेद— केचित् प्राञ्जलयः दीनाः न्यस्त शस्त्राः दिवौकसः ।
मुक्त कच्छ शिखाः केचित् भीताः स्म इति वादिनः ॥

शब्दार्थ—

केचित्	१. कुछ	कच्छ	९. कच्छ
प्राञ्जलयः	५. हाथ जोड़कर	शिखाः	८. चोटी के बाल (तथा)
दीनाः	६. दीनता प्रकट करने लगते हैं	केचित्	७. कुछ
न्यस्त	४. त्याग कर	भीताः	११. भयभीत
शस्त्राः	३. अपने अस्त्र-शस्त्र	स्म	१२. हैं
दिवौकसः ।	२. देवता	इति	१३. ऐसा
मुक्त	१०. खोलकर (हम)	वादिनः ॥	१४. कहते हैं

श्लोकार्थ—कुछ देवता अपने अस्त्र-शस्त्र त्यागकर हाथ जोड़कर दीनता प्रकट करने लगते हैं । कुछ चोटी के बाल तथा कच्छ खोलकर हम भयभीत हैं, ऐसा कहते हैं ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

न त्वं विस्मृतशस्त्रास्त्रान् विरथान् भयसंवृतान् ।
हंस्यन्यासक्तविमुखान् भग्नचापानयुध्यतः ॥३५॥

पदच्छेद— न त्वम् विस्मृत शस्त्र अस्त्रान् विरथान् भय संवृतान् ।
हंसि अन्यासक्त विमुखान् भग्न चापान् अयुध्यतः ॥

शब्दार्थ—न	१३.	नहीं	संवृतान् ।	७.	डरे हुये
त्वम्	१.	आप	हंसि	१४.	मारते हैं
विस्मृत	४.	भूले हुये	अन्यासक्त	८.	युद्ध छोड़कर
शस्त्र	३.	शस्त्र	विमुखान्	९.	भागने वाले
अस्त्रान्	२.	अस्त्र	भग्न	१०.	टूटे हुये
विरथान्	५.	रथ रहित	चापान्	११.	धनुष वाले तथा
भय	६.	भय से	अयुध्यतः ॥	१२.	युद्ध न करने वाले वीरों को

श्लोकार्थ—आप अस्त्र-शस्त्र भूले हुये, रथ रहित, भय से डरे हुये, युद्ध छोड़कर भागने वाले, टूटे हुए धनुष वाले तथा युद्ध न करने वाले वीरों को नहीं मारते हैं ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

किं क्षेमशूरैर्विबुधैरसंयुगविकत्थनैः ।
रहोजुषा किं हरिणा शम्भुना वा वनौकसा ।
किमिन्द्रेणाल्पवीर्येण ब्रह्मणा वा तपस्यता ॥३६॥

पदच्छेद— किं क्षेम शूरैः विबुधैः असंयुग विकत्थनैः ।
रहः जुषा किम् हरिणा शम्भुना वा वनौकसा ।
किम् इन्द्रेण अल्पवीर्येण ब्रह्मणा वा तपस्यता ॥

शब्दार्थ—किम्	५.	क्या भय	शम्भुना वा	१३.	शङ्कर अथवा
क्षेम शूरैः	१.	शान्ति स्थल में ही वीर बनने वाले	वनौकसा	१२.	वनवासी
विबुधैः	४.	देवताओं से	किम्	८.	क्या डर
असंयुग	२.	रणभूमि के बाहर	इन्द्रेण	७.	इन्द्र से भी
विकत्थनैः	३.	डींग हांकने वाले	अल्पवीर्येण	६.	अल्पवीर्य
रहः जुषाम्	९.	एकान्त में रहने वाले	ब्रह्मणा	१५.	ब्रह्मा से भी हमें
किम्	१६.	क्या डर हो सकता है	वा	११.	और
हरिणा	१०.	विष्णु	तपस्यता ॥	१४.	तपस्वी

श्लोकार्थ—शान्ति स्थल में ही वीर बनने वाले तथा रणभूमि के बाहर डींग हांकने वाले देवताओं से क्या भय, अल्पवीर्य इन्द्र से भी क्या डर, एकान्त में रहने वाले विष्णु और वनवासी शङ्कर अथवा तपस्वी ब्रह्मा से भी हमें क्या डर हो सकता है ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

तथापि देवाः सापत्न्यान्नोपेक्ष्या इति मन्महे ।
ततस्तन्मूलखनने नियुङ्क्ष्वास्माननुव्रतान् ॥३७॥

पदच्छेद— तथापि देवाः सापत्न्यात् न उपेक्ष्याः इति मन्महे ।
ततः तत् मूलखनने नियुङ्क्ष्व अस्मान् अनुव्रतान् ॥

शब्दार्थ—

तथापि	१.	फिर भी	ततः	७.	इसलिये
देवाः	३.	देवताओं की	तत्	८.	उनकी
सापत्न्यात्	२.	शत्रु होने के कारण	मूलखनने	९.	जड़ उखाड़ फेंकने के लिये
न उपेक्ष्याः	४.	उपेक्षा नहीं करनी चाहिये	नियुङ्क्ष्व	१२.	नियुक्त कर दीजिये
इति	५.	ऐसी	अस्मान्	१०.	हम जैसे
मन्महे ।	६.	हमारी राय है	अनुव्रतान् ॥	११.	सेवकों को

श्लोकार्थ—फिर भी शत्रु होने के कारण देवताओं की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये । ऐसी हमारी राय है । इसलिये उनकी जड़ उखाड़ फेंकने के लिये हम जैसे सेवकों को नियुक्त कर दीजिये ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

यथाऽऽमयोऽङ्गे समुपेक्षितो नृभिर्न शक्यते रूढपदश्चिकित्सितुम् ।
यथेन्द्रियग्राम उपेक्षितस्तथा रिपुर्महान् बद्धबलो न चाल्यते ॥३८॥

पदच्छेद— यथा आमयः अङ्गे समुपेक्षितः नृभिः न शक्यते रूढपदः चिकित्सितुम् ।
यथा इन्द्रिय ग्राम उपेक्षितः तथा रिपुः महान् बद्ध बलः न चाल्यते ॥

शब्दार्थ—

यथा	२.	जैसे	यथा इन्द्रिय	९.	जैसे इन्द्रिय
आमयः	४.	रोग की	ग्राम	१०.	समुदाय की
अङ्गे	३.	शरीर में	उपेक्षितः	११.	उपेक्षा करने पर उसका दमन असम्भव होता है
समुपेक्षितः	५.	उपेक्षा करने पर तथा उसके	तथा	१२.	उसी प्रकार
नृभिः	१.	मनुष्यों के द्वारा	रिपुः	१४.	शत्रु की उपेक्षा करने पर तथा
न शक्यते	८.	सम्भव नहीं होती	महान्	१३.	श्रेष्ठ
रूढपदः	६.	बद्ध मूल हो जाने पर	बद्ध बलः	१५.	उसके पैर जमा लेने पर
चिकित्सितुम् ।	७.	उसकी चिकित्सा	न चाल्यते ॥	१६.	उसे नहीं हटाया जा सकता है

श्लोकार्थ—मनुष्यों के द्वारा जैसे शरीर में रोग की उपेक्षा करने पर तथा उसके बद्धमूल हो जाने पर उसकी चिकित्सा सम्भव नहीं होती है । जैसे इन्द्रिय के समुदाय की उपेक्षा करने पर उसका दमन असम्भव होना है । उसी प्रकार श्रेष्ठ शत्रु की उपेक्षा करने पर तथा उसके पैर जमा लेने पर उसे नहीं हटाया जा सकता है ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

मूलं हि विष्णुर्देवानां यत्र धर्मः सनातनः।
तस्य च ब्रह्म गोविप्रास्तपो यज्ञाः सदक्षिणाः ॥३९॥

पदच्छेद — मूलम् हि विष्णुः देवानाम् यत्र धर्मः सनातनः।
तस्य च ब्रह्म गो विप्राः तपः यज्ञाः सदक्षिणाः ॥

शब्दार्थ—

मूलम् हि	२.	जड़ है	तस्य	७.	धर्म की जड़ है
विष्णु	३.	विष्णु (और)	च	११.	और
देवानाम्	१.	देवताओं की	ब्रह्म	८.	वेद
यत्र	४.	जहाँ	गो विप्राः	९.	गौ- ब्राह्मण
धर्मः	६.	धर्म है (वे नहीं हैं)	तपः यज्ञाः	१०.	तपस्या यज्ञ (जिनमें)
सनातनः।	५.	सनातन	सदक्षिणाः॥	१२.	दक्षिणा दी जाती है

श्लोकार्थ—देवताओं की जड़ है विष्णु, और जहाँ सनातन धर्म है वे वहीं हैं। धर्म की जड़ है, वेद, गौ, ब्राह्मण, तपस्या और यज्ञ जिनमें दक्षिणा दी जाती है ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

तस्मात् सर्वात्मना राजन् ब्राह्मणान् ब्रह्मवादिनः।
तपस्विनो यज्ञशीलान् गाश्च हन्मो हविर्दुघाः ॥४०॥

पदच्छेद— तस्मात् सर्व आत्मना राजन् ब्राह्मणान् ब्रह्म वादिनः।
तपस्विनः यज्ञ शीलान् गाः च हन्मः हविः दुघाः ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१.	इसलिये	तपस्विनः	६.	तपस्वी
सर्व	१२.	सब	यज्ञशीलान्	७.	याज्ञिक और यज्ञ के लिये
आत्मना	१३.	प्रकार से	गाः	११.	गायों का
राजन्	२.	हे भोजराज !	च	९.	और
ब्राह्मणान्	५.	ब्राह्मण	हन्मः	१४.	विनाश कर डालेंगे
ब्रह्म	३.	हम वेद	हविः	८.	हविष्य पदार्थ
वादिनः।	४.	वादी	दुघाः॥	१०.	दूध आदि देने वाली

श्लोकार्थ—इसलिये हे भोजराज ! हम ब्रह्मवादी ब्राह्मण, तपस्वी, याज्ञिक और यज्ञ के लिये हविष्य पदार्थ और दूध आदि देने वाली गायों का सब प्रकार से विनाश कर डालेंगे ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

विप्रा गावश्च वेदाश्च तपः सत्यं दमः शमः ।
श्रद्धा दया तितिक्षा च क्रतवश्च हरेस्तनूः ॥४१॥

पदच्छेद— विप्राः गावः च वेदाः च तपः सत्यम् दमः शमः ।
श्रद्धा दया तितिक्षा च क्रतवः च हरेः तनूः ॥

शब्दार्थ—

विप्राः	१.	ब्राह्मण	श्रद्धा	८.	श्रद्धा
गावः च	२.	गौ और	दया	९.	दया
वेदाः च	३.	वेद तथा	तितिक्षा	१०.	तितिक्षा
तपः	४.	तपस्या	च	११.	और
सत्यम्	५.	सत्य	क्रतवः च	१२.	यज्ञ
दमः	६.	इन्द्रिय दमन	हरेः	१३.	विष्णु के ही
शमः ।	७.	मनोनिग्रह	तनूः ॥	१४.	शरीर हैं

श्लोकार्थ—ब्राह्मण, गौ और वेद तथा तपस्या, सत्य, इन्द्रिय-दमन, मनोनिग्रह, श्रद्धा, दया, तितिक्षा और यज्ञ विष्णु के ही शरीर हैं ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

स हि सर्वसुराध्यक्षो ह्यसुरद्विड् गुहाशयः ।
तन्मूला देवताः सर्वाः सेश्वराः सचतुर्मुखाः ।
अयं वै तद्वधोपायो यदृषीणां विहिंसनम् ॥४२॥

पदच्छेद— स हि सर्व सुराध्यक्षः हि असुर द्विड् गुहाशयः ।
तत् मूलाः देवताः सर्वाः सेश्वराः स चतुर्मुखाः ।
अयम् वै तत् वध उपायः यत् ऋषीणाम् विहिंसनम् ॥

शब्दार्थ—

स हि	१.	वह विष्णु ही	सेश्वराः	५.	महादेव और
सर्वसुराध्यक्षः	२.	सब देवताओं का स्वामी	स चतुर्मुखाः	६.	ब्रह्मा सहित
हि असुरद्वेषी	३.	असुरों का द्वेषी है (वह)	अयम् वै	१३.	यही है
गुहाशयः ।	४.	गुफा में छिपा रहता है	तत्	११.	उसे
तत्	१०.	वही है	वधउपायः	१२.	मारने का उपाय
मूलाः	९.	जड़	यत्	१४.	कि
देवता	८.	देवताओं की	ऋषीणाम्	१५.	ऋषियों को
सर्वाः	७.	सारे	विहिंसनम् ॥	१६.	मार डाला जाय

श्लोकार्थ—वह विष्णु ही सब देवताओं का स्वामी, असुरों का द्वेषी है । वह गुफा में छिपा रहता है । महादेव और ब्रह्मा सहित सारे देवताओं की जड़ वही है । उसे मारने का उपाय यही है कि ऋषियों मार डाला जाय ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवं दुर्मन्त्रिभिः कंसः सह सम्मन्त्र्य दुर्मतिः।
ब्रह्महिंसां हितं मेने कालपाशावृतोऽसुरः ॥४३॥

पदच्छेद— एवम् दुर्मन्त्रिभिः कंसः सह सम्मन्त्र्य दुर्मतिः।
ब्रह्म हिंसाम् हितम् मेने कालपाश आवृतः असुरः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	ब्रह्म	१०.	ब्राह्मणों की
दुर्मन्त्रिभिः	७.	दुष्ट मन्त्रियों के	हिंसाम्	११.	हिंसा करने में ही
कंसः	६.	कंस ने	हितम् मेने	१२.	अपना हित समझा
सह	८.	साथ	कालपाश	२.	काल के फन्दे में
सम्मन्त्र्य	९.	सलाह करके	आवृतः	३.	फंसे हुये
दुर्मतिः।	४.	दुर्बुद्धि	असुरः ॥	५.	असुर

श्लोकार्थ—इस प्रकार काल के फन्दे में फंसे हुये दुर्बुद्धि असुर कंस ने दुष्ट मन्त्रियों के साथ सलाह करके ब्राह्मणों की हिंसा करने में ही अपना हित समझा ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

सन्दिश्य साधुलोकस्य कदने कदनप्रियान्।
कामरूपधरान् दिक्षु दानवान् गृहमाविशत् ॥४४॥

पदच्छेद— सन्दिश्य साधु लोकस्य कदने कदन प्रियाम्।
कामरूप धरान् दिक्षु दानवान् गृहम् आविशत् ॥

शब्दार्थ—

सन्दिश्य	९.	आदेश देकर	कामरूप	१.	इच्छानुसार रूप
साधु	६.	सन्त	धरान्	२.	धारण करने वाले
लोकस्य	७.	पुरुषों की	दिक्षु	१०.	उनके इधर-उधर जाने पर
कदने	८.	हिंसा करने का	दानवान्	५.	राक्षसों को
कदन	३.	हिंसा	गृहम्	११.	कंस अपने महल में
प्रियान्।	४.	प्रेमी	आविशत्॥	१२.	प्रवेश कर गया

श्लोकार्थ—इच्छानुसार रूप धारण करने वाले, हिंसा प्रेमी राक्षसों को सन्त पुरुषों की हिंसा करने का आदेश देकर उनके इधर-उधर चले जाने पर कंस अपने महल में प्रवेश कर गया ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

ते वै रजःप्रकृतयस्तमसा मूढचेतसः ।
सतां विद्वेषमाचेरुरारादागतमृत्यवः ॥४५॥

पदच्छेद— ते वै रजः प्रकृतयः तमसा मूढ चेतसः ।
सताम् विद्वेषम् आचेरुः आरात् आगतमृत्यवः ॥

शब्दार्थ—

ते वै	१.	निश्चय ही वे असुर	सताम्	१०.	सन्तों से
रजः	२.	रजोगुण	विद्वेषम्	११.	द्वेष
प्रकृतयः	३.	प्रकृति के थे	आचेरुः	१२.	किया
तमसा	४.	तमोगुण के कारण	आरात्	८.	समीप
मूढ	६.	विवेकहीन हो गया था	आगत	९.	आने पर उन्होंने
चेतसः ।	५.	उनका चित्त	मृत्यवः ॥	७.	मृत्यु से

श्लोकार्थ— निश्चय ही वे असुर रजोगुण प्रकृति के थे । तमोगुण के कारण उनका चित्त विवेकहीन हो गया था । मृत्यु के समीप आने पर उन्होंने सन्तों से द्वेष किया ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

आयुः श्रियं यशो धर्मं लोकानाशिष एव च ।
हन्ति श्रेयांसि सर्वाणि पुंसो महदतिक्रमः ॥४६॥

पदच्छेद— आयुः श्रियः यशः धर्मम् लोकान् आशिषः एव च ।
हन्ति श्रेयांसि सर्वाणि पुंसः महत् अतिक्रमः ॥

शब्दार्थ—

आयुः श्रियः	४.	आयु-लक्ष्मी	हन्ति	१२.	नष्ट हो जाते हैं
यशः धर्मम्	५.	यश-धर्म	श्रेयांसि	९.	कल्याण के
लोकान्	६.	लोक-परलोक	सर्वाणि	१०.	सब साधन
आशिषः	८.	विषय भोग (तथा)	पुंसः	१.	जो लोग
एव	११.	ही	महत्	२.	महान् सन्तों का
च ।	७.	और	अतिक्रमः ॥	३.	अनादर करते हैं (उनकी)

श्लोकार्थ— जो लोग महान् सन्तों का अनादर करते हैं, उनकी आयु, लक्ष्मी, यश, धर्म, लोक, परलोक और विषय भोग कल्याण के सब साधन नष्ट हो जाते हैं ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
चतुर्थः अध्यायः ॥४॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

पञ्चमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—नन्दस्त्वात्मज उत्पन्ने जाताह्लादो महामनाः ।

आहूय विप्रान् वेदज्ञान् स्नातः शुचिरलङ्कृतः ॥१॥

पदच्छेद— नन्दः तु आत्मजे उत्पन्ने जात आह्लादः महामनाः ।
आहूय विप्रान् वेदज्ञान् स्नात्ः शुचिः अलङ्कृतः ॥

शब्दार्थ—

नन्दः	३.	नन्द बाबा	आहूय	१३.	बुलाया
तु	१.	तब	विप्रान्	१२.	ब्राह्मणों को
आत्मजे	४.	पुत्र का	वेदज्ञान्	११.	वेदों के जानकार
उत्पन्ने	५.	जन्म होने पर	स्नातः	८.	स्नान करके
जात	७.	युक्त हो गये (उन्होंने)	शुचिः	९.	पवित्र होकर
आह्लादः	६.	आनन्द से	अलङ्कृतः ॥	१०.	वस्त्राभूषण धारण किये
महामनाः ।	२.	मनस्वी एवं उदार			

श्लोकार्थ—तब मनस्वी एवं उदार नन्द बाबा पुत्र का जन्म होने पर आनन्द से युक्त हो गये। उन्होंने स्नान करके वस्त्राभूषण धारण किये। वेदों के जानकार ब्राह्मणों को बुलाया ॥

द्वितीयः श्लोकः

वाचयित्वा स्वस्त्ययनं जातकर्मात्मजस्य वै ।

कारयामास विधिवत् पितृदेवार्चनं तथा ॥२॥

पदच्छेद— वाचयित्वा स्वस्त्ययनम् जातकर्म आत्मजस्य वै ।
कारयामास विधिवत् पितृदेव अर्चनम् तथा ॥

शब्दार्थ—

वाचयित्वा	४.	वाचन कराकर	कारयामास	६.	करवाया
स्वस्त्ययनम्	३.	स्वस्ति	विधिवत्	८.	विधिपूर्वक
जातकर्म	५.	जात कर्म संस्कार	पितृदेव	९.	देवता और पितरों का
आत्मजस्य	२.	अपने पुत्र का	अर्चनम्	१०.	पूजन किया
वै ।	१.	तब नन्द बाबा ने	तथा ॥	७.	तथा

श्लोकार्थ—तब नन्द बाबा ने अपने पुत्र का स्वस्ति वाचन कराकर जातकर्म संस्कार करवाया। तथा विधिपूर्वक देवता और पितरों का पूजन किया ॥

तृतीयः श्लोकः

धेनूनां नियुते प्रादाद् विप्रेभ्यः समलङ्कृते।
तिलाद्रीन् सप्त रत्नौघशातकौम्भाम्बरावृतान् ॥३॥

पदच्छेद— धेनूनाम् नियुते प्रादात् विप्रेभ्यः सम् अलङ्कृते।
तिल अद्रीन् सप्तरत्नौघ शातकौम्भ अम्बर आवृतान् ॥

शब्दार्थ—

धेनूनाम्	५.	गौएँ	तिल	११.	तिल के
नियुते	४.	दो लाख	अद्रीन्	१२.	पहाड़ दान किये
प्रादात्	६.	दान दीं	सप्तरत्नौघ	७.	सात रत्नों के समूह और
विप्रेभ्यः	१.	उन्होंने ब्राह्मणों को	शातकौम्भ	८.	सुनहले
सम्	२.	भलीभाँति	अम्बर	९.	वस्त्रों से
अलङ्कृते।	३.	अलङ्कृत करके	आवृतान् ॥	१०.	ढके हुये

श्लोकार्थ—उन्होंने ब्राह्मणों को भलीभाँति अलङ्कृत करके दो लाख गौएँ दान दीं। और रत्नों के समूह तथा सात सुनहले वस्त्रों से ढके हुये तिल के पहाड़ दान किये।

चतुर्थः श्लोकः

कालेन स्नानशौचाभ्यां संस्कारैस्तपसेज्यया।
शुध्यन्ति दानैः सन्तुष्ट्या द्रव्याण्यात्माऽऽत्मविद्यया ॥४॥

पदच्छेद— कालेन स्नान शौचाभ्याम् संस्कारैः तपसा इज्यया।
तुष्यन्ति दानैः सन्तुष्ट्या द्रव्याणि आत्मा आत्म विद्यया ॥

शब्दार्थ—

कालेन	१.	समय से	शुध्यन्ति	१०.	शुद्ध होता है
स्नान	२.	स्नान	दानैः	७.	दान से और
शौचाभ्याम्	३.	प्रक्षालन	सन्तुष्ट्या	८.	संतोष से
संस्कारैः	४.	संस्कार	द्रव्याणि	९.	द्रव्य
तपसा	५.	तपस्या	आत्मा	११.	आत्मा की शुद्धि तो
इज्यया।	६.	यज्ञ	आत्म विद्यया ॥	१२.	आत्मज्ञान से होती है

श्लोकार्थ—समय से स्नान, प्रक्षालन, संस्कार, तपस्या, यज्ञ, दान से और संस्कार से द्रव्य शुद्ध होता है। आत्मा की शुद्धि तो आत्म-ज्ञान से ही होती है॥

पञ्चमः श्लोकः

सौमङ्गल्यगिरो विप्राः सूतमागधवन्दिनः ।
गायकाश्च जगुर्नेदुर्भेर्यो दुन्दुभयो मुहुः ॥५॥

पदच्छेद— सौमङ्गल्य गिरः विप्राः सूत मागध वन्दिनः ।
गायकाः च जगुः नेदुः भेर्यः दुन्दुभयः मुहुः ॥

शब्दार्थ—

सौमङ्गल्य	५.	मङ्गलमय	गायकाः	८.	गायक
गिरः	६.	आशीर्वाद देने लगे	च	७.	और
विप्राः	१.	उस समय ब्राह्मण	जगुः	९.	गाने लगे
सूत	२.	सूत	नेदुः	१३.	बजने लगीं
मागध	३.	मागध और	भेर्यः	१०.	भेरी और
वन्दिनः ।	४.	बन्दीजन	दुन्दुभयः	११.	दुन्दुभियाँ
			मुहुः ॥	१२.	बार-बार

श्लोकार्थ—उस समय ब्राह्मण, सूत, मागध और बन्दीजन मङ्गलमय आशीर्वाद देने लगे । और गायक गाने लगे । भेरी और दुन्दुभियाँ बार-बार बजने लगीं ॥

षष्ठः श्लोकः

व्रजः सम्मृष्टसंसिक्तद्वाराजिरगृहान्तरः ।
चित्रध्वजपताकास्रक्चैलपल्लवतोरणैः ॥६॥

पदच्छेद— व्रजः सम्मृष्ट संसिक्त द्वार अजिर गृह अन्तरः ।
चित्र ध्वज पताका स्रक् चैल पल्लव तोरणैः ॥

शब्दार्थ—

व्रजः	१.	व्रज मण्डल को	चित्र	८.	उन्हें चित्र-विचित्र
सम्मृष्ट	६.	झाड़-बुहार कर	ध्वज	९.	ध्वजा
संसिक्त	७.	जल का छिड़काव किया गया था	पताका	१०.	पताका
द्वार	३.	द्वार	स्रक्	११.	पुष्पों की मालाओं
अजिर	४.	आँगन और	चैल	१२.	रंग बिरंगे वस्त्रों और
गृह	२.	सभी घरों के	पल्लव	१३.	पल्लवों के
अन्तरः ।	५.	भीतरी भाग	तोरणैः ॥	१४.	बन्दन वारों से सजाया गया

श्लोकार्थ—व्रजमण्डल के सभी घरों के द्वार, आँगन और भीतरी भाग झाड़ बुहार कर जल का छिड़काव किया गया था । उन्हें चित्र-विचित्र, ध्वजा, पताका, पुष्पों की मालाओं, रंग-बिरंगे वस्त्रों और पल्लवों के बन्दन वारों से सजाया गया था ॥

सप्तमः श्लोकः

गावो वृषा वत्सतरा हरिद्रातैलरूषिताः ।
विचित्रधातुबर्हस्रग्वस्त्रकाञ्चनमालिनः ॥७॥

पदच्छेद— गावः वृषाः वत्सतराः हरिद्रा तैल रूषिताः ।
विचित्र धातु बर्ह स्रक् वस्त्र काञ्चन मालिनः ॥

शब्दार्थ—

गावः	१. गाय	विचित्र	७. उन्हें गेरू आदि रंगीन
वृषाः	२. बैल और	धातु बर्ह	८. धातुयें, मोर पंख
वत्सतराः	३. बछड़ों के अङ्गों में	स्रक्	९. पुष्पों के हार
हरिद्रा	४. हल्दी	वस्त्र	१०. सुन्दर वस्त्र और
तैल	५. तेल का	काञ्चन	११. सोने की
रूषिताः ।	६. लेप किया गया	मालिनः ॥	१२. जंजीरों से सजाया गया

श्लोकार्थ—गाय, बैल और बछड़ों के अङ्गों में हल्दी, तेल का लेप किया गया । उन्हें गेरू आदि रंगीन धातुयें, मोर पंख, पुष्पों के हार, सुन्दर वस्त्र और सोने की जंजीरों से सजाया गया था ॥

अष्टमः श्लोकः

महार्हवस्त्राभरणकञ्चुकोष्णीषभूषिताः ।
गोपाः समाययू राजन् नानोपायनपाणयः ॥८॥

पदच्छेद— महार्ह वस्त्र आभरण कञ्चुक उष्णीष भूषिताः ।
गोपाः समाययुः राजन् नाना उपायन पाणयः ॥

शब्दार्थ—

महार्ह	३. बहुमूल्य	गोपाः	२. सभी ग्वाल
वस्त्र	४. वस्त्र	समाययुः	१२. नन्द बाबा के घर आये
आभरण	५. गहने	राजन्	१. हे परीक्षित् !
कञ्चुक	६. अंगरखे और	नाना	११. बहुत सी सामग्रियों को लेकर
उष्णीष	७. पगड़ियों से	उपायन	१०. भेंट की
भूषिताः ।	८. सुसज्जित होकर	पाणयः ॥	९. अपने हाथों में

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! सभी ग्वाल बहुमूल्य वस्त्र, गहने अंगरखे और पगड़ियों से सुसज्जित होकर अपने हाथों में भेंट की बहुत सी सामग्रियों को लेकर नन्द बाबा के घर आये ॥

नवमः श्लोकः

गोप्यश्चाकर्ण्य मुदिता यशोदायाः सुतोद्भवम् ।
आत्मानं भूषयाञ्चक्रुर्वस्त्राकल्पाञ्जनादिभिः ॥९॥

पदच्छेद— गोप्यः च आकर्ण्य मुदिताः यशोदायाः सुत उद्भवम् ।
आत्मानम् भूषयाञ्चक्रुः वस्त्र आकल्प अञ्जन आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

गोप्यः	४. गोपियों को	आत्मानम्	१२. अपना
च	७. और	भूषयाम्	१३. शृंगार
आकर्ण्य	५. यह सुनकर	चक्रुः	१४. किया
मुदिताः	६. बड़ा आनन्द हुआ	वस्त्र	८. उन्होंने वस्त्रों
यशोदायाः	१. यशोदा जी के	आकल्प	९. आभूषण
सुत	२. पुत्र	अञ्जन	१०. अञ्जन
उद्भवम् ।	३. हुआ है	आदिभिः ॥	११. आदि से

श्लोकार्थ—यशोदा जी के पुत्र हुआ है। गोपियों को यह सुनकर बड़ा आनन्द हुआ। और उन्होंने वस्त्रों, आभूषण, अञ्जन आदि से अपना शृंगार किया ॥

दशमः श्लोकः

नवकुङ्कुमकिञ्जल्कमुखपङ्कजभूतयः ।
बलिभिस्त्वरितं जग्मुः पृथुश्रोण्यश्चलत्कुचाः ॥१०॥

पदच्छेद— नव कुङ्कुम किञ्जल्क मुख पङ्कज भूतयः ।
बलिभिः त्वरितम् जग्मुः पृथुश्रोण्यः चलत् कुचाः ॥

शब्दार्थ—

नव	१. नवीन	बलिभिः	१०. भेंट सामग्री लेकर
कुङ्कुम	२. कुङ्कुम और	त्वरितम्	११. जल्दी-जल्दी
किञ्जल्क	३. कमल की केसर से युक्त उनके	जग्मुः	१२. चल पड़ी
मुख	४. मुख	पृथुश्रोण्यः	७. बड़े बड़े नितम्बों तथा
पङ्कज	५. कमल	चलत्	८. हिलते हुये
भूतयः ।	६. बड़े ही सुन्दर थे	कुचाः ॥	९. पयोधर वाली वे गोपियाँ

श्लोकार्थ—नवीन कुङ्कुम और कमल की केसर से युक्त उनके मुख कमल बड़े ही सुन्दर थे। बड़े बड़े नितम्बों तथा हिलते हुये पयोधर वाली वे गोपियाँ भेंट सामग्री लेकर जल्दी जल्दी चल पड़ीं ॥

एकादशः श्लोकः

गोप्यः सुमृष्टमणिकुण्डलनिष्ककण्ठ्यश्चित्राम्बराः पथि शिखाच्युतमाल्यवर्षाः।
नन्दालयं सवलया व्रजतीर्विरेजुर्व्यालोलकुण्डलपयोधरहारशोभाः ॥११॥

पदच्छेद—गोप्यः सुमृष्ट मणिकुण्डल निष्ककण्ठ्यः चित्र अम्बराः पथि शिखा च्युत माल्यवर्षाः ।
नन्द आलयम् सवलयाः व्रजतीः विरेजुः व्यालोल कुण्डल पयोधर हार शोभाः ॥

शब्दार्थ—

गोप्यः	१.	गोपियों के कानों में	नन्द आलयम्	९.	नन्द बाबा के घर
सुमृष्ट	२.	चमकती हुई	सवलयाः	११.	हाथों में कंगन
मणिकुण्डल	३.	मणियों के कुण्डल थे	व्रजतीः	१०.	जाती हुई उनके
निष्ककण्ठ्यः	४.	गले में सोने का हार था	विरेजुः	१६.	बड़ी अनूठी जान पड़ती थीं
चित्र अम्बराः	५.	वे रंग बिरंगे वस्त्र पहने थीं	व्यालोल	१२.	कानों में हिलते हुये
पथि शिखा	६.	मार्ग में उनकी चोटियों से	कुण्डल	१३.	कुण्डल तथा
च्युत	७.	गिरते हुये	पयोधर	१४.	पयोधर और गले में
माल्य वर्षाः ।	८.	फूल बरसते जा रहे थे	हार शोभाः ॥	१५.	हार की शोभा

श्लोकार्थ - गोपियों के कानों में चमकती हुई मणियों के कुण्डल थे। गले में सोने का हार था। वे रंग बिरंगे वस्त्र पहने थीं। मार्ग में उनकी चोटियों से गिरते हुवे फूल बरसते जा रहे थे। नन्द बाबा के घर जाती हुई उनके हाथों में कंगन, कानों में हिलते हुये कुण्डल तथा पयोधर और गले में हार की शोभा बड़ी अनूठी जान पड़ती थी ॥

द्वादशः श्लोकः

ता आशिषः प्रयुञ्जानाश्चिरं पाहीति बालके ।
हरिद्राचूर्णतैलाद्भिः सिञ्चन्त्यो जनमुज्जगुः ॥१२॥

पदच्छेद— ताः आशिषः प्रयुञ्जानाः चिरम् पाहि इति बालके ।
हरिद्राः चूर्ण तैल अद्भिः सिञ्चन्त्यः जनम् उत् जगुः ॥

शब्दार्थ—

ताः	१.	वे गोपियाँ	हरिद्रा	९.	हल्दी के
आशिषः	६.	आशीर्वाद	चूर्ण	१०.	चूर्ण और
प्रयुञ्जानाः	७.	देती हुई	तैल	११.	तैल से युक्त
चिरम्	३.	चिर	अद्भिः	१२.	जल
पाहि	४.	जीवी हो वे	सिञ्चन्त्यः	१३.	छिड़क देती और
इति	५.	इस प्रकार	जनम्	८.	लोगों पर
बालके ।	२.	नवजात शिशु को	उत् जगुः ॥	१४.	उच्च स्वर से मङ्गलगान करती थीं

श्लोकार्थ—वे गोपियाँ नवजात शिशु को चिरजीवी हो, इस प्रकार आशीर्वाद देती हुई लोगों पर हल्दी के चूर्ण और तैल से युक्त जल छिड़क देतीं और उच्च स्वर से मङ्गल गान करती थीं ॥

त्रयोदशः श्लोकः

अवाद्यन्त विचित्राणि वादित्राणि महोत्सव ।
कृष्णे विश्वेश्वरेऽनन्ते नन्दस्य व्रजमागते ॥१३॥

पदच्छेद— अवाद्यन्त विचित्राणि वादित्राणि महोत्सवे ।
कृष्णे विश्वेश्वरे अनन्ते नन्दस्य व्रजम् आगते ॥

शब्दार्थ—

अवाद्यन्त	१०. बजाये जाने लगे	विश्वेश्वरे	१. समस्त जगत् के स्वामी
विचित्राणि	८. विचित्र प्रकार के	अनन्ते	२. अनन्त
वादित्राणि	९. मङ्गलमय बाजे	नन्दस्य	४. नन्द बाबा के
महोत्सवे ।	७. उनके महोत्सव में	व्रजम्	५. व्रज में
कृष्णे	३. श्रीकृष्ण के	आगते ॥	६. प्रकट होने पर

श्लोकार्थ—समस्त जगत् के स्वामी अनन्त श्रीकृष्ण के नन्द बाबा के व्रज में प्रकट होने पर उनके महोत्सव में विचित्र प्रकार के मङ्गलमय बाजे बजाये जाने लगे ॥

चतुर्दशः श्लोकः

गोपाः परस्परं हृष्टा दधिक्षीरघृताम्बुभिः ।
आसिञ्चन्तो विलिम्पन्तो नवनीतैश्च चिक्षिपुः ॥१४॥

पदच्छेद— गोपाः परस्परम् हृष्टाः दधिक्षीरघृत अम्बुभिः ।
आसिञ्चन्तः विलिम्पन्तः नवनीतैः च चिक्षिपुः ॥

शब्दार्थ—

गोपाः	२. गोपगण	**अम्बुभिः ।**	७. जल
परस्परम्	३. एक दूसरे पर	**आसिञ्चन्तः**	८. उडेलने लगे
हृष्टाः	१. आनन्द से मतवाले	**विलिम्पन्तः**	१०. मलते हुये ऊपर
दधि	४. दधि	**नवनीतैः**	११. मक्खन
क्षीर	५. दूध	**च**	९. और
घृत	६. घी और	**चिक्षिपुः ॥**	१२. फेंकने लगे

श्लोकार्थ—आनन्द से मत वाले गोपगण एक दूसरे पर दधि, दूध, घी और जल उडेलने और मलते हुये ऊपर मक्खन फेंकने लगे ॥

पञ्चदशः श्लोकः

नन्दो महामनास्तेभ्यो वासोऽलङ्कारगोधनम् ।

सूतमागधवन्दिभ्यो येऽन्ये विद्योपजीविनः ॥१५॥

पदच्छेद— नन्दः महामनाः तेभ्यः वासः अलङ्कार गोधनम् ।

सूतमागध वन्दिभ्यः ये अन्ये विद्याउपजीविनः ॥

शब्दार्थ—

नन्दः	२.	नन्द बाबा ने	सूतमागध	७.	सूत-मागध
महामनाः	१.	परम उदार	वन्दिभ्यः	८.	बन्दिजन तथा
तेभ्यः	३.	उन गोपों को	ये	९.	जो
वासः	४.	वस्त्र	अन्ये	१०.	और भी
अलङ्कार	५.	आभूषण और	विद्या	११.	नृत्यवाद्य आदि विद्याओं से
गोधनम् ।	६.	गौएँ प्रदान कीं	उपजीविनः ॥	१२.	जीवन निर्वाह करने वाले थे उन्हें भी वस्तुयें दीं

श्लोकार्थ—परम उदार नन्द बाबा ने उन गोपों को वस्त्र, आभूषण और गौएँ प्रदान कीं । सूत, मागध, बन्दिजन तथा जो और भी नृत्यवाद्य आदि विद्याओं से जीवन निर्वाह करने वाले थे उन्हें भी वस्तुयें दीं ॥

षोडशः श्लोकः

तैस्तैः कामैरदीनात्मा यथोचितमपूजयत् ।

विष्णोराराधनार्थाय स्वपुत्रस्योदयाय च ॥१६॥

पदच्छेद— तैः तैः कामैः अदीन आत्मा यथा उचितम् अपूजयत् ।

विष्णोः आराधन अर्थाय स्व पुत्रस्य उदयाय च ॥

शब्दार्थ—

तैः तैः	७.	उन-उनकी	विष्णोः	१.	भगवान् विष्णु की
कामैः	८.	कामना के अनुसार	आराधन	२.	आराधना के
अदीनात्मा	९.	प्रसन्नतापूर्वक दान देकर	अर्थाय	३.	लिये
यथा	१०.	यथा	स्वपुत्रस्य	५.	अपने पुत्र के
उचितम्	११.	विधि	उदयाय	६.	अभ्युदय के लिये
अपूजयत् ।	१२.	सत्कार किया	च ॥	४.	और

श्लोकार्थ—भगवान् विष्णु की आराधना के लिये और अपने पुत्र के अभ्युदय के लिये उन उनकी कामना के अनुसार प्रसन्नतापूर्वक दान देकर यथा विधि सत्कार किया ॥

सप्तदशः श्लोकः

रोहिणी च महाभागा नन्दगोपाभिनन्दिता ।
व्यचरद् दिव्यवासःस्रक्कण्ठाभरणभूषिता ॥१७॥

पदच्छेद — रोहिणी च महाभागा नन्द गोप अभिनन्दिता ।
व्यचरत् दिव्य वासः स्रक् कण्ठ आभरण भूषिता ॥

शब्दार्थ—

रोहिणी	५. रोहिणी जी	व्यचरत्	१०. विचर रही थी
च	१. और	दिव्यवासः	६. दिव्यवस्त्र
महाभागा	४. परम सौभाग्यवती	स्रक्कण्ठ	७. माला और गले में
नन्दगोप	२. नन्द बाबा के	आभरण	८. नाना प्रकार के आभूषणों से
अभिनन्दिता ।	३. अभिनन्दन करने पर	भूषिता ॥	९. सुसज्जित होकर

श्लोकार्थ—और नन्द बाबा के अभिनन्दन करने पर परम सौभाग्यवती रोहिणी जी दिव्य वस्त्र, माला और गले में नाना प्रकार के आभूषण से सुसज्जित होकर विचर रही थीं ॥

अष्टादशः श्लोकः

तत आरभ्य नन्दस्य व्रजः सर्वसमृद्धिमान् ।
हरेर्निवासात्मगुणै रमाक्रीडमभून्नृप ॥१८॥

पदच्छेद — ततः आरभ्य नन्दस्य व्रजः सर्व समृद्धिमान् ।
हरेः निवास आत्मगुणैः रमाक्रीडम् अभूत् नृप ॥

शब्दार्थ—

ततः	२. तभी से	हरेः निवास	८. भगवान् श्रीकृष्ण के निवास
आरभ्य	३. लेकर	आत्मगुणैः	९. अपने स्वाभाविक गुणों के कारण
नन्दस्य	४. नन्द बाबा का	रमा	१०. वह लक्ष्मी जी का
व्रजः	५. व्रज	क्रीडम्	११. क्रीडा-स्थल
सर्व	६. सब प्रकार की	अभूत्	१२. बन गया
समृद्धिमान् ।	७. ऋद्धि-सिद्धियों से युक्त हो गया	नृप ॥	१. हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! तभी से लेकर नन्द बाबा का व्रज सब प्रकार की ऋद्धि-सिद्धियों से युक्त हो गया । भगवान् श्रीकृष्ण के निवास, अपने स्वाभाविक गुणों के कारण वह लक्ष्मी जी का क्रीडा-स्थल बन गया ॥

एकोनविंशः श्लोकः

गोपान् गोकुलरक्षायां निरूप्य मथुरां गतः ।
नन्दः कंसस्य वार्षिक्यं करं दातुं कुरूद्वह ॥१९॥

पदच्छेद— गोपान् गोकुल रक्षायाम् निरूप्य मथुराम् गतः ।
नन्दः कंसस्य वार्षिक्यम् करम् दातुम् कुरूद्वह ॥

शब्दार्थ—

गोपान्	५. गोपों को	नन्दः	२. नन्द बाबा
गोकुल	३. गोकुल को	कंसस्य	७. स्वयं कंस का
रक्षायाम्	४. रक्षा का भार	वार्षिक्यम्	८. वार्षिक
निरूप्य	६. सौंप कर	करम्	९. कर
मथुराम्	११. मथुरा	दातुम्	१०. देने के लिये
गतः ।	१२. चले गये	कुरूद्वह ॥	१. हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! नन्द बाबा गोकुल की रक्षा का भार गोपों को सौंपकर स्वयं कंस का वार्षिक कर देने के लिये मथुरा चले गये ॥

विंशः श्लोकः

वसुदेव उपश्रुत्य भ्रातरं नन्दमागतम् ।
ज्ञात्वा दत्तकरं राज्ञे ययौ तदवमोचनम् ॥२०॥

पदच्छेद— वसुदेवः उपश्रुत्य भ्रातरम् नन्दम् आगतम् ।
ज्ञात्वा दत्तकरम् राज्ञे ययौ तद् अवमोचनम् ॥

शब्दार्थ—

वसुदेवः	१. वसुदेवजी	ज्ञात्वा	८. जानकर
उपश्रुत्य	५. सुनकर (तथा)	दत्तकरम्	७. कर दिया हुआ
भ्रातरम्	२. अपने भाई	राज्ञे	६. राजा को
नन्दम्	३. नन्द जी को	ययौ	१०. गये
आगतम् ।	४. आया हुआ	तद्अवमोचनम् ॥	९. उनके निवास स्थान पर

श्लोकार्थ—वसुदेव जो अपने भाई नन्द जी को आया हुआ सुनकर तथा राजा को कर दिया हुआ जानकर उनके निवास स्थान पर गये ॥

एकविंशः श्लोकः

तं दृष्ट्वा सहसोत्थाय देहः प्राणमिवागतम् ।
प्रीतः प्रियतमं दोर्भ्यां सस्वजे प्रेमविह्वलः ॥२१॥

पदच्छेद— तम् दृष्ट्वा सहसा उत्थाय देहः प्राणम् इव आगतम् ।
प्रीतः प्रियतमम् दोर्भ्याम् सस्वजे प्रेम विह्वलः ॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	वसुदेव जी को	आगतम् ।	८.	आ गये हों
दृष्ट्वा	२.	देखते ही	प्रीतः	११.	बड़े प्रेम से
सहसा	३.	नन्द जी सहसा	प्रियतमम्	१२.	अतिशय प्रिय वसुदेव जी को
उत्थाय	४.	उठ खड़े हो गये	दोर्भ्याम्	१३.	दोनों हाथों से पकड़कर
देहः	६.	मृतक शरीर में	सस्वजे	१४.	हृदय से लगा लिया
प्राणम्	७.	प्राण	प्रेम	९.	उन्होंने प्रेम से
इव ।	५.	मानों उनके	विह्वलः ॥	१०.	विह्वल होकर

श्लोकार्थ—वसुदेव जी को देखते ही नन्द जी सहसा उठकर खड़े हो गये, मानों उनके मृतक शरीर में प्राण आ गये हों । उन्होंने प्रेम विह्वल होकर बड़े प्रेम से अतिशय प्रिय वसुदेव जी को दोनों हाथों से पकड़कर हृदय से लगा लिया

द्वाविंशः श्लोकः

पूजितः सुखमासीनः पृष्ट्वानामयमादृतः ।
प्रसक्तधीः स्वात्मजयोरिदमाह विशाम्पते ॥२२॥

पदच्छेद— पूजितः सुखम् आसीनः पृष्ट्वा अनामयम् आदृतः ।
प्रसक्त धीः स्व आत्मजयोः इदम् आह विशाम्पते ॥

शब्दार्थ—

पूजितः	५.	पूजित होने पर वे	प्रसक्त	१०.	लगा हुआ था
सुखम्	६.	सुखपूर्वक	धीः स्व	८.	उनका चित्त अपने
आसीन	७.	बैठ गये	आत्मजयोः	९.	पुत्रों में
पृष्ट्वा	४.	पूछकर	इदम्	११.	उन्होंने इस प्रकार
अनामयम्	३.	कुशल	आह	१२.	कहना प्रारम्भ किया
आदृतः ।	२.	आदर पूर्वक	विशाम्पते ॥	१.	हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! आदर पूर्वक कुशल पूछकर पूजित होने पर वे सुख पूर्वक बैठ गये । उनका चित्त अपने पुत्रों में लगा हुआ था । उन्होंने इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

दिष्ट्याभ्रातः प्रवयस इदानीमप्रजस्य ते ।
प्रजशाया निवृत्तस्य प्रजा यत् समपद्यत ॥२३॥

पदच्छेद— दिष्ट्या भ्रातः प्रवयसः इदानीम् अप्रजस्य ते ।
प्रजाशायाः निवृत्तस्य प्रजा यत् समपद्यत ॥

शब्दार्थ—

दिष्ट्या	२.	सौभाग्य की बात है	प्रजाशाया	८.	सन्तान प्राप्ति की आशा
भ्रातः	१.	हे भाई !	निवृत्तस्य	९.	समाप्त हो जाने पर
प्रवयस	७.	अवस्था ढल चुकी थी पर	प्रजा	१०.	तुम्हें सन्तान
इदानीम्	४.	इस समय	यत्	३.	क्योंकि
अप्रजस्य	५.	सन्तान रहित	समपद्यत ।।	११.	प्राप्त हो गयी
ते ।	६.	तुम्हारी तो			

श्लोकार्थ— हे भाई ! सौभाग्य की बात है । क्योंकि इस समय सन्तान रहित तुम्हारी तो अवस्था ढल चुकी थी । पर सन्तान प्राप्ति की आशा समाप्त हो जाने पर भी तुम्हें सन्तान प्राप्त हो गयी ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

दिष्ट्या संचारचक्रेऽस्मिन् वर्तमानः पुनर्भवः ।
उपलब्धो भवानद्य दुर्लभं प्रियदर्शनम् ॥२४॥

पदच्छेद— दिष्ट्या संसार चक्रे अस्मिन् वर्तमानः पुनः भवः ।
उपलब्धः भवान् अद्य दुर्लभम् प्रिय दर्शनम् ॥

शब्दार्थ—

दिष्टया	३.	भाग्य से ही	उपलब्धः	६.	प्राप्त हुये हैं (क्योंकि)
संसार चक्रे	२.	संसार चक्र में	भवान्	४.	आप
अस्मिन्	१.	इस	अद्य	५.	आज हमें
वर्तमानः	१०.	यह तो	दुर्लभम्	९.	बड़ा दुर्लभ होता है
पुनः	११.	पुन	प्रिय	७.	प्रियजनों का
भवः ।	१२.	जन्म के समान है	दर्शनम् ॥	८.	मिलना

श्लोकार्थ— इस संसार चक्र में भाग्य से ही आप आज हमें प्राप्त हुये हैं । क्योंकि प्रियजनों का मिलना बड़ा दुर्लभ होता है । यह तो पुनर्जन्म के समान है ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

नैकत्र प्रियसंवासः सुहृदां चित्रकर्मणाम् ।
ओघेन व्यूह्यमानानां प्लवानां स्रोतसां यथा ॥२५॥

पदच्छेद— न एकत्र प्रिय संवासः सुहृदाम् चित्र कर्मणाम् ।
ओघेन व्यूह्यमानानाम् प्लवानाम् स्रोतसः यथा ॥

शब्दार्थ—

न	१२. नहीं हो पाता है	कर्मणाम् ।	११. कर्मों के कारण
एकत्र	८. एक स्थान पर	ओघेन	२. प्रवाह में
प्रिय	६. प्रियजनों और	व्यूह्यमानानाम्	३. बहते हुये
संवासः	९. रहना	प्लवानाम्	४. बेड़े और तिनकों के
सुहृदाम्	७. मित्र जनों का	स्रोतसः	१. नदी के प्रबल
चित्र	१०. भिन्न-भिन्न	यथा ॥	५. समान

श्लोकार्थ—नदी के प्रबल प्रवाह में बहते हुये बेड़े और तिनकों के समान प्रियजनों और मित्रजनों का एक स्थान पर रहना भिन्न भिन्न कर्मों के कारण नहीं होता है ॥

षड्विंशः श्लोकः

कच्चित् पशव्यं निरुजं भूर्यम्बुतृणवीरुधम् ।
बृहद्वनं तदधुना यत्रास्से त्वं सुहृद्वृतः ॥२६॥

पदच्छेद— कच्चित् पशव्यम् निरुजम् भूरि अम्बु-तृण वीरुधम् ।
बृहत् वनम् तत् अधुना यत्र आस्से त्वम् सुहृद् वृतः ॥

शब्दार्थ—

कच्चित्	११. क्या यह	बृहत् वनम्	६. बड़े वन में
पशव्यम्	७. पशुओं के लिये	तत्	५. उस
निरुजम्	१२. रोगों से बचा है	अधुना	४. इस समय
भूरि	१०. पर्याप्त मात्रा में हैं	यत्र आस्से	३. जहाँ निवास करते हो
अम्बु-तृण	८. जल-घास और	त्वम्	१. तुम
वीरुधम् ।	९. लता पत्रादि तो	सुहृद्वृतः ॥	२. भाई-बन्धुओं के साथ

श्लोकार्थ—तुम भाई बन्धुओं के साथ जहाँ निवास करते हो। इस समय उस बड़े वन में पशुओं के लिये जल-घास और लता पत्रादि तो पर्याप्त मात्रा में हैं। क्या यह रोगों से तो बचा है ॥

सप्तविंशः श्लोकः

भ्रातर्मम सुतः कच्चिन्मात्रा सह भवद्व्रजे ।
तातं भवन्तं मन्वानो भवद्भ्यामुपलालितः ॥२७॥

पदच्छेद— भ्रातः मम सुतः कच्चित् मात्रा सह भवत् व्रजे ।
तातम् भवन्तम् मन्वानः भवद्भ्याम् उपलालितः ॥

शब्दार्थ—

भ्रातः	१.	हे भाई !	व्रजे ।	८.	व्रज में रहता है और
मम	५.	मेरा जो	तातम्	१२.	माता पिता
सुतः	६.	लड़का	भवन्तम्	११.	आपको ही अपना
कच्चित्	२.	क्या	मन्वानः	१३.	मानता है वही ठीक तो है
मात्रा	३.	माँ के	भवद्भ्याम्	९.	आपके द्वारा
सह	४.	साथ	उपलालितः ॥	१०.	पालन पोषण किये जाने के कारण
भवत्	७.	आपके			

श्लोकार्थ—हे भाई ! क्या माँ के साथ मेरा जो पुत्र आपके व्रज में रहता है । और आपके द्वारा पालन-पोषण किये जाने के कारण आपको ही अपना माता पिता मानता है । वह ठीक तो है ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

पुंसस्त्रिवर्गो विहितः सुहृदो ह्यनुभावितः ।
न तेषु क्लिश्यमानेषु त्रिवर्गोऽर्थाय कल्पते ॥२८॥

पदच्छेद— पुंसः त्रिवर्गः विहितः सुहृदः हि अनुभावितः ।
न तेषु क्लिश्य मानेषु त्रिवर्गः अर्थाय कल्पते ॥

शब्दार्थ—

पुंसः	४.	मनुष्य के लिए	तेषु	६.	उन (स्वजनों को)
त्रिवर्गः	३.	धर्म, अर्थ, काम, ही	क्लिश्य	७.	कष्ट
विहितः	४.	शास्त्र विहित हैं	मानेषु	८.	देने वाले
सुहृदः हि	१.	स्वजनों को	त्रिवर्गः	९.	धर्म, अर्थ, काम
अनुभावितः ।	२.	सुख देने वाले	अर्थाय	१०.	हितकारी
न	११.	नहीं	कल्पते ॥	१२.	माने गये हैं

श्लोकार्थ—स्वजनों को सुख देने वाले धर्म, अर्थ, काम ही शास्त्र विहित हैं ।उन स्वजनों कों कष्ट देने वाले धर्म, अर्थ और काम हितकारी नहीं माने गये हैं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

नन्द उवाच— अहो ते देवकीपुत्राः कंसेन बहवो हताः ।
एकावशिष्टावरजा कन्या सापि दिवं गता ॥२९॥

पदच्छेद— अहो ते देवकी पुत्राः कंसेन बहवः हताः ।
एका अवशिष्टा अवरजा कन्या सा अपि दिवं गता ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	हे भाई	एका	९.	एक
ते	४.	आपके	अवशिष्टा	११.	बची थी
देवकी	३.	देवकी के गर्भ से उत्पन्न	अवरजा	८.	सबसे छोटी
पुत्राः	६.	पुत्रों को	कन्या	१०.	कन्या
कंसेन	२.	कंस ने	सः	१२.	वह
बहवः	५.	बहुत से	अपि	१३.	भी
हताः ।	७.	मार डाला	दिवंगता ॥	१४.	स्वर्ग सिधार गई

श्लोकार्थ—हे भाई ! कंस ने देवकी के गर्भ से उत्पन्न आपके बहुत से पुत्रों को मार डाला । सबसे छोटी एक कन्या बची थी । वह भी स्वर्ग सिधार गई ॥

त्रिंशः श्लोकः

नूनं ह्यदृष्टनिष्ठोऽयमदृष्टपरमो जनः ।
अदृष्टमात्मनस्तत्त्वं यो वेद न स मुह्यति ॥३०॥

पदच्छेद— नूनम् हि अदृष्ट निष्ठः अयम् अदृष्टपरमः जनः ।
अदृष्टम् आत्मनः तत्त्वम् यः वेद सः मुह्यति ॥

शब्दार्थ—

नूनम् हि	१.	निश्चय ही	अदृष्टम्	९.	भाग्य को ही
अदृष्ट	३.	भाग्य पर	आत्मनः	१०.	जीवन का
निष्ठः	४.	अवलम्बित है	तत्त्वम्	११.	कारण
अयम्	२.	यह प्राणी	यः	८.	जो प्राणी
अदृष्ट	५.	भाग्य ही	वेद	१२.	समझता है
परमः	७.	एकमात्र आश्रय है	न	१५.	नहीं होता है
जनः ।	६.	प्राणी का	सः	१३.	वह
			मुह्यति ॥	१४.	मोहित

श्लोकार्थ—निश्चय ही यह प्राणी भाग्य पर अवलम्बित है । भाग्य ही प्राणो का एक मात्र आश्रय है । जो प्राणी भाग्य को ही जीवन का कारण समझता है ,वह मोहित नहीं होता है ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

वसुदेव उवाच— करो वै वार्षिको दत्तो राज्ञे दृष्टा वयं च वः ।
नेह स्थेयं बहुतिथं सन्त्युत्पाताश्च गोकुले ॥३१॥

पदच्छेद— करः वै वार्षिकः दत्तः राज्ञे दृष्टा वयम् च वः ।
न इह स्थेयम् बहुतिथम् सन्ति उत्पाताः च गोकुले ॥

शब्दार्थ—

करः	४. कर	न	१३. नहीं
वै	१. आपने निश्चय ही	इह	११. अब यहाँ आपको
वार्षिकः	३. वार्षिक	स्थेयम्	१४. ठहरना चाहिये (क्योंकि)
दत्तः	५. चुका दिया	बहुतिथम्	१२. बहुत समय तक
राज्ञे	२. राजा का	सन्ति	१७. हो रहे हैं
दृष्टाः	९. दर्शन भी कर लिये	उत्पाताः	१६. बड़े-बड़े उपद्रव
वयम्	७. हम लोगों ने	च	१०. और
च	६. और	गोकुले ॥	१५. गोकुल में
वः ।	८. आपके		

श्लोकार्थ—आपने निश्चय ही राजा का वार्षिक कर चुका दिया । और हम लोगों ने आपके दर्शन भी कर लिये । और अब आपको बहुत समय तक नहीं ठहरना चाहिये । क्योंकि गोकुल में बड़े-बड़े उपद्रव हो रहे हैं ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इति नन्दादयो गोपाः प्रोक्तास्ते शौरिणा ययुः ।
अनोभिरनडुद्युक्तैस्तमनुज्ञाप्य गोकुलम् ॥३२॥

पदच्छेद— इति नन्द आदयः गोपाः प्रोक्ताः ते शौरिणा ययुः ।
अनोभिः अनडुत् युक्तैः तम् अनुज्ञाप्य गोकुलम् ॥

शब्दार्थ—

इति	२. इस प्रकार	अनोभिः	८. बैलों से जुते हुये
नन्द आदयः	४. नन्द आदि	अनडुत्	९. छकड़ों पर
गोपाः	५. ग्वालबाल	युक्तैः	१०. सवार होकर
प्रोक्ताः ते	३. कहने पर वे	तम्	६. उनसे
शौरिणा	१. वसुदेव जी के	अनुज्ञाप्य	७. आज्ञा लेकर
ययुः ।	१२. चल पड़े	गोकुलम् ॥	११. गोकुल की ओर

श्लोकार्थ—वसुदेव जी के इस प्रकार कहने पर वे नन्द आदि ग्वाल-बाल उनसे आज्ञा लेकर बैलों से जुते हुये छकड़ों पर सवार होकर गोकुल की ओर चल पड़े ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमे स्कन्धे
पूर्वार्धे नन्दवसुदेवसङ्गमो नाम पञ्चमः अध्यायः ॥५॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

षष्ठः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—नन्दः पथि वचः शौरेर्न मृषेति विचिन्तयन् ।
हरिं जगाम शरणमुत्पातागमशङ्कितः ॥१॥

पदच्छेद— नन्दः पथि वचः शौरेर्न मृषेति विचिन्तयन् ।
हरिम् जगाम शरणम् उत्पात आगम शङ्कितः ॥

शब्दार्थ—

नन्दः	१.	नन्द बाबा	हरिम्	१०.	भगवान् श्रीहरि की
पथि	२.	रास्ते में ही	जगाम	१२.	चले गये
वचः	४.	वचन	शरणम्	११.	शरण में
शौरेर्न	३.	वसुदेव जी के नहीं हो सकते	उत्पात	७.	उत्पात
मृषेति	५.	मिथ्या	आगम	८.	होने की
विचिन्तयन् ।	६.	ऐसा सोचते हुये	शङ्कितः ॥	९.	शङ्का करते हुये

श्लोकार्थ—नन्द बाबा रास्ते में ही वसुदेव जी के वचन मिथ्या नहीं हो सकते ऐसा सोचते हुये उत्पात होने की शङ्का करते हुये भगवान् श्री हरि की शरण में चले गये ॥

द्वितीयः श्लोकः

कंसेन प्रहिता घोरा पूतना बालघातिनी ।
शिशूंश्चचार निघ्नन्ती पुरग्रामव्रजादिषु ॥२॥

पदच्छेद - कंसेन प्रहिता घोरा पूतना बाल घातिनी ।
शिशून् चचार निघ्नन्ती पुर ग्राम व्रज आदिषु ॥

शब्दार्थ—

कंसेन	१.	कंस के द्वारा	शिशून्	७.	बच्चों को
प्रहिता	२.	भेजी गई	चचार	१२.	घूमा करती थी
घोरा	५.	अति भयंकर	निघ्नन्ती	८.	मारती हुई
पूतना	६.	पूतना नाम की राक्षसी	पुर ग्राम	९.	नगर-ग्राम
बाल	३.	बच्चों को	व्रज	१०.	अहीरों की बस्तियों
घातिनी ।	४.	मारने वाली	आदिषु ॥	११.	आदि में

श्लोकार्थ—कंस के द्वारा भेजी गई बच्चों को मारने वाली पूतना नाम की राक्षसी बच्चों को मारती हुई नगर, ग्राम, अहीरों की बस्तियों आदि में घूमा करती थी ॥

तृतीयः श्लोकः

न यत्र श्रवणादीनि रक्षोघ्नानि स्वकर्मसु ।
कुर्वन्ति सात्वतां भर्तुर्यातुधान्यश्च तत्र हि ॥३॥

पदच्छेद—　न यत्र श्रवण आदीनि रक्षोघ्नानि स्व कर्मसु ।
कुर्वन्ति सात्वताम् भर्तुः यातुधान्यः च तत्र हि ॥

शब्दार्थ—

न	१०.	नहीं करते	कुर्वन्ति	१४.	विघ्न करती हैं
यत्र	२.	जहाँ के लोग	सात्वताम्	६.	भक्त वत्सल
श्रवण	८.	श्रवण	भर्तुः	७.	भगवान् के गुणों का
आदीनि	९.	कीर्तन आदि	यातुधान्यः	१३.	राक्षसियाँ
रक्षोघ्नानि	५.	राक्षसों के भय को दूर भगाने वाले	च	१.	और
स्व	३.	अपने प्रतिदिन के	तत्र	१२.	वहाँ पर
कर्मसु ।	४.	कार्यों में	हि ॥	११.	निश्चय ही

श्लोकार्थ—और जहाँ के लोग अपने प्रतिदिन के कार्यों में राक्षसों के भय को भगाने वाले भक्तवत्सल भगवान् के गुणों का श्रवण, कीर्तन आदि नहीं करते । निश्चय ही वहाँ राक्षसियाँ विघ्न करती हैं ॥

चतुर्थः श्लोकः

सा खेचर्येकदोपेत्य पूतना नन्दगोकुलम् ।
योषित्वा माययाऽऽत्मानं प्राविशत् कामचारिणी ॥४॥

पदच्छेद—　सा खेचरी एकदा उपेत्य पूतना नन्द गोकुलम् ।
योषित्वा मायया आत्मानम् प्राविशत् काम चारिणी ॥

शब्दार्थ—

सा	५.	वह राक्षसी	योषित्वा	९.	स्त्री का रूप बनाकर
खेचरी	१.	आकाश मार्ग से चलने वाली	मायया	८.	माया से सुन्दर
एकदा	६.	एक बार	आत्मानम्	७.	स्वयं
उपेत्य	११.	आकर उसमें	प्राविशत्	१२.	प्रवेश किया
पूतना	४.	पूतना नाम की	काम	२.	इच्छानुसार
नन्दगोकुलम् ।	१०.	गोकुल के पास	चारिणी ॥	३.	रूप धारण करने वाली

श्लोकार्थ—आकाश मार्ग से चलने वाली, इच्छानुसार रूप धारण करने वाली पूतना नाम की वह राक्षसी एक बार स्वयं माया से सुन्दर स्त्री का रूप बनाकर नन्द बाबा के गोकुल के पास आकर उसमें प्रवेश किया ॥

पञ्चमः श्लोकः

तां केशबन्धव्यतिषक्तमल्लिकां बृहन्नितम्बस्तनकृच्छ्रमध्यमाम् ।
सुवाससं कम्पितकर्णभूषणत्विषोल्लसत्कुन्तलमण्डिताननाम् ॥५॥

पदच्छेद— ताम् केशबन्ध व्यतिषक्त मल्लिकाम् बृहत् नितम्ब स्तनकृच्छ्र मध्यमाम् ।
सुवाससम् कम्पित कर्णभूषण त्विषा उल्लसत् कुन्तल मण्डित आननाम् ॥

शब्दार्थ—

ताम्	१.	उसकी	सुवाससम्	९.	सुन्दर वस्त्र पहने थीं
केशबन्ध	२.	चोटी में	कम्पित	११.	हिल रहे थे
व्यतिषक्त	४.	गुँथे हुये थे	कर्णभूषण	१०.	उसके कर्णफूल
मल्लिकाम्	३.	बेले के फूल	त्विषा	१२.	उसकी चमक से
बृहत्	७.	बड़े-बड़े थे	उल्लसत्	१३.	सुशोभित तथा
नितम्ब	५.	नितम्ब और	कुन्तल	१४.	अलकों से
स्तनकृच्छ्र	६.	कुचकलश पतली थी	मण्डित	१५.	शोभायमान
मध्यमाम् ।	८.	कमर	आननाम् ॥	१६.	मुख सुन्दर लग रहा था

श्लोकार्थ—उसकी चोटी में बेले के फूल गुँथे थे । नितम्ब और कुचकलश बड़े-बड़े थे । कमर पतली थी । सुन्दर वस्त्र पहने थी । उसके कर्ण फूल हिल रहे थे । उसकी चमक से सुशोभित तथा अलकों से शोभायमान मुख सुन्दर लग रहा था ॥

षष्ठः श्लोकः

वल्गुस्मितापाङ्गविसर्गवीक्षितैर्मनो हरन्तीं वनितां व्रजौकसाम् ।
अमंसताम्भोजकरेण रूपिणीं गोप्यः श्रियं द्रष्टुमिवागतां पतिम् ॥६॥

पदच्छेद—वल्गुस्मिता अपाङ्गविसर्ग वीक्षितैः मनः हरन्तीम् वनिताम् व्रज ओकसाम् ।
अमंसत अम्भोज करेण रूपिणीम् गोप्यः श्रियम् द्रष्टुम् इव आगताम् पतिम् ॥

शब्दार्थ—

वल्गुस्मिता	१.	वह अपनी मधुर मुसकान	करेण	८.	हाथ में
अपाङ्गविसर्ग	२.	कटाक्ष विक्षेपपूर्ण	रूपिणीम्	६.	उस रूपवती
वीक्षितैः	३.	चितवन से	गोप्यः	१०.	गोपियाँ ऐसा
मनः हरन्तीम्	५.	चित्त को चुरा रही थी	श्रियम्	१२.	साक्षात् लक्ष्मी जो
वनिताम्	७.	रमणी को	द्रष्टुम्	१४.	दर्शन करने के लिये
व्रजओकसाम् ।	४.	व्रजवासियों को	इव	१५.	ही
अमंसत	११.	सोचने लगीं मानों	आगताम्	१६.	आ रही हों
अम्भोज	९.	कमल लेकर आते देखकर	पतिम् ॥	१३.	पति के

श्लोकार्थ—वह अपनी मधुर मुसकान और कटाक्ष विक्षेप पूर्ण चितवन से व्रज वासियों के चित्त को चुरा रही थी । उस रूपवती रमणी को हाथ में कमल लेकर आते देखकर गोपियाँ ऐसा सोचने लगीं मानों साक्षात् लक्ष्मी जी पति के दर्शन करने के लिये ही आ रही हों ।

सप्तमः श्लोकः

बालग्रहस्तत्र विचिन्वती शिशून् यदृच्छया नन्दगृहेऽसदन्तकम् ।
बालं प्रतिच्छन्ननिजोरुतेजसं ददर्श तल्पेऽग्निमिवाहितं भसि ॥७॥

पदच्छेद— बाल ग्रहः तत्र विचिन्वती शिशून् यदृच्छया नन्द गृहे असत् अन्तकम् ।
बालम् प्रतिच्छन्न निजउरु तेजसम् ददर्श तल्पे अग्निम् इव आहितम् भसि ॥

शब्दार्थ—

बाल	१.	बालकों के लिये	बालम्	१५.	एक बालक को
ग्रहः तत्र	२.	ग्रह के समान उसे वहाँ	प्रतिच्छन्न	१४.	छिपाये हुये
विचिन्वती	४.	खोजते हुये	निजउरु	१२.	अपने अत्यन्त
शिशून्	३.	बच्चों को	तेजसम्	१३.	तेजस्वी रूप को
यदृच्छया	५.	अनायास ही	ददर्श तल्पे	१६.	शय्या पर सोये हुये
नन्द गृहे	६.	नन्द बाबा के घर में	अग्निम् इव	११.	अग्नि के समान
असत्	७.	दुष्टों के	आहितम्	१०.	ढकी हुई
अन्तकम् ।	८.	काल	भसि ॥	९.	राख से

श्लोकार्थ—बालकों के लिये ग्रह के समान उसे वहाँ बच्चों को खोजते हुये अनायास ही नन्द बाबा के घर में दुष्टों के काल, राख से ढकी हुई अग्नि के समान अपने अत्यन्त तेजस्वी रूप को छिपाये हुये एक बालक को देखा ॥

अष्टमः श्लोकः

विबुध्य तां बालकमारिकाग्रहं चराचरात्माऽऽस निमीलितेक्षणः ।
अनन्तमारोपयदङ्कमन्तकं यथोरगं सुप्तमबुद्धिरज्जुधीः ॥८॥

पदच्छेद— विबुध्य ताम् बालक मारिका ग्रहम् चराचर आत्मा आस निमीलित ईक्षणः ।
अनन्तम् आरोपयत् अङ्कम् अन्तकम् यथा उरगम् सुप्तम् अबुद्धि रज्जु धीः ॥

शब्दार्थ—

विबुध्य	५.	जान गये	आरोपयत्	१६.	उठा लिया
ताम्	३.	उस	अङ्कम्	१५.	पूतना ने अपनी गोद में
बालकमारिका	२.	बालकों को मारने वाली	अन्तकम्	१३.	कालरूप
ग्रहम्	४.	पूतना नामक ग्रह को	यथा	८.	जैसे कोई
चराचर आत्मा	१.	चर अचर सबके आत्मा श्री कृष्ण	उरगम्	११.	सर्प को
आस निमीलित	७.	बन्द कर लिये	सुप्तम्	१०.	सोये हुये
ईक्षणः ।	६.	उन्होंने नेत्र	अबुद्धि	९.	मूर्ख व्यक्ति
अनन्तम्	१४.	भगवान् को	रज्जु धीः ॥	१२.	रस्सी समझकर उठा ले वैसे ही

श्लोकार्थ—चर-अचर सबके आत्मा श्री कृष्ण बालकों को मारने वाली उस पूतना ग्रह को जान गये ! उन्होंने अपने नेत्र बन्द कर लिये । जैसे कोई मूर्ख व्यक्ति सोये हुये सर्प को रस्सी समझकर उठा ले वैसे ही काल रूप भगवान् को पूतना ने अपनी गोद में उठा लिया ॥

नवमः श्लोकः

**तां तीक्ष्णचित्तामतिवामचेष्टितां वीक्ष्यान्तरा कोशपरिच्छदासिवत् ।
वरस्त्रियं तत्प्रभया च धर्षिते निरीक्ष्यमाणे जननी ह्यतिष्ठताम् ॥९॥**

पदच्छेद—ताम् तीक्ष्ण चित्ताम् अतिवाम चेष्टिताम् वीक्ष्य अन्तराकोश परिच्छदा असिवत् ।
वर स्त्रियम् तत् प्रभया च धर्षिते निरीक्ष्यमाणे जननी हि अतिष्ठताम् ॥

शब्दार्थ—

ताम्	७.	उस	वरस्त्रियम्	८.	अति सुन्दर स्त्री को
तीक्ष्णचित्ताम्	४.	कुटिल हृदय और	तत्	११.	उसकी
अतिवाम	५.	अत्यन्त मधुर	प्रभया	१२.	कान्ति से
चेष्टिताम्	६.	व्यवहार वाली	च	१०.	और
वीक्ष्य	९.	देखकर	धर्षिते	१३.	हत प्रभसी होकर
अन्तराकोश	१.	अन्दर से कोश से	निरीक्ष्यमाणे	१५.	उसे देखते हुये भी
परिच्छद	२.	ढकी हुई	जननी हि	१४.	रोहिणी और यशोदा जी
असिवत् ।	३.	तलवार के समान	अतिष्ठताम् ॥	१६.	चुपचाप खड़ी रहीं

श्लोकार्थ—अन्दर से कोश से ढकी हुई तलवार के समान कुटिल हृदय और अत्यन्त मधुर व्यवहार वाली उस अति सुन्दर स्त्री को देखकर और उसकी कान्ति से हतप्रभसी होकर रोहिणी और यशोदा जी उसे देखते हुये भी चुपचाप खड़ी रहीं ॥

दशमः श्लोकः

**तस्मिन् स्तनं दुर्जरवीर्यमुल्बणं घोराङ्कमादाय शिशोर्ददावथ ।
गाढं कराभ्यां भगवान् प्रपीड्य तत् प्राणैः समं रोषसमन्वितोऽपिबत् ॥१०॥**

पदच्छेद—तस्मिन् स्तनम् दुर्जर वीर्यम् उल्बणम् घोर अङ्कम् आदाय शिशोः ददौ अथ ।
गाढम् कराभ्याम् भगवान् प्रपीड्य तत् प्राणैः समम् रोष समन्वितः अपिबत् ॥

शब्दार्थ—

तस्मिन्	७.	उसके मुख से	गाढम्	११.	बलपूर्वक
स्तनम्	६.	स्तन को	कराभ्याम्	१२.	अपने दोनों हाथों से
दुर्जर	३.	भीषण	भगवान्	९.	भचवान् श्रीकृष्ण ने
वीर्यम्	५.	विष से युक्त	प्रपीड्य	१३.	दबाया और
उल्बणम् घोर	४.	तीव्र और घोर	तत्	१०.	उसके स्तनों को
अङ्कम् आदाय	२.	गोद में लेकर	प्राणैः समम्	१५.	प्राणों के साथ ही
शिशोः	१.	उस बालक को	रोष समन्वितः	१४.	क्रोध से युक्त होकर
ददौ अथ ।	८.	दे दिया तब	अपिबत् ॥	१६.	पी डाला

श्लोकार्थ—उस बालक को गोद में लेकर भीषण तीव्र और घोर विष से युक्त स्तन को उसके मुख में दे दिया । तब भगवान् श्रीकृष्ण ने उसके स्तनों को अपने दोनों हाथों से दबाया और क्रोध से युक्त होकर प्राणों के साथ ही पी डाला ॥

एकादशः श्लोक

सा मुञ्च मुञ्चालमिति प्रभाषिणी निष्पीड्यमानाखिलजीवमर्मणि ।
विवृत्य नेत्रे चरणौ भुजौ मुहुः प्रस्विन्नगात्रा क्षिपती रुरोद ह ॥११॥

पदच्छेद— सा मुञ्च मुञ्च अलम् इति प्रभाषिणी निष्पीड्यमाना अखिल जीव मर्मणि ।
विवृत्य नेत्रे चरणौ भुजौ मुहुः प्रस्विन्न गात्रा क्षिपती रुरोद ह ।।

शब्दार्थ—

सा	४. उसके	विवृत्य	१६. उलट गये
मुञ्च मुञ्च	१. अरे छोड़ दे छोड़ दे	नेत्रे	१५. उसके नेत्र
अलम् इति	२. बस कर इस प्रकार	चरणौ	१३. पैर
प्रभाषिणी	३. पुकारने वाली	भुजौ	१२. अपने हाथ और
निष्पीड्यमाना	८. फटने लगे	मुहुः	११. बार बार
अखिल	६. सभी	प्रस्विन्न	९. पसीने से
जीव	५. प्राणों के आश्रयभूत	गात्रा	१०. लथपथ शरीर वाली वह
मर्मणि ।	७. मर्म स्थान	क्षिपती रुरोद ह ।।	१४. पटकती हुई रोने लगी

श्लोकार्थ—अरे छोड़दे छोड़दे, बस कर इस प्रकार पुकारने वाली उसके प्राणों के आश्रय भूत सभी मर्म स्थान फटने लगे। पसीने से लथपथ शरीर वाली वह बार-बार अपने हाथ और पैर पटकती हुई रोने लगी और उसके नेत्र उलट गये ।।

द्वादशः श्लोकः

तस्याः स्वनेनातिगभीररंहसा साद्रिर्मही द्यौश्च चचाल सग्रहा ।
रसा दिशश्च प्रतिनेदिरे जनाः पेतुः क्षितौ वज्रनिपातशङ्कया ॥१२॥

पदच्छेद— तस्याः स्वनेन अति गभीर रंहसा स अद्रिः मही द्यौः च चचाल सग्रहा ।
रसा दिशः च प्रतिनेदिरे जनाः पेतुः क्षितौ वज्र निपात शङ्कया ।।

शब्दार्थ—

तस्याः स्वनेन	१. उसके चिल्लाने का	रसा	९. सातों पाताल
अतिगभीर	३. बड़ा भयंकर था	दिशः च	१०. दिशायें और
रंहसा	२. वेग	प्रतिनेदिरे	११. गूंज उठीं
सा	४. उसके प्रभाव से	जनाः	१२. बहुत से लोग
अद्रिः मही	५. पहाड़ों के साथ पृथ्वी	पेतुः	१६. गिर पड़े
द्यौः च	६. और अन्तरिक्ष	क्षितौ	१५. पृथ्वी पर
चचाल	८. डगमगा उठा	वज्र निपात	३१. वज्रपात की
सग्रहा ।	७. ग्रहों के साथ	सग्रहा ।।	१४. आशङ्का से

श्लोकार्थ—उसके चिल्लाने का वेग बड़ा भयंकर था। उसके प्रभाव से पहाड़ों के साथ पृथ्वी और अन्तरिक्ष ग्रहों के साथ डगमगा उठा। सातों पाताल, और दिशायें गूंज उठीं। बहुत से लोग वज्रपात की अशंका से पृथ्वी पर गिर पड़े ।।

त्रयोदशः श्लोकः

निशाचरीत्थं व्यथितस्तना व्यसुर्व्यादाय केशांश्चरणौ भुजावपि ।
प्रसार्य गोष्ठे निजरूपमास्थिना वज्राहतो वृत्र इवापतन्नृप ॥१३॥

पदच्छेद—निशाचरी इत्थम् व्यथित स्तना व्यसुः व्यादाय केशान चरणौ भुजौ अपि ।
प्रसार्य गोष्ठे निजरूपम् आस्थिता वज्र आहता वृत्र इव अपतन् नृप ॥

शब्दार्थ—

निशाचरी	१३.	निशाचरी पूतना के	प्रसार्य	११.	फैल गई
इत्थम्	२.	इस प्रकार	गोष्ठे	१७.	गोष्ठ में आकर
व्यथित	५.	इतनी पीड़ा हुई कि	निजरूपम्	१५.	अपना रूप
स्तना	४.	स्तनों में	आस्थितः	१६.	प्रकट करके
व्यसुः	६.	उसके प्राण ही	वज्र	१२.	वह वज्र के द्वारा
व्यादाय	७.	निकल गये	आहतः	१३.	घायल होकर
केशान्	८.	बाल	वृत्र इव	१४.	वृत्रासुर के समान
चरणो	९.	पैर और	अपतन्	१८.	गिर पड़ी
भुजौ अपि ।	१०.	भुजायें भी	नृप ।।	१.	हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इस प्रकार निशाचरी पूतना के स्तनों में इतनी पीड़ा हुई कि उसके प्राण ही निकल गये । बाल, पैर और भुजायें भी फैल गई । वह वज्र के द्वारा घायल होकर वृत्रासुर के समान अपना रूप प्रकट करके गोष्ठ में आकर गिर पड़ी ॥

चतुर्दशः श्लोकः

पतमानोऽपि तद्देहस्त्रिगव्यूत्यन्तरद्रुमान् ।
चूर्णयामास राजेन्द्र महदासीत्तदद्भुतम् ॥१४॥

पदच्छेद— वर्तमानः अपि तत् देहः त्रिगव्यूति अन्तर द्रुमान् ।
चूर्णयामास राजेन्द्र महत् आसीत् तत् अद्भुतम् ॥

शब्दार्थ—

पतमानः अपि	४.	गिरते हुये भी	चूर्णयामास	८.	कुचल डाला
तत्	२.	उस पूतना के	राजेन्द्र	१.	हे राजेन्द्र
देहः	३.	शरीर से	महत्	१०.	बड़ी ही
त्रिगव्यूति	५.	छः कोश के	आसीत्	१२.	थी
अन्तर	६.	भीतर के	तत्	९.	वह
द्रुमान् ।	७.	वृक्षों को	अद्भुतम् ।।	११.	अद्भुत घटना

श्लोकार्थ—हे राजेन्द्र ! उस पूतना के शरीर ने गिरते हुये भी छः कोश के भीतर के वृक्षों को कुचल डाला । वह बड़ी हो अद्भुत घटना थी ॥

पञ्चदशः श्लोकः

ईषामात्रोग्रदंष्ट्रास्यं गिरिकन्दरनासिकम्।
गण्डशैलस्तनं रौद्रं प्रकीर्णारुणमूर्धजम् ॥१५॥

पदच्छेद— ईषा मात्र उग्र दंष्ट्रास्यम् गिरि कन्दर नासिकम्।
गण्ड शैल स्तनम् रौद्रम् प्रकीर्ण अरुण मूर्धजम् ॥

शब्दार्थ—

ईषा	१.	उसका हल के	गण्ड	१०.	चट्टानों की तरह
मात्रा	२.	समान	शैल	९.	पहाड़ की
उग्र	३.	तीखी और	स्तनम्	११.	स्तन और
दंष्ट्रास्यम्	५.	डाढ़ों वाला मुख	रौद्रम्	४.	भयंकर
गिरि	६.	पहाड़ की	प्रकीर्ण	१४.	चारों ओर बिखरे थे
कन्दर	७.	गुफा के समान गहरे	अरुण	१२.	लाल-लाल
नासिकम्।	८.	नथुने	मूर्धजम् ॥	१३.	बाल

श्लोकार्थ—उसका हल के समान तीखी और भयंकर डाढ़ों वाला मुख, पहाड़ को गुफा के सम न गहरे नथुने, पहाड़ की चट्टानों की तरह स्तन और लाल-लाल बाल चारों ओर बिखरे थे ॥

षोडशः श्लोकः

अन्धकूपगभीराक्षं पुलिनारोहभीषणम्।
बद्धसेतुभुजोर्वङ्घ्रि शून्यतोयह्रदोदरम् ॥१६॥

पदच्छेद— अन्ध कूप गभीर अक्षम् पुलिन आरोह भीषणम्।
बद्ध सेतु भुज ऊरु अङ्घ्रि शून्यतोय ह्रद उदरम् ॥

शब्दार्थ—

अन्ध	२.	अन्धे	बद्धसेतु	११.	नदी के पुल के समान
कूप	३.	कुयें के समान	भुज	८	भुजाएँ
गभीर	४.	गहरी और	ऊरु	९.	जाँघें और
अक्षम्	१.	आँखे	अङ्घ्रि	१०.	पैर
पुलिन	६.	नदी की धार की तरह	शून्यतोय	१३.	सूखे
आरोह	५.	नितम्ब	ह्रद	१४.	सरोवर की तरह था
भीषणम्।	७.	भयङ्कर थे	उदरम् ॥	१२.	पेट

श्लोकार्थ—आँखें अन्धे कुएँ के समान गहरी और नितम्ब नदी की धार के समान भयङ्कर थे। भुजाएँ, जाँघें और पैर नदी के पुल के समान, पेट सूखे सरोवर की तरह था ॥

सप्तदशः श्लोकः

सन्तत्रसुः स्म तद् वीक्ष्य गोपा गोप्यः कलेवरम् ।
पूर्वं तु तन्निःस्वनितभिन्नहृत्कर्णमस्तकाः ॥१७॥

पदच्छेद— सन्तत्रसुः स्म तत् वीक्ष्य गोपाः गोप्यः कलेवरम् ।
पूर्वम् तु तत् निःस्वनित भिन्न हृत् कर्ण मस्तकाः ॥

शब्दार्थ—

सन्तत्रसुः	६.	डर	पूर्वम्	१३.	पहले ही
स्म	७.	गये	तु तत्	८.	उसकी
तत्	१.	पूतना के उस	निःस्वनित	९.	भयंकर चिल्लाना सुनकर
वीक्ष्य	३.	देखकर	भिन्न	१४.	फट से रहे थे
गोपाः	४.	ग्वाल और	हृत्	१०.	उनके हृदय
गोप्यः	५.	गोपी	कर्ण	११.	कान और
कलेवरम् ।	२.	शरीर को	मस्तकाः ॥	१२.	सिर

श्लोकार्थ—पूतना के उस शरीर को देखकर ग्वाल और गोपी डर गये । उसकी भयंकर चिल्लाहट सुनकर उनके हृदय, कान और सिर पहले ही फट रहे थे ॥

अष्टादशः श्लोकः

बालं च तस्या उरसि क्रीडन्तमकुतोभयम् ।
गोप्यस्तूर्णं समभ्येत्य जगृहुर्जातसम्भ्रमाः ॥१८॥

पदच्छेद— बालम् च तस्याः उरसि क्रीडन्तम् अकुतो भयम् ।
गोप्यः तूर्णम् समभ्येत्य जगृहुः जात सम्भ्रमाः ॥

शब्दार्थ—

बालम्	१.	बालक श्रीकृष्ण को	गोप्यः	६.	गोपियों को
च	९.	और	तूर्णम्	१०.	शीघ्रता से
तस्याः उरसि	२	उस पूतना की छाती पर	समभ्येत्य	११.	उन्होंने वहाँ जाकर
क्रीडन्तम्	५.	खेलते देखकर	जगृहुः	१२.	श्रीकृष्ण को उठा लिया
अकुतो	४.	रहित होकर	जात	८.	हुई
भयम् ।	३.	भय से	सम्भ्रमाः ॥	७.	घबराहट

श्लोकार्थ—बालक श्रीकृष्ण को उस पूतना की छाती पर भय से रहित होकर खेलते देखकर गोपियों को घबराहट हुई और उन्होंने वहाँ जाकर श्रीकृष्ण को उठा लिया ॥

एकोनविंशः श्लोकः

यशोदारोहिणीभ्यां ताः समं बालस्य सर्वतः ।
रक्षां विदधिरे सम्यग्गोपुच्छभ्रमणादिभिः ॥१९॥

पदच्छेद— यशोदा रोहिणीभ्याम् ताः समम् बालस्य सर्वतः ।
रक्षाम् विदधिरे सम्यक् गोपुच्छ भ्रमण आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

यशोदा	१.	यशोदा और	**रक्षाम्**	११.	रक्षा
रोहिणीभ्याम्	२.	रोहिणी ने	**विदधिरे**	१२.	की
ताः	३.	उन गोपियों के	**सम्यक्**	९.	भली-भाँति
समम्	४.	साथ	**गो पुच्छ**	६.	गाय की पूंछ
बालस्य	५.	बालक श्रीकृष्ण की	**भ्रमण**	७.	घुमाने
सर्वतः ।	१०.	सब प्रकार से	**आदिभिः ॥**	८.	आदि के द्वारा

श्लोकार्थ—यशोदा और रोहिणी ने उन गोपियों के साथ बालक श्रीकृष्ण की गाय की पूंछ घुमाने आदि के द्वारा सब प्रकार से भली-भाँति रक्षा की ॥

विंशः श्लोकः

गोमूत्रेण स्नापयित्वा पुनर्गोरजसार्भकम् ।
रक्षां चक्रुश्च शकृता द्वादशाङ्गेषु नामभिः ॥२०॥

पदच्छेद-- गोमूत्रेण स्नापयित्वा पुनः गो रजसा अर्भकम् ।
रक्षाम् चक्रुः च शकृता द्वादश अङ्गेषु नामभिः ॥

शब्दार्थ—

गो मूत्रेण	२.	पहले गोमूत्र से	**रक्षाम् चक्रुः**	१२.	रक्षा की
स्नापयित्वा	३.	स्नान कराकर	**च**	७.	और तब
पुनः	४.	फिर	**शकृता**	८.	गोबर
गो	५.	गौ	**द्वादश**	९.	बारहों
रजसा	६.	रज लगायी	**अङ्गेषु**	१०.	अङ्गों में
अर्भकम् ।	१.	बालक श्रीकृष्ण को	**नामभिः ॥**	११.	भगवान् के नामों से

श्लोकार्थ—बालक श्रीकृष्ण को पहले गोमूत्र से स्नान कराकर फिर गौ रज लगाई । और तब गोबर लगाकर बारहों अङ्गों में भगवान् के नामों से रक्षा की ॥

एकविंशः श्लोकः

गोप्यः संस्पृष्टसलिला अङ्गेषु करयोः पृथक्।
न्यस्यात्मन्यथ बालस्य बीजन्यासमकुर्वत ॥२१॥

पदच्छेद— गोप्यः संस्पृष्ट सलिलाः अङ्गेषु करयोः पृथक् ।
न्यस्य आत्मनि अथ बालस्य बीजन्यासम् अकुर्वत ॥

शब्दार्थ—

गोप्यः	१.	गोपियों ने	न्यस्य	७.	न्यास करके
संस्पृष्ट	३.	आचमन करके	आत्मनि	८.	शरीरों में
सलिला	२.	जल से	अथ	९.	तब
अङ्गेषु	५.	अङ्गन्यास और	बालस्य	१०.	बालक के अङ्गों में
करयोः	६.	कर	बीजन्यासम्	११.	बीजन्यास
पृथक् ।	४.	अलग-अलग	अकुर्वत ॥	१२.	किया

श्लोकार्थ—गोपियों ने जल आचमन करके अलग-अलग अङ्गन्यास और कर न्यास करके शरीरों में तब बालक के अङ्गों में बीजन्यास किया ॥

द्वाविंशः श्लोकः

अव्यादजोऽङ्घ्रिमणिमांस्तव जान्वथोरू यज्ञोऽच्युतः कटितटं जठरं हयास्यः ।
हृत् केशवस्त्वदुर ईश इनस्तु कण्ठं विष्णुर्भुजं मुखमुरुक्रम ईश्वरः कम् ॥२२॥

पदच्छेद—अव्यात्अजः अङ्घ्रि मणिमान् तव जानु अथ ऊरूयज्ञः अच्युतः कटितटम् जठरम् हयआस्यः ।
हृत् केशवः त्वत् उरः ईश इनः तु कण्ठम् विष्णुः भुजम् मुखम् उरुक्रमः ईश्वरः कम् ॥

शब्दार्थ—

अव्यात्अजः	१.	अजन्मा भगवान्	हृत् केशवः	१२.	केशव हृदय की
अङ्घ्रि	२.	पैरों की रक्षा करें	त्वत् उरः	१३.	आपके वक्षः स्थल की
मणिमान्	३.	मणिमान्	ईश इनः तु	१४.	ईश, सूर्य
तव जानु	४.	आपके घुटनों की	कण्ठम्	१५.	कण्ठ की
अथ ऊरू	५.	तथा जांघों की	विष्णुः भुजम्	१६.	विष्णु बाहों की
यज्ञः अच्युत	६.	यज्ञ पुरुष अच्युत	मुखम्	१८.	मुख की और
कटितटम्	७.	कमर की	उरुक्रम	१७.	उरु क्रम
जठरम्	९.	पेट की	ईश्वरः	१९.	ईश्वर
हय आस्यः ।	८.	हयग्रीव	कम् ॥	२०.	सिर की रक्षा करें

श्लोकार्थ—अजन्मा भगवान् पैरों की रक्षा करें। मणिमान् आपके घुटनों की, तथा जाँघों की यज्ञ पुरुष, अच्युत कमर की, हयग्रीव पेट की, केशव हृदय को, आपके वक्षः स्थल की ईश, सूर्य कण्ठ की, विष्णु बाहों की, उरुक्रम मुख की और ईश्वर सिर की रक्षा करें ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

चक्र्यग्रतः सहगदो हरिरस्तु पश्चात् त्वत्पार्श्वयोर्धनुरसी मधुहाजनश्च ।
कोणेषु शङ्ख उरुगाय उपर्युपेन्द्रस्तार्क्ष्यः क्षितौ हलधरः पुरुषः समन्तात् ॥२३॥

पदच्छेद—चक्री अग्रतः सहगदः हरिः अस्तु पश्चात् त्वत् पार्श्वयोः धनुः असी मधुहा अजनः च ।
कोणेषु शङ्खः उरुगायः उपरि उपेन्द्रः तार्क्ष्यः क्षितौ हलधरः पुरुषः समन्तात् ॥

शब्दार्थ—

चक्री	१.	चक्रधारी भगवान्	कोणेषु	१२.	चारों कोनों में
अग्रतः	२.	रक्षा के लिये आगे रहें	शङ्खः	१०.	शंखधारी
सहगदः	३.	गदाधारी	उरुगायः	११.	उरुक्रम
हरिः	४.	श्रीहरि	उपरि	१४.	ऊपर
अस्तु पश्चात्	५.	पीछे रहें	उपेन्द्रः	१३.	उपेन्द्र
त्वत् पार्श्वयोः	९.	आपके दोनों बगल में रहें	तार्क्ष्य	१६.	गरुड़ वाहन
धनुः असी	६.	धनुष और खड्गधारी	क्षितौ हलधरः	१५.	पृथ्वी पर हलधर और
मधुहा	७.	मधुसूदन	पुरुषः	१७.	परम पुरुष भगवान्
अजनः च ।	८.	अजन और	समन्तात् ॥	१८.	सब ओर से रक्षा करें

श्लोकार्थ—चक्रधारी भगवान् रक्षा के लिये आगे रहें गदाधारी श्रीहरि पीछे रहें, धनुष और खड्गधारी मधुसूदन और अजन आपके दोनों बगल में रहें । शंखधारी उरुक्रम चारों कोनों में, उपेन्द्र ऊपर, पृथ्वी पर हलधर और गरुड़ वाहन परम पुरुष भगवान् सब ओर से रक्षा करें ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

इन्द्रियाणि हृषीकेशः प्राणान् नारायणोऽवतु ।
श्वेतद्वीपपतिश्चित्तं मनो योगेश्वरोऽवतु ॥२४॥

पदच्छेद— इन्द्रियाणि हृषीकेशः प्राणान् नारायणः अवतु ।
श्वेतद्वीप पतिः चित्तम् मनः योगेश्वरः अवतु ॥

शब्दार्थ—

इन्द्रियाणि	२.	इन्द्रियों की	श्वेत द्वीप	६.	श्वेतद्वीप के
हृषीकेशः	१.	हृषीकेश भगवान्	पतिः	७.	अधिपति
प्राणान्	४.	प्राणों की	चित्तम्	८.	चित्त की
नारायणः	३.	नारायण	मनः	१०.	मन की
अवतु।	५.	रक्षा करें	योगेश्वरः	९.	योगेश्वर
			अवतु ॥	११.	रक्षा करें

श्लोकार्थ—हृषीकेश भगवान् इन्द्रियों की, नारायण प्राणों की रक्षा करें । श्वेत द्वीप के अधिपति चित्त की, और योगेश्वर मन की रक्षा करें ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

पृश्निगर्भस्तु ते बुद्धिमात्मानं भगवान् परः ।
क्रीडन्तं पातु गोविन्दः शयानं पातु माधवः ॥२५॥

पदच्छेद— पृश्निगर्भः तु ते बुद्धिम् आत्मानम् भगवान् परः ।
क्रीडन्तम् पातु गोविन्दः शयानम् पातु माधवः ॥

शब्दार्थ—

पृश्निगर्भः	१. पृश्निगर्भ	क्रीडन्तम्	७. खेलते समय
ते	२. तेरी	पातु	९. रक्षा करें
बुद्धिम्	३. बुद्धि की और	गोविन्दः	८. गोविन्द
आत्मानम्	६. तेरे अहंकार की रक्षा करें	शयानम्	१०. सोते समय
भगवान्	५. भगवान्	पातु	१२. रक्षा करें
परः ।	४. परमात्मा	माधवः ॥	११. माधव

श्लोकार्थ—पृश्निगर्भ तेरी बुद्धि की और परमात्मा भगवान् तेरे अहंकार की रक्षा करें । खेलते समय गोविन्द रक्षा करें और सोते समय माधव रक्षा करें ।

षड्विंशः श्लोकः

व्रजन्तमव्याद् वैकुण्ठ आसीनं त्वां श्रियः पतिः ।
भुञ्जानं यज्ञभुक् पातु सर्वग्रहभयङ्करः ॥२६॥

पदच्छेद— व्रजन्तम् अव्यात् वैकुण्ठः आसीनम् त्वाम् श्रियः पतिः ।
भुञ्जानम् यज्ञ भुक् पातु सर्व ग्रह भयङ्करः ॥

शब्दार्थ—

व्रजन्तम्	१. चलते समय	भुञ्जानम	८. भोजन के समय
अव्यात्	२. भगवान्	यज्ञभुक्	१२. यज्ञभोक्ता भगवान्
वैकुण्ठ	३. वैकुण्ठ और	पातु	१३. तेरी रक्षा करें
आसीनम्	४. बैठते समय	सर्व	९. सभी
त्वाम्	७. तेरी रक्षा करें	ग्रह	१०. ग्रहों को
श्रियः	५. भगवान् श्री	भयङ्करः ॥	११. भयभीत करने वाले
पतिः ।	६. पति		

श्लोकार्थ—चलते समय भगवान् वैकुण्ठ और बैठते समय भगवान् श्रीपति तेरी रक्षा करें । भोजन के समय सभी ग्रहों को भयभीत करने वाले यज्ञभोक्ता भगवान् तेरी रक्षा करें ॥

सप्तविंशः श्लोकः

डाकिन्यो यातुधान्यश्च कूष्माण्डा येऽर्भकग्रहाः ।
भूतप्रेतपिशाचाश्च यक्षरक्षोविनायकाः ॥२७॥

पदच्छेद— डाकिन्यः यातुधान्यः च कूष्माण्डाः ये अर्भकः ग्रहाः ।
भूत प्रेत पिशाचाः च यक्ष रक्षः विनायकाः ॥

शब्दार्थ—

डाकिन्यः	१.	डाकिनी	भूत	८.	भूत
यातुधान्यः	२.	राक्षसी	प्रेत	९.	प्रेत
च	३.	और	पिशाचाः	१०.	पिशाच
कूष्माण्डाः	४.	कूष्माण्ड	च	११.	और
ये	५.	आदि जो	यक्ष	१२.	यक्ष
अर्भक	६.	बाल	रक्षः	१३.	राक्षस
ग्रहाः ।	७.	ग्रह हैं	विनायकाः ॥	१४.	विनायक आदि सभी (अरिष्ट नष्ट हो जायें)

श्लोकार्थ—डाकिनी, राक्षसी और कूष्माण्डा आदि जो बालग्रह हैं तथा भूत, प्रेत, पिशाच और यक्ष, राक्षस, विनायक आदि सभी अरिष्ट नष्ट हो जायें ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

कोटरा रेवती ज्येष्ठा पूतना मातृकादयः ।
उन्मादा ये ह्यपस्मारा देहप्राणेन्द्रियद्रुहः ॥२८॥

पदच्छेद— कोटरा रेवती ज्येष्ठा पूतना मातृका आदयः ।
उन्मादाः ये हि अपस्माराः देह प्राण इन्द्रिय द्रुहः ॥

शब्दार्थ—

कोटरा	१.	कोटरा	उन्मादाः	१०.	पागलपन
रेवती	२.	रेवती	ये हि	१२.	जो होते हैं वे नष्ट हो जायँ
ज्येष्ठा	३.	ज्येष्ठा	अपस्माराः	११.	मृगी आदि
पूतना	४.	पूतना	देह प्राण	७.	शरीर प्राण और
मातृका	५.	मातृका	इन्द्रिय	८.	इन्द्रियों का
आदयः ।	६.	आदि	द्रुहः ॥	९.	नाश करने वाले

श्लोकार्थ—कोटरा, रेवती ज्येष्ठा पूतना, मातृका आदि शरीर, प्राण और इन्द्रियों का नाश करने वाले पागलपन, मृगी आदि जो रोग होते हैं वे नष्ट हो जायँ ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

स्वप्नदृष्टा महोत्पाता वृद्धबालग्रहाश्च ये ।
सर्वे नश्यन्तु ते विष्णोर्नामग्रहणभीरवः ॥२६॥

पदच्छेद— स्वप्न दृष्टाः महोत्पाताः वृद्ध बाल ग्रहाः च ये ।
सर्वे नश्यन्तु ते विष्णोः नाम ग्रहण भीरवः ॥

शब्दार्थ—

स्वप्न	१. स्वप्न में	सर्वे	६. सब
दृष्टाः	२. देखे हुये	नश्यन्तु	१४. नष्ट हो जायें
महोत्पाताः	३. महान् उत्पात	ते	८. वे
वृद्ध	४. वृद्ध ग्रह	विष्णोः	१०. भगवान् विष्णु के
बाल ग्रहाः	५. बाल ग्रह	नाम	११. नाम
च	६. और	ग्रहण	१२. उच्चारण करने से
ये ।	७. जो	भीरवः ॥	१३. भयभीत होकर

श्लोकार्थ—स्वप्न में देखे हुये महान् उत्पात, वृद्ध ग्रह, बालग्रह और जो हैं वे सब भगवान् विष्णु के नाम उच्चारण करने से भयभीत होकर नष्ट हो जायें ॥

त्रिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इति प्रणयबद्धाभिर्गोपीभिः कृतरक्षणम् ।
पाययित्वा स्तनं माता संन्यवेशयदात्मजम् ॥३०॥

पदच्छेद— इति प्रणय बद्धाभिः गोपीभिः कृत रक्षणम् ।
पाययित्वा स्तनम् माता संन्यवेशयत् आत्मजम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१. इस प्रकार	पाययित्वा	६. पान कराकर
प्रणय	३. प्रेम पाश में	स्तनम्	८. स्तन
बद्धाभिः	४. बँधकर	माता	७. माँ यशोदा ने
गोपीभिः	२. गोपियों ने	संन्यवेशयत्	११. पालने पर सुला दिया
कृत	६. की (और)	आत्मजम् ॥	१०. अपने पुत्र को
रक्षणम् ।	५. श्रीकृष्ण की रक्षा		

श्लोकार्थ—इस प्रकार गोपियों ने प्रेम-पाश में बँधकर श्रीकृष्ण की रक्षा की। माँ यशोदा ने स्तन पान कराकर अपने पुत्र को पालने में सुला दिया ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

तावन्नन्दादयो गोपा मथुराया व्रजं गताः ।
विलोक्य पूतनादेहं बभूवुरतिविस्मिताः ॥३१॥

पदच्छेद— तावत् नन्द आदयः गोपाः मथुरायाः व्रजम् गताः ।
विलोक्य पूतना देहम् बभूवुः अति विस्मिताः ॥

शब्दार्थ—

तावत्	१. तब-तक	विलोक्य	९. देखकर वे
नन्द आदयः	२. नन्दबाबा आदि	पूतना	७. पूतना का
गोपाः	३. गोपगण	देहम्	८. शरीर को
मथुरायाः	४. मथुरा से	बभूवुः	१२. हो गये
व्रजम्	५. गोकुल में	अति	१०. अत्यधिक
गताः ।	६. पहुँचे	विस्मिताः ॥	११. आश्चर्यचकित

श्लोकार्थ—तब-तक नन्दबाबा आदि गोपगण मथुरा से गोकुल पहुँचे । पूतना के शरीर को देखकर अत्यधिक आश्चर्य चकित हो गये ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

नूनं बतर्षिः संजातो योगेशो वा समास सः ।
स एव दृष्टो ह्युत्पातो यदाहानकदुन्दुभिः ॥३२॥

पदच्छेद— नूनम् बतऋषिः संजातः योगेशः वा समास सः ।
सः एव दृष्टः हि उत्पातः यत् आह आनकदुन्दुभिः ॥

शब्दार्थ—

नूनम्	१. निश्चय ही	सः	११. वैसा ही
बतऋषिः	३. अहो किसी ऋषि ने	एव	१२. ही
संजातः	४. जन्म लिया है	दृष्टः	१४. यहाँ दिखाई दे रहा है
योगेशः	६. योगेश्वर	हि उत्पातः	१३. उत्पात
वा	५. अथवा वे पूर्व जन्म में	यत्	९. जैसा
समास	७. रहे हों (क्योंकि)	आह	१०. कहा
सः ।	२. उन वसुदेव जी के रूप में	आनकदुन्दुभिः ॥	८. उन वसुदेव जी ने

श्लोकार्थ—निश्चय ही उन वसुदेव जी के रूप में अहो किसी ऋषि ने जन्म लिया है । अथवा वे पूर्व जन्म में योगेश्वर रहे हों । क्योंकि उन वसुदेव जी ने जैसा कहा था वैसा ही उत्पात यहाँ दिखाई दे रहा है ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

कलेवरं परशुभिश्छित्त्वा तत्ते व्रजौकसः ।
दूरे क्षिप्त्वावयवशो न्यदहन् काष्ठधिष्ठितम् ॥३३॥

पदच्छेद— कलेवरम् परशुभिः छित्त्वा तत् ते व्रज ओकसः ।
दूरे क्षिप्त्वाम् अवयवशः न्यदहन् काष्ठ धिष्ठितम् ॥

शब्दार्थ—

कलेवरम्	५.	शरीर को	दूरे	८.	गोकुल से दूर
परशुभिः	३.	कुल्हाडियों से	क्षिप्त्वा	९.	ले जाकर
छित्त्वा	६.	काटकर	अवयवशः	७.	टुकड़े-टुकड़े कर डाला और
तत् ते	४.	पूतना के उस	न्यदहन्	१२.	जला दिया
व्रज	१.	व्रज	काष्ठ	१०.	लकड़ियों पर
ओकसः ।	२.	वासियों ने	धिष्ठितम् ॥	११.	रखकर

श्लोकार्थ—व्रज वासियों ने कुल्हाडियों से पूतना के उस शरीर को काटकर टुकड़े टुकड़े कर डाला और गोकुल से दूर ले जाकर लकड़ियों पर रखकर जला दिया ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

दह्यमानस्य देहस्य धूमश्चागुरुसौरभः ।
उत्थितः कृष्णनिर्भुक्तसपद्याहतपाप्मनः ॥३४॥

पदच्छेद— दह्यमानस्य देहस्य धूमः च अगुरु सौरभः ।
उत्थितः कृष्ण निर्मुक्तः सपदि आहत पाप्मनः ॥

शब्दार्थ—

दह्यमानस्य	३.	जलते समय	उत्थितः	७.	आ रही थी (क्योंकि)
देहस्य	२.	शरीर के	कृष्ण	८.	श्रीकृष्ण के द्वारा
धूमः	४.	उसके धुयें से	निर्मुक्तः	९.	दुग्ध पान किये जाने पर
च	१.	और	सपदि	१०.	तत्काल
अगुरु	५.	अगर की सी	आहत	१२.	नष्ट हो गये थे
सौरभः ।	६.	सुगन्ध	पाप्मनः ॥	११.	उसके पाप

श्लोकार्थ—और शरीर के जलते समय उसके धुयें से अगर की सी सुगन्ध आ रही थी, क्योंकि श्रीकृष्ण के द्वारा दुग्ध पान किये जाने पर तत्काल उसके पाप नष्ट हो गये थे ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

पूतना लोकबालघ्नी राक्षसी रुधिराशना ।

जिघांसयापि हरये स्तनं दत्त्वाऽऽप सद्गतिम् ॥३५॥

पदच्छेद— पूतना लोक बालघ्नी राक्षसी रुधिर अशना ।
जिघांसया अपि हरये स्तनम् दत्त्वा आप सद्गतिम् ॥

शब्दार्थ—

पूतना	२. पूतना	**जिघांसया**	९. मारने की इच्छा से
लोक	३. लोगों के	**अपि**	८. भी
बालघ्नी	४. बच्चों को मारने वाली	**हरये**	७. भगवान् श्रीकृष्ण को
राक्षसी	१. राक्षसी	**स्तनम्**	१०. स्तन
रुधिर	५. उसका खून	**दत्त्वा**	११. पान कराया था (किन्तु)
अशना ।	६. पीने वाली थी उसने	**आप सद्गतिम् ॥**	१२. उसे परमगति प्राप्त हुई

श्लोकार्थ—राक्षसी पूतना लोगों के बच्चों को मारने वाली और उनका खून पीने वाली थी। उसने भगवान् श्रीकृष्ण को भी मारने की इच्छा से स्तन पान कराया था। किन्तु उसे परमगति प्राप्त हुई ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

किं पुनः श्रद्धया भक्त्या कृष्णाय परमात्मने ।

यच्छन् प्रियतमं किं नु रक्तास्तन्मातरो यथा ॥३६॥

पदच्छेद— किम् पुनः श्रद्धया भक्त्या कृष्णाय परमात्मने ।
यच्छन् प्रियतमम् किम् नु रक्ताः तत् मातरः यथा ॥

शब्दार्थ—

किम्	१. क्यों न हो	**यच्छन्**	११. सर्मपित करने वालों के बारे में
पुनः	२. फिर	**प्रियतमम्**	१०. अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु
श्रद्धया	३. श्रद्धा और	**किम् नु**	१२. क्या कहा जाय
भक्त्या	४. भक्ति से	**रक्ताः तत्**	७. अनुराग पूर्वक उनकी
कृष्णाय	६. श्रीकृष्ण को	**मातरः**	८. माता के
परमात्मने ।	५. परमात्मा	**यथा ॥**	९. समान

श्लोकार्थ—क्यों न हो फिर श्रद्धा और भक्ति से परमात्मा श्रीकृष्ण को अनुराग पूर्वक उनकी माता के समान अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु सर्मपित करने वालों के बारे में तो कहना ही क्या है ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

पद्भ्यां भक्तहृदिस्थाभ्यां वन्द्याभ्यां लोकवन्दितैः ।
अङ्गं यस्याः समाक्रम्य भगवानपिबत् स्तनम् ॥३७॥

पदच्छेद— पद्भ्याम् भक्त हृदिस्थाभ्याम् वन्द्याभ्याम् लोक वन्दितैः ।
अङ्गम् यस्याः समाक्रम्य भगवान् अपिबत् स्तनम् ॥

शब्दार्थ—

पद्भ्याम्	६.	चरण कमलों के द्वारा	अङ्गम्	८.	शरीर को
भक्त	४.	भक्तों के	यस्याः	७.	पूतना के
हृदिस्थाभ्याम्	५.	हृदय में स्थित	समाक्रम्य	९.	दबाकर
वन्द्याभ्याम्	३.	वन्दित	भगवान्	१०.	भगवान् ने
लोक	१.	सबके	अपिबत्	१२.	पान जो किया था
वन्दितैः ।	२.	वन्दनीय ब्रह्मादि से	स्तनम् ॥	११.	उसका स्तन

श्लोकार्थ—सबके वन्दनीय ब्रह्मादि से वन्दित भक्तों के हृदय में स्थित उन चरण कमलों के द्वारा पूतना के शरीर को दबाकर भगवान् ने उसका स्तन पान जो किया था ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

यातुधान्यपि सा स्वर्गमवाप जननीगतिम् ।
कृष्णभुक्तस्तनक्षीराः किमु गावो नु मातरः ॥३८॥

पदच्छेद— यातुधानी अपि सा स्वर्गम् अवाप जननी गतिम् ।
कृष्ण भुक्त स्तन क्षीराः किम् गावः नु मातरः ॥

शब्दार्थ—

यातुधानी	२.	राक्षसी पूतना	कृष्ण	८.	श्रीकृष्ण
अपि	३.	भी	भुक्त	११.	पान किया है उन
सा	१.	वह	स्तन	९.	जिनके स्तनों का
स्वर्गम्	६.	स्वर्ग की गति को	क्षीराः	१०.	दुग्ध
अवाप	७.	प्राप्त हुई (फिर)	किम्	१४.	कहना ही क्या है
जननी	४.	माता की	गावः नु	१२.	गायों और
गतिम् ।	५.	स्थिति के समान	मातरः ॥	१३.	माताओं का तो

श्लोकार्थ—वह राक्षसी पूतना भी माता की स्थिति के समान स्वर्ग की गति को प्राप्त हुई । फिर श्रीकृष्ण ने जिन के स्तनों का दुग्ध पान किया है, उन गायों ओर माताओं का तो कहना ही क्या है ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

पयांसि यासामपिबत् पुत्रस्नेहस्नुतान्यलम् ।
भगवान् देवकीपुत्रः कैवल्याद्यखिलप्रदः ॥३९॥

पदच्छेद— पयांसि यासाम् अपिबत् पुत्र स्नेह स्नुतानि अलम् ।
भगवान् देवकी पुत्रः कैवल्यआदि अखिल प्रदः ॥

शब्दार्थ—

पयांसि	११.	दुग्ध का	भगवान्	६.	भगवान् ने
यासाम्	७.	जिनके	देवकी	४.	देवकी
अपिबत्	१३.	पान किया है उसका तो कहना ही क्या है	पुत्रः	५.	नन्दन
पुत्र	८.	पुत्र	कैवल्यआदि	१.	कैवल्य आदि
स्नेह	९.	स्नेह से	अखिल	२.	सब प्रकार की मुक्ति
स्नुतानि	१०.	झरते हुये	प्रदः ॥	३.	देने वाले
अलम् ।	१२.	भर पेट			

श्लोकार्थ—कैवल्य आदि सब प्रकार की मुक्ति देने वाले देवकी नन्दन भगवान् ने जिनके पुत्र स्नेह से झरते हुये दुग्ध का भर पेट पान किया है, उनका तो कहना ही क्या है ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

तासामविरतं कृष्णे कुर्वतीनां सुतेक्षणम् ।
न पुनः कल्पते राजन् संसारोऽज्ञानसम्भवः ॥४०॥

पदच्छेद— तासाम् अविरतम् कृष्णे कुर्वतीनाम् सुत ईक्षणम् ।
न पुनः कल्पते राजन् संसारः अज्ञान सम्भवः ॥

शब्दार्थ—

तासाम्	७.	उन्हें	न पुनः	११.	फिर कभी जन्म मृत्यु रूप नहीं
अविरतम्	२.	जो नित्य-निरन्तर	कल्पते	१२.	हो सकता
कृष्णे	३.	भगवान् श्रीकृष्ण का	राजन्	१.	हे परीक्षित् !
कुर्वतीनाम्	६.	करती थीं	संसारः	१०.	यह संसार
सुत	४.	पुत्र रूप में ही	अज्ञान	८.	अज्ञान के कारण
ईक्षणम् ।	५.	दर्शन	सम्भवः ॥	९.	होने वाला

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! जो नित्य-निरन्तर भगवान् श्रीकृष्ण का पुत्र रूप में ही दर्शन करती थीं, उन्हे अज्ञान के कारण होने वाला यह संसार फिर कभी जन्म-मृत्यु रूप नहीं हो सकता ।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

कटधूमस्य सौरभ्यमवघ्राय व्रजौकसः।
किमिदं कुत एवेति वदन्तो व्रजमाययुः ॥४१॥

पदच्छेद— कट धूमस्य सौरभ्यम् अवघ्राय व्रज ओकसः।
किम् इदम् कुतः एव इति वदन्तः व्रजम् आययुः ॥

शब्दार्थ—

कटधूमस्य	१. शव से उत्पन्न धुयें की	किम्	७. क्या है
सौरभ्यम्	२. सुगन्ध को	इदम्	६. यह
अवघ्राय	३. सूंघकर	कुत एवेति	८. कहाँ से आ रही है इस प्रकार
व्रज	४. नन्द बाबा आदि व्रज	वदन्तः	९. कहते हुये
ओकसः।	५. वासी	व्रजम्	१०. व्रज में
		आययुः ॥	११. आ पहुँचे

श्लोकार्थ—शव से उत्पन्न धुयें की सुगन्ध की सूँघकर नन्द बाबा आदि व्रज वासी यह क्या है, कहाँ से आ रही है इस प्रकार कहते हुये व्रज में आ पहुँचे ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

ते तत्र वर्णितं गोपैः पूतनागमनादिकम्।
श्रुत्वा तन्निधनं स्वस्ति शिशोश्चासन् सुविस्मिताः ॥४२॥

पदच्छेद— ते तत्र वर्णितम् गोपैः पूतना आगमन आदिकम्।
श्रुत्वा तत् निधनम् स्वस्ति शिशोः च आसन् सुविस्मिताः ॥

शब्दार्थ—

ते	३. उन्हें	श्रुत्वा	१२. सुनकर वे
तत्र	१. वहाँ	तत्	८. उसके
वर्णितम्	७. कह सुनाया	निधनम्	९. मरने
गोपैः	२. गोपों ने	स्वस्ति	११. कल्याण का समाचार
पूतना	४. पूतना के	शिशोः च	१०. पुत्र श्रीकृष्ण के और
आगमन	५. आने से लेकर	आसन्	१४. हो गये
आदिकम्।	६. मरने तक का समाचार	सुविस्मिताः ॥	१३. आश्चर्यचकित

श्लोकार्थ—वहाँ गोपों ने उन्हें पूतना के आने से लेकर मरने तक का समाचार कह सुनाया। उसके मरने और पुत्र श्रीकृष्ण के कल्याण का समाचार सुनकर वे आश्चर्यचकित हो गये ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

नन्दः स्वपुत्रमादाय प्रेत्यागतमुदारधीः ।
मूर्धन्युपाघ्राय परमां मुदं लेभे कुरूद्वह ॥४३॥

पदच्छेद— नन्दः स्वपुत्रम् आदाय प्रेत्य आगतम् उदारधीः ।
मूर्ध्नि उपाघ्राय परमाम् मुदम् लेभे कुरूद्वह ॥

शब्दार्थ—

नन्दः	३. नन्द बाबा ने	**मूर्ध्नि**	८. फिर मस्तक
स्वपुत्रम्	६. अपने पुत्र को	**उपाघ्राय**	९. सूंघकर
आदाय	७. गोद में उठा लिया	**परमाम्**	१०. अत्यधिक
प्रेत्य	४. मृत्यु के मुख से	**मुदम्**	११. आनन्दित
आगतम्	५. आये हुये	**लेभे**	१२. हुये
उदारधीः ।	२. उदार शिरोमणि	**कुरूद्वह ॥**	१. हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! उदार शिरोमणि नन्द बाबा ने मृत्यु के मुख से आये हुये अपने पुत्र को गोद में उठा लिया । फिर मस्तक सूंघकर अत्यधिक आनन्दित हुये ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

य एतत् पूतनामोक्षं कृष्णस्यार्भकमद्भुतम् ।
शृणुयाच्छ्रद्धया मर्त्यो गोविन्दे लभते रतिम् ॥४४॥

पदच्छेद— यः एतत् पूतना मोक्षम् कृष्णस्य अर्भकम् अद्भुतम् ।
शृणुयात् श्रद्धया मर्त्यः गोविन्दे लभते रतिम् ॥

शब्दार्थ—

यः	६. जो	**शृणुयात्**	९. इसका श्रवण करता है इसे
एतत् पूतना	१. यह पूतना	**श्रद्धया**	८. श्रद्धापूर्वक
मोक्षम्	२. मोक्ष	**मर्त्यः**	७. मनुष्य
कृष्णस्य	३. भगवान् श्रीकृष्ण की	**गोविन्दे**	१०. श्रीकृष्ण के प्रति
अर्भकम्	५. बाललीला है	**लभते**	१२. प्राप्त होता है
अद्भुतम् ।	४. अद्भुत	**रतिम् ॥**	११. प्रेम

श्लोकार्थ—यह पूतना-मोक्ष भगवान् श्रीकृष्ण की अद्भुत बाललीला है । जो मनुष्य श्रद्धापूर्वक इसका श्रवण करता है, उसे श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम प्राप्त होता है ।

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

सप्तमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

राजोवाच— येन येनावतारेण भगवान् हरिरीश्वरः ।
करोति कर्णरम्याणि मनोज्ञानि च नः प्रभो ॥१॥

पदच्छेद— येन येन अवतारेण भगवान् हरिः ईश्वरः ।
करोति कर्ण रम्याणि मनोज्ञानि च नः प्रभो ॥

शब्दार्थ—

येन येन	५.	जिस-जिस	कर्ण	७.	सुनने में
अवतारेण	६.	अवतार में	रम्याणि	८.	मधुर
भगवान्	३.	भगवान्	मनोज्ञानि	१०.	सुन्दर लीलायें
हरिः	४.	श्री हरि	च	९.	और
ईश्वरः ।	२.	सर्वशक्तिमान्	नः	१२.	मुझे अच्छी लगती हैं
करोति	११.	करते हैं वे सब	प्रभो ॥	१.	हे प्रभो !

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! सर्वशक्तिमान् भगवान् श्रीहरि जिस जिस अवतार में सुनने में मधुर और सुन्दर लीलायें करते हैं, वे सब मुझे अच्छी लगती हैं ॥

द्वितीयः श्लोकः

यच्छृण्वतोऽपैत्यरतिर्वितृष्णा सत्त्वं च शुद्ध्यत्यचिरेण पुंसः ।
भक्तिर्हरौ तत्पुरुषे च सख्यं तदेव हारं वद मन्यसे चेत् ॥२॥

पदच्छेद— यत् शृण्वतः अपैति अरतिः वितृष्णा सत्त्वम् च शुद्ध्यति अचिरेण पुंसः ।
भक्तिः हरौ तत् पुरुषे च सख्यम् तत् एव हारम् वद मन्यसे चेत् ॥

शब्दार्थ—

यत् शृण्वतः	१.	जिनके सुनने मात्र से	भक्ति हरौ	९.	भगवान् की भक्ति
अपैति	४.	भाग जाती है (तथा)	तत् पुरुषे	११.	उनके भक्तजनों से
अरतिः	२.	कथा से अरुचि और	च	१०.	और
वितृष्णा	३.	विषयों की तृष्णा	सख्यम्	१२.	प्रेम हो जाता है
सत्त्वम् च	६.	अन्तः करण और	तत् एव	१५.	भगवान् की उन्हीं
शुद्ध्यति	८.	शुद्ध हो जाता है	हारम् वद	१६.	मनोहर लीलाओं का वर्णन कीजिये
अचिरेण	७.	अत्काल	मन्यसे	१४.	समझते हों तो
पुंसः ।	५.	मनुष्य का	चेत् ॥	१३.	यदि आप मुझे अधिकारी

श्लोकार्थ—जिनके सुनने मात्र से कथा में अरुचि और विषयों की तृष्णा भाग जाती है । तथा मनुष्य का अन्तः करण तत्काल शुद्ध हो जाता है । भगवान् की भक्ति और उनके भक्तजनों से प्रेम हो जाता है । यदि आप मुझे अधिकारी समझते हों तो भगवान् की उन्हीं मनोहर लीलाओं का वर्णन कीजिये ॥

तृतीयः श्लोकः

अथान्यदपि कृष्णस्य तोकाचरितमद्भुतम् ।
मानुषं लोकमासाद्य तज्जातिमनुरुन्धतः ॥३॥

पदच्छेद— अथ अन्यत् अपि कृष्णस्य तोक आचरितम् अद्भुतम् ।
मानुषम् लोकम् आसाद्य तत् जातिम् अनुरुन्धतः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	मानुषम्	७.	उन्होंने मनुष्य
अन्यत् अपि	३.	अन्य दूसरी भी	लोकम्	८.	लोक में
कृष्णस्य	२.	श्रीकृष्ण की	आसाद्य	९.	प्रकट होकर
तोक	५.	बाल	तत्	१०.	उसी
आचरितम्	६.	लीलाओं का वर्णन कीजिये	जातिम्	११.	जाति का
अद्भुतम् ।	४.	अद्भुत	अनुरुन्धतः ॥	१२.	अनुसरण किया है

श्लोकार्थ—तदनन्तर श्रीकृष्ण की अन्य दूसरी भी अद्भुत बाल लीलाओं का वर्णन कीजिये । उन्होंने मनुष्य लोक में प्रकट होकर उसी जाति का अनुसरण किया है ॥

चतुर्थः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—**कदाचिदौत्थानिककौतुकाप्लवे जन्मर्क्षयोगे समवेतयोषिताम् ।**
वादित्रगीतद्विजमन्त्रवाचकैश्चकार सूनोरभिषेचनं सती ॥४॥

पदच्छेद— कदाचित् औत्थानिक कौतुक आप्लवे जन्मऋक्ष योगे समवेत योषिताम् ।
वादित्र गीत द्विज मन्त्र वाचकैः चकार सूनोः अभिषेचनम् सती ॥

शब्दार्थ—

कदाचित्	१.	एक बार श्रीकृष्ण के	वादित्र	१०.	बजाने और
औत्थनिक	२.	करवट बदलने के	गीत	९.	गाने
कौतुकः	४.	उत्सव के समय	द्विज मन्त्र	११.	ब्राह्मणों द्वारा मन्त्र
आप्लवे	३.	अभिषेक	वाचकैः	१२.	उच्चारण के बीच
जन्म ऋक्ष	५.	जन्म नक्षत्र और शुभ	चकार	१६.	किया
योगे	६.	योग था	सूनोः	१४.	अपने पुत्र का
समवेत	८.	भीड़ लगी थी	अभिषेचनम्	१५.	अभिषेक
योषिताम् ।	७.	स्त्रियों की	सती ॥	१३.	सती यशोदा ने

श्लोकार्थ—एक बार श्रीकृष्ण के करवट बदलने का अभिषेक-उत्सव के समय जन्म-नक्षत्र और शुभ योग था । स्त्रियों की भीड़ लगी थी । गाने, बजाने और ब्राह्मणों द्वारा मन्त्र उच्चारण के बीच सती यशोदा ने अपने पुत्र का अभिषेक किया ॥

पञ्चमः श्लोकः

नन्दस्य पत्नी कृतमज्जनादिकं विप्रैः कृतस्वस्त्ययनं सुपूजितैः ।
अन्नाद्यवासः स्रगभीष्टधेनुभिः संजातनिद्राक्षमशीशयच्छनैः ॥५॥

पदच्छेद— नन्दस्य पत्नी कृत मज्जन आदिकम् विप्रैः कृत स्वस्त्ययनम् सु पूजितैः ।
अन्नाद्य वासः स्रक् अभीष्ट धेनुभिः संजात निद्रा अक्षम् अशीशयत् शनैः ॥

शब्दार्थ -

नन्दस्य पत्नी	१.	नन्द जी की पत्नी यशोदा ने	अन्नाद्य	२.	(ब्राह्मणों का) अन्न
कृत	१२.	कराया तब	वासः स्रक्	३.	वस्त्र माला
मज्जन	१०.	बालक को स्नान	अभीष्ट	५.	मुँहमांगी वस्तुओं से
आदिकम्	११.	आदि	धेनुभिः	४.	गाय आदि से
विप्रैः	७.	ब्राह्मणों के द्वारा	संजातनिद्रा	१४.	निद्रा आई देखकर
कृत	९.	करने के बाद	अक्षम्	१३.	उनकी आँखों में
स्वस्त्ययनम्	८.	स्वस्त्ययन	अशीशयत	१६.	सुला दिया
सुपूजितैः ।	६.	सम्मानित	शनैः ॥	१५.	धीरे से

श्लोकार्थ—नन्द जी की पत्नी यशोदा जी ने अन्न, वस्त्र माला गाय आदि मुँह माँगी वस्तुओं से सम्मानित ब्राह्मणों के द्वारा स्वस्त्ययन करने के बाद बालक को स्नान आदि कराया । तब उनकी आँखों में निद्रा आई देखकर धीरे से सुला दिया ॥

षष्ठः श्लोकः

औत्थानिकौत्सुक्यमना मनस्विनी समागतान् पूजयती व्रजौकसः ।
नैवाश्रृणोद् वै रुदितं सुतस्य रुदन् स्तनार्थी चरणावुदक्षिपत् ॥६॥

पदच्छेद— औत्थानिक औत्सुक्यमना मनस्विनी समागतान् पूजयती व्रज ओकसः ।
न एव अश्रृणोद् वै रुदितम् सुतस्य सा रुदन् स्तनार्थी चरणौ उत् अक्षिपत् ॥

शब्दार्थ—

औत्थानिक	१.	करवट बदलने के उत्सव में	वै	७.	निश्चय ही
औत्सुक्यमना	२.	उत्सुकता से भरी	रुदितम्	१०.	रोना
मनस्विनी	३.	मनस्विनी यशोदा	सुतस्य	९.	पुत्र का
समागतान्	४.	आये हुये	सा	८.	उन्होंने
पूजयती	६.	स्वागत-सत्कार कर रही थीं	रुदन	१४.	रोते हुये
व्रज ओकसः ।	५.	व्रजवासियों का	स्तनार्थी	१३.	स्तन पान के इच्छुक वे
न एव	११.	नहीं	चरणौ	१५.	अपने पैर ऊपर की ओर
अश्रृणोत्	१२.	सुना तब	उदक्षिपत् ॥	१६.	उछालने लगे

श्लोकार्थ करवट बदलने के उत्सव में उत्सुकता से भरी मनस्विनी यशोदा आये हुये व्रज वासियों का स्वागत सत्कार कर रही थीं । निश्चय ही उन्होंने पुत्र का रोना नहीं सुना । तब स्तन पान के इच्छुक वे रोते हुये अपने पैर ऊपर की ओर उछालने लगे ॥

सप्तमः श्लोकः

अ :शयानस्य शिशोरनोऽल्पकप्रवालमृद्वङ्घ्रिहतं व्यवर्तत ।
विध्वस्तनानारसकुप्यभाजनं व्यत्यस्तचक्राक्षविभिन्नकूबरम् ॥७॥

पदच्छेद— अधः शयानस्य शिशोः अनः अल्पक प्रवाल मृदु अङ्घ्रि हतम् व्यवर्तत ।
विध्वस्तनाना रस कुप्य भाजनम् व्ययस्त चक्र अक्ष विभिन्न कूबरम् ॥

शब्दार्थ—

अधः	१.	छकड़े के नीचे	विध्वस्त	१३.	टूट गये
शयानस्य	२.	सोये हुये	नाना	१०.	उस पर अनेक प्रकार के
शिशोः	३.	शिशु श्रीकृष्ण का	रसकुप्य	११.	रसों से भरी मटकियाँ
अनःअल्पकः	८.	वह विशाल छकड़ा	भाजनम्	१२.	और दूसरे पात्र
प्रवाल	४.	कोपलों के समान	व्यत्यस्त	१६.	अस्त-व्यस्त हो गये
मृदु	५.	कोमल	चक्र	१४.	छकड़े के पहिये
अङ्घ्रि	६.	पैर	अक्ष	१५.	धुरे आदि
हतम्	७.	लगते ही	विभिन्न	१८.	फट गया
व्यवर्तत ।	९.	उलट गया	कूबरम् ॥	१७.	जुआ

श्लोकार्थ—छकड़े के नीचे सोये हुये शिशु श्रीकृष्ण का कोंपलों के समान कोमल पैर लगते ही वह विशाल छकड़ा उलट गया । उस पर अनेक प्रकार के रसों से भरी मटकियाँ और दूसरे पात्र टूट गये । छकड़े के पहिये धुरे आदि अस्तव्यस्त हो गये । जुआ फट गया ॥

अष्टमः श्लोकः

दृष्ट्वा यशोदाप्रमुखा व्रजस्त्रिय औत्थानिके कर्मणि याः समागताः ।
नन्दादयश्चाद्भुतदर्शनाकुलाः कथं स्वयं वै शकटं विपर्यगात् ॥८॥

पदच्छेद— दृष्ट्वा यशोदा प्रमुखाः व्रजस्त्रियः औत्थानिके कर्मणि याः समागताः ।
नन्दादयः च अद्भुत दर्शन आकुलाः कथम् स्वयम् वै शकटम् विपर्यगात् ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	१०.	जब यह देखा तो	नन्दादयः च	२.	नन्दादि गोप गणों ने तथा
यशोदा प्रमुखा	१.	यशोदा आदि नन्द पत्नियों ने	अद्भुत	३.	इस विचित्र
व्रज स्त्रियः	९.	व्रज की स्त्रियाँ थीं उन्होंने भी	दर्शन	४.	घटनाको देखकर
औत्थानिके	५.	करवट बदलने के	आकुलाः	११.	घटनाको देखकर
कर्मणि	६.	उत्सव में	कथम् स्वयम्	१२.	कैसे अपने आप
याः	७.	जो	वै शकटम्	१३.	यह छकड़ा
समागताः ।	८.	आयी हुई	विपर्यगात् ॥	१४.	उलट गया

श्लोकार्थ—यशोदा आदि नन्द पत्नियों तथा नन्दादि गोप गणों ने इस विचित्र घटना को देखकर करवट बदलने के उत्सव में जो आयी हुई व्रज की स्त्रियाँ थीं उन्होंने भी जब यह देखा तो व्याकुल हो गये । कैसे अपने आप यह छड़का उलट गया ॥

नवमः श्लोकः

ऊचुरव्यवसितमतीन् गोपान् गोपीश्च बालकाः ।
रुदतानेन पादेन क्षिप्तमेतन्न संशयः ॥९॥

पदच्छेद— ऊचुः अव्यवसित मतीन् गोपान् गोपीः च बालकाः ।
रुदता अनेन पादेन क्षिप्तम् एतत् न संशयः ॥

शब्दार्थ—

ऊचुः	७. कहा कि	रुदता	११. रोते हुये
अव्यवसित	१. अनिश्चित	अनेन	१२. इस बालक ने ही
मतीन्	२. बुद्धि से न जान सके तब	पादेन	१३. अपने पैर से
गोपान्	४. गोपों	क्षिप्तम्	१४. इसे उलट दिया है
गोपीः	६. गोपियों से	एतत्	८. इसमें
च	५. और	न	१०. नहीं है
बालकाः ।	३. बालकों ने	संशयः ॥	९. कोई सन्देह

श्लोकार्थ—अपनी अनिश्चित बुद्धि से न जान सके तब गोपों और गोपियों से बालकों ने कहा कि इसमें कोई सन्देह नहीं है। रोते हुये इस बालक ने ही अपने पैर से इसे उलट दिया है ॥

दशमः श्लोकः

न ते श्रद्दधिरे गोपा बालभाषितमित्युत ।
अप्रमेयं बलं तस्य बालकस्य न ते विदुः ॥१०॥

पदच्छेद— न ते श्रद्दधिरे गोपाः बाल भाषितम् इति उत ।
अप्रमेयम् बलम् तस्य बालकस्य न ते विदुः ॥

शब्दार्थ—

न	७. नहीं किया	उत ।	८. ठीक ही है (क्योंकि)
ते	१. उन	अप्रमेयम्	१२. अनन्त
श्रद्दधिरे	६. विश्वास	बलम्	१३. बल को नहीं
गोपाः	२. गोपों ने	तस्य	१०. उस
बाल	३. बालकों को	बालकस्य	११. बालक के
भाषितम्	४. बात	ते	९. वे गोप
इति	५. मान कर उस पर	विदुः ॥	१४. जानते थे

श्लोकार्थ—उन गोपों ने बालकों की बात मान कर उस पर विश्वास नहीं किया। ठीक ही है। क्योंकि वे गोप उस बालक के अनन्त बल को नहीं जानते थे ॥

एकादशः श्लोकः

रुदन्तं सुतमादाय यशोदा ग्रहशङ्किता।
कृतस्वस्त्ययनं विप्रैः सूक्तैः स्तनमपाययत् ॥११॥

पदच्छेद— रुदन्तम् सुतम् आदाय यशोदा ग्रहशङ्किता।
कृत स्वस्त्ययनम् विप्रैः सूक्तैः स्तनम् अपाययत् ॥

शब्दार्थ—

रुदन्तम्	४.	उन्होंने रोते हुये	कृत	१०.	कराया और
सुतम्	५.	पुत्र को	स्वस्त्ययनम्	९	शान्तिपाठ
आदाय	६.	गोद में लेकर	विप्रैः	७.	ब्राह्मणों से
यशोदा	१.	यशोदा जी को किसी	सूक्तैः	८.	वेद मन्त्रों के द्वारा
ग्रह	२.	ग्रह के उत्पात की	स्तनम्	११.	स्तन
शङ्किता।	३.	आशङ्का हुई	अपाययत् ॥	१२.	पान कराने लगीं

श्लोकार्थ—यशोदा जी को किसी ग्रह के उत्पात की आशङ्का हुई। उन्होंने रोते हुये पुत्र को गोद में लेकर ब्राह्मणों से वेद मन्त्रों से शान्ति पाठ कराया और स्तन पान कराने लगीं ॥

द्वादशः श्लोकः

पूर्ववत् स्थापितं गोपैर्बलिभिः सपरिच्छदम्।
विप्रा हुत्वार्चयाञ्चक्रुर्दध्यक्षतकुशाम्बुभिः ॥१२॥

पदच्छेद— पूर्ववत् स्थापितम् गोपैः बलिभिः सपरिच्छदम्।
विप्राः हुत्वा अर्चयाम् चक्रुः दधि अक्षतकुश अम्बुभिः ॥

शब्दार्थ—

पूर्ववत्	४.	पहले के समान	हुत्वा	७.	हवन करके
स्थापितम्	५.	स्थापित कर दिया	अर्चयाम्	११.	भगवान् और छकड़े की पूजा
गोपैः	२.	गोपों ने	चक्रुः	१२.	की
बलिभिः	१.	बलवान्	दधि अक्षत	८.	दही, अक्षत
सपरिच्छदम्।	३.	सामग्री सहित उस छकड़े को	कुश	९.	कुश जल के
विप्राः	६.	ब्राह्मणों ने	अम्बुभिः ॥	१०.	द्वारा

श्लोकार्थ—बलवान् गोपों ने सामग्री सहित उस छकड़े को पहले के समान स्थापित कर दिया। ब्राह्मणों ने हवन करके दही, अक्षत, कुश और जल के द्वारा भगवान् और उस छकड़े की पूजा की ॥

त्रयोदशः श्लोकः

येऽसूयानृतदम्भेर्ष्याहिंसामानविवर्जिताः ।
न तेषां सत्यशीलानामाशिषो विफलाः कृताः ॥१३॥

पदच्छेद— ये असूया अनृत दम्भ ईर्ष्या हिंसामान विवर्जिताः ।
न तेषाम् सत्य शीलानाम् आशिषः विफलाः कृताः ॥

शब्दार्थ—

ये	१.	जो किसी के	न	१३.	नहीं
असूया	२.	गुणों में दोष नहीं निकालते हैं तथा	तेषाम्	८.	उन
अनृत	३.	झूठ	सत्य	९.	सत्य
दम्भ ईर्ष्या	४.	दम्भ, इर्ष्या	शालिनाम्	१०.	शील ब्राह्मणों का
हिंसा	५.	हिंसा और	आशिषः	११.	आशीर्वाद
मान	६.	अभिमान आदि	विफलाः	१२.	कभी विफल
विर्वजिताः ।	७.	दोषों से रहित है	कृताः ॥	१४.	होता है

श्लोकार्थ—जो किसी के गुणों में दोष नहीं निकालते हैं तथा झूठ, दम्भ, ईर्ष्या और अभिमान आदि दोषों से रहित हैं, उन सत्यशील ब्राह्मणों को आशोर्वाद कभो विफल नहीं होता है ॥

चतुर्दशः श्लोकः

इति बालकमादाय सामर्ग्यजुरुपाकृतैः ।
जलैः पवित्रौषधिभिरभिषिच्य द्विजोत्तमैः ॥१४॥

पदच्छेद— इति बालकम् आदाय साम ऋक् यजुः उपाकृतैः ।
जलैः पवित्र ओषधिभिः अभिषिच्य द्विज उत्तमैः ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	जलैः	११.	जल से
बालकम्	२.	बालक को	पवित्र	९.	पवित्र
आदाय	३.	लेकर	ओषधिभिः	१०.	ओषधियों से युक्त
साम ऋक्	६.	साम ऋक् और	अभिषिच्य	१२.	अभिषेक कराया
यजुः	७.	यजुर्वेद के	द्विज	५.	ब्राह्मणों से
उपाकृतैः ।	८.	मंत्रों द्वारा संस्कृत	उत्तमैः ॥	४.	श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—इस प्रकार बालक को लेकर श्रेष्ठ ब्राह्मणों से साम, ऋक् और यजुर्वेद के मंत्रों द्वारा संस्कृत पवित्र ओषधियों से युक्त जल से अभिषेक कराया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

वाचयित्वा स्वस्त्ययनं नन्दगोपः समाहितः ।
हुत्वा चाग्निं द्विजातिभ्यः प्रादादन्नं महागुणम् ॥१५॥

पदच्छेद— वाचयित्वा स्वस्त्ययनम् नन्द गोपः समाहितः ।
हुत्वा च अग्निम् द्विजातिभ्यः प्रादात् अन्नम् महागुणम् ॥

शब्दार्थ—

वाचयित्वा	५. पाठ	च	६. और
स्वस्त्ययनम्	४. स्वस्त्ययन	अग्निम्	७. अग्नि में
नन्द	१. नन्द	द्विजातभ्यः	६. ब्राह्मणों को
गोपः	२. गोप	प्रादात्	१२. अन्न का
समाहितः ।	३. बड़ी एकाग्रता से	अन्नम्	११. अन्न का
हुत्वा	८. हवन करा कर	महागुणम ॥	१०. अति उत्तम

श्लोकार्थ—नन्द गोप ने बड़ी एकाग्रता से स्वस्त्ययन पाठ और अग्नि में हवन कराकर ब्राह्मणों को अति उत्तम अन्न का भोजन कराया ॥

षोडशः श्लोकः

गावः सर्वगुणोपेता वासःस्रग्रुक्ममालिनीः ।
आत्मजाभ्युदयार्थाय प्रादात्ते चान्वयुञ्जत ॥१६॥

पदच्छेद— गावः सर्वगुण उपेताः वासः स्रक् रुक्म मालिनीः ।
आत्मज अभ्युदय अर्थाय प्रादात् ते च अनु अयुञ्जत ॥

शब्दार्थ—

गावः	६. गायें	आत्मज	१. अपने पुत्र की
सर्वगुण	४. समस्त गुणों	अभ्युदय	२. उन्नति और अभिवृद्धि
उपेताः	५. से युक्त	अर्थाय	३. के लिये नन्द बाबा ने
वासः	८. वे वस्त्र	प्रादात्	७. प्रदान कीं
स्रक्	९. माला और	ते च	१३. उन ब्राह्मणों ने
रुक्म	१०. सोने के	अनु	१२. बाद
मालिनीः ।	११. हारों स सजी थी	अयुञ्जत ॥	१४. आशीर्बाद दिया

श्लोकार्थ—अपने प्रिय पुत्र की उन्नति और अभिवृद्धि के लिये नन्द बाबा ने समस्त शुभ गुणों से युक्त गायें प्रदान कीं । वे वस्त्र, माला और सोने के हारों से सजी थीं। उसके बाद उन ब्राह्मणों ने आशीर्वाद दिया ।

सप्तदशः श्लोकः

विप्रा मन्त्रविदो युक्तास्तैर्याः प्रोक्तास्तथाऽऽशिषः ।
ता निष्फला भविष्यन्ति न कदाचिदपि स्फुटम् ॥१७॥

पदच्छेद— विप्राः मन्त्र विदः युक्ताः तैः याः प्रोक्ताः तथा आशिषः ।
ताः निष्फलाः भविष्यन्ति न कदाचित् अपि स्फुटम् ॥

शब्दार्थ—

विप्राः	४.	ब्राह्मणों के द्वारा	ताः	८.	वह
मन्त्र विदः	२.	वेदवेत्ता और	निष्फलाः	११.	निष्फल
युक्ताः	३.	सदाचारी	भविष्यन्ति	१३.	होता है
तैः याः	५.	जो	न	१२.	नहीं
प्रोक्ताः	७.	कहा जाता है	कदाचित्	९.	कभी
तथा	१.	इस प्रकार	अपि	१०.	भी
आशिषः ।	६.	आशीर्वाद	स्फुटम् ॥	१४.	यह स्पष्ट ही है

श्लोकार्थ—इस प्रकार वेद वेत्ता और सदाचारी ब्राह्मणों के द्वारा जो आशीर्वाद कहा जाता है वह कभी भी निष्फल नहीं होता है । यह स्पष्ट ही है ॥

अष्टादशः श्लोकः

एकदाऽऽरोहमारूढं लालयन्ती सुतं सती ।
गरिमाणं शिशोर्वोढुं न सेहे गिरिकूटवत् ॥१८॥

पदच्छेद— एकदा आरोहम् आरूढम् लालयन्ती सुतम् सती ।
गरिमाणम् शिशोः वोढुम् न सेहे गिरिकूट वत् ॥

शब्दार्थ—

एकदा	१.	एक बार	गरिमाणम्	९.	भारी
आरोहम्	४.	गोद में	शिशोः	१०.	अपने पुत्र का
आरूढम्	५.	लेकर	वोढुम्	११.	भार वे
लालयन्ती	६.	दुलार रही थीं (कि)	न सेहे	१२.	नहीं सह सकीं
सुतम्	३.	अपने लाला को	गिरिकूट	७.	चट्टान के
सती ।	२.	सती यशोदा जी	वत् ॥	८.	समान

श्लोकार्थ—एक बार सती यशोदा जी अपने लाला को गोद में लेकर दुलार रही थीं कि चट्टान के समान भारी अपने पुत्र का भार वे नहीं सह सकीं ।

एकोनविंशः श्लोकः

भूमौ निधाय तं गोपी विस्मिता भारपीडिता ।
महापुरुषमादध्यौ जगतामास कर्मसु ॥१६॥

पदच्छेद— भूमौ निधाय तं गोपी विस्मिता भार पीडिता ।
महापुरुषम् आदध्यौ जगताम् आस कर्मसु ॥

शब्दार्थ—

भूमौ	४.	पृथ्वी पर	महापुरुषम्	७.	उन्होंने भगवान् का
निधाय	५.	बैठा दिया और	आदध्यौ	८.	स्मरण किया (और)
तम्	३.	उन्हें	जगताम्	६.	घर के सांसारिक
गोपी	१.	यशोदा जी ने	आस	११.	लग गईं
विस्मिता	६.	आश्चर्यचकित थीं	कर्मसु ॥	१०.	कार्यों में
भारपीडिता ।	२.	भार से पीड़ित होकर			

श्लोकार्थ—यशोदा जी ने भार से पीड़ित होकर उन्हें पृथ्वी पर बैठा दिया और आश्चर्य चकित थीं । उन्होंने भगवान् का स्मरण किया और घर के सांसारिक कार्यों में लग गईं ॥

विंशः श्लोकः

दैत्यो नाम्ना तृणावर्तः कंसभृत्यः प्रणोदितः ।
चक्रवातस्वरूपेण जहारासीनमर्भकम् ॥२०॥

पदच्छेद— दैत्यः नाम्ना तृणावर्तः कंस भृत्यः प्रणोदितः ।
चक्रवात स्वरूपेण जहार आसीनम् अर्भकम् ॥

शब्दार्थ—

दैत्यः	३.	एक दैत्य था	चक्रवात	७.	वह बवन्डर के
नाम्ना	२.	नाम का	स्वरूपेण	८.	रूप में
तृणावर्तः	१.	तृणावर्त	जहार	११.	उठाकर ले गया
कंस	४.	वह कंस का	आसीनम्	६.	बैठे हुये
भृत्यः	५.	सेवक था	अर्भकम् ॥	१०.	बालक श्रीकृष्ण को
प्रणोदितः ।	६.	उसी के कहने से			

श्लोकार्थ—तृणावर्त नाम का एक दैत्य था । वह कंस का सेवक था । उसी के कहने से वह बवन्डर के रूप में बैठे हुये बालक श्री कृष्ण को उठा कर ले गया ॥

एकविंशः श्लोकः

गोकुलं सर्वमावृण्वन् मुष्णंश्चक्षूंषि रेणुभिः ।
ईरयन् सुमहाघोरशब्देन प्रदिशो दिशः ॥२१॥

पदच्छेद— गोकुलम् सर्वम् आवृण्वन् मुष्णन् चक्षूंषि रेणुभिः ।
ईरयन् सुमहाघोर शब्देन प्रदिशो दिशः ॥

शब्दार्थ—

गोकुलम्	३.	गोकुल को	ईरयन्	११.	काँप उठीं
सर्वम्	२.	सारे	सुमहाघोर	७.	उसके अत्यन्त भयंकर
आवृण्वन्	४.	ढक लिया और	शब्देन	८.	शब्द से
मुष्णन्	६.	हर ली	प्रदिशः	१०.	दिशायें
चक्षूंषि	५.	लोगों को देखने की शक्ति	दिशः ॥	९.	दसों
रेणुभिः ।	१.	उसने व्रज रज से			

श्लोकार्थ—उसने व्रज रज से सारे गोकुल को ढक लिया और लोगों के देखने की शक्ति हर ली । उसके अत्यन्त भयंकर शब्द से दशों दिशायें काँप उठीं ॥

द्वाविंशः श्लोकः

मुहूर्तमभवद् गोष्ठं रजसा तमसाऽऽवृतम् ।
सुतं यशोदा नापश्यत्तस्मिन् न्यस्तवती यतः ॥२२॥

पदच्छेद— मुहूर्तम् अभवद् गोष्ठम् रजसा तमसा आवृतम् ।
सुतम् यशोदा न अपश्यत् तस्मिन् न्यस्तवती यतः ॥

शब्दार्थ—

मुहूर्तम्	२.	दो घड़ी तक	सुतम्	८.	पुत्र श्रीकृष्ण को
अभवत्	६.	रहा	यशोदा	७.	यशोदा जी ने अपने
गोष्ठम्	१.	सारा व्रज	न अपश्यत्	१२.	नहीं पाया
रजसा	३.	रज और	तस्मिन्	११.	उस स्थल पर
तमसा	४.	तम से	न्यस्तवती	१०.	छोड़ा था
आवृतम् ।	५.	ढका	यतः ॥	९.	जहाँ

श्लोकार्थ—सारा व्रज दो घड़ी तक रज और तम से ढका रहा । यशोदा जी ने अपने पुत्र श्रीकृष्ण को जहाँ छोड़ा था उस स्थल पर नहीं पाया ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

नापश्यत् कश्चनात्मानं परं चापि विमोहितः ।
तृणावर्तनिसृष्टाभिः शर्कराभिरुपद्रुतः ॥२३॥

पदच्छेद— न अपश्यत् कश्चन आत्मानम् परम् च अपि विमोहितः ।
तृणावर्त निसृष्टाभिः शर्कराभिः उपद्रुतः ॥

शब्दार्थ—

न	११. नहीं	**अपि**	८. भी
अपश्यत्	१२. देखा	**विमोहितः ।**	६. बेसुध हुये
कश्चन	७. किसी व्यक्ति ने	**तृणावर्त**	१. तृणावर्त के द्वारा
आत्मानम्	९. स्वयं को अथवा	**निसृष्टाभिः**	२. उड़ाई गई
परम्	१०. दूसरे को	**शर्कराभिः**	३. बालू से
च	५. और	**उपद्रुतः ॥**	४. उद्विग्न

श्लोकार्थ—तृणावर्त के द्वारा उड़ाई गई बालू से उद्विग्न और बेसुध हुये किसी व्यक्ति ने भी स्वयं को अथवा दूसरे को नहीं देखा ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

इति खरपवनचक्रपांसुवर्षे सुतपदवीमबलाविलक्ष्य माता ।
अतिकरुणमनुस्मरन्त्यशोचद् भुवि पतिता मृतवत्सका यथा गौः ॥२४॥

पदच्छेद— इति खर पवन चक्र पांसु वर्षे सुतपदवीम् अबला अविलक्ष्य माता ।
अतिकरुणम् अनुस्मरन्ति अशोचत् भुवि पतिता मृतवत्सका यथा गौः ॥

शब्दार्थ—

इति खर	१. इस प्रकार ज़ोर की	**अतिकरुणम्**	८. अत्यन्त करुण भाव से
पवन चक्र	२. आँधी बवन्डर तथा	**अनुस्मरन्ति**	९. पुत्र का स्मरण करते हुये वे
पांसु वर्षे	३. धूल की वर्षा से	**अशोचत्**	१०. शोकमग्न हो गईं और
सुतपदवीम्	४. पुत्र का पता	**भुवि पतिता**	१४. पृथ्वी पर गिर पड़ी
अबला	७. दीन-हीन हो गईं	**मृतवत्सका**	११. मरे हुये बछड़े वाली
अविलक्ष्य	५. न पाकर	**यथा**	१३. समान
माता ।	६. माँ यशोदा	**गौः ॥**	१२. गौ के

श्लोकार्थ—इस प्रकार ज़ोर की आँधी, बवन्डर तथा धूल की वर्षा से पुत्र का पता न पाकर माँ यशोदा दीन-हीन हो गईं । अत्यन्त करुण भाव से पुत्र का स्मरण करती हुयी वे शोक मग्न हो गयीं । और मरे हुये बछड़े वाली गौ के समान पृथ्वी पर गिर पड़ीं ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

रुदितमनुनिशम्य तत्र गोप्यो भृशमनुतप्तधियोऽश्रुपूर्णमुख्यः ।
रुरुदुरनुपलभ्य नन्दसूनुं पवन उपारतपांसुवर्षवेगे ॥२५॥

पदच्छेद— रुदितम् अनुनिशम्य तत्र गोप्यः भृशम् अनुतप्त धियः अश्रुपूर्णमुख्यः ।
रुरुदुः अनुपलभ्य नन्द सूनुम् पवन उपारत पांसु वर्ष वेगे ॥

शब्दार्थ—

रुदितम्	७.	यशोदा जी के	रुरुदुः	१६.	रोने लगीं
अनुनिशम्य	८.	रोने का शब्द सुनकर	अनुपलभ्य	११.	नहीं पाया तो वे
तत्र	६.	वहाँ	नन्द सूनुम्	१०.	जब नन्द पुत्र को
गोप्यः	९.	गोपियों ने	पवन	१.	बवन्डर के
भृशम्	१३.	अत्यधिक	उपारत	२.	शान्त होने और
अनुतप्त	१४.	सन्तप्त होते हुये	पांसु	३.	धूल की
धियः	१२.	हृदय में	वर्ष	४.	वर्षा का
अश्रुपूर्णमुख्यः।	१५.	आँसुओं से भरे मुख से	वेगे ॥	५.	वेग कम होने पर

श्लोकार्थ— बवन्डर के शान्त होने और धूल की वर्षा का वेग कम होने पर वहाँ यशोदा जी के रोने का शब्द सुनकर गोपियों ने जब नन्द पुत्र को नहीं पाया तो वे हृदय में अत्यधिक सन्तप्त होते हुये आँसुओं से भरे मुख मे रोने लगीं ।

षड्विंशः श्लोकः

तृणावर्तः शान्तरयो वात्यारूपधरो हरन् ।
कृष्णं नभोगतो गन्तुं नाशक्नोद् भूरिभारभृत् ॥२६॥

पदच्छेद— तृणावर्तः शान्तरयः वात्या रूपधरः हरन् ।
कृष्णम् नभो गतो गन्तुम् न अशक्नोत् भूरिभारभृत् ॥

शब्दार्थ—

तृणावर्तः	१.	इधर तृणावर्त	**नभो**	६.	आकाश में
शान्तरयः	८.	उसका वेग शान्त हो गया	**गतः**	७.	ले गया तो
वात्या	२.	बवन्डर का रूप	**गन्तुम्**	१०.	वह चलने में
रूपधरः	३.	धारण करके	**न**	१२.	नहीं
हरन् ।	५.	हरण करके	**अशक्नोत्**	११.	समर्थ हो सका
कृष्णम्	४.	जब भगवान् श्रीकृष्ण का	**भूरिभारभृत् ॥**	९.	अत्यधिक भार धारण करने से

श्लोकार्थ—इधर तृणावर्त बवन्डर का रूप धारण करके जब भगवान् श्रीकृष्ण को हरण करके आकाश में ले गया तो उसका वेग शान्त हो गया । अत्यधिक भार धारण करने से वह चलने में समर्थ नहीं हो सका ।

सप्तविंशः श्लोकः

तमश्मानं मन्यमान आत्मनो गुरुमत्तया ।
गले गृहीत उत्स्रष्टुं नाशक्नोदद्भुतार्भकम् ॥२७॥

पदच्छेद— तम् अश्मानम् मन्यमानः आत्मनः गुरु मत्तया ।
गले गृहीतः उत्स्रष्टुम् न अशक्नोत् अद्भुत अर्भकम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	४. उन्हें	गले गृहीतः	९. गला पकड़ लेने के कारण
अश्मानम्	५. चट्टान	उत्स्रष्टुम्	१०. उसे अपने से अलग करने में
मन्यमानः	६. समझता हुआ	न	१२. नहीं
आत्मनः	१. स्वयं अपने	अशक्नोत्	११. समर्थ हो सका
गुरु	२. भारी	अद्भुत	७. उस अद्भुत
मत्तया ।	३. होने के कारण	अर्भकम् ॥	८. बालक के द्वारा

श्लोकार्थ—स्वयं अपने भारी होने के कारण उन्हें चट्टान समझता हुआ, उस अद्भुत बालक के द्वारा गला पकड़ लेने के कारण उसे अपने से अलग करने में समर्थ नहीं हो सका ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

गलग्रहणनिश्चेष्टो दैत्यो निर्गतलोचनः ।
अव्यक्तरावो न्यपतत् सहबालो व्यसुर्व्रजे ॥२८॥

पदच्छेद— गल ग्रहण निश्चेष्टः दैत्यः निर्गत लोचनः ।
अव्यक्त रावः न्यपतत् सहबालः व्यसुः व्रजे ॥

शब्दार्थ—

गल ग्रहण	१. गला पकड़ने से	अव्यक्त	७. बन्द हो गयी
निश्चेष्टः	२. निश्चेष्ट हुए	रावः	६. उसकी बोलती
दैत्यः	३. उस दैत्य की	न्यपतत्	११. गिर पड़ा
निर्गत	५. बाहर निकल आईं	सहबालः	९. बालक श्रीकृष्ण के साथ
लोचनः ।	४. आँखें	व्यसुः	८. प्राण पखेरू उड़ गये
		व्रजे ॥	१०. वह व्रज में

श्लोकार्थ—गला पकड़ने से निश्चेष्ट हुये उस दैत्य की आँखे बाहर निकल आईं । उसकी बोलती बन्द हो गयी । प्राण पखेरू उड़ गये । बालक श्रीकृष्ण के साथ वह व्रज में गिर पड़ा ॥

एकोनविंशः श्लोकः

तमन्तरिक्षात् पतितं शिलायां विशीर्णसर्वावयवं करालम् ।
पुरं यथा रुद्रशरेण विद्धं स्त्रियो रुदत्यो ददृशुः समेताः ॥२९॥

पदच्छेद — तम् अन्तरिक्षात् पतितम् शिलायाम् विशीर्ण सर्व अवयवम् करालम् ।
पुरम् यथा रुद्रशरेण विद्धम् स्त्रियः रुदत्यः ददृशुः समेताः ॥

शब्दार्थ— तम्	४.	वह	पुरम्	१४.	त्रिपुरासुर चूर-चूर हो गया था
अन्तरिक्षात्	५.	आकाश से	यथा	११.	ठीक वैसे ही जैसे
पतितम्	८.	गिर पड़ा और	रुद्रशरेण	१२.	भगवान् शंकर के बाणों से
शिलायाम्	७.	एक चट्टान पर	विद्धम्	१३.	आहत होकर
विशीर्ण	१०.	चकनाचूर हो गये	स्त्रियः	१.	वहाँ जो स्त्रियां
सर्व अवयवम्	९.	उसके सभी अङ्ग	रुदत्यः ददृशुः	३.	रो रही थीं उन्होंने देखा कि
करालम् ।	६.	विकराल दैत्य	समेताः ॥	२.	इकट्ठी होकर

श्लोकार्थ—वहाँ जो स्त्रियाँ इकट्ठी होकर रो रही थीं । उन्होंने देखा कि वह विकराल दैत्य एक चट्टान पर गिर पड़ा और उसके सभी अङ्ग चकनाचूर हो गये । ठीक वैसे ही जैसे भगवान् शंकर के बाणों से आहत होकर त्रिपुरासुर चूर-चूर हो गया था ॥

विंशः श्लोकः

प्रादाय मात्रे प्रतिहृत्य विस्मिताः कृष्णं च तस्योरसि लम्बमानम् ।
तं स्वस्तिमन्तं पुरुषादनीतं विहायसा मृत्युमुखात् प्रमुक्तम् ।
गोप्यश्च गोपाः किल नन्दमुख्या लब्ध्वा पुनः प्रापुरतीव मोदम् ॥३०॥

प्रादाय मात्रे प्रतिहृत्य विस्मिताः कृष्णम् च तस्य उरसि लम्बमानम् ।
तम् स्वस्तिमन्तम् पुरुषाद नीतम् विहाय सा मृत्यु मुखात् प्रमुक्तम् ।
गोप्यः च गोपाः किल नन्द मुख्याः लब्ध्वा पुनः प्रापुः अतीव मोदम् ॥

शब्दार्थ—

प्रादाय मात्रे	७.	गोद में लेकर माता को	विहायसा	१२.	आकाश मार्ग से
प्रतिहृत्य	८.	दे दिया और	मृत्युमुखात्	१०.	मृत्यु के मुख से
विस्मिताः	५.	विस्मित हो गयो	प्रमुक्तम्	११.	लौटे हुये बालक को
कृष्णम्	१.	भगवान् श्रीकृष्ण	गोप्यः च	४.	यह देखकर गोपियाँ
तस्याः उरसि	२.	उसके वक्षः स्थल पर	गोपाः किल	१५.	गोपगणों ने निश्चय ही
लम्बमानम्	३.	लटक रहे थे	नन्दमुख्याः	१४.	नन्द आदि
तम्	६.	उस बालक को	लब्ध्वा पुनः	१६.	फिर से पाकर
स्वस्तिमन्तम्	९.	सकुशलपूर्वक	प्रापुः	१८.	प्राप्त किया
पुरुषाद नीतम्	१३.	राक्षस द्वारा लाये हुये	अतीवमोदम् ॥	१७.	अत्यधिक आनन्द

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण उसके वक्षः स्थल पर लटक रहे थे । यह देखकर गोपियां विस्मित हो गयीं । उस बालक को गोद में लेकर माता को दे दिया । और मृत्यु के मुख से कुशलपूर्वक लौटे हुये बालक को आकाश मार्ग से राक्षस द्वारा लाये हुये नन्द आदि गोप गणों ने निश्चय ही फिर से पाकर अत्यधिक आनन्द प्राप्त किया ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

अहो बतात्यद्भुतमेष रक्षसा बालो निवृत्तिं गमितोऽभ्यगात् पुनः ।
हिंस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः साधुः समत्वेन भयाद् विमुच्यते ॥३१॥

पदच्छेद— अहो बत अति अद्भुतम् एषः रक्षसा बालः निवृत्तम् गमितः अभ्यगात् पुनः ।
हिंस्रःस्वपापेन विहिंसितः खलः साधु समत्वेन भयात् विमुच्यते ॥

शब्दार्थ—

अहो बत	१.	अहो यह	हिंस्रः	९.	उस हिंसक
अति अद्भुतम्	२.	बड़े आश्चर्य की बात है कि	स्वपापेन	११.	उसके पाप ही
एषः	३.	यह	विहिंसितः	१२.	खा गये और
रक्षसा	५.	राक्षस के द्वारा	खलः	१०.	दुष्ट को
बालः	४.	बालक	साधुः	१३.	साधु पुरुष
निवृत्तिम्	६.	मृत्यु के मुख में	समत्वेन	१४.	अपनी समता से ही
गमितः	७.	डालने पर भी	भयात्	१५.	सम्पूर्ण भयों से
अभ्यगात् पुनः ।	८.	फिर से जीवित लौट आया	विमुच्यते ॥	१६.	मुक्त हो जाता है

श्लोकार्थ—अहो यह बड़े आश्चर्य की बात है कि यह बालक राक्षस के द्वारा मृत्यु के मुख में डालने पर भी फिर से जीवित लौट आया । उस हिंसक दुष्ट को उसके पाप ही खा गये । साधु पुरुष अपनी समता से ही सम्पूर्ण भयों से मुक्त हो जाते हैं ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

किं नस्तपश्चीर्णमधोक्षजार्चनं पूर्तेष्टदत्तमुत भूतसौहृदम् ।
यत्संपरेतः पुनरेव बालको दिष्ट्या स्वबन्धून् प्रणयन्नुपस्थितः ॥३२॥

पदच्छेद— किम् नः तपः चीर्णम् अधोक्षज अर्चनम् पूर्त इष्ट दत्तम् उत भूत सौहृदम् ।
यत् सम्परेतः पुनः एव बालकः दिष्ट्या स्वबन्धून् प्रणयन् उपस्थितः ॥

शब्दार्थ—

किम् नः	१.	हमने ऐसा कौन सा	यत्	९.	जिससे कि
तपः	२.	तप	सम्परेतः	११.	मरकर
चीर्णम्	८.	की थी	पुनः एव	१२.	पुनः ही
अधोक्षज	३.	भगवान् श्रीकृष्ण की	बालकः	१०.	यह बालक
अर्चनम् पूर्तं	४.	पूजा वापी कुआँ आदि	दिष्ट्या	१३.	भाग्यवश
इष्ट दत्तम्	५.	यज्ञ इत्यादि	स्वबन्धून्	१४.	अपने बन्धुजनों को
उत भूत	६.	अथवा प्राणियों की	प्रणयन्	१५.	प्रसन्न करने के लिये
सौहृदम् ।	७.	भलाई	उपस्थितः ॥	१६.	लौट आया

श्लोकार्थ—हमने ऐसा कौन सा तप, भगवान् श्रीकृष्ण की पूजा, वापी, कुआँ आदि यज्ञ इत्यादि अथवा प्राणियों की भलाई की थी । जिससे कि यह बालक मर कर पुनः ही भाग्यवश अपने बन्धुजनों को प्रसन्न करने के लिये लौट आया ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

दृष्ट्वाद्भुतानि बहुशो नन्दगोपो बृहद्वने ।
वसुदेववचो भूयो मानयामास विस्मितः ॥३३॥

पदच्छेद— दृष्ट्वा अद्भुतानि बहुशः नन्द गोपः बृहत् वने ।
वसुदेव वचः भूयः मानयामास विस्मितः ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	७.	घटनायें देखकर	वने ।	४.	वन में
अद्भुतानि	६.	अद्भुत	वसुदेव	९.	वसुदेव जी की
बहुशः	५.	बहुत सी	वचः	१०.	बात का ही
नन्द	१.	नन्द बाबा तथा	भूयः	११.	बार-बार
गोपः	२.	गोपगणों ने	मानयामास	१२.	समर्थन किया
बृहत्	३.	उस विशाल	विस्मितः ॥	८.	आश्चर्य चकित होते हुये

श्लोकार्थ—नन्द बाबा तथा गोपगणों ने उस विशाल वन में बहुत सी अद्भुत घटनायें देखकर आश्चर्य चकित होते हुए वसुदेव जी की बात का ही बार-बार समर्थन किया ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

एकदार्भकमादाय स्वाङ्कमारोप्य भामिनि ।
प्रस्नुतं पाययामास स्तनं स्नेहपरिप्लुता ॥३४॥

पदच्छेद— एकदा अर्भकम् आदाय स्व अङ्कम् आरोप्य भामिनी ।
प्रस्नुतम् पाययामास स्तनम् स्नेह परिप्लुता ॥

शब्दार्थ—

एकदा	१.	एक बार	भामिनी ।	४.	यशोदा जी
अर्भकम्	५.	बालक श्रीकृष्ण को	प्रस्नुतम्	१०.	दुग्ध बहते हुये
आदाय	६.	लेकर	पाययामास	१२.	पान करा रही थी
स्व	७.	अपनी	स्तनम्	११.	स्तनों का
अङ्कम्	८.	गोद में	स्नेह	२.	स्नेह से
आरोप्य	९.	लिटाकर	परिप्लुता ॥	३.	परिपूर्ण

श्लोकार्थ—एक बार स्नेह से परिपूर्ण यशोदा जी बालक श्रीकृष्ण को लेकर अपनी गोद में लिटाकर दुग्ध बहते हुये स्तनों का पान करा रही थी ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

प्रीतप्रायस्य जननी सा तस्य रुचिरस्मितम् ।
मुखं लालयती राजञ्जृम्भतो ददृशे इदम् ॥३५॥

पदच्छेद— पीत प्रायस्य जननी सा तस्य रुचिर स्मितम् ।
मुखम् लालयती राजन् जृम्भतः ददृशे इदम् ॥

शब्दार्थ—

पीत	२.	दूध पी चुकने के	मुखम्	९.	मुख को
प्रायस्य	३.	बाद	लालयती	१०.	चूम रही थीं कि उन्होंने
जननी	५.	माँ यशोदा	राजन्	१.	हे राजन्
सा	४.	वह	जृम्भतः	११.	जम्भाई लेते हुये
तस्य	६.	उन श्रीकृष्ण के	ददृशे	१३.	देखा
रुचिर	७.	सुन्दर	इदम् ॥	१२.	श्रीकृष्ण के मुख में यह दृश्य
स्मितम् ।	८.	मुसकान से युक्त			

श्लोकार्थ—दूध पी चुकने के बाद वह माँ यशोदा श्रीकृष्ण के सुन्दर मुसकान से युक्त मुख को चूम रही थीं, कि उन्होंने जम्भाई लेते हुये श्रीकृष्ण के मुख में यह दृश्य देखा ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

खं रोदसी ज्योतिरनीकमाशाः सूर्येन्दुवह्निश्वसनाम्बुधींश्च ।
द्वीपान् नगांस्तद्दुहितृर्वनानि भूतानि यानि स्थिरमङ्गजमानि ॥३६॥

पदच्छेद— खम् रोदसी ज्योतिः अनीकम् आशाः सूर्येन्दु वह्निश्वसन अम्बुधीन् च ।
द्वीपान् नगान् तत् दुहितृः वनानि भूतानि यानि स्थिर जङ्गमानि ॥

शब्दार्थ—

खम्	१.	उसमें आकाश	द्वीपान्	९.	द्वीप
रोदसी	२.	अन्तरिक्ष	नगान्	१०.	पर्वत
ज्योतिः	३.	ज्योति	तत्	११.	पर्वतों की
अनीकम्	४.	मण्डल	दुहितृः	१२.	पुत्रियाँ (नदियाँ)
आशाः	५.	दिशायें	वनानि	१३.	वन
सूर्येन्दु	६	सूर्य-चन्द्रमा	भूतानि	१८.	प्राणी हैं (वे देखे)
वह्निश्वसन	७.	अग्नि-वायु	यानि	१५.	जो भी
अम्बुधीन्	८.	समुद्र	स्थिर	१७.	अचर
च ।	१४.	और	जङ्गमानि ॥	१६.	चर

श्लोकार्थ—उसमें आकाश, अन्तरिक्ष, ज्योति मण्डल, दिशायें, सूर्य-चन्द्रमा, अग्नि वायु, समुद्र, द्वीप, पर्वत, पर्वतों की पुत्रियाँ नदियाँ, वन और जो भी चर, अचर प्राणी हैं वे देखे ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

सा वीक्ष्य विश्वं सहसा राजन् सञ्जातवेपथुः ।
सम्मील्य मृगशावाक्षी नेत्रे आसीत् सुविस्मिता ॥३७॥

पदच्छेद— सा वीक्ष्य विश्वम् सहसा सञ्जात वेपथुः ।
सम्मील्य मृग शावाक्षी नेत्रे आसीत् सुविस्मिता ॥

शब्दार्थ—

सा	२.	यशोदा जी	सम्मील्य	११.	बन्द कर लिये
वीक्ष्य	५.	देखकर	मृग	८.	मृग
विश्वम्	४.	समस्त विश्व को	शावाक्षी	९.	शावक नयनी यशोदा जी ने
सहसा	३.	इस प्रकार सहसा	नेत्रे	१०.	नेत्र
राजन्	१.	हे परीक्षित् !	आसीत्	१३.	हो गईं
सञ्जात	७.	हो उठीं	सुविस्मिता ॥	१२.	वे आश्चर्य चकित
वेपथुः ।	६.	रोमाञ्चित			

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! यशोदा जी इस प्रकार सहसा समस्त विश्व को देखकर, रोमाञ्चित हो उठीं । मृग शावक नयनी यशोदा जी ने नेत्र बन्द कर लिये । वे आश्चर्य चकित हो गईं ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
तृणावर्तमोक्षो नाम सप्तमः अध्यायः ॥७॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

अष्टमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— गर्गः पुरोहितो राजन् यदूनां सुमहातपाः ।
व्रजं जगाम नन्दस्य वसुदेवप्रचोदितः ॥१॥

पदच्छेद— गर्गः पुरोहितः राजन् यदूनाम् सुमहातपाः ।
व्रजम् जगाम नन्दस्य वसुदेव प्रचोदितः ॥

शब्दार्थ—

गर्गः	३.	गर्गाचार्य जी	व्रजम्	९.	गोकुल में
पुरोहितः	५.	कुल पुरोहित थे	जगाम	१०.	आये
राजन्	१.	हे परीक्षित् !	नन्दस्य	८.	नन्द बाबा के
यदूनाम्	४.	यदुवंशियों के	वसुदेव	६.	वसुदेव जी की
सुमहातपाः ।	२.	अत्यन्त तपस्वी	प्रचोदितः ।	७.	प्रेरणा से वे

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! अत्यन्त तपस्वी गर्गाचार्य जी यदुवंशियों के कुल पुरोहित थे । वसुदेव जी की प्रेरणा से वे नन्द बाबा के गोकुल में आये ॥

द्वितीयः श्लोकः

तं दृष्ट्वा परमप्रीतः प्रत्युत्थाय कृताञ्जलिः ।
आनर्चाधोक्षजधिया प्रणिपातपुरःसरम् ॥२॥

पदच्छेद— तम् दृष्ट्वा परम प्रीतः प्रत्युत्थाय कृतअञ्जलिः ।
आनर्च अधोक्षज धिया प्रणिपात पुरः सरम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	उन्हें	आनर्च	१२.	पूजा की
दृष्ट्वा	२.	देखकर नन्द बाबा	अधोक्षज	९.	भगवत्
परम	३.	बड़ी	धिया	१०.	बुद्धि से
प्रीतः	४.	प्रसन्नता हुई	प्रणिपात	११.	प्रणाम करके उनकी
प्रत्युत्थाय	६.	उठ खड़े हुये और	पुरः	७.	सामने
कृतअञ्जलिः ।	५.	वे हाथ जोड़कर	सरम् ॥	८.	आकर

श्लोकार्थ—उन्हें देखकर नन्द बाबा को बड़ी प्रसन्नता हुई । वे हाथ जोड़कर उठ खड़े हुये । और सामने आकर भगवत् बुद्धि से प्रणाम करके उनकी पूजा की ॥

तृतीयः श्लोकः

सूपविष्टं कृतातिथ्यं गिरा सूनृतया मुनिम् ।
नन्दयित्वाब्रवीद् ब्रह्मन् पूर्णस्य करवाम किम् ॥३॥

पदच्छेद— सूपविष्टम् कृत आतिथ्यम् गिरा सूनृतया मुनिम् ।
नन्दयित्वा अब्रवीत् ब्रह्मन् पूर्णस्य करवाम किम् ॥

शब्दार्थ—

सूपविष्टम्	३.	आराम से बैठ जाने पर	नन्दयित्वा	७.	अभिनन्दन करके
कृत	२.	बाद	अब्रवीत्	८.	नन्द बाबा बोले
आतिथ्यम्	१.	अतिथि सत्कार के	ब्रह्मन्	९.	हे भगवन् ! आप तो
गिरा	५.	वाणी से	पूर्णस्य	१०.	पूर्णकाम
सूनृतया	४.	सत्य और मधुर	करवाम	१२.	सेवा करूँ
मुनिम् ।	६.	मुनि गर्गाचार्य का	किम् ॥	११.	मैं आपकी क्या

श्लोकार्थ—अतिथि सत्कार के बाद आराम से बैठ जाने पर सत्य और मधुर वाणी से अभिनन्दन करके नन्द बाबा बोले । हे भगवन् ! आप तो पूर्णकाम हैं । मैं आपकी क्या सेवा करूँ ॥

चतुर्थः श्लोकः

महद्विचलनं नृणां गृहिणां दीनचेतसाम् ।
निःश्रेयसाय भगवन् कल्पते नान्यथा क्वचित् ॥४॥

पदच्छेद— महत् विचलनम् नृणाम् गृहिणाम् दीन चेतसाम् ।
निःश्रेयसाय भगवन् कल्पते च अन्यथा क्वचित् ॥

शब्दार्थ—

महत्	६.	महापुरुषों का	निःश्रेयसाय	८.	उनके कल्याण के लिये ही
विचलनम्	७.	आगमन	भगवन्	१.	हे भगवन् !
नृणाम्	५.	जनों के यहाँ	कल्पते	९.	होता है
गृहिणाम्	४.	गृहस्थ	न	१२.	नहीं है
दीन	२.	दीन	अन्यथा	१०.	इसका अन्य
चेतसाम् ।	३.	चित्त वाले	क्वचित् ॥	११.	कोई और हेतु

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! दीन चित्त वाले गृहस्थ जनों के यहाँ महापुरुषों का आगमन उनके कल्याण के लिये ही होता है । इसका अन्य कोई और हेतु नहीं है ॥

पञ्चमः श्लोकः

ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तज्ज्ञानमतीन्द्रियम् ।
प्रणीतं भवता येन पुमान् वेद परावरम् ॥५॥

पदच्छेद— ज्योतिषाम् अयनम् साक्षात् यत् तत् ज्ञानम् अतीन्द्रियम् ।
प्रणीतम् भवता येन पुमान् वेद परावरम् ॥

शब्दार्थ—

ज्योतिषाम्	५. ज्योतिष शास्त्र द्वारा	**प्रणीतम्**	९. बनाया हुआ
अयनम्	७. जान लिया जाता है	**भवता**	८. वह भी आपके द्वारा
साक्षात्	६. प्रत्यक्ष रूप से	**येन**	१०. जिससे
यत्	१. जो	**पुमान्**	११. मनुष्य का
तत्	४. वह भी	**वेद**	१३. जाना जाता है
ज्ञानम्	३. ज्ञान है	**परावरम् ।**	१२. भूत और भविष्य
अतीन्द्रियम् ।	२. इन्द्रियों से परे		

श्लोकार्थ—जो इन्द्रियों से परे ज्ञान है वह भी ज्योतिष शास्त्र द्वारा प्रत्यक्ष रूप से जान लिया जाता है। वह भी आपके द्वारा बनाया हुआ है। जिससे मनुष्य का भूत और भविष्य जाना जाता है ॥

षष्ठः श्लोकः

त्वं हि ब्रह्मविदां श्रेष्ठः संस्कारान् कर्तुमर्हसि ।
बालयोरनयोर्नृणां जन्मना ब्राह्मणो गुरुः ॥६॥

पदच्छेद— त्वम् हि ब्रह्मविदाम् श्रेष्ठः संस्कारान् कर्तुम् अर्हसि ।
बालयोः अनयोः नृणाम् जन्मना ब्राह्मणो गुरुः ॥

शब्दार्थ—

त्वम् हि	१. निश्चय ही आप	**बालयोः**	५. बालकों के
ब्रह्मविदाम्	२. ब्रह्म वेत्ताओं में	**अनयोः**	४. इन दोनों
श्रेष्ठः	३. श्रेष्ठ हैं (अतः)	**नृणाम्**	११. मनुष्य मात्र का
संस्कारान्	६. नामकरणादि संस्कार	**जन्मना**	१०. जन्म से ही
कर्तुम्	७. करने में आप	**ब्राह्मणो**	९. ब्राह्मण
अर्हसि ।	८. समर्थ हैं (क्योंकि)	**गुरुः ॥**	१२. गुरु होता है

श्लोकार्थ—निश्चय ही आप ब्रह्म-वेत्ताओं में श्रेष्ठ हैं। अतः इन दोनों बालकों के नामकरणादि संस्कार करने में आप समर्थ हैं। क्योंकि ब्राह्मण जन्म से ही मनुष्य मात्र का गुरु होता है ॥

सप्तमः श्लोकः

गर्ग उवाच— यदूनामहमाचार्यः ख्यातश्च भुवि सर्वतः ।
सुतं मया संस्कृतं ते मन्यते देवकीसुतम् ॥७॥

पदच्छेद— यदूनाम् अहम् आचार्यः ख्यातः च भुवि सर्वतः ।
सुतम् मया संस्कृतम् ते मन्यते देवकी सुतम् ॥

शब्दार्थ—

यदूनाम्	४.	यदुवंशियों के	सुतम्	१०.	पुत्रों का
अहम्	१.	मैं	मया	८.	मेरे द्वारा
आचार्यः	५.	आचार्य के रूप में	संस्कृतम्	११.	संस्कार होने पर
ख्यातः	६.	प्रसिद्ध हूँ	ते	९.	तुम्हारे
च	६.	और	मन्यते	१४.	समझेंगे
भुवि	२.	पृथ्वी में	देवकी	१२.	लोग उन्हें देवकी का
सर्वतः ।	३.	सब जगह	सुतम् ॥	१३.	पुत्र ही

श्लोकार्थ—मैं पृथ्वी में सब जगह यदुवंशियों के आचार्य के रूप में प्रसिद्ध हूँ । और मेरे द्वारा तुम्हारे पुत्रों का संस्कार होने पर लोग उन्हें देवकी का पुत्र ही समझेंगे ॥

अष्टमः श्लोकः

कंसः पापमतिः सख्यं तव चानकदुन्दुभेः ।
देवक्या अष्टमो गर्भो न स्त्री भवितुमर्हति ॥८॥

पदच्छेद— कंसः पाप मतिः सख्यम् तव च आनकदुन्दुभेः ।
देवक्याम् अष्टमः गर्भः न स्त्री भवितुम् अर्हति ॥

शब्दार्थ—

कंसः	१.	कंस की	देवक्याम्	७.	उसके अनुसार देवकी का
पाप	३.	पापमय है	अष्टमः	८.	आठवाँ
मतिः	२.	बुद्धि	गर्भः	९.	गर्भ
सख्यम्	६.	घनिष्ठ मैत्री है	न	१३.	नहीं है
तव च	४.	आपको	स्त्री	१०.	स्त्री
आवकदुन्दुभेः ।	५.	वसुदेव जी के साथ	भवितुम्	११.	होना
			अर्हसि ।	१२.	सम्भव

श्लोकार्थ—कंस की बुद्धि पापमय है । आपकी वसुदेव जी से घनिष्ठ मैत्री है । उसके अनुसार देवकी का आठवाँ गर्भ स्त्री होना सम्भव नहीं है ॥

नवमः श्लोकः

इति सञ्चिन्तयञ्छ्रुत्वा देवक्या दारिकावचः ।
अपि हन्ताऽऽगताशङ्कस्तर्हि तन्नोऽनयो भवेत् ॥९॥

पदच्छेद— इति सञ्चिन्तयन् श्रुत्वा देवक्या दारिका वचः ।
अपि हन्ता ऽऽगतः आशङ्कः तर्हि तत् नः अनयः भवेत ॥

शब्दार्थ—

इति	३.	इस प्रकार की	आगत	७.	पैदा हो गया है
सञ्चिन्तयन्	९.	वह सोचा करता है	आशङ्कः	८.	इसी आशङ्का से
श्रुत्वा	५.	सुनकर	तर्हि	१०.	कहीं
देवक्याः	१.	देवकी की	तत्	११.	उस बालक का
दारिका	२.	कान्या की	नः	१३.	नहीं
वचः ।	४.	वाणी को	अनयः	१२.	अनिष्ट
अपि हन्ता	६.	कि कहीं तुझे मारने वाला	भवेत् ॥	१४.	हो जाये

श्लोकार्थ—देवकी को कन्या की इस प्रकार की वाणी को सुनकर कि कहीं तुझे मारने वाला पैदा हो गया है। इसी आशङ्का से वह सोचा करता है। कहीं उस बालक का अनिष्ट न हो जाये ॥

दशमः श्लोकः

नन्द उवाच— अलक्षितोऽस्मिन् रहसि मामकैरपि गोव्रजे ।
कुरु द्विजातिसंस्कारं स्वस्तिवाचनपूर्वकम् ॥१०॥

पदच्छेद— अलक्षितः अस्मिन् रहसि मामकैः अपि गोव्रजे ।
कुरु द्विजाति संस्कारम् स्वस्ति वाचन पूर्वकम् ॥

शब्दार्थ—

अलक्षितः	३.	अदृश्य रहकर	कुरु	१२.	कर दीजिये
अस्मिन्	४.	इस	द्विजाति	१०.	द्विजाति समुचित
रहसि	५.	एकान्त	संस्कारम्	११.	संस्कार
मामकैः	१.	मेरे लोगों से	स्वस्ति	७.	स्वस्ति
अपि	२.	भी	वाचन	८.	वाचन
गोव्रजे ।	६.	गोशाला में	पूर्वकम् ॥	९.	करके

श्लोकार्थ—मेरे लोगों से भी अदृश्य रहकर इस एकान्त गोशाला में स्वस्ति वाचन करके द्विजाति समुचित संस्कार कर दीजिये ॥

एकादशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवं सम्प्रार्थितो विप्रः स्वचिकीर्षितमेव तत् ।
चकार नामकरणं गूढो रहसि बालयोः ॥११॥

पदच्छेद— एवम् सम्प्रार्थितः विप्रः स्वचिकीर्षितम् एव तत् ।
चकार नामकरणम् गूढः रहसि बालयोः ॥

शब्दार्थ—एवम्	३.	नन्द बाबा के इस प्रकार	चकार	११.	कर दिया
सम्प्रार्थितः	४.	प्रार्थना करने पर	नामकरणम्	१०.	नामकरण संस्कार
विप्रः	५.	गर्गाचार्य जी ने	गूढः	७.	छिपकर
स्वचिकीर्षितम्	१.	वे तो संस्कार करना ही	रहसि	६.	एकान्त में
एव	२.	चाहते थे	बालयोः ॥	९.	दोनों बालकों का
तत् ।	८.	उन			

श्लोकार्थ—वे तो संस्कार करना ही चाहते थे । नन्द बाबा के इस प्रकार प्रार्थना करने पर गर्गाचार्य जी ने एकान्त में छिपकर उन दोनों बालकों का नामकरण संस्कार कर दिया ॥

द्वादशः श्लोकः

गर्ग उवाच— अयं हि रोहिणीपुत्रो रमयन् सुहृदो गुणैः ।
आख्यास्यते राम इति बलाधिक्याद् बलं विदुः ।
यदूनामपृथग्भावात् सङ्कर्षणमुशन्त्युत ॥१२॥

पदच्छेद— अयम् हि रोहिणी पुत्रः रमयन् सुहृदैः गुणैः ।
आख्यास्यते राम इति बल आधिक्यात् बलम् विदुः ।
यदूनाम् अपृथक् भावात् सङ्कर्षणम् उशन्ति उत ॥

शब्दार्थ—अयम् हि	१.	यह	बलआधिक्यात्	९.	बल की अधिकता के कारण
रोहिणी	२.	रोहिणी का	बलम् विदुः	१०.	बलराम भी कहलायेगा
पुत्रः	३.	पुत्र अपने	यदूनाम्	१२.	यदुवंशियों में
रमयन्	६.	आनन्दित करेगा	अपृथक्	१३.	अभिन्न
सुहृदः	५.	मित्रों को	भावात्	१४.	सम्बन्ध के कारण
गुणैः।	४.	गुणों से	सङ्कर्षणम्	१५.	संकर्षण
आख्यास्यते	८.	कहा जायेगा	उशन्ति	१६.	कहलायेगा
राम इति	७.	यह राम इस नाम से कहा जायेगा	उत ॥	११.	तथा

श्लोकार्थ—यह रोहिणी का पुत्र अपने गुणों से मित्रों को आनन्दित करेगा । यह राम इस नाम से कहा जायेगा । बल की अधिकता के कारण बलराम भी कहलायेगा । यदुवंशियों में अभिन्न सम्बन्ध के कारण संकर्षण कहलायेगा ।

त्रयोदशः श्लोकः

आसन् वर्णास्त्रयो ह्यस्य गृह्णतोऽनुयुगं तनूः।
शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतां गतः ॥१३॥

पदच्छेद— आसन् वर्णाः त्रयः हि अस्य गृह्णतः अनुयुगम् तनूः।
शुक्लः रक्तः तथा पीतः इदानीम् कृष्णताम् गतः ॥

शब्दार्थ—

आसन्	११.	स्वीकार किया था	शुक्लः	५.	श्वेत
वर्णाः	१०.	वर्णों को	रक्तः	६.	रक्त
त्रयः	९.	इन तीन	तथा	७.	तथा
हि अस्य	४.	इसके पहले युगों में	पीतः	८.	पीत
गृह्णतः	३.	धारण करने वाले	इदानीम्	१२.	वही अब
अनुयुगम्	१.	प्रत्येक युग में	कृष्णताम्	१३.	कृष्ण वर्ण को प्राप्त
तनूः।	२.	शरीर	गतः ॥	१४.	हुआ है

श्लोकार्थ—प्रत्येक युग में शरीर धारण करने वाले इसने पहले युगों में श्वेत, रक्त तथा पीत इन तीन वर्णों को स्वीकार किया था। अब कृष्ण वर्ण को प्राप्त हुआ है ॥

चतुर्दशः श्लोकः

प्रागयं वसुदेवस्य क्वचिज्जातस्तवात्मजः।
वासुदेव इति श्रीमानभिज्ञाः सम्प्रचक्षते ॥१४॥

पदच्छेद— प्राक् अयम् वसुदेवस्य क्वचित् जातः तव आत्मजः।
वासुदेवः इति श्रीमान् अभिज्ञाः सम्प्रचक्षते ॥

शब्दार्थ—

प्राक्	४.	पहले	आत्मजः।	३.	पुत्र
अयम्	२.	यह	वासुदेवः	१०.	वासुदेव
वसुदेवस्य	६.	वसुदेव जी के यहाँ	इति	११.	ऐसा भी
क्वचित्	५.	कभी	श्रीमान्	९.	श्रीमान्
जातः	७.	पैदा हुआ था अतः	अभिज्ञाः	८.	जानने वाले इसे
तव	१.	आपका	सम्प्रचक्षते।	१२.	कहते है

श्लोकार्थ—आपका यह पुत्र पहले कभी वसुदेव जी के यहाँ पैदा हुआ था। अतः जानने वाले इसे श्रीमान् वासुदेव ऐसा भी कहते हैं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

बहूनि सन्ति नामानि रूपाणि च सुतस्य ते ।
गुणकर्मानुरूपाणि तान्यहं वेद नो जनाः ॥१५॥

पदच्छेद— बहूनि सन्ति नामानि रूपाणि च सुतस्य ते ।
गुणकर्म अनुरूपाणि तानि अहम् वेद न जनाः ॥

शब्दार्थं—

बहूनि	५.	बहुत से	गुणकर्म	१.	गुणों और कर्मों के
सन्ति	११.	हैं	अनुरूपाणि	२.	अनुसार
नामानि	८.	नाम	तानि	१३.	उन नामों को
रूपाणि	१०.	रूप	अहम्	१२.	मैं तो उनको
च	९.	और	वेद	१४.	जानता हूँ पर
सुतस्य	४.	पुत्र के	न	१६.	नहीं जानते हैं
ते ।	३.	आपके	जनाः ॥	१५.	साधारण मनुष्य

श्लोकार्थ—गुणों और कर्मों के अनुसार आपके पुत्र के बहुत से नाम और रूप हैं । मैं तो उनको जानता हूँ । पर साधारण मनुष्य नहीं जानते हैं ॥

षोडशः श्लोकः

एष वः श्रेय आधास्यद् गोपगोकुलनन्दनः ।
अनेन सर्वदुर्गाणि यूयमञ्जस्तरिष्यथ ॥१६॥

पदच्छेद— एषः वः श्रेयः आधास्यत् गोप गोकुल नन्दनः ।
अनेन सर्व दुर्गाणि यूयम् अञ्जः तरिष्यथ ॥

शब्दार्थं—

एषः	१.	यह	अनेन	८.	इसके साथ
वः	२.	तुम लोगों का	सर्व	९.	समस्त
श्रेयः	३.	परम कल्याण	दुर्गाणि	१०.	विपत्तियों को
आधास्यत्	४.	करेगा	यूयम्	७.	तुम लोग
गोप गोकुल	५	समस्त गोप, गौओं को	अञ्जः	११.	बड़ी सुगमता से
नन्दनः ।	६.	आनन्दित करेगा	तरिष्यथ ॥	१२.	पार कर लोगे

श्लोकार्थ—यह तुम लोगों का परम कल्याण करेगा । समस्त गोप और गौओं को आनन्दित करेगा । तुम लोग इसके साथ समस्त विपत्तियों को बड़ी सुगमता से पार कर लोगे ॥

सप्तदशः श्लोकः

पुरानेन व्रजपते साधवो दस्युपीडिताः ।
अराजके रक्ष्यमाणा जिग्युर्दस्यून् समेधिताः ॥१७॥

पदच्छेद— पुरा अनेन व्रजपते साधवः दस्यु पीडिताः ।
अराजके रक्ष्यमाणाः जिग्युः दस्यून् समेधिताः ॥

शब्दार्थ—

पुरा	२.	पहले युग में	अराजके	५.	राजा के रहित पृथ्वी को
अनेन	६.	इसी पुत्र ने	रक्ष्यमाणाः	८.	रक्षा की (और)
व्रजपते	१.	हे व्रजराज !	जिग्युः	११.	विजय प्राप्त की
साधवः	७.	सज्जनों की	दस्यून्	१०.	लुटेरों पर भी
दस्यु	३.	डाकुओं से	समेधिताः ॥	९.	इसी के साथ उन्होंने
पीडिताः ।	४.	पीडित और			

श्लोकार्थ—हे व्रजराज ! पहले युग में डाकुओं से पीडित और राजा से रहित पृथ्वी पर इसी पुत्र ने सज्जनों को रक्षा की । और इसी के साथ उन्होंने लुटेरों पर भी विजय प्राप्त की थी ॥

अष्टादशः श्लोकः

य एतस्मिन् महाभागाः प्रीतिं कुर्वन्ति मानवाः ।
नारयोऽभिभवन्त्येतान् विष्णुपक्षानिवासुराः ॥१८॥

पदच्छेद— ये एतस्मिन् महाभागाः प्रीतिम् कुर्वन्ति मानवाः ।
न अरयः अभिभवन्ति एतान् विष्णु पक्षान् इव असुराः ॥

शब्दार्थ—

ये	१.	जो	अरयः	१२.	शत्रु भी नहीं
एतस्मिन्	४.	तुम्हारे इस पुत्र से	अभिभवन्ति	१४.	जीत सकते हैं
महाभागाः	२.	भाग्यशाली	एतान्	११.	इन्हें
प्रीतिम्	५.	प्रीति	विष्णु	८.	विष्णु भगवान् की
कुर्वन्ति	६.	करते हैं	पक्षान्	९.	छत्र छाया में रहने वालों को
मानवाः ।	३.	मनुष्य	इव	७.	जैसे
न	१३.	नहीं	असुराः ॥	१०.	असुर नहीं जीत सकते वैसे ही

श्लोकार्थ—जो भाग्यशाली मनुष्य तुम्हारे इस पुत्र से प्रीति करते हैं । जैसे विष्णु भगवान् की छत्र छाया में रहने वालों को असुर नहीं जीत सकते वैसे ही इन्हें शत्रु भी नहीं जीत सकते हैं ॥

एकोनविंशः श्लोकः

तस्मान्नन्दात्मजोऽयं ते नारायणसमो गुणैः ।
श्रिया कीर्त्यानुभावेन गोपायस्व समाहितः ॥१९॥

पदच्छेद— तस्मात् नन्द आत्मजः अयम् ते नारायण समः गुणैः ।
श्रिया कीर्त्या अनुभावेन गोपायस्व समाहितः ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१. इसलिये	**गुणैः ।**	६. गुणों
नन्द	२. नन्द जी का	**श्रिया**	७. सम्पत्ति
आत्मजः	४. बालक	**कीर्त्या**	८. कीर्ति
अयम्	३. यह	**अनुभावेन**	९. प्रभाव आदि में
ते	५. उन दिव्य	**गोपायस्व**	१२. इसकी रक्षा करो
नारायण समः	१०. नारायण के समान है (तुम)	**समाहितः ॥**	११ सावधानी पूर्वक

श्लोकार्थ— इसलिये नन्द जी का यह बालक उन दिव्य गुणों, सम्पत्ति, कीर्ति प्रभाव आदि में नारायण के समान है। सावधानी पूर्वक इसकी रक्षा करो ॥

विंशः श्लोकः

इत्यात्मानं समादिश्य गर्गे च स्वगृहं गते ।
नन्दः प्रमुदितो मेने आत्मानं पूर्णमाशिषाम् ॥२०॥

पदच्छेद— इति आत्मानम् समादिश्य गर्गे च स्व गृहम् गते ।
नन्दः प्रमुदितः मेने आत्मानम् पूर्णम् आशिषाम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१. इस प्रकार	**गते ।**	७. चले गये
आत्मानम्	२. नन्द बाबा को भलीभाँति	**नन्दः**	९. नन्द बाबा ने भी
समादिश्य	३. समझाकर	**प्रमुदितः**	१०. प्रसन्न होकर
गर्गे	४. गर्गाचार्य जी	**मेने**	११. ऐसा मान लिया
च	८. और	**आत्मानम्**	१२. मेरी सब
स्व	५. अपने	**पूर्णम्**	१४. पूर्ण हो गईं
गृहम्	६. आश्रम को	**आशिषाम् ॥**	१३. आशा लालसायें

श्लोकार्थ— इस प्रकार नन्द बाबा को भलीभाँति समझाकर गर्गाचार्य जी अपने आश्रम को चले गये। और नन्द बाबा ने भी प्रसन्न होकर ऐसा मान लिया कि मेरी सब लालसायें पूर्ण हो गईं ॥

एकविंशः श्लोकः

कालेन व्रजताल्पेन गोकुले रामकेशवौ।
जानुभ्यां सह पाणिभ्यां रिङ्गमाणौ विजह्रतुः ॥२१॥

पदच्छेद— कालेन व्रजता अल्पेन गोकुले राम केशवौ।
जानुभ्याम् सह पाणिभ्याम् रिङ्गमाणौ विजह्रतुः ॥

शब्दार्थ—

कालेन	१.	कुछ दिनों बाद	जानुभ्याम्	५.	घुटनों के
व्रजता	८.	चल-चलकर	सह	६.	बल
अल्पेन	९.	धीरे-धीरे	पाणिभ्याम्	४.	हाथों और
गोकुले	२.	गोकुल में	रिङ्गमाणौ	७.	बकैयाँ
राम केशवौ।	३.	राम और श्याम	विजह्रतुः ॥	१०.	खेलने लगे

श्लोकार्थ—कुछ दिनों बाद गोकुल में राम और श्याम हाथों और घुटनों के बल बकैयाँ चल-चलकर धीरे-धीरे खेलने लगे।

द्वाविंशः श्लोकः

तावङ्घ्रियुग्ममनुकृष्य सरीसृपन्तौ घोषप्रघोषरुचिरं व्रजकर्दमेषु।
तन्नादहृष्टमनसावनुसृत्य लोकं मुग्धप्रभीतवदुपेयतुरन्ति मात्रोः ॥२२॥

पदच्छेद— तौ अङ्घ्रियुग्मम् अनुकृष्य सरीसृपन्तौ घोष-प्रघोष रुचिरम् व्रज कर्दमेषु।
तत्नाद हृष्ट मनसौ अनुसृत्य लोकम् मुग्ध प्रभीत वत् उपेयतुः अन्ति मात्रोः ॥

शब्दार्थ—

तौ	१.	दोनों भाई	तत् नाद	९.	उसकी ध्वनि से
अङ्घ्रियुग्मम्	२.	नन्हें नन्हें दोनों पैरों को	हृष्ट मनसौ	१०.	प्रसन्न चित्त से
अनुकृष्य	३.	घसीटते हुये	अनुसृत्य	११.	अनुसरण करते
सरीसृपन्तौ	६.	चलते तो	लोकम्	१२.	दूसरे लोगों को देखते तो
घोष-प्रघोष	७.	घुंघुरू की ध्वनि प्रति ध्वनि	मुग्ध	१३.	ठगे से रह जाते और
रुचिरम्	८.	बड़ी मधुर लगती	प्रभीत	१४.	भयभीत
व्रज	४.	गोकुल की	वत्	१५.	की तरह
कर्दमेषु।	५.	कीचड़ में	उपेयतुः	१७.	लौट आते
			अन्तिमात्रोः ॥	१६.	माताओं के पास

श्लोकार्थ—दोनों भाई नन्हें-नन्हें पैरों को घसीटते हुये गोकुल की कीचड़ में चलते तो घुँघुरू की ध्वनि प्रतिध्वनि बड़ी मधुर लगती। उसकी ध्वनि से प्रसन्नचित्त से अनुसरण करते। दूसरे लोगों को देखते तो ठगे से रह जाते और भयभीत की तरह माताओं के पास लौट आते ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

तन्मातरौ निजसुतौ घृणया स्नुवन्त्यौ पङ्काङ्गरागरुचिरावुपगुह्य दोर्भ्याम् ।
दत्त्वा स्तनं प्रपिबतोः स्म मुखं निरीक्ष्य मुग्धस्मिताल्पदशनं ययतुः प्रमोदम् ॥२३॥

पदच्छेद- तत् मातरौ निजसुतौ घृणया स्नुवन्त्यौ पङ्कअङ्गराग रुचिरौ उपगुह्य दोर्भ्याम् ।
दत्त्वा स्तनम् प्रपिबतोः स्म मुखम् निरीक्ष्य मुग्ध स्मित अल्पदशनम् ययतुः प्रमोदम् ॥

शब्दार्थ—तत् मातरौ	१.	वे मातायें	दत्त्वा स्तनम्	९.	उनके मुख में स्तन डालकर
निजसुतौ	२.	अपने पुत्रों को	प्रपिबतोः स्म	१०.	उन्हें दूध पिलाती थीं
घृणया	३.	देखकर स्नेह से भर जातीं	मुखम् निरीक्ष्य	१४.	मुख देखकर वे
स्नुवन्त्यौ	४.	उनके स्तनों से दूध झरने लगता	मुग्ध	१३.	भोला-भाला
पङ्क अङ्गराग	५.	वे कीचड़ के अङ्गराग से	स्मित	११.	उनका मुस्कराता हुआ
रुचिरौ	६.	सुशोभित बालकों को	अल्पदशनम्	१२.	छोटी-छोटी दंतुलियों वाला
उपगुह्य	८.	पकड़कर	ययतुः	१६.	प्राप्त करती थीं
दोर्भ्याम् ।	७.	दोनों हाथों से	प्रमोदम् ॥	१५.	अत्यन्त प्रसन्नता को

श्लोकार्थ—वे मातायें अपने पुत्रों को देखकर स्नेह से भर जातीं। उनके स्तनों से दूध झरने लगता। वे कीचड़ के अङ्ग राग से सुशोभित बालकों को दोनों हाथों से पकड़कर उनके मुख में स्तन डालकर उन्हें दूध पिलाती थीं। उनका मुस्कराता हुआ छोटी छोटी दंतुलियों वाला, भोला-भाला मुख देखकर वे अत्यन्त प्रसन्नता को प्राप्त करती थीं ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

यर्ह्यङ्गनादर्शनीयकुमारलीलावन्तर्व्रजे तदबलाः प्रगृहीतपुच्छैः ।
वत्सैरितस्तत उभावनुकृष्यमाणौ प्रेक्षन्त्य उज्झितगृहा जहृषुर्हसन्त्यः ॥२४॥

पदच्छेद—यर्हि अङ्गना दर्शनीय कुमार लीलौ अन्तः व्रजे तत् अबलाः प्रगृहीत पुच्छैः ।
वत्सैः इतः ततः उभौ अनुकृष्यमाणौ प्रेक्षन्त्यः उज्झितगृहाः जहृषुः हसन्त्यः ॥

शब्दार्थ--यर्हि	१.	जब वे	वत्सैः	७	बछड़ों की
अङ्गना	३.	स्त्रियों के	इतः ततः	१०.	इधर-उधर
दर्शनीय	४.	देखने योग्य	उभौ	६.	वे दोनों
कुमार	२.	दोनों कुमार	अनुकृष्यमाणौ	११.	घिसटते
लीलौ	५.	लीलायें करते तो	प्रेक्षन्त्यः	१४.	उन्हें देखतीं और
अन्तः व्रजे	९.	व्रज के अन्दर	उज्झितगृहाः	१३.	घर से निकल कर
तत् अबलाः	१२.	व्रज गोपियाँ	जहृषुः	१६.	प्रसन्न हो जाती थीं
प्रगृहीत पुच्छैः ।	८.	पूंछ पकड़कर	हसन्त्यः ॥	१५.	हँसती हुई

श्लोकार्थ—जब वे दोनों कुमार स्त्रियों के देखने योग्य लीलायें करते तो वे दोनों बछड़ों की पूंछ पकड़कर व्रज के अन्दर इधर-उधर घिसटते घर से निकलर व्रज गोपियाँ उन्हें देखतीं और हँसती हुई प्रसन्न हो जाती थीं ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

शृङ्ग्यग्निदंष्ट्र्यसिजलद्विजकण्टकेभ्यः क्रीडापरावतिचलौ स्वसुतौ निषेद्धुम् ।
गृह्याणि कर्तुमपि यत्र न तज्जनन्यौ शेकात आपतुरलं मनसोऽनवस्थाम् ॥२५॥

पदच्छेद—शृङ्गि अग्नि दंष्ट्रि असि जल द्विज कण्टकेभ्यः क्रीडापरौ अतिचलौ स्वसुतौ निषेद्धुम् ।
गृह्याणि कर्तुम् अपि यत्र न तत् जनन्यौ शेकाते आपतुः अलम् मनसः अनवस्थाम् ॥

शब्दार्थ—

शृङ्गि अग्नि	१.	वे सींग वाले हिरन आदि, अग्नि	गृह्याणि	१२.	गृह
दंष्ट्रि	२.	दाँत से काटने वाले कुत्ते आदि	कर्तुम् अपि	१३.	कार्यों को भी
असि जल	३.	तलवार-जल	यत्र	७.	तब
द्विज	४.	मयूरादि पक्षी	न	१४.	नहीं
कण्टकेभ्यः	५.	काँटों आदि से	तत् जनन्यौ	८.	उनकी मातायें
क्रीडापरौ	६.	खेलते	शेकाते	१५.	कर पातीं
अतिचलौ	९.	अत्यन्त चञ्चल	आपतुः	१६.	हो जाता था
स्वसुतौ	१०.	अपने बालकों को	अलम् मनसः	१७.	भय की चिन्ता से
निषेद्धुम् ।	११.	रोकतीं (तथा)	अनवस्थाम् ॥	१८.	उनका मन असन्तुलित

श्लोकार्थ—वे सींग वाले हिरन आदि, अग्नि और दाँत से काटने वाले कुत्ते आदि, तलवार-जल मयूरादि पक्षी, काँटों आदि से खेलते तब उनकी मातायें अत्यन्त चञ्चल अपने बालकों को रोकतीं तथा गृह कार्यों को भी न कर पातीं । भय की चिन्ता से उनका मन असन्तुलित हो जाता था ॥

षड्विंशः श्लोकः

कालेनाल्पेन राजर्षे रामः कृष्णश्च गोकुले ।
अघृष्टजानुभिः पद्भिर्विचक्रमतुरञ्जसा ॥२६॥

पदच्छेद— कालेन अल्पेन राजर्षे रामः कृष्णः च गोकुले ।
अघृष्ट जानुभिः पद्भिः विचक्रमतुः अञ्जसा ॥

शब्दार्थ—

कालेन	३.	समय में	गोकुले ।	१०.	गोकुल में
अल्पेन	२.	कुछ ही	अघृष्ट	८.	सहारा लिये बिना ही
राजर्षे	१.	हे राजर्षे	जानुभिः	७.	घुटनों का
रामः	४.	बलराम	पद्भिः	११.	पैरों से
कृष्णः	६.	श्रीकृष्ण	विचक्रमतुः	१२.	चलने-फिरने लगे
च	५.	और	अञ्जसा ॥	९.	अनायास ही खड़े होकर

श्लोकार्थ—हे राजर्षे ! कुछ ही समय में बलराम और श्रीकृष्ण घुटनों का सहारा लिये बिना ही अनायास ही खड़े होकर गोकुल में पैरों से चलने-फिरने लगे ॥

सप्तविंशः श्लोकः

ततस्तु भगवान् कृष्णो वयस्यैर्व्रजबालकैः ।

सहरामो व्रजस्त्रीणां चिक्रीडे जनयन् मुदम् ॥२७॥

पदच्छेद— ततः तु भगवान् कृष्णः वयस्यैः व्रज बालकैः ।
सह रामः व्रज स्त्रीणाम् चिक्रीडे जनयन् मुदम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तब	सह	९.	साथ
तु	२.	तो	रामः	५.	बलराम
भगवान्	३.	भगवान्	व्रज	११.	व्रज की
कृष्णः	४.	श्रीकृष्ण	स्त्रीणाम्	१२.	स्त्रियों को
वयस्यैः	६.	अपनी उम्र के	चिक्रीडे	१०.	खेलने लगे और
व्रज	७.	व्रज के	जनयन्	१४.	देने लगे
बालकैः ।	८.	बालकों के	मुदम् ॥	१३.	आनन्द

श्लोकार्थ—तब तो भगवान् श्रीकृष्ण, बलराम और अपनी उम्र के व्रज के बालकों के साथ खेलने लगे । और व्रज की स्त्रियों को आनन्द देने लगे ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

कृष्णस्य गोप्यो रुचिरं वीक्ष्य कौमारचापलम् ।

शृण्वत्याः किल तन्मातुरिति होचुः समागताः ॥२८॥

पदच्छेद— कृष्णस्य गोप्यः रुचिरम् वीक्ष्य कौमार चापलम् ।
शृण्वत्याः किल तत् मातुः इति ह ऊचुः समागताः ॥

शब्दार्थ—

कृष्णस्य	२.	श्रीकृष्ण की	शृण्वत्याः	११.	सुना-सुनाकर
गोप्यः	५.	गोपियों को	किल	१.	निश्चय ही
रुचिरम्	६.	बड़ी अच्छी लगतीं	तत्	८.	फिर तो वे
वीक्ष्य	७.	उन्हें देखकर	मातुः	१०.	यशोदा माता को
कौमार	३.	बचपन की	इति ह ऊचुः	१२.	इस प्रकार कहने लगतीं
चापलम् ।	४.	चञ्चलतायें	समागताः ॥	९.	इकट्ठी होकर

श्लोकार्थ—निश्चय ही श्रीकृष्ण की बचपन की चञ्चलतायें गोपियों को बड़ी अच्छी लगतीं । उन्हें देखकर फिर तो वे इकट्ठी होकर यशोदा माता को सुना-सुनाकर इस प्रकार कहने लगतीं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

वत्सान् मुञ्चन् क्वचिदसमये क्रोशसंजातहासः
स्तेयं स्वाद्वत्त्यथ दधि पयः कल्पितैः स्तेययोगैः ।
मर्कान् भोक्ष्यन् विभजति स चेन्नात्ति भाण्डं भिनत्ति ।
द्रव्यालाभे स गृहकुपितो यात्युपक्रोश्य तोकान् ॥२९॥

पदच्छेद— वत्सान् मुञ्चन् क्वचित् असमये क्रोश संजात हासः ।
स्तेयम् स्वादु अत्ति अथ दधि पयः कल्पितैः स्तेय योगैः ।
मर्कान् भोक्ष्यन् विभजति सः चेत् नात्ति भाण्डम् भिनत्ति ।
द्रव्य अलाभे सः गृह कुपितः याति उपक्रोश्य तोकान् ॥

शब्दार्थ—

वत्सान्	३.	बछड़ों को	मर्कान्	१९.	बन्दरों को
मुञ्चन्	४.	खोल देता है	भोक्ष्यन्	२०.	खिलाकर
क्वचित्	१.	कभी कभी यह	विभजति	२१.	सब बाँट देता है
असमये	२.	असमय में ही	सः	१६.	वह
क्रोश संजात	५.	हमारे क्रोध करने पर	चेत्	१७.	यदि खाता तो ठीक था पर
हासः	६.	हँसने लगता है	नात्ति	१८.	खाता नहीं है अपितु
स्तेयम्	१४.	चुरा चुराकर	भाण्डम्	२२.	पात्रों को भी
स्वादु	११.	स्वादिष्ठ	भिनत्ति	२३.	तोड़ डालता है
अत्ति	१५.	खाया करता है	द्रव्य	२४.	घर में कोई वस्तु
अथ	७.	और कभी यह	अलाभे	२५.	न मिलने पर
दधि	१३.	दही	सः	२६.	यह
पयः	१२.	दूध	गृह कुपितः	२७.	घर वालों पर खीझता है
कल्पितैः	१०.	करके	याति	३०.	भाग जाता है
स्तेय	८.	चोरी के	उपक्रोश्य	२९.	रुलाकर
योगैः ।	९.	बड़े उपाय	तोकान् ॥	२८.	और बच्चों को

श्लोकार्थ—अरी यशोदा जी ! कभी कभी यह असमय में ही बछड़ों को खोल देता है । हमारे क्रोध करने पर हँसने लगता है । और कभी यह चोरी के बड़े उपाय करके स्वादिष्ठ दूध और दही खाया करता है । यह यदि खाता तो ठीक था । पर खाता नहीं है अपितु बन्दरों को खिलाकर सब बाँट देता है । पात्रों को भी फोड़ डालता है । घर में कोई वस्तु न मिलने पर यह घर वालों पर खीझता है और बच्चों को रुलाकर भाग जाता है ॥

त्रिंशः श्लोकः

हस्ताग्राह्ये रचयति विधिं पीठकोलूखलाद्यै-
श्छिद्रं ह्यन्तर्निहितवयुनः शिक्यभाण्डेषु तद्वित् ।
ध्वान्तागारे धृतमणिगणं स्वाङ्गमर्थप्रदीपं
काले गोप्यो यर्हि गृहकृत्येषु सुव्यग्रचित्ताः ॥३०॥

पदच्छेद— हस्त अग्राह्ये रचयति विधिम् पीठक उलूखल आद्यैः
छिद्रम् हि अन्तः निहित वयुनः शिक्यभाण्डेषु तत् वित् ।
ध्वान्त आगारे धृतमणि गणम् स्व अङ्गम् अर्थ प्रदीम्
काले गोप्याः यर्हि गृहकृत्येषु सुव्यग्र चित्ताः ॥

शब्दार्थ—

हस्त	१.	हाथ की	ध्वान्त	१६.	अन्धकार युक्त
अग्राह्ये	२.	पहुँच से दूर रखने पर	आगारे	१७.	घर में
रचयति	७.	कर लेता है	धृत	२०.	धारण किये हुये
विधिम्	६.	अनेक उपाय	मणि	२१.	मणियों के
पीठक	३.	पीढ़ा और	गणम्	२२.	आभूषण और
उलूखलः	४.	ऊखल	स्व	२३.	अपने
आद्यैः	५.	आदि रख कर	अङ्गम्	२४.	अङ्ग की कान्ति से पा लेता है ।
छिद्रम्	१५.	उनमें छेद कर देता है	अर्थ	१८.	वस्तुओं को
हि अन्तः	१२	अन्दर	प्रदीपम्	१९.	प्रकाशित करने वाले
निहित	१३.	रखी हुई वस्तुओ को	काले	३०.	समय पाकर अपना काम बना लेता है
वयुनः	१४.	जानने वाला यह	गोप्याः	२६.	गोपियों का
शिक्य	८.	छींके पर रखे	यर्हि	२५.	और जब
भाण्डेषु	९.	पात्रों को और	गृहकृत्येषु	२८.	गृह कार्यों में
तत्	१०.	उनको	सुव्यग्र	२९.	व्यस्त रहता तब
वित् ।	११.	जानकर	चित्ताः ॥	२७.	मन

श्लोकार्थ— अरी यशोदा जी ! हाथ की पहुँच से दूर रखने पर पीढा और ऊखल आदि रख कर अनेक उपाय कर लेता है । छीके पर रखे पात्रों को और उनको जानकर अन्दर रखी हुई वस्तुओं को जानने वाला यह उन पात्रों में छेद कर देता है । अन्धकार युक्त घर में वस्तुओं का प्रकाशित करने वाले धारण किये हुये मणियों के आभूषण और अपने अङ्ग की कान्ति से पा लेता है । और जब गोपियों का मन गृह कार्यों में व्यस्त रहता है तब समय पाकर अपना काम बना लेता है ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

एवं धाष्टर्यान्युशति कुरुते मेहनादीनि वास्तौ
स्तेयोपायैर्विरचितकृतिः सुप्रतीको यथाऽऽस्ते ।
इत्थं स्त्रीभिः सभयनयनश्रीमुखालोकिनीभि-
र्व्याख्यातार्था प्रहसितमुखी न ह्युपालब्धुमैच्छत् ॥३१॥

पदच्छेद— एवम् धाष्टर्यानि उशति कुरुते मेहन आदीनि वास्तौ
स्तेय उपायैः विरचित कृतिः सुप्रतीकः यथा आस्ते ।
इत्थम् स्त्रीभिः सभयनयन श्रीमुख आलोकिनीभिः
व्याख्यात अर्था प्रहसित मुखी न हि उपालब्धुम् ऐच्छत् ॥

शब्दार्थ—एवम्	१.	इस प्रकार	इत्थम्	१५.	इस प्रकार
धाष्टर्यानि	२.	ढिठाई की	स्त्रीभिः	१४.	गोपियों के
उशति	३.	बातें करता है	सभयनयन	११.	भयभीत नेत्रों से युक्त
कुरुते	६.	कर देता है	श्रीमुख	१२.	कान्तिमय मुख को
मेहन आदीनि	५.	मूत्रादि	आलोकिनीभिः	१३.	देखने लगीं
वास्तौ	४.	स्वच्छ घरों में	व्याख्यातअर्था	१६.	बातें कहने पर
स्तेय उपायैः	७.	चोरी का उपाय करके	प्रहसितमुखी	१७.	हँसती हुई माँ यशोदा
विरचितकृतिः	८.	अपना काम बनाता है और न हि यहाँ		२०.	न कर सकीं
सुप्रतीकः यथा	९.	साधु के समान	उपालब्धुम्	१८.	उलाहना तक देने की
आस्ते ।	१०.	खड़ा है (श्रीकृष्ण के)	ऐच्छत् ॥	१०.	इच्छा

श्लोकार्थ—इस प्रकार ढिठाई की बातें करता है। स्वच्छ घरों में मूत्रादि कर देता है। चोरी के उपाय करके अपना काम बनाता है। और यहाँ साधु के समान खड़ा है। श्रीकृष्ण के भयभीत नेत्रों से युक्त कान्तिमय मुख को देखने लगीं। गोपियों के इस प्रकार बातें कहने पर हंसती हुई माँ यशोदा उलाहना तक देने की इच्छा न कर सकीं ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

एकदा क्रीडमानास्ते रामाद्या गोपदारकाः ।
कृष्णो मृदं भक्षितवानिति मात्रे न्यवेदयन् ॥३२॥

पदच्छेद— एकदा क्रीडमानास्ते राम आद्या गोप दारकाः
कृष्णो मृदम् भक्षितवान् इति मात्रे न्यवेदयन् ॥

शब्दार्थ—एकदा	१.	एक बार	कृष्णो	८.	श्रीकृष्ण ने
क्रीडमानाः	५.	खेल रहे थे कि बालकों ने	मृदम्	९.	मिट्टी
ते राम	२.	वे श्रीकृष्ण बलराम	भक्षितवान्	१०.	खाई है
आद्याः	३.	आदि	इति मात्रे	६.	ऐसा माँ यशोदा से
गोपदारकाः	४.	गोप बालकों के साथ	न्यवेदयन् ॥	७.	बताया कि

श्लोकार्थ—एक बार वे श्रीकृष्ण बलराम आदि गोपबालकों के साथ खेल रहे थे कि बालकों ने ऐसा माँ यशोदा से बताया कि श्रीकृष्ण ने मिट्टी खाई ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

सा गृहीत्वा करे कृष्णमुपालभ्य हितैषिणी ।

यशोदा भयसम्भ्रान्तप्रेक्षणाक्षमभाषत ॥३३॥

पदच्छेद— सा गृहीत्वा करे कृष्णाम् उपालभ्य हितैषिणी ।
यशोदा भय सम्भ्रान्त प्रेक्षण अक्षम् अभाषत ॥

शब्दार्थ—

सा	२.	माँ	यशोदा	३.	यशोदा ने
गृहीत्वा	१०.	पकड़कर	भय	४.	भय के कारण
करे	९.	हाथ	सम्भ्रान्त	५.	चञ्चल
कृष्णम्	८.	श्रीकृष्ण का	प्रेक्षण	६.	दृष्टि युक्त
उपालभ्य	११.	डाँट कर	अक्षम्	७.	नेत्रों वाले
हितैषिणी ।	१.	हितचिन्तक	अभाषत ॥	१२.	कहा

श्लोकार्थ—हितचिन्तक माँ यशोदा ने भय के कारण चञ्चल दृष्टि युक्त नेत्रों वाले श्रीकृष्ण का हाथ पकड़ कर डाँटकर कहा ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

कस्मान्मृदमदान्तात्मन् भवान् भक्षितवान् रहः ।

वदन्ति तावका ह्येते कुमारास्तेऽग्रजोऽप्ययम् ॥३४॥

पदच्छेद— कस्मान्मृदम्अदान्तात्मन् भवान् भक्षितवान् रहः ।
वदन्ति तावकाः हि एते कुमाराः ते अग्रजः अपि अयम् ॥

शब्दार्थ—

कस्मात्	५.	क्यों	वदन्ति	१२.	ऐसा ही कह रहे हैं
मृदम्	४.	मिट्टी	तावकाः	७.	तुम्हारे
अदान्तात्मन्	१.	हे नटखट !	हि एते	८.	ये
भवान्	३.	तूने	कुमाराः	९.	सखा और
भक्षितवान्	६.	खायी है	ते अग्रजः अपि	११.	तुम्हारे बड़े भाई बलदाऊ भी तो
रहः ।	२.	अकेले में छिपकर	अयम् ॥	१०.	ये

श्लोकार्थ—हे नटखट ! अकेले में छिप कर तूने मिट्टी क्यों खायी है । तुम्हारे ये सखा और तुम्हारे बड़े भाई बलदाऊ भी तो ऐसा ही कह रहे हैं ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— नाहं भक्षितवानम्ब सर्वे मिथ्याभिशंसिनः ।
यदि सत्यगिरस्तर्हि समक्षं पश्य मे मुखम् ॥३५॥

पदच्छेद— न अहम् भक्षितवान् अम्ब सर्वे मिथ्याअभिशंसिनः ।
यदि सत्य गिरः तर्हि समक्षम् पश्य मे मुखम् ॥

शब्दार्थ—

न	३.	मिट्टी नहीं	यदि	८.	यदि इनकी
अहम्	२.	मैंने	सत्य	१०.	सत्य हैं
भक्षितवान्	४.	खायी है	गिरः	९.	बातें
अम्ब	१.	हे माँ !	तर्हि	११.	तो
सर्वे	५.	ये सब	समक्षम्	१२.	प्रत्यक्ष रूप से
मिथ्या	६.	झूठ	पश्य	१४.	देख लो
अभिशंसिनः ।	७.	बोल रहे हैं	मे मुखम् ॥	१३.	मेरा मुख

श्लोकार्थ—हे माँ ! मैंने मिट्टी नहीं खायी है । ये सब झूठ बोल रहे हैं । यदि इनकी बात सत्य हैं तो प्रत्यक्ष रूप से मेरा मुख देख लो ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

यद्येवं तर्हि व्यादेहीत्युक्तः स भगवान् हरिः ।
व्यादत्ताव्याहतैश्वर्यः क्रीडामनुजबालकः ॥३६॥

पदच्छेद— यदि एवम् तर्हि व्यादेहि इति उक्तः स भगवान् हरिः ।
व्यादत्त अव्याहत ऐश्वर्यः क्रीडा मनुज बालकः ॥

शब्दार्थ—

यदि	१.	यदि	व्यादत्त	७.	मुँह खोल दिया
एवम् तर्हि	२.	ऐसी बात है तो	अव्याहत	८.	हे परीक्षित् ! अत्यन्त
व्यादेहि	३.	मुँह खोल	ऐश्वर्यः	९.	ऐश्वर्यशाली भगवान् तो
इति उक्तः	४.	माँ के ऐसा कहने पर	क्रीडा	१०.	लीला के लिये ही
सः भगवान्	५.	उन भगवान्	मनुज	११.	मनुष्य के
हरिः ।	६.	श्रीकृष्ण ने	बालकः ॥	१२.	बालक बने हैं

श्लोकार्थ—यदि ऐसी बात है तो मुँह खोल, माँ के ऐसा कहने पर उन भगवान् श्रीकृष्ण ने मुँह खोल दिया । हे परीक्षित् ! अत्यन्त ऐश्वर्यशाली भगवान् तो लीला के लिये ही मनुष्य के बालक बने हैं ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

सा तत्र ददृशे विश्वं जगत् स्थास्नु च खं दिशः ।
साद्रिद्वीपाब्धिभूगोलं सवाय्वग्नीन्दुतारकम् ॥३७॥

पदच्छेद— सा तत्र ददृशे विश्वम् जगत् स्थास्नु च खम् दिशः ।
स अद्रि द्वीप अब्धि भूगोलम् सवायु अग्नि इन्दु तारकम् ॥

शब्दार्थ—

सा	१.	उन यशोदा माँ ने	स	६.	सहित
तत्र	२.	उनके मुँह में	अद्रिद्वीप	७.	पहाड़ों द्वीप और
ददृशे	१४.	देखा	अब्धि	८.	समुद्रों के
विश्वम्	५.	सम्पूर्ण विश्व	भूगोलम्	१०.	सारी पृथ्वी
जगत्	३.	चर	सवायु अग्नि	११.	वायु सहित अग्नि
स्थास्नु च	४.	और अचर	इन्दु	१२.	चन्द्रमा और
खम् दिशः ।	६.	आकाश और दिशायें	तारकम् ॥	१३.	तारों के समुदाय के

श्लोकार्थ—उन यशोदा माँ ने उनके मुँह में चर और अचर सम्पूर्ण विश्व, आकाश और दिशायें, पहाड़ों, द्वीप और समुद्रों के सहित सारी पृथ्वी, वायु के सहित अग्नि, चन्द्रमा और तारों के समुदाय को देखा ॥

अष्टत्रिंशः श्लोकः

ज्योतिश्चक्रं जलं तेजो नभस्वान् वियदेव च ।
वैकारिकाणीन्द्रियाणि मनो मात्रा गुणास्त्रयः ॥३८॥

पदच्छेद— ज्योतिः चक्रम् जलम् तेजः नभस्वान् वियद् एव च ।
वैकारिकाणि इन्द्रयाणि मनः मात्रा गुणाः त्रयः ॥

शब्दार्थ—

ज्योतिः	१.	ज्योति	वैकारिकाणि	७.	वैकारिक अहंकार के कार्य
चक्रम्	२.	मण्डल	इन्द्रियाणि	८.	इन्द्रिय
जलम् तेजः	३.	जल, तेज	मनः	९.	मन
नभस्वान्	४.	पवन	मात्रा	१०.	पञ्चतन्मात्रायें और
वियद्	५.	वियत्	गुणाः	१२.	गुणों को देखा
एव च ।	६.	और	त्रयः ॥	११.	तीनों

श्लोकार्थ—माँ यशोदा ने ज्योति मण्डल, जल तेज, पवन, वियत् और वैकारिक अहंकार के कार्य, इन्द्रिय, मन, पञ्चतन्मात्रायें और तीनों गुणों को देखा ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

एतद् विचित्रं सह जीवकालस्वभावकर्माशयलिङ्गभेदम् ।
सूनोस्तनौ वीक्ष्य विदारितास्ये व्रजं सहात्मानमवाप शङ्काम् ॥३९॥

पदच्छेद— एतत् विचित्रम् सह जीवकाल स्वभाव कर्म आशय लिङ्ग भेदम् ।
सूनोः तनौ वीक्ष्य विदारित आस्ये व्रजम् सह आत्मानम् अवाप शङ्काम् ॥

शब्दार्थ—

एतत्	७. यह	**सूनोः तनौ**	११. अपने पुत्र के थोड़े से
विचित्रम्	८. विचित्र संसार के	**वीक्ष्य**	१४. देखकर वे
सह	४. साथ	**विदारित**	१२. खुले हुये
जीवकाल	१. जीव, काल	**आस्ये**	१३. मुँह में
स्वभावकर्म	२. स्वभाव, कर्म और	**व्रजम् सह**	९. सम्पूर्ण व्रज के साथ
आशय	३. उनकी वासना के	**आत्मानम्**	१०. अपने आप को भी
लिङ्ग	५. शरीर आदि के द्वारा	**अवाप**	१६. पड़ गयीं
भेदम् ।	६. विभिन्न रूपों में दीखने वाला	**शङ्काम् ॥**	१५. शङ्का में

श्लोकार्थ—जीवकाल, स्वभाव, कर्म और उनकी वासना के साथ शरीरादि के द्वारा विभिन्न रूपों में दीखने वाला यह विचित्र संसार के और सम्पूर्ण व्रज के साथ अपने आप को भी अपने पुत्र के थोड़े से खुले हुये मुख में देखकर वे शङ्का में पड़ गईं ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

किं स्वप्न एतदुत देवमाया किं वा मदीयो बत बुद्धिमोहः ।
अथो अमुष्यैव ममार्भकस्य यः कश्चनौत्पत्तिक आत्मयोगः ॥४०॥

पदच्छेद— किम् स्वप्नः एतत् उत देवमाया किम् वा मदीयः बत बुद्धि मोहः ।
अथो अमुष्य एव मम अर्भकस्य यः कश्चन औत्पत्तिकः आत्मयोगः ॥

शब्दार्थ—

किम	१. क्या	**अथो**	९. अथवा
स्वप्नः एतत्	२. यह कोई स्वप्न है	**अमुष्य एव**	११. इस ही
उतदेवमाया	३. अथवा भगवान् की माया है	**मम**	१०. मेरे
किम् वा	५. कहीं	**अर्भकस्य**	१२. बालक के पास
मदीयः	६. मेरी	**यः कश्चन**	१३. कोई
बत	४. सम्भव है	**औत्पत्तिकः**	१४. जन्म जात
बुद्धि	७. बुद्धि में ही तो	**आत्म**	१५. सिद्ध
मोहः ।	८. भ्रम नहीं है	**योगः ॥**	१६. योग

श्लोकार्थ—क्या यह कोई स्वप्न है अथवा भगवान् की माया है। सम्भव है कहीं मेरी बुद्धि में ही तो भ्रम नहीं है। अथवा मेरे इस बालक के पास ही कोई जन्म जात सिद्ध योग है ॥

एकविंशः श्लोकः

अथो यथावन्न वितर्कगोचरं चेतोमनःकर्मवचोभिरञ्जसा ।
यदाश्रयं येन यतः प्रतीयते सुदुर्विभाव्यं प्रणतास्मि तत्पदम् ॥४१॥

पदच्छेद— अथो यथावत् न वितर्क गोचरम् चेतः मनः कर्म वचोभिः अञ्जसा ।
यत् आश्रयम् येन यतः प्रतीयते सुदुर्विभाव्यम् प्रणता अस्मि तत् पदम् ॥

शब्दार्थ—

अथो	४. तथा	यत्	९.	यह विश्व जिसके
यथावत्	३. ठीक-ठीक	आश्रयम्	१०.	आश्रित है
न	८. नहीं होते	येन यतः	११.	जिसकी सत्ता से
वितर्क	६. अनुमान के	प्रतीयते	१२.	इसकी प्रतीति होती है
गोचरम्	७. विषय	सुदुर्विभाव्यम्	१३.	जो अचिन्त्य है
चेतः मनः कर्म	१. जो चित्त, मन, कर्म और	प्रणत	१५.	प्रणाम
वचोभिः	२. वाणी के द्वारा	अस्मि	१६.	करती हूँ
अञ्जसा ।	५. सुगमता से	तत् पदम् ॥	१४.	उनके चरणों में मैं

श्लोकार्थ—जो चित्त, मन, कर्म और वाणी के द्वारा ठीक-ठीक तथा सुगमता से अनुमान के विषय नहीं होते, यह विश्व जिसके आश्रित है, जिनकी सत्ता से इसकी प्रतीति होती है और जो अचिन्त्य हैं उनके चरणों में मैं प्रणाम करती हूँ ॥

द्वाविंशः श्लोकः

अहं ममासौ पतिरेषु मे सुतो व्रजेश्वरस्याखिलवित्तपा सती ।
गोप्यश्च गोपाः सहगोधनाश्च मे यन्माययेत्थं कुमतिः स मे गतिः ॥४२॥

पदच्छेद— अहम् मम असौ पतिः एष मे सुतः व्रजेश्वरस्य अखिल वित्तपा सती ।
गोप्यः च गोपाः सह गोधनाः च मे यत् मायया इत्थम् कुमति सः मे गतिः ॥

शब्दार्थ—

अहम्	१. यह मैं हूँ	गोप्यः	९.	ये गोपियाँ
मम	३. मेरे	च गोपाः	१०.	और गोप
असौ	२. यह	सहगोधनः	११.	गोधन सहित
पतिः	४. पति तथा	च मे	१२.	मेरे अधीन है
एष सुतः	५. यह मेरा पुत्र है मैं	यत् मायया	१३.	जिनकी माया से
व्रजेश्वरस्य	६. व्रज के स्वामी की	इत्थम्	१४.	इस प्रकार की
अखिलवित्तपा	७. समन्त सम्पत्तियों को	कुमतिः	१५.	कुमति ने मुझे घेरा है
सती ।	८. स्वामिनी हूँ	सः मे गति ॥	१६.	वही मेरे एक मात्र आश्रय

श्लोकार्थ—यह मैं हूँ, यह मेरा पति तथा यह मेरा पुत्र है। मैं व्रज के स्वामी की समस्त सम्पत्तियों की स्वामिनी हूँ। ये गोपियाँ और गोप गोधन सहित मेरे अधीन हैं। जिनको माया से इस प्रकार की कुमति ने मुझे घेरा है। वही मेरे एक मात्र आश्रय हैं ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

इत्थं विदिततत्त्वायां गोपिकायां स ईश्वरः ।
वैष्णवीं व्यतनोन्मायां पुत्रस्नेहमयीं विभुः ।।४३।।

पदच्छेद— इत्थम् विदित तत्त्वायाम् गोपिकायाम् सः ईश्वरः ।
वैष्णवीम् व्यतनोत् मायाम् पुत्र स्नेह मयीम् विभुः ।।

शब्दार्थ—

इत्थम्	१.	जब इस प्रकार वे	वैष्णवीम्	१०.	वैष्णवी
विदित	४.	जान गईं तो	व्यतनोत्	१२.	हृदय में संचार कर दिया
तत्त्वायाम्	३.	उनके तत्त्व को	मायाम्	११.	माया का उनके
गोपिकायाम्	२.	यशोदा माता	पुत्र स्नेह	८.	पुत्र स्नेह
सः	५.	उन	मयीम्	९.	मयी
ईश्वरः ।	७.	सर्वेश्वर ने	विभुः ।।	६.	सर्व व्यापक

श्लोकार्थ—जब इस प्रकार वे यशोदा जी उनके तत्त्व को जान गईं तो उन सर्व व्यापक सर्वेश्वर ने पुत्र स्नेहमयी वैष्णवी माया का उनके हृदय में संचार कर दिया ।।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

सद्यो नष्टस्मृतिर्गोपी साऽऽरोप्यारोहमात्मजम् ।
प्रवृद्धस्नेहकलिलहृदयाऽऽसीद् यथा पुरा ।।४४।।

पदच्छेद— सद्यो नष्ट स्मृतिः गोपी सा आरोप्य आत्मजम् ।
प्रवृद्ध स्नेह कलिल हृदया आसीत् यथा पुरा ।।

शब्दार्थ—

सद्यो	४.	तुरन्त	प्रवृद्ध	९.	बढ़े हुये
नष्ट	५.	नष्ट हो गयी	स्नेह	१०.	स्नेह के
स्मृतिः	३.	स्मृति	कलिल	११.	समुद्र से युक्त
गोपी	१.	यशोदा जी को	हृदय	१४.	हृदय वाली
सा	२.	उस घटना की	आसीत्	१५.	हो गयीं
आरोप्य	८.	उठाकर वे	यथा	१३.	समान
आरोहम् ।	७.	गोद में	पुरा ।।	१२.	पहले के
आत्मजम् ।	६.	अपने पुत्र को			

श्लोकार्थ—यशोदा जी को उस घटना की स्मृति तुरन्त नष्ट हो गयी । अपने पुत्र को गोद में उठाकर वे बढ़े हुये स्नेह के समुद्र से युक्त पहले के समान हृदय वाली हो गईं ।।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

त्रय्या चोपनिषद्भिश्च सांख्ययोगैश्च सात्वतैः ।
उपगीयमानमाहात्म्यं हरिं सामन्यतात्मजम् ॥४५॥

पदच्छेद— त्रय्या च उपनिषद्भिः च सांख्ययोगैः च सात्वतैः ।
उपगीयमानमाहात्म्यम् हरिम् सा अमन्यत आत्मजम् ॥

शब्दार्थ—

त्रय्या च	१. सारे वेद और	उपगीयमान	८. गाते हैं ।
उपनिषद्भिः	२. उपनिषद्	माहात्म्यम्	७. जिनके माहात्म्य को
च	३. और	हरिम्	९. उन्हीं भगवान् को
सांख्ययोगैः	४. सांख्य-योग	सा	१०. वे
च	५. और	अमन्यत	१२. मानती थीं
सात्वतैः ।	६. भक्तजन	आत्मजम् ॥	११. अपना पुत्र

श्लोकार्थ—सारे वेद और उपनिषद् और सांख्ययोग और भक्तजन जिनके माहात्म्य को गाते हैं, उन्हीं भगवान् को वे अपना पुत्र मानती थीं ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

नन्दः किमकरोद् ब्रह्मन् श्रेय एवं महोदयम् ।
यशोदा च महाभागा पपौ यस्याः स्तनं हरिः ॥४६॥

पदच्छेद— नन्दः किम् अकरोत् ब्रह्मन् श्रेयः एवम् महोदयम् ।
यशोदा च महाभागा पपौ यस्याः स्तनम् हरिः ॥

शब्दार्थ—

नन्दः	२. नन्द बाबा ने	यशोदा	१०. यशोदा जी ने कौन सी तपस्या की थी
किम्	४. कौन सा	च	८. और
अकरोत्	७. किया था	महाभागा	९. सौभाग्यमयी
ब्रह्मन्	१. हे भगवन् !	पपौ	१४. पान किया
श्रेयः	५. मङ्गलमय	यस्याः	१२. उनके
एवम्	३. ऐसा	स्तनम्	१३. स्तनों का
महोदयम् ।	६. बड़ा साधन	हरिः ॥	११. स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! नन्द बाबा ने ऐसा कौन सा मङ्गलमय बड़ा साधन किया था । और सौभाग्यमयी यशोदा जी ने कौन सी तपस्या की थी जो स्वयं भगवान् श्री कृष्ण ने उनके स्तनों का पान किया था ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

पितरौ नान्वविन्देतां कृष्णोदारार्भकेहितम् ।
गायन्त्यद्यापि कवयो यल्लोकशमलापहम् ॥४७॥

पदच्छेद— पितरौ न अन्व विन्देताम् कृष्ण उदार अर्भक ईहितम् ।
गायन्ति अद्य अपि कवयः यत् लोक शमल अपहम् ॥

शब्दार्थ—

पितरौ	५.	जो लीलायें माता पिता को	गायन्ति	१३.	गायन करते हैं
न	८.	नहीं मिली	अद्य	११.	आज
अन्व	६.	देखने तक	अपि	१२.	भी
विन्देताम्	७.	को भी	कवयः	१०.	कविजन
कृष्ण	३.	श्री कृष्ण द्वारा	यत्	९.	जिनका
उदार	१.	उदार	लोक	१४.	जिनसे लोगों के
अर्भक	२.	बालक	शमल	१५.	कलुष
ईहितम् ।	४.	की गयी	अपहम् ॥	१६.	धुल जाते हैं

श्लोकार्थ—उदार बालक श्री कृष्ण द्वारा की गयी जो लीलायें माता-पिता को देखने तक को भी नहीं मिलीं। जिनका कविजन आज भी गायन करते हैं। जिनसे लोगों के कलुष धुल जाते हैं ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

द्रोणो वसूनां प्रवरो धरया सह भार्यया ।
करिष्यमाण आदेशान् ब्रह्मणस्तमुवाच ह ॥४८॥

पदच्छेद— द्रोणः वसूनाम् प्रवरः धरया सह भार्यया ।
करिष्यमाणः आदेशान् ब्रह्मणः तम् उवाच ह ॥

शब्दार्थ—

द्रोणः	४.	द्रोण ने	करिष्यमाणः	१०.	पालन करते हुए
वसूनाम्	२.	वसुओं में	आदेशान्	९.	आदेशों का
प्रवरः	३.	श्रेष्ठ	ब्रह्मणः	८.	ब्रह्मा जी के
धरया	६.	धरा के	तम्	११.	उनसे
सह	७.	साथ	उवाच	१२.	कहा
भार्यया ।	५.	अपनी पत्नी	ह ॥	१.	निश्चय ही

श्लोकार्थ—निश्चय ही वसुओं में श्रेष्ठ द्रोण ने अपनी पत्नी धरा के साथ ब्रह्मा जी के आदेशों का पालन करते हुए उनसे कहा ॥

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

जातयोनौं महादेवे भुवि विश्वेश्वरे हरौ ।
भक्तिः स्यात् परमा लोके यथाञ्जो दुर्गतिं तरेत् ॥४९॥

पदच्छेद— जातयोनौं महादेवे भुवि विश्वेश्वरे हरौ ।
भक्तिः स्यात् परमा लोके यथा अञ्जः दुर्गतिम् तरेत् ॥

शब्दार्थ—

जातयोनौं	२. जन्म लेवें	स्यात्	८. होवे
महादेवे	४. भगवान्	परमा	६. हमारी अनन्य
भुवि	१. जब हम पृथ्वी पर	लोके	९. संसार में लोग
विश्वेश्वरे	३. तब जगदीश्वर	यथा अञ्जः	१०. जिससे सरलता से
हरौ ।	५. श्रीकृष्ण में	दुर्गतिम्	११. दुर्गतियों को
भक्तिः	७. भक्ति	तरेत् ॥	१२. पार कर जाते हैं

श्लोकार्थ—जब हम पृथ्वी पर जन्म लेवें तब जगदीश्वर भगवान् श्रीकृष्ण में हमारी अनन्य भक्ति होवे । जिससे संसार में लोग सरलता से दुर्गतियों को पार कर जाते हैं ॥

पञ्चाशः श्लोकः

अस्त्वित्युक्तः स भगवान् व्रजे द्रोणो महायशाः ।
जज्ञे नन्द इति ख्यातो यशोदा सा धराभवत् ॥५०॥

पदच्छेद— अस्तु इति उक्तः सः भगवान् व्रजे द्रोणः महायशाः ।
जज्ञे नन्दः इति ख्यातः यशोदा सा धरा अभवत् ॥

शब्दार्थ—

अस्तु	१. ऐसा ही होवे	**जज्ञे**	८. पैदा किया
इति उक्तः	२. इस प्रकार कहकर	**नन्दः**	९. वे नन्द
सः	३. उन	**इति**	१०. इस नाम से
भगवान्	४. भगवान् ने	**ख्यातः**	११. प्रसिद्ध हुये
व्रजे	७. व्रज में	**यशोदा**	१३. यशोदा
द्रोणः	६. द्रोण को	**सा धरा**	१२. उनकी पत्नी धरा
महायशाः ।	५. परमयशस्वी	**अभवत् ॥**	१४. हुई

श्लोकार्थ—ऐसा ही होवे इस प्रकार कहकर उन भगवान् ने परम यशस्वी द्रोण को व्रज में पैदा किया । वे नन्द इस नाम से प्रसिद्ध हुये । उनकी पत्नी धरा यशोदा हुई ॥

एकपञ्चाशः श्लोकः

ततो भक्तिर्भगवति पुत्रीभूते जनार्दने ।
दम्पत्योर्नितरामासीद् गोपगोपीषु भारत ॥५१॥

पदच्छेद— ततः भक्तिः भगवति पुत्री भूते जनार्दने ।
दम्पत्योः नितराम् आसीत् गोप गोपीषु भारत ॥

शब्दार्थ—

ततः	२.	तब	दम्पत्योः	६.	पति-पत्नी
भक्तिः	१०.	प्रीति	नितराम्	९.	अत्यधिक
भगवति	८.	भगवान् में	आसीत्	११.	हुई
पुत्री	४.	पुत्र	गोप	७.	नन्द और
भूते	५.	होने पर उनमें	गोपीषु	८.	यशोदा की
जनार्दने ।	३.	भगवान्	भारत ॥	१.	हे परीक्षित्

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! तब भगवान् पुत्र होने पर उनमें पति पत्नी नन्द और यशोदा की अत्यधिक प्रीति हुई ॥

द्वापञ्चाशः श्लोकः

कृष्णो ब्रह्मण आदेशं सत्यं कर्तुं व्रजे विभुः ।
सहरामो वसंश्चक्रे तेषां प्रीतिं स्वलीलया ॥५२॥

पदच्छेद— कृष्णः ब्रह्मणः आदेशम् सत्यम् कर्तुम् व्रजे विभुः ।
सहरामः वसन् चक्रे तेषाम् प्रीतिम् स्व लीलया ॥

शब्दार्थ—

कृष्णः	६.	श्रीकृष्ण	सहरामः	७.	बलराम जी के साथ
ब्रह्मणः	१.	ब्रह्मा जी की	वसन्	९.	रहकर
आदेशम	२.	बात को	चक्रे	१४.	करने लगे
सत्यम्	३.	सत्य	तेषाम्	१०.	उन्हें
कर्तुम्	४.	करने के लिए	प्रीतिम्	१३.	आनन्दित
व्रजे	८.	व्रज में	स्व	११.	अपनी
विभुः ।	५.	भगवान्	लीलया ॥	१२.	लीला से

श्लोकार्थ— ब्रह्मा जी की बात सत्य करने के लिये भगवान् श्रीकृष्ण बलराम जी के साथ व्रज में रहकर उन्हें अपनी लीला से आनन्दित करने लगे ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
विश्वरूपदर्शने अष्टमः अध्यायः ॥८॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

नवमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एकदा गृहदासीषु यशोदा नन्दगेहिनी ।
कर्मान्तरनियुक्तासु निर्ममन्थ स्वयं दधि ॥१॥

पदच्छेद— एकदा गृह दासीषु यशोदा नन्द गेहिनी ।
कर्म अन्तर नियुक्तासु निर्ममन्थ स्वयम् दधि ॥

शब्दार्थ—

एकदा	१.	एक बार	कर्म	८.	कामों में
गृह	५.	घर को	अन्तर	७.	दूसरे
दासीषु	६.	दासियों को तो	नियुक्तासु	९.	लगा दिया और

त्रयोविंशः श्लोकः

जगतुः सर्वभूतानां मनःश्रवणमङ्गलम् ।
तौ कल्पयन्तौ युगपत् स्वरमण्डलमूर्च्छितम् ॥२३॥

पदच्छेद— जगतुः सर्व भूतानाम् मनः श्रवण मङ्गलम् ।
तौ कल्पयन्तौ युगपत् स्वर मण्डल मूर्च्छितम् ॥

शब्दार्थ—

जगतुः	७.	अलापने लगे	तौ	१.	श्रीकृष्ण और बलराम ने
सर्व	८.	वह समस्त	कल्पयन्तौ	६.	राग की कल्पना करते हुए
भूतानाम्	९.	प्राणियों के	युगपत्	२.	एक साथ मिलकर
मनः	१०.	मन और	स्वर	३.	स्वरों के
श्रवण	११.	कानों को	मण्डल	४.	समूह और
मङ्गलम् ।	१२.	आनन्द से भर देने वाला था	मूर्च्छितम् ॥	५.	मूर्च्छनाओं से युक्त

श्लोकार्थ— श्रीकृष्ण और बलराम एक साथ मिलकर स्वरों के समूह और मूर्च्छनाओं से युक्त राग की कल्पना करते हुए अलापने लगे । वह राग जगत् के समस्त प्राणियों के मन और कानों को आनन्द से भर देने वाला था ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

गोप्यस्तद्गीतमाकर्ण्य मूर्च्छिता नाविदन् नृप ।
स्रंसद्दुकूलमात्मानं स्रस्तकेशस्रजं ततः ॥२४॥

पदच्छेद— गोप्यः तत् गीतम् आकर्ण्य मूर्च्छिताः न अविदन् नृप ।
स्रंसद् दुकूलम् आत्मानम् स्रस्तकेश स्रजम् ततः ॥

शब्दार्थ—

गोप्यः	६.	गोपियाँ	स्रंसद्	८.	उन्हें खिसकते हुये
तत्	३.	उनका	दुकूलम्	९.	वस्त्रों
गीतम्	४.	यह गान	आत्मानम्	१३.	स्वयं अपना भी
आकर्ण्य	५.	सुनकर	स्रस्त	११.	खिसकते हुये
मूर्च्छिताः	७.	मोहित हो गईं	केश	१०.	चोटियों से
न अविदन्	१४.	ध्यान नहीं रहा	स्रजम्	१२.	पुष्पों तथा
नृप ।	१.	हे परीक्षित् !	ततः ॥	२.	तब

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! तब उनका यह गान सुन कर गोपियाँ मोहित हो गयीं । उन्हें खिसकते हुये वस्त्रों और चोटियों से गिरते हुये पुष्पों तथा स्वयं अपना भी ध्यान नहीं रहा ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

एवं विक्रीडतोः स्वैरं गायतोः सम्प्रमत्तवत् ।
शङ्खचूड इति ख्यातो धनदानुचरोऽभ्यगात् ॥२५॥

पदच्छेद— एवम् विक्रीडतोः स्वैरम् गायतोः सम्प्रमत्तवत् ।
शंखचूड इति ख्यातः धनद अनुचरः अभ्यगात् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	दोनों भाई इस प्रकार	शंखचूड	७.	शङ्खचूड
विक्रीडतोः	३.	विहार कर रहे थे और	इति	८.	नाम का
स्वैरम्	२.	स्वच्छन्द	ख्यातः	९.	विख्यात
गायतोः	६.	गा रहे थे । उसी समय	धनद	१०.	कुबेर का
सम्प्रमत्त	४.	उन्मत्त के	अनुचरः	११.	अनुचर
वत् ।	५.	समान	अभ्यगात् ॥	१२.	वहाँ पर आया

श्लोकार्थ—दोनों भाई इस प्रकार स्वच्छन्द विहार कर रहे थे और उन्मत्त के समान गा रहे थे । उसी समय शङ्खचूड नाम का विख्यात कुबेर का अनुचर वहाँ पर आया ॥

षड्विंशः श्लोकः

तयोर्निरीक्षतो राजंस्तन्नाथं प्रमदाजनम् ।
क्रोशन्तं कालयामास दिश्युदीच्यामशङ्कितः ॥२६॥

पदच्छेद— तयोः निरीक्षतोः राजन् तत् नाथम् प्रमदाजनम् ।
क्रोशन्तम् कालयामास दिशि उदीच्याम् शङ्कितः ॥

शब्दार्थ—

तयोः	२.	दोनों भाइयों के	क्रोशन्तम्	५.	रोती हुई
निरीक्षतोः	३.	देखते-देखते	कालयामास	१०.	भाग चला
राजन्	१.	हे परीक्षित् !	दिशि	९.	दिशा की ओर
तत्नाथम्	४.	श्रीकृष्ण जिनके स्वामी हैं	उदीच्याम्	८.	उत्तर
प्रमदाजनम् ।	६.	स्त्री जनों को लेकर वह उन	अशङ्कितः ॥	७.	निडर होकर

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! दोनों भाइयों के देखते-देखते श्री कृष्ण जिनके स्वामी हैं, उन रोती हुई स्त्रीजनों को लेकर वह निडर होकर उत्तर दिशा की ओर भाग चला ॥

सप्तविंशः श्लोकः

क्रोशन्तं कृष्ण रामेति विलोक्य स्वपरिग्रहम् ।
यथा गा दस्युना ग्रस्ता भ्रातरावन्वधावताम् ॥२७॥

पदच्छेद— क्रोशन्तम् कृष्ण रामेति विलोक्य स्व परिग्रहम् ।
यथा गाः दस्युना ग्रस्ताः भ्रातरौ अन्वधावताम् ॥

शब्दार्थ—

क्रोशन्तम्	३.	रोती हुई	यथा	९.	समान
कृष्ण	१.	हा कृष्ण !	गाः	८.	गायों के
रामेति	२.	हा बलराम ! इस प्रकार	दस्युना	६.	डाकू के द्वारा
विलोक्य	१०.	देखकर	ग्रस्ताः	७.	पकड़ी हुई
स्व	४.	अपनी	भ्रातरौ	११.	वे दोनों भाई उसकी ओर
परिग्रहम् ।	५.	प्रेयसियों को	अन्वधावताम् ॥	१२.	दौड़ पड़े ।

श्लोकार्थ—हा कृष्ण ! हा बलराम ! इस प्रकार रोती हुई अपनी प्रेयसियों को डाकू के द्वारा पकड़ी हुई गायों के समान देखकर वे दोनों भाई उसकी ओर दौड़ पड़े ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

मा भैष्टेत्यभयारावौ शालहस्तौ तरस्विनौ ।
आसेदतुस्तं तरसा त्वरितं गुह्यकाधमम् ॥२८॥

पदच्छेद— मा भैष्टेति अभय आरावौ शालहस्तौ तरस्विनौ ।
आसेदतुः तम् तरसा त्वरितम् गुह्यक अधमम् ॥

शब्दार्थ—

मा	१.	मत	आसेदतुः	१२.	जा पहुँचे
भैष्टेति	२.	डरो-इस प्रकार	तम्	९.	उस
अभय	३.	अभय	तरसा	७.	शीघ्रतापूर्वक
आरावौ	४.	वाणी कहते हुये ये	त्वरितम्	८.	तत्काल
शालहस्तौ	५.	हाथ में शालका वृक्ष लेकर	गुह्यक	११.	यक्ष के पास
तरस्विनौ ।	६.	बड़े वेग से	अधमम् ॥	१०.	नीच

श्लोकार्थ- मत डरो-इस प्रकार अभय वाणी कहते हुये वे हाथ में शालका वृक्ष लेकर बड़े वेग से शीघ्रता पूर्वक तत्काल उस नीच यक्ष के पास जा पहुँचे ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

स वीक्ष्य तावनुप्राप्तौ कालमृत्यू इवोद्विजन् ।

विसृज्य स्त्रीजनं मूढः प्राद्रवज्जीवितेच्छया ॥२९॥

पदच्छेद— सः वीक्ष्य तौ अनुप्राप्तौ काल मृत्यू इव उद्विजन् ।
विसृज्य स्त्री जनम् मूढः प्राद्रवत् जीवित इच्छया ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	वह यक्ष	विसृज्य	११.	वहीं छोड़कर
वीक्ष्य	६.	देखकर	स्त्री	९.	स्त्री
तौ	४.	श्रीकृष्ण और बलराम को	जनम्	१०.	जनों को
अनुप्राप्तौ	५.	पीछे आते हुये	मूढः	८.	वह मूर्ख
काल	२.	काल और	प्राद्रवत्	१४.	भाग खड़ा हुआ
मृत्युइव	३.	मृत्यु के समान	जीवित	१२.	अपने प्राण बचाने
उद्विजन् ।	७.	घबड़ा गया और	इच्छया ॥	१३.	की इच्छा से

श्लोकार्थ—वह यक्ष काल और मृत्यु के समान श्रीकृष्ण और बलराम को पीछे आते हुये देखकर घबड़ा गया । और वह मूर्ख स्त्रीजनों को वहीं छोड़कर अपने प्राण बचाने के लिये भाग खड़ा हुआ ॥

त्रिंशः श्लोकः

तमन्वधावद् गोविन्दो यत्र यत्र स धावति ।

जिहीर्षुस्तच्छिरोरत्नं तस्थौ रक्षन् स्त्रियो बलः ॥३०॥

पदच्छेद— तम् अन्वधावत् गोविन्दः यत्र-यत्र सः धावति ।
जिहीर्षुः तत् शिरः रत्नम् तस्थौ रक्षन् स्त्रियः बलः ॥

शब्दार्थ—

तम्	८.	उनके	जिहीर्षुः	१२.	निकालना चाहते थे
अन्वधावत्	९.	पीछे दौड़ने लगे	तत् शिरः	१०.	वे उसके सिर को
गोविन्दः	४.	भगवान् श्रीकृष्ण	रत्नम्	११.	चूड़ामणि
यत्र-यत्र	५.	जहाँ-जहाँ	तस्थौ	३.	वहीं नियुक्त करके
सः	६.	वह यक्ष	रक्षन् स्त्रियः	१.	स्त्रियों की रक्षा के लिये
धावति ।	७.	भाग कर गया	बलः ॥	२.	बलराम जी को

श्लोकार्थ—स्त्रियों की रक्षा के लिये बलराम जी को वहीं नियुक्त करके भगवान् श्रीकृष्ण जहाँ-जहाँ वह यक्ष भाग कर गया उसके पीछे दौड़ने लगे । वे उसके सिर की चूड़ामणि निकालना चाहते थे ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

अविदूर इवाभ्येत्य शिरस्तस्य दुरात्मनः।
जहार मुष्टिनैवाङ्ग सहचूडामणिं विभुः ॥३१॥

पदच्छेद— अविदूरे इव अभ्येत्य शिरः तस्य दुरात्मनः।
जहार मुष्टिना एव अङ्ग सह चूड़ामणिम् विभुः ॥

शब्दार्थ—

अविदूरे	१.	कुछ दूर	जहार	१२.	अलग कर दिया
इव	२.	ही	मुष्टिना	८.	एक घूसा जमाया। और
अभ्येत्य	३.	जाने पर	एव अङ्ग	११.	उसका सिर भी धड़ से
शिरः	७.	सिर पर	सह	१०.	साथ
तस्य	५.	उस	चूड़ामणिम्	९.	चूडामणि के
दुरात्मनः।	६.	दुष्ट के	विभुः ॥	४.	भगवान् श्रीकृष्ण ने

श्लोकार्थ—कुछ ही दूर जाने पर भगवान् श्रीकृष्ण ने उस दुष्ट के सिर पर एक घूंसा जमाया। और चूडामणि के साथ ही उसका सिर ही धड़ से अलग कर दिया ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

शङ्खचूडं निहत्यैवं मणिमादाय भास्वरम्।
अग्रजायाददात् प्रीत्या पश्यन्तीनां च योषिताम् ॥३२॥

पदच्छेद— शङ्खचूडम् निहत्य एवम् मणिम् आदाय भास्वरम्।
अग्रजाय अददात् प्रीत्या पश्यन्तीनाम् च योषिताम् ॥

शब्दार्थ—

शङ्खचूडम्	२.	शङ्खचूड का	अग्रजाय	११.	वह मणि बलराम जी को
निहत्य	३.	वध करके	अददात्	१२.	दे दी
एवम्	१.	इस प्रकार श्रीकृष्ण ने	प्रीत्या	१०.	बड़े प्रेम से
मणिम्	६.	मणि	पश्यन्तीनाम्	९.	देखते-देखते
आदाय	७.	लेकर	च	४.	और उससे
भास्वरम्।	५.	चमकीली	योषिताम् ॥	८.	गोपियों के

श्लोकार्थ—इस प्रकार श्रीकृष्ण ने शङ्खचूड का बध करके और उससे चमकीली मणि लेकर गोपियों के देखते-देखते बड़े प्रेम से वह मणि बलराम जी को दे दी ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे रासक्रीडायां शङ्खचूडवधो नाम चतुस्त्रिंशः अध्यायः ॥३४॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

पञ्चत्रिंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—गोप्यः कृष्णे वनं याते तमनुद्रुतचेतसः ।
कृष्णलीलाः प्रगायन्त्यो निन्युर्दुःखेन वासरान् ॥१॥

पदच्छेद— गोप्यः कृष्णे वनम् याते तम् अनुद्रुत चेतसः ।
कृष्ण लीलाः प्रगायन्त्यः निन्युः दुःखेन वासरान् ॥

शब्दार्थ—

गोप्यः	७.	गोपियाँ	कृष्ण	८.	श्रीकृष्ण की
कृष्णे	१.	श्रीकृष्ण भगवान् के	लीलाः	९.	लीलाओं का
वनम्	२.	वन में	प्रगायन्त्यः	१०.	गायन करती हुईं
याते	३.	चले जाने पर	निन्युः	१३.	बिताती थीं
तम्	४.	उनके	दुःखेन	११.	बड़े कष्ट से
अनुद्रुत	५.	पीछे गये हुये	वासरान् ॥	१२.	दिन
चेतसः ।	६.	चित्तवाली			

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण भगवान् के वन में चले जाने पर उनके पीछे गये हुये चित्तवाली गोपियाँ श्रीकृष्ण की लीलाओं का गायन करती हुईं बड़े कष्ट से दिन बिताती थीं ॥

द्वितीयः श्लोकः

गोप्य ऊचुः—वामबाहुकृतवामकपोलो वल्गितभ्रुरधरार्पितवेणुम् ।
कोमलाङ्गुलिभिराश्रितमार्गं गोप्य ईरयति यत्र मुकुन्दः ॥२॥

पदच्छेद— वाम बाहु कृत वाम कपोलः वल्गितभ्रुः अधर अर्पित वेणुम् ।
कोमल अङ्गुलिभिः आश्रित मार्गम् गोप्यः ईरयति यत्र मुकुन्दः ॥

शब्दार्थ—

वाम बाहु	४.	बायीं बाँह की ओर	कोमल	१०.	सुकुमार
कृत	५.	झुका करके	अङ्गुलिभिः	११.	अङ्गुलियों को
वाम कपोलः	३.	अपने बाँये कपोल को	आश्रित	१३.	रख कर
वल्गितभ्रुः	६.	भौहें चलाते हुये	मार्गम्	१२.	छेदों पर
अधर	८.	अधरों से	गोप्यः	१.	हे गोपियो !
अर्पित	९.	लगाते हैं (तथा अपनी)	ईरयति	१४.	मधुर तान छेड़ते हैं
वेणुम् ।	७.	बाँसुरी को	यत्र मुकुन्दः ॥	२.	जहाँ श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ—हे गोपियो ! जहाँ श्रीकृष्ण अपने बाँयें कपोल को बायीं बाँह की ओर झुका करके भौंहें चलाते हुये बाँसुरी को अधरों से लगाते हैं । तथा अपनी सुकुमार अंगुलियों को छेदों पर रख कर मधुर तान छेड़ते हैं ॥

तृतीयः श्लोकः

व्योमयानवनिताः सह सिद्धैर्विस्मितास्तदुपधार्य सलज्जाः ।
काममार्गणसमर्पितचित्ताः कश्मलं ययुरपस्मृतनीव्यः ॥३॥

पदच्छेद— व्योमयान वनिताः सह सिद्धैः विस्मिताः तत् उपधार्य सलज्जाः ।
काम मार्गण समर्पित चित्ताः कश्मलम् ययुः अपस्मृत नीव्यः ॥

शब्दार्थ—

व्योमयान	३.	विमानों पर आई हुई	काम	९.	काम के
वनिताः	४.	सुन्दरियाँ	मार्गण	१०.	बाणों से
सह	२.	साथ	समर्पित	११.	बिंधे हुये
सिद्धैः	१.	वहाँ सिद्ध गणों के	चित्ताः	१२.	चित्त वाली (होकर)
विस्मिताः	७.	आश्चर्य चकित (और)	कश्मलम्	१३.	अचेत
तत्	५.	उस बात को	ययुः	१४.	हो जाती हैं
उपधार्य	६.	सुनकर	अपस्मृत	१६.	सुधि नहीं रहती है
सलज्जाः ।	८.	लज्जित (तथा)	नीव्यः ॥	१५.	उन्हें नीवी खुलने की भी

श्लोकार्थ—वहाँ सिद्ध गणों के साथ विमानों पर आई सुन्दरियाँ आश्चर्यचकित और लज्जित तथा काम के बाणों से बिंधे हुये चित्त वाली होकर अचेत हो जाती हैं । उन्हें नीवी खुलने की भी सुधि नहीं रहती है ॥

चतुर्थः श्लोकः

हन्त चित्रमबलाः शृणुतेदं हारहास उरसि स्थिरविद्युत् ।
नन्दसूनुरयमार्तजनानां नर्मदो यर्हि कूजितवेणुः ॥४॥

पदच्छेद— हन्त चित्रम् अबलाः शृणुत इदम् हार हासः उरसि स्थिर विद्युत् ।
नन्द सूनुः अयम् आर्त जनानाम् नर्मदः यर्हि कूजित वेणुः ॥

शब्दार्थ—

हन्त	१.	अहो	नन्द	१२.	नन्द जी के
चित्रम्	४.	आश्चर्य की बात	सूनुः	१३.	पुत्र
अबलाः	२.	गोपियो ! तुम	अयम्	११.	ये
शृणुत	५.	सुनो	आर्तजनानाम्	९.	दुःखी जनों को
इदम्	३.	यह	नर्मदः	१०.	सुख देने वाले
हारहासः	७.	हार की शोभा	यर्हि	१४.	जब
उरसि	६.	उनके वक्षः स्थल पर	कूजित	१६.	बजाते हैं
स्थिर विद्युत् ।	८.	अचल बिजली जैसी है	वेणुः ॥	१५.	बाँसुरी

श्लोकार्थ—अहो ! गोपियो ! तुम यह आश्चर्य की बात सुनो । उनके वक्षः स्थल पर हार की शोभा अचल बिजली जैसी है । ये दुःखी जनों को सुख देने वाले नन्द जी के पुत्र जब बाँसुरी बजाते हैं ॥

पञ्चमः श्लोकः

वृन्दशो व्रजवृषा मृगगावो वेणुवाद्यहृतचेतस आरात् ।

दन्तदष्टकवला धृतकर्णा निद्रिता लिखितचित्रमिवासन् ॥५॥

पदच्छेद— वृन्दशः व्रजवृषाः मृगगावः वेणुवाद्य हृत चेतसः आरात् ।
दन्त दष्ट कवलाः धृत कर्णाः निद्रिताः लिखित चित्रम् इव आसन् ॥

शब्दार्थ—

वृन्दशः	४.	झुन्ड के झुन्ड	दन्तदष्ट	८.	दाँतों से काटे गये
व्रज	३.	व्रज के	कवलाः	९.	घास का ग्रास लिये
वृषाः	५.	बैल	धृतकर्णाः	१०.	कानों को खड़े किये हुये
मृगगावः	६.	हरिण-गाय	निद्रिताः	११.	सोये हुये से
वेणु वाद्य	१.	तब बांसुरी की ध्वनि से	लिखित	१२.	दीवार पर लिखे हुये
हृतचेतसः	२.	चुराये गये चित्त वाले	चित्रम् इव	१३.	चित्र के समान
आरात् ।	७.	पास में (आकर)	आसन् ॥	१४.	स्थिर खड़े हो जाते थे

श्लोकार्थ—तब बांसुरी की ध्वनि से चुराये गये चित्त वाले व्रज के झुन्ड के झुन्ड बैल, हिरण, गाय पास में आकर दाँतों से काटे गये घास का ग्रास लिये, कानों को खड़े किये हुये, सोये हुये से दीवार पर लिखे हुये के समान स्थिर खड़े हो जाते थे ॥

षष्ठः श्लोकः

बर्हिणस्तबकधातुपलाशैर्बद्धमल्लपरिबर्हविडम्बः ।

कर्हिचित् सबल आलि स गोपैर्गाः समाह्वयति यत्र मुकुन्दः ॥६॥

पदच्छेद— बर्हिणस्तबकधातु पलाशैः बद्ध मल्ल परिबर्ह विडम्बः ।
कर्हिचित् सबलः आलि सः गोपैः गाः समाह्वयति यत्र मुकुन्दः ॥

शब्दार्थ—

बर्हिणः	४.	मोर पंख	कर्हिचित्	३.	कभी
स्तबक	५.	फूल के गुच्छे	सबलः	१३.	बलराम (और)
धातु	६.	धातु (और)	आलि	१.	हे सखि !
पलाशैः	७.	पल्लवों को	सः	१२.	वे
बद्ध	८.	बाँधे हुये	गोपैः	१४.	गोपों के साथ
मल्ल	९.	पहलवान का सा	गाः	१५.	गौओं को
परिबर्ह	१०.	वेष	समाह्वयति	१६.	पुकारते हैं
विडम्बः ।	११.	बनाकर	यत्र मुकुन्दः ॥	२.	जहाँ श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ—हे सखि ! जहाँ श्रीकृष्ण कभी मोर पंख, फूल के गुच्छे, धातु और पल्लवों को बाँधे हुये पहलवान का सा वेष बनाकर वे बलराम और गोपों के साथ गौओं को पुकराते हैं ॥

सप्तमः श्लोकः

तर्हि भग्नगतयः सरितो वै तत्पदाम्बुजरजोऽनिलनीतम् ।
स्पृहयतीर्वयमिवाबहुपुण्याः प्रेमवेपितभुजाः स्तिमितापः ॥७॥

पदच्छेद— तर्हि भग्न गतयः सरितः वै तत् पद अम्बुज रजः अनिल नीतम् ।
स्पृहयतीः वयम् इव अबहु पुण्याः प्रेम वेपित भुजाः स्तिमित आपः ॥

शब्दार्थ—

तर्हि	१.	उस समय	स्पृहयतीः	१२.	कामना करती हैं पर
भग्न	४.	रुक जाती है (वे)	वयम्	१६.	हमारी
गतयः	३.	गति	इव	१७.	तरह
सरितः वै	२.	नदियों की	अबहु पुण्याः	१८.	अल्प पुण्य वाली हैं
तत् पद	५.	उन श्रीकृष्ण के चरण	प्रेम	१३.	प्रेम के कारण
अम्बुज	६.	कमल की	वेपित	१४.	काँपती हुई
रजः	७.	धूलि को	भुजाः	१५.	भुजाओं वाली
अनिल	८.	वायु द्वारा	स्तिमित	११.	रुके हुये
नीतम् ।	९.	अपने पास पहुँचाने की	आपः ॥	१२.	जलवाली

श्लोकार्थ—उस समय नदियों की गति रुक जाती हैं । वे उन श्रीकृष्ण के चरण कमल की धूलि को वायु द्वारा अपने पास पहुँचाने की कामना करती है । रुके हुये जलवाली प्रेम के कारण काँपती हुई भुजाओं वाली हमारी तरह अल्प पुण्य वाली हैं ॥

अष्टमः श्लोकः

अनुचरैः समनुवर्णितवीर्य आदिपूरुष इवाचलभूतिः ।
वनचरो गिरितटेषु चरन्तीर्वेणुनाऽऽह्वयति गाः स यदा हि ॥८॥

पदच्छेद— अनुचरैः समनु वर्णित वीर्य आदि पुरुषः इव अचल भूतिः ।
वन चरः गिरि तटेषु चरन्तीः वेणुना आह्वयति गाः सः यदा हि ॥

शब्दार्थ—

अनुचरैः	१.	अनुचरों द्वारा	वनचरः	९.	वन विहारी
समनु	३.	ज ते हुये	गिरि	११.	पर्वत की
वर्णित	२.	गायन किये	तटेषु	१२.	घाटी में
वीर्यः	४.	पराक्रम वाले (तथा)	चरन्तीः	१३.	चरती हुई
आदि पूरुषः	५.	आदि पुरुष के	वेणुना	१५.	बाँसुरी में
इव	६.	समान	आह्वयति	१६.	पुकारते हैं
अचल	७.	निश्चल	गाः	१४.	गौओं को
भूतिः ।	८.	ऐश्वर्य वाले	सः यदाहि ॥	१०.	वे श्रीकृष्ण जब

श्लोकार्थ—अनुचरों द्वारा गायन किये जाते हुये पराक्रम वाले तथा आदि पुरुष के समान निश्चल ऐश्वर्य वाले वनविहारी वे श्रीकृष्ण जब पर्वत की घाटी में चरती हुई गौओं को बाँसुरी से पुकारते हैं ॥

नवमः श्लोकः

वनलतास्तरव आत्मनि विष्णुं व्यञ्जयन्त्य इव पुष्पफलाढ्याः ।
प्रणतभारविटपा मधुधाराः प्रेमहृष्टतनवः ससृजुः स्म ॥९॥

पदच्छेद— वनलताः तरवः आत्मनि विष्णुम् व्यञ्जयन्त्यः इव पुष्प फलआढ्याः ।
प्रणत भार विटपाः मधुधाराः प्रेमहृष्ट तनवः ससृजुः स्म ॥

शब्दार्थ—

वनलताः	४.	वन की लतायें	प्रणत	१०.	झुकी हुई
तरवः	३.	वृक्ष (तथा)	भार	९.	भार से
आत्मनि	५.	अपने भीतर	विटपाः	११.	डालियों वाली (तथा)
विष्णुम्	६.	विष्णु की	मधुधाराः	१४.	मधु की धारायें
व्यञ्जयन्त्यः	७.	अभिव्यक्ति करती हुई के	प्रेमहृष्टाः	१२.	प्रेम से पुलकित
इव	८.	समान	तनवः	१३.	शरीर वाली होकर
पुष्प	१.	उस समय पुष्पों और	ससृजुः स्म ॥	१५.	उडेलने लगती हैं
फलाढ्याः ।	२.	फलों से लदे हुये			

श्लोकार्थ—उस समय पुष्पों और फलों से लदे हुये वृक्ष तथा वन की लतायें अपने भीतर विष्णु की अभिव्यक्ति करती हुई के समान भार से झुकी हुई डालियों वाली तथा प्रेम से पुलकित शरीर वाली होकर मधु की धारारें उडेलने लगती हैं ॥

दशमः श्लोकः

दर्शनीयतिलको वनमालादिव्यगन्धतुलसीमधुमत्तैः ।
अलिकुलैरलघुगीतमभीष्टमाद्रियन् यर्हि सन्धितवेणुः ॥१०॥

पदच्छेद— दर्शनीय तिलकः वनमाला दिव्य गन्ध तुलसी मधु मत्तैः ।
अलिकुलैः लघु गीतम् अभीष्टम् आद्रियन् यर्हि सन्धित वेणुः ॥

शब्दार्थ—

दर्शनीय	१.	देखने योग्य	अलिकुलैः	९.	भौंरों के झुन्डों के
तिलकः	२.	तिलक वाले (श्रीकृष्ण)	लघु	१०.	उच्चस्वर के
वनमाला	३.	वनमाला की	गीतम्	१२.	गुञ्जार का
दिव्य	४.	दिव्य	अभीष्टम्	११.	अभीष्ट
गन्ध	५.	सुगन्ध (तथा)	आद्रियन्	१३.	आदर करते हुये
तुलसी	६.	तुलसी के	यर्हि	१४.	जब
मधु	७.	मधु से	सन्धित	१६.	बजाते हैं
मत्तैः ।	८.	मतवाले	वेणुः ॥	१५.	बाँसुरी

श्लोकार्थ—देखने योग्य तिलक वाले श्रीकृष्ण वनमाला की दिव्य सुगन्ध तथा तुलसी के मधु से मतवाले भौंरों के झुन्डों के उच्चस्वर के अभीष्ट गुञ्जार का आदर करते हुये जब बाँसुरी बजाते हैं ॥

एकादशः श्लोकः

सरसि सारहंसविहङ्गाश्चारुगीतहृतचेतस एत्य ।
हरिमुपासत ते यतचित्ता हन्त मीलितदृशो धृतमौनाः ॥११॥

पदच्छेद— सरसि सारस हंस विहङ्गाः चारु गीत हृत चेतसः एत्य ।
हरिम् उपासते ते यत चित्ताः हन्त मीलित दृशः धृत मौनाः ॥

शब्दार्थ—

सरसि	८. सरोवर से	हरिम्	१५. श्रीकृष्ण की
सारस	५. सारस	उपासते	१६ उपासना करने लगते हैं
हंस	६. हंस (आदि)	ते	१०. और वे
विहङ्गाः	७. पक्षी	यतचित्ताः	११. एकाग्रमन से
चारुगीत	२. सुन्दर गीत से	हन्त	१. आश्चर्य की बात है कि
हृत	३. हरे हुये	मीलित	१३. मूंदकर
चेतसः	४. चित्त वाले	दृशः	१२. आँखें
एत्य ।	९. निकल कर आ जाते	धृतमौनाः ॥	१४. चुप्पी साधकर

श्लोकार्थ—आश्चर्य की बात है कि सुन्दर गीत से हरे हुये चित्त वाले सारस हंस आदि पक्षी रसोवर से निकल कर आ जाते हैं। और वे एकाग्रमन से आँखें मूंदकर चुप्पी साधकर श्रीकृष्ण की उपासना करने लगते हैं ॥

द्वादशः श्लोकः

सहबलः स्रगवतंसविलासः सानुषु क्षितिभृतो व्रजदेव्यः ।
हर्षयन् यर्हि वेणुरवेण जातहर्ष उपरम्भति विश्वम् ॥१२॥

पदच्छेद— सह बलः स्रग् अवतंस विलासः सानुषु क्षिति भृतः व्रज देव्यः ।
हर्षयन् यर्हि वेणु रवेण जात हर्षः उपरम्भति विश्वम् ॥

शब्दार्थ—

सह	४. साथ (श्रीकृष्ण)	व्रजदेव्यः	१. अरी व्रज देवियो !
बलः	३. बलराम जी के	हर्षयन्	११. हर्षित करते हुयें मानों
स्रग्	५. फूलों की माला का	यर्हि	२. जब
अवतंस	६. आभूषण	वेणुरवेण	१०. वंशी की ध्वनि से
विलासः	७. धारण करके	जातहर्ष	१२. आनन्द में भर कर
सानुषु	९. शिखर पर चढ़कर	उपरम्भति	१४. आलिगन कर रहे हैं
क्षितिभृतः ।	८. गिरिराज पर्वत के	विश्वम् ॥	१३. संसार को

श्लोकार्थ—अरी व्रजदेवियो ! जब बलराम जी के साथ श्रीकृष्ण फूलों की माला का आभूषग धारण करके गिरराज पर्वत के शिखर पर चढ़कर वंशी की ध्वनि से हर्षित करते हुये मानों आनन्द में भर कर संसार को आलिगित कर रहे हैं ॥

त्रयोदशः श्लोकः

महदतिक्रमणशङ्कितचेता मन्दमन्दमनुगर्जति मेघः ।
सुहृदमभ्यवर्षत् सुमनोभिश्छायया च विदधत् प्रतपत्रम् ॥१३॥

पदच्छेद— महत् अतिक्रमण शङ्कित चेताः मन्द-मन्दम् अनुगर्जति मेघः ।
सुहृदम् अभ्यवर्षत् सुमनोभिः छायया च विदधत् प्रतपत्रम् ॥

शब्दार्थ

महत्	१.	बड़ों की बात का	सुहृदम्	८.	अपने मित्र श्रीकृष्ण पर
अतिक्रमण	२.	उल्लंघन करने से	अभ्यवर्षत्	१०.	वर्षा करने लगता है
शङ्कित	३.	सशङ्कित	सुमनोभिः	९.	फूलों की
चेताः	४.	मन वाला	छायया	१४.	छाया करता है
मन्दमन्दम्	६.	धीरे-धीरे	च	११.	और
अनुगर्जति	७.	गरजता है (और)	विदधत्	११.	बन कर
मेघः ।	५.	बादल	प्रतपत्रम् ॥	१२.	छाता

श्लोकार्थ—बड़ों की बात का उल्लंघन करने से सशङ्कित मन वाला बादल धीरे-धीरे गरजता है। और अपने मित्र श्रीकृष्ण पर फूलों की वर्षा करने लगता है। और छाता बन कर छाया करता है ॥

चतुर्दशः श्लोकः

विविधगोपचरणेषु विदग्धो वेणुवाद्य उरुधा निजशिक्षाः ।
तव सुतः सति यदाधरबिम्बे दत्तवेणुरनयत् स्वरजातीः ॥१४॥

पदच्छेद— विविध गोप चरणेषु विदग्धः वेणु वाद्ये उरुधा निज शिक्षाः ।
तव सुतः सति यदा अधर बिम्बे दत्त वेणुः अनयत् स्वर जातीः ॥

शब्दार्थ—

विविध	३.	अनेक	तवसुतः	२.	आपके पुत्र श्रीकृष्ण
गोप	४.	ग्वालों के साथ	सति	१.	हे सती यशोदा जी !
चरणेषु	५.	खेल खेलने में बड़े	यदा	१०.	जब वे
विदग्धः	६.	चतुर हैं (उन्होंने)	अधर बिम्बे	११.	लाल अधरों पर
वेणुवाद्य	७.	वंशी पर	दत्तवेणुः	१२.	बाँसुरी रख कर
उरुधाः	८.	अनेक प्रकार के राग	अनयत्	१४.	बजाने लगते हैं
निजशिक्षाः ।	९.	स्वयं सीख लिये हैं	स्वर जातीः ॥	१३.	अनेक स्वरों में

श्लोकार्थ—हे सती यशोदा जी ! आपके पुत्र श्रीकृष्ण अनेक ग्वालों के साथ खेल-खेलनें में बड़े चतुर हैं। उन्होंने अनेक प्रकार के राग स्वयं सीख लिये हैं। जब लाल अधरों पर बाँसुरी रखकर अनेक स्वरों में बजाने लगते हैं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

सवनशस्तदुपधार्य सुरेशाः शक्रशर्वपरमेष्ठिपुरोगाः ।
कवय आनतकन्धरचित्ताः कश्मलं ययुरनिश्चिततत्त्वाः ॥१५॥

पदच्छेद— सवनशः तत् उपधार्य सुरेशाः शक्र शर्व परमेष्ठि पुरोगाः ।
कवयः आनत कन्धर चित्ताः कश्मलम् ययुः अनिश्चित तत्त्वाः ॥

शब्दार्थ—

सवनशः	१.	वंशी की परममोहिनी और	कवयः	९.	सर्वज्ञ हैं (वे)
तत्	२.	नई तान	आनत	१३.	झुका कर
उपधार्य	३.	सुनकर	कन्धर	१२.	गरदन के
सुरेशाः	४.	बड़े बड़े देवता	चित्ताः	१४.	मन से
शक्र	५.	इन्द्र	कश्मलम्	१५.	मोहित
शर्व	६.	शंकर	ययुः	१६.	हो गये
परमेष्ठि	७.	ब्रह्मा	अनिश्चित	११.	निश्चय न कर सकने से
पुरोगाः ।	८.	आदि (जो)	तत्त्वाः ॥	१०.	वास्तविकता का

श्लोकार्थ—वंशी की परममोहिनी और नई तान सुनकर बड़े बड़े देवता इन्द्र, शंकर, ब्रह्मा आदि जो सर्वज्ञ हैं, वे वास्तविकता का निश्चय न कर सकने से गरदन को झुकाकर मन से मोहित हो जाते हैं ।

षोडशः श्लोकः

निजपदाब्जदलैर्ध्वजवज्रनीरजाङ्कुशविचित्रललामैः ।
व्रजभुवः शमयन् खुरतोदं वर्ष्मधुर्यगतिरीडितवेणुः ॥१६॥

पदच्छेद— निज पद अब्ज दलैः ध्वज वज्र नीरज अङ्कुश विचित्र ललामैः ।
व्रजभुवः शमयन् खुरतोदम् वर्ष्मधुर्य गतिः ईडित वेणुः ॥

शब्दार्थ—

निज	६.	अपने	व्रजभुवः	८.	व्रज भूमि की
पद अब्जदलैः	७.	चरण कमलों से	शमयन्	११.	शान्त करते हुये
ध्वजवज्र	१.	ध्वज वज्र	खुर	९.	गौओं के खुरों से
नीरज	२.	कमल (तथा)	तोदम्	१०.	खुदने की व्यथा को
अङ्कुश	३.	अंकुश के	वर्ष्मधुर्य	१३.	गजराज के समान
विचित्र	४.	अनोखे	गतिः	१४.	चाल से चल रहे हैं
ललामैः ।	५.	सुन्दर चिह्नों से युक्त	ईडितवेणुः ॥	१२.	बाँसुरी बजाते हुये श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ—ध्वज, वज्र, कमल तथा अंकुश के अनोखे सुन्दर चिह्नों से युक्त अपने चरण कमलों से व्रज भूमि की गौओं के खुरों से खुदने की व्यथा को शान्त करते हुये एवम् बाँसुरी बजाते हुये श्रीकृष्ण गजराज के समान चाल से चल रहे हैं ॥

सप्तदशः श्लोकः

व्रजति तेन वयं सविलासवीक्षणार्पितमनोभववेगाः ।

कुजगतिं गमिता न विदामः कश्मलेन कबरं वसनं वा ॥१७॥

पदच्छेद— व्रजति तेन वयम् सविलास वीक्षण अर्पित मनोभव वेगाः ।
कुजगतिम् गमिताः न विदामः कश्मलेन कबरम् वसनम् वा ॥

शब्दार्थ—

व्रजति	१.	जब वे चलते हैं	कुजगतिम्	८.	वृक्षों के समान निश्चल गति को
तेन	२.	तब उनकी चाल (और)	गमिता	९.	प्राप्त कर लेती है
वयम्	७.	हम	न विदामः	१४.	हम नहीं जान पाती हैं
सविलास	३.	विलास भरी	कश्मलेन	१०.	मोह के कारण
वीक्षण	४.	चितवन से (हमारा)	कबरम्	११.	जूड़ा खुलने
अर्पित	६.	बढ़ जाता है (और)	वसनम्	१३.	वस्त्र उतरने को भी
मनोभववेगाः ।	५.	काम वेग	वा ॥	१२.	अथवा

श्लोकार्थ—अरी वीर ! जब वे चलते हैं तब उनकी चाल और विलास भरी चितवन से हमारा काम वेग बढ़ जाता है और हम वृक्षों के समान निश्चल गति को प्राप्त कर लेती हैं । मोह के कारण जूड़ा खुलने अथवा वस्त्र उतरने को भी नहीं जान पाती हैं ॥

अष्टादशः श्लोकः

मणिधरः क्वचिदागणयन् गा मालया दयितगन्धतुलस्याः ।

प्रणयिनोऽनुचरस्य कदांसे प्रक्षिपन् भुजमगायत यत्र ॥१८॥

पदच्छेद— मणिधरः क्वचित् आगणयन् गाः मालया दयित गन्ध तुलस्याः ।
प्रणयिनः अनुचरस्य कदा अंसे प्रक्षिपन् भुजम् अगायत यत्र ॥

शब्दार्थ—

मणिधरः	१.	मणि धारण किये हुये	प्रणयिनः	९.	प्रेमी
क्वचित्	२.	कहीं श्रीकृष्ण	अनुचरस्य	१०.	सखा के
आगणयन्	८.	गिनते हुये	कदा	१५.	कभी
गाः	७.	गौओं को	अंसे	११.	कन्धे पर
मालया	६.	माला से	प्रक्षिपन्	१३.	रख कर
दयित	३.	प्रिय	भुजम्	१२.	बाँह
गन्ध	४.	गन्ध वाली	अगायत	१६.	गाने लगते हैं
तुलस्याः ।	५.	तुलसी की	यत्र ॥	१४.	जब तब

श्लोकार्थ—मणि धारण किये हुये कहीं श्रीकृष्ण प्रिय गन्ध वाली तुलसी की माला सेगौओं को गिनते हुये, प्रेमी सखा के कन्धे पर बाँह रख कर जब तब कभी गाने लगते हैं ॥

एकोनविंशः श्लोकः

क्वणितवेणुरववञ्चितचित्ताः कृष्णमन्वसत कृष्णगृहिण्यः ।
गुणगणार्णमनुगत्य हरिण्यो गोपिका इव विमुक्तगृहाशाः ॥१९॥

पदच्छेद— क्वचित् वेणुरव वञ्चित चित्ताः कृष्णम् अन्वसत कृष्ण गृहिण्यः ।
गुणगण अर्णम् अनुगत्य हरिण्यः गोपिका इव विमुक्त गृहाशाः ॥

शब्दार्थ—

क्वणित	१. बजती हुई	गुणगण	१४. गुण समूह के
वेणुरव	२. बाँसुरी की (ध्वनि से)	अर्णम्	१५. समुद्र (कृष्ण) का
वञ्चित	३. मोहित	अनुगत्य	१६. अनुगमन करने लगती हैं
चित्ताः	४. चित्तवाली	हरिण्यः	१३. हरिणियाँ
कृष्णम्	७. कृष्ण के पास	गोपिकाः	११. हम गोपियों के
अन्वसत	८. दौड़ आती हैं (और)	इव	१२. समान
कृष्ण	५. कृष्णसार मृगों की	विमुक्त	१०. छोड़ चुकने वाली
गृहिण्यः ।	६. रानियाँ	गृहाशाः ॥	९. घर की आशा

श्लोकार्थ—उस समय बजती हुई बाँसुरी की ध्वनि से मोहित चित्तवाली कृष्णसार मृगों की पत्नियाँ कृष्ण के पास दौड़ आती हैं। और घर की आशा छोड़ चुकने वाली हम गोपियों के समान हरिणियाँ गुण समूह के समुद्र कृष्ण का अनुगमन करने लगती हैं ॥

विंशः श्लोकः

कुन्ददामकृतकौतुकवेषो गोपगोधनवृतो यमुनायाम् ।
नन्दसूनुरनघे तव वत्सो नर्मदः प्रणयिनां बिजहार ॥२०॥

पदच्छेद— कुन्द दाम कृत कौतुक वेषः गोप गोधन वृतः यमुनायाम् ।
नन्द सूनुः अनघे तव वत्सः नर्मदः प्रणयिनाम् विजहार ॥

शब्दार्थ—

कुन्ददाम	६. कुन्द के पुष्पों की माला से	नन्दसूनुः	९. नन्द जी के पुत्र (श्रीकृष्ण)
कृत	८. धारण किये हुये	अनघे	१. हे निष्पाप ! यशोदा जी
कौतुक वेषः	७. कौतुहल उत्पन्न करने वाला वेष	तव	२. आपके
गोप	१०. ग्वाल वालों तथा	वत्सः	३. पुत्र
गोधन	११. गऊओं से	नर्मदः	५. आनन्द देने वाले हैं
वृतः	१२. घिर कर	प्रणयिनाम्	४. प्रेमी जनों को
यमुनायाम् ।	१३. यमुना में	विजहार ॥	१४. खेलने लगते हैं

श्लोकार्थ—हे निष्पाप यशोदा जी ! आपके पुत्र प्रेमी जनों को आनन्द देने वाले हैं। कुन्द के पुष्पों की माला से कौतुहल उत्पन्न करने वाला वेष धारण किये हुये नन्द जी के पुत्र ग्वालवालों तथा गऊओं से घिर कर यमुना में खेलने लगते है ॥

एकविंशः श्लोकः

मन्दवायुरुपवात्यनुकूलं मानयन् मलयजस्पर्शेन ।
वन्दिनस्तमुपदेवगणा ये वाद्यगीतबलिभिः परिवव्रुः ॥२१॥

पदच्छेद— मन्द वायुः उपवाति अनुकूलम् मानयन् मलयज स्पर्शेन ।
वन्दिनः तम् उपदेवगणाः ये वाद्यगीत बलिभिः परिवव्रुः ॥

शब्दार्थ—

मन्द	२. मन्द-मन्द	वन्दिनः	१०. बन्दी बन कर
वायुः	१. वायु	तम्	१३. उनकी
उपवाति	४. बह कर	उपदेवगणाः	९. (गन्धर्वादि) उपदेवतागण हैं वे
अनुकूलम्	३. अनुकूल	ये	८. (और) जो
मानयन्	७. उनका सम्मान करती है	वाद्यगीत	११. वाद्य गीत तथा
मलयज	५. चन्दन के समान	बलिभिः	१२. उपहारों से
स्पर्शेन ।	६. शीतल स्पर्श से	परिवव्रुः ॥	१४. सेवा करते हैं

श्लोकार्थ—उस समय वायु मन्द-मन्द अनुकूल बह कर चन्दन के समान शीतल स्पर्श से उनका सम्मान करती है । और जो गन्धर्वादि उपदेवता गण हैं वे बन्दी बन कर वाद्यगीत तथा उपहारों से उनकी सेवा करते हैं ॥

द्वाविंशः श्लोकः

वत्सलो व्रजगवां यदगध्रो वन्द्यमानचरणः पथि वृद्धैः ।
कृत्स्नगोधनमुपोह्य दिनान्ते गीतवेणुरनुगेडितकीर्तिः ॥२२॥

पदच्छेद— वत्सलः व्रज गवाम् यत् अगध्रः वन्द्यमान चरणः पथि वृद्धैः ।
कृत्स्न गोधनम् उपोह्य दिन अन्ते गीत वेणुः अनुग ईडित कीर्तिः ॥

शब्दार्थ—

वत्सलः	८. स्नेही (श्रीकृष्ण)	कृत्स्न	१०. सब
व्रज	६. व्रज की	गोधनम्	११. गौओं को
गवाम्	७. गौओं के	उपोह्य	१२. लौटा कर
यत् अगध्रः	५. जिनके लिये पर्वत को धारण किया था	दिन अन्ते	९. सायंकाल
वन्द्यमान	३. पूजित	गीतवेणुः	१६. बाँसुरी बजाते हुये आ ही रहे हैं
चरणः	४. चरण वाले भगवान्	अनुग	१३. सखाओं द्वारा
पथि	१. मार्ग में	ईडित	१४. गायी जाती हुई
वृद्धैः ।	२. वृद्ध जनों तथा (ब्रह्मादि) द्वारा	कीर्तिः ॥	१५. कीर्ति वाले (तथा)

श्लोकार्थ—अरी सखि ! मार्ग में वृद्ध जनों तथा ब्रह्मादि द्वारा पूजित चरण वाले भगवान्, ने जिनके लिये पर्वत को धारण किया था उन व्रज की गौओं के स्नेही श्रीकृष्ण सायंकाल सब गौओं को लौटाकर सखाओं द्वारा गायी जाती हुई कीर्ति वाले तथा बाँसुरी बजाते हुये आ ही रहे हैं।

त्रयोविंशः श्लोकः

उत्सवं श्रमरुचापि दृशीनामुन्नयन् खुररजश्छुरितस्रक् ।
दित्सयैति सुहृदाशिष एष देवकीजठरभूरुडुराजः ॥२३॥

पदच्छेद— उत्सवम् श्रम रुचा अपि दृशीनाम् उन्नयन् खुररजः छुरित स्रक् ।
दित्सया एति सुहृद् आशिषः एषः देवकी जठर भूः उडुराजः ॥

शब्दार्थ—

उत्सवम्	७. आनन्द	दित्सया	१५. देने की इच्छा से
श्रम	४. परिश्रम की	एति	१७. आ रहे हैं
रुचा अपि	५. शोभा से भी	सुहृद	१३. मित्रों की
दृशीनाम्	६. नेत्रों को	आशिषः	१४. कामनाओं को
उन्नयन्	८. देते हुये	एषः	१६. वे (श्रीकृष्ण)
खुररजः	१. गायों के खुरों से उड़ी धूल से	देवकी	९. देवकी की
छुरित	२. शोभित	जठर	१०. कोख से
स्रक्	३. वन माला वाले	भूः	११. प्रकट
		उडुराजः ॥	१२. चन्द्रमा के समान अह्लादक

श्लोकार्थ—गायों के खुरों से उड़ी धूल से शोभित वनमाला वाले, परिश्रम की शोभा से भी नेत्रों को आनन्द देते हुये, देवकी के कोख से प्रकट, चन्द्रमा के समान आह्लादक, मित्रों की कामनाओं को देने की इच्छा से वे श्रीकृष्ण आ रहे हैं ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

मदविघूर्णितलोचन ईषन्मानदः स्वसुहृदां वनमाली ।
बदरपाण्डुवदनो मृदुगण्डं मण्डयन् कनककुण्डललक्ष्म्या ॥२४॥

पदच्छेद— मद विघूर्णित लोचनः ईषत् मानदः स्व सुहृदाम् वनमाली ।
बदर पाण्डु वदनः मृदु गण्डम् मण्डयन् कनक कुण्डल लक्ष्म्या ॥

शब्दार्थ—

मद	१. मद के कारण	बदर	९ बेर के समान
विघूर्णित	२. चढ़ी हुई	पाण्डु	१०. पीले
लोचनः	३. आँखों वाले	वदन	११. मुख वाले
ईषत्	६. कुछ	मृदु	१४. कोमल
मानदः	७. मान देने वाले	गण्डम्	१५. कपोलों को विभूषित
स्व	४. अपने	मण्डयन्	१६. करते हुये आ रहे हैं
सुहृदाम्	५. मित्रों को	कनक कुण्डल	१२. सोने के बने कुण्डलों की
वनमाली ।	८. वनमाला पहने हुये	लक्ष्म्या ॥	१३. कान्ति से

श्लोकार्थ—अरी सखी ! मद के कारण चढ़ी हुई आँखों वाले, अपने मित्रों को कुछ मान देने वाले, वनमाला पहने हुये, बेर के समान पीले मुख वाले सोने के बने कुण्डलों की कान्ति से कोमल कपोलों को विभूषित करते हुये आ रहे हैं ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

यदुपतिर्द्विरदराजविहारो यामिनीपतिरिवैष दिनान्ते ।
मुदितवक्त्र उपयाति दुरन्तं मोचयन् व्रजगवां दिनतापम् ॥२५॥

पदच्छेद— यदुपतिः द्विरदराज विहारः यामिनीपतिः इव एषः दिन अन्ते ।
मुदित वक्त्रः उपयाति दुरन्तम् मोचयन् व्रज गवाम् दिन तापम् ॥

शब्दार्थ—

यदुपतिः	६.	यदुराज श्रीकृष्ण	**वक्त्रः**	५.	मुख
द्विरदराज	१.	गजराज के समान	**उपयाति**	१६.	समीप चले आ रहे हैं
विहारः	२.	चलने वाले	**दुरन्तम्**	११.	असहनीय
यामिनोपतिः	१४.	चन्द्रमा की	**मोचयन्**	१३.	मिटाते हुये
इव	१५.	भाँति	**व्रज**	८.	व्रज की
एषः	३.	ये	**गवाम्**	९.	गौओं के
दिन-अन्ते ।	७.	सायंकाल में	**दिन**	१०.	दिन भर के
मुदित	४.	प्रसन्न	**तापम् ॥**	१२.	विरह जनित ताप को

श्लोकार्थ—ओह सखि ! गजराज के समान चलने वाले ये प्रसन्न मुख यदुराज श्रीकृष्ण सायंकाल में व्रज की गौओं के दिन भर के असहनीय विरह जनित ताप को मिटाते हुये चन्द्रमा की भाँति समीप चले आ रहे हैं ॥

षड्विंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवं व्रजस्त्रियो राजन् कृष्णलीला नु गायतीः ।
रेमिरेऽहःसु तच्चित्तास्तन्मनस्का महोदयाः ॥२६॥

पदच्छेद— एवम् व्रजस्त्रियः राजन् कृष्ण लीलाः नु गायतीः ।
रेमिरे अहः सु तत् चित्ताः तत् मनस्काः महोदयाः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	**रेमिरे**	१२.	रम जाती हैं
व्रज स्त्रियः	४.	व्रज की स्त्रियाँ	**अहः सु**	६.	दिन में
राजन्	१.	हे राजन् !	**तत् चित्ताः**	९.	उन्हीं में चित्त और
कृष्ण लीलाः	५.	कृष्ण की लीलाओं का	**तत्**	१०.	उन्हीं में
नु	७.	निश्चित रूप से	**मनस्काः**	११.	मन को लगा कर
गायतीः ।	८.	गान करती हुई	**महोदयाः ॥**	३.	बड़ भागिनी

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस प्रकार बड़ भागिनी व्रज की स्त्रियाँ कृष्ण की लीलाओं का दिन में निश्चित रूप से गान करती हुई उन्हीं में चित्त और मन को लगा कर रम जाती हैं ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
वृन्दावनक्रीडायाम् गोपिकायुगलगीतं नाम पञ्चत्रिंशः अध्यायः ॥३५॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

षट्त्रिंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—अथ तर्ह्यागतो गोष्ठमरिष्टो वृषभासुरः ।
महीं महाककुत्कायः कम्पयन् खुरविक्षताम् ॥१॥

पदच्छेद— अथ तर्हि आगतः गोष्ठम् अरिष्टः वृषभ असुरः ।
महीम् महाककुत् कायः कम्पयन् खुर विक्षताम् ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	महीम्	१२.	पृथ्वी को
तर्हि	२.	उस समय	महाककुत्	९.	डील विशाल था (वह)
आगतः	७.	आ गया (उसका)	कायः	८.	शरीर और
गोष्ठम्	६.	व्रज में	कम्पयन्	१३.	कंपा रहा था
अरिष्टः	३.	अरिष्ट नाम का	खुर	१०.	खुरों से
वृषभ	४.	एक बैल रूपधारी	विक्षताम् ॥	११.	खोद कर
असुरः ।	५.	असुर			

श्लोकार्थ—तदनन्तर उस समय अरिष्ट नाम का बैल रूपधारी असुर व्रज में आ गया । उसका शरीर और ककुद (डील) विशाल था । वह खुरों से खोद कर पृथ्वी को कँपा रहा था ॥

द्वितीयः श्लोकः

रम्भमाणः खरतरं पदा च विलिखन् महीम् ।
उद्यम्य पुच्छं वप्राणि विषाणाग्रेण चोद्धरन् ॥२॥

पदच्छेद— रम्भमाणः खरतरम् पदा च विलिखन् महीम् ।
उद्यम्य पुच्छम् वप्राणि विषाण अग्रेण च उद्धरन् ॥

शब्दार्थ—

रम्भमाणः	२.	रंभाता हुआ	उद्यम्य	८.	उठाकर
खरतरम्	१.	अत्यन्त तीक्ष्ण स्वर से	पुच्छम्	७.	पूँछ को
पदा	४.	पैर से	वप्राणि	१२.	मिट्टी के ढूहे को
च	३.	और	विषाण	१०.	सींगों के
विलिखन्	६.	खोदता हुआ	अग्रेण	११.	अग्रभाग से
महीम् ।	५.	पृथ्वी को	च	९.	और
			उद्धरन् ॥	१३.	तोड़ रहा था

श्लोकार्थ—अत्यन्त तीक्ष्ण स्वर से रंभाता हुआ और पैर से पृथ्वी को खोदता हुआ पूँछ को उठाकर और सींगों के अग्रभाग से मिट्टी के ढूहे को तोड़ रहा था ॥

तृतीयः श्लोकः

किञ्चित् किञ्चिच्छकृन्मुञ्चन् मूत्रयन् स्तब्धलोचनः ।
यस्य निर्ह्रादितेनाङ्ग निष्ठुरेण गवां नृणाम् ॥३॥

पदच्छेद— किञ्चित् किञ्चित् शकृत् मुञ्चन् मूत्रयन् स्तब्ध लोचनः ।
यस्य निर्ह्रादितेन अङ्ग निष्ठुरेण गवाम् नृणाम् ॥

शब्दार्थ—

किञ्चित्	१.	वह कुछ	यस्य	९.	उसकी
किञ्चित्	२.	कुछ	निर्ह्रादितेन	११.	गर्जना से
शकृत्	३.	गोबर	अङ्ग	८.	हे राजन् !
मुञ्चन्	४.	छोड़ता (और)	निष्ठुरेण	१०.	निष्ठुर
मूत्रयन्	५.	मूतता हुआ	गवाम्	१२.	गऊओं और
स्तब्ध	७.	तरेर कर (दौड़ रहा था)	नृणाम् ॥	१३.	स्त्रियों के गर्भ गिर जाते थे
लोचनः ।	६.	आँखें			

श्लोकार्थ—वह कुछ-कुछ गोबर छोड़ता और मूतता हुआ आँखें तरेर कर दौड़ रहा था । हे राजन् ! उसकी निष्ठुर गर्जना से गऊओं और स्त्रियों के गर्भ गिर जाते थे ॥

चतुर्थः श्लोकः

पतन्त्यकालतो गर्भाः स्रवन्ति स्म भयेन वै ।
निर्विशन्ति घना यस्य ककुद्यचलशङ्कया ॥४॥

पदच्छेद— पतन्ति अकालतः गर्भाः स्रवन्ति स्म भयेन वै ।
निर्विशन्ति घनाः यस्य ककुदि अचल शङ्कया ॥

शब्दार्थ—

पतन्ति	७.	गिर जाते थे (और)	निर्विशन्ति	१२.	बैठ जाते थे
अकालतः	३.	असमय में	घनाः	६.	बादल
गर्भाः	२.	गर्भ (गौओं और स्त्रियों के)	यस्य	८.	उसके
स्रवन्ति स्म	४.	स्रवित हो जाते थे	ककुदि	९.	ककुद् को
भयेन	१.	भय के कारण	अचल	१०.	पर्वत
वै ।	५.	निश्चित रूप से	शङ्कया ॥	११.	समझ कर उस पर

श्लोकार्थ—भय के कारण असमय में गौओं और स्त्रियों के गर्भ स्रवित हो जाते थे । बादल गिर जाते थे । और उसके ककुद् को पर्वत समझ कर उस पर बैठ जाते थे ॥

पञ्चमः श्लोकः

तं तीक्ष्णश्रृङ्गमुद्वीक्ष्य गोप्यो गोपाश्च तत्रसुः ।
पशवो दुद्रुवुर्भीता राजन् संत्यज्य गोकुलम् ॥५॥

पदच्छेद-- तम् तीक्ष्ण श्रृङ्गम् उद्वीक्ष्य गोप्यः गोपाः च तत्रसुः ।
पशवः दुद्रुवुः भीताः राजन् संत्यज्य गोकुलम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	२.	उस	तत्रसुः ।	९.	डर गये (और)
तीक्ष्ण	३.	तीखे	पशवः	११.	पशु
श्रृङ्गम्	४.	सींग वाले बैल को	दुद्रुवुः	१४.	भागने लगे
उद्वीक्ष्य	५.	देख कर	भीताः	१०.	डरे हुये
गोप्यः	६.	गोपियाँ	राजन्	१.	हे राजन्
गोपाः	८.	गोप	संत्यज्य	१३.	छोड़कर
च	७.	और	गोकुलम् ॥	१२.	गोकुल को

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उस तीखे सींग वाले बैल को देखकर गोपियाँ और गोप डर गये । और डरे हुये पशु गोकुल को छोड़ कर भागने लगे ॥

षष्ठः श्लोकः

कृष्ण कृष्णेति ते सर्वे गोविन्दं शरणं ययुः ।
भगवानपि तद् वीक्ष्य गोकुलं भयविद्रुतम् ॥६॥

पदच्छेद-- कृष्ण कृष्ण इति ते सर्वे गोविन्दम् शरणम् ययुः ।
भगवान् अपि तत् वीक्ष्य गोकुलम् भय विद्रुतम् ॥

शब्दार्थ—

कृष्ण	३.	कृष्ण	भगवान्	९.	भगवान् ने
कृष्ण	४.	कृष्ण	अपि	१०.	भी
इति	५.	यह कहते हुये	तत्	११.	उस
ते	१.	उस समय (वे)	वीक्ष्य	१५.	देखा
सर्वे	२.	सभी (व्रजवासी)	गोकुलम्	१२.	गोकुल को
गोविन्दम्	६.	श्रीकृष्ण की	भय	१३.	भय से
शरणम्	७.	शरण में	विद्रुतम् ॥	१४.	आतुर
ययुः ।	८.	गये			

श्लोकार्थ—उस समय वे सभी व्रजवासी कृष्ण-कृष्ण कहते हुये श्रीकृष्ण की शरण में गये । भगवान् ने भी उस गोकुल को भय से आतुर देखा ॥

सप्तमः श्लोकः

मा भैष्टेति गिराऽऽश्वास्य वृषासुरमुपाह्वयत् ।
गोपालैः पशुभिर्मन्द त्रासितैः किमसत्तम ॥७॥

पदच्छेद— मा भैष्ट इति गिरा आश्वास्य वृषासुरम् उपाह्वयत् ।
गोपालैः पशुभिः मन्द त्रासितैः किम् असत्तम् ॥

शब्दार्थ—

मा भैष्ट	१.	मत डरो	गोपालैः	९.	ग्वालों को (और)
इति	२.	इस प्रकार	पशुभिः	१०.	पशुओं को
गिरा	३.	कह कर (और)	मन्द	७.	अरे मूर्ख
आश्वास्य	४.	आश्वासन देकर	त्रासितैः	१२.	डरा रहा है
वृषासुरम्	५.	वृषासुर को	किम्	११.	क्यों
उपाह्वयत् ।	६.	ललकारा	असत्तम ॥	८.	दुष्ट (तू इन)

श्लोकार्थ— मत डरो इस प्रकार कह कर और अश्वासन देकर वृत्रासुर को ललकारा अरे मूर्ख ! दुष्ट ! तू इन ग्वालों और पशुओं को क्यों डरा रहा है ॥

अष्टमः श्लोकः

बलदर्पहाहं दुष्टानां त्वद्विधानां दुरात्मनाम् ।
इत्यास्फोट्याच्युतोऽरिष्टं तलशब्देन कोपयन् ॥८॥

पदच्छेद— बल दर्पहा अहम् दुष्टानाम् त्वत् विधानाम् दुरात्मनाम् ।
इति आस्फोट्या अच्युतः अरिष्टम् तल शब्देन कोपयन् ॥

शब्दार्थ—

बल	५.	बल	इति	८.	यह कह कर
दर्पहा	६.	घमंड चूर कर देने वाला	आस्फोट्या	१०.	ताल ठोकी (और)
अहम्	७.	मैं (हूँ)	अच्युतः	९.	श्रीकृष्ण ने
दुष्टानाम्	४.	दुष्टों के	अरिष्टम्	१३.	अरिष्टासुर को
त्वत्	१.	तेरे	तल	११.	ताली
विधानाम्	२.	जैसे	शब्देन	१२.	बजाकर
दुरात्मनाम् ।	३.	दुरात्मा	कोपयन् ॥	१४.	क्रुद्ध कर दिया

श्लोकार्थ—तेरे जैसे दुरात्मा दुष्टों के बल का घमंड चूर कर देने वाला मैं हूँ । यह कह कर श्रीकृष्ण ने ताल ठोकी और ताली बजाकर अरिष्टासुर को क्रुद्ध कर दिया ॥

नवमः श्लोकः

सख्युरंसे भुजाभोगं प्रसार्यावस्थितो हरिः ।
सोऽप्येवं कोपितोऽरिष्टः खुरेणावनिमुल्लिखन् ।
उद्यत्पुच्छभ्रमन्मेघः क्रुद्धः कृष्णमुपाद्रवत् ॥९॥

पदच्छेद— सख्युः अंसे भुजा भोगम् प्रसार्य अवस्थितः हरिः ।
सः अपि एवम् कोपितः अरिष्टः खुरेण अवनिम् उल्लिखन् ।
उद्यत् पुच्छ भ्रमन् मेघः क्रुद्धः कृष्णम् उपाद्रवत् ॥

शब्दार्थ—सख्युः	१.	एक सखा के	खुरेण	१०.	खुरों से
अंसे भुजाभोगम्	२.	कन्धे पर बाँह	अवनिम्	११.	पृथ्वी को
प्रसार्य	३.	फैला कर	उल्लिखन्	१२.	खोदता हुआ तथा
अवस्थितः	५.	खड़े हो गये	उद्यत्पुच्छ	१३.	उठाई हुई पूँछ से
हरिः ।	४.	श्रीकृष्ण	भ्रमन्	१५.	तितर-बितर करता हुआ
सः	६.	वह	मेघः	१४.	बादलों को
अपि एवम्	८.	भी इस प्रकार	क्रुद्धः	१६.	कुपित होकर
कोपितः	९.	क्रुद्ध किये जाने पर	कृष्णम्	१७.	श्रीकृष्ण की ओर
अरिष्टः ।	७.	अरिष्टासुर	उपाद्रवत् ॥	१८.	झपटा

श्लोकार्थ—एक सखा के कन्धे पर बाँह फैला कर श्रीकृष्ण खड़े हो गये । वह अरिष्टासुर भी इस प्रकार क्रुद्ध किये जाने पर खुरों से पृथ्वी को खोदता हुआ तथा उठाई हुई पूँछ से बादलों को तितर-बितर करता हुआ कुपित होकर श्रीकृष्ण पर झपटा ॥

दशमः श्लोकः

अग्रन्यस्तविषाणाग्रः स्तब्धासृग्लोचनोऽच्युतम् ।
कटाक्षिप्याद्रवत्तूर्णमिन्द्रमुक्तोऽशनिर्यथा ॥१०॥

पदच्छेद— अग्रन्यस्त विषाण अग्रः स्तब्ध असृक् लोचनः अच्युतम् ।
कटाक्षिप्य अद्रवत् तूर्णम् इन्द्र मुक्तः अशनिः यथा ॥

शब्दार्थ—अग्रन्यस्त	३.	आगे करके	कटाक्षिप्य	८.	टेढी नजर से देखकर
विषाण	१.	सींग के	अद्रवत्	१०.	उन पर टूट पड़ा
अग्रः	२.	अग्रभाग को	तूर्णम्	९.	उतने वेग से
स्तब्ध	६.	टकटकी लगाकर	इन्द्र	१२.	इन्द्र के द्वारा
असृक्	४.	लाल-लाल	मुक्तः	१४.	छोड़ा गया हो
लोचनः	५.	आँखों से	अशनिः	१३.	वज्र
अच्युतम् ।	७.	श्रीकृष्ण की ओर	यथा ॥	११.	मानों

श्लोकार्थ—सींग के अग्रभाग को आगे करके लाल-लाल आँखों से टकटकी लगाकर श्रीकृष्ण की ओर टेढी नजर से देखकर उतने वेग से उन पर टूट पड़ा मानों इन्द्र के द्वारा व्रज छोड़ा गया हो ॥

एकादशः श्लोकः

गृहीत्वा शृङ्गयोस्तं वा अष्टादश पदानि सः ।
प्रत्यपोवाह भगवान् गजः प्रतिगजं यथा ॥११॥

पदच्छेद— गृहीत्वा शृङ्गयोः तम् वा अष्टादश पदानि सः ।
प्रति अप उवाह भगवान् गजम् प्रति गजं यथा ॥

शब्दार्थ—

गृहीत्वा	५.	पकड़ कर	प्रति अप उवाह	८.	ठेल दिया
शृङ्गयोः	४.	दोनों सींगों को	भगवान्	१.	भगवान्
तम्	३.	उसके	गजः	११.	एक हाथी
वा	९.	अथवा	प्रति	१२.	प्रतिद्वन्द्वी
अष्टादश	६.	अठारह	गजः	१३.	हाथी को (ठेलता है)
पदानि	७.	पग पीछे	यथा ॥	१०.	जैसे
सः ।	२.	श्रीकृष्ण ने			

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने उसके दोनों सींगों को पकड़ कर अठारह पग पीछे ठेल दिया । अथवा जैसे एक हाथी प्रतिद्वन्द्वी हाथी को ठेलता है ॥

द्वादशः श्लोकः

सोऽपविद्धो भगवता पुनरुत्थाय सत्वरः ।
आपतत् स्विन्नसर्वाङ्गो निःश्वसन् क्रोधमूर्छितः ॥१२॥

पदच्छेद— सः अपविद्धः भगवता पुनः उत्थाय सत्वरः ।
आपतत् स्विन्न सर्वाङ्गः निःश्वसन् क्रोध मूर्च्छितः ॥

शब्दार्थ—

सः	३.	वह	आपतत्	१२.	उन पर टूट पड़ा
अपविद्धः	२.	ठेल दिये जाने पर	स्विन्न	८.	पसीने से लथ-पथ
भगवता	१.	भगवान् के द्वारा	सर्वाङ्गः	७.	शरीर में
पुनः	४.	फिर	निःश्वसन्	११.	लंबी-लंबी साँस लेता हुआ
उत्थाय	६.	उठ खड़ा हुआ (और)	क्रोध	९.	क्रोध से
सत्वरः ।	५.	शीघ्र	मूर्च्छितः ॥	१०.	अचेत होकर

श्लोकार्थ—भगवान् के द्वारा ठेल दिये जाने पर वह फिर शीघ्र ही उठ खड़ा हुआ और शरीर में पसीने से लथ-पथ, क्रोध से अचेत होकर लंबी-लंबी साँस लेता हुआ उन पर टूट पड़ा ॥

त्रयोदशः श्लोकः

तमापतन्तं स निगृह्य शृङ्गयोः पदा समाक्रम्य निपात्य भूतले ।
निष्पीडयामास यथाऽऽर्द्रमम्बरं कृत्वा विषाणेन जघान सोऽपतत् ॥१३॥

पदच्छेद— तम् आपतन्तम् सः निगृह्य शृङ्गयोः पदा समाक्रम्य निपात्य भूतले ।
निष्पीडयामास यथा आर्द्रम् अम्बरम् कृत्वा विषाणेन जघान सः अपतत् ॥

शब्दार्थ—

तम्	३. उसके	निष्पीडयामास	१०. इस प्रकार निचोड़ा
आपतन्तम्	२. आक्रमण करते हुये	यथा	११. जैसे (कोई)
सः	१. उन भगवान् श्रीकृष्ण ने	आर्द्रम्	१२. गीला
निगृह्य	५. पकड़ कर	अम्बरम्	१३. वस्त्र (निचोड़ता है)
शृङ्गयोः	४. दोनों सींगों को	कृत्वा	१५. उखाड़ कर
पदा	६. पैर से	विषाणेन	१४. फिर उसका सींग
समाक्रम्य	७. ठोकर मार कर	जघान	१६. ऐसा पीटा कि
निपात्य	९. गिरा दिया (और)	सः	१७. वह
भूतले ।	८. पृथ्वी पर	अपतत् ॥	१८. धराशायी हो गया

श्लोकार्थ—उन भगवान् श्रीकृष्ण ने आक्रमण करते हुये उसके दोनों सींगों को पकड़ कर पैर से ठोकर मार कर पृथ्वी पर गिरा दिया। और इस प्रकार निचोड़ा जैसे कोई गीला वस्त्र निचोड़ता है। फिर उसका सींग उखाड़ कर ऐसा पीटा कि वह धराशायी हो गया॥

चतुर्दशः श्लोकः

असृग् वमन् मूत्रशकृत् समुत्सृजन् क्षिपंश्च पादाननवस्थितेक्षणः ।
जगाम कृच्छ्रं निर्ऋतेरथ क्षयं पुष्पैः किरन्तो हरिमीडिरे सुराः ॥१४॥

पदच्छेद— असृक् वमन् मूत्र शकृत् समुत्सृजन् क्षिपन् च पादान् अनवस्थित ईक्षणः ।
जगाम कृच्छ्रम् निर्ऋतेः अथ क्षयम् पुष्पैः किरन्तः हरिम् ईडिरे सुराः ॥

शब्दार्थ—

असृक् वमन्	१. (वह दैत्य) रक्त उगलता (तथा)	जगाम	१२. हुआ
मूत्र शकृत्	२. मूत और गोबर	कृच्छ्रम्	९. बहुत कष्ट से (उसके)
समुत्सृजन्	३. करता हुआ	निर्ऋतेः	१०. प्राणों का
क्षिपन्	५. पटकने लगा	अथ	१३. तदनन्तर
च	६. और	क्षयम्	११. नाश
पादान्	४. पैर	पुष्पैः किरन्तः	१५. फूलों की वर्षा करते हुये
अनवस्थित	८ उलट गईं	हरिम् ईडिरे	१६. भगवान् की स्तुति करने लगे
ईक्षणः ।	७. (उसकी) आँखें	सुराः ॥	१४. देव गण

श्लोकार्थ—वह दैत्य रक्त उगलता हुआ तथा मूत और गोबर करता हुआ पैर पटकने लगा। और उसकी आँखें उलट गईं। बहुत कष्ट से उसके प्राणों का नाश हुआ। तदनन्तर देव गण फूलों की वर्षा करते हुये भगवान् की स्तुति करने लगे॥

पञ्चदशः श्लोकः

एवं ककुद्मिनं हत्वा स्तूयमानः स्वजातिभिः ।
विवेश गोष्ठं सबलो गोपीनां नयनोत्सवः ॥१५॥

पदच्छेद— एवम् ककुद्मिनम् हत्वा स्तूयमानः स्वजातिभिः ।
विवेश गोष्ठम् सबलः गोपीनाम् नयन उत्सवः ।।

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	विवेश	१२.	प्रवेश किया
ककुद्मिनम्	२.	वृषभासुर को	गोष्ठम्	११.	व्रज में
हत्वा	३.	मार कर	सबलः	१०.	बलरामजी के साथ
स्तूयमानः	६.	स्तुति किये जाते हुये	गोपीनाम्	७.	गोपियों के
स्व	४.	अपने सुहृद्	नयन	८.	नयनों को
जातिभिः ।	५.	गोपों के द्वारा	उत्सवः ।।	९.	आनन्द देने वाले

श्लोकार्थ—इस प्रकार वृषभासुर को मार कर अपने सुहृद गोपों के द्वारा स्तुति किये जाते हुये, गोपियों के नयनों को आनन्द देने वाले भगवान् श्रीकृष्ण ने बलराम जी के साथ व्रज में प्रवेश किया ।।

षोडशः श्लोकः

अरिष्टे निहते दैत्ये कृष्णेनाद्भुतकर्मणा ।
कंसायाथाह भगवान् नारदो देवदर्शनः ॥१६॥

पदच्छेद— अरिष्टे निहते दैत्ये कृष्णेन अद्भुत कर्मणा ।
कंसाय अथ आह भगवान् नारदः देवदर्शनः ।।

शब्दार्थ—

अरिष्टे	४.	अरिष्ट नामक	कंसाय	११.	कंस से (आकर)
निहते	६.	मार दिये जाने के	अथ	७.	पश्चात्
दैत्ये	५.	दैत्य के	आह	१२.	कहा
कृष्णेन	३.	कृष्ण के द्वारा	भगवान्	९.	भगवान्
अद्भुत	१.	अद्भुत	नारदः	१०.	नारद ने
कर्मणा ।	२.	कर्म करने वाले	देवदर्शनः ।।	८.	देवता का दर्शन कराने वाले

श्लोकार्थ—अद्भुत कर्म करने वाले कृष्ण के द्वारा अरिष्ट नामक दैत्य के मार दिये जाने के पश्चात् देवता का दर्शन कराने वाले भगवान् नारद ने कंस से आकर कहा ।।

सप्तदशः श्लोकः

यशोदायाः सुतां कन्यां देवक्याः कृष्णमेव च ।
रामं च रोहिणीपुत्रं वसुदेवेन बिभ्यता ॥१७॥

पदच्छेद— यशोदायाः सुताम् कन्याम् देवक्याः कृष्णम् एव च ।
रामम् च रोहिणी पुत्रम् वसुदेवेन बिभ्यता ॥

शब्दार्थ—

यशोदायाः	१. यशोदा की	रामम्	११. बलराम को
सुताम्	२. पुत्री	च	८. तथा
कन्याम्	३. उस कन्या (योगमाया) को	रोहिणी	९. रोहिणी के
देवक्याः	५. देवकी के	पुत्रम्	१०. पुत्र
कृष्णम्	६. पुत्र श्रीकृष्ण को	वसुदेवेन	१३. वसुदेवजी ने वहाँ रख छोड़ा है
एव	७. ही	बिभ्यता ॥	१२. तुम से डरते हुये
च ।	४. और		

श्लोकार्थ—यशोदा की पुत्री उस कन्या योगमाया को और देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण को ही तथा रोहिणी के पुत्र बलराम जी को तुम से डरते हुये वसुदेव जी ने वहाँ रख छोड़ा है ॥

अष्टादशः श्लोकः

न्यस्तौ स्वमित्रे नन्दे वै याभ्यां ते पुरुषा हताः ।
निशम्य तद् भोजपतिः कोपात् प्रचलितेन्द्रियः ॥१८॥

पदच्छेद— न्यस्तौ स्वमित्रे नन्दे वै याभ्याम् ते पुरुषाः हताः ।
निशम्य तत् भोजपतिः कोपात् प्रचलित इन्द्रियः ॥

शब्दार्थ—

न्यस्तौ	४. रख दिया	हताः	८. मार डाला
स्वमित्रे	१. अपने मित्र	निशम्य	१०. सुन कर
नन्दे	२. नन्द के पास	तत्	९. यह
वै	३. निश्चित रूप से	भोजपतिः	११. कंस की
याभ्याम्	५. उन्हीं दोनों ने	कोपात्	१३. क्रोध से
ते	६. तुम्हारे	प्रचलित	१४. काँप उठीं
पुरुषाः ।	७. अनुचर दैत्यों को	इन्द्रियः ॥	१२. इन्द्रियाँ

श्लोकार्थ—अपने मित्र नन्द के पास निश्चित रूप से रख दिया । उन्हीं दोनों ने तुम्हारे अनुचर दैत्यों को मार डाला । यह सुनकर कंस की इन्द्रियाँ क्रोध से काँप उठीं ॥

एकोनविंशः श्लोकः

निशातमसिमादत्त वसुदेवजिघांसया ।
निवारितो नारदेन तत्सुतौ मृत्युमात्मनः ॥१९॥

पदच्छेद-- निशातम् असिम् आदत्त वसुदेव जिघांसया ।
निवारितः नारदेन तत् सुतौ मृत्युम् आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

निशातम्	३.	उस कंस ने तीखी	निवारितः	७.	रोक दिया
असिम्	४.	तलवार	नारदेन	६.	नारद ने
आदत्त	५.	उठा ली (किन्तु)	तत् सुतौ	८.	उनके पुत्रों को
वसुदेव	१.	वसुदेव को	मृत्युम्	१०.	मृत्यु का कारण समझ लिया
जिघांसया ।	२.	मार डालने की इच्छा से	आत्मनः ॥	९.	अपनी

श्लोकार्थ—वसुदेव को मार डालने की इच्छा से उस कंस ने तीखी तलवार उठा ली किन्तु नारद ने रोक दिया । उनके पुत्रों को अपनी मृत्यु का कारण समझ लिया ।

विंशः श्लोकः

ज्ञात्वा लोहमयैः पाशैर्बबन्ध सह भार्यया ।
प्रतियाते तु देवर्षौ कंस आभाष्य केशिनम् ॥२०॥

पदच्छेद— ज्ञात्वा लोह मयैः पाशैः बबन्ध सह भार्यया ।
प्रतियाते तु देवर्षौ कंसः अभाष्य केशिनम् ॥

शब्दार्थ—

ज्ञात्वा	२.	(ऐसा) समझ कर	प्रतियाते	१०.	चले जाने पर
लोहमयैः	३.	लोहे की	तु	८.	फिर
पाशैः	४.	जंजीरों से	देवर्षौ	९.	नारद के
बबन्ध	७.	बाँध दिया	कंसः	१.	कंस ने
सह	६.	सहित (वसुदेव जी) को	आभाष्य	१२.	बुला कर (कहा)
भार्यया ।	५.	पत्नी	केशिनम् ॥	११.	केशी को

श्लोकार्थ—कंस ने ऐसा समझकर लोहे की जंजीरों से पत्नी सहित वसुदेव जी को बाँध दिया । फिर नारद के चले जाने पर केशी को बुलाकर कहा ॥

एकविंशः श्लोकः

प्रेषयामास हन्येतां भवता रामकेशवौ ।
ततो मुष्टिकचाणूरशलतोशलकादिकान् ॥२१॥

पदच्छेद— प्रेषयामास हन्येताम् भवता राम केशवौ ।
ततः मुष्टिक चाणूर शल तोशलक आदिकान् ॥

शब्दार्थ—

प्रेषयामास	५.	यह कह कर भेज दिया	ततः	६.	इसके बाद
हन्येताम्	४.	मार डालो	मुष्टिक	७.	मुष्टिक
भवता	१.	तुम	चाणूर	८.	चाणूर
राम	२.	राम और	शलतोशलक	९.	शल तोशलक
केशवौ ।	३.	कृष्ण को	आदिकान् ॥	१०.	आदि को बुलाया

श्लोकार्थ—हे केशी ! तुम राम और कृष्ण को मार डालो। यह कह कर भेज दिया। इसके बाद मुष्टिक, चाणूर, शल, तोशलक आदि को बुलाया ॥

द्वाविंशः श्लोकः

अमात्यान् हस्तिपांश्चैव समाहूयाह भोजराट् ।
भो भो निशम्यतामेतद् वीरचाणूरमुष्टिकौ ॥२२॥

पदच्छेद— अमात्यान् हस्तिपान् च एव समाहूय आह भोजराट् ।
भो भो निशम्यता_ एतद् वीर चाणूर मुष्टिकौ ॥

शब्दार्थ—

अमात्यान्	३.	मन्त्रियों तथा	भो भो	८.	हे हे
हस्तिपान्	४.	महावतों को	निशम्यताम्	१३.	ध्यान से सुनो
च	१.	और	एतद्	१२.	यह बात
एव	५.	भी	वीर	९.	वीर
समाहूय	६.	बुलाकर	चाणूर	१०.	चाणूर और
आह	७.	कहा	मुष्टिकौ ॥	११.	मुष्टिक (मेरी)
भोजराट् ।	२.	कंस ने			

श्लोकार्थ—और कंस ने मन्त्रियों तथा महावतों को भी बुलाकर कहा—हे हे वीर चाणूर और मुष्टिक ! मेरी यह बात ध्यान से सुनो ॥

त्रयोदशः श्लोकः

नन्दव्रजे किलासाते सुतावानकदुन्दुभेः ।
रामकृष्णौ ततो मह्यं मृत्युः किल निदर्शितः ॥२३॥

पदच्छेद— नन्द व्रजे किल आसाते सुतौ आनक दुन्दुभेः ।
राम कृष्णौ ततः मह्यम् मृत्युः किल निदर्शितः ॥

शब्दार्थ—

नन्द	२.	नन्द के	राम कृष्णौ	६.	राम और कृष्ण
व्रजे	३.	व्रज में	ततः	८.	उनसे
किल	१.	ऐसा सुना जाता है कि	मह्यम्	९.	मेरी
आसाते	७.	रहते हैं	मृत्युः	१०.	मृत्यु
सुतौ	५.	दो पुत्र	किल	१२.	ऐसा हमने सुना है
आनकदुन्दुभेः ।	४.	वसुदेव जी के	निर्दशितः ॥	११.	बताई गई है

श्लोकार्थ—ऐसा सुना जाता है कि नन्द के व्रज में वसुदेव जी के दो पुत्र राम और कृष्ण रहते हैं। उनसे मेरी मृत्यु बताई गई है। ऐसा हमने सुना है।

चतुर्दशः श्लोकः

भवद्भ्यामिह सम्प्राप्तौ हन्येतां मल्ललीलया ।
मञ्चाः क्रियन्तां विविधा मल्लरङ्गपरिश्रिताः ।
पौरा जानपदाः सर्वे पश्यन्तु स्वैरसंयुगम् ॥२४॥

पदच्छेद— भवद्भ्याम् इह सम्प्राप्तौ हन्येताम् मल्ललीलया ।
मञ्चाः क्रियन्ताम् विविधाः मल्लरङ्ग परिश्रिताः ।
पौराः जानपदाः सर्वे पश्यन्तु स्वैर संयुगम् ॥

शब्दार्थं—

भवद्भ्याम्	३.	आप दोनों	मल्लरङ्ग	६.	अखाड़े के
इह	१.	यहाँ	परिश्रिताः	७.	चारों ओर
सम्प्राप्तौ	२.	वे आवें तो उनको	पौराः	११.	नगर निवासी (और)
हन्येताम्	५.	मार देना	जानपदाः	१२.	ग्रामवासी
मल्ललीलया	४.	कुश्ती लड़ने के बहाने	सर्वे	१३.	सभी (इस)
मञ्चाः	९.	मञ्च	पश्यन्तु	१६.	देखें
क्रियन्ताम्	१०.	बनाओ (जहाँ बैठ कर)	स्वैर	१४.	स्वच्छन्द
विविधाः ।	८.	भाँति भाँति के	संयुगम् ॥	१५.	दंगल को

श्लोकार्थ—यहाँ वे आवें तो उनको आप दोनों कुश्ती लड़ने के बहाने मार देना। अखाड़े के चारों ओर भाँति-भाँति के मञ्च बनाओ। जहाँ बैठ कर नगर निवासी और ग्रामवासी सभी इस स्वच्छन्द दंगल को देखें॥

पञ्चविंशः श्लोकः

महामात्र त्वया भद्र रङ्गद्वार्युपनीयताम् ।
द्विपः कुवलयापीडो जहि तेन ममाहितौ ॥२५॥

पदच्छेद— महामात्र त्वया भद्र रङ्गद्वारि उपनीयताम् ।
द्विपः कुवलयापीडः जहि तेन मम अहितौ ॥

शब्दार्थ—

महामात्र	२.	महावत	द्विपः	६.	हाथी को
त्वया	३.	तुम	कुवलयापीडः	५.	कुवलयापीड
भद्र	१.	हे भद्र !	जहि	१०.	मरवा देना
रङ्गद्वारि	४.	दंगल के घेरे के फाटक पर	तेन मम	८.	उससे मेरे
उपनीयताम् ।	७.	रखना और	अहितौ ॥	९.	दोनों शत्रुओं को

श्लोकार्थ—हे भद्र महावत ! तुम दंगल के घेरे के फाटक पर कुवलयापीड हाथी को रखना । और उससे मेरे दोनों शत्रुओं को मरवा देना ॥

षड्विंशः श्लोकः

आरभ्यतां धनुर्यागश्चतुर्दश्यां यथाविधि ।
विशसन्तु पशून् मेध्यान् भूतराजाय मीढुषे ॥२६॥

पदच्छेद— आरभ्यताम् धनुर्यागः चतुर्दश्याम् यथाविधि ।
विशसन्तु पशून् मेध्यान् भूतराजाय मीढुषे ॥

शब्दार्थ—

आरभ्यताम्	४.	प्रारम्भ कर दो (और)	विशसन्तु	९.	बलि चढ़ाओ
धनुर्यागः	३.	धनुष यज्ञ	पशून्	६.	पशुओं की
चतुर्दश्याम्	१.	चतुर्दशी को	मेध्यान्	५.	बहुत से पवित्र
यथाविधि ।	२.	विधि पूर्वक	भूतराजाय	७.	भूतनाथ
			मीढुषे ॥	८.	भैरव को

श्लोकार्थ—चतुर्दशी को विधि पूर्वक धनुषयज्ञ प्रारम्भ कर दो । और बहुत से पवित्र पशुओं की भूतनाथ भैरव की बलि चढ़ाओ ॥

सप्तविंशः श्लोकः

इत्याज्ञाप्यार्थतन्त्रज्ञ आहूय यदुपुङ्गवम् ।
गृहीत्वा पाणिना पाणिं ततोऽक्रूरमुवाच ह ॥२७॥

पदच्छेद— इति आज्ञाप्य अर्थ तन्त्रज्ञः आहूय यदु पुङ्गवम् ।
गृहीत्वा पाणिना पाणिम् ततः अक्रूरम् उवाच ह ॥

शब्दार्थ—

इति	३.	इस प्रकार	गृहीत्वा	९.	पकड़ कर
आज्ञाप्य	४.	आज्ञा देकर	पाणिना	७.	अपने हाथ में
अर्थ	१.	स्वार्थ	पाणिम्	८.	उनका हाथ
तन्त्रज्ञः	२.	साधन का ज्ञाता (कंस)	ततः	१०.	तब
आहूय	६.	बुला कर	अक्रूरम्	११.	अक्रूर जी से
यदुपुङ्गवम् ।	५.	यदुवंशियों में श्रेष्ठ-अक्रूर जी को	उवाच ह ॥	१२.	कहने लगे

श्लोकार्थ—स्वार्थ साधन का ज्ञाता कंस इस प्रकार आज्ञा देकर यदुवंशियों में श्रेष्ठ अक्रूर जी को बुलाकर अपने हाथ में उनका हाथ पकड़ कर तब अक्रूर जी से कहने लगा ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

भो भो दानपते मह्यं क्रियतां मैत्रमादृतः ।
नान्यस्त्वत्तो हिततमो विद्यते भोजवृष्णिषु ॥२८॥

पदच्छेद— भो-भो दानपते मह्यम् क्रियताम् मैत्रम् आदृतः ।
न अन्यः त्वत्तः हिततमः विद्यते भोज वृष्णिषु ॥

शब्दार्थ—

भो-भो	१.	हे हे	न	१२.	नहीं
दानपते	२.	महादानी	अन्यः	११.	दूसरा
मह्यम्	३.	मेरे लिये आप	त्वत्तः	९.	आप से बढ़कर
क्रियताम्	६.	कीजिये	हिततमः	१०.	हित करने वाला
मैत्रम्	५.	मित्रता का काम	विद्यते	१३.	है
आदृतः ।	४.	आदरणीय हैं (एक)	भोज	७.	भोज वंशियों और
			वृष्णिषु ॥	८.	वृष्णि वंशियों में

श्लोकार्थ—हे हे महादानी ! मेरे लिये आप आदरणीय हैं। एक मित्रता का काम कीजिये। भोज वंशियों और वृष्णि वंशियों में आप से बढ़कर हित करने वाला दूसरा नहीं है ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

अतस्त्वामाश्रितः सौम्य कार्यगौरवसाधनम् ।
यथेन्द्रो विष्णुमाश्रित्य स्वार्थमध्यगमद् विभुः ॥२९॥

पदच्छेद— अतः त्वाम् आश्रितः सौम्य कार्य गौरव साधनम् ।
यथेन्द्रः विष्णुम् आश्रित्य स्वार्थम् अध्यगमत् विभुः ॥

शब्दार्थ—

अतः	१. इसलिये	यथेन्द्रः	८. जैसे इन्द्र ने
त्वाम्	६. आपका	विष्णुम्	१०. विष्णु का
आश्रितः	७. आश्रय लिया है	आश्रित्य	११. आश्रय लेकर
सौम्य	२. हे मित्र ! मैंने	स्वार्थम्	१२. स्वार्थ
कार्य	४. काम को	अध्यगमत्	१३. सिद्ध किया था
गौरव	३. श्रेष्ठ	विभुः ॥	९. समर्थ
साधनम् ।	५. सिद्ध करने वाले		

श्लोकार्थ—इसलिये हे मित्र ! मैंने श्रेष्ठ काम को सिद्ध करने वाले आपका आश्रय लिया है । जैसे इन्द्र ने समर्थ विष्णु का आश्रय लेकर स्वार्थ सिद्ध किया था ॥

त्रिंशः श्लोकः

गच्छ नन्दव्रजं तत्र सुतावानकदुन्दुभेः ।
आसाते ताविहानेन रथेनानय मा चिरम् ॥३०॥

पदच्छेद— गचछ नन्द व्रजम् तत्र सुतौ आनकदुन्दुभेः ।
आसाते तौ इह अनेन रथेन आनय माचिरम् ॥

शब्दार्थ—

गचछ	२. जाओ	तौ	७. उन दोनों को
नन्द व्रजम्	१. नन्द के व्रज में	इह	८. यहाँ
तत्र	३. वहाँ	अनेन	९. इस
सुतौ	४. दो पुत्र	रथेन	१०. रथ में
आनकदुन्दुभेः ।	५ वसुदेव जी के	आनय	११. ले आओ
आसाते	६. रहते हैं	माचिरम् ॥	१२. देर मत करो

श्लोकार्थ—हे अक्रूर जी ! तुम नन्द के व्रज में जाओ । वहाँ दो पुत्र वसुदेव जी के रहते हैं । उन दोनों को यहाँ इस रथ में ले आओ ! देर मत करो ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

निसृष्टः किल मे मृत्युर्देवैर्वैकुण्ठसंश्रयैः ।
तावानय समं गोपैर्नन्दाद्यैः साभ्युपायनैः ॥३१॥

पदच्छेद— निसृष्टः किल मे मृत्युः देवैः वैकुण्ठ संश्रयैः ।
तौ आनय समम् गोपैः नन्द आद्यैः स अभिउपायनैः ॥

शब्दार्थ—

निसृष्टः	७. निश्चित किया है (अतः)	तौ	८. उन दोनों के
किल	१. सुना है कि	आनय	१४. ले आओ
मे	५. (उन दोनों को) मेरी	समम्	९. साथ ही
मृत्युः	६. मृत्यु का कारण	गोपैः	११. ग्वालों को
देवैः	४. देवताओं ने	नन्द आद्यैः	१०. नन्द आदि
वैकुण्ठ	२. विष्णु के	स	१३. साथ
संश्रयैः ।	३. आश्रित रहने वाले	अभिउपायनैः ॥	१२. उपहारों के

श्लोकार्थ—सुना है कि विष्णु के आश्रित रहने वाले देवताओं ने उन दोनों को मेरी मृत्यु का कारण निश्चित किया है । अतः आप उन दोनों के साथ ही नन्द आदि ग्वालों को उपहारों के साथ ले आओ ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

घातयिष्य इहानीतौ कालकल्पेन हस्तिना ।
यदि मुक्तौ ततो मल्लैर्घातये वैद्युतोपमैः ॥३२॥

पदच्छेद— घातयिष्ये इह आनीतौ काल कल्पेन हस्तिना ।
यदि मुक्तौ ततः मल्लैः घातये वैद्युत उपमैः ॥

शब्दार्थ—

घातयिष्ये	६. मरवा डालूँगा	यदि	७. यदि
इह	१. यहाँ	मुक्तौ	८. उस हाथी से (बच गये)
आनीतौ	२. आने पर उन्हें	ततः	९. तब
काल	३. काल के	मल्लैः	११. पहलवानों से
कल्पेन	४. समान	घातये	१२. मरवा डालूँगा
हस्तिना ।	५. हाथी (कुवलयापीड से)	वैद्युत उपमैः ॥	१०. वज्र के समान

श्लोकार्थ—यहाँ आने पर उन्हें काल के समान हाथी कुवलयापीड से मरवा डालूंगा । यदि उस हाथी से बच गये तब वज्र के समान पहलवानों से मरवा डालूंगा ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तयोर्निहतयोस्तप्तान् वसुदेवपुरोगमान् ।
तद्बन्धून् निहनिष्यामि वृष्णिभोजदशार्हकान् ॥३३॥

पदच्छेद— तयोः निहतयोः तप्तान् वसुदेव पुरोगमान् ।
तत् बन्धून् निहनिष्यामि वृष्णि भोज दशार्हकान् ॥

शब्दार्थ—

तयोः	१.	उन दोनों के	तत्	९.	उनके
निहतयोः	२.	मारे जाने पर	बन्धून्	१०.	बन्धुओं को
तप्तान्	३.	शोकाकुल	निहनिष्यामि	११.	(मैं स्वयं) मार डालूंगा
वसुदेव	४.	वसुदेव	वृष्णि	६.	वृष्णि
पुरोगमात् ।	५.	आदि	भोज	७.	भोज और
			दशार्हकान् ॥	८.	दशार्हवंशी

श्लोकार्थ—उन दोनों के मारे जाने पर शोकाकुल वसुदेव आदि, वृष्णि, भोज और दशार्हवंशी, उनके बन्धुओं को मैं स्वयं मार डालूंगा ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

उग्रसेनं पितरं स्थविरं राज्यकामुकम् ।
तद्भ्रातरं देवकं च ये चान्ये विद्विषो मम ॥३४॥

पदच्छेद— उग्रसेनम् च पितरम् स्थविरम् राज्य कामुकम् ।
तत् भ्रातरम् देवकम् च ये च अन्ये विद्विषः ममः ॥

शब्दार्थ—

उग्रसेनम्	५.	उग्रसेन को	तत् भ्रातरम्	७.	उसके भाई
च	६.	और	देवकम्	८.	देवक को
पितरम्	४.	पिता	च ये	९.	और जो
स्थविरम्	३.	बूढे	च अन्ये	१०.	दूसरे
राज्य	१.	राज्य के	विद्विषः	१२.	द्वेषी हैं (उन्हें मैं मार डालूंगा)
कामुकम् ।	२.	लोभी	मम ॥	११.	मेरे

श्लोकार्थ—राज्य के लोभी बूढ़े पिता उग्रसेन को और उसके भाई देवक को और जो दूसरे मेरे द्वेषी हैं, उन्हें मैं मार डालूंगा ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

ततश्चैषा मही मित्र भवित्री नष्टकण्टका ।
जरासन्धो मम गुरुर्द्विविदो दयितः सखा ॥३५॥

पदच्छेद— ततः च एषा मही मित्र भवित्री नष्ट कण्टका ।
जरासन्धः मम गुरुः द्विविदः दयितः सखा ॥

शब्दार्थ—

ततः	२.	तब	जरासन्धः	६.	जरासन्ध
च	६.	और	मम	७.	मेरे
एषा मही	३.	यह पृथ्वी	गुरुः	८.	गुरु हैं
मित्र	१.	हे मित्र !	द्विविदः	१०.	द्विविद
भवित्री	५.	हो जायेंगी	दयितः	११.	मेरे
नष्टकण्टका ।	४.	निष्कण्टक	सखा ॥	१२.	सखा हैं

श्लोकार्थ—हे मित्र ! तब यह पृथ्वी निष्कण्टक हो जायेगी । जरासन्ध मेरे गुरु हैं । और द्विविद मेरे सखा हैं ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

शम्बरो नरको बाणो मय्येव कृतसौहृदाः ।
तैरहं सुरपक्षीयान् हत्वा भोक्ष्ये महीं नृपान् ॥३६॥

पदच्छेद— शम्बरः नरकः बाणः मयि एव कृत सौहृदाः ।
तैः अहम् सुर पक्षीयान् हत्वा भोक्ष्ये महीम् नृपान् ॥

शब्दार्थ—

शम्बरः	१.	शम्बरासुर	तैः	८.	उनके द्वारा
नरकः	२.	नरकासुर	अहम्	९.	मैं
बाणः	३.	बाणासुर	सुरपक्षीयान्	१०.	देवताओं के पक्षपाती
मयि	४.	मुझसे	हत्वा	१२.	मार कर
एव	७.	ही हैं	भोक्ष्ये	१४.	भोग करूँगा
कृत	६.	किये हुये	महीम्	१३.	पृथ्वी का
सौहृदाः ।	५.	मित्रता	नृपान् ॥	११.	राजाओं को

श्लोकार्थ—शम्बरासुर, नरकासुर, बाणासुर मुझसे मित्रता किये हुये ही हैं । उनके द्वारा मैं देवताओं के पक्षपाती राजाओं को मार कर पृथ्वी का भोग करूँगा ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

एतज्ज्ञात्वाऽऽनय क्षिप्रं रामकृष्णाविहार्भकौ ।
धनुर्मखनिरीक्षार्थं द्रष्टुं यदुपुरश्रियम् ॥३७॥

पदच्छेद— एतत् ज्ञात्वा आनय क्षिप्रम् रामकृष्णौ इह अर्भकौ ।
धनुः मख निरीक्षार्थम् द्रष्टुम् यदु पुर श्रियम् ॥

शब्दार्थ—

एतत्	१.	यह	धनुः	५.	धनुष
ज्ञात्वा	२.	जान कर	मख	६.	यज्ञ के
आनय	१४.	ले जाओ	निरीक्षार्थम्	७.	दर्शन और
क्षिप्रम्	१३.	शीघ्र	द्रष्टुम्	११.	देखने के लिये
रामकृष्णौ	४.	बलराम और कृष्ण को	यदु	८.	यदुवंशियों को
इह	१२.	यहाँ	पुर	९.	नगर मथुरा की
अर्भकौ ।	३.	बालक	श्रियम् ॥	१०.	शोभा

श्लोकार्थ—यह जान कर बालक बलराम और श्रीकृष्ण को धनुष यज्ञ के दर्शन और यदुवंशियों को नगर मथुरा की शोभा देखने के लिये यहाँ शीघ्र ले आओ ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

अक्रूर उवाच— राजन् मनीषितं सम्यक् तव स्वावद्यमार्जनम् ।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समं कुर्याद् दैवं हि फलसाधनम् ॥३८॥

पदच्छेद— राजन् मनीषितम् सम्यक् तव स्व अवद्य मार्जनम् ।
सिद्धि असिद्ध्योः समम् कुर्यात् दैवम् हि फल साधनम् ॥

शब्दार्थ—

राजन्	१.	हे राजन् !	सिद्धि	८.	सफलता
मनीषितम्	६.	सोचना	असिद्ध्योः	९.	और असफलता में
सम्यक्	७.	ठीक है	समम्	१०.	समभाव रखकर
तव	५.	आपका	कुर्यात्	११.	कार्य करना चाहिये
स्व	२.	अपना	दैवम्	१४.	भाग्यानुसार होती है
अवद्य	३.	अनिष्ट	हि फल	१२.	फल की
मार्जनम् ।	४.	दूर करने के लिये	साधनम् ॥	१३.	सिद्धि

श्लोकार्थ—हे राजन् ! अपना अनिष्ट दूर करने के लिये आपका सोचना ठीक है। सफलता और असफलता में समभाव रखकर कार्य करना चाहिये। फल की सिद्धि भाग्यानुसार होती है ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

मनोरथान् करोत्युच्चैर्जनो दैवहतानपि ।
युज्यते हर्षशोकाभ्यां तथाप्याज्ञां करोमि ते ।।३६।।

पदच्छेद— मनोरथान् करोति उच्चैः जनः दैव हतान् अपि ।
युज्यते हर्ष शोकाभ्याम् तथापि आज्ञाम् करोमि ते ।।

शब्दार्थ—

मनोरथान्	६.	मनोरथों को	युज्यते	१०.	हो जाता है
करोति	७.	करता है (और)	हर्ष	८.	हर्षित तथा
उच्चैः	५.	बड़े-बड़े	शोकाभ्याम्	६.	शोकातुर
जनः	४.	मनुष्य	तथापि	११.	फिर भी मैं
दैव	१.	भाग्य से	आज्ञाम्	१३.	आज्ञा का पालन
हतान्	२.	मारे हुये	करोमि	१४.	कर रहा हूँ
अपि ।	३.	भी	ते ।।	१२.	आपकी

श्लोकार्थ—भाग्य से मारे हुये भी मनुष्य बड़े-बड़े मनोरथों को करता है और हर्षित तथा शोकातुर होता है । फिर भी मैं आपकी आज्ञा का पालन कर रहा हूँ ।।

चत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— **एवमादिश्य चाक्रूरं मन्त्रिणश्च विसृज्य सः ।**
प्रविवेश गृहं कंसस्तथाक्रूरः स्वमालयम् ।।४०।।

पदच्छेद— एवम् आदिश्य च अक्रूरम् मन्त्रिणः च विसृज्य सः ।
प्रविवेश गृहम् कंसः तथा अक्रूरः स्वम् आलयम् ।।

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	प्रविवेश	१०.	प्रविष्ट हुआ
आदिश्य	२.	आदेश देकर	गृहम्	६.	घर में
च अक्रूरम्	३.	अक्रूर	कंसः	८.	कंस
मन्त्रिणः	५.	मन्त्रियों को	तथा	११.	तथा
च	४.	और	अक्रूरः	१२.	अक्रूर
विसृज्य	६.	बिदा करके	स्वम्	१३.	अपने
सः ।	७.	वह	आलयम् ।।	१४.	घर लौट आये

श्लोकार्थ—इस प्रकार आदेश देकर अक्रूर और मन्त्रियों को बिदा करके वह कंस घर में प्रविष्ट हुआ । तथा अक्रूर अपने घर लौट आये ।।

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे अक्रूर संप्रेषणम् नाम षट्त्रिंशः अध्यायः ।।३६।।

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्
दशमः स्कन्धः
सप्तत्रिंशः अध्यायः
प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—केशी तु कंसप्रहितः खुरैर्महीं महाहयो निर्जरयन् मनोजवः।
सटावधूताभ्रविमानसङ्कुलं कुर्वन् नभो हेषितभीषिताखिलः ।।१।।

पदच्छेद— केशी तु कंस प्रहितः खुरैः महीम् महाहयः निर्जरयन् मनोजवः।
सटावधूत अभ्रविमान सङ्कुलम् कुर्वन् नभः हेषित भीषित अखिलः ।।

शब्दार्थ—

केशी तु	२.	केशी नामक दैत्य	सटावधूत	९.	गरदन के बालों से
कंस प्रहितः	१.	कंस का भेजा हुआ	अभ्रविमान	१०.	बादलों और विमानों की
खुरैः	५.	खुरों से	सङ्कुलम्	११.	भीड़को तितर-बितर
महीम्	६.	पृथ्वी को	कुर्वन्	१२.	करता हुआ (अपनी)
महाहयः	३.	भारी घोड़े के रूप वाला	नभः	८.	आकाश को
निर्जरयन्	७.	खोदता हुआ	हेषित	१३.	हिनहिनाहट से
मनोजवः।	४.	मन के समान वेग से दौड़ता हुआ	भीषितअखिलः ।।	१४.	सब को डराता हुआ आ रहा था

श्लोकार्थ—कंस का भेजा हुआ केशी नामक दैत्य भारी घोड़े के रूप वाला, मन के समान वेग से दौड़ता हुआ, खुरों से पृथ्वी को खोदता हुआ, आकाश में गरदन के बालों से बादलों और विमानों की भीड़ को तितर-वितर करता हुआ अपनी हिनहिनाहट से सबको डराता हुआ आ रहा था।।

द्वितीयः श्लोकः

विशालनेत्रो विकटास्यकोटरो बृहद्गलो नीलमहाम्बुदोपमः।
दुराशयः कंसहितं चिकीर्षुर्व्रजं स नन्दस्य जगाम कम्पयन् ।।२।।

पदच्छेद— विशाल नेत्रः विकटास्य कोटरः बृहद्गलः नील महाम्बुदउपमः।
दुराशयः कंसहितं चिकीर्षुः व्रजं स नन्दस्य जगाम कम्पयन् ।।

शब्दार्थ—

विशालनेत्रः	१.	बड़ी-बड़ी आँखों वाला	दुराशयः	८.	दुष्ट चित्तवाला
विकटास्य	३.	विकट मुखवाला	कंसहितम्	९.	कंस का हित
कोटरः	२.	वृक्ष के खोडर जैसा	चिकीर्षुः	१०.	करने की इच्छा वाला
बृहत् गलः	५.	बड़ी गरदन वाला	व्रजम्	१३.	व्रज में
नील	४.	नीली	सः नन्दस्य	१२.	वह केशी नन्द के
महाअम्बुदः	६.	महामेघ के	जगाम	१४.	गया
उपमः।	७.	समान (शरीर वाला)	कम्पयन् ।।	११.	पृथ्वी को कँपाता हुआ

श्लोकार्थ—बड़ी बड़ी आँखों वाला, वृक्ष के खोडर जैसा विकट मुखवाला, नीली गरदन वाला, महामेघ के समान शरीर वाला, दुष्ट चित्तवाला, कंस का हित करने की इच्छा वाला, पृथ्वी को कँपाता हुआ वह केशी नन्द के व्रज में गया।

तृतीयः श्लोकः

तं त्रासयन्तं भगवान् स्वगोकुलं तद्धेषितैर्वालविघूर्णिताम्बुदम् ।
आत्मानमाजौ मृगयन्तमग्रणीरुपाह्वयत् स व्यनदन्मृगेन्द्रवत् ॥३॥

पदच्छेद — तम् त्रासयन्तम् भगवान् स्वगोकुलम् तत् हेषितैः वाल विघूर्णित अम्बुदम् ।
आत्मानम् आजौ मृगयन्तम् अग्रणीः उप आह्वयत् सः व्यनदत् मृगेन्द्रवत् ॥

शब्दार्थ—तम्	११.	उस केशी को	आत्मानम्	९.	अपने को
त्रासयन्तम्	४.	डराते हुये (तथा)	आजौ	८.	युद्ध में (अपने को)
भगवान्	१४.	भगवान् ने	मृगयन्तम्	१०.	ढूंढते हुये
स्वगोकुलम्	१.	अपने गोकुल को	अग्रणीः	१३.	अग्रगामी
तत्	२.	उस	उपआह्वयत्	१७.	ललकारा
हेषितैः	३.	हिनहिनाहट से	सः	१२.	उन
वाल	६.	बालों से	व्यनदत्	१६.	गरज कर
विघूर्णित	७.	तितर-बितर करते हुये	मृगेन्द्रवत् ॥	१५.	सिंह के समान
अम्बुदम् ।	५.	बादलों को			

श्लोकार्थ—अपने गोकुल को उस हिनहिनाहट से डराते हुये तथा बादलों को बालों से तितर-बितर करते हुये, युद्ध में अपने को ढूंढते हुये उस केशी को उन अग्रगामी भगवान् ने सिंह के समान गरज कर ललकारा ॥

चतुर्थः श्लोकः

स तं निशाम्याभिमुखो मुखेन खं पिबन्निवाभ्यद्रवदत्यमर्षणः ।
जघान पद्भ्यामरविन्दलोचनं दुरासदश्चण्डजवो दुरत्ययः ॥४॥

पदच्छेद— सः तम् निशाम्य अभिमुखः मुखेन खम् पिबन् इव अभ्यद्रवत् अतिअमर्षणः ।
जघान पद्भ्याम् अरविन्द लोचनम् दुरासदः चण्डजवः दुरत्ययः ॥

शब्दार्थ—सः तम्	२.	वह उन्हें (हिनहिनाहट)	अतिअमर्षणः ।	९.	अत्यन्त असहनीय
निशाम्य	३.	सुनाकर	जघान	१६.	मारी
अभिमुखः	१.	सामने होकर	पद्भ्याम्	१५.	पैरों से (दुलत्ती)
मुखेन	४.	मुँह से	अरविन्द	१३.	कमल के समान
खम्	६.	आकाश को	लोचनम्	१४.	नेत्रों वाले (भगवान् को)
पिबन्	७.	पीता हुआ	दुरासदः	११.	बड़ी कठिनाई से पकड़ने तथा
इव	५.	मानों	चण्डजवः	१०.	प्रचण्ड वेग वाले
अभ्यद्रवत्	८.	दौड़ा (फिर)	दुरत्ययः ॥	१२.	जीतने योग्य (दैत्य ने)

श्लोकार्थ—सामने होकर वह उन्हें हिनहिनाहट सुनाकर मुँह से मानों आकाश को पीता हुआ दौड़ा। फिर अत्यन्त असहनीय प्रचण्ड वेग वाले बड़ी कठिनाई से जीतने योग्य दैत्य ने कमल के समान नेत्रों वाले भगवान् को पैरों से दुलत्ती मारी ॥

पञ्चमः श्लोकः

तद् वञ्चयित्वा तमधोक्षजो रुषा प्रगृह्य दोर्भ्यां परिविध्य पादयोः ।
सावज्ञमुत्सृज्य धनुःशतान्तरे यथोरगं तार्क्ष्यसुतो व्यवस्थितः ॥५॥

पदच्छेद— तत् वञ्चयित्वा तम् अधोक्षजः रुषा प्रगृह्य दोर्भ्याम् परिविध्य पादयोः ।
स अवज्ञम् उत्सृज्य धनुः शत अन्तरे यथा उरगम् तार्क्ष्यसुतः व्यवस्थितः ॥

शब्दार्थ— तत्	१.	उससे	स अवज्ञम्	१२.	अपमान के साथ
वञ्चयित्वा	२.	बच कर	उत्सृज्य	१७.	फेंक कर
तम्	५.	उसके	धनुः	१४.	चार
अधोक्षजः	३.	इन्द्रियातीत भगवान् ने	शत	१५.	सौ हाथ की
रुषा	४.	क्रोध से	अन्तरे	१६.	दूरी पर
प्रगृह्य	११.	पकड़ कर और	यथा	८.	जैसे
दोर्भ्याम्	७.	दोनों हाथों से	उरगम्	१०.	साँप को पकड़ लेता है वैसे ही
परिविध्य	१३.	घुमा कर	तार्क्ष्यसुतः	९.	गरुड़
पादयोः ।	६.	पैरों को	व्यवस्थितः ॥	१८.	खड़े हो गये

श्लोकार्थ—उससे बच कर इन्द्रियातीत भगवान् ने क्रोध से उसके पैरों को दोनों हाथों से जैसे गरुड़ साँप को पकड़ लेता है वैसे ही पकड़ कर अपमान के साथ घुमा कर चार सौ हाथ की दूरी पर फेंक कर खड़े हो गये ॥

षष्ठः श्लोकः

स लब्धसंज्ञः पुनरुत्थितो रुषा व्यादाय केशी तरसाऽऽपतद्धरिम् ।
सोऽप्यस्य वक्त्रे भुजमुत्तरं स्मयन् प्रवेशयामास यथोरगं बिले ॥६॥

पदच्छेद— सः लब्ध संज्ञः पुनः उत्थितः रुषा व्यादाय केशी तरसा अपतत् हरिम् ।
सः अपि अस्य वक्त्रे भुजम् उत्तरम् स्मयन् प्रवेशयामास यथा उरगम् बिले ॥

शब्दार्थ—सः	१.	वह	सः अपि	११.	भगवान् ने भी
लब्ध	४.	प्राप्त होने पर	अस्य वक्त्रे	१२.	उसके मुँह में (अपना)
संज्ञः	३.	चेतना	भुजम्	१४.	हाथ
पुनः	५.	फिर	उत्तरम्	१३.	बाँया
उत्थितः रुषा	६.	उठ कर क्रोध से	स्मयन्	१०.	मुस्कराते हुये
व्यादाय	७	मुँह फैला कर	प्रवेशयामास	१५.	डाल दिया
केशी	२.	केशी	यथा	१६.	जैसे
तरसा अपतत्	९.	वेग से टूट पड़ा	उरगम्	१७.	साँप (निःसंकोच होकर)
हरिम् ।	८.	भगवान् श्रीकृष्ण पर	बिले ॥	१८.	बिल में (घुस जाता है)

श्लोकार्थ—वह केशी चेतना प्राप्त होने पर फिर उठ कर क्रोध से मुँह फैला कर भगवान् श्रीकृष्ण पर वेग से टूट पड़ा । भगवान् ने भी मुस्कराते हुये उसके मुँह में अपना बाँया हाथ डाल दिया जैसे साँप निःसंकोच होकर बिल में घुस जाता है ॥

सप्तमः श्लोकः

दन्ता निपेतुर्भगवद्भुजस्पृशस्ते केशिनस्तप्तमयः स्पृशो यथा ।
बाहुश्च तद्देहगतो महात्मनो यथाऽऽमयः संववृधे उपेक्षितः ।।७।।

पदच्छेद— दन्ताः निपेतुः भगवत् भुज स्पृशः ते केशिनः तप्तमयः स्पृशः यथा ।
बाहुः च तत् देहगतः महात्मनः यथा आमयः संववृधे उपेक्षितः ।।

शब्दार्थ—दन्ताः	४.	दाँत	बाहुः	११.	भुजा
निपेतुः	८.	गिर गये	च	९.	और
भगवद् भुज	१.	भगवान् की भुजा का	तत् देहगतः	१२.	उसके शरीर में घुसकर
स्पृशःते	२.	स्पर्श करने वाले उस	महात्मनः	१०.	महात्मा श्रीकृष्ण की
केशिनः	३.	केशी के	यथा	१४.	जैसे
तप्तमयः	६.	तपे हुये लोहे का	आमयः	१६.	जलोदर रोग (बढ़ जाता है)
स्पृशः	७.	स्पर्श करके	संववृधे	१३.	उसी प्रकार बढ़ने लगी
यथा ।	५.	मानों	उपेक्षितः ।।	१५.	उपेक्षा करने से

श्लोकार्थ—भगवान् की भुजा का स्पर्श करने वाले उस केशी के दाँत मानों तपे हुये लोहे का स्पर्श करके गिर गये । और महात्मा श्रीकृष्ण की भुजा उसके शरीर में घुस कर उसी प्रकार बढ़ने लगो जैसे उपेक्षा करने से जलोदर रोग बढ़ जाता है ।।

अष्टमः श्लोकः

समेधमानेन स कृष्णबाहुना निरुद्धवायुश्चरणांश्च विक्षिपन् ।
प्रस्विन्नगात्रः परिवृत्तलोचनः पपात लेण्डं विसृजन् क्षितौ व्यसुः ।।८।।

पदच्छेद— समेधमानेन सः कृष्ण बाहुना निरुद्ध वायुः चरणान् च विक्षिपन् ।
प्रस्विन्न गात्रः परिवृत्त लोचनः पपात लेण्डम् विसृजन् क्षितौ व्यसुः ।।

शब्दार्थ—

समेधमानेन	१.	बढ़ती हुई	प्रस्विन्न	१०.	पसीने से लथ-पथ हो गया
सः	३.	उसकी	गात्रः	९.	उसका शरीर
कृष्ण बाहुना	२.	श्रीकृष्ण की भुजा से	परिवृत्त	१२.	पुतलियाँ उलट गईं (वह)
निरुद्ध	५.	रुक गई	लोचनः	११.	आँखों की
वायुः	४.	साँस	पपात	१७.	गिर पड़ा
चरणान्	७.	पैरों को	लेण्डम्	१३.	मल
च	६.	और (वह)	विसृजन्	१४.	त्यागता हुआ
विक्षिपन् ।	८.	पटकने वाला	क्षितौ	१६.	पृथ्वी पर
			व्यसुः ।।	१५.	निष्प्राण होकर

श्लोकार्थ—बढ़ती हुई श्रीकृष्ण की भुजा से उसकी साँस रुक गई । और वह पैरों को पटकने लगा । उसका शरीर पसीने से लथ-पथ हो गया । आँखों की पुतलियाँ उलट गईं । और वह मल त्यागता हुआ निष्प्राण होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा ।।

नवमः श्लोकः

तद्देहतः कर्कटिकाफलोपमाद् व्यसोरपाकृष्य भुजं महाभुजः ।
अविस्मितोऽयत्नहतारिरुत्स्मयैः प्रसूनवर्षैर्दिविषद्भिरीडितः ॥९॥

पदच्छेद— तत् देहतः कर्कटिका फल उपमात् व्यसोः अपाकृष्य भुजम् महाभुजः ।
अविस्मितः अयत्न हत अरि उत्स्मयैः प्रसून वर्षैः दिविषद्भिः ईडितः ।।

शब्दार्थ—

तत्	६. उसके	अविस्मितः	१०. विस्मयरहित तथा
देहतः	७. शरीर से	अयत्न	११. बिना प्रयत्न के
कर्कटिका	३. ककड़ी के	हत	१३. मार देने वाले (भगवान् पर)
फल	४. फल के	अरि	१२. शत्रु का
उपमात्	५. समान (फटे हुये)	उत्स्मयैः	१४. आश्चर्य युक्त
व्यसोः	२. निष्प्राण (एवम्)	प्रसून	१६. फूलों की
अपाकृष्य	९. खींच ली (तब)	वर्षैः	१७. वर्षा और
भुजम्	८. अपनी भुजा	दिविषद्भिः	१५. देवगण
महाभुजः ।	१. महाबाहु श्रीकृष्ण ने	ईडितः ।।	१०. उनकी स्तुति करने लगे

श्लोकार्थ—महाबाहु श्रीकृष्ण ने निष्प्राण एवम् ककड़ी के फल के समान फटे हुये उसके शरीर से अपनी भुजा खींच ली । तब विस्मय रहित तथा बिना प्रयत्न के शत्रु को मार देने वाले भगवान् पर आश्चर्य युक्त देवगण फूलों की वर्षा और स्तुति करने लगे ।।

दशमः श्लोकः

देवर्षिरुपसङ्गम्य भागवतप्रवरो नृप ।
कृष्णमक्लिष्टकर्माणं रहस्येतदभाषत ॥१०॥

पदच्छेद— देवर्षिः उपसङ्गम्य भागवत प्रवरः नृप ।
कृष्णम् अक्लिष्ट कर्माणम् रहसि एतत् अभाषत ।।

शब्दार्थ—

देवर्षिः	४. देवर्षि नारद	अक्लिष्ट	५. अनायास अद्भुत
उपसङ्गम्य	८. मिलकर	कर्माणम्	६. कर्म करने वाले
भागवत	२. भगवान् के भक्तों में	रहसि	९. एकान्त में
प्रवरः	३. श्रेष्ठ	एतत्	१०. यह
नृप ।	१. हे राजन् !	अभाषत ।।	११. कहने लगे
कृष्णम्	७. श्रीकृष्ण से		

श्लोकार्थ—हे राजन् ! भगवान् के भक्तों में श्रेष्ठ देवर्षि नारद अनायास अद्भुत कर्म करने वाले श्रीकृष्ण से मिलकर एकान्त में यह कहने लगे ।।

एकादशः श्लोकः

कृष्ण कृष्णाप्रमेयात्मन् योगेश जगदीश्वर ।
वासुदेवाखिलावास सात्वतां प्रवर प्रभो ॥११॥

पदच्छेद— कृष्ण कृष्ण अप्रमेय आत्मन् योगेश जगदीश्वर ।
वासुदेव अखिल आवास सात्वताम् प्रवर प्रभो ।।

शब्दार्थ—

कृष्ण	१.	हे कृष्ण !	वासुदेव	७.	वसुदेवनन्दन
कृष्ण	२.	कृष्ण !	अखिल	८.	सब में
अप्रमेय	३.	मन और वाणी से परे	आवास	९.	निवास करने वाले
आत्मन्	४.	स्वरूप वाले	सात्वताम्	१०.	यदुवंशियों में
योगेश	५.	योग के ईश्वर	प्रवर	११.	श्रेष्ठ
जगदीश्वर ।	६.	संसार के स्वामी	प्रभो ।।	१२.	स्वामी

श्लोकार्थ—हे कृष्ण ! कृष्ण ! मन और वाणी से परे स्वरूप वाले ! योग के ईश्वर ! संसार के स्वामी, वसुदेवनन्दन, सब में निवास करने वाले, यदुवंशियों में श्रेष्ठ, प्रभो ! ।।

द्वादशः श्लोकः

त्वमात्मा सर्वभूतानामेको ज्योतिरिवैधसाम् ।
गूढो गुहाशयः साक्षी महापुरुष ईश्वरः ॥१२॥

पदच्छेद— त्वम् आत्मा सर्व भूतानाम् एकः ज्योतिः इव एधसाम् ।
गूढः गुहाशयः साक्षी महापुरुषः ईश्वरः ।।

शब्दार्थ—

त्वम्	१.	आप ही	एधसाम् ।	८.	सभी काष्ठों में रहता है
आत्मा	४.	आत्मा है	गूढः	९.	आप गुप्त
सर्व	२.	सभी	गुहाशयः	१०.	पञ्चकोश रूप गुफाओं के भीतर रहने वाले
भूतानाम्	३.	प्राणियों की	साक्षी	११.	सबके साक्षी
एकः	६.	एक ही	महापुरुषः	१२.	महापुरुष
ज्योतिः	७.	अग्नि	ईश्वरः ।।	१३.	ईश्वर हैं
इव	५.	जैसे			

श्लोकार्थ—आप ही सभी प्राणियों की आत्मा हैं। जैसे एक ही अग्नि सभी काष्ठों में रहता है उसी प्रकार आप गुप्त, पञ्चकोश गुफाओं के भीतर रहने वाले, सबके साक्षी, महापुरुष, ईश्वर हैं ।।

त्रयोदशः श्लोकः

आत्मनाऽऽत्माश्रयः पूर्वं मायया ससृजे गुणान् ।
तैरिदं सत्यसंकल्पः सृजस्यत्स्यवसीश्वरः ॥१३॥

पदच्छेद— आत्मना आत्म आश्रयः पूर्वम् मायया ससृजे गुणान् ।
तैः इदम् सत्य संकल्पः सृजसि अत्सि अवसि ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

आत्मना	१.	स्वयम्	तैः	१०.	उन्हीं गुणों के द्वारा
आत्म	२.	अपना	इदम्	११.	इस जगत् की
आश्रयः	३.	आश्रय बने आपने	सत्यसंकल्पः	८.	सत्यसंकल्प वाले और
पूर्वम्	४.	पहले	सृजसि	१२.	सृष्टि
मायया	५.	माया से	अत्सि	१४.	संहार करते हैं
ससृजे	७.	सृष्टि की (फिर)	अवसि	१३.	पालन और
गुणान् ।	६.	गुणों की	ईश्वरः ॥	९.	सर्वशक्तिमान् आप

श्लोकार्थ—स्वयम् अपना आश्रय बने आपने पहले माया से गुणों की सृष्टि की । फिर सत्य संकल्प वाले और सर्वशक्तिमान् आप उन्हीं गुणों के द्वारा इस जगत् की सृष्टि, पालन और संहार करते हैं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

स त्वं भूधरभूतानां दैत्यप्रमथरक्षसाम् ।
अवतीर्णो विनाशाय सेतूनां रक्षणाय च ॥१४॥

पदच्छेद— सः त्वम् भूधर भूतानाम् दैत्य प्रमथ रक्षसाम् ।
अवतीर्णः विनाशाय सेतूनाम् रक्षणाय च ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	वही	रक्षसाम् ।	७.	राक्षसों का
त्वम्	२.	आप	अवतीर्णः	१२.	अवतीर्ण हुये हैं
भूधर	३.	राजा	विनाशाय	८.	विनाश करने के लिये
भूतानाम्	४.	बने हुये	सेतूनाम्	१०.	धर्म की मर्यादाओं की
दैत्य	५.	दैत्यों	रक्षणाय	११.	रक्षा करने के लिये
प्रमथ	६.	प्रमथों (और)	च ॥	९.	तथा

श्लोकार्थ—वही आप राजा बने हुये दैत्यों, प्रमथों और राक्षसों का विनाश करने के लिये तथा धर्म की मर्यादाओं की रक्षा करने के लिये अवतीर्ण हुये हैं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

दिष्ट्या ते निहतो दैत्यो लीलयायं हयाकृतिः ।
यस्य हेषितसंत्रस्तास्त्यजन्त्यनिमिषा दिवम् ॥१५॥

पदच्छेद— दिष्ट्या ते निहतः दैत्यः लीलया अयम् हय आकृतिः ।
यस्य हेषित संत्रस्ताः त्यजन्ति अनिमिषाः दिवम् ॥

शब्दार्थ—

दिष्ट्या	१.	यह आनन्द की बात है कि	**यस्य**	५.	जिसकी
ते	११.	आपके द्वारा	**हेषित**	६.	हिनहिनाहट से
निहतः	१३.	मार डाला गया	**संत्रस्ताः**	७.	डरे हुये
दैत्यः	४.	दैत्य केशी	**त्यजन्ति**	१०.	त्याग दिया था
लीलया	१२.	खेल ही खेल में	**अनिमिषाः**	८.	देवताओं ने
अयम्	३.	वह	**दिवम् ॥**	९.	स्वर्ग को
हय आकृतिः ।	२.	घोड़े के आकार का			

श्लोकार्थ—यह आनन्द की बात है कि घोड़े के आकार का वह दैत्य केशी जिसकी हिनहिनाहट से डरे हुये देवताओं ने स्वर्ग को त्याग दिया था, आपके द्वारा खेल ही खेल में वह मार डाला गया ॥

षोडशः श्लोकः

चाणूरं मुष्टिकं चैव मल्लानन्यांश्च हस्तिनम् ।
कंसं च निहतं द्रक्ष्ये परश्वोऽहनि ते विभो ॥१६॥

पदच्छेद— चाणूरम् मुष्टिकम् च एव मल्लान् अन्यान् च हस्तिनम् ।
कंसम् च निहतम् द्रक्ष्ये परश्वः अहनि ते विभो ॥

शब्दार्थ—

चाणूरम्	३.	चाणूर	**कंसम्**	१०.	कंस को
मुष्टिकम्	४.	मुष्टिक	**च**	११.	भी
च एव	५.	तथा	**निहतम्**	१३.	मारे हुये
मल्लान्	९.	पहलवानों को और	**द्रक्ष्ये**	१४.	देखूँगा
अन्यान्	८.	दूसरे	**परश्वः अहनि**	२.	परसों दिन में
च	७.	और	**ते**	१२.	आपके द्वारा
हस्तिनम् ।	६.	हाथी (कुवलयापीड)	**विभो ॥**	१.	हे प्रभो !

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! परसों दिन में चाणूर, मुष्टिक तथा हाथी कुवलयापीड और दूसरे पहलवानों को और कंस को भी आपके द्वारा मारे हुये देखूँगा ॥

सप्तदशः श्लोकः

तस्यानु शङ्खयवनमुराणां नरकस्य च ।
पारिजातापहरणमिन्द्रस्य च पराजयम् ॥१७॥

पदच्छेद— तस्य अनु शङ्ख यवन मुराणाम् नरकस्य च ।
पारिजात अपहरणम् इन्द्रस्य च पराजयम् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१. उसके	च ।	७. और
अनु	२. बाद	पारिजात	८. कल्प वृक्ष का
शङ्ख	३. शङ्खासुर	अपहरणम्	९. अपहरण
यवन	४. कालयवन	इन्द्रस्य	११. इन्द्र की
मुराणाम्	५. मुर नामक दैत्य एवम्	च	१०. तथा
नरकस्य च	६. नरकासुर का	पराजयम् ॥	१२. पराजय (देखूंगा)

श्लोकार्थ—उसके बाद शङ्खासुर, कालयवन, मुर नामक दैत्य एवम् नरकासुर का और कल्पवृक्ष का अपहरण तथा इन्द्र की पराजय देखूंगा ॥

अष्टादशः श्लोकः

उद्वाहं वीरकन्यानां वीर्यशुल्कादिलक्षणम् ।
नृगस्य मोक्षणं पापाद् द्वारकायां जगत्पते ॥१८॥

पदच्छेद— उद्वाहम् वीर कन्यानाम् वीर्यं शुल्क आदि लक्षणम् ।
नृगस्य मोक्षणम् पापात् द्वारकायाम् जगत् पते ॥

शब्दार्थ—

उद्वाहम्	९. विवाह (तथा)	नृगस्य	१०. नृग का
वीर	७. वीर	मोक्षणम्	१३. छुटकारा देखूंगा
कन्यानाम्	८. कन्यायों का	पापात्	१२. पाप से
वीर्य	३. पराक्रम के	द्वारकायाम्	११. द्वारका में
शुल्क	४. शुल्क	जगत्	१. हे संसार के
आदि	५. आदि द्वारा	पते ॥	२. स्वामी !
लक्षणम् ।	६. होने वाला		

श्लोकार्थ—हे संसार के स्वामी ! पराक्रम के शुल्क आदि द्वारा होने वाला वीर कन्यायों का विवाह तथा नृग का द्वारका में पाप से छुटकारा देखूंगा ॥

एकोनविंशः श्लोकः

स्यमन्तकस्य च मणेरादानं सह भार्यया।
मृतपुत्रप्रदानं च ब्राह्मणस्य स्वधामतः ॥१९॥

पदच्छेद— स्यमन्तकस्य च मणेः आदानम् सह भार्यया।
मृत पुत्र प्रदानम् च ब्राह्मणस्य स्वधामतः ॥

शब्दार्थ—

स्यमन्तकस्य	४. स्यमन्तक	**मृत**	९. मरे हुये
च	१. और	**पुत्र**	१०. पुत्रों का
मणेः	५. मणि का	**प्रदानम्**	१२. लाकर देना (देखूँगा)
आदानम्	६. ग्रहण करना	**च**	७. तथा
सह	३. सहित	**ब्राह्मणस्य**	८. ब्राह्मण को
भार्यया।	२. पत्नी (सत्यभामा)	**स्वधामतः ॥**	११. अपने धाम से

श्लोकार्थ—और पत्नी सत्यभामा सहित स्यमन्तक मणि का ग्रहण करना। तथा ब्राह्मण को मरे हुये पुत्रों का अपने धाम से लाकर देना देखूँगा ॥

विंशः श्लोकः

पौण्ड्रकस्य वधं पश्चात् काशिपुर्याश्च दीपनम्।
दन्तवक्त्रस्य निधनं चैद्यस्य च महाक्रतौ ॥२०॥

पदच्छेद— पौण्ड्रकस्य वधम् पश्चात् काशीपुर्यान् च दीपनम्।
दन्तवक्त्रस्य निधनम् चैद्यस्य च महा क्रतौ ॥

शब्दार्थ—

पौण्ड्रकस्य	२. पौण्ड्रक का	**दन्तवक्त्रस्य**	११. दन्तवक्त्र की
बधम्	३. बध	**निधनम्**	१२. मृत्यु (देखूँगा)
पश्चात्	१. उसके बाद	**चैद्यस्य**	९. शिशुपाल
काशीपुर्याः	५. काशी पुरी का	**च**	१०. और
च	४. और	**महा**	७. महान्
दीपनम्।	६. दहन (तथा)	**क्रतौ ॥**	८. यज्ञ में

श्लोकार्थ—उसके बाद पौण्ड्रक का वध और काशी पुरी का दहन तथा महान् यज्ञ में शिशुपाल और दन्तवक्त्र की मृत्यु देखूँगा ॥

एकविंशः श्लोकः

यानि चान्यानि वीर्याणि द्वारकामावसन् भवान् ।
कर्ता द्रक्ष्याम्यहं तानि गेयानि कविभिर्भुवि ॥२१॥

पदच्छेद— यानि च अन्यानि वीर्याणि द्वारकाम् आवसन् भवान् ।
कर्ता द्रक्ष्यामि अहम् तानि गेयानि कविभिः भुवि ॥

शब्दार्थ—

यानि	४. जो	कर्ता	८. कार्य करेंगें (जिन्हें)
च	५. और	द्रक्ष्यामि	१४. देखूंगा
अन्यानि	६. दूसरे	अहम्	१२. मैं
वीर्याणि	७. पराक्रम का	तानि	१३. उन्हें (भी)
द्वारकाम्	१. द्वारका में	गेयानि	११. गायेंगे
आवसन्	२. रहते हुये	कविभिः	१०. कवि लोग
भवान् ।	३. आप	भुवि ॥	९. पृथ्वी पर

श्लोकार्थ—द्वारका में रहते हुये आप जो और दूसरे पराक्रम का कार्य करेंगे, जिन्हें पृथ्वी पर कवि लोग गायेंगे, मैं उन्हें भी देखूंगा ॥

द्वाविंशः श्लोकः

अथ ते कालरूपस्य क्षपयिष्णोरमुष्य वै ।
अक्षौहिणीनां निधनं द्रक्ष्याम्यर्जुनसारथेः ॥२२॥

पदच्छेद— अथ ते काल रूपस्य क्षपयिष्णोः अमुष्य वै ।
अक्षौहिणीनाम् निधनम् द्रक्ष्यामि अर्जुन सारथेः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१. उसके बाद	अक्षौहिणीनाम्	९. अक्षोहिणी सेनाओं का
ते	८. आपके द्वारा	निधनम्	१०. संहार
कालस्वरूप	५. कालरूप में	द्रक्ष्यामि	११. देखूंगा
क्षपयिष्णोः	४. भार उतारने के लिये	अर्जुन	६. अर्जुन के
अमुष्य	३. इस पृथ्वी का	सारथेः ॥	७. सारथी बनेहुये
वै ।	२. निश्चित रूप से		

श्लोकार्थ—इसके बाद निश्चित रूप से इस पृथ्वी का भार उतारने के लिये काल रूप में अर्जुन के सारथी बने हुये आपके द्वारा अक्षौहिणी सेनाओं का संहार देखूंगा ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

विशुद्धविज्ञानघनं स्वसंस्थया समाप्तसर्वार्थममोघवाञ्छितम् ।
स्वतेजसा नित्यनिवृत्तमायागुणप्रवाहं भगवन्तमीमहि ॥२३॥

पदच्छेद — विशुद्ध विज्ञान घनम् स्वसंस्थया समाप्त सर्वार्थम् अमोघ वाञ्छितम् ।
स्वतेजसा नित्य निवृत्त मायागुण प्रवाहम् भगवन्तम् ईमहि ॥

शब्दार्थ —

विशुद्ध	१.	आप विशुद्ध	स्वतेजसा	८.	अपने तेज से
विज्ञानघनम्	२.	विज्ञान घन हैं	नित्य	११.	नित्य
स्वसंस्थया	३.	आपकी महिमा से ही	निवृत्त	१२.	निवृत्त किये हुये
समाप्त	५.	आपको प्राप्त हैं	माया	९.	माया के
सर्वार्थम्	४.	सारे पदार्थ	गुण प्रवाहम्	१०.	गुणों के प्रवाह को
अमोघ	७.	अमोघ हैं	भगवन्तम्	१३.	भगवान् की मैं
वाञ्छितम् ।	६.	आपका संकल्प	ईमहि ॥	१४.	शरण ग्रहण करता हूँ

श्लोकार्थ—आप विशुद्ध विज्ञान घन हैं । आपकी महिमा से ही सारे पदार्थ आपको प्राप्त हैं । आपका संकल्प अमोघ है । अपने तेज से माया के गुणों के प्रवाह को नित्यनिवृत्त किये हुये भगवान् को मैं शरण ग्रहण करता हूँ ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

त्वामीश्वरं स्वाश्रयमात्ममायया विनिर्मिताशेषविशेषकल्पनम् ।
क्रीडार्थमद्यात्तमनुष्यविग्रहं नतोऽस्मि धुर्यं यदुवृष्णिसात्वताम् ॥२४॥

पदच्छेद— त्वाम् ईश्वरम् स्व आश्रयम् आत्ममायया विनिर्मित अशेष विशेष कल्पनम् ।
क्रीडार्थम् अद्य आत्तमनुष्य विग्रहम् नतः अस्मि धुर्यम् यदुवृष्णि सात्वताम् ॥

शब्दार्थ—

त्वाम्	१४.	आप	क्रीडार्थम्	७.	क्रीडा के लिये
ईश्वरम्	१५.	ईश्वर को	अद्य	८.	आज
स्वआश्रयम्	१.	अपने आप में स्थित	आत्तमनुष्य	९.	मनुष्य का
आत्ममायया	२.	अपनी माया से	विग्रहम्	१०.	शरीर स्वीकार करने वाले
विनिर्मितः	६.	रचना करने वाले	नतः अस्मि	१६.	मैं नमस्कार करता हूँ
अशेष	३.	अशेष (और)	धुर्यम्	१३.	शिरोमणि
विशेष	४.	विशेष	यदुवृष्णि	११.	यदुवृष्णि
कल्पनम् ।	५.	कल्पनाओं की	सात्वताम् ॥	१२.	सात्वत वंशियों के

श्लोकार्थ—अपने आप में स्थित अपनी माया से अशेष और विशेष कल्पनाओं की रचना करने वाले क्रीडा के लिये आज मनुष्य का शरीर स्वीकार करने वाले यदु, वृष्णि तथा सात्वत वंशियों के शिरोमणि आप ईश्वर को मैं नमस्कार करता हूँ ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— एवं यदुपतिं कृष्णं भागवतप्रवरो मुनिः ।
प्रणिपत्याभ्यनुज्ञातो ययौ तद्दर्शनोत्सवः ॥२५॥

पदच्छेद— एवम् यदुपतिम् कृष्णम् भागवत प्रवरः मुनिः ।
प्रणिपत्य अभ्यनुज्ञातः ययौ तत् दर्शन उत्सवः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	४. इस प्रकार	प्रणिपत्य	७. प्रणाम करके (और)
यदुपतिम्	५. यदुवंशियों के स्वामी	अभ्यनुज्ञातः	८. आज्ञा लेकर
कृष्णम्	६. कृष्ण को	ययौ	१२. चले गये
भागवत	१. भगवद्भक्तों में	तत्	९. उनके
प्रवरः	२. श्रेष्ठ	दर्शन	१०. दर्शन से
मुनिः ।	३. नारद मुनि	उत्सवः ॥	११. आह्लादित होते हुये

श्लोकार्थ—भगवद्भक्तों में श्रेष्ठ नारद मुनि इस प्रकार यदुवंशियों के स्वामी कृष्ण को प्रणाम करके और आज्ञा लेकर उनके दर्शन से आह्लादित होते हुये चले गये ॥

षड्विंशः श्लोकः

भगवानपि गोविन्दो हत्वा केशिनमाहवे ।
पशूनपालयत् पालैः प्रीतैर्व्रजसुखावहः ॥२६॥

पदच्छेद— भगवान् अपि गोविन्दः हत्वा केशिनम् आहवे ।
पशून् अपालयत् पालैः प्रीतैः व्रज सुख आवहः ॥

शब्दार्थ—

भगवान्	६. भगवान्	पशून्	११. पशुओं के
अपि	८. भी	अपालयत्	१२. पालन में लग गये
गोविन्दः	७. गोविन्द	पालैः	१०. ग्वाल वालों के साथ
हत्वा	३. मारकर	प्रीतैः	९. प्रेमी
केशिनम्	२. केशी को	व्रज	४. व्रजवासियों को
आहवे ।	१. युद्ध में	सुख आवहः ॥	५. सुख देने वाले

श्लोकार्थ—युद्ध में केशी को मार कर व्रजवासियों को सुख देने वाले भगवान् गोविन्द भी प्रेमी ग्वाल-वालों के साथ पशुओं के पालन में लग गये ॥

सप्तविंशः श्लोकः

एकदा ते पशून् पालाश्चारयन्तोऽद्रिसानुषु ।
चक्रुर्निलायनक्रीडाश्चोरपालापदेशतः ॥२७॥

पदच्छेद— एकदा ते पशून् पालाः चारयन्तः अद्रि सानुषु ।
चक्रुः निलायन क्रीडाः चोर पाल अपदेशतः ॥

शब्दार्थ—

एकदा	१.	एक बार	चक्रुः	१३.	खेल रहे थे
ते	२.	वे	निलायन	८.	छिपने-छिपाने का
पशून्	६.	पशुओं को	क्रीडाः	९.	खेल (लुका-छिपी)
पालाः	३.	ग्वाल-वालों के साथ	चोर	१०.	चोर (और)
चारयन्तः	७.	चराते हुये	पाल	११.	रक्षक के
अद्रि	४.	पहाड़ की	अपदेशतः ॥	१२.	बहाने
सानुषु ।	५.	चोटियों पर			

श्लोकार्थ—एक बार वे ग्वाल-वालों के साथ पहाड़ की चोटियों पर पशुओं को चराते हुये छिपने-छिपाने का खेल लुका-छिपी चोर और रक्षक के बहाने खेल रहे थे ।

अष्टाविंशः श्लोकः

तत्रासन् कतिचिच्चोराः पालाश्च कतिचिन्नृप ।
मेषायिताश्च तत्रैके विजह्रुरकुतोभयाः ॥२८॥

पदच्छेद— तत्र आसन् कतिचित् चोराः पालाः च कतिचित् नृप ।
मेषायिताः च तत्र एके विजह्रुः अकुतः भयाः ॥

शब्दार्थं—

तत्र	२.	उनमें से	मेषायिताः	१०.	भेड़ के समान (आचरण करते हुये)
आसन्	७.	बन गये थे	च तत्र	८.	तथा उसमें से
कतिचित्	३.	कुछ लोग	एके	९.	कोई
चोराः	४.	चोर	विजह्रुः	१३.	विहार कर रहे थे
पालाः	६.	रक्षक	अकुतः	१२.	रहित होकर
च कतिचित्	५.	और कुछ	भयाः ॥	११.	भय से
नृप ।	१.	हे राजन्			

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उनमें से कुछ लोग चोर और कुछ रक्षक बने हुये थे । तथा उनमें से कोई भेड़ के समान आचरण करते हुये भय से रहित होकर विहार कर रहे थे ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

मयपुत्रो महामायो व्योमो गोपालवेषधृक् ।
मेषायितानपोवाह प्रायश्चोरायितो बहून् ॥२९॥

पदच्छेद— मय पुत्रः महामायः व्योमः गोपाल वेषधृक् ।
मेषायितान् अपोवाह प्रायः चोरायितः बहून् ॥

शब्दार्थ—

मय	१.	मय दानव का	मेषायितान्	९.	भेड़ बने हुये
पुत्रः	२.	पुत्र	अपोवाह	११.	चुरा कर छिपा आता
महामायः	३.	महान् मायावी	प्रायः	७.	बहुधा
व्योमः	४.	व्योमासुर	चोरायितः	८.	चोर बनता और
गोपाल	५.	ग्वाल का	बहून् ॥	१०.	बहुत से बालकों को
वेषधृक् ।	६.	वेष धारण करके			

श्लोकार्थ—मय दानव का पुत्र महान् मायावी व्योमासुर ग्वाल का वेषधारण करके बहुधा चोर बनता और भेड़ बने हुये बहुत से बालकों को चुराकर छिपा आता ॥

त्रिंशः श्लोकः

गिरिदर्यां विनिक्षिप्य नीतं नीतं महासुरः ।
शिलया पिदधे द्वारं चतुःपञ्चावशेषिताः ॥३०॥

पदच्छेद— गिरिदर्याम् विनिक्षिप्य नीतम् नीतम् महाअसुरः ।
शिलया पिदधे द्वारम् चतुः पञ्च अवशेषिताः ॥

शब्दार्थ—

गिरि	४.	पहाड़ की	शिलया	७.	चट्टान से (उसके)
दर्याम्	५.	गुफा में	पिदधे	९.	बन्दकर देता (अतः)
विनिक्षिप्य	६.	छोड़ देता (और)	द्वारम्	८.	दरवाजे को
नीतम्	२.	(बालकों को) ले	चतुः	१०.	उनमें से चार
नीतम्	३.	ले जाकर	पञ्च	११.	पाँच ही
महाअसुरः ।	१.	वह महान् असुर	अवशेषिताः ॥	१२.	शेष रह गये

श्लोकार्थ—वह महान् असुर बालकों को ले ले जाकर पहाड़ की गुफा में छोड़ देता । और चट्टान से उसके दरवाजे को बन्द कर देता । अतः उनमें से चार पाँच ही शेष रह गये ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

तस्य तत् कर्म विज्ञाय कृष्णः शरणदः सताम् ।
गोपान् नयन्तं जग्राह वृकं हरिरिवौजसा ॥३१॥

पदच्छेद— तस्य तत् कर्म विज्ञाय कृष्णः शरणदः सताम् ।
गोपान् नयन्तम् जग्राह वृकम् हरिः इव ओजसा ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१. उसका	गोपान्	८. ग्वाल वालों को
तत्	२. वह	नयन्तम्	९. ले जाते हुये (उसे)
कर्म	३. कर्म	जग्राह	११. पकड़ लिया
विज्ञाय	४. जानकर	वृकम्	१४. भेड़िये को (पकड़ लेता है)
कृष्णः	७. श्रीकृष्ण ने	हरिः	१३. सिंह
शरणदः	६. शरण देने वाले	इव	१२. जैसे
सताम् ।	५. सज्जनों को	ओजसा ॥	१०. अपने पराक्रम से

श्लोकार्थ—उसका वह कर्म जानकर सज्जनों को शरण देने वाले श्रीकृष्ण ने ग्वाल वालों को ले जाते हुये उसे अपने पराक्रम से पकड़ लिया । जैसे सिंह भेड़िये को पकड़ लेता है ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

स निजं रूपमास्थाय गिरीन्द्रसदृशं बली ।
इच्छन् विमोक्तुमात्मानं नाशक्नोद् ग्रहणातुरः ॥३२॥

पदच्छेद— सः निजम् रूपम् आस्थाय गिरीन्द्र सदृशम् बली ।
इच्छन् विमोक्तुम् आत्मानम् न अशक्नोत् ग्रहण आतुरः ॥

शब्दार्थ—

सः	३. वह	इच्छन्	१२. चाहता हुआ भी
निजम्	७. अपना	विमोक्तुम्	११. छुड़ाने के लिये
रूपम्	८. रूप	आत्मानम्	१०. अपने को
आस्थाय	९. बनाकर	न	१३. नहीं
गिरीन्द्र	५. बड़े पहाड़ के	अशक्नोत्	१४. छुड़ा सका
सदृशम्	६. समान	ग्रहण	१. पकड़ने से
बली ।	४. बलवान् (दैत्य)	आतुरः ॥	२. व्याकुल

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण के पकड़ने से व्याकुल वह बलवान् दैत्य बड़े पहाड़ के समान अपना रूप बनाकर अपने को छुड़ाने के लिये चाहता हुआ भी नहीं छुड़ा सका ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तं निगृह्याच्युतो दोर्भ्यां पातयित्वा महीतले ।
पश्यतां दिवि देवानां पशुमारममारयत् ।।३३।।

पदच्छेद— तम् निगृह्य अच्युतः दोर्भ्याम् पातयित्वा महीतले ।
पश्यताम् दिवि देवानाम् पशुमारम् अमारयत् ।।

शब्दार्थ—

तम्	३.	उसे	पश्यताम्	९.	देखते ही देखते
निगृह्य	४.	पकड़ कर	दिवि	७.	आकाश में
अच्युतः	१.	श्रीकृष्ण ने	देवानाम्	८.	देवताओं के
दोर्भ्याम्	२.	दोनों हाथों से	पशुमारम्	१०.	पशु की भाँति मार-मार कर
पातयित्वा	६.	गिरा दिया (और)	अमारयत् ।।	११.	मार दिया
महीतले ।	५.	भूमि पर			

श्लोकार्थ— भगवान् श्रीकृष्ण ने दोनों हाथों से उसे पकड़ कर भूमि पर गिरा दिया और आकाश में देवताओं के देखते ही देखते पशु की भाँति मार-मार कर मार दिया ।।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

गुहापिधानं निर्भिद्य गोपान् निःसार्य कृच्छ्रतः ।
स्तूयमानः सुरैर्गोपैः प्रविवेश स्वगोकुलम् ।।३४।।

पदच्छेद— गुहा पिधानम् निर्भिद्य गोपान् निःसार्य कृच्छ्रतः ।
स्तूयमानः सुरैः गोपैः प्रविवेश स्व गोकुलम् ।।

शब्दार्थ—

गुहा	१.	गुफा के	स्तूयमानः	९.	स्तुति किये जाते हुये
पिधानम्	२.	ढक्कन को	सुरैः	७.	देवताओं (एवम्)
निर्भिद्य	३.	तोड़ कर	गोपैः	८.	ग्वाल-वालों द्वारा
गोपान्	५.	ग्वाल-वालों को	प्रविवेश	१२.	चले आये
निःसार्य	६.	निकाल कर	स्व	१०.	अपने
कृच्छ्रतः ।	४.	संकट पूर्ण स्थान से	गोकुलम् ।।	११.	गोकुल में

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण गुफा के ढक्कन को तोड़ कर संकट पूर्ण स्थान से ग्वाल-वालों को निकाल कर देवताओं एवम् ग्वाल-वालों द्वारा स्तुति किये जाते हुये अपने गोकुल में चले आये ।।

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
व्योमासुरवधो नाम सप्तत्रिंशः अध्यायः ।।३७।।

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

अष्टात्रिंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—अक्रूरोऽपि च तां रात्रिं मधुपुर्यां महामतिः ।
उषित्वा रथमास्थाय प्रययौ नन्दगोकुलम् ॥१॥

पदच्छेद— अक्रूरः अपि च ताम् रात्रिम् मधुपुर्याम् महामतिः ।
उषित्वा रथम् आस्थाय प्रययौ नन्द गोकुलम् ॥

शब्दार्थ—

अक्रूरः	२.	अक्रूर जी	उषित्वा	७.	बिता कर
अपि च	३.	भी	रथम्	८.	रथ पर
ताम्	४.	उस	आस्थाय	९.	सवार होकर
रात्रिम्	५.	रात को	प्रययौ	१२.	चल पड़े
मधुपुर्याम्	६.	मधुपुरी में	नन्द	१०.	नन्द जी के
महामतिः ।	१.	महाबुद्धिमान्	गोकुलम् ॥	११.	गोकुल की ओर

श्लोकार्थ—महाबुद्धिमान् अक्रूर जी भी उस रात को मधुपुरी में ही बिता कर रथ पर सवार होकर नन्द जी के गोकुल की ओर चल पड़े ॥

द्वितीयः श्लोकः

गच्छन् पथि महाभागो भगवत्यम्बुजेक्षणे ।
भक्तिं परामुपगत एवमेतदचिन्तयत् ॥२॥

पदच्छेद— गच्छन् पथि महाभागः भगवति अम्बुज ईक्षणे ।
भक्तिम् पराम् उपगतः एवम् एतत् अचिन्तयत् ॥

शब्दार्थ—

गच्छन्	२.	जाते हुये	भक्तिम्	८.	भक्ति
पथि	१.	मार्ग में	पराम्	७.	परम
महाभागः	३.	महाभाग्यवान् अक्रूर जी	उपगतः	९.	प्राप्त करके
भगवति	६.	भगवान् में	एवम्	१०.	इस प्रकार
अम्बुज	४.	कमल	एतत्	११.	यह
ईक्षणे ।	५.	नयन	अचिन्तयत् ॥	१२.	सोचने लगे

श्लोकार्थ—मार्ग में जाते हुये महाभाग्यवान् अक्रूर जी कमल नयन भगवान् में परम भक्ति प्राप्त करके इस प्रकार यह सोचने लगे ॥

तृतीयः श्लोकः

किं मयाऽऽचरितं भद्रं किं तप्तं परमं तपः।
किं वाथाप्यर्हते दत्तं यद् द्रक्ष्याम्यद्य केशवम् ॥३॥

पदच्छेद— किम् मया आचरितम् भद्रम् किम् तप्तम् परमम् तपः।
किम् वा अथापि अर्हते दत्तम् यद् द्रक्ष्यामि अद्य केशवम् ॥

शब्दार्थ—

किम मया	१. मैंने क्या	किम् वा	८. अथवा
आचरितम्	२. अच्छा कार्य किया है	अथापि	९. कौन सा
भद्रम्	४. शुभ कर्म किया है	अर्हते	१०. सत्पात्र को
किम्	३. कौन सा	दत्तम्	११. दान दिया है
तप्तम्	७. किया है	यद्	१२. जो
परमम्	५. श्रेष्ठ	द्रक्ष्यामि	१४. देखूंगा
तपः।	६. तप	अद्य केशवम् ॥	१३. आज भगवान् को

श्लोकार्थ—मैंने क्या अच्छा कार्य किया है। कौन सा शुभकर्म किया है। वा श्रेष्ठ तप किया है। अथवा कौन सा सत्पात्र को दान दिया है। जो आज भगवान् को देखूंगा।

चतुर्थः श्लोकः

ममैतद् दुर्लभं मन्य उत्तमश्लोकदर्शनम्।
विषयात्मनो यथा ब्रह्मकीर्तनं शूद्र जन्मनः ॥४॥

पदच्छेद — मम एतद् दुर्लभम् मन्ये उत्तम श्लोक दर्शनम्।
विषय आत्मनः यथा ब्रह्म कीर्तनम् शूद्र जन्मनः ॥

शब्दार्थ—

मम	२. मुझ	विषय	३. विषयासक्त
एतद्	५. यह	आत्मनः	४. आत्मा के लिए
दुर्लभम्	८. दुर्लभ है	यथा	९. जैसे
मन्ये	१. मैं मानता हूँ कि	ब्रह्म कीर्तनम्	१२. वेदों का कीर्तन दुर्लभ होता है
उत्तमश्लोक	६. भगवान् का	शूद्र	१०. शूद्र कुल में
दर्शनम्।	७. दर्शन	जन्मनः ॥	११. उत्पन्न मनुष्य के लिये

श्लोकार्थ—मैं मानता हूँ कि मुझ विषयासक्त आत्मा के लिये यह भगवान् का दर्शन दुर्लभ है। जैसे शूद्र कुल में उत्पन्न मनुष्य के लिये वेदों का कीर्तन दुर्लभ होता है ॥

पञ्चमः श्लोकः

मैवं ममाधमस्यापि स्यादेवाच्युतदर्शनम् ।
ह्रियमाणः कालनद्या क्वचित्तरति कश्चन ॥५॥

पदच्छेद— मा एवम् मम अधमस्य अपि स्यात् एव अच्युत दर्शनम् ।
ह्रियमाणः काल नद्या क्वचित् तरति कश्चन ॥

शब्दार्थ—

मा एवम्	१.	ऐसा नहीं	**ह्रियमाणः**	६.	बहता हुआ
मम अधमस्य	२.	मुझ अधम को	**काल**	७.	समय के
अपि	३.	भी	**नद्या**	८.	प्रवाह में
स्यात् एव	६.	होगा ही	**क्वचित्**	११.	कहीं (संसार सागर को)
अच्युत	४.	भगवान् का	**तरति**	१२.	पार कर लेता है
दर्शनम् ।	५.	दर्शन	**कश्चन ॥**	१०.	कोई

श्लोकार्थ—ऐसा नहीं, मुझ अधम को भी भगवान् का दर्शन होगा ही । समय के प्रवाह में बहता हुआ कोई कहीं संसार सागर को पार कर लेता है ।

षष्ठः श्लोकः

ममाद्यामङ्गलं नष्टं फलवांश्चैव मे भवः ।
यन्नमस्ये भगवतो योगिध्येयाङ्घ्रिपङ्कजम् ॥६॥

पदच्छेद-- मम अद्य अमङ्गलम् नष्टम् फलवान् च एव मे भवः ।
यत् नमस्ये भगवतः योगि ध्येय अङ्घ्रि पंकजम् ॥

शब्दार्थ—

मम	२.	मेरा	**यत्**	८.	जो मैं
अद्य	१.	आज	**नमस्ये**	१४.	नमस्कार करूँगा
अमङ्गलम्	३.	अशुभ	**भगवतः**	११.	भगवान् के
नष्टम्	४.	नष्ट हो गया	**योगि**	९.	योगियों के द्वारा
फलवान्	७.	सफल हो गया	**ध्येय**	१०.	ध्यान करने योग्य
च एव	५.	और	**अङ्घ्रि**	१२.	चरण
मे भवः ।	६.	मेरा जन्म भी	**पंकजम् ॥**	१३.	कमल को

श्लोकार्थ—आज मेरा अशुभ नष्ट हो गया । और मेरा जन्म भी सफल हो गया । जो मैं योगियों के द्वारा ध्यान करने योग्य भगवान् के चरण कमल को नमस्कार करूँगा ॥

सप्तमः श्लोकः

कंसो बताद्याकृत मेऽत्यनुग्रहं द्रक्ष्येऽङ्घ्रिपद्मं प्रहितोऽमुना हरेः ।
कृतावतारस्य दुरत्ययं तमः पूर्वेऽतरन् यन्नखमण्डलत्विषा ॥७॥

पदच्छेद— कंसः बत अद्य अकृत मे अति अनुग्रहम् द्रक्ष्ये अङ्घ्रिपद्मम् प्रहितः अमुना हरेः ।
कृत अवतारस्य दुरत्ययम् तमः पूर्वे अतरन् यत् नख मण्डल त्विषा ॥

शब्दार्थ—

कंसः बत	१. अहा ! कंस ने	कृत	८. धारण किये हुये
अद्य	२. आज	अवतारस्य	७. पृथ्वी पर अवतार
अकृत	५. की (क्योंकि)	दुरत्ययम्	१६. अपार
मे अति	३. मेरे ऊपर बड़ी	तमः	१७. अन्धकार को
अनुग्रहम्	४. कृपा	पूर्वे अतरन्	१८. पहले के ऋषि महर्षि पार कर चुके हैं
द्रक्ष्ये	११. दर्शन करूँगा	यत्	१२. जिसके
अङ्घ्रिपद्मम्	१०. चरण कमल का	नख	१३. नख
प्रहितः अमुना	६. उसी के भेजने से	मण्डल	१४. मण्डल की
हरेः ।	९. भगवान् श्रीकृष्ण के	त्विषा ॥	१५. कान्ति से

श्लोकार्थ—अहा ! कंस ने आज मेरे ऊपर बड़ी कृपा की । क्योंकि उसी के भेजने से पृथ्वी पर अवतार धारण किये हुये भगवान् श्रीकृष्ण के चरण कमल का दर्शन करूँगा । जिसके नख मण्डल की कान्ति से अपार अन्धकार को पहले के ऋषि-महर्षि पार कर चुके हैं ॥

अष्टमः श्लोकः

यदर्चितं ब्रह्मभवादिभिः सुरैः श्रिया च देव्या मुनिभिः ससात्वतैः ।
गोचारणायानुचरैश्चरद्वने यद् गोपिकानां कुचकुङ्कुमाङ्कितम् ॥८॥

पदच्छेद— यत् अर्चितम् ब्रह्मभव आदिभिः सुरैः श्रिया च देव्या मुनिभिः स सात्वतैः ।
गोचारणाय अनुचरैः चरत् वने यत् गोपिकानाम् कुचकुङ्कुम अङ्कितम् ॥

शब्दार्थ—

यत्	६. जिनके चरणों की	गोचारणाय	१२. गौओं को चराने के लिये
अर्चितम्	७. अर्चना करते हैं (और)	अनुचरैः	१३ ग्वाल-वालों के साथ
ब्रह्मभव आदिभिः	१. ब्रह्मा शंकर आदि	चरत् वने	१४. वन में विचरते हैं
सुरैः	२. देवता	यत्	८. जो (चरण)
श्रिया च देव्या	३. लक्ष्मीदेवी और	गोपिकानाम्	९. गोपियों के
मुनिभिः	५. मुनिगण	कुचकुङ्कुम	१०. स्तनों पर लगे हुये कुङ्कुमों से
स सात्वतैः ।	४. भक्तों के साथ	अङ्कितम् ॥	११. रंग जाते हैं (वे ही चरण)

श्लोकार्थ—ब्रह्मा, शंकर आदि देवता, लक्ष्मीदेवी और भक्तों के साथ मुनिगण जिनके चरणों की अर्चना करते हैं और जो चरण गोपियों के स्तनों पर लगे हुये कुङ्कुमों से रंग जाते हैं वे ही चरण गौओं को चराने के लिये ग्वाल-वालों के साथ वन में विचरते हैं ॥

नवमः श्लोकः

द्रक्ष्यामि नूनं सुकपोलनासिकं स्मितावलोकारुणकञ्जलोचनम् ।
मुखं मुकुन्दस्य गुडालकावृतं प्रदक्षिणं मे प्रचरन्ति वै मृगाः ॥९॥

पदच्छेद— द्रक्ष्यामि नूनम् सुकपोल नासिकम् स्मित अवलोक अरुण कञ्ज लोचनम् ।
मुखम् मुकुन्दस्य गुड अलक आवृतम् प्रदक्षिणम् मे प्रचरन्ति वै मृगाः ॥

शब्दार्थ—

द्रक्ष्यामि	१२.	देखूंगा	मुखम्	१०.	मुख को
नूनम्	११.	निश्चय ही मैं	मुकुन्दस्य	९.	भगवान् श्रीकृष्ण के
सुकपोल	१.	सुन्दर कपोल	गुड अलक	७.	घुघराले बालों से
नासिकम्	२.	नासिका	आवृतम्	८.	ढके हुये
स्मित	३.	मुस्कराहट	प्रदक्षिणम् मे	१४.	मेरी दायीं ओर से
अवलोक	४.	चितवन ओर	प्रचरन्ति	१६.	निकल रहे हैं
अरुण कञ्ज	५.	लाल कमल के समान	वै	१३.	क्योंकि
लोचनम् ।	६.	नेत्रों वाले (तथा)	मृगाः ॥	१५.	हरिण

श्लोकार्थ—सुन्दर कपोल, नासिका, मुस्कराहट, चितवन और लाल कमल के समान नेत्रों वाले तथा घुंघराले बालों से ढके हुये भगवान् श्रीकृष्ण के मुख को निश्चय ही मैं देखूंगा। क्योंकि हरिण मेरी दायीं ओर से निकल रहे हैं ॥

दशमः श्लोकः

अप्यद्य विष्णोर्मनुजत्वमीयुषो भारावताराय भुवो निजेच्छया ।
लावण्यधाम्नो भवितोपलम्भनं मह्यं न न स्यात् फलमञ्जसा दृशः ॥१०॥

पदच्छेद— अपि अद्य विष्णोः मनुजत्वम् ईयुषः भार अवतारस्य भुवः निज इच्छया ।
लावण्य धाम्नः भविता उपलम्भनम् मह्यम् न न स्यात् फलम् अञ्जसा दृशः ॥

शब्दार्थ—

अपि	१.	और भी	लावण्य धाम्नः	७.	सौन्दर्य के धाम मूर्तिमान् निधि
अद्य	९.	आज	भविता	१२.	होगा
विष्णोः	८.	भगवान् विष्णु का	उपलम्भनम्	११.	दर्शन
मनुजत्वम्	५.	मनुष्यावतार	मह्यम्	१०.	मुझे
ईयुषः	६.	धारण किये हुये (तथा)	न	१५.	नहीं मिलेगा
भार अवतारस्य	३.	भार उतारने के लिये	न स्यात्	१६.	ऐसा नहीं अवश्य मिलेगा
भुवः	२.	पृथ्वी का	फलम्	१४.	फल
निज इच्छया ।	४.	अपनी इच्छा से	अञ्जसा दृशः ॥	१३.	सहज ही में आँखों का

श्लोकार्थ—और भी पृथ्वी का भार उतारने के लिये अपनी इच्छा से मनुष्यावतार धारण किये हुये तथा सौन्दर्य के धाम, मूर्तिमान् निधि, भगवान् विष्णु का आज मुझे दर्शन होगा। सहज ही में आँखों का फल नहीं मिलेगा ऐसा नहीं अवश्य मिलेगा ॥

एकादशः श्लोकः

य ईक्षिताहंरहितोऽप्यसत्सतोः स्वतेजसापास्ततमोभिदाभ्रमः ।
स्वमाययाऽऽत्मन् रचितैस्तदीक्षया प्राणाक्षधीभिः शदनेष्वभीयते ॥११॥

पदच्छेद— यः ईक्षिता अहम् रहितः अपि असत्सतोः स्वतेजसा अपास्त तमोभिदा भ्रमः ।
स्वमायया आत्मन् रचितैः तत् ईक्षया प्राण अक्षधीभिः सदनेषु अभिईयते ।।

शब्दार्थ— यः	१.	जो भगवान्	स्वमायया	१०.	अपनी योग माया से
ईक्षिता	३.	द्रष्टा होने पर	आत्मन्	११.	अपने आप में
अहम् रहितः अपि	४.	भी अहंकार से रहित	रचितैः	१३.	जीवों की रचना करते हैं वे
असत्सतोः	२.	कार्य कारण रूप जगत् के	तत् ईक्षया	९.	और जो अपने संकल्प से ही
स्वतेजसा	५.	अपने तेज से	प्राण अक्षधीभिः	१२.	प्राण इन्द्रिय और बुद्धि के साथ
अपास्त	८.	मिटा देने वाले हैं	सदनेषु	१४.	गोपियों के घरों में
तमोभिदा	६.	अज्ञान से होने वाले भेद के अभि		१५.	लीला करते हुये
भ्रमः ।	७.	भ्रम को	ईयते ।।	१६.	प्रतीत होते हैं

श्लोकार्थ—जो भगवान् कार्य-कारण रूप जगत् के द्रष्टा होने पर भी अहंकार से रहित अपने तेज से अज्ञान से होने वाले भेद के भ्रम को मिटा देने वाले हैं और जो अपने संकल्प से ही अपनी योग माया से अपने आप में प्राण, इन्द्रिय और बुद्धि के साथ जीवों की रचना करते हैं वे गोपियों के घरों में लीला करते हुये प्रतीत होते हैं ।।

द्वादशः श्लोकः

यस्याखिलामीवहभिः सुमङ्गलैर्वाचो विमिश्रा गुणकर्मजन्मभिः ।
प्राणन्ति शुम्भन्ति पुनन्ति वै जगद् यास्तद्विरक्ताः शवशोभना मताः ॥१२॥

पदच्छेद— यस्य अखिल अमीवहभिः सुमङ्गलैः वाचः विमिश्राः गुण कर्म जन्मभिः ।
प्राणन्ति शुम्भन्ति पुनन्ति वै जगत् याः तत् विरक्ताः शवशोभनाः मताः ।।

शदनार्थ—

यस्य अखिल	१.	जिनके समस्त	प्राणन्ति	९.	प्राण से युक्त
अमीवहभिः	२.	पापों के नाशक	शुम्भन्ति	१०.	शोभित तथा
सुमङ्गलैः	३.	परम मङ्गलमय	पुनन्ति	११.	पवित्र करती है (किन्तु)
वाचः	७.	वाणी	वै जगत्	८.	निश्चित रूप से संसार को
विमिश्राः	६.	युक्त होने पर	याः तत् विरक्ताः	१२.	जो वाणी गुणों के गायन से रहित है
गुण कर्म	४.	गुण-कर्म और	शव	१३.	वह शव को ही
जन्मभिः ।	५.	जन्म की (लीलाओं से)	शोभनाःमताः ।।	१४.	शोभित करने वाली हैं

श्लोकार्थ—जिनके समस्त पापों के नाशक परम मङ्गलमय गुण-कर्म और जन्म की लीलाओं से युक्त होने पर वाणी निश्चित रूप से संसार को प्राण से युक्त, शोभित तथा पवित्र करती है। किन्तु जो वाणी गुणों के गायन से रहित है, वह शव को ही शोभित करने वाली है ।।

त्रयोदशः श्लोकः

स चावतीर्णः किल सात्वतान्वये स्वसेतुपालामरवर्यशर्मकृत् ।
यशो वितन्वन् व्रज आस्त ईश्वरो गायन्ति देवा यदशेषमङ्गलम् ॥१३॥

पदच्छेद— सः च अवतीर्णः किल सात्वत अन्वये स्व सेतुपाल अमर वर्य शर्मकृत् ।
यशः वितन्वन् व्रजे आस्ते ईश्वरः गायन्ति देवाः यत् अशेष मङ्गलम् ॥

शब्दार्थ—

सः च	१. वे ही भगवान्	यशः वितन्वन्	९. अपने यश का विस्तार करते हुये
अवतीर्णः किल	३. अवतीर्ण हुये हैं	व्रजे आस्ते	१०. व्रज में निवास कर रहे हैं
सात्वत अन्वये	२. यदुवंश में	ईश्वरः	८. ऐश्वर्यशाली भगवान्
स्व	४. अपनी बताई	गायन्ति	१४. गायन करते हैं
सेतुपाल	५. मर्यादा का पालन करने वाले	देवाः	१३. देवता लोग
अमर वर्य	६. श्रेष्ठ देवताओं का	यत् अशेष	११. जिनके सम्पूर्ण
शर्मकृत् ।	७. कल्याण करने वाले	मङ्गलम् ॥	१२. मङ्गलमय यश का

श्लोकार्थ—वे ही भगवान् यदुवंश में अवतीर्ण हुये हैं । अपनी बताई मर्यादा का पालन करने वाले श्रेष्ठ देवताओं का कल्याण करने वाले ऐश्वर्यशाली भगवान् अपने यश का विस्तार करते हुये व्रज में निवास करते हैं । जिनके सम्पूर्ण मङ्गलमय यश का देवता लोग गायन करते हैं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

तं त्वद्य नूनं महतां गतिं गुरुं त्रैलोक्यकान्तं दृशिमन्महोत्सवम् ।
रूपं दधानं श्रिय ईप्सितास्पदं द्रक्ष्ये ममासन्नुषसः सुदर्शनाः ॥१४॥

पदच्छेद— तम् तु अद्य नूनम् महताम् गतिम् गुरुम् त्रैलोक्यकान्तम् दृशिमत् महोत्सवम् ।
रूपम् दधानम् श्रियः ईप्सित आस्पदम् द्रक्ष्ये मम आसन् उषसः सुदर्शनाः ॥

शब्दार्थ—

तम् तु अद्य	९. आज मैं उन्हें	रूप दधानम्	८. रूप धारण किये हुये
नूनम्	१०. निश्चय ही	श्रियः	६. तथा लक्ष्मी के लिये
महताम् गतिम्	१. महापुरुषों के आश्रय	ईप्सित आस्पदम्	७. अत्यन्त अभीष्ट
गुरुम्	२. सबके गुरू	द्रक्ष्ये मम	११. देखूंगा (क्योंकि) मुझे
त्रैलोक्यकान्तम्	३. तीनों लोकों के स्वामी	आसन्	१४. रहे हैं
दृशिमत्	४. नेत्र वालों के लिये	उषसः	१२ प्रातःकाल से ही
महोत्सवम् ।	५. महान् आनन्द स्वरूप	सुदर्शनाः ॥	१३. अच्छे सगुन दीख

श्लोकार्थ—महापुरुषों के आश्रय, सबके गुरु, तीनों लोकों के स्वामी, नेत्र वालों के लिये महान् आनन्द स्वरूप तथा लक्ष्मी के लिये अत्यन्त अभीष्ट रूप धारण किये हुये, आज मैं उन्हें निश्चय ही देखूंगा । क्योंकि मुझे प्रातःकाल से ही अच्छे सगुन दीख रहे हैं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

अथावरूढः सपदीशयो रथात् प्रधानपुंसोश्चरणं स्वलब्धये।
धिया धृतं योगिभिरप्यहं ध्रुवं नमस्य आभ्यां च सखीन् वनौकसः ॥१५॥

पदच्छेद— अथ अवरूढःसपदि ईशयोः रथात् प्रधान पुंसोः चरणम् स्वलब्धये।
धिया धृतम् योगिभिः अपि अहम् ध्रुवम् नमस्ये आभ्याम् च सखीन् वनओकसः॥

शब्दार्थ—

अथ	१. तदनन्तर	धिया धृतम्	८. केवलमन में धारण किये जाने वाले
अवरूढः सपदि	३. तुरन्त उतर कर	योगिभिः अपि	७. योगियों के द्वारा भी
ईशयोः	६. स्वामी (बलराम और श्रीकृष्ण के)	अहम्	१०. मैं
रथात्	२. रथ से	ध्रुवम् नमस्ये	११. निश्चित ही नमस्कार करूंगा
प्रधानपुंसोः	५. सर्वश्रेष्ठ पुरुष	आभ्याम् च	१२. और उन दोनों के साथ
चरणम्	९. चरणों को	सखीन्	१४. सखाओं को भी नमस्कार करूंगा
स्वलब्धये।	४. अपने लाभ के लिये	वनओकसः॥	१३. उनके वनवासी

श्लोकार्थ—तदनन्तर रथ से तुरन्त उतर कर अपने लाभ के लिये सर्वश्रेष्ठ पुरुष स्वामी बलराम और श्रीकृष्ण के योगियों के द्वारा भी केवल मन से धारण किये जाने वाले चरणों को मैं निश्चित ही नमस्कार करूंगा। और उन दोनों के साथ उनके वनवासी सखाओं को भी नमस्कार करूंगा॥

षोडशः श्लोकः

अप्यङ्घ्रिमूले पतितस्य मे विभुः शिरस्यधास्यन्निजहस्तपङ्कजम्।
दत्ताभयं कालभुजङ्गरंहसा प्रोद्वेजितानां शरणैषिणां नृणाम् ॥१६॥

पदच्छेद— अपि अङ्घ्रिमूले पतितस्य मे विभुः शिरसि अधास्यत् निज हस्त पङ्कजम्।
दत्त अभयम् कालभुजङ्ग रंहसा प्रउद्वेजितानाम् शरण एषिणाम् नृणाम्॥

शब्दार्थ—

अपि	१. क्या	दत्त	१४. देते हैं
अङ्घ्रिमूले	२. चरणों में	अभयम्	१३. अभय दान
पतितस्य	३. गिरे हुये	कालभुजङ्ग	८. कालरूपी सर्प के
मे विभुः शिरसि	४. मेरे सिर पर भगवान्	रंहसा	९. भय से
अधास्यत्	७. रख देंगे	प्रउद्वेजितानाम्	१०. अत्यन्त घबरा कर आपकी
निजहस्त	५. अपना कर	शरण एषिणाम्	११. शरण चाहने वाले
पङ्कजम्।	६. कमल	नृणाम्॥	१२. मनुष्यों को वे

श्लोकार्थ—क्या चरणों में गिरे हुये मेरे सिर पर भगवान् श्रीकृष्ण अपना कर कमल रख देंगे! कालरूपी सर्प के भय से अत्यन्त घबरा कर उनकी शरण चाहने वाले मनुष्यों को वे अभयदान देते हैं॥

सप्तदशः श्लोकः

समर्हणं यत्र निधाय कौशिकस्तथा बलिश्चाप जगत्त्रयेन्द्रताम् ।
यद् वा विहारे व्रजयोषितां श्रमं स्पर्शेन सौगन्धिकगन्ध्यपानुदत् ॥१७॥

पदच्छेद— सम् अर्हणम यत्र निधाय कौशिकः तथाबलिः च आप जगत् त्रय इन्द्रताम् ।
यत् वा विहारे व्रजयोषिताम् श्रमम् स्पर्शेन सौगन्धिक गन्धि अपानुदत् ।।

शब्दार्थ—

सम् अर्हणम्	२.	विधिवत् पूजन	यत्	११.	जिन कर कमलों से
यत्र	१.	जिनका	वा	९.	अथवा
निधाय	३.	करके	विहारे	१२.	विहार के समय
कौशिकः	४.	इन्द्र	व्रजयोषिताम्	१४.	व्रज की रमणियों की
तथा बलिः च	५.	तथा बलि ने	श्रमम्	१५.	थकान
आप	८.	प्राप्त कर लिया था	स्पर्शेन	१३.	स्पर्श के द्वारा
जगत् त्रय	६.	तीनों लोकों का	सौगन्धिक गन्धि	१०.	कमल की सी सुगन्ध वाले
इन्द्रताम् ।	७.	प्रभुत्व	अपानुदत् ।।	१६.	मिटा दी थी

श्लोकार्थ—जिनका विधिवत् पूजन करके इन्द्र तथा बलि ने तीनों लोकों का प्रभुत्व प्राप्त कर लिया था। अथवा कमल की सी सुगन्ध वाले जिन कर कमलों से विहार के समय स्पर्श के द्वारा व्रज रमणियों की थकान मिटा दी थी। क्या उन्हें मेरे सिर पर रख देंगे ।।

अष्टादशः श्लोकः

न मय्युपैष्यत्यरिबुद्धिमच्युतः कंसस्य दूतः प्रहितोऽपि विश्वदृक् ।
योऽन्तर्बहिश्चेतस एतदीहितं क्षेत्रज्ञ ईक्षत्यमलेन चक्षुषा ॥१८॥

पदच्छेद— न मयि उपैष्यति अरिबुद्धिम् अच्युतः कंसस्य दूतः प्रहितः अपि विश्वदृक् ।
यः अन्तः बहिः चेतसः एतत् ईहितम् क्षेत्रज्ञः ईक्षति अमलेन चक्षुषा ।।

शब्दार्थ—

न	६.	नहीं	यः	११.	वे
मयि	३.	मुझ पर	अन्तः बहिः	१०.	बाहर और भीतर रहने वाले हैं
उपैष्यति	७.	करेंगे (क्योंकि वे)	चेतसः	९.	चित्त के
अरिबुद्धिम्	५.	शत्रु का बुद्धि-भाव	एतत् ईहितम्	१५	इस चेष्टा को
अच्युतः	४.	भगवान्	क्षेत्रज्ञः	१२.	क्षेत्रज्ञ रूप से स्थित होकर
कंसस्य	१.	कंस का	ईक्षति	१६.	देखते रहते हैं
दूतःप्रहितःअपि	२.	भेजा दूत होने पर भी	अमलेन	१३.	निर्मल
विश्वदृक् ।	८.	संसार को देखने वाले (एवं)	चक्षुषा ।।	१४.	दृष्टि से

श्लोकार्थ—कंस का भेजा हुआ दूत होने पर भी मुझ पर भगवान् शत्रु का बुद्धि-भाव नहीं करेंगे। क्योंकि वे संसार को देखने वाले एवं चित्त के बाहर और भीतर रहने वाले हैं। वे क्षेत्रज्ञ रूप से स्थित होकर निर्मल दृष्टि से इस चेष्टा को देखते रहते हैं ।।

एकोनविंशः श्लोकः

अप्यङ्घ्रिमूलेऽवहितं कृताञ्जलिं मामीक्षिता सस्मितमार्द्रया दृशा ।
सपद्यपध्वस्तसमस्तकिल्बिषो वोढा मुदं वीतविशङ्क ऊर्जिताम् ॥१९॥

पदच्छेद— अपि अङ्घ्रिमूले अवहितम् कृतअञ्जलिम् माम् ईक्षिता सस्मितम् आर्द्रया दृशा ।
सपदि अपध्वस्त समस्त किल्बिषः वोढा मुदम् वीत विशङ्कः ऊर्जिताम् ॥

शब्दार्थ—

अपि	१.	फिर	सपदि	९.	तत्क्षण
अङ्घ्रिमूले	२.	चरण तल में	अपध्वस्त	१२.	नष्ट करके
अवहितम्	३.	सावधानी से	समस्त	१०.	सारे
कृतअञ्जलिम्	४.	हाथ जोड़कर	किल्बिषः	११.	पापों को
माम्	५.	मुझे वे	वोढा	१६.	प्राप्त करूंगा
ईक्षिता	८.	देखेंगे (तब मैं)	मुदम्	१५.	आह्लाद को
सस्मितम्	६.	मुसकराते हुये	वीत विशङ्कः	१३.	निःशङ्क होकर
आर्द्रया दृशा ।	७.	दयाभरी दृष्टि से	ऊर्जितम् ॥	१४.	परम

श्लोकार्थ—फिर चरण तल में सावधानी से हाथ जोड़ कर मुझे वे मुस्कराते हुये दयाभरी दृष्टि से देखेंगे। तब मैं तत्क्षण सारे पापों को नष्ट करके निःशङ्क होकर परम आह्लाद को प्राप्त करूंगा ॥

विंशः श्लोकः

सुहृत्तमं ज्ञातिमनन्यदैवतं दोर्भ्यां बृहद्भ्यां परिरप्स्यतेऽथ माम् ।
आत्मा हि तीर्थीक्रियते तदैव मे बन्धश्च कर्मात्मक उच्छ्वसित्यतः ॥२०॥

पदच्छेद— सुहृत्तमम् ज्ञातिम् अनन्य दैवतम् दोर्भ्याम् बृहद्भ्याम् परिरप्स्यते अथ माम् ।
आत्मा हि तीर्थीक्रियते तदा एव मे बन्धः च कर्म आत्मकः उच्छ्वसिति अतः ॥

शब्दार्थ—

सुहृत्तमम्	२.	अत्यन्त हितैषी	आत्माहि	९.	शरीर निश्चित रूप से
ज्ञातिम् अनन्य	३.	बन्धु उनके सिवाय दूसरे	तीर्थीक्रियते	१०.	तीर्थ बन जायेगा (और)
दैवतम्	४.	आराध्यदेव से रहित	तदा एव मे	८.	उसी क्षण मेरा
दोर्भ्याम् बृहद्भ्याम्	६.	लम्बी-लम्बी बाँहों से	बन्धः च	१३.	बन्धन
परिरप्स्यते	७	आलिङ्गन करेंगे	कर्म आत्मकः	१२.	कर्ममय
अथ	१.	तदनन्तर	उच्छ्वसिति	१४.	टूट जायेगा
माम् ।	५.	मेरा वे	अतः ॥	११.	इससे (मेरा)

श्लोकार्थ—तदनन्तर अत्यन्त हितैषी बन्धु उनके सिवाय दूसरे आराध्यदेव से रहित मेरा वे लम्बी-लम्बी बाँहों से आलिङ्गन करेंगे। उसी क्षण मेरा शरीर निश्चित रूप से तीर्थ बन जायेगा। और इससे मेरा कर्ममय बन्धन टूट जायेगा ॥

एकविंशः श्लोकः

लब्धाङ्गसङ्गं प्रणतं कृताञ्जलिं मां वक्ष्यतेऽक्रूर ततेत्युरुश्रवाः ।
तदा वयं जन्मभृतो महीयसा नैवादृतो यो धिगमुष्य जन्म तत् ॥२१॥

पदच्छेद— लब्ध अङ्ग सङ्गम् प्रणतम् कृत अञ्जलिम् माम् वक्ष्यते अक्रूर तत इति उरुश्रवाः ।
तदा वयम् जन्मभृतः महीयसा न एव आदृतः यः धिक् अमुष्य जन्म तत् ॥

शब्दार्थ—

लब्ध	३.	पाकर	तदा वयम्	९.	तब हमारा
अङ्ग सङ्गम्	२.	अङ्गो का स्पर्श	जन्मभृतः	१०.	जन्म सफल होगा
प्रणतम्	४.	सिर झुकाये हुये	महीयसा	११.	भगवान् ने
कृत अञ्जलिम् माम्	५.	हाथ जोड़े हुये मुझे	न एव	१३.	नहीं दिया
वक्ष्यते	८.	कहेंगे	आदृतः यः	१२.	जिसे आदर
अक्रूर तत	६.	चाचा अक्रूर	धिक्	१६.	धिक्कार है
इति	७.	इस प्रकार	अमुष्य	१४.	उसके
उरुश्रवाः ।	१.	महान् कीर्ति वाले भगवान् के	जन्म तत् ॥	१५.	उस जन्म को

श्लोकार्थ—महान् कीर्ति वाले भगवान् के अङ्गों का स्पर्श पाकर सिर झुकाये हुये हाथ जोड़े हुये, मुझे चाचा अक्रूर इस प्रकार कहेंगे। तब हमारा जन्म सफल होगा। भगवान् ने जिसे आदर नहीं दिया, उसके उस जन्म को धिक्कार है ॥

द्वाविंशः श्लोकः

न तस्य कश्चिद् दयितः सुहृत्तमो न चाप्रियो द्वेष्य उपेक्ष्य एव वा ।
तथापि भक्तान् भजते यथा तथा सुरद्रुमो यद्वदुपाश्रितोऽर्थदः ॥२२॥

पदच्छेद— न तस्य कश्चित् दयितः सुहृत्तमः न च अप्रियः द्वेष्यः एव वा ।
तथापि भक्तान् भजते यथा तथा सुरद्रुमः यद्वत् उपाश्रितः अर्थदः ॥

शब्दार्थ—

न तस्य	१.	नहीं तो उनका	तथापि	९.	तो भी
कश्चित् दयितः	२.	कोई प्रिय	भक्तान्	१३.	भक्तों को
सुहृत्तमः	३.	बन्धु है	भजते	१५.	भजते हैं
न च	४.	और न	यथा	१६.	जैसे (भक्त उन्हें भजते हैं)
अप्रियः	५.	अप्रिय	तथा	१४.	वैसे ही
द्वेष्यः	६.	शत्रु ही है	सुरद्रुमः यद्वत्	१२.	कल्प वृक्ष के समान वे
उपेक्ष्यः एव	८.	उपेक्षा करने योग्य भी नहीं है	उपाश्रितः	१०.	आश्रय लेने वालों की
वा ।	७.	अथवा कोई	अर्थदः ॥	११.	कामना पूर्ण करने वाले हैं

श्लोकार्थ—न तो उनका कोई प्रिय बन्धु है। और न अप्रिय शत्रु ही है। अथवा कोई उपेक्षा करने योग्य भी नहीं है। तो भी आश्रय लेने वालों को कामना पूर्ण करने वाले हैं। कल्प वृक्ष के समान भक्तों को वे वैसे ही भजते हैं। जैसे भक्त उन्हें भजते हैं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

किञ्चाग्रजो मावनतं यदूत्तमः स्मयन् परिष्वज्य गृहीतमञ्जलौ ।
गृहं प्रवेश्याप्तसमस्तसत्कृतं संप्रेक्ष्यते कंसकृतं स्वबन्धुषु ॥२३॥

पदच्छेद— किञ्च अग्रजः मा अवनतम् यदु उत्तमः स्मयन् परिष्वज्य गृहीतम् अञ्जलौ ।
गृहम् प्रवेश्य आप्त समस्त सत्कृतम् संप्रेक्ष्यते कंस कृतम् स्वबन्धुषु ॥

शब्दार्थ—

किञ्च	१. और	गृहम् प्रवेश्य	९. घर के अन्दर ले जायेंगे
अग्रजः	३. बलराम जी	आप्त	१२. चुकने पर
माअवनतम्	४. झुके हुये मुझे	समस्त	१०. सम्पूर्ण
यदु उत्तमः	२. यदुवंशियों में श्रेष्ठ	सत्कृतम्	११. सत्कार कर
स्मयन्	५. मुस्कराते हुये	संप्रेक्ष्यते	१६. पूछेंगे
परिष्वज्य	६. आलिंगन करके	कंस	१४. कंस द्वारा
गृहीतम्	८. पकड़ कर	कृतम्	१५. किये गये व्यवहार को
अञ्जलौ ।	७. दोनों हाथ	स्वबन्धुषु ॥	१३. अपने बन्धुओं के साथ

श्लोकार्थ—और यदुवंशियों में श्रेष्ठ बलराम जी झुके हुये मुझे मुस्कराते हुये आलिंगन करके दोनों हाथ पकड़ कर घर के अन्दर ले जायेंगे तथा सम्पूर्ण सत्कार कर चुकने पर अपने बन्धुओं के साथ कंस के द्वारा किये गये व्यवहार को पूछेंगे ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— इति सञ्चिन्तयन् कृष्णं श्वफल्कतनयोऽध्वनि ।
रथेन गोकुलं प्राप्तः सूर्यश्चास्तगिरिं नृप ॥२४॥

पदच्छेद— इति सञ्चिन्तयन् कृष्णम् श्वफल्क तनयः अध्वनि ।
रथेन गोकुलम् प्राप्तः सूर्यः च अस्तगिरिम् नृप ॥

शब्दार्थ—

इति	३. इस प्रकार	रथेन	८. रथ से
सञ्चिन्तयन्	५. चिन्तन करते हुये	गोकुलम्	९. गोकुल
कृष्णम्	४. कृष्ण के सम्बन्ध में	प्राप्तः	१०. पहुँच गये
श्वफल्क	६. श्वफल्क के	सूर्यः च	११. और सूर्य भी
तनयः	७. पुत्र (अक्रूर जी)	अस्तगिरिम्	१२. अस्ताचल पर चले गये
अध्वनि ।	२. मार्ग में	नृप ॥	१. हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! मार्ग में इस प्रकार कृष्ण के सम्बन्ध में चिन्तन करते हुये श्वफल्क के पुत्र अक्रूर जी रथ से गोकुल पहुँच गये और उस समय सूर्य भी अस्ताचल को चले गये ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

पदानि तस्याखिललोकपालकिरीटजुष्टामलपादरेणोः ।
ददर्श गोष्ठे क्षितिकौतुकानि विलक्षितान्यब्जयवाङ्कुशाद्यैः ॥२५॥

पदच्छेद— पदानि तस्य अखिल लोकपाल किरीट जुष्ट अमल पादरेणोः ।
ददर्श गोष्ठे क्षितिकौतुकानि विलक्षितानि अब्ज यव अङ्कुश आद्यैः ॥

शब्दार्थ—

पदानि	१२.	चरण चिह्नों को	ददर्श	१४.	देखा
तस्य	६.	उन भगवान् के	गोष्ठे	१३.	गोष्ठ में
अखिल	१.	सम्पूर्ण	क्षितिकौतुकानि	११.	पृथ्वी के शोभा रूप
लोकपाल	२.	लोक पालों के	विलक्षितानि	१०.	चिह्नित तथा
किरीट जुष्टे	३.	किरीटों के द्वारा सेवित	अब्ज यव	७.	कमल यव
अमल	४.	निर्मल	अङ्कुश	८.	अङ्कुश
पादरेणोः ।	५.	चरण धूलि वाले	आद्यैः ॥	९.	आदि से

श्लोकार्थ—सम्पूर्ण लोकपालों के किरीटों के द्वारा सेवित निर्मल चरण धूलि वाले उन भगवान् के कमल, यव, अङ्कुश आदि से चिह्नित तथा पृथ्वी के शोभा रूप 'चरण चिह्नों को गोष्ठ में देखा ॥

षड्विंशः श्लोकः

तद्दर्शनाह्लादविवृद्धसम्भ्रमः प्रेम्णोर्ध्वरोमाश्रुकलाकुलेक्षणः ।
रथादवस्कन्द्य स तेष्वचेष्टत प्रभोरमून्यङ्घ्रिरजांस्यहो इति ॥२६॥

पदच्छेद— तत् दर्शन आह्लाद विवृद्ध सम्भ्रमः प्रेम्णा ऊर्ध्व रोम अश्रुकला आकुल ईक्षणः ।
रथात् अवस्कन्द्य सः तेषु अचेष्टत प्रभोः अमूनि अङ्घ्रिरजांसि अहो इति ॥

शब्दार्थ—

तत् दर्शन	१.	उनके दर्शन के	रथात् अवस्कन्द्य	१०.	रथ से उतर कर
आह्लाद	२.	आनन्द से	सः	९.	वे अक्रूर जी
विवृद्ध	३.	बढ़ी हुई	तेषु	१५.	उस पर
सम्भ्रमः	४.	विह्वलता वाले	अचेष्टत	१६.	लोटने लगे
प्रेम्णाऊर्ध्व	५.	प्रेम से खड़े हुये	प्रभोः अमूनि	१२.	हमारे प्रभु के ये
रोम अश्रुकला	६	रोंगटे वाले और आंसुओं की धारा से	अङ्घ्रिरजांसि	१३.	चरणों की धूलि है
आकुल	७.	व्याकुल	अहो	११.	अहा
ईक्षणः ।	८.	नेत्रों वाले	इति ॥	१४.	यह कह कर

श्लोकार्थ—उनके दर्शन के आनन्द से बढ़ी हुई विह्वलता वाले, प्रेम से खड़े हुये रोंगटे वाले और आंसुओं की धारा से व्याकुल नेत्रों वाले वे अक्रूर जी रथ से उतर कर अहा ये हमारे प्रभु के चरणों की धूलि है यह कह कर उस पर लोटने लगे ॥

सप्तविंशः श्लोकः

देहंभृतामियानर्थो हित्वा दम्भं भियं शुचम् ।
संदेशाद् यो हरेर्लिङ्गदर्शनश्रवणादिभिः ॥२७॥

पदच्छेद— देहम् भृताम् इयान् अर्थः हित्वा दम्भम् भियम् शुचम् ।
सन्देशात् यः हरेः लिङ्ग दर्शन श्रवण आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

देहम् भृताम्	१.	शरीर धारियों का	सन्देशात्	७.	कंस के सन्देश लेकर अब तक
इयान् अर्थः	२.	यही कर्तव्य है कि	यः	८.	जो अक्रूर का भाव रहा है
हित्वा	६.	त्याग कर	हरेः लिङ्ग	९.	भगवान् के चिह्न
दम्भम्	३.	दम्भ	दर्शन	१०.	प्रतिमा दर्शन
भियम्	४.	भय और	श्रवण	११.	और गुण श्रवण
शुचम् ।	५.	शोक	आदिभिः ॥	१२.	आदि में वैसा भाव रखें

श्लोकार्थ—शरीर धारियों का यही कर्तव्य है कि दम्भ और भय तथा शोक त्याग कर कंस के सन्देश से लेकर अब तक जो अक्रूर का भाव रहा है, भगवान् के चिह्न, प्रतिमा दर्शन और गुण श्रवण आदि में वैसा ही भाव रखें ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

ददर्श कृष्णं रामं च व्रजे गोदोहनं गतौ ।
पीतनीलाम्बरधरौ शरदम्बुरुहेक्षणौ ॥२८॥

पदच्छेद— ददर्श कृष्णम् रामम् च व्रजे गोदोहनम् गतौ ।
पीत नीलाम्बर धरौ शरद् अम्बुरुह ईक्षणौ ॥

शब्दार्थ—

ददर्श	१२.	देखा	पीत	४.	पीले और
कृष्णम्	१०.	श्रीकृष्ण	नीलाम्बर	५.	नीले वस्त्र
रामम् च	११.	और बलराम को	धरौ	६.	धारण किये हुये (तथा)
व्रजे	१.	व्रज में (अक्रूर जी ने)	शरद्	७.	शरद् ऋतु के
गोदोहनम्	२.	गाय दूहने के स्थान में	अम्बुरुह	८.	कमल के समान
गतौ ।	३.	विराजमान	ईक्षणौ ॥	९.	नेत्रों वाले

श्लोकार्थ—व्रज में अक्रूर जी ने गाय दूहने के स्थान में विराजमान, पीले और नीले वस्त्र धारण किये हुये तथा शरद् ऋतु के कमल के समान नेत्रों वाले श्रीकृष्ण और बलराम जी को देखा ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

किशोरौ श्यामलश्वेतौ श्रीनिकेतौ बृहद्भुजौ ।
सुमुखौ सुन्दरवरौ बालद्विरदविक्रमौ ॥२९॥

पदच्छेद — किशोरौ श्यामल श्वेतौ श्रीनिकेतौ बृहद् भुजौ ।
सुमुखौ सुन्दर वरौ बाल द्विरद विक्रमौ ॥

शब्दार्थ—

किशोरौ	१.	वे दोनों किशोर	सुमुखौ	७.	सुन्दर मुख वाले
श्यामल	२.	साँवले और	सुन्दर	९.	मनोहर और
श्वेतौ	३.	गोरे	वरौ	८.	परम
श्रीनिकेतौ	४.	शोभा के धाम	बाल	१०.	बाल
बृहद्	५.	लम्बी-लम्बी	द्विरद	११.	गज के समान
भुजौ ।	६.	भुजाओं वाले	विक्रमौ ॥	१२.	चाल वाले थे

श्लोकार्थ—वे दोनों किशोर, साँवले और गोरे, शोभा के धाम, लम्बी-लम्बी भुजाओं वाले, सुन्दर मुख वाले, परम मनोहर और बाल गज के समान चाल वाले थे ॥

त्रिंशः श्लोकः

ध्वजवज्राङ्कुशाम्भोजैश्चिह्नितैरङ्घ्रिभिर्व्रजम् ।
शोभयन्तौ महात्मानावनुक्रोशस्मितेक्षणौ ॥३०॥

पदच्छेद— ध्वज वज्र अङ्कुश अम्भोजैः चिह्नितैः अङ्घ्रिभिः व्रजम् ।
शोभयन्तौ महात्मानौ अनुक्रोश स्मित ईक्षणौ ॥

शब्दार्थ—

ध्वज	१.	ध्वज	व्रजम् ।	७.	व्रज को
वज्र	२.	वज्र	शोभयन्तौ	८.	शोभायमान करते हुये
अङ्कुश	३.	अङ्कुश और	महात्मानौ	९.	वे दोनों महात्मा
अम्भोजैः	४.	कमल से	अनुक्रोश	१०.	दया और
चिह्नितैः	५.	चिह्नित	स्मित	११.	मुस्कराहट से युक्त
अङ्घ्रिभिः	६.	चरणों से	ईक्षणौ ॥	१२.	नेत्रों वाले थे

श्लोकार्थ—ध्वज, वज्र, अङ्कुश और कमल से चिह्नित चरणों से व्रज को शोभायमान करते हुये वे दोनों महात्मा दया और मुस्कराहट से युक्त नेत्रों वाले थे ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

उदाररुचिरक्रीडौ स्रग्विणौ वनमालिनौ ।
पुण्यगन्धानुलिप्ताङ्गौ स्नातौ विरजवाससौ ॥३१॥

पदच्छेद— उदार रुचिर क्रीडौ स्रग्विणौ वन मालिनौ ।
पुण्य गन्ध अनुलिप्ताङ्गौ स्नातौ विरज वाससौ ॥

शब्दार्थ—

उदार	१.	वे दोनों उदार	पुण्य	१०.	पवित्र
रुचिर	२.	सुन्दर	गन्ध	११.	गन्धों का
क्रीडौ	३.	क्रीडा करने वाले	अनुलिप्ताङ्गौ	१२.	लेप अङ्गों में लगाये थे
स्रग्विणौ	४.	मणियों के हार	स्नातौ	७.	स्नान के पश्चात्
वन	५.	तथा वन	विरज	८.	निर्मल
मालिनौ ।	६.	माला पहने थे (तथा)	वाससौ ॥	९.	वस्त्र धारण करके

श्लोकार्थ—वे दोनों उदार, सुन्दर क्रीडा करने वाले, मणियों के हार तथा वन माला पहने थे। और स्नान के पश्चात् निर्मल वस्त्र धारण करके पवित्र गन्धों का लेप अङ्गों में लगाये थे ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

प्रधानपुरुषावाद्यौ जगद्धेतू जगत्पती ।
अवतीर्णौ जगत्यर्थे स्वांशेन बलकेशवौ ॥३२॥

पदच्छेद— प्रधान पुरुषौ आद्यैः जगत् हेतू जगत्पती ।
अवतीर्णौ जगती अर्थे स्वअंशेन बल केशवौ ॥

शब्दार्थ—

प्रधान	१.	प्रधान	अवतीर्णौ	१२.	अवतीर्ण हुये हैं
पुरुषौ	२.	पुरुषो	जगती	७.	संसार की
आद्यैः	४.	आदि	अर्थे	८.	रक्षा के लिये
जगत्	३.	जगत् के	स्वअंशेन	९.	अपने अंश से
हेतू	५.	कारण और	बल	१०.	बलराम और
जगत्पती ।	६.	संसार के स्वामी (भगवान्)	केशवौ ॥	११.	श्रीकृष्ण के रूप में

श्लोकार्थ—प्रधान पुरुष जगत् के आदि कारण और संसार के स्वामी भगवान् संसार की रक्षा के लिये अपने अंश से बलराम और श्रीकृष्ण के रूप में अवतीर्ण हुये हैं ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

दिशो वितिमिरा राजन् कुर्वाणौ प्रभया स्वया ।
यथा मारकतः शैलो रौप्यश्च कनकाचितौ ॥३३॥

पदच्छेद— दिशः वितिमिराः राजन् कुर्वाणौ प्रभया स्वया ।
यथा मारकतः शैलः रौप्यः च कनक आचितौ ॥

शब्दार्थ—

दिशः	४.	दिशाओं को	यथा	७.	जैसे
वितमिराः	५.	अन्धकार रहित	मारकतः	९.	मरकत मणि
राजन्	१.	हे राजन्	शैलः	१२.	पहाड़ हों
कुर्वाणौ	६.	करते हुये (वे ऐसे लग रहे थे)	रौप्यः	११.	चाँदी के
प्रभया	३.	कान्ति से	च	१०.	और
स्वया ।	२.	अपनी	कनक आचितौ ॥	८.	सोने से मढ़े

श्लोकार्थ—हे राजन् ! अपनी कान्ति से दिशाओं को अन्धकार रहित करते हुये वे ऐसे लग रहे थे । जैसे सोने से मढ़े मरकत मणि और चाँदी के पहाड़ हो ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

रथात्तूर्णमवप्लुत्य सोऽक्रूरः स्नेहविह्वलः ।
पपात चरणोपान्ते दण्डवद् रामकृष्णयोः ॥३४॥

पदच्छेद— रथात् तूर्णम् अवप्लुत्य सः अक्रूरः स्नेह विह्वलः ।
पपात चरण उपान्ते दण्डवत् राम कृष्णयोः ॥

शब्दार्थ—

रथात्	१.	रथ से	पपात	१३.	लौट गये
तूर्णम्	२.	शीघ्र	चरणः	१०.	चरणों के
अवप्लुत्य	३.	उतर कर	उपान्ते	११.	पास
सः	४.	वे	दण्डवत्	१२.	डंडे के समान (साष्टांग)
अक्रूरः	५.	अक्रूर	राम	८.	राम और
स्नेह	६.	प्रेम से	कृष्णयोः ॥	९.	श्रीकृष्ण के
विह्वलः ।	७.	विह्वल हुये			

श्लोकार्थ—रथ से शीघ्र उतर कर वे अक्रूर प्रेम से विह्वल हुये, राम और श्रीकृष्ण के चरणों के पास दण्डे के समान साष्टांग लौट गये ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

भगवद्दर्शनाह्लादबाष्पपर्याकुलेक्षणः ।
पुलकाचिताङ्ग औत्कण्ठ्यात् स्वाख्याने नाशकन् नृप ॥३५॥

पदच्छेद— भगवत् दर्शन आह्लाद बाष्प परि आकुल ईक्षणः ।
पुलक आचित अङ्ग औत्कण्ठ्यात् स्व आख्याने न अशकन् नृप ॥

शब्दार्थ—

भगवत्	२.	भगवान् के	पुलक	९.	रोमाञ्च से
दर्शन	३.	दर्शन के	आचित	१०.	व्याप्त
आह्लाद	४.	आनन्द के	अङ्ग	११.	अङ्गों वाले (अक्रूर)
बाष्प	५.	आंसुओं से	औत्कण्ठ्यात्	१२.	उत्कण्ठावश
परि	६.	अत्यन्त	स्व आख्याने	१३.	अपना नाम भी
आकुल	७.	भरे हुये	न अशकन्	१४.	नहीं बता सके
ईक्षणः ।	८.	नेत्रों वाले (तथा)	नृप ॥	१.	हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! भगवान् के दर्शन के आनन्द के आंसुओं से अत्यन्त भरे हुये नेत्रों वाले तथा रोमाञ्च से व्याप्त अङ्गों वाले अक्रूर उत्कण्ठा वश अपना नाम भी नहीं बता सके ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

भगवांस्तमभिप्रेत्य रथाङ्गाङ्कितपाणिना ।
परिरेभेऽभ्युपाकृष्य प्रीतः प्रणतवत्सलः ॥३६॥

पदच्छेद— भगवान् तम् अभिप्रेत्य रथाङ्ग अङ्कित पाणिना ।
परिरेभे अभिउप आकृष्य प्रीतः प्रणत वत्सलः ॥

शब्दार्थ—

भगवान्	३.	भगवान् के अक्रूर का	परिरेभे	१०.	आलिंगन किया
तम्	८.	उन्हें	अभिउप आकृष्य	९.	खींच कर
अभिप्रेत्य	४.	अभिप्राय जान कर	प्रीतः	५.	प्रसन्न होकर
रथाङ्ग अङ्कित	६.	चक्र से अङ्कित	प्रणतः	१.	शरणागत
पाणिना ।	७.	हाथों से	वत्सलः ॥	२.	वत्सल

श्लोकार्थ—शरणागत वत्सल भगवान् ने अक्रूर का अभिप्राय जान कर प्रसन्न होकर चक्र से अङ्कित हाथों से उन्हें खींच कर आलिंगन किया ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

संकर्षणश्च प्रणतमुपगुह्य महामनाः ।

गृहीत्वा पाणिना पाणी अनयत् सानुजो गृहम् ॥३७॥

पदच्छेद— संकर्षणः च प्रणतम् उपगुह्य महामनाः ।
गृहीत्वा पाणिना पाणी अनयत् स अनुजः गृहम् ॥

शब्दार्थ—

संकर्षणः	२.	बलराम जी	पाणिना	६.	हाथ से
च	३.	भी	पाणी	७.	हाथ
प्रणतम्	४.	प्रणाम करते हुये	अनयत्	१२.	ले गये
उपगुह्य	५.	उनका आलिङ्गन करके	सः	१०.	सहित उन्हें
महामनाः ।	१.	महामनस्वी	अनुजः	९.	छोटे भाई श्रीकृष्ण के
गृहीत्वा	८.	पकड़ कर	गृहम् ॥	११.	घर में

श्लोकार्थ—महामनस्वी बलराम जी भी प्रणाम करते हुये उनका आलिंगन करके हाथ से हाथ पकड़ कर छोटे भाई श्रीकृष्ण के सहित उन्हें घर में ले गये ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

पृष्ट्वाथ स्वागतं तस्मै निवेद्य च वरासनम् ।

प्रक्षाल्य विधिवत् पादौ मधुपर्कार्हणमाहरत् ॥३८॥

पदच्छेद— पृष्ट्वा अथ स्वागतम् तस्मै निवेद्य च वर आसनम् ।
प्रक्षाल्य विधिवत् पादौ मधुपर्क अर्हणम् आहरत् ॥

शब्दार्थ—

पृष्ट्वा	२.	कुशलमङ्गल पूछ कर	प्रक्षाल्य	१०.	धोया (तथा)
अथ	१.	तदनन्तर	विधिवत्	८.	विधि पूर्वक
स्वागतम्	४.	स्वागत के शब्द	पादौ	९.	पैरों को
तस्मै	३.	उन्हें	मधुपर्क	११.	मधुपर्क आदि
निवेद्य	७.	निवेदित करके	अर्हणम्	१२.	पूजन सामग्री
च	५.	और	आहरत् ॥	१३.	भेंट की
वर आसनम् ।	६.	उत्तम आसन			

श्लोकार्थ—तदनन्तर कुशलमङ्गल पूछ कर उन्हें स्वागत के शब्द और उत्तम आसन निवेदित करके विधवत् पैरों को धोया । तथा मधुपर्क आदि पूजन की सामग्री भेंट की ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

निवेद्य गां चातिथये संवाह्य श्रान्तमादृतः ।

अन्नं बहुगुणं मेध्यं श्रद्धयोपाहरद् विभुः ।।३६।।

पदच्छेद— निवेद्य गाम् च अतिथये संवाह्य श्रान्तम् आदृतः ।
अन्नम् बहुगुणम् मेध्यम् श्रद्धया उपाहरत् विभुः ।।

शब्दार्थ—

निवेद्य	३.	(दी और)	अन्नम्	१०	अन्न का
गाम् च	२.	एक गाय	बहुगुणम्	६.	अनेक गुणों से युक्त
अतिथये	१.	अतिथि (अक्रूर को)	मेध्यम्	८.	पवित्र
संवाह्य	४.	पैर दबा कर	श्रद्धया	११.	श्रद्धा पूर्वक
श्रान्तम्	५	थकावट दूर की (फिर)	उपाहरत्	१२.	भोजन कराया
आदृतः ।	७.	आदर पूर्वक	विभुः ।।	७.	प्रभु ने

श्लोकार्थ—अतिथि अक्रूर को एक गाय दी । और पैर दबा कर थकावट दूर की । फिर प्रभु ने आदर पूर्वक पवित्र अनेक गुणों से युक्त अन्न का श्रद्धापूर्वक भोजन कराया ।।

चत्वारिंशः श्लोकः

तस्मै भुक्तवते प्रीत्या रामः परमधर्मवित् ।

मुखवासैर्गन्धमाल्यैः परां प्रीतिं व्यधात् पुनः ।।४०।।

पदच्छेद— तस्मै भुक्तवते प्रीत्या रामः परम धर्मवित् ।
मुखवासैः गन्ध माल्यैः पराम् प्रीतिम् व्यधात् पुनः ।।

शब्दार्थ—

तस्मै	२.	उन्हें	मुखवासैः	८.	पान इत्यादि और
भुक्तवते	१.	भोजन कर चुकने पर	गन्ध	६.	सुगन्धित
प्रीत्या	६.	प्रेम से	माल्यैः	१०.	मालाओं से
रामः	५.	बलराम ने	पराम्	११.	परम
परम	३.	परम	प्रीतिम्	१२.	आनन्दित
धर्मवित् ।	४.	धर्मज्ञाता	व्यधात्	१३.	किया
			पुनः ।।	७.	फिर

श्लोकार्थ—भोजन कर चुकने पर उन्हें परम धर्मज्ञाता बलराम जी ने प्रेम से फिर पान, इलायची इत्यादि और सुगन्धित मालाओं से परम आनन्दित किया ।।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

पप्रच्छ सत्कृतं नन्दः कथं स्थ निरनुग्रहे ।
कंसे जीवति दाशार्ह सौनपाला इवावयः ॥४१॥

पदच्छेद— पप्रच्छ सत् कृतम् नन्दः कथम् स्थ निरनुग्रहे ।
कंसे जीवति दाशार्ह सौनपालाः इव अवयः ।।

शब्दार्थ—

पप्रच्छ	४.	(अक्रूर से) पूछा	कंसे	७.	कंस के
सत्	२.	सत्कार	जीवति	८.	जीते जी
कृतम्	३.	किये जाने पर	दाशार्ह	५.	हे अक्रूर जी
नन्दः	१.	नन्द बाबा ने	सौनपालाः	११.	कसाई द्वारा पाली हुई
कथम्	६.	(आप लोग) कैसे	इव	१३.	समान (आप लोगों की दशा है)
स्थ	१०.	रहते हैं	अवयः ।।	१२.	भेड़ों के
निरनुग्रहे ।		निर्दयी			

श्लोकार्थ— नन्द बाबा ने सत्कार किये जाने पर अक्रूर जी से पूछा—हे अक्रूर जी ! निर्दयी कंस के जीते जी आप लोग कैसे रहते हैं । कसाई द्वारा पाली हुई भेड़ों के समान आप लोगों की दशा है ।।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

योऽवधीत् स्वस्वसुस्तोकान् क्रोशन्त्या असुतृप् खलः ।
किं नु स्वित्तत्प्रजानां वः कुशलं विमृशामहे ॥४२॥

पदच्छेद— यः अवधीत् स्वस्वसुः तोकान् क्रोशन्त्या असुतृप् खलः ।
किम् नु स्वित् तत् प्रजानाम् वः कुशलम् विमृशामहे ।।

शब्दार्थ—

यः	२.	जिस	किम् नुस्वित्	११.	क्या
अवधीत्	७.	मार डाला	तत्	८.	उसको
स्वस्वसुः	५.	अपनी बहन	प्रजानाम्	९.	प्रजा
तोकान्	६.	बच्चों को	वः	१०.	आप लोगों का
क्रोशन्त्या	४.	बिलखती हुई	कुशलम्	१२.	कुशल
असुतृप्	१.	प्राणों से तृप्त होने वाले	विमृशामहे ।।	१३.	सोचे
खलः ।	३.	दुष्ट ने			

श्लोकार्थ—प्राणों से तृप्त होने वाले जिस दुष्ट ने बिलखती हुई अपनी बहन के बच्चों को मार डाला, उसकी प्रजा आप लोगों का क्या कुशल सोचे ।।

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

इत्थं सूनृतया वाचा नन्देन सुसभाजितः ।

अक्रूरः परिपृष्टेन जहावध्वपरिश्रमम् ॥४३॥

पदच्छेद---　इत्थम् सूनृतया वाचा नन्देन सुसभाजितः ।

अक्रूरः परिपृष्टेन जहौ अध्व परिश्रमम् ॥

शब्दार्थ---

इत्थम्	३.	इस प्रकार	अक्रूरः	७.	अक्रूर जी ने
सूनृतया	४.	मधुर	परिपृष्टेन	१.	पहले ही कुशल मंगल पूछे गये
वाचा	५.	वाणी से	जहौ	१०.	त्याग दिया
नन्देन	२.	नन्द के द्वारा	अध्व	८.	मार्ग की
सुसभाजितः ।	६.	सम्मानित होने पर	परिश्रमम् ॥	९.	थकावट को

श्लोकार्थ---पहले ही कुशल मंगल पूछे गये नन्द के द्वारा इस प्रकार मधुर वाणी में सम्मानित होने पर अक्रूर जी ने मार्ग की थकावट को त्याग दिया ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे अक्रूर-गमनं नाम अष्टात्रिंशः अध्यायः ॥३८॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

एकोनचत्वारिंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—सुखोपविष्टः पर्यङ्के रामकृष्णोरुमानितः।

लेभे मनोरथान् सर्वान् पथि यान् स चकार ह ॥१॥

पदच्छेद— सुख उपविष्टः पर्यङ्के राम कृष्णाय उरु मानितः।
लेभे मनोरथान् सर्वान् पथि यान् सः चकार ह ॥

शब्दार्थ—

सुख	५. आराम से	लेभे	१४. प्राप्त कर लिया
उपविष्टः	७. बैठ गये	मनोरथान्	१. मनोरथों को
पर्यङ्के	६. पलंग पर	सर्वान्	१३. उन सब ही को
राम	१. बलराम और	पथि	११. मार्ग में
कृष्ण	२. श्रीकृष्ण के द्वारा	यान्	६. जिन-जिन
उरु	३. बहुत	सः	८. उन्होंने
मानितः।	४. सम्मानित होकर (अक्रूर जी)	चकार ह ॥	१२. सोचा था

श्लोकार्थ—बलराम और श्रीकृष्ण के द्वारा बहुत सम्मानित होकर अक्रूर जी आराम से पलंग पर बैठ गये। उन्होंने जिन-जिन मनोरथों को मार्ग में सोचा था, उन सब ही को प्राप्त कर लिया ॥

द्वितीयः श्लोकः

किमलभ्यं भगवति प्रसन्ने श्रीनिकेतने।

तथापि तत्परा राजन्न हि वाञ्छन्ति किञ्चन ॥२॥

पदच्छेद— किम् अलभ्यम् भगवति प्रसन्ने श्री निकेतने।
तथापि तत्पराः राजन् न हि वाञ्छन्ति किञ्चन ॥

शब्दार्थ—

किम्	५. क्या	तथापि	७. तो भी
अलभ्यम्	६. दुर्लभ रह जाता है	तत्पराः	९. उनके भक्त
भगवति	३. भगवान् के	राजन्	८. हे राजन्!
प्रसन्ने	४. प्रसन्न होने पर	न हि	११. नहीं
श्री	१. लक्ष्मी के	वाञ्छन्ति	१२. चाहते हैं
निकेतने।	२. आश्रय स्थान	किञ्चन ॥	१०. कुछ भी

श्लोकार्थ—लक्ष्मी के आश्रय स्थान भगवान् के प्रसन्न होने पर क्या दुर्लभ रह जाता है। तो भी हे राजन्! उनके भक्त कुछ भी नहीं चाहते हैं ॥

तृतीयः श्लोकः

सायंतनाशनं कृत्वा भगवान् देवकीसुतः ।

सुहृत्सु वृत्तं कंसस्य पप्रच्छान्यच्चिकीर्षितम् ॥३॥

पदच्छेद— सायंतन अशनम् कृत्वा भगवान् देवकी सुतः ।
सुहृत्सु वृत्तम् कंसस्य पप्रच्छ अन्यत् चिकीर्षितम् ॥

शब्दार्थ—

सायंतन	१. सायंकाल का	सुहृत्सु	७. अपने बन्धुओं के साथ
अशनम्	२. भोजन	वृत्तम्	९. व्यवहार और
कृत्वा	३. करने के बाद	कंसस्य	८. कंस के
भगवान्	४. भगवान्	पप्रच्छ	१२. पूछा
देवकी	५. देवकी	अन्यत्	१०. दूसरे कार्य
सुतः ।	६. पुत्र (श्रीकृष्ण) ने	चिकीर्षितम् ॥	११. करने की इच्छा के बारे में

श्लोकार्थ—सायंकाल का भोजन करने के बाद भगवान् देवकी पुत्र श्रीकृष्ण ने अपने बन्धुओं के साथ कंस के व्यवहार और दूसरे कार्य करने को इच्छा के बारे में पूछा ॥

चतुर्थः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—तात सौम्यागतः कच्चित् स्वागतं भद्रमस्तु वः ।

अपि स्वज्ञातिबन्धूनामनमीवमनामयम् ॥४॥

पदच्छेद— तात सौम्य आगतः कच्चित् स्वागतम् भद्रम् अस्तु वः ।
अपि स्वज्ञाति बन्धूनाम् अनमीवम् अनामयम् ॥

शब्दार्थ—

तात	२. चाचा जी	वः ।	५. आपका
सौम्य	१. हे सौम्य !	अपि	१४. हैं न
आगतः	४. आये	स्व	९. आत्मीय
कच्चित्	३. आप कुशल पूर्वक तो	ज्ञाति	१०. सुहृद्
स्वागतम्	६. स्वागत है (आपका)	बन्धूनाम्	११. कुटम्बीजन
भद्रम्	७. कल्याण	अनमीवम्	१२. कुशल और
अस्तु	८. होवे	अनामयम् ॥	१३. स्वस्थ तो

श्लोकार्थ—हे सौम्य ! चाचा जी ! आप कुशलपूर्वक तो आये । आपका स्वागत है । आपका कल्याण होवे । आत्मीय सुहृद् कुटुम्बीजन कुशल और स्वस्थ तो हैं न ॥

पञ्चमः श्लोकः

किं नु नः कुशलं पृच्छे एधमाने कुलामये ।

कंसे मातुलनाम्न्यङ्ग स्वानां नस्तत्प्रजासु च ॥५॥

पदच्छेद— किम् नु नः कुशलम् पृच्छे एधमाने कुल आमये ।
कंसे मातुल नाम्नि अङ्ग स्वानाम् नः तत् प्रजासुच ॥

शब्दार्थ—

किम् नु	१३. क्या	कंसे	७. कंस के
नः	२. हमारे	मातुल	६. मामा
कुशलम्	१२. कुशल मङ्गल	नाम्नि	५. नाम मात्र के
पृच्छे	१४. पूछें	अङ्ग	१. चाचा जी
एधमाने	८. बढ़ते रहते	स्वानाम्	१०. आत्मीयजन
कुल	३. कुल के लिये	नः	९. हमारे
आमये ।	४. रोग के समान (और)	तत् प्रजासु च ॥	११. और उनके बाल-बच्चों का

श्लोकार्थ—चाचा जी ! हमारे कुल के लिये रोग के समान और नाम मात्र के मामा कंस के बढ़ते रहते हमारे आत्मीयजन और उनके बाल-बच्चों का कुशल मङ्गल क्या पूछें ॥

षष्ठः श्लोकः

अहो अस्मदभूद् भूरि पित्रोर्वृजिनमार्ययोः ।

यद्धेतोः पुत्रमरणं यद्धेतोर्बन्धनं तयोः ॥६॥

पदच्छेद— अहो अस्मत् अभूत् भूरि पित्रोः वृजिनम् ।
यत् हेतोः पुत्रमरणम् यत् हेतोः बन्धनम् तयोः ॥

शब्दार्थ—

अहो	१. खेद है कि	आर्ययोः	३. पूज्य
अस्मत्	२. हमारे	यत् हेतोः	८. जिस मेरे कारण
अभूत्	७. हुआ	पुत्रमरणम्	९. पुत्रों का मरण और
भूरि	५. बहुत ही	यत् हेतोः	१०. जिस कारण
पित्रोः	४. माता-पिता को	बन्धनम्	१२. बन्धन हुआ
वृजिनम्	६. कष्ट	तयोः ॥	११. उन दोनों का

श्लोकार्थ—खेद है कि हमारे पूज्य माता-पिता को बहुत ही कष्ट हुआ । जिस मेरे कारण पुत्रों का मरण और जिस कारण उन दोनों का बन्धन हुआ ॥

सप्तमः श्लोकः

दिष्ट्याद्य दर्शनं स्वानां मह्यं वः सौम्य काङ्क्षितम् ।
सञ्जातं वर्ण्यतां तात तवागमनकारणम् ॥७॥

पदच्छेद— दिष्ट्या अद्य दर्शनम् स्वानाम् मह्यम् वः सौम्य काङ्क्षितम् ।
सञ्जातम् वर्ण्यताम् तात तव आगमन कारणम् ॥

शब्दार्थ—

दिष्ट्या	७.	भाग्य से	सञ्जातम्	८.	हुआ है
अद्य दर्शनम्	५.	आज दर्शन	वर्ण्यताम्	१३.	बतलाइये
स्वानाम्	२.	आत्मीय	तात	९.	हे चाचा जी ! अब आप
मह्यम्	६.	मुझे	तव	१०.	अपने
वः	३.	आप लोगों का	आगमन	११.	आने का
सौम्य	१.	हे सौम्य ! चाचा जी	कारणम् ॥	१२.	कारण
काङ्क्षितम् ।	४.	अभिलाषा करते हुये			

श्लोकार्थ—हे सौम्य चाचा जी ! आत्मीय आप लोगों का अभिलाषा करते हुये आज दर्शन मुझे भाग्य से हुआ है । हे चाचा जी ! अब आप अपने आने का कारण बतलाइये ॥

अष्टमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— **पृष्टो भगवता सर्वं वर्णयामास माधवः ।**
वैरानुबन्धं यदुषु वसुदेववधोद्यमम् ॥८॥

पदच्छेद— पृष्टः भगवता सर्वम् वर्णयामास माधवः ।
वैर अनुबन्धम् यदुषु वसुदेव बध उद्यमम् ॥

शब्दार्थ—

पृष्टः	२.	पूछने पर	वैर	५.	बैर
भगवता	१.	भगवान् के	अनुबन्धम्	६.	ठान रखना (तथा)
सर्वम्	९.	सब कुछ	यदुषु	४.	यदुवंशियों से
वर्णयामास	१०.	बता दिया	वसुदेव	७.	वसुदेव जी के
माधवः ।	३.	अक्रूर जी ने (कंस का)	बध उद्यमम् ॥	८.	वध का प्रयत्न करना

श्लोकार्थ—भगवान् के पूछने पर अक्रूर जी ने कंस का यदुवंशियों से बैर ठान रखना तथा वसुदेव जी के वध का प्रयत्न करना सब कुछ बता दिया ॥

नवमः श्लोकः

यत्संदेशो यदर्थं वा दूतः संप्रेषितः स्वयम् ।
यदुक्तं नारदेनास्य स्वजन्मानकदुन्दुभेः ॥९॥

पदच्छेद— यत् संदेशः यत् अर्थम् वा दूतः संप्रेषितः स्वयम् ।
यत् उक्तम् नारदेन अस्य स्व जन्म आनकदुन्दुभेः ॥

शब्दार्थ—

यत् संदेशः	१. कंस का जो सन्देश था	यत्	७. और जो
यत् अर्थम्	३. जिस लिये अक्रूर जी	उक्तम्	१२. बताया था (वह सब बता दिया)
वा	२. अथवा	नारदेन	११. नारद जी ने
दूतः	५. दूत बना कर	अस्य	८. उस कंस को
संप्रेषितः	६. भेजे गये थे	स्व जन्म	१०. अपने जन्म लेने का वृत्तान्त
स्वयम् ।	४. स्वयम्	आनकदुन्दुभेः ॥	९. वसुदेव जी के यहाँ

श्लोकार्थ—कंस का जो सन्देश था । अथवा जिस लिये अक्रूर जी स्वयम् भेजे गये थे और जो उस कंस को वसुदेव जी के यहाँ अपने (श्रीकृष्ण के) जन्म लेने का वृत्तान्त नारद जी ने बताया था वह सब बता दिया ॥

दशमः श्लोकः

श्रुत्वाक्रूरवचः कृष्णो बलश्च परवीरहा ।
प्रहस्य नन्दं पितरं राज्ञाऽऽदिष्टं विजज्ञतुः ॥१०॥

पदच्छेद— श्रुत्वा अक्रूर वचः कृष्णः बलः च परवीरहा ।
प्रहस्य नन्दम् पितरम् राज्ञा आदिष्टं विजज्ञतुः ॥

शब्दार्थ—

श्रुत्वा	३. सुन कर	**प्रहस्य**	७. हंस कर
अक्रूर	१. अक्रूर की	**नन्दम्**	९. नन्द को
वचः	२. बात	**पितरम्**	८. पिता
कृष्णः	५. कृष्ण	**राज्ञा**	१०. राजा (कंस की)
बलः च	६. और बलराम ने	**आदिष्ट**	११. आज्ञा
परवीरहा ।	४. शत्रुवीर को मारने वाले	**विजज्ञतुः ॥**	१२. बता दी

श्लोकार्थ—अक्रूर की बात सुन कर शत्रुवीर को मारने वाले कृष्ण और बलराम ने हँस कर पिता नन्द को राजा कंस की आज्ञा बता दी ॥

एकादशः श्लोकः

गोपान् समादिशत् सोऽपि गृह्यतां सर्वगोरसः ।
उपायनानि गृह्णीध्वं युज्यन्तां शकटानि च ॥११॥

पदच्छेद— गोपान् सम् आदिशत् सः अपि गृह्यताम् सर्वगोरसः ।
उपायनानि गृह्णीध्वम् युज्यन्ताम् शकटानि च ॥

शब्दार्थ—

गोपान्	३. गोपों को	उपायनानि	७. भेंट की सामग्री
सम् आदिशत्	४. आदेश दिया कि	गृह्णीध्वम्	८. ले लो
सः	१. उन नन्द ने	युज्यन्ताम्	११. तैयार करो
अपि	२. भी	शकटानि	१०. बैलगाड़ी
गृह्यताम्	६. एकत्र करो	च ॥	९. और
सर्वगोरसः ।	५. सारा गोरस		

श्लोकार्थ—उन नन्द जी ने भी गोपों को आदेश दिया कि सारा गोरस एकत्र करो। तथा भेंट की सामग्री ले लो और बैलगारी तैयार करो ॥

द्वादशः श्लोकः

यास्यामः श्वो मधुपुरीं दास्यामो नृपते रसान् ।
द्रक्ष्यामः सुमहत् पर्व यान्ति जानपदाः किल ।
एवमाघोषयत् क्षत्त्रा नन्दगोपः स्वगोकुले ॥१२॥

पदच्छेद— यास्यामः श्वः मधुपुरीम् दास्यामः नृपतेः रसान् ।
द्रक्ष्यामः सुमहत् पर्व यान्ति जानपदाः किल ।
एवम् आघोषयत् क्षत्त्रा नन्दगोपः स्व गोकुले ॥

शब्दार्थ—

यास्यामः	३. यात्रा करेंगे (तथा)	यान्ति	१०. वहाँ पर
श्वः	१. कल हम	जानपदाः	११. सब ही देशों के वासी इकट्ठे होते हैं
मधुपुरीम्	२. मथुरा की	किल ।	९. ऐसा सुना जाता है कि
दास्यामः	६. देंगे और	एवम्	१२. इस प्रकार
नृपतेः	४. राजा कंस को	आघोषयत्	१६. घोषणा करवा दी
रसान्	५. गोरस	क्षत्त्रा	१३. नगर कोतवाल के द्वारा
द्रक्ष्यामः	८. देखेंगे	नन्दगोपः	१४. नन्द बाबा ने
सुमहत् पर्व	७. बहुत बड़ा उत्सव	स्वगोकुले ॥	१५. अपने गोकुल में

श्लोकार्थ—कल हम मथुरा की यात्रा करेंगे। तथा राजा कंस को गोरस देंगे। और बहुत बड़ा उत्सव देखेंगे। ऐसा सुना जाता है कि वहाँ पर सब ही देशों के वासी इकट्ठे हो रहे हैं। इस प्रकार नगर कोतवाल के द्वारा नन्द बाबा ने अपने गोकुल में घोषणा करा दी ॥

त्रयोदशः श्लोकः

गोप्यस्तास्तदुपश्रुत्य बभूवुर्व्यथिता भृशम् ।
रामकृष्णौ पुरीं नेतुमक्रूरं व्रजमागतम् ॥१३॥

पदच्छेद— गोप्यः ताः तत् उपश्रुत्य बभूवुः व्यथिताः भृशम् ।
राम कृष्णौ पुरीम् नेतुम् अक्रूरम् व्रजम् आगतम् ॥

शब्दार्थ—

गोप्यः	२. गोपियाँ	राम	८. बलराम और
ताः	१. वे	कृष्णौ	९. श्रीकृष्ण को
तत्	३. वह	पुरीम्	१०. मथुरा
उपश्रुत्य	४. सुनकर	नेतुम्	११. ले जाने के लिये
बभूवुः	७. हुईं (जब उन्होंने)	अक्रूरम्	१४. अक्रूर को (देखा)
व्यथिताः	६. दुःखित	व्रजम्	१२. व्रज में
भृशम् ।	५. अत्यन्त	आगतम् ॥	१३. आये हुये

श्लोकार्थ—वे गोपियाँ यह सुनकर अत्यन्त दुःखित हुईं । जब उन्होंने बलराम और श्रीकृष्ण को मथुरा ले जाने के लिये व्रज में आये हुये अक्रूर को देखा ॥

चतुर्दशः श्लोकः

काश्चित्तत्कृतहृत्तापश्वासम्लानमुखश्रियः ।
स्रंसद्दुकूलवलयकेशग्रन्थ्यश्च काश्चन ॥१४॥

पदच्छेद— काश्चित् तत् कृत हृत् ताप श्वास म्लान मुखश्रियः ।
स्रंसत् दुकूल वलय केश ग्रन्थ्यः च काश्चन ॥

शब्दार्थ—

काश्चित्	२. कुछ गोपियों के	स्रंसत्	१४. खिसकने लगे
तत्	१. उसे सुनने से	दुकूल	१०. ओढ़नी
कृत	४. उत्पन्न	वलय	११. कंकण और
हृत् ताप	३. हृदय के ताप से	केश	१२. बालों के
श्वास	५. गर्म सांस चलने के कारण	ग्रन्थ्यः	१३. जूड़े
म्लान	७. मलिन हो गई	च	८. और
मुखश्रियः ।	६. मुख की शोभा	काश्चन ॥	९. कुछ के

श्लोकार्थ—उसे सुनने से कुछ गोपियों के हृदय के ताप से उत्पन्न गर्म सांस चलने के कारण मुख की शोभा मलिन हो गई । और कुछ के ओढ़नी, कंकण और बालों के जूड़े खिसकने लगे ॥

पञ्चदशः श्लोकः

अन्याश्च तदनुध्याननिवृत्ताशेषवृत्तयः ।
नाभ्यजानन्निमं लोकमात्मलोकं गता इव ॥१५॥

पदच्छेद— अन्याः च तत् अनुध्यान निवृत्त अशेष वृत्तयः ।
न अभ्यजानन् इमम् लोकम् आत्मलोकम् गताः इव ॥

शब्दार्थ—

अन्याः	२.	अन्य गोपियों की	न	९.	नहीं
च	१.	और	अभ्यजानन्	१४.	जान सकीं अर्थात् भूल गईं
तत्	५.	उन भगवान् के	इमम्	१२.	इस
अनुध्यान	६.	स्वरूप के ध्यान से	लोकम्	१२.	संसार को
निवृत्त	७.	विषयों से विमुख हो गईं	आत्मलोकम्	१०.	आत्मा के लोक में
अशेष	३.	सम्पूर्ण	गताः	११.	स्थित (समाधिस्थ) होकर
वृत्तयः ।	४.	चित्त-वृत्तियाँ	इव ॥	८.	मानों वे गोपियाँ

श्लोकार्थ—और अन्य गोपियों की सम्पूर्ण चित्त वृत्तियाँ उन भगवान् के स्वरूप के ध्यान से विषयों से विमुख हो गईं । मानों वे गोपियाँ आत्मा के लोक में स्थित (समाधिस्थ) होकर इस संसार को भूल गईं ॥

षोडशः श्लोकः

स्मरन्त्यश्चापराः शौरेरनुरागस्मितेरिताः ।
हृदिस्पृशश्चित्रपदा गिरः संमुमुहुः स्त्रियः ॥१६॥

पदच्छेद— स्मरन्त्यः च अपराः शौरेः अनुराग स्मित ईरिताः ।
हृदिस्पृशः चित्रपदाः गिरः संमुमुहुः स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

स्मरन्त्यः	११.	स्मरण करती हुई	ईरिताः ।	७.	कहे गये
च	१.	और (उनके द्वारा)	हृदिस्पृशः	९.	हृदयस्पर्शी
अपराः	२.	दूसरी	चित्रपदाः	८.	विचित्र पदों से युक्त तथा
शौरेः	४.	श्रीकृष्ण के	गिरः	१०.	वचनों का
अनुराग	५.	प्रेम	संमुमुहुः	१२.	मोहित हो गईं
स्मित	६.	मुसकराहट और	स्त्रियः ॥	३.	स्त्रियाँ

श्लोकार्थ—और दूसरी स्त्रियाँ श्रीकृष्ण के प्रेम, मुसकराहट और उनके द्वारा कहे गये विचित्र पदों से युक्त तथा हृदयस्पर्शी वचनों का स्मरण करती हुई मोहित हो गईं ॥

सप्तदशः श्लोकः

गतिं सुललितां चेष्टां स्निग्धहासावलोकनम् ।
शोकापहानि नर्माणि प्रोद्दामचरितानि च ॥१७॥

पदच्छेद— गतिम् सुललिताम् चेष्टाम् स्निग्ध हास अवलोकनम् ।
शोक अपहानि नर्माणि प्रोद्दाम चरितानि च ॥

शब्दार्थ—

गतिम्	२.	चाल	शोक	७.	शोक
सुललिताम्	१.	गोपियाँ श्रीकृष्ण कीअत्यन्त सुन्दर	अपहानि	८.	मिटाने वाली
चेष्टाम्	३.	भाव-भंगी	नर्माणि	९.	ठिठोलियाँ
स्निग्ध	४.	प्रेम भरी	प्रोद्दाम	११.	उदारता भरी
हास	५.	हंसी	चरितानि	१२.	लोलाओं का चिन्तन करने लगीं
अवलोकनम् ।	६.	चितवन	च ॥	१०.	और

श्लोकार्थ—गोपियाँ श्रीकृष्ण की अत्यन्त सुन्दर चाल, भाव-भंगी, प्रेमभरी हंसी, चितवन, शोक मिटाने वाली ठिठोलियाँ और उदारता भरी लीलाओं का चिन्तन करने लगीं ॥

अष्टादशः श्लोकः

चिन्तयन्त्यो मुकुन्दस्य भीता विरहकातराः ।
समेताः सङ्घशः प्रोचुरश्रुमुख्योऽच्युताशयाः ॥१८॥

पदच्छेद— चिन्तयन्त्यः मुकुन्दस्य भीताः विरह कातराः ।
समेताः सङ्घशः प्रोचुः अश्रु मुख्यः अच्युत आशयाः ॥

शब्दार्थ—

चिन्तयन्त्यः	१.	चिन्तन करती हुईं (गोपियाँ)	सङ्घशः	१०.	झुंड की झुंड
मुकुन्दस्य	२.	श्रीकृष्ण के	प्रोचुः	१२.	कहने लगीं
भीताः	५.	भयभीत	अश्रु	६.	आँसू से भीगे
विरह	३.	विरह से	मुख्यः	७.	मुख वाली
कातराः ।	४.	कातर (तथा)	अच्युत	८.	भगवान् में अर्पित
समेताः	११.	इकट्ठी होकर	आशयाः ॥	९.	चित्त वाली (वे गोपियाँ)

श्लोकार्थ—चिन्तन करती हुईं, विरह से कातर तथा भयभीत आँसू से भीगे मुख वाली भगवान् में अर्पित चित्त वाली वे गोपियाँ झुंड की झुंड इकट्ठी होकर कहने लगीं ॥

एकोनविंशः श्लोकः

गोप्य ऊचुः अहो विधातस्तव न क्वचिद् दया संयोज्य मैत्र्या प्रणयेन देहिनः ।
तांश्चाकृतार्थान् वियुनङ्क्ष्यपार्थकं विक्रीडितं तेऽर्भकचेष्टितं यथा ॥१९॥

पदच्छेद— अहो विधातः तव न क्वचित् दया संयोज्य मैत्र्या प्रणयेन देहिनः ।
तान् च अकृत अर्थान् वियुनङ्क्षि अपार्थकम् विक्रीडितम् ते अर्भकचेष्टितम् यथा ॥

शब्दार्थ—

अहो विधातः	१. हाय ! विधाता	तान् च अकृत	८. फिर बिना उनकी
तव	२. तुम्हें	अर्थान्	९. अभिलाषा पूर्ण किये
न	४. नहीं है (जो तुम)	वियुनङ्क्षि	११. अलग-अलग कर देते हो
क्वचित् दया	३. कहीं दया	अपार्थकम्	१०. व्यर्थ में
संयोज्य	७. मिला कर	विक्रीडितम् ते	१४. यह तुम्हारा खिलवाड़ है
मैत्र्या प्रणयेन	६. मित्रता और प्रेम से	अर्भकचेष्टितम्	१२. बच्चों के खेल के
देहिनः ।	५. प्राणियों को	यथा ॥	१३. समान

श्लोकार्थ—हाय ! विधाता, तुम्हें कहीं दया नहीं है । जो तुम प्राणियों को मित्रता और प्रेम से मिलाकर फिर बिना उनकी अभिलाषा पूर्ण किये व्यर्थ में अलग-अलग कर देते हो । बच्चों के खेल के समान यह तुम्हारा खिलवाड़ है ॥

विंशः श्लोकः

यस्त्वं प्रदर्श्यासितकुन्तलावृतं मुकुन्दवक्त्रं सुकपोलमुन्नसम् ।
शोकापनोदस्मितलेशसुन्दरं करोषि पारोक्ष्यमसाधु ते कृतम् ॥२०॥

पदच्छेद— यः त्वम् प्रदर्श्य असितकुन्तल आवृतम् मुकुन्द वक्त्रम् सुकपोलम् उन्नसम् ।
शोक अपनोद स्मित लेश सुन्दरम् करोषि पारोक्ष्यम् असाधु ते कृतम् ॥

शब्दार्थ—

यः त्वम्	१. जो तुम	शोक अपनोद	६. शोक मिटाने वाली
प्रदर्श्य	१०. दिखा कर	स्मित	७. मन्द मुसकान की
असित कुन्तल	२. काले घुंघराले बालों से	लेश सुन्दरम्	८. सुन्दर रेखा से युक्त
आवृतम्	३. आच्छादित (ढके हुये)	करोषि	१२. कर देते हो (यह)
मुकुन्द वक्त्रम्	९. श्रीकृष्ण के मुख को	पारोक्ष्यम्	११. आँखों से ओझल
सुकपोलम्	४. सुन्दर कपोल	असाधु	१४. ठीक नहीं है
उन्नसम् ।	५. ऊँची नासिका (और)	ते कृतम् ॥	१३. तुम्हारी करतूत

श्लोकार्थ—जो तुम काले घुंघराले बालों से ढके हुये सुन्दर कपोल, ऊँची नासिका और शोक मिटाने वाली मन्द मुसकान की सुन्दर रेखा से युक्त श्रीकृष्ण के मुख को दिखा कर आँखों से ओझल कर देते हो । यह तुम्हारी करतूत ठीक नहीं है ॥

एकविंशः श्लोकः

क्रूरस्त्वमक्रूरसमाख्यया स्म नश्चक्षुर्हि दत्तं हरसे बताज्ञवत् ।
येनैकदेशेऽखिलसर्गसौष्ठवं त्वदीयमद्राक्ष्म वयं मधुद्विषः ॥२१॥

पदच्छेद— क्रूरः त्वम् अक्रूर सम् आख्यया स्म नः चक्षुः हि दत्तम् हरसे बत अज्ञवत् ।
येन एक देशे अखिल सर्गं सौष्ठवम् त्वदीयम् अद्राक्ष्म वयम् मधुद्विषः ॥

शब्दार्थ—

क्रूर	४. क्रूर-हो (जो)	येन	९. जिससे
त्वम् अक्रूर	२. तुम अक्रूर के	एक देशे	१२. एक-एक अङ्ग में
सम् आख्यया	३. नाम से	अखिल सर्ग	१४. सम्पूर्ण सृष्टि का
स्म	८. हो (यह)	सौष्ठवम्	१५. सौन्दर्य
नः चक्षुः हि दत्तम्	५. हमें दी हुई आँखों को ही	त्वदीयम्	१३. तुम्हारी
हरसे	७. छीन रहे हो	अद्राक्ष्म	१६. देखती थीं
बत	१. खेद की बात है कि	वयम्	१०. हम
अज्ञवत् ।	६. मूर्ख की भाँति	मधुद्विषः ॥	११. श्रीकृष्ण के

श्लोकार्थ—खेद की बात है कि तुम अक्रूर के नाम से क्रूर हो जो हमें दी हुई आँखों को ही मूर्ख की भाँति छीन रहे हो। जिससे हम श्रीकृष्ण के एक-एक अङ्ग में तुम्हारी सम्पूर्ण सृष्टि का सौन्दर्य देखती थीं ॥

द्वाविंशः श्लोकः

न नन्दसूनुः क्षणभङ्गसौहृदः समीक्षते नः स्वकृतातुरा बत ।
विहाय गेहान् स्वजनान् सुतान् पतींस्तद्दास्यमद्धोपगता नवप्रियः ॥२२॥

पदच्छेद— न नन्द सूनुः क्षण भङ्ग सौहृदः समीक्षते नः स्वकृत आतुराः बत ।
विहाय गेहान् स्वजनान् सुतान् पतीन् तत् दास्यम् अद्धा उपगताः नव प्रियः ॥

शब्दार्थ—

न	८. नहीं	विहाय	१३. छोड़ कर
नन्द सूनुः	५. श्रीकृष्ण	गेहान्	१०. और हम घरों
क्षण	२. क्षण भर में	स्वजनान्	११. स्वजनों
भङ्ग सौहृदः	३. सौहार्द को भंग कर देने वाले	सुतान् पतीन्	१२. पुत्रों और पतियों को
समीक्षते	९. देख रहे हैं	तत् दास्यम्	१५. उनकी दासी
नः	७. हमें	अद्धा	१४. बिलकुल
स्वकृत आतुराः	६. अपने कृत्य से व्याकुल	उपगताः	१६. बन गई हैं
बत ।	१. खेद की बात है कि	नव प्रियः ॥	४. नये लोगों के प्यारे

श्लोकार्थ—खेद की बात है कि क्षण भर में सौहार्द को भंग कर देने वाले नये लोगों के प्यारे श्रीकृष्ण अपने कृत्य से व्याकुल हमें नहीं देख रहे हैं। और हम घरों, स्वजनों, पुत्रों और पतियों को छोड़ कर बिलकुल उनकी दासी बन गई हैं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

सुखं प्रभाता रजनीयमाशिषः सत्या बभूवुः पुरयोषितां ध्रुवम् ।
याः संप्रविष्टस्य मुखं व्रजस्पतेः पास्यन्त्यपाङ्गोत्कलितस्मितासवम् ॥२३॥

पदच्छेद— सुखम् प्रभाता रजनी इयम् आशिषः सत्याः बभूवुः पुरयोषिताम् ध्रुवम् ।
याः संप्रविष्टस्य मुखम् व्रजस्पतेः पास्यन्ति अपाङ्ग उत्कलित स्मित आसवम् ॥

शब्दार्थ—

सुखम्	४.	मंगलमय	याः संप्रविष्टस्य	६.	जो मथुरा में प्रवेश करने वाले
प्रभाता	५.	प्रभात से युक्त होगी	मुखम्	१४.	मुख के
रजनीऽयम्	१.	यह रात	व्रजस्पतेः	१०.	व्रजराज के
आशिषः	६.	उनकी अभिलाषायें	पास्यन्ति	१६.	पान करेंगी
सत्याः	७.	सत्य ही पूर्ण	अपाङ्ग	११.	तिरछी चितवन से
बभूवुः	८.	होंगी	उत्कलित	१२.	उत्कण्ठित भरे
पुरयोषिताम्	२.	नगर की स्त्रियों के लिये	स्मित	१३.	मन्द मुसकान से युक्त
ध्रुवम् ।	३.	निश्चित ही	आसवम् ॥	१५.	मादक मधु का

श्लोकार्थ—यह रात नगर की स्त्रियों के लिये मङ्गलमय प्रभात से युक्त होगी । तथा उनकी अभिलाषायें सत्य ही पूर्ण होंगी । जो मथुरा में प्रवेश करने वाले व्रजराज के तिरछी चितवन से उत्कण्ठित मन्द मुसकान से युक्त मुख के मादक मधु का पान करेंगी ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

तासां मुकुन्दो मधुमञ्जुभाषितैर्गृहीतचित्तः परवान् मनस्व्यपि ।
कथं पुनर्नः प्रतियास्यतेऽबला ग्राम्याः सलज्जस्मितविभ्रमैर्भ्रमन् ॥२४॥

पदच्छेद— तासाम् मुकुन्दः मधुमञ्जु भाषितैः गृहीत चित्तः परवान् मनस्वी अपि ।
कथम् पुनः नः प्रतियास्यते अबलाः ग्राम्याः सलज्ज स्मित विभ्रमैः भ्रमन् ॥

शब्दार्थ—

तासाम्	३.	उन (नागरियों) के	कथम्	१३.	क्यों
मुकुन्दः	२.	श्रीकृष्ण	पुनः नः	११.	फिर हम
मधुमञ्जु	४.	मधुर एवं सुन्दर	प्रतियास्यते	१४.	लौटेंगे
भाषितैः गृहीत	५.	वचनों से आकर्षित	अबलाः ग्राम्याः	१२.	गंवार स्त्रियों के पास
चित्तः	६.	चित्त होकर	सलज्ज स्मित	८.	लज्जा पूर्ण मुस्कराहट एवं
परवान्	७.	पराधीन हो जायेंगे (तथा)	विभ्रमैः	६.	विलास पूर्ण भाव-भंगिमा में
मनस्वी अपि ।	१.	धैर्यवान् होने पर भी	भ्रमन् ॥	१०.	रमे हुये होने पर

श्लोकार्थ—धैर्यवान् होने पर भी श्रीकृष्ण उन नागरियों के मधुर एवं सुन्दर वचनों से आकर्षित चित्त हो कर पराधीन हो जायेंगे तथा लज्जापूर्ण मुसकराहट एवं विलासपूर्ण भाव भंगिमा में रमे हुये होने पर फिर हम गंवार स्त्रियों के पास क्यों लौटेंगे ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

अद्य ध्रुवं तत्र दृशो भविष्यते दाशार्हभोजान्धकवृष्णिसात्वताम् ।
महोत्सवः श्रीरमणं गुणास्पदं द्रक्ष्यन्ति ये चाध्वनि देवकीसुतम् ॥२५॥

पदच्छेद— अद्य ध्रुवम् तत्र दृशः भविष्यते दाशार्ह भोज अन्धक वृष्णि सात्वताम् ।
महोत्सवः श्रीरमणम् गुण आस्पदम् द्रक्ष्यन्ति ये च अध्वनि देवकीसुतम् ॥

शब्दार्थ—

अद्यध्रुवम्	१. आज निश्चित ही	**महोत्सवः**	७. महान् आनन्द प्राप्त
तत्र	२. वहाँ (मथुरा में)	**श्रीरमणम्**	१०. लक्ष्मीरमण
दृशः	६. आँखों को	**गुण**	११. गुणों के
भविष्यते	८. होगा	**आस्पदम्**	१२. धाम
दाशार्ह भोज	३. दाशार्ह, भोज	**द्रक्ष्यन्ति**	१४. देखेंगे
अन्धकवृष्णि	४. अन्धक वृष्णि	**ये च अध्वनि**	९. जो मार्ग में
सात्वताम् ।	५. सात्वतवंश वालों की	**देवकीसुतम् ॥**	१३. देवकी पुत्र श्रीकृष्ण को

श्लोकार्थ—आज निश्चित ही वहाँ मथुरा में दाशार्ह-भोज-अन्धक-वृष्णि और सात्वत वंश वालों की आँखों को महान् आनन्द होगा । जो मार्ग में लक्ष्मीरमण, गुणों के धाम, देवकी पुत्र श्रीकृष्ण को देखेंगे ॥

षड्विंशः श्लोकः

मैतद्विधस्याकरुणस्य नाम भूदक्रूर इत्येतदतीव दारुणः ।
योऽसावनाश्वास्य सुदुःखितं जनं प्रियात्प्रियं नेष्यति पारमध्वनः ॥२६॥

पदच्छेद— मा एतद्विधस्य अकरुणस्य नाम भूत् अक्रूर इति एतत् अतीव दारुणः ।
यः असौ अनाश्वास्य सुदुःखितम् जनम् प्रियात् प्रियम् न एष्यति पारम् अध्वनः ॥

शब्दार्थ—

मा	६. नहीं	**यः असौ**	८. जो यह
एतद्विधस्य	३. इस प्रकार के	**अनाश्वास्य**	११. सान्त्वना न देकर
अकरुणस्य	४. करुणाहीन व्यक्ति का	**सुदुःखितम्**	९. अत्यन्त दुःखी
नाम भूत्	७. नाम होना चाहिये	**जनम्**	१९. जन को
अक्रूर इतिएतत्	५. अक्रूर यह	**प्रियात् प्रियम्**	१२. प्रिय से भी प्रिय (परमप्रिय) को
अतीव	१. अत्यन्त	**न एष्यति**	१४. ले जा रहा है
दारुणः ।	२. भयंकर और	**पारम् अध्वनः ॥**	१३. मार्ग से परे (आँखों से दूर करके)

श्लोकार्थ- अत्यन्त भयंकर और इस प्रकार के करुणाहीन व्यक्ति का अक्रूर यह नाम नहीं होना चाहिये । जो यह अत्यन्त दुःखी जन को सान्त्वना न देकर प्रिय से प्रिय को मार्ग से परे आँखों से दूर करके ले जा रहा है ॥

सप्तविंशः श्लोकः

अनार्द्रधीरेष समास्थितो रथं तमन्वमी च त्वरयन्ति दुर्मदाः।
गोपा अनोभिः स्थविरैरुपेक्षितं दैवं च नोऽद्य प्रतिकूलमीहते ॥२७॥

पदच्छेद— अनार्द्रधीः एषः सम् आस्थितः रथम् तम् अनु अमी च त्वरयन्ति दुर्मदाः।
गोपाः अनोभिः स्थविरैः उपेक्षितम् दैवम् च नः अद्य प्रतिकूलम् ईहते ॥

शब्दार्थ—

अनार्द्रधीः	२. दयाहीन होकर	गोपाः अनोभिः	७. गोपगण छकड़ोंद्वारा जाने को
एषः	१. ये श्याम सुन्दर	स्थविरैः	१०. बूढ़े लोगों ने इनकी
सम् आस्थितः	४. अच्छी प्रकार बैठ गये हैं	उपेक्षितम्	११. उपेक्षा कर दी है
रथम्	३. रथ पर	दैवम्	१२. दैव
तम् अनु अमी च	५. और उनके पीछे	च	९. और
त्वरयन्ति	८. जल्दी मचा रहे हैं	नः अद्य	१३. आज हमारे
दुर्मदाः।	६. मतवाले	प्रतिकूलम् ईहते ॥	१४. प्रतिकूल चेष्टा कर रहा है

श्लोकार्थ—ये श्याम सुन्दर दया हीन होकर रथ पर अच्छी प्रकार बैठ गये हैं। और उनके पीछे मतवाले गोप गण छकड़ों द्वारा जाने की जल्दी मचा रहा है। और बूढ़े लोगों ने तो उपेक्षा कर दी है। दैव आज हमारे प्रतिकूल चेष्टा कर रहा है ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

निवारयामः समुपेत्य माधवं किं नोऽकरिष्यन् कुलवृद्धबान्धवाः।
मुकुन्दसङ्गान्निमिषार्धदुस्त्यजाद् दैवेन विध्वंसितदीनचेतसाम् ॥२८॥

पदच्छेद— निवारयामः समुपेत्य माधवम् किम् नः अकरिष्यन् कुल वृद्ध बान्धवाः।
मुकुन्द सङ्गात् निमिषार्ध दुस्त्यजात् दैवेन विध्वंसित दीन चेतसाम् ॥

शब्दार्थ—

निवारयामः	३.	रोकेंगी	मुकुन्द	१३.	भगवान् का
समुपेत्य	२.	चलकर हम उन्हें	सङ्गात्	१४.	सङ्ग
माधवम्	१.	श्याम सुन्दर के पास	निमिषार्ध	१५.	आधे क्षण के लिये भी
किम्	७.	क्या	दुस्त्यजात्	१६.	त्यागने योग्य नहीं है
नः	६.	हमारा	दैवेन	९.	भाग्य के द्वारा
अकरिष्यन्	८.	कर लेंगे	विध्वंसित	१०.	नष्ट किये गये
कुलवृद्ध	४.	कुल के बड़े-बूढ़े और	दीन	११.	दुःखी
बान्धवाः।	५.	बन्धु जन	चेतसाम् ॥	१२.	चित्त वाली (हमारे लिये)

श्लोकार्थ—श्यामसुन्दर के पास चलकर हम उन्हें रोकेंगी। कुल के बड़े-बूढ़े और बन्धु जन हमारा क्या कर लेंगे। भाग्य के द्वारा नष्ट किये गये दुःखी चित्त वाली हमारे लिये भगवान् का सङ्ग आधे क्षण के लिये भी त्यागने योग्य नहीं है ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

यस्यानुरागललितस्मितवल्गुमन्त्रलीलावलोकपरिरम्भणरासगोष्ठ्याम् ।
नीताः स्म नः क्षणमिव क्षणदा विना तं गोप्यः कथं न्वतितरेम तमो दुरन्तम् ॥२९॥

पदच्छेद— यस्य अनुराग ललित स्मित वल्गु मन्त्र लीला अवलोक परिरम्भण रास गोष्ठ्याम् ।
नीताः स्म नः क्षणम् इव क्षणदाः विना तम् गोप्यः कथम्नुअतितरेम तमः दुरन्तम् ।

शब्दार्थ—

यस्य अनुराग	२.	जिनकी प्रेम भरी	नीताः स्म	१३.	बिता दी थी
ललित स्मित	३.	मनोहर मुसकान	नः	८.	हमने
वल्गु मन्त्र	४.	मधुर बात चीत	क्षणम् इव	१२.	एक क्षण के समान
लीला	५.	विलास पूर्ण	क्षणदाः	११.	रात्रियाँ
अवलोक	६.	चितवन और	विना तम्	१४.	उनके बिना
परिरम्भण	७.	आलिंगन से	गोप्यः	१.	हे गोपियो !
रास	९.	रास	कथम्नुअतितरेम	१६.	कैसे पार कर पायेंगी
गोष्ठ्याम् ।	१०.	लीला की वे	तमः दुरन्तम् ।।	१५.	अपार विरह व्यथा को

श्लोकार्थ—हे गोपियो ! जिनकी प्रेमभरी मनोहर मुसकान, मधुर बातें, विलास पूर्ण चितवन और आलिंगन से हमने रासलीला की वे रात्रियाँ एक क्षण के समान बिता दी थीं, उनके बिना अपार व्यथा को कैसे पार कर पायेंगी ।।

त्रिंशः श्लोकः

योऽह्नः क्षये व्रजमनन्तसखः परीतो गोपैर्विशन् खुररजश्छुरितालकस्रक् ।
वेणुं क्वणन् स्मितकटाक्षनिरीक्षणेन चित्तं क्षिणोत्यमुमृते नु कथं भवेम ॥३०॥

पदच्छेद— यः अह्नः क्षये व्रजम् अनन्तसखः परितः गोपैः विशन् खुररजः छुरितालकस्रक् ।
वेणुम् क्वणन् स्मित कटाक्ष निरीक्षणेन चित्तम् क्षिणोति अमुम् ऋते नु कथम् भवेम ।।

शब्दार्थ—

यः	५.	जो श्रीकृष्ण	वेणुम् क्वणन्	१०.	बाँसुरी बजाते हुये
अह्नः क्षये	१.	प्रतिदिन सायंकाल में	स्मित	११.	मुस्कराते और
व्रजम्	८.	व्रज में	कटाक्ष	१२.	तिरछी
अनन्तसखः	७.	बलराम जी के साथ	निरीक्षणेन	१३.	चितवन से हमारे
परितः गोपैः	६.	ग्वालवालों से घिरे हुये	चित्तम् क्षिणोति	१४.	चित्त को वेध डालते हैं
विशन्	९.	प्रवेश करते हुये (तथा)	अमुम्	१५.	उनके
खुररजः	२.	गौओं की खुर की धूली से	ऋते नु	१६.	बिना भला हम
छुरितालक	३.	ढके हुये घुंघराले बाल	कथम् भवेम ।।	१७.	कैसे रहेंगी
स्रक् ।	४.	और पुष्प हार वाले			

श्लोकार्थ—प्रतिदिन सायंकाल में गौओं के खुर की धूली से ढके हुये घुंघराले बाल और पुष्पहार वाले जो श्रीकृष्ण ग्वालों से घिरे हुये बलराम जी के साथ व्रज में प्रवेश करते हुये तथा बाँसुरी बजाते हुये मुस्कराते और तिरछी चितवन से हमारे चित्त को बेध डालते हैं उनके बिना हम कैसे रहेंगी ।।

एकत्रिंशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—एवं ब्रुवाणा विरहातुरा भृशं व्रजस्त्रियः कृष्णविषक्तमानसाः ।
विसृज्य लज्जां रुरुदुः स्म सुस्वरं गोविन्द दामोदर माधवेति॥३१॥**

पदच्छेद— एवम् ब्रुवाणाः विरह आतुराः भृशम् व्रजस्त्रियः कृष्ण विषक्त मानसाः ।
विसृज्य लज्जाम् रुरुदुः स्म सुस्वरम् गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	विसृज्य	१०.	त्याग कर
ब्रुवाणाः	२.	कहती हुईं	लज्जाम्	९.	लज्जा
विरह आतुराः	८.	विरह से व्याकुल होकर	रुरुदुः	१५.	रोने
भृशम्	७.	अत्यन्त	स्म	१६.	लगीं
व्रजस्त्रियः	६.	व्रज की गोपियाँ	सुस्वरम्	१४.	ललित स्वर से
कृष्ण	३.	कृष्ण में	गोविन्द	११.	हे गोविन्द !
विषक्त	४.	आसक्त	दामोदर	१२.	हे दामोदर
मानसाः ।	५.	मन वाली	माधवेति ॥	१३.	हे माधव ! इस प्रकार (कह कर)

श्लोकार्थ—इस प्रकार कहती हुई कृष्ण में आसक्त मन वाली व्रज की गोपियाँ अत्यन्त विरह से व्याकुल होकर लज्जा छोड़ कर हे गोविन्द, हे दामोदर, हे माधव इस प्रकार कह कर ललित स्वर से रोने लगीं ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

**स्त्रीणामेवं रुदन्तीनामुदिते सवितर्यथ ।
अक्रूरश्चोदयामास कृतमैत्रादिको रथम् ॥३२॥**

पदच्छेद— स्त्रीणाम् एवम् रुदन्तीनाम् उदिते सवितरि अथ ।
अक्रूरः चोदयामास कृत मैत्रादिकः रथम् ॥

शब्दार्थ—

स्त्रीणाम्	१.	गोपियाँ	अक्रूरः	८.	अक्रूर जी
एवम्	२.	इस प्रकार	चोदयामास	१०.	हाँकने लगे
रुदन्तीनाम्	३.	रो रही थीं	कृत	७.	निवृत्त होकर
उदिते	५.	उदय होने पर	मैत्रादिकः	६.	सन्ध्यावन्दनादि से
सवितरि अथ ।	४.	अनन्तर सूर्य के	रथम् ॥	९.	रथ को

श्लोकार्थ—गोपियाँ इस प्रकार रो रही थीं । अनन्तर सूर्य के उदय होने पर सन्ध्यावन्दनादि से निवृत्त होकर अक्रूर जी रथ को हाँकने लगे ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

गोपास्तमन्वसज्जन्त नन्दाद्याः शकटैस्ततः ।
आदायोपायनं भूरि कुम्भान् गोरससम्भृतान् ।।३३।।

पदच्छेद— गोपाः तम् अनुअसज्जन्त नन्द आद्याः शकटैः ततः ।
आदाय उपायनम् भूरि कुम्भान् गोरस सम्भृतान् ।।

शब्दार्थ—

गोपाः	३. गोप गण	आदाय	९. लेकर
तम्	११. उनके	उपायनम्	८. भेंट की सामग्रियाँ
अनुअसज्जन्त	१२. पीछे-पीछे चले	भूरि	७. बहुत सी
नन्द आद्याः	२. नन्द आदि	कुम्भान्	६. मटके (तथा)
शकटैः	१०. छकड़ों से	गोरस	४. गोरस (दूध दही आदि से)
ततः ।	१. तदनन्तर	सम्भृतान् ।।	५. भरे हुये

श्लोकार्थ—तदनन्तर नन्द आदि गोपगण गोरस दूध-दही आदि से भरे हुये मटके तथा बहुत सी भेंट की सामग्रियाँ लेकर उनके पीछे-पीछे चले ।।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

गोप्यश्च दयितं कृष्णमनुव्रज्यानुरञ्जिताः ।
प्रत्यादेशं भगवतः काङ्क्षन्त्यश्चावतस्थिरे ।।३४।।

पदच्छेद— गोप्यः च दयितम् कृष्णम् अनुव्रज्य अनुरञ्जिताः ।
प्रति आदेशम् भगवतः काङ्क्षन्त्यः च अवतस्थिरे ।।

शब्दार्थ—

गोप्यः	२. गोपियाँ	प्रति आदेशम्	९. सन्देश
च	३. भी	भगवतः	८. भगवान् से
दयितम्	४. प्रियतम	काङ्क्षन्त्यः	१०. पाने की इच्छा से
कृष्णम्	५. कृष्ण के	च	७. और
अनुव्रज्य	६. पीछे-पीछे चल कर	अवतस्थिरे ।।	११. खड़ी हो गयीं
अनुरञ्जिताः ।	१. अनुरक्त		

श्लोकार्थ—अनुरक्त गोपियाँ भी प्रियतम कृष्ण के पीछे-पीछे चल कर और भगवान् से सन्देश पाने की इच्छा से खड़ी हो गईं ।।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

तास्तथा तप्यतीर्वीक्ष्य स्वप्रस्थाने यदूत्तमः ।
सान्त्वयामास सप्रेमैरायास्य इति दौत्यकैः ॥३५॥

पदच्छेद— ताः तथा तप्यतीः वीक्ष्य स्व प्रस्थाने यदूत्तमः ।
सान्त्वयामास सप्रेमैः आयास्ये इति दौत्यैकैः ॥

शब्दार्थ—

ताः	६.	उन गोपियों को	यदूत्तमः ।	१.	यदुवंशियों में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण ने
तथा	४.	इस प्रकार	सान्त्वयामास	१२.	धीरज बंधाया
तप्यतीः	५.	सन्तप्त होती हुई	सप्रेमैः	११.	प्रेम सन्देश देकर
वीक्ष्य	७.	देख कर	आयास्ये	९.	मैं आऊंगा
स्व	२.	अपनी	इति	१०.	यह
प्रस्थाने	३.	यात्रा करने पर	दौत्यैकैः ॥	८.	दूतों के द्वारा

श्लोकार्थ—यदुवंशियों में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण ने अपनी यात्रा करने पर इस प्रकार सन्तप्त होती हुई उन गोपियों को देख कर दूतों के द्वारा मैं आऊंगा यह प्रेम सन्देश देकर धीरज बंधाया ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

यावदालक्ष्यते केतुर्यावद् रेणू रथस्य च ।
अनुप्रस्थापितात्मानो लेख्यानीवोपलक्षिताः ॥३६॥

पदच्छेद— यावत् आलक्ष्यते केतुः यावत् रेणुः रथस्य च ।
अनुप्रस्थापित आत्मानः लेख्यानि इव उपलक्षिताः ॥

शब्दार्थ—

यावत्	१.	जब-तक	च ।	४.	और
आलक्ष्यते	६.	दिखाई देती रही	अनुप्रस्थापित	१२.	खड़े रहे
केतुः	३.	ध्वजा	आत्मानः	११.	उनके शरीर
यावत्	७.	तब-तक	लेख्यानि	८.	चित्र लिखित के
रेणुः	५.	धूल	इव	९.	समान
रथस्य	२.	रथ की	उपलक्षिता ॥	१०.	ज्यों के त्यों

श्लोकार्थ—जब-तक रथ की ध्वजा और धूल दिखाई देती रही तब-तक चित्रलिखित के समान ज्यों के त्यों उनके शरीर खड़े रहे ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

ता निराशा निववृतुर्गोविन्दविनिवर्तने ।
विशोका अहनी निन्युर्गायन्त्यः प्रियचेष्टितम् ॥३७॥

पदच्छेद— ताः निराशाः निववृतुः गोविन्द विनिवर्तने ।
विशोकाः अहनी निन्युः गायन्त्यः प्रियचेष्टितम् ॥

शब्दार्थ—

ताः	३.	वे गोपियाँ	विशोकाः	६.	शोक रहित होकर
निराशाः	४.	निराश होकर	अहनी	६.	रात-दिन
निववृतुः	५.	लौट गईं (और)	निन्युः	१०.	दिन बताने लगीं
गोविन्द	१.	श्रीकृष्ण के	गायन्त्यः	८.	गान करती हुई
विनिवर्तने ।	२.	लौटाने के सम्बन्ध में	प्रियचेष्टितम् ॥	७.	प्रियतम की लीलाओं का

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के लौटाने के सम्बन्ध में वे गोपियाँ निराश होकर लौट गईं। और रात-दिन प्रियतम की लीलाओं का गान करती हुई शोकरहित होकर दिन बिताने लगीं ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

भगवानपि सम्प्राप्तो रामाक्रूरयुतो नृप ।
रथेन वायुवेगेन कालिन्दीमघनाशिनीम् ॥३८॥

पदच्छेद— भगवान् अपि सम्प्राप्तः राम अक्रूरयुतः नृप ।
रथेन वायु वेगेन कालिन्दीम् अघ नाशिनीम् ॥

शब्दार्थ—

भगवान्	२.	श्रीकृष्ण	रथेन	८.	रथ से
अपि	३.	भी	वायु	६.	वायु के समान
सम्प्राप्तः	१२.	पहुँच गये	वेगेन	७.	वेग वाले
राम	४.	बलराम और	कालिन्दीम्	११.	यमुना के किनारे
अक्रूरयुतः	५.	अक्रूर के साथ	अघ	६.	पाप
नृप ।	१.	हे राजन् !	नाशिनीम् ॥	१०.	नाशिनी

श्लोकार्थ—हे राजन् ! श्रीकृष्ण भी बलराम और अक्रूर जी के साथ वायु के समान वेग वाले रथ से पापनाशिनी यमुना के किनारे पहुँच गये ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

तत्रोपस्पृश्य पानीयं पीत्वा मृष्टं मणिप्रभम् ।
वृक्षषण्डमुपव्रज्य सरामो रथमाविशत् ॥३९॥

पदच्छेद— तत्र उपस्पृश्य पानीयम् पीत्वा मृष्टम् मणिप्रभम् ।
वृक्ष षण्डम् उपव्रज्य सरामः रथम् आविशत् ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ	वृक्ष	७.	वृक्षों के
उपस्पृश्य	२.	आचमन करके	षण्डम्	८.	झुरमुट से
पानीयम्	५.	जल	उपव्रज्य	९.	जाकर
पीत्वा	६.	पीकर	सरामः	१०.	बलराम जी के साथ
मृष्टम्	३.	स्वच्छ एवं	रथम्	११.	रथ पर
मणिप्रभम् ।	४.	मणि के समान कान्ति वाला	आविशत् ॥	१२.	बैठ गये

श्लोकार्थ—वहाँ आचमन करके स्वच्छ एवं मणि के समान कान्ति वाला जल पीकर वृक्षों के झुरमुट से जाकर बलराम जी के साथ रथ पर बैठ गये ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

अक्रूरस्तावुपामन्त्र्य निवेश्य च रथोपरि ।
कालिन्द्या ह्रदमागत्य स्नानं विधिवदाचरत् ॥४०॥

पदच्छेद— अक्रूरः तौ उपामन्त्र्य निवेश्य च रथ उपरि ।
कालिन्द्याः ह्रदम् आगत्य स्नानम् विधिवत् आचरत् ॥

शब्दार्थ—

अक्रूरः	१.	अक्रूर जी	कालिन्द्याः	७.	यमुना जी के
तौ	२.	उन दोनों (भाइयों को)	ह्रदम्	८.	कुण्ड पर
उपामन्त्र्य	६.	उनसे आज्ञा लेकर	आगत्य	९.	आये (और)
निवेश्य	४.	बैठा कर	स्नानम्	११.	स्नान
च	५.	और	विधिवत्	१०.	विधि पूर्वक
रथ उपरि ।	३.	रथ पर	आचरत् ॥	१२.	करने लगे

श्लोकार्थ—अक्रूर जी उन दोनों भाइयों को रथ पर बैठा कर और उनसे आज्ञा लेकर यमुना जी के कुण्ड पर आये और विधि पूर्वक स्नान करने लगे ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

निमज्ज्य तस्मिन् सलिले जपन् ब्रह्म सनातनम् ।
तावेव ददृशेऽक्रूरो रामकृष्णौ समन्वितौ ॥४१॥

पदच्छेद— निमज्ज्य तस्मिन् सलिले जपन् ब्रह्म सनातनम् ।
तौ एव ददृशे अक्रूरः राम कृष्णौ समन्वितौ ॥

शब्दार्थ—

निमज्ज्य	२.	स्नान करके	तौ एव	८.	उन्हीं दोनों
तस्मिन्	१.	उस कुण्ड में	ददृशे	१२.	देखा
सलिले	३.	जल में	अक्रूरः	७.	वहाँ अक्रूर जी ने
जपन्	६.	जप करने लगे	राम	९.	राम और
ब्रह्म	५.	ब्रह्म (गायत्री) का	कृष्णौ	१०.	श्रीकृष्ण को
सनातनम् ।	४.	सनातन	समन्वितौ ॥	११.	एक साथ

श्लोकार्थ—उस कुण्ड में स्नान करके जल में सनातन ब्रह्म गायत्री का जप करने लगे । वहाँ अक्रूर जी ने उन्हीं दोनों राम और कृष्ण को एक साथ देखा ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

तौ रथस्थौ कथमिह सुतावानकदुन्दुभेः ।
तर्हि स्वित् स्यन्दने न स्त इत्युन्मज्ज्य व्यचष्ट सः ॥४२॥

पदच्छेद— तौ रथस्थौ कथम् इह सुतौ आनक दुन्दुभेः ।
तर्हि स्वित् स्यन्दने न स्तः इति उन्मज्ज्य व्यचष्ट सः ॥

शब्दार्थ—

तौ	१.	वे दोनों	तर्हिस्वित्	७.	तो कदाचित् वे
रथस्थौ	४.	रथ पर बैठे हैं	स्यन्दने न स्तः	८.	रथ पर न हों
कथम्	६.	कैसे आये	इति	९.	ऐसा सोच कर
इह	५.	यहाँ	उन्मज्ज्य	११.	सिर बाहर निकाल कर
सुतौ	३.	पुत्र	व्यचष्ट	१२.	देखा
आनक दुन्दुभेः ।	२.	वसुदेव जी के	सः ॥	१०.	उन्होंने

श्लोकार्थ—वे दोनों वसुदेव जी के पुत्र रथ पर बैठे हैं । यहाँ कैसे आये । तो कदाचित् वे रथ पर न हों । ऐसा सोच कर उन्होंने सिर बाहर निकाल कर देखा ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

तत्रापि च यथापूर्वमासीनौ पुनरेव सः।
न्यमज्जद् दर्शनं यन्मे मृषा किं सलिले तयोः ॥४३॥

पदच्छेद— तत्रापि च यथा पूर्वम् आसीनौ पुनः एव सः।
निअमज्जत् दर्शनम् यत् मे मृषा किम् सलिले तयोः ॥

शब्दार्थ—

तत्रापि	२.	वहाँ भी	निअमज्जत्	८.	डुबकी लगाई कि
च	१.	और	दर्शनम्	१२.	दर्शन हुआ वह
यथा	४.	भाँति (वे)	यत् मे	१०.	जो मुझे
पूर्वम्	३.	पहले की	मृषा	१४.	मिथ्या था
आसीनौ	५.	बैठे हुये थे	किम्	१३.	क्या
पुनः एव	६.	फिर	सलिले	९.	जल में
सः।	७.	उन्होंने (यह सोच कर)	तयोः ॥	११.	उन दोनों का

श्लोकार्थ—और वहाँ भी पहले की भाँति वे बैठे हुये थे। फिर उन्होंने यह सोच कर डुबकी लगाई कि जल में जो मुझे उन दोनों का दर्शन हुआ वह क्या मिथ्या था ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

भूयस्तत्रापि सोऽद्राक्षीत् स्तूयमानमहीश्वरम्।
सिद्धचारणगन्धर्वैरसुरैर्नतकन्धरैः ॥४४॥

पदच्छेद— भूयः तत्रापि सः अद्राक्षीत् स्तूयमानम् अहीश्वरम्।
सिद्ध चारण गन्धर्वैः असुरैः नत कन्धरैः ॥

शब्दार्थ—

भूयः	३.	पुनः	सिद्ध	७.	सिद्ध
तत्रापि	१.	वहाँ भी	चारण	८.	चारण
सः	२.	उन्होंने	गन्धर्वैः	९.	गन्धर्व
अद्राक्षीत्	४.	देखा कि	असुरैः	१०.	असुर
स्तूयमानम्	१२.	स्तुति कर रहे हैं	नत	६.	झुकाये
अहीश्वरम्।	११.	अनन्त देव शेष जी की	कन्धरैः ॥	५.	गर्दन

श्लोकार्थ—वहाँ भी उन्होंने पुनः देखा कि गर्दन झुकाये सिद्ध, चारण, गन्धर्व असुर अनन्तदेव शेष जी की स्तुति कर रहे हैं ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

सहस्रशिरसं देवं सहस्रफणमौलिनम् ।
नीलाम्बरं बिसश्वेतं शृङ्गैः श्वेतमिव स्थितम् ॥४५॥

पदच्छेद— सहस्र शिरसम् देवम् सहस्र फण मौलिनम् ।
नीलाम्बरम् बिसश्वेतम् शृङ्गैः श्वेतम् इव स्थितम् ॥

शब्दार्थ—

सहस्र	२.	हजार	नीलाम्बरम्	७.	वे नीला वस्त्र पहने थे
शिरसम्	३.	सिर हैं (और)	बिसश्वेतम्	८.	कमल नाल के समान श्वेत हैं (और)
देवम्	१.	अनन्त देव के	शृङ्गैः	६.	शिखरों से युक्त
सहस्र	४.	हजार	श्वेतम्	१०.	कैलास पर्वत के
फण	५.	फणों पर	इव	११.	समान
मौलिनम् ।	६.	मुकुट शोभित हैं	स्थितम् ॥	१२.	विराजमान हैं

श्लोकार्थ—अनन्त देव के हजार सिर हैं। और हजार फणों पर मुकुट सुशोभित हैं। वे नीला वस्त्र पहने हैं। कमल नाल के समान श्वेत हैं। और कैलास पर्वत के समान विराजमान हैं ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

तस्योत्सङ्गे घनश्यामं पीतकौशेयवाससम् ।
पुरुषं चतुर्भुजं शान्तं पद्मपत्रारुणेक्षणम् ॥४६॥

पदच्छेद— तस्य उत्सङ्गे घनश्यामम् पीत कौशेय वाससम् ।
पुरुषम् चतुर्भुजम् शान्तम् पद्मपत्र अरुण ईक्षणम् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उनकी	पुरुषम्	१२.	पुरुष को देखा
उत्सङ्गे	२.	गोद में	चतुर्भुजम्	८.	चार भुजा वाले और
घनश्यामम्	३.	मेघ के समान साँवले	शान्तम्	७.	शान्त स्वरूप
पीत	४.	पीले	पद्मपत्र	६.	कमल दल के समान
कौशेय	५.	रेशमी	अरुण	१०.	रतनारे
वाससम् ।	६.	वस्त्र पहने हुये	ईक्षणम् ॥	११.	नेत्र वाले

श्लोकार्थ—उनकी गोद में मेघ के समान साँवले पीले, रेशमी वस्त्र पहने हुये, शान्त स्वरूप, चार भुजा वाले और कमल दल के समान रतनारे नेत्र वाले पुरुष को देखा ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

चारुप्रसन्नवदनं चारुहासनिरीक्षणम् ।
सुभ्रून्नसं चारुकर्णं सुकपोलारुणाधरम् ॥४७॥

पदच्छेद— चारु प्रसन्न वदनम् चारु हास निरीक्षणम् ।
सुभ्रु उन्नसम् चारुकर्णम् सुकपोल अरुण अधरम् ॥

शब्दार्थ—

चारु	२.	सुन्दर और	सुभ्रु	७.	भौहें सुन्दर
प्रसन्न	३.	प्रसन्न था	उन्नसम्	८.	नासिका ऊंची
वदनम्	१.	उनका मुख	चारुकर्णम्	९.	कान मनोहर
चारु	६.	मनोहर थी	सुकपोल	१०.	कपोल सुन्दर और
हास	४.	हंसी और	अरुण	१२.	लाल थे
निरीक्षणम् ।	५.	चितवन	अधरम् ॥	११.	अधर

श्लोकार्थ—उनका मुख सुन्दर और प्रसन्न था। हंसी और चितवन मनोहर थी। भौंहें सुन्दर, नासिका ऊंची, कान मनोहर, कपोल सुन्दर और अधर लाल थे ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

प्रलम्बपीवरभुजं तुङ्गांसोरःस्थलश्रियम् ।
कम्बुकण्ठं निम्ननाभिं वलिमत्पल्लवोदरम् ॥४८॥

पदच्छेद— प्रलम्ब पीवर भुजम् तुङ्ग अंस उरः स्थल श्रियम् ।
कम्बु कण्ठम् निम्ननाभिम् वलिमत् पल्लव उदरम् ॥

शब्दार्थ—

प्रलम्ब	१.	लम्बी और	कम्बु	८.	शङ्ख के समान
पीवर	२.	मोटी	कण्ठम्	७.	गला
भुजम्	३.	भुजायें थीं	निम्ननाभिम्	९.	नाभि गहरी
तुङ्ग अंस	४.	कन्धे ऊँचे और	वलिमत्	१०.	त्रिवलि युक्त तथा
उरः स्थल	५.	वक्षः स्थल	पल्लव	१२.	पीपल के पत्ते के समान था
श्रियम् ।	६.	लक्ष्मी का निवास है	उदरम् ॥	११.	उदर

श्लोकार्थ—लम्बी और मोटी भुजायें थीं। कन्धे ऊँचे और वक्षः स्थल लक्ष्मी का निवास है। गला शङ्ख के समान, नाभि गहरी त्रिवलि युक्त तथा उदर पीपल के पत्ते के समान था ॥

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

बृहत्कटितटश्रोणिकरभोरुद्वयान्वितम् ।
चारुजानुयुगं चारुजङ्घायुगलसंयुतम् ॥४९॥

पदच्छेद— बृहत् कटितट श्रोणि करभ ऊरुद्वय अन्वितम् ।
चारुजानु युगम् चारु जङ्घा युगल संयुतम् ॥

शब्दार्थ—

बृहत्	३.	स्थूल थे वे	चारुजानु	८.	सुन्दर घुटनों (एवम्)
कटितट	१.	कटि प्रदेश और	युगम्	७.	दोनों
श्रोणि	२.	नितम्ब	चारु	९.	मनोहर
करभ	४.	हाथी की सूंड़ के समान	जङ्घा	११	पिंडलियों से
ऊरुद्वय	५.	दोनों जांघों से	युगल	१०.	दोनों
अन्वितम् ।	६.	युक्त तथा	संयुतम् ॥	१२.	सुशोभित थे

श्लोकार्थ—कटि प्रदेश और नितम्ब स्थूल थे वे हाथी की सूंड़ के समान दोनों जांघों से युक्त तथा दोनों सुन्दर घुटनों एवम् मनोहर दोनों पिंडलियों से सुशोभित थे ॥

पञ्चाशः श्लोकः

तुङ्गगुल्फारुणनखव्रातदीधितिभिर्वृतम् ।
नवाङ्गुल्यङ्गुष्ठदलैर्विलसत्पादपङ्कजम् ॥५०॥

पदच्छेद— तुङ्ग गुल्फ अरुण नखव्रात दीधितिभिः वृतम् ।
नव अङ्गुली अंगुष्ठ दलैः विलसत् पाद पङ्कजम् ॥

शब्दार्थ—

तुङ्ग	२.	उभरी हुई थीं	नव	११.	नयी
गुल्फ	१.	एड़ी के ऊपर की गाँठें	अङ्गुली	९.	अंगुलियाँ और
अरुण	३.	लाल-लाल	अंगुष्ठ दलैः	१०.	अंगुठे पंखुड़ियों के समान
नखव्रात	४.	नख-समूहों की	विलसत्	१२.	सुशोभित थे
दीधितिभिः	५.	किरणों से	पाद	७.	चरण
वृतम् ।	६.	युक्त	पङ्कजम् ॥	८.	कमल की

श्लोकार्थ—एड़ी के ऊपर की गाँठें उभरी हुई थीं। लाल-लाल नख समूहों की किरणों से युक्त चरण कमल की अंगुलियाँ और अंगूठे नयी पंखुड़ियों के समान सुशोभित थे ॥

एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

सुमहार्हमणिव्रातकिरीटकटकाङ्गदैः ।
कटिसूत्रब्रह्मसूत्रहारनूपुरकुण्डलैः ॥५१॥

पदच्छेद— सुमहार्ह मणिव्रात किरीट कटक अङ्गदैः ।
कटिसूत्र ब्रह्मसूत्र हार नूपुर कुण्डलैः ॥

शब्दार्थ—

सुमहार्ह	१. वे अत्यन्त बहुमूल्य	कटिसूत्र	६. करधनी
मणिव्रात	२. मणियों से जड़े हुये	ब्रह्मसूत्र	७. यज्ञोपवीत
किरीट	३. मुकुट	हार	८. हार
कटक	४. कड़े और	नूपुर	९. नूपुर और
अङ्गदैः ।	५. बाजूबन्द	कुण्डलैः ॥	१०. कुण्डलों से विभूषित थे

श्लोकार्थ—वे अत्यन्त बहुमूल्य मणियों से जड़े हुये मुकुट, कड़े, बाजूबन्द, करधनी, यज्ञोपवीत, हार, नूपुर और कुण्डलों से विभूषित थे ॥

द्विपञ्चाशत्तमः श्लोकः

भ्राजमानं पद्मकरं शङ्खचक्रगदाधरम् ।
श्रीवत्सवक्षसं भ्राजत्कौस्तुभं वनमालिनम् ॥५२॥

पदच्छेद— भ्राजमानम् पद्म करम् शङ्ख चक्र गदाधरम् ।
श्रीवत्स वक्षसम् भ्राजत् कौस्तुभम् वन मालिनम् ॥

शब्दार्थ—

भ्राजमानम्	३. शोभायमान था	श्रीवत्स	८. श्रीवत्स का चिह्न
पद्म	२. कमल	वक्षसम्	७. वक्षः स्थल पर
करम्	१. एक हाथ में	भ्राजत्	९. सुशोभित था
शङ्ख	४. अन्य हाथों में शङ्ख	कौस्तुभम्	१०. गले में कौस्तुभ मणि और
चक्र	५. चक्र और	वन	११. वन
गदाधरम् ।	६. गदा धारण किये थे	मालिनम् ॥	१२. माला पहने थे

श्लोकार्थ—एक हाथ में कमल शोभायमान था। अन्य हाथों में शङ्ख, चक्र और गदा धारण किये थे। वक्षः स्थल पर श्रीवत्स का चिह्न सुशोभित था। गले में कौस्तुभ मणि और वन माला पहने थे ॥

त्रिपञ्चाशत्तमः श्लोकः

सुनन्दनन्दप्रमुखैः पार्षदैः सनकादिभिः ।
सुरेशैर्ब्रह्मरुद्राद्यैर्नवभिश्च द्विजोत्तमैः ॥५३॥

पदच्छेद— सुनन्द नन्द प्रमुखैः पार्षदैः सनक आदिभिः ।
सुरेशैः ब्रह्मरुद्र आद्यैः नवभिः च द्विजोत्तमैः ॥

शब्दार्थ—

सुनन्द	१.	सुनन्द	सुरेशैः	९.	देवेश्वर
नन्द	२.	नन्द	ब्रह्मरुद्र	७.	ब्रह्मा-शंकर
प्रमुखैः	३.	आदि	आद्यैः	८.	इत्यादि
पार्षदैः	४.	पार्षद	नवभिः	११.	नौ
सनक	५.	सनक	च	१०.	और (मरीचि आदि)
आदिभिः ।	६.	आदि	द्विजोत्तमैः ॥	१२.	द्विजवर उनकी स्तुति कर रहे थे

श्लोकार्थ—सुनन्द, नन्द आदि पार्षद, सनक आदि, ब्रह्मा, शंकर इत्यादि देवेश्वर और मरीचि आदि द्विजवर उनकी स्तुति कर रहे थे ॥

चतुःपञ्चाशत्तमः श्लोकः

प्रह्लादनारदवसुप्रमुखैर्भागवतोत्तमैः ।
स्तूयमानं पृथग्भावैर्वचोभिरमलात्मभिः ॥५४॥

पदच्छेद— प्रह्लाद नारद वसु प्रमुखैः भागवत उत्तमैः ।
स्तूयमानम् पृथक् भावैः वचोभिः अमल आत्मभिः ॥

शब्दार्थ—

प्रह्लाद	३.	प्रह्लाद	स्तूयमानम्	१२.	(भगवान् की स्तुति कर रहे थे)
नारद	४.	नारद	पृथक्	९.	भिन्न-भिन्न
वसु	५.	वसु	भावैः	१०.	भाव वाले
प्रमुखैः	६.	आदि	वचोभिः	११.	वचनों से
भागवत	८.	भगवत् भक्त	अमल	१.	निर्मल
उत्तमैः ।	७.	श्रेष्ठ	आत्मभिः ॥	२.	अन्तः करण वाले

श्लोकार्थ—निर्मल अन्तः करण वाले प्रह्लाद, नारद, वसु आदि श्रेष्ठ भगवद् भक्त भिन्न-भिन्न भाव वाले वचनों से भगवान् की स्तुति कर रहे थे ॥

पञ्चपञ्चाशत्तमः श्लोकः

श्रिया पुष्ट्या गिरा कान्त्या कीर्त्या तुष्ट्येलयोर्जया ।
विद्ययाविद्यया शक्त्या मायया च निषेवितम् ॥५५॥

पदच्छेद— श्रिया पुष्ट्या गिरा कान्त्या कीर्त्या तुष्ट्या इलया ऊर्जया ।
विद्यया अविद्यया शक्त्या मायया च निषेवितम् ॥

शब्दार्थ—

श्रिया	१. लक्ष्मी	ऊर्जया ।	८. ऊर्जा (लीला शक्ति)
पुष्ट्या	२. पुष्टि	विद्यया	९. विद्या
गिरा	३. सरस्वती	अविद्यया	१०. अविद्या
कान्त्या	४. कान्ति	शक्त्या	१२. शक्तियाँ
कीर्त्या	५. कीर्ति	मायया	११. माया
तुष्ट्या	६ तुष्टि	च	१२. और
इलया	७. इला (पृथ्वी शक्ति)	निषेवितम् ॥	१३. उनकी सेवा कर रही थीं

श्लोकार्थ—लक्ष्मी, पुष्टि सरस्वती, कान्ति, कीर्ति, तुष्टि, इला (पृथ्वी शक्ति) ऊर्जा (लीला शक्ति) विद्या, अविद्या (मोक्ष और बन्धन में कारण रूप) और माया शक्तियाँ उनकी सेवा कर रही थीं ॥

षट्पञ्चाशत्तमः श्लोकः

विलोक्य सुभृशं प्रीतो भक्त्या परमया युतः ।
हृष्यत्तनूरुहो भावपरिक्लिन्नात्मलोचनः ॥५६॥

पदच्छेद— विलोक्य सुभृशम् प्रीतः भक्त्या परमया युतः ।
हृष्यत् तनूरुहः भाव परिक्लिन्न आत्म लोचनः ॥

शब्दार्थ—

विलोक्य	१. यह देख कर (अक्रूर जी)	हृष्यत्	७. हर्ष से (उनका)
सुभृशम्	२. अत्यन्त	तनूरुहः	८. शरीर पुलकित हो गया
प्रीतः	३. प्रसन्न (और)	भाव	९. भाव विभोर होने से
भक्त्या	५. भक्ति से	परिक्लिन्न	१२. आँसू भर आये
परमया	४. परम	आत्म	१०. उनके
युतः ।	६. युक्त हो गये	लोचनः ॥	११. नेत्रों में

श्लोकार्थ—यह देख कर अक्रूर जी अत्यन्त प्रसन्न और परम भक्ति से युक्त हो गये । हर्ष से उनका शरीर पुलकित हो गया । भाव-विभोर होने से उनके नेत्रों में आँसू भर आये ॥

सप्तपञ्चाशत्तमः श्लोकः

गिरा गद्गदयास्तौषीत् सत्त्वमालम्ब्य सात्वतः ।
प्रणम्य मूर्ध्नावहितः कृताञ्जलिपुटः शनैः ।।५७।।

पदच्छेद— गिरा गद्गदया अस्तौषीत् सत्त्वम् आलम्ब्य सात्वतः ।
प्रणम्य मूर्ध्नाअवहितः कृत अञ्जलिपुटः शनैः ।।

शब्दार्थ—

गिरा	१०.	वाणी से (भगवान् की)	प्रणम्य	५.	प्रणाम किया (और)
गद्गदया	९.	गद्गद	मूर्ध्ना	४.	सिर से
अस्तौषीत्	११.	स्तुति करने लगे	अवहितः	६.	सावधान होकर
सत्त्वम्	२.	साहस	कृत अञ्जलिपुटः	७.	हाथ जोड़ कर
आलम्ब्य	३.	बटोर कर	शनैः ।।	८.	धीरे-धीरे
सात्वतः ।	१.	अक्रूर जी ने			

श्लोकार्थ—अक्रूर जी ने साहस बटोर कर सिर से प्रणाम किया । और सावधान होकर हाथ जोड़ कर धीरे-धीरे गद्गद वाणी से भगवान् की स्तुति करने लगे ।।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
अक्रूरप्रतियाने एकोनचत्वारिंशः अध्यायः ।।३९।।



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

चत्वारिंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

अक्रूर उवाच— नतोऽस्म्यहं त्वाखिलहेतुहेतुं नारायणं पूरुषमाद्यमव्ययम् ।
यन्नाभिजातादरविन्दकोशाद् ब्रह्माऽऽविरासीद् यत एष लोकः ॥१॥

पदच्छेद— नतः अस्मि अहम् तु अखिल हेतु हेतुम् नारायणम् पूरुषम् आद्यम् अव्ययम् ।
यत्नाभि जातात् अरविन्दकोशात् ब्रह्मा आविः आसीत् यतः एषः लोकः ॥

शब्दार्थ

नतः अस्मि	७. प्रणाम करता हूँ	यत्नाभि	८. जिनकी नाभि से
अहम् अखिल	१. मैं समस्त	जातात्	९. उत्पन्न
हेतु हेतुम्	२. कारणों के कारण	अरविन्दकोशात	१०. कमल के कोश से
नारायणम्	३. नारायण	ब्रह्मा	११. ब्रह्मा जी का
पूरुषम्	६. पुरुष को	आविः आसीत्	१२. आविर्भाव हुआ और
आद्यम्	५. आदि	यतः एषः	१३. जिनसे यह
अव्ययम् ।	४. अविनाशी	लोकः ॥	१४. संसार उत्पन्न हुआ

श्लोकार्थ—मैं समस्त कारणों के कारण, नारायण, अविनाशी आदि पुरुष को प्रणाम करता हूँ। जिनकी नाभि से उत्पन्न कमल के कोश से ब्रह्मा जी का आविर्भाव हुआ। और जिनसे यह संसार उत्पन्न हुआ ॥

द्वितीयः श्लोकः

भूस्तोयमग्निः पवनः खमादिर्महानजादिर्मन इन्द्रियाणि ।
सर्वेन्द्रियार्था विबुधाश्च सर्वे ये हेतवस्ते जगतोऽङ्गभूताः ॥२॥

पदच्छेद— भूः तोयम् अग्निः पवनः खम् आदिः महान् अजादिः मनः इन्द्रियाणि ।
सर्वे इन्द्रिय अर्थाः विबुधाः च सर्वे ये हेतवः ते जगतः अङ्गभूताः ॥

शब्दार्थ—

भूः तोयम्	१. पृथ्वी-जल	सर्व इन्द्रिय अर्थाः	८. सम्पूर्ण इन्द्रियों के विषय
अग्निः पवनः	२. अग्नि-वायु	विबुधाः च	९. और देवता
खम् आदिः	३. आकाश-अहंकार	सर्वे ये	१०. ये सब
महान्	४. महत्तत्त्व	हेतवः	१२. कारण है और
अजादिः	५. प्रकृति पुरुष	ते	१३. आप के
मनः	६. मन और	जगतः	११. संसार के
इन्द्रियाणि ।	७. इन्द्रिय	अङ्गभूताः ॥	१४. अङ्ग स्वरूप हैं

श्लोकार्थ—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, अहंकार, महत्तत्त्व, प्रकृति, पुरुष, मन और इन्द्रिय, सम्पूर्ण इन्द्रियों के विषय और देवता ये सब संसार के कारण हैं। आपके अङ्ग-स्वरूप हैं ॥

तृतीयः श्लोकः

नैते स्वरूपं विदुरात्मनस्ते ह्यजादयोऽनात्मतया गृहीताः ।
अजोऽनुबद्धः स गुणैरजाया गुणात् परं वेद न ते स्वरूपम् ।।३।।

पदच्छेद— न एते स्वरूपम् विदुः आत्मनः ते हि अजा आदयः अनात्मतया गृहीताः ।
अजः अनुबद्धः सः गुणैः अजायाः गुणात् परम् वेद न ते स्वरूपम् ।।

शब्दार्थ—

न	४. नहीं	अजः	१०. ब्रह्मा जी भी
एते	१. ये	अनुबद्धः	१३. युक्त होने के कारण
स्वरूपम्	३. स्वरूप को	सः	९. वे
विदुः	५. जानते हैं	गुणैः	१२. गुणों से
आत्मनः ते	२. आपके आत्मा के	अजायाः	११. प्रकृति के
हि अजा आदयः	६. क्योंकि प्रकृति आदि	गुणात् परम्	१४. गुणों से परे
अनात्मतया	७. अनात्मा के रूप में	वेद न	१६. नहीं जानते हैं
गृहीताः ।	८. अपने को स्वीकार	ते स्वरूपम् ।।	१५. आपके स्वरूप को

श्लोकार्थ—ये आपके आत्मा के स्वरूप को नहीं जानते हैं। क्योंकि प्रकृति आदि अनात्मा के रूप में अपने को स्वीकार करते हैं। वे ब्रह्मा जी भी प्रकृति के गुणों से युक्त होने के कारण गुणों से परे आपके स्वरूप को नहीं जानते हैं ।।

चतुर्थः श्लोकः

त्वां योगिनो यजन्त्यद्धा महापुरुषमीश्वरम् ।
साध्यात्मं साधिभूतं च साधिदैवं च साधवः ।।४।।

पदच्छेद— त्वाम् योगिनः यजन्ति अद्धा महापुरुषम् ईश्वरम् ।
साधिआत्मम् साधिभूतम् च साधिदैवम् च साधवः ।।

शब्दार्थ—

त्वाम्	११. आपकी	साधिआत्मम्	३. अन्तर्यामी
योगिनः	२. योगीजन	साधिभूतम्	४. परमात्मा
यजन्ति	१२. उपासना करते हैं	च	५. और
अद्धा	१०. निःसन्देह	साधिदैवम्	६. इष्ट देवता के रूप में
महापुरुषम्	८. महापुरुष	च	७. तथा
ईश्वरम् ।	९. ईश्वर के रूप में	साधवः ।।	१. साधु

श्लोकार्थ—साधु योगी जन अन्तर्यामी, परमात्मा और इष्ट देवता के रूप में तथा महा पुरुष ईश्वर के रूप में निःसन्देह आपकी उपासना करते हैं ।।

पञ्चमः श्लोकः

त्रय्या च विद्यया केचित् त्वां वै वैतानिका द्विजाः ।
यजन्ते विततैर्यज्ञैर्नानारूपामराख्यया ॥५॥

पदच्छेद— त्रय्या च विद्यया केचित् त्वाम् वै वैतानिकाः द्विजाः ।
यजन्ते विततैः यज्ञैः नाना रूप अमर आख्यया ॥

शब्दार्थ—

त्रय्या च	४.	वेद	यजन्ते	१२.	उपासना करते हैं
विद्यया	५.	विद्या के द्वारा	विततैः	९.	विस्तार वाले
केचित्	१.	कोई	यज्ञैः	१०.	यज्ञों के द्वारा
त्वाम् वै	११.	आप की ही	नाना	६.	अनेक
वैतानिकाः	२.	कर्मकाण्डी	रूप अमर	७.	रूप वाले देवताओं के
द्विजाः ।	३.	ब्राह्मण	आख्यया ॥	८.	नाम से

श्लोकार्थ—कोई कर्मकाण्डी ब्राह्मण वेद विद्या के द्वारा अनेक रूप वाले देवताओं के नाम से विस्तार वाले यज्ञों के द्वारा आपकी ही उपासना करते हैं ॥

षष्ठः श्लोकः

एके त्वाखिलकर्माणि संन्यस्योपशमं गताः ।
ज्ञानिनो ज्ञानयज्ञेन यजन्ति ज्ञानविग्रहम् ॥६॥

पदच्छेद— एके तु अखिल कर्माणि संन्यस्य उपशमम् गताः ।
ज्ञानिनः ज्ञान यज्ञेन यजन्ति ज्ञान विग्रहम् ॥

शब्दार्थ—

एके	१.	कोई	ज्ञानिनः	६.	ज्ञानी लोग
तु अखिल	११.	आपकी	ज्ञान	७.	ज्ञान
कर्माणि	२.	कर्मों का	यज्ञेन	८.	यज्ञ के द्वारा
संन्यस्य	३.	संन्यास करके	यजन्ति	१२.	आराधना करते है
उपशमम्	४.	शान्ति को	ज्ञान	९.	ज्ञान
गताः ।	५.	प्राप्त कर लेते हैं	विग्रहम् ॥	१०.	स्वरूप

श्लोकार्थ—कोई कर्मों का संन्यास करके शान्ति को प्राप्त कर लेते हैं । ज्ञानी लोग ज्ञान यज्ञ के द्वारा ज्ञान स्वरूप आपकी आराधना करते हैं ॥

सप्तमः श्लोकः

अन्ये च संस्कृतात्मानो विधिनाभिहितेन ते ।
यजन्ति त्वन्मयास्त्वां वै बहुमूर्त्येकमूर्तिकम् ॥७॥

पदच्छेद— अन्ये च संस्कृत आत्मानः विधिना अभिहितेन ते ।
यजन्ति त्वन्मयाः त्वाम् वै बहुमूर्ति एकमूर्तिकम् ॥

शब्दार्थ—

अन्ये च	१. और भी बहुत से	यजन्ति	१२. पूजा करते हैं
संस्कृत	२. संस्कार सम्पन्न	त्वन्मयाः	७. आप में लीन होकर
आत्मनः	३. आत्मा वाले जन	त्वाम्	१०. आपकी
विधिना	६. विधि से	वै	११. ही
अभिहितेन	५. बतलायी हुई	बहुमूर्ति	८. अनेक रूप और
ते ।	४. आपकी	एकमूर्तिकम् ॥	९. एक रूप में

श्लोकार्थ—और भी बहुत से संस्कार सम्पन्न आत्मा वाले जन आपकी बतलायी हुई विधि से आपमें लीन होकर अनेक रूप और एक रूप में आप की ही पूजा करते हैं ॥

अष्टमः श्लोकः

त्वामेवान्ये शिवोक्तेन मार्गेण शिवरूपिणम् ।
बह्वाचार्यविभेदेन भगवन् समुपासते ॥८॥

पदच्छेद— त्वाम् एव अन्ये शिवउक्तेन मार्गेण शिवरूपिणम् ।
बहु आचार्य विभेदेन भगवन् सम् उपासते ॥

शब्दार्थ—

त्वाम्	९. आपकी	बहु	४. बहुत से
एव	१०. ही	आचार्य	६. आचार्यों के
अन्ये	२. दूसरे लोग	विभेदेन	५. भेद वाले
शिवउक्तेन	३. शिव के बतलाये हुये	भगवन्	१. हे भगवन् !
मार्गेण	७. मार्ग से	सम्	१०. अच्छी प्रकार
शिवरूपिणम् ।	८. शिवस्वरूप	उपासते ॥	१२ उपासना करते हैं

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! दूसरे लोग शिव के बतलाये हुये बहुत से भेद वाले आचार्यों के मार्ग से शिवस्वरूप आपकी ही अच्छी प्रकार उपासना करते हैं ॥

नवमः श्लोकः

सर्व एव यजन्ति त्वां सर्वदेवमयेश्वरम् ।
येऽप्यन्यदेवताभक्ता यद्यप्यन्यधियः प्रभो ॥९॥

पदच्छेद — सर्व एव यजन्ति त्वाम् सर्व देवमय ईश्वरम् ।
ये अपि अन्य देवता भक्ताः यद्यपि अन्य धियः प्रभो ॥

शब्दार्थ—

सर्वे	८.	फिर भी वे	ये अपि	२.	जो भी
एव	९.	ही	अन्य देवता	३.	दूसरे देवताओं के
यजन्ति	१४.	पूजा करते हैं	भक्ताः	४.	भक्त हैं
त्वाम्	१३.	आपकी	यद्यपि	५.	यद्यपि (उन्हें) आप से
सर्व	१०.	समस्त	अन्य	६.	भिन्न
देवमय	११.	देवता स्वरूप	धियः	७.	समझते हैं
ईश्वरम् ।	१२.	ईश्वर	प्रभो ॥	१.	हे प्रभो !

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! जो भी दूसरे देवताओं के भक्त हैं वे यद्यपि उन्हें आप से भिन्न समझते हैं फिर भी वे सब ही समस्त देवता स्वरूप ईश्वर आप की पूजा करते हैं ॥

दशमः श्लोकः

यथाद्रिप्रभवा नद्यः पर्जन्यापूरिताः प्रभो ।
विशन्ति सर्वतः सिन्धुं तद्वत्त्वां गतयोऽन्ततः ॥१०॥

पदच्छेद— यथा अद्रि प्रभवा नद्यः पर्जन्य आपूरिताः प्रभो ।
विशन्ति सर्वतः सिन्धुम् तत् वत् त्वाम् गतयः अन्ततः ॥

शब्दार्थ—

यथा	२.	जिस प्रकार	विशन्ति	१०.	प्रवेश कर जाती हैं
अद्रि	३.	पर्वतों से	सर्वतः	८.	सब ओर से
प्रभवाः	४.	निकलने वाली	सिन्धुम्	९.	समुद्र में
नद्यः	५.	नदियाँ	तत् वत्	११.	उसी प्रकार सभी (पूजायें)
पर्जन्य	६.	वर्षा के जल से	त्वाम्	१३.	आप ही में
आपूरिताः	७.	भर कर	गतयः	१४.	पहुँच जाती हैं
प्रभो ।	१.	प्रभो !	अन्ततः ॥	१२.	अन्त में

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! जिस प्रकार पर्वतों से निकलने वाली नदियाँ वर्षा के जल से भर कर सब ओर से समुद्र में प्रवेश कर जाती हैं, उसी प्रकार सभी पूजायें अन्त में आप ही में पहुँच जाती हैं ॥

एकादशः श्लोकः

सत्त्वं रजस्तम इति भवतः प्रकृतेर्गुणाः ।
तेषु हि प्राकृताः प्रोता आब्रह्मस्थावरादयः ॥११॥

पदच्छेद— सत्त्वम् रजः तमः इति भवतः प्रकृतेः गुणाः ।
तेषु हि प्राकृताः प्रोताः आब्रह्म स्थावर आदयः ॥

शब्दार्थ—

सत्त्वम्	१. सत्त्व	तेषु हि	७. उनमें
रजः तमः	२. रज और तम	प्राकृताः	१०. प्रकृति के गुण से
इति	३. ये	प्रोताः	१२. ओत-प्रोत हैं
भवतः	४. आपकी	आब्रह्म	८. ब्रह्मा से लेकर
प्रकृतेः	५. प्रकृति के	स्थावर	९. स्थावर
गुणाः ।	६. गुण हैं	आदयः ॥	१०. आदि

श्लोकार्थ-- सत्त्व रज और तम ये आपकी प्रकृति के गुण हैं। उनमें ब्रह्मा से लेकर स्थावर आदि प्रकृति के गुण से ओत-प्रोत हैं ॥

द्वादशः श्लोकः

तुभ्यं नमस्तेऽस्त्वविषक्तदृष्टये सर्वात्मने सर्वधियां च साक्षिणे ।
गुणप्रवाहोऽयमविद्यया कृतः प्रवर्तते देवनृतिर्यगात्मसु ॥१२॥

पदच्छेद— तुभ्यम् नमः ते अस्तु अविषक्त दृष्टये सर्वआत्मने सर्वधियाम् च साक्षिणे ।
गुणप्रवाहः अयम् अविद्यया कृतः प्रवर्तते देवनृतिर्यक् आत्मसु ॥

शब्दार्थ—

तुभ्यम् नमः	१. आपको नमस्कार है	गुण प्रवाहः	१०. गुणों का प्रवाह
ते अस्तु	८. आपको नमस्कार हैं	अयम्	९. यह
अविषक्त	२. निर्लिप्त	अविद्यया	१४. अज्ञान से
दृष्टये	३. दृष्टि वाले	कृतः	१५. उत्पन्न होकर
सर्वात्मने	७. सब के आत्म स्वरूप	प्रवर्तते	१६. व्याप्त हैं
सर्वधियाम्	५. समस्त वृत्तियों के	देवनृ	११. देवता, मनुष्य और
च	४. और	तिर्यक्	१२. पशु-पक्षी आदि
साक्षिणे ।	६. साक्षी	आत्मसु ॥	१३. योनियों में

श्लोकार्थ --आपको नमस्कार है। निर्लिप्त दृष्टि वाले और समस्त वृत्तियों के साक्षी, सब के आत्म स्वरूप आपको नमस्कार है। यह गुणों का प्रवाह देवता, मनुष्य और पशु-पक्षी आदि योनियों में अज्ञान से उत्पन्न होकर व्याप्त हैं ॥

त्रयोदशः श्लोकः

अग्निर्मुखं तेऽवनिरङ्घ्रिरीक्षणं सूर्यो नभो नाभिरथो दिशः श्रुतिः ।
द्यौः कं सुरेन्द्रास्तव बाहवोऽर्णवाः कुक्षिर्मरुत् प्राणबलं प्रकल्पितम् ॥१३॥

पदच्छेद— अग्निः मुखम् ते अवनिः अङ्घ्रिः ईक्षणम् सूर्यः नभः नाभिः अथो दिशः श्रुतिः ।
द्यौः कम् सुरेन्द्राः तव बाहवः अर्णवाः कुक्षिः मरुत् प्राण बलम् प्रकल्पितम् ॥

शब्दार्थ—

अग्निः	१. अग्नि	द्यौः कम्	९. स्वर्ग सिर है
मुखम्	३. मुख है	सुरेन्द्राः	१०. देवेन्द्र गण
ते	२. आपका	तवबाहवः	११. आपकी भुजायें हैं
अवनिः अङ्घ्रिः	४. पृथ्वी पैर हैं	अर्णवाः	१२. समुद्र
ईक्षणम् सूर्यः	५. नेत्र सूर्य हैं	कुक्षिः	१३. कोख है और
नभः नाभिः	७. आकाश नाभि है	मरुत् प्राण	१४. वायु प्राण
अथो	६. और	बलम्	१५. शक्ति के रूप में उपासना के लिये
दिशः श्रुतिः ।	८ दिशायें कान हैं	प्रकल्पितम् ॥	१६. रची गई है

श्लोकार्थ—अग्नि आपका मुख है, पृथ्वी पैर हैं, और आकाश नाभि है, दिशायें कान हैं । स्वर्ग सिर है, देवेन्द्र गण आपकी भुजायें हैं । समुद्र कोख है और वायु प्राण शक्ति के रूप में उपासना के लिये रची गयी है ॥

चतुर्दशः श्लोकः

रोमाणि वृक्षौषधयः शिरोरुहा मेघाः परस्यास्थिनखानि तेऽद्रयः ।
निमेषणं रात्र्यहनी प्रजापतिर्मेढ्रस्तु वृष्टिस्तव वीर्यमिष्यते ॥१४॥

पदच्छेद— रोमाणि वृक्ष ओषधयः शिरोरुहाः मेघाः परस्य अस्थि नखानि ते अद्रयः ।
निमेषणम् रात्रि अहनी प्रजापतिः मेढ्रः तु वृष्टिः तव वीर्यम् इष्यते ॥

शब्दार्थ—

रोमाणि	२. रोम हैं	निमेषणम्	९. पलकों का खोलना-बन्द करना
वृक्ष ओषधयः	१. वृक्ष और ओषधियां	रात्रि अहनी	१०. रात और दिन है
शिरोरुहाः मेघाः	३. मेघ सिर के केश हैं	प्रजापतिः	११. प्रजापति
परस्य	६. परमात्मा के	मेढ्रः तु	१२. जननेन्द्रियां हैं और
अस्थि	७. अस्थि और	वृष्टिः	१३. वृष्टि
नखानि	८. नख हैं	तव	१४. आपका
ते	५. आप	वीर्यम्	१५. वीर्य
अद्रयः ।	४. पर्वत	इष्यते ॥	१६. कहा गया है

श्लोकार्थ—वृक्ष और औषधियाँ रोम हैं, मेघ सिर के केश हैं, पर्वत आप परमात्मा के अस्थि और नख हैं । पलकों का खोलना-बन्द करना दिन और रात है । प्रजापति जननेन्द्रिय है । और वृष्टि आपका वीर्य कहा गया है ॥

पञ्चदशः श्लोकः

त्वय्यव्ययात्मन् पुरुषे प्रकल्पिता लोकाः सपाला बहुजीवसङ्कुलाः ।
यथा जले सञ्जिहते जलौकसोऽप्युदुम्बरे वा मशका मनोमये ॥१५॥

पदच्छेद— त्वयि अव्यय आत्मन् पुरुषे प्रकल्पिताः लोकाः सपालाः बहु जीव सङ्कुलाः ।
यथा जले सञ्जिहते जलओकसः अपि उदुम्बरे वा मशकाः मनोमये ॥

शब्दार्थ—

त्वयि	११.	आपके	यथा	३.	जैसे
अव्यय	१.	अविनाशी	जले	४.	जल में
आत्मन्	२.	भगवान् !	सञ्जिहते	९.	रहते हैं
पुरुषे	१३.	पुरुष रूप में	जलओकसः	५.	जलचर
प्रकल्पिताः	१८.	कल्पित किये गये हैं	अपि	६.	और
लोकाः	१६.	लोक और	उदुम्बरे	७.	गूलर में
सपालाः	१७.	लोकपाल	वा	१०.	वैसे ही
बहु जीव	१४.	अनेक जीव जन्तुओं से	मशकाः	८.	सूक्ष्म कीट पतंग
सङ्कुलाः ।	१५.	भरे हुये	मनोमये ॥	१२.	मनोमय

श्लोकार्थ—अविनाशी भगवान् ! जैसे जल में जलचर और गूलर में सूक्ष्म कीट पतंग रहते हैं वैसे ही आपके मनोमय पुरुष रूप अनेक जीव जन्तुओं से भरे हुये लोक और लोकपाल कल्पित किये गये हैं ॥

षोडशः श्लोकः

यानि यानीह रूपाणि क्रीडनार्थं बिभर्षि हि ।
तैरामृष्टशुचो लोका मुदा गायन्ति ते यशः ॥१६॥

पदच्छेद— यानि यानि इह रूपाणि क्रीडन् अर्थम् बिभर्षि हि ।
तैः आमृष्ट शुचः लोकाः मुदा गायन्ति ते यशः ॥

शब्दार्थ—

यानि	४.	जो	तैः	८.	उनसे
यानि	५.	जो	आमृष्ट	९.	धो बहाये गये
इह	३.	यहाँ	शुचः	१०.	शोक वाले
रूपाणि	६.	रूप	लोकाः	११.	लोग
क्रीडन्	१.	आप क्रीडा	मुदा	१२.	हर्ष से
अर्थम्	२.	करने के लिये	गायन्ति	१४.	गायन करते हैं
बिभर्षि हि ।	७.	धारण करते हैं	ते यशः ॥	१३.	आपके यश का

श्लोकार्थ—आप क्रीडा करने के लिये यहाँ जो-जो रूप धारण करते हैं, उनसे धो बहाये गये शोक वाले लोग हर्ष से आपके यश का गायन करते हैं ॥

सप्तदशः श्लोकः

नमः कारणमत्स्याय प्रलयाब्धिचराय च ।
हयशीर्ष्णे नमस्तुभ्यं मधुकैटभमृत्यवे ॥१७॥

पदच्छेद— नमः कारण मत्स्याय प्रलय अब्धि चराय च ।
हयशीर्ष्णे नमः तुभ्यम् मधु कैटभ मृत्यवे ॥

शब्दार्थ—

नमः	७. नमस्कार है	हयशीर्ष्णे	११. हयग्रीवावतार
कारण	१. लोक रक्षा के निमित्त	नमः	१३. नमस्कार है
मत्स्याय	२. मत्स्य रूप धारण करने वाले	तुभ्यम्	१२. आपको
प्रलय	४. प्रलय के	मधु	८. मधु और
अब्धि	५. समुद्र में	कैटभ	९. कैटभ नामक असुरों को
चराय	६. विचरण करने वाले को	मृत्यवे ॥	१०. मारने वाले
च ।	३. और		

श्लोकार्थ—लोक रक्षा के निमित्त मत्स्य रूप धारण करने वाले और प्रलय के समुद्र में विचरण करने वाले को नमस्कार है। मधु और कैटभ असुर को मारने वाले आप हयग्रीवावतार को नमस्कार है ॥

अष्टादशः श्लोकः

अकूपाराय बृहते नमो मन्दरधारिणे ।
क्षित्युद्धारविहाराय नमः सूकरमूर्तये ॥१८॥

पदच्छेद— अकूपाराय बृहते नमः मन्दर धारिणे ।
क्षिति उद्धार विहाराय नमः सूकर मूर्तये ॥

शब्दार्थ—

अकूपाराय	४. कच्छपावतार को	क्षिति	६. पृथ्वी का
बृहते	३. विशाल	उद्धार	७. उद्धार एवम्
नमः	५. नमस्कार है	विहाराय	८. विहार करने वाले
मन्दर	१. मन्दराचल को	नमः	१०. नमस्कार है
धारिणे ।	२. धारण करने वाले	सूकर मूर्तये ॥	९. सूकर रूप को

श्लोकार्थ—मन्दराचल को धारण करने वाले विशाल कच्छपावतार को नमस्कार है। पृथ्वी का उद्धार एवम् विहार करने वाले सूकर रूप को नमस्कार है ॥

एकोनविंशः श्लोकः

नमस्तेऽद्भुतसिंहाय साधुलोकभयापह ।
वामनाय नमस्तुभ्यं क्रान्तत्रिभुवनाय च ॥१९॥

पदच्छेद— नमः ते अद्भुत सिंहाय साधुलोक भयापह ।
वामनाय नमस्तुभ्यम् क्रान्त त्रिभुवनाय च ॥

शब्दार्थ—

नमः	६. नमस्कार है	वामनाय	१०. वामनावतार
ते	५. आप को	नमः	१२. नमस्कार है
अद्भुत	३. अद्भुत	तुभ्यम्	११. आप को
सिंहाय	४. सिंह रूप धारण करने वाले	क्रान्त	९. नाप लेने वाले
साधुलोक	१. साधुजनों का	त्रिभुवनाय	८. तीनों लोकों को
भयापह ।	२. भय दूर करने वाले	च ॥	७. और

श्लोकार्थ—साधुजनों का भय दूर करने वाले अद्भुत सिंह रूप धारण करने वाले आपको नमस्कार है। और तीनों लोकों को नापने वाले वामनावतार आपको नमस्कार है ॥

विंशः श्लोकः

नमो भृगूणां पतये दृप्तक्षत्रवनच्छिदे ।
नमस्ते रघुवर्याय रावणान्तकराय च ॥२०॥

पदच्छेद— नमः भृगूणाम् पतये दृप्त क्षत्र वनच्छिदे ।
नमः ते रघुवर्याय रावण अन्तकराय च ॥

शब्दार्थ—

नमः	६. नमस्कार है	नमः	१२. नमस्कार है
भृगुणाम्	४. भृगुवंशियों के	ते	११. आप को
पतये	५. पति (परशुराम को)	रघुवर्याय	१०. रघुवर
दृप्त	१. घमंडी	रावण	८. रावण के
क्षत्र	२. क्षत्रियों के	अन्तकराय	९. विनाशक
वनच्छिदे ।	३. वंश का छेदन करने वाले	च ॥	७. और

श्लोकार्थ—घमंडी क्षत्रियों के वंश का छेदन करने वाले भृगुवंशियों के पति परशुराम को नमस्कार है। और रावण के विनाशक रघुवर आप को नमस्कार है ॥

एकविंशः श्लोकः

नमस्ते वासुदेवाय नमः सङ्कर्षणाय च।
प्रद्युम्नायानिरुद्धाय सात्वतां पतये नमः ॥२१॥

पदच्छेद— नमः ते वासुदेवाय नमः सङ्कर्षणाय च।
प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सात्वताम् पतये नमः ॥

शब्दार्थ—

नमः	३. नमस्कार है	प्रद्युम्नाय	७. प्रद्युम्न
ते	१. आपके	अनिरुद्धाय	८. अनिरुद्ध
वासुदेवाय	२. वासुदेव रूप को	सात्वताम्	९. यदुवंशियों के
नमः	६. नमस्कार है	पतये	१०. स्वामी आपको
सङ्कर्षणाय	५. बलराम रूप को	नमः ॥	११. नमस्कार है
च।	४. और		

श्लोकार्थ—आपके वासुदेव रूप को नमस्कार है। और बलराम रूप को नमस्कार है। प्रद्युम्न, अनिरुद्ध और यदुवंशियों के स्वामी आपको नमस्कार है॥

द्वाविंशः श्लोकः

नमो बुद्धाय शुद्धाय दैत्यदानवमोहिने।
म्लेच्छप्रायक्षत्रहन्त्रे नमस्ते कल्किरूपिणे ॥२२॥

पदच्छेद— नमः बुद्धाय शुद्धाय दैत्य दानव मोहिने।
मलेच्छप्राय क्षत्रहन्त्रे नमः ते कल्कि रूपिणे ॥

शब्दार्थ—

नमः	६. नमस्कार है	मलेच्छप्राय	७. म्लेच्छ बने हुये
बुद्धाय	५. बुद्धावतार को	क्षत्रहन्त्रे	८. क्षत्रियों को मारने वाले
शुद्धाय	४. शुद्ध	नमः	१२. नमस्कार है
दैत्य	१. दैत्य (और)	ते	११. आपको
दानव	२. दानवों को	कल्कि	९. कल्कि
मोहिने।	३. मोहित करने वाले	रूपिणे ॥	१०. रूपधारी

श्लोकार्थ—दैत्य और दानवों को मोहित करने वाले, शुद्ध, बुद्धावतार को नमस्कार है। म्लेच्छ बने हुये क्षत्रियों को मारने वाले कल्कि रूप धारी आपको नमस्कार है॥

त्रयोविंशः श्लोकः

भगवञ्जीवलोकोऽयं मोहितस्तव मायया ।
अहंममेत्यसद्ग्रहो भ्राम्यते कर्मवर्त्मसु ॥२३॥

पदच्छेद— भगवन् जीवलोकः अयम् मोहितः तव मायया ।
अहम् मम इति असत् ग्राहः भ्राम्यते कर्म वर्त्मसु ॥

शब्दार्थ—

भगवन्	१. भगवन्	**अहम्**	७. मैं और
जीवलोकः	३. जीवों का समूह	**मम इति**	८. मेरा इस
अयम्	२. यह	**असत् ग्राहः**	९. मिथ्या दुराग्रह के कारण
मोहितः	६. मोहित होकर	**भ्राम्यते**	१२. भटक रहा है
तव	४. आपकी	**कर्म**	१०. कर्म के
मायया ।	५. माया से	**वर्त्मसु ॥**	११. मार्गों में

श्लोकार्थ—भगवन् ! यह जीवों का समूह आपकी माया से मोहित होकर मैं और मेरा इस मिथ्या दुराग्रह के कारण कर्म के मार्गों में भटक रहा है ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

अहं चात्मात्मजागारदारार्थस्वजनादिषु ।
भ्रमामि स्वप्नकल्पेषु मूढः सत्यधिया विभो ॥२४॥

पदच्छेद — अहम् च आत्म आत्मज आगार दार अर्थ स्वजन आदिषु ।
भ्रमामि स्वप्न कल्पेषु मूढः सत्यधिया विभो ॥

शब्दार्थ—

अहम्	५. मैं	**भ्रमामि**	१२. भटक रहा हूँ
च	१. और	**स्वप्न**	३. स्वप्न के
आत्म आत्मज	६. देह पुत्र	**कल्पेषु**	४. समान
आगार दारा अर्थ	७. गृह पत्नी धन और	**मूढः**	११. मूर्ख बना हुआ
स्वजन	८. स्वजन	**सत्यधिया**	१०. सत्य समझकर
आदिषु ।	९. आदि को	**विभो ॥**	२. हे स्वामी !

श्लोकार्थ—और हे स्वामी ! स्वप्न के समान मैं देह पुत्र, गृह, पत्नी, धन और स्वजन आदि को सत्य समझ कर मूर्ख बना हुआ भटक रहा हूँ ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

अनित्यानात्मदुःखेषु विपर्ययमतिर्ह्यहम् ।
द्वन्द्वारामस्तमोविष्टो न जाने त्वाऽऽत्मनः प्रियम् ॥२५॥

पदच्छेद—

अनित्यअनात्मदुःखेषु विपर्ययमतिःहि अहम् ।
द्वन्द्वआरामः तमोविष्टः न जाने त्वा आत्मनः प्रियम् ॥

शब्दार्थ—

अनित्य	१. अनित्य	द्वन्द्व	७. (सांसारिक) सुखदुःख आदि में
अनात्म	२. अनात्मा और	आरामः	८. रमकर
दुःखेषु	३. दुःखों में	तमःविष्ट	९. अज्ञानवश
विपर्यय	४. उलटी बुद्धिवाला	न जाने	१३. नहीं जान पाया
मतिःहि	५. निश्चित ही	त्वा	१२. आपको
अहम् ।	६. मैं	आत्मनः	१०. अपने
		प्रियम् ॥	११. पुत्र

श्लोकार्थ—अनित्य, अनात्मा और दुःखों में उलटी बुद्धिवाला निश्चित ही मैं सांसारिक सुख-दुख आदि में रमकर अज्ञानवश अपने पुत्र आपको नहीं जान पाया ॥

षड्विंशः श्लोकः

यथाबुधो जलं हित्वा प्रतिच्छन्नं तदुद्भवैः ।
अभ्येति मृगतृष्णां वै तद्वत्त्वाहं पराङ्मुखः ॥२६॥

पदच्छेद—

यथा अबुधः जलम् हित्वा प्रतिच्छन्नं तदुद्भवैः ।
अभ्येति मृगतृष्णाम् वै तद्वत् त्वा अहम् पराङ्मुखः ॥

शब्दार्थ—

यथाअबुध	१. जैसे अनजान मनुष्य	अभ्येति	८. दौड़ पड़े
जलम्	५. जल को	मृगतृष्णाम्	७. मृगतृष्णा की ओर
हित्वा	६. छोड़कर (जल केलिये)	वै	१०. ही
प्रतिच्छन्नम्	४. ढके हुये	तद्वत्	९. वैसे
तत्	२. उस जल से	त्वा अहम्	११. आप से मैं
उद्भवैः ।	३. उत्पन्न (सेवार आदि) से	पराङ्मुखः ॥	१२. बिमुख होकर (विषयों में भटक रहा हूँ)

श्लोकार्थ—जैसे अनजान मनुष्य।उस जल से उत्पन्न सेवार आदि से ढके हुये जल को छोड़कर जल के लिये मृगतृष्णा की ओर दौड पड़े, वैसे हो आप से मैं विमुख होकर विषयों में भटक रहा हूँ ॥

सप्तविंशः श्लोकः

नोत्सहेऽहं कृपणधीः कामकर्महतं मनः ।
रोद्धुं प्रमाथिभिश्चाक्षैर्ह्रियमाणमितस्ततः ।।२७।।

पदच्छेद— न उत्सहे अहम् कृपणधीः कामकर्म हतम् मनः ।
रोद्धुम् प्रमाथिभिः च अक्षैः ह्रियमाणम् इतः ततः ।।

शब्दार्थ—

न	१३. नहीं	रोद्धुम्	१२. रोकने के लिये
उत्सहे	१४. उत्साह कर पाता हूँ	प्रमाथिभिः	१०. दुर्दमनीय
अहम्	२. मैं	च	५. तथा
कृपणधीः	१. कृपण बुद्धि वाला	अक्षैः	६. इन्द्रियों के द्वारा
कामकर्म	३. कामना और कर्म से	ह्रियमाणम्	९. घसीट ले जाते हुये
हतम्	४. विनष्ट	इतः	७. इधर
मनः ।	११. मन को	ततः ।।	८. उधर

श्लोकार्थ— कृपण बुद्धि वाला मैं कामना और कर्म से विनष्ट तथा इन्द्रियों के द्वारा इधर-उधर घसीट ले जाते हुये दुर्दमनीय मन को रोकने के लिए उत्साह नहीं कर पाता हूँ ।।

अष्टाविंशः श्लोकः

सोऽहं तवाङ्घ्रिउपगतोऽस्म्यसतां दुरापं तच्चाप्यहं भवदनुग्रह ईश मन्ये ।
पुंसो भवेद् यर्हि संसरणापवर्गस्त्वय्यब्जनाभसदुपासनया मतिः स्यात् ।।२८।।

पदच्छेद—
सः अहम् तव अङ्घ्रि उपगतः अस्मि असताम् दुरापम् तत् च अपि अहम् भवत्अनुग्रहः ईश मन्ये ।
पुंसः भवेत् यर्हि संसरण अपवर्गः त्वयिअब्जनाभसत् उपासनया मतिः स्यात् ।।

शब्दार्थ—

सःअहम्तव	१. वह मैं आपके	पुंसः	१०. मनुष्य का
अङ्घ्रिउपगतः	२. चरणों में पहुँचा	भवेत्	१२. होता है तब
अस्मिअसताम्	३. हूँ जो दुष्टों के लिये	यर्हिसंसरण	९. जब संसार से
दुरापम्तत्	४. दुर्लभ है उसे	अपवर्गः	११. मुक्त होने का समय
चअपिअहम्भवत्	५. भी मैं आपका	त्वयि	१६. आप में
अनुग्रह	६. अनुग्रह	अब्जनाभ	१३. हे पद्मनाभ ।
ईश	८. हे स्वामी !	सत्	१४. सत्पुरुषों की
मन्ये ।	७. मानता हूँ	उपासनया	१५. उपासना से
		मतिःस्यात् ।।	१७. विस्मृति जगती है

श्लोकार्थ—वह मैं आपके चरणों में पहुँचा हूँ । जो दुष्टों के लिए दुर्लभ है उसे भी मैं आपका अनुग्रह मानता हूँ । स्वामी ! जब संसार से मनुष्य के मुक्त होने का समय होता है तब हे पद्मनाभ ! सत्पुरुषों की उपासना से आप में चित्तवृत्ति लगती है ।।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

नमो विज्ञानमात्राय सर्वप्रत्ययहेतवे ।
पुरुषेशप्रधानाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ।।२९।।

पदच्छेद— नमः विज्ञानमात्राय सर्व प्रत्यय हेतवे ।
पुरुष ईशप्रधानाय ब्रह्मणे अनन्तशक्तये ।।

शब्दार्थ—

नमः	१०.	नमस्कार है	पुरुष	५.	पुरुषों के
विज्ञानमात्राय	१.	केवल विज्ञान रूप	ईशप्रधानाय	६.	स्वामी के भी स्वामी
सर्व	२.	सभी	ब्रह्मणे	७.	ब्रह्म और
प्रत्यय	३.	प्रतीतियों के	अनन्त	८.	अनन्त
हेतवे ।	४.	कारण स्वरूप	शक्तये ।।	९.	शक्ति वाले आप को

श्लोकार्थ—केवल विज्ञान रूप सभी प्रतीतियों के कारण स्वरूप पुरुषों के स्वामी के भी स्वामी ब्रह्म और अनन्त शक्ति वाले आप को नमस्कार है ।

त्रिंशः श्लोकः

नमस्ते वासुदेवाय सर्वभूतक्षयाय च ।
हृषीकेश नमस्तुभ्यं प्रपन्नं पाहि मां प्रभो ।।३०।।

पदच्छेद— नमः ते वासुदेवाय सर्वभूत क्षयाय च ।
हृषीकेश नमः तुभ्यम् प्रपन्नम् पाहि माम् प्रभो ।।

शब्दार्थ—

नमः	६	नमस्कार है	हृषीकेश	७.	इन्द्रियों के स्वामी
ते	५.	आप को	नमः	९.	नमस्कार है
वासुदेवाय	१.	वासुदेव	तुभ्यम्	८.	आप को
सर्वभूत	३.	सभी प्राणियों का	प्रपन्नम्	१२.	शरणागत की
क्षयाय	४.	क्षय करने वाले	पाहि	१३.	रक्षा कीजिये
च ।	२.	और	माम्	११.	मुझ
			प्रभो ।।	१०.	हे प्रभो !

श्लोकार्थ—वासुदेव और सभी प्राणियों का क्षय करने वाले आप को नमस्कार है । इन्द्रियों के स्वामी आप को नमस्कार है । हे प्रभो ! मुझ शरणगत की रक्षा कीजिये ।।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
अक्रूरस्तुतिर्नाम चत्वारिंशः अध्यायः ।।४०।।

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

एकचत्वारिंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— स्तुवतस्तस्य भगवान् दर्शयित्वा जले वपुः ।
भूयः समाहरत् कृष्णो नटो नाट्यमिवात्मनः ॥१॥

पदच्छेद— स्तुवतः तस्य भगवान् दर्शयित्वा जले वपुः ।
भूयः समाहरत् कृष्णः नटः नाट्यम् इव आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

स्तुवतः	१.	स्तुति करते हुये	भूयः	८.	पुनः
तस्य	२.	उस (अक्रूर) को	समाहरत्	९.	छिपा लिया
भगवान्	३.	भगवान्	कृष्णः	४.	श्रीकृष्ण ने
दर्शयित्वा	७.	दिखा कर	नटः नाट्यम्	११.	नट अभिनय में
जले	५.	जल में (अपना)	इव	१०.	जैसे कोई
वपुः ।	६.	रूप	आत्मनः ॥	१२.	अपने को दिखा कर छिपा ले

श्लोकार्थ—स्तुति करते हुये उस अक्रूर को भगवान् श्रीकृष्ण ने जल में अपना स्वरूप दिखा कर छिपा लिया, जैसे कोई नट अभिनय में अपने को दिखा कर छिपा ले ॥

द्वितीयः श्लोकः

सोऽपि चान्तर्हितं वीक्ष्य जलादुन्मज्ज्य सत्वरः ।
कृत्वा चावश्यकं सर्वं विस्मितो रथमागमत् ॥२॥

पदच्छेद— सः अपि च अन्तर्हितम् वीक्ष्य जलात् उन्मज्ज्य सत्वरः ।
कृत्वा च आवश्यकम् सर्वम् विस्मितः रथम् आगमत् ॥

शब्दार्थ—

सः अपि	४.	उन्होंने भी	कृत्वा च	१०.	करके
च	१.	तब (रूप को)	आवश्यकम्	८.	आवश्यक
अन्तर्हितम्	२.	अन्तर्ध्यान हुआ	सर्वम्	९.	कार्य
वीक्ष्य	३.	जान कर	विस्मितः	११.	अति आश्चर्य चकित होकर
जलात्	५.	जल से	रथम्	१२.	रथ पर
उन्मज्ज्य	६.	बाहर निकल कर	आगमत् ॥	१३.	आ गये
सत्वरः ।	७.	शीघ्र ही			

श्लोकार्थ—तब रूप को अन्तर्ध्यान हुआ जान कर उन्होंने भी जल से बाहर निकल कर शीघ्र ही आवश्यक कार्य करके अति आश्चर्य चकित होकर रथ पर आ गये ॥

तृतीयः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— तमपृच्छद्धृषीकेशः किं ते दृष्टमिवाद्भुतम् ।
भूमौ वियति तोये वा तथा त्वां लक्षयामहे ॥३॥

पदच्छेद—

तम् अपृच्छत् हृषीकेशः किम् ते दृष्टम् इव अद्भुतम् ।
भूमौ वियति तोये वा तथा त्वाम् लक्षयामहे ॥

शब्दार्थ—

तम्	२. उनसे	भूमौ	५. पृथ्वी
अपृच्छत्	३. पूछा (चाचा जी)	वियति	६. आकाश
हृषीकेशः	१. श्रीकृष्ण ने	तोये	८. जल में
किम्ते	४. क्या आपको	वा	७. या
दृष्टम्	११. दिखाई पड़ी है क्योंकि	तथा	१३. आश्चर्यचकित
इव	१०. सी वस्तु	त्वाम्	१२. आपको
अद्भुतम् ।	९. कोई अद्भुत	लक्षयामहे ॥	१४. देख रहे हैं

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने उनसे पूछा चाचा जी क्या आपको पृथ्वी, आकाश वा जल में कोई अद्भुत सी वस्तु दिखाई पड़ी है । क्योंकि आपको आश्चर्य-चकित देख रहे हैं ॥

चतुर्थः श्लोकः

अद्भुतानीह यावन्ति भूमौ वियति वा जले ।
त्वयि विश्वात्मके तानि किं मेऽदृष्टं विपश्यतः ॥४॥

पदच्छेद—

अद्भुतानि इह यावन्ति भूमौ वियति वा जले ।
त्वयि विश्वात्मके तानि किम् मे अदृष्टम् विपश्यतः ॥

शब्दार्थ—

अद्भुतानि	७. अद्भुत पदार्थ है	त्वयि	१०. आपमें हैं
इह	१. यहाँ	विश्वात्मके	९. विश्वरूप
यावन्ति	६. जितने	तानि	८. वे (सब)
भूमौ	२. भूमि	किम्	१३. क्या
वियति	३. आकाश	मे	११. मैंने
वा	४. या	अदृष्टम्	१४. नहीं देखा
जले ।	५. जल में	विपश्यतः ॥	१२. आपको देखते हुये

श्लोकार्थ—यहाँ भूमि, आकाश या जल में जितने अद्भुत पदार्थ हैं, वे सब विश्वरूप आप में है । मैंने आपको देखते हुये क्या नहीं देखा ॥

पञ्चमः श्लोकः

यत्राद्भुतानि सर्वाणि भूमौ वियति वा जले ।
तं त्वानुपश्यतो ब्रह्मन् किं मे दृष्टमिहाद्भुतम् ॥५॥

पदच्छेद—

यत्र अद्भुतानि सर्वाणि भूमौ वियति वा जले ।
तम् त्वा अनुपश्यतः ब्रह्मन् किम् मे दृष्टम् इह अद्भुतम् ॥

शब्दार्थ—

यत्र	७. जिनमें हैं	तम्	९. उन्हीं
अद्भुतानि	६. अद्भुत वस्तुयें	त्वा	१०. आपके
सर्वाणि	५. सबकी सब	अनुपश्यतः	११. देखते हुये
भूमौ	१. पृथ्वी	ब्रह्मन्	८. हे ब्रह्मन् !
वियति	२. आकाश	किम् मे	१३. क्या मैंने
वा	३. या	दृष्टम्	१५. देखी है
जले ।	४. जल में	इह	१२. यहाँ
		अद्भुतम्	१४. अलौकिक वस्तु

श्लोकार्थ—पृथ्वी, आकाश या जल में सबकी सब अद्भुत वस्तुयें जिनमें हैं, हे ब्रह्मन् ! उन्हीं आपके देखते हुये यहाँ क्या मैंने अलौकिक वस्तु देखी है ॥

षष्ठः श्लोकः

इत्युक्त्वा चोदयामास स्यन्दनं गान्दिनीसुतः ।
मथुरामनयद् रामं कृष्णं चैव दिनात्यये ॥६॥

पदच्छेद—

इति उक्त्वा चोदयामास स्यन्दनम् गान्दिनीसुतः ।
मथुराम् अनयद् रामम् कृष्णम् च एव दिनात्यये ॥

शब्दार्थ—

इति	१. यह	अनयद्	१२. ले गये
उक्त्वा	२. कहकर	रामम्	९. राम और
चोदयामास	५. हाँक दिया	कृष्णम्	१०. कृष्ण को
स्यन्दनम्	४. रथको	च	६. और
गान्दिनीसुतः ।	३. अक्रूर ने	एव	८. ही
मथुराम्	११. मथुरा	दिनात्यये ॥	७. दिन ढलते-ढलते

श्लोकार्थ—यह कहकर अक्रूर ने रथ को हाँक दिया और दिन ढलते-ढलते ही राम और कृष्ण को मथुरा ले गये ॥

सप्तमः श्लोकः

मार्गे ग्रामजना राजंस्तत्र तत्रोपसंगताः ।
वसुदेवसुतौ वीक्ष्य प्रीता दृष्टिं न चाददुः ॥७॥

पदच्छेद— मार्गे ग्रामजनाः राजन् तत्र-तत्र उपसंगताः ।
वसुदेव सुतौ वीक्ष्य प्रीताः दृष्टिम् न च आददुः ॥

शब्दार्थ—

मार्गे	२.	मार्ग में	वासुदेव	७.	वसुदेव के
ग्रामजनाः	३.	गांव के लोग	सुतौ	८.	दोनों पुत्रों को
राजन्	१.	हे राजन् !	वीक्ष्य	९.	देख कर
तत्र	४.	स्थान	प्रीताः	१०.	प्रसन्न हो जाते (और)
तत्र	५.	स्थान पर	दृष्टिम्	११.	उन पर से अपनी दृष्टि को
उपसंगताः ।	६.	मिलने के लिये आते	न च आददुः ॥	१२.	नहीं हटा पाते थे

श्लोकार्थ—हे राजन् ! मार्ग में गांव के लोग स्थान-स्थान पर मिलने के लिये आते और वसुदेव के पुत्रों को देख कर प्रसन्न हो जाते और उन पर से अपनी दृष्टि नहीं हटा पाते थे ॥

अष्टमः श्लोकः

तावद् व्रजौकसस्तत्र नन्दगोपादयोऽग्रतः ।
पुरोपवनमासाद्य प्रतीक्षन्तोऽवतस्थिरे ॥८॥

पदच्छेद— तावत् व्रजओकसः तत्र नन्दगोप आदयः अग्रतः ।
पुर उपवनम् आसाद्य प्रतीक्षन्तः अवतस्थिरे ॥

शब्दार्थ—

तावत्	४.	तो	पुर	७.	नगर के
व्रजओकसः	१.	व्रजवासी	उपवनम्	८.	उद्यान में
तत्र	६.	वहाँ	आसाद्य	९.	पहुँच कर
नन्दगोप	२.	नन्दगोप	प्रतीक्षन्तः	१०.	उनकी प्रतीक्षा
आदयः	३.	आदि	अवतस्थिरे ॥	११.	कर रहे थे
अग्रतः ।	५.	पहले से ही			

श्लोकार्थ—व्रजवासी, नन्दगोप आदि तो पहले से ही नगर के उद्यान में पहुँच कर उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे ॥

नवमः श्लोकः

तान् समेत्याह भगवानक्रूरं जगदीश्वरः ।
गृहीत्वा पाणिना पाणिं प्रश्रितं प्रहसन्निव ॥९॥

पदच्छेद— तान् समेत्य आह भगवान् अक्रूरम् जगदीश्वरः ।
गृहीत्वा पाणिना पाणिम् प्रश्रितम् प्रहसन् इव ॥

शब्दार्थ—

तान्	१.	उनके	गृहीत्वा	८.	लेकर
समेत्य	२.	पास पहुँच कर	पाणिना	७.	अपने हाथ में
आह	१२.	कहा	पाणिम्	६.	हाथ
भगवान्	३.	भगवान्	प्रश्रितम्	९.	विनम्र होकर
अक्रूरम्	५.	अक्रूर का	प्रहसन्	१०.	हंसते हुये
जगदीश्वरम् ।	४.	श्रीकृष्ण ने	इव ॥	११.	उनसे

श्लोकार्थ—उनके पास पहुँच कर भगवान् श्रीकृष्ण ने अक्रूर का हाथ अपने हाथ में लेकर विनम्र होकर हंसते हुये उनसे कहा ॥

दशमः श्लोकः

भवान् प्रविशतामग्रे सहयानः पुरीं गृहम् ।
वयं त्विहावमुच्याथ ततो द्रक्ष्यामहे पुरीम् ॥१०॥

पदच्छेद— भवान् प्रविशताम् अग्रे सहयानः पुरीम् गृहम् ।
वयम् तु इह अवमुच्य अथ ततः द्रक्ष्यामहे पुरीम् ॥

शब्दार्थ—

भवान्	२.	आप	वयम् तु	७.	हम लोग तो
प्रविशताम्	५.	प्रवेश कीजिये (और)	इह	९.	यहाँ
अग्रे	१.	पहले	अवमुच्य	१०.	उतर कर
सहयानः	३.	रथ लेकर	अथ	८.	पहले
पुरीम्	४.	नगर में	ततः	११.	बाद में
गृहम् ।	६.	घर जाइये	द्रक्ष्यामहे	१३.	देखेंगे
			पुरीम् ॥	१२.	नगर को

श्लोकार्थ—पहले आप रथ लेकर नगर में प्रवेश कीजिये और घर जाइये । हम लोग पहले यहाँ उतर कर बाद में नगर को देखेंगे ॥

एकादशः श्लोकः

अक्रूर उवाच— नाहं भवद्भ्यां रहितः प्रवेक्ष्ये मथुरां प्रभो ।
त्यक्तुं नार्हसि मां नाथ भक्तं ते भक्तवत्सल ॥११॥

पदच्छेद— न अहम् भवद्भ्याम् रहितः प्रवेक्ष्ये मथुराम् प्रभो ।
त्यक्तुम् न अर्हसि माम् नाथ भक्तम् ते भक्तवत्सल ॥

शब्दार्थ—

न	६.	नहीं	त्यक्तुम्	१३.	छोड़ दे
अहम्	२.	मैं	न अर्हसि	१४.	उचित नहीं है
भवद्भ्याम्	३.	आप दोनों से	माम्	१२.	मुझको आप
रहितः	४.	रहित होकर	नाथ	८.	हे नाथ !
प्रवेक्ष्ये	७.	प्रवेश करूँगा	भक्तम्	११.	भक्त
मथुराम्	५.	मथुरा में	ते	१०.	आपके
प्रभो ।	१.	हे प्रभो !	भक्तवत्सल ॥	९.	भक्त वत्सल

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! मैं आप दोनों से रहित होकर मथुरा में प्रवेश नहीं करूँगा । हे नाथ ! भक्त वत्सल आपके भक्त मुझको आप छोड़ दें यह उचित नहीं है ॥

द्वादशः श्लोकः

आगच्छ याम गेहान् नः सनाथान् कुर्वधोक्षज ।
सहाग्रजः सगोपालैः सुहृद्भिश्च सुहृत्तम ॥१२॥

पदच्छेद— आगच्छ याम गेहान् नः सनाथान् कुरु अधोक्षज ।
सह अग्रजः सगोपालैः सुहृद्भिः च सुहृत्तम ॥

शब्दार्थ—

आगच्छ	२.	आइये	सह	८.	के साथ
याम	३.	चलें	अग्रजः	५.	बलराम जी
गेहान्	१२.	घर को	स	१०.	सहित
नः	११.	हमारे	गोपालैः	७.	ग्वाल वालों
सनाथान्	१३.	सनाथ	सुहृद्भिः	९.	बन्धुओं
कुरु	१४.	कीजिये	च	६.	और
अधोक्षज ।	१.	हे भगवान् !	सुहृत्तम ॥	४.	अत्यन्त हितैषी प्रभो

श्लोकार्थ—हे भगवान् ! आइये चलें ! अत्यन्त हितैषी प्रभो ! बलराम जी और ग्वाल-वालों के साथ और बन्धुओं सहित हमारे घर को सनाथ कीजिये ।'

त्रयोदशः श्लोकः

पुनीहि पादरजसा गृहान् नो गृहमेधिनाम् ।
यच्छौचेनानुतृप्यन्ति पितरः साग्नयः सुराः ॥१३॥

पदच्छेद— पुनीहि पादरजसा गृहान् नः गृहमेधिनाम् ।
यत्शौचेन अनुतृप्यन्ति पितरः सअग्नयः सुराः ॥

शब्दार्थ—

पुनीहि	६. पवित्र की जिये	यत्	७. जिन (आपके)
पाद	४. चरणों	शौचेन	८. (चरणों की) धोवन से
रजसा	५. धूलि से	अनुतृप्यन्ति	१२. तृप्त होते हैं
गृहान्	३. घर को (अपने)	पितरः	९. पितर (और)
नः	१. हम	सअग्नयः	१०. अग्नि सहित
गृहमेधिनाम् ।	२. गृहस्थों के	सुराः ॥	११. देवता

श्लोकार्थ—हम गृहस्थों के घर को अपने चरणों की धूलि से पवत्रि कीजिये । जिन आपके चरणों के धोवन से पितर और अग्नि सहित देवता तृप्त हो जाते हैं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

अवनिज्याङ्घ्रियुगलमासीच्छ्लोक्यो बलिर्महान् ।
ऐश्वर्यमतुलं लेभे गतिं चैकान्तिनां तु या ॥१४॥

पदच्छेद— अवनिज्यअङ्घ्रियुगलम्आसीत् श्लोक्यः बलिः महान् ।
ऐश्वर्यम् अतुलम् लेभे गतिम् च एकान्तिनाम् तुःया ॥

शब्दार्थ—

अवनिज्य	३. पखारकर	ऐश्वर्यम्	१०. ऐश्वर्य (तथा)
अङ्घ्रि	२. चरणों को	अतुलम्	९. अतुलनीय
युगलम्	१. आपके दोनों	लेभे	१४. प्राप्त कर लिया
आसीत्	७. हो गये	गतिम्	१३. गति मिलती है उसे भी
श्लोक्यः	६. धन्य	च	८. और
बलिः	५. बलि	एकान्तिनाम्	११. अनन्य भक्तों को
महान् ।	४. महात्मा	तु या ।	१२. जो

श्लोकार्थ—आपके दोनों चरणों को पखारकर महातमा बलि धन्य हो गये । और अतुलनीय ऐश्वर्य तथा अनन्य भक्तों को जो गति मिलती है उसे भी प्राप्त कर लिया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

आपस्तेऽङ्घ्र्यवनेजन्यस्त्रींल्लोकाञ्छुचयोऽपुनन् ।
शिरसाधत्त याः शर्वः स्वर्याताः सगरात्मजाः ॥१५॥

पदच्छेद— आपः ते अङ्घ्रि अवनेजन्यः त्रीन्लोकान् शुचयः अपुनन् ।
शिरसा आधत्त याः शर्वः स्वः याताः सगर आत्मजाः ॥

शब्दार्थ—

आपः	३. (गंगा जी के) जल ने	शिरसि	९. अपने सिर पर
ते अङ्घ्रि	१. आपके चरण से	आधत्त	१०. धारण किया और
अवनेजन्यः	२. निकले हुये	याःशर्वः	८. जिस गंगाजल को शिव
त्रीन्	४. तीनों	स्वः	११. स्वर्ग को
लोकान्	५. लोकों को	याताः	१३. चले गये
शुचयः	६. पवित्र	सगर	१२. सगर के
अपुनन् ।	७. कर दिया	आत्मजाः ॥	पुत्र (जिसके स्पर्श से)

श्लोकार्थ— आपके चरण से निकले हुये गंगाजी के जल ने तीनों लोकों को पवित्र कर दिया । जिस गंगा जल को शिव ने अपने सिर पर धारण किया । और सगर के पुत्र जिसके स्पर्श से स्वर्ग को चले गये ॥

षोडशः श्लोकः

देवदेव जगन्नाथ पुण्यश्रवणकीर्तन ।
यदूत्तमोत्तमश्लोक नारायण नमोऽस्तु ते ॥१६॥

पदच्छेद— देवदेव जगन्नाथ पुण्य श्रवण कीर्तन ।
यदूत्तम उत्तमश्लोक नारायण नमः अस्तु ते ॥

शब्दार्थ—

देवदेव	१. हे देवों के देव	यदूत्तम	६. यदुवंशियों में श्रेष्ठ
जगन्नाथ	२. संसार के स्वामी	उत्तमश्लोक	७. उत्तम पुरुषों द्वारा स्तुति किये जाते हुये
पुण्य	५. मंगल कारी है	नारायण	८. नारायण
श्रवण	३. आपकी लीलाओं का	नमःअस्तु	१०. नमस्कार है
कीर्तन ।	४. कीर्तन	ते ॥	९. आपको

श्लोकार्थ—हे देवों के देव ! संसार के स्वामी आपकी लीलाओं का कीर्तन मंगलकारी है । यदुवंशियों में श्रेष्ठ उत्तम पुरुषों द्वारा स्तुति किये जाते हुये नारायण आपको नमस्कार है ॥

सप्तदशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच— आयास्ये भवतो गेहमहमार्यसमन्वितः ।
यदुचक्रद्रुहं हत्वा वितरिष्ये सुहृत्प्रियम् ॥१७॥

पदच्छेद—

आयास्ये भवतः गेहम् अहम् आर्य समन्वितः ।
यदुचक्र द्रुहम् हत्वा वितरिष्ये सुहृत् प्रियम् ॥

शब्दार्थ—

आयास्ये	६. आऊँगा (और)	यदुचक्र	७. यदुवंशियों के
भवतः	४. आपके	द्रुहम्	८. द्रोही
गेहम्	५. घर	हत्वा	९. (कंसको) मारकर
अहम्	१. मैं	वितरिष्ये	१२. करूँगा
आर्य	२. बड़े भाई के	सुहृत्	१०. बन्धुओं का
समन्वितः ।	३. साथ	प्रियम्	११. प्रिय

श्लोकार्थ—मैं बड़े भाई के साथ आपके घर आऊँगा और यदुवंशियों के द्रोही कंस को मारकर बन्धुओं का प्रिय करूँगा ॥

अष्टादशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— एवमुक्तो भगवता सोऽक्रूरो विमना इव ।
पुरीं प्रविष्टः कंसाय कर्मावेद्य गृहं ययौ ॥१८॥

पदच्छेद—

एवम् उक्तः भगवता सः अक्रूरः विमनाः इव ।
पुरीम् प्रविष्टः कंसाय कर्म आवेद्य गृहम् ययौ ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२. इस प्रकार	पुरीम्	८. नगर में
उक्तः	३. कहने पर	प्रविष्टः	९. प्रवेश करके (और)
भगवता	१. भगवान् के	कंसाय	१०. कंसकी
सः	४. वे	कर्म	११. (अपना) कार्य
अक्रूरः	५. अक्रूर	आवेद्य	१२. बताकर
विमनाः	६. अनमने	गृहम्	१३. घर
इव ।	७. से होकर	ययौ ॥	१४. चले गये

श्लोकार्थ—भगवान् के इस प्रकार कहने पर वे अक्रूर अनमने से होकर नगर में प्रवेश करके और कंसको अपना कार्य बताकर घर को चले गये ॥

एकोनविंशः श्लोकः

अथापराह्णे भगवान् कृष्णः सङ्कर्षणान्वितः ।
मथुरां प्राविशद् गोपैर्दिदृक्षुः परिवारितः ।।१६।।

पदच्छेद— अथ अपराह्णे भगवान् कृष्णः संकर्षण अन्वितः ।
मथुराम् प्राविशद् गोपैः दिदृक्षुः परिवारितः ।।

शब्दार्थ—

अथ	१०. तदनन्तर	मथुराम्	६. मथुरापुरी को
अपराह्णे	२. तीसरे पहर	प्राविशद्	११. प्रवेश किया
भगवान्	३. भगवान्	गोपैः	६. ग्वाल वालों से
कृष्णः	५. श्री कृष्ण ने	दिदृक्षुः	१०. देखने के लिये
संकर्षण	६. बलराम जी के	परिवारितः ।।	८. घिरे हुये
अन्वितः ।	साथ		

श्लोकार्थ—तदनन्तर तीसरे पहर भगवान् श्रीकृष्ण नेबलराम जी के साथ ग्वाल-वालों से घिरे हुये, मथुरा पुरी को देखने के लिये प्रवेश किया ।।

विंशः श्लोकः

ददर्श तां स्फाटिकतुङ्गगोपुरद्वारां बृहद्धेमकपाटतोरणाम् ।
ताम्रारकोष्ठां परिखादुरासदामुद्यानरम्योपवनोपशोभिताम् ।।२०।।

पदच्छेद— ददर्श ताम् स्फाटिकतुङ्गगोपुर द्वाराम्बृहत्हेमकपाट तोरणाम् ।
ताम्रअरकोष्ठाम् परिखादुरासदाम्उद्यानरम्यःउपवनउपशोभिताम् ।।

शब्दार्थ—

ददर्श	१६. देखा	ताम्र	७. ताँबे और
ताम्	१५. उस (नगरी) को	अरकोष्ठाम्	८. पीतल की चहार दीवारीवाली
स्फाटिक	१. स्फाटिक मणियों के	परिखा	६. खाइयों के कारण
तुङ्ग	२. ऊँचे-ऊँचे	दुरासदाम्	१०. अगम्य
गोपुर	३. प्रधान दरवाजे तथा	उद्यान	११ बगीचों और
द्वाराम्	४. फाटकवाली	रम्यः	१३. (सुन्दर उपहारों से)
बृहत्हेमकपाट	५. बड़े-बड़े सोने के किवाड़ों	उपवन	१२. उपवनों से
तोरणाम्	६. बाहरी दरवाजों वाली	उपशोभिताम् ।।	१४. सुशोभित

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने स्फटिक मणियों के ऊँचे-ऊँचे प्रधान दरवाजे तथा फाटक वाली, बड़े-बड़े सोने के किवाड़ों और बाहरी दरवाजों वाली, ताँबें और पीतल की चहार दीवारी वाली, खाइयों के कारण अगम्य, बगीचों और उपवनों से सुन्दर उपहारों से सुशोभित उस नगरी को देखा ।।

एकविंशः श्लोकः

सौवर्णशृङ्गाटकहर्म्यनिष्कुटैः श्रेणीसभाभिर्भवनैरुपस्कृताम् ।
वैदूर्यवज्रामलनीलविद्रुमैर्मुक्ताहरिद्भिर्वलभीषु वेदिषु ॥२१॥

पदच्छेद— सौवर्णशृङ्गाटकहर्म्यनिष्कुटैः श्रेणीसभाभिः भवनैः उपस्कृताम् ।
वैदूर्यवज्रअमलनीलविद्रुमैः मुक्ताहरिद्भिःवलभीषु वेदिषु ॥

शब्दार्थ—

सौवर्ण	१.	सोने से	वैदूर्य	९.	वैदूर्य मणि
शृङ्गाटक	२.	सजे हुये चौराहों	वज्र	१०.	हीरे
हर्म्य	३.	धनियों के महलों	अमल	११.	स्फटिक
निष्कुटैः	४.	साथ के बगीचों	नीलविद्रुमैः	१२.	नीलम मूंगे
श्रेणी	५.	कारीगारों के स्थानों	मुक्ता	१३.	मोती और
सभाभिः	६.	सभागारों तथा	हरिद्भिः	१४.	पन्ने आदि से जड़े हुये
भवनैः	७.	भवनों से	वलभीषु	१५.	छज्जों एवम्
उपस्कृताम् ।	८.	सुशोभित और	वेदिषु ॥	१६.	चबूतरे वाली नगरी को देखा

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने सजे हुये चौराहों, धनियों के महलों, साथ के बगीचों, कारीगरों के स्थानों, सभागारों तथा भवनों से सुशोभित और वैदूर्यमणि, हीरे, स्फटिक, नीलम, मूंगे, मोती और पन्ने आदि से जड़े हुये छज्जों एवम् चबूतरे वाली नगरी को देखा ॥

द्वाविंशः श्लोकः

जुष्टेषु जालामुखरन्ध्रकुट्टिमेष्वाविष्टपारावतबर्हिनादिताम् ।
संसिक्तरथ्यापणमार्गचत्वरां प्रकीर्णमाल्याङ्कुरलाजतण्डुलाम् ॥२२॥

पदच्छेद— जुष्टेषु जालामखरन्ध्रकुट्टिमेषुआविष्टपारावतबर्हिनादिताम् ।
संसिक्त रथ्या आपणमार्गचत्वराम् प्रकीर्णमाल्यअङ्कुरलाजतण्डुलाम् ॥

शब्दार्थ—

जुष्टेषु	१.	सुन्दर	संसिक्तरथ्या	८.	सीचीं गई गलियों और
जालामुखरन्ध्र	२.	झरोखों एवं	आपणमार्ग	९.	और बाजारों के मार्गों तथा
कुट्टिमेषु	३.	फर्शों पर	चत्वाराम्	९०.	चौराहों वाली
आविष्ट	४.	बैठे हुये	प्रकीर्ण	१३.	बिखरी हुई
पारावत	५.	कबूतर एवं	माल्याकुङ्र	११.	माला, तथा
बर्हि	६.	मोरों से	लाज	१२.	खील और
नादिताम् ॥	७.	शब्दायमान	तण्डुलाम् ॥	१४.	चावल वाली (नगरी को देख

श्लोकार्थ -श्रीकृष्ण ने सुन्दर झरोखों एवम् फर्शों पर बैठे हुये कबूतर एवम् मोरों से शब्दायमान सींची गई गलियों और बाजारों के मार्गों तथा चौराहों वाली, माला तथा अङ्कुर, खील और बिखरे हुए चावल वाली उस नगरी को देखा ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

आपूर्णकुम्भैर्दधिचन्दनोक्षितैः प्रसूनदीपावलिभिः सपल्लवैः ।
सवृन्दरम्भाक्रमुकैः सकेतुभिः स्वलङ्कृतद्वारगृहां सपट्टिकैः ॥२३॥

पदच्छेद— आपूर्णकुम्भैः दधिचन्दनोक्षितैः प्रसून दीपावलिभिः सपल्लवैः ।
सवृन्दरम्भाक्रमुकैः सकेतुभिः सुअलङ्कृतद्वारगृहाम् सपट्टिकैः ॥

शब्दार्थ—

आपूर्ण	७. जलभरे	सवृन्द	९. फल सहित
कुम्भैः	८. कलशों (और	रम्भा	१०. केले के और
दधि	१. दही और	क्रमुकैः	११. सुपारी के वृक्षों तथा
चन्दन	२. चन्दन से	सकेतुभिः	१२. पताकाओं और
उक्षितैः	३. चर्चित	सुअलङ्कृत	१४. सुसज्जित
प्रसून	४. फूलों और	द्वारा	१५. द्वार वाले
दीपावलिभिः	६. दीपसमूहों से युक्त	गृहाम्	१६. गृहों से युक्त (नगर को देखो)
सपल्लवैः ।	५. पल्लव सहित	सपट्टिकैः ॥	१२. रेशमी वस्त्रों से

श्लोकार्थ - दही और चन्दन से चर्चित फूलों और पल्लवों सहित दीपों के समूहों से युक्त जल भरे कलशों से और फल सहित केले के और सुपारी के वृक्षों से तथा पताकाओं से और रेशमी वस्त्रों से सुसज्जित द्वार वाले गृहों से युक्त नगरी को देखा ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

तां सम्प्रविष्टौ वसुदेवनन्दनौ वृतौ वयस्यैर्नरदेववर्त्मना ।
द्रष्टुं समीयुस्त्वरिताः पुरस्त्रियो हर्म्याणि चैवारुरुहुर्नृपोत्सुकाः ॥२४॥

पदच्छेद— तां सम्प्रविष्टौ वसुदेवनन्दनौ वृतौ वयस्यैःनरदेववर्त्मना ।
द्रष्टुं समीयुःत्वरिताः पुरस्त्रियः हर्म्याणि च एव आरुरुहुः नृपउत्सुकाः ॥

शब्दार्थ—

ताम्	८. उस नगरी में	द्रष्टुम्	१०. उन्हें देखने के लिए
सम्प्रविष्टौ	९. प्रवेश किया (और)	समीयुः	१३. आयीं और
वसुदेव	२. वसुदेव के	त्वरिताः	१४. झट-पट
नन्दनौ	३. दोनों पुत्रों ने	पुरस्त्रियः	१२. नगर की स्त्रियाँ
वृतौ	५. साथ	हर्म्याणि	१२. अटारियों पर
वयस्यैः	४. सखाओं के	चएव आरुरुहुः	१६. चढ़ गईं
नरदेव	६ राज	नृप	१. हे राजन् ।
वर्त्मना ।	७. मार्ग से	उत्सुकाः ॥	११. उत्सुकतावश

श्लोकार्थ—हे राजन् । वसुदेव के दोनों पुत्रों ने सखाओं के साथ राज मार्ग से उस नगरी में प्रवेश किया और उन्हें देखने के लिये उत्सुकतावश नगर की स्त्रियाँ आईं और झटपट अटारियों पर चढ़ गईं ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

काश्चिद् विपर्यग्धृतवस्त्रभूषणा विस्मृत्य चैकं युगलेष्वथापराः ।
कृतैकपत्रश्रवणैकनूपुरा नाङ्क्त्वा द्वितीयं त्वपराश्च लोचनम् ॥२५॥

पदच्छद— काश्चित् विपर्यक्धृतवस्त्रभूषणा विस्मृत्य च एकम्युगलेषुअथअपराः ।
कृतएकपत्रश्रवणाएकनूपुरा न अङ्क्त्वा द्वितीयं तुअपराः च लोचनम् ॥

शब्दार्थ—

कश्चित्	१.	किसी-किसी ने	कृत	११.	धारण किया
विपर्यक्	२.	उलटे	एकपत्र	१०.	पत्रनामक आभूषण,
धृतवस्त्रभूषणाः	३.	वस्त्र और गहने पहनलिये	श्रवणा	९.	किसी ने एक ही कान में
विस्मृत्य च	६.	भूलकर	एकनूपुराः	१२.	किसी ने एक ही नूपुर पहना
एकम्	८.	एक ही (गहना पहना)	न अङ्क्त्वा	१६.	अञ्जन बिना लगाये चल पड़ी
युगलेषु	७.	जोड़े में से	द्वितीय तु	१४.	दूसरी
अथ	४.	और	न अपराः च	१३.	दूसरी स्त्रियाँ
अपराः ।	५.	किसी-किसी ने	लोचनम् ॥	१५.	आख में

श्लोकार्थ—किसी-किसी ने उलटे वस्त्र और गहने पहन लिये और किसी-किसी ने भूलकर जोड़े में से एक ही गहना पहना । किसी ने एक ही कान में पत्र नामक आभूषण धारण किया । और किसी ने एक ही नूपुर पहना । दूसरी स्त्रियाँ दूसरी आँख में अञ्जन बिना लगाये चल पड़ीं ॥

षड्विंशः श्लोकः

अश्नन्त्य एकास्तदपास्य सोत्सवा अभ्यज्यमाना अकृतोपमज्जनाः ।
स्वपन्त्य उत्थाय निशम्य निःस्वनं प्रपाययन्त्योऽर्भमपोह्य मातरः ॥२६॥

पदच्छेद— अश्नन्त्यः एकाः तत्अपास्य स उत्सवाः अभ्यज्यमानाः अकृतउपमज्जनाः ।
स्वपन्त्य उत्थायः निशम्य निःस्वनम्प्रपाययन्त्यः अर्भम्अपोहय् मातरः ॥

शब्दार्थ—

अश्नन्त्यः	१.	खाती हुई	स्वपन्त्यः	९.	सोती हुई स्त्रियाँ
एकाः	२.	कोई स्त्रियाँ	उत्थाथ	१२.	उठकर चल दीं
तत्	३.	उसे	निशम्य	११.	सुनकर
अपास्प	४.	छोड़कर	निःस्वनम्	१०.	कोलाहल
स उत्सवाः	५.	आनन्द के साथ चलपड़ीं (कोई)	प्रपाययन्त्यः	१४.	पिलाती हुई
अभ्यज्यमानाः	६.	उबटन लगवाती हुई	अर्भम्	१३.	बच्चों को दूध
अकृत	८.	किये बिना चल पड़ीं	अपोह्य	१६.	उन्हें हटाकर चल पड़ीं
उपमज्जनाः ।	७.	स्नान	मातरः ॥	१५.	मातायें

श्लोकार्थ—खाती हुई कोइ स्त्रियाँ उसे छोड़कर अनन्द के साथ चल पड़ीं, कोई उबटन लगवाती हुई स्नान किये बिना चल पड़ीं । सोती हुई स्त्रियाँ कोलाहल सुनकर उठकर चल दीं । बच्चों को दूध पिलाती हुई मातायें उन्हें हटाकर चल पड़ीं ॥

सप्तविंशः श्लोकः

मनांसि तासामरविन्दलोचनः प्रगल्भलीलाहसितावलोकनैः ।
जहार मत्तद्विरदेन्द्रविक्रमो दृशां ददच्छ्रीरमणात्मनोत्सवम् ॥२७॥

पदच्छेद— मनांसि तासाम् अरविन्दलोचनः प्रगल्भलीलाहसितअवलोकनैः ।
जहार मत्तद्विरदइन्द्र विक्रमः दृशाम् ददत् श्रीरमण आत्मना उत्सवम् ॥

शब्दार्थ—

मनांसि	१५.	मन को	जहार	१६.	हर लिया
तासाम्	१४.	उनके	मत्तद्विरदइन्द्र	१.	मतवाले गजराज के समान
अरविन्द	३.	कमल	विक्रमः	२.	चलने वाले
लोचनः	४.	नयन (भगवान् ने)	दृशाम्	७.	स्त्रियों के नेत्रों को
प्रगल्भ	११.	निर्भय	ददत्	९.	देते हुये
लीला	१०.	विलासपूर्ण	श्रीरमण	५.	लक्ष्मी को आनन्दित करने वाले
हसित	१२.	हंसी तथा	आत्मना	६.	अपने शरीर से
अवलोकनैः ।	१३.	चितवन से	उत्सवम् ॥	८.	आनन्द

श्लोकार्थ—मतवाले गजराज के समान चलने वाले कमल नयन भगवान् ने लक्ष्मी को आनन्दित करने वाले अपने शरीर से आनन्द देते हुये विलास पूर्ण निर्भय हंसी तथा चितवन से उनके मन को हर लिया ।

अष्टाविंशः श्लोकः

दृष्ट्वा मुहुःश्रुतमनुद्रुतचेतसस्तं तत्प्रेक्षणोत्स्मितसुधोक्षणलब्धमानाः ।
आनन्दमूर्तिमुपगुह्य दृशाऽऽत्मलब्धं हृष्यत्त्वचो जहुरनन्तमरिन्दमाधिम् ॥२८॥

पदच्छेद—दृष्ट्वा मुहुःश्रुतम्अनुद्रुतचेतसः तम् तत् प्रेक्षण उत्स्मितसुधाउक्षणलब्धमानाः ।
आनन्द मूर्तिम्उपगुह्य दृशआतमलब्धम् हृष्यत्त्वचःजहुः अनन्तम्अरिन्दम्आधिम् ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	४.	देख कर	आनन्द मूर्तिम्	१०.	आनन्दमय स्वरूप का
मुहुः श्रुतम्	२.	बार-बार सुने गये	उपगुह्य दृशा	११.	आलिगन करके नेत्रों के द्वारा
अनुद्रुत चेतसः	५.	चंचल व्याकुल चित्त वाली	आतम लब्धम्	१२.	भगवान् को हृदय में ले जाकर
तम्	३.	उन (श्रीकृष्ण को)	हृष्यत् त्वचः	१३.	रोमाञ्च से युक्त होकर त्वचा में
तत् प्रेक्षण	६.	उनकी चितवन तथा	जहुः	१६.	त्याग दिया
उत्स्मित	७.	मन्द मुसकान के	अनन्तम्	१४.	बहुत दिनों की
सुधा उक्षण	८.	अमृत से सींच कर	अरिन्दम	१.	हे शत्रु दमनकारी परीक्षित् !
लब्धमानाः ।	९.	सम्मानित की गई	आधिम् ॥	१५.	मनोव्यथा को

श्लोकार्थ—हे शत्रु दमनकारी परीक्षित् ! बार-बार सुने गये उन श्रीकृष्ण को देख कर चंचल व्याकुल चित्त वाली उनकी चितवन तथा मन्द मुसकान के अमृत से सींच कर सम्मानित की गई स्त्रियों ने आनन्दमय स्वरूप का आलिगन करके नेत्रों के द्वारा भगवान् को हृदय में ले जाकर त्वचा में रोमाञ्च से युक्त होकर बहुत दिनों की मनो व्यथा को त्याग दिया ॥

एकोनत्रिंश: श्लोकः

प्रासादशिखरारूढाः प्रीत्युत्फुल्लमुखाम्बुजाः ।
अभ्यवर्षन् सौमनस्यैः प्रमदा बलकेशवौ ॥२९॥

पदच्छेद—

प्रासादशिखरआरूढाः प्रीति उत्फुल्लमुखअम्बुजाः ।
अभ्यवर्षन् सौमनस्यैः प्रमदा बलकेशवौ ॥

शब्दार्थ—

प्रासाद	५. महलों की	अभ्यवर्षन्	११. वर्षा करने लगीं
शिखर	६. अटारियों पर	सौमनस्यैः	१०. फूलों की
आरूढाः	७. चढ़कर	प्रमदा	४. स्त्रियाँ
प्रीति	१. प्रेम से	बल	८. बलराम और
उत्फुल्लमुख	२. विकसित मुखवाली	केशवौ ॥	९. श्रीकृष्ण पर
अम्बुजाः ।	३. कमलनयनी		

श्लोकार्थ—प्रेम से विकसित मुखवाली कमल नयनी स्त्रियाँ महलों की अटारियों पर चढ़कर बलराम और श्रीकृष्ण पर फूलों की वर्षा करने लगीं ॥

त्रिंश: श्लोकः

दध्यक्षतैः सोदपात्रैः स्रग्गन्धैरभ्युपायनैः ।
तावानर्चुः प्रमुदितास्तत्र तत्र द्विजातयः ॥३०॥

पदच्छेद—

दधिअक्षतैः स उदपात्रैः स्रक्गन्धैः अभिउपायनैः ।
तौआनर्चुः प्रमुदिताः तत्र-तत्र द्विजातयः ॥

शब्दार्थ—

दधि	५. दही	तौ	१० उन दोनों की
अक्षतैः	६. चावल	आनर्चुः	११. पूजा की
स उदपात्रैः	७. जल से भरे पात्र	प्रमुदिताः	३. आनन्द मग्न होकर
स्रक्	८. फूलों के हार	तत्र-तत्र	१. स्थान-स्थान पर
गन्धैः	९. चन्दन आदि से	द्विजातयः ॥	२. ब्राह्मण आदि ने
अभिउपायनैः ।	४. भेंट की सामग्रियों से		

श्लोकार्थ—स्थान-स्थान पर ब्राह्मण आदि ने आनन्दमग्न होकर भेंट की सामग्रियों दही, चावल, जल से भरे पात्र, फूलों के हार और चन्दन आदि—से उन दोनों की पूजा की ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

ऊचुः पौरा अहो गोप्यस्तपः किमचरन् महत् ।
या ह्येतावनुपश्यन्ति नरलोकमहोत्सवौ ॥३१॥

पदच्छेद—

ऊचुः पौराः अहो गोप्यःतपः किम्अचरन् महत् ।
याः हि एतौ अनुपश्यन्ति नरलोक महोत्सवौ ॥

शब्दार्थ—

ऊचुः	२. कहने लगे	महत् ।	५. महान्
पौराः	१. पुरवासी आपस में	याः हि	८. जो वे
अहो	३. अहा	एतौ	११. इन दोनों को
गोप्यः	४. गोपियों ने	अनुपश्यन्ति	१२. देखती रहती हैं
तपः किम्	६. कौन सी तपस्या	नरलोक	९. मनुष्य समूह को
अचरन्	७. की है	महोत्सवौ ॥	१०. परमानन्द देनेवाले

श्लोकार्थ—पुरवासी आपस में कहने लगे । अहा ! गोपियों ने कौन सी महान् तपस्या की है जो वे मनुष्य समूह को परमानन्द देनेवाले इन दोनों को देखती रहती हैं ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

रजकं कञ्चिदायान्तं रङ्गकारं गदाग्रजः ।
दृष्ट्वायाचत वासांसि धौतान्यत्युत्तमानि च ॥३२॥

पदच्छेद—

रजकम् कञ्चित् आयान्तम् रङ्गकारम् गदाग्रजः ।
दृष्ट्वा अयाचत वासांसि धौतानि अतिउत्तमानि च ॥

शब्दार्थ—

रजकम्	४. धोबी को	दृष्ट्वा	५. देखकर
कञ्चित्	२. किसी	अयाचत	११. मांगे
अयान्तम्	१. आते हुये	वासांसि	१०. वस्त्र
रङ्गकारम्	३. रंगरेज	धौतानि	७. धुले हुये
गदाग्रजः ।	६. श्रीकृष्ण ने (उनसे)	अतिउत्तमानि	९. अत्यन्त उत्तम
		च ॥	८. और

श्लोकार्थ—यहाँ पर आते हुये किसी रंगरेज धोबी को देखकर श्रीकृष्ण ने उससे धुले हुये और अत्यन्त उत्तम वस्त्र मांगे ॥

त्रयस्त्रिंश श्लोकः

देह्यावयोः समुचितान्यङ्ग वासांसि चार्हतोः ।
भविष्यति परं श्रेयो दातुस्ते नात्र संशयः ॥३३॥

पदच्छेद—

देहि आवयोः समुचितानि अङ्ग वासांसि च अर्हतोः ।
भविष्यति परम् श्रेयः दातुः ते न अत्र संशयः ॥

शब्दार्थ—

देहि	६.	दो (क्योंकि)	भविष्यति	९.	होगा
आवयोः	३.	हम दोनों को	परम् श्रेयः	८.	परम कल्याण
समुचितानि	४.	समुचित (बहुत ठीक और सुन्दर)	दातुः ते	७.	देने वाले तुम्हारा
अङ्ग	१.	हे भाई	न	१२.	नहीं है
वासांसि च	५.	वस्त्र	अत्र	१०.	इसमें
अर्हतोः ।	२.	वस्त्रों के योग्य	संशयः ॥	११.	सन्देह

श्लोकार्थ— हे भाई ! वस्त्रों के योग्य हम दोनों को समुचित, बहुत ठीक और सुन्दर वस्त्र दो । क्योंकि देने वाले तुम्हारा परम कल्याण होगा । इसमें सन्देह नहीं है ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

स याचितो भगवता परिपूर्णेन सर्वतः ।
साक्षेपं रुषितः प्राह भृत्यो राज्ञः सुदुर्मदः ॥३४॥

पदच्छेद—

सः याचितः भगवता परिपूर्णेन सर्वतः ।
स आक्षेपम् रुषितः प्राह भृत्यः राज्ञः सुदुर्मदः ॥

शब्दार्थ—

सः	६.	उस	स आक्षेपम्	१०.	आक्षेप के साथ
याचितः	४.	याचना करने पर	रुषितः	९.	क्रोध में भरकर
भगवता	३.	भगवान् के	प्राह	११.	कहा
परिपूर्णेन	२.	परिपूर्ण	भृत्यः	८.	सेवक ने
सर्वतः ।	१.	सब ओर से	राज्ञः	५.	राजा के
			सुदुर्मदः ॥	७.	मदमत्त

श्लोकार्थ—सब ओर से परिपूर्ण भगवान् के याचना करने पर राजा के उस मदमत्त सेवक ने क्रोध में भरकर आक्षेप के साथ कहा ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

ईदृशान्येव वासांसि नित्यं गिरिवनेचराः ।

परिधत्त किमुद्वृत्ता राजद्रव्याण्यभीप्सथ ॥३५॥

पदच्छेद— ईदृशानि एव वासांसि नित्यम् गिरि वनेचराः ।
परिधत्त किम् उद्वृत्ताः राज्य द्रव्याणि अभीप्सथ ॥

शब्दार्थ—

ईदृशानि	५.	ऐसे	परिधत्त	८.	धारण करते हो
एव	६.	ही	किम्	४.	क्या
वासांसि	७.	वस्त्र	उद्वृत्ताः	९.	उद्दण्डो ! जो तुम
नित्यम्	१.	नित्य	राज्य	१०.	राजा के
गिरि	२.	पहाड़ और	द्रव्याणि	११.	वस्त्रों को
वनेचराः ।	३.	जंगलों में रहने वाले तुम लोग	अभीप्सथ ॥	१२.	चाहते हो

श्लोकार्थ—नित्य पहाड़ और जङ्गलों में रहने वाले तुम लोग क्या ऐसे ही वस्त्र धारण करते हो । उद्दण्डो ! जो तुम राजा के वस्त्रों को चाहते हो ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

याताशु बालिशा मैवं प्रार्थ्यं यदि जिजीविषा ।

बध्नन्ति घ्नन्ति लुम्पन्ति दृप्तं राजकुलानि वै ॥३६॥

पदच्छेद— यात आशु बालिशाः मा एवम् प्रार्थ्यम् यदि जिजीविषा ।
बध्नन्ति घ्नन्ति लुम्पन्ति दृप्तम् राजकुलानि वै ॥

शब्दार्थ—

यात आशु	२.	शीघ्र चले जाओ	बध्नन्ति	१०.	बाँध देते हैं
बालिशाः	१.	हे मूर्खो !	घ्नन्ति	११.	मार डालते हैं (और)
मा	६.	मत करना	लुम्पन्ति	१२.	लूट लेते हैं
एवम्	४.	ऐसी	दृप्तम्	८.	उच्छृंखल व्यक्ति को
प्रार्थ्यम्	५.	प्रार्थना	राजकुलानि	७.	राजा के कर्मचारी
यदि जिजीविषा ।	३.	यदि जीने का इच्छा हो तो	वै ॥	९.	निश्चित रूप से

श्लोकार्थ—हे मूर्खो ! शीघ्र चले जाओ । यदि जीने की इच्छा हो तो ऐसी प्रार्थना मत करना । राजा के कर्मचारी उच्छृंखल व्यक्ति को निश्चित ही बाँध देते हैं, मार डालते हैं और लूट लेते हैं ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

एवं विकत्थमानस्य कुपितो देवकीसुतः ।
रजकस्य कराग्रेण शिरः कायादपातयत् ॥३७॥

पदच्छेद— एवम् विकत्थमानस्य कुपितः देवकी सुतः ।
रजकस्य कराग्रेण शिरः कायात् अपातयत् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	रजकस्य	३.	धोबी पर
विकत्थमानस्य	२.	बहक कर बातें करते हुये	कराग्रेण	७.	हाथ के अग्र भाग से
कुपितः	४.	क्रुद्ध हुये	शिरः	८.	उसके सिर को
देवकी	५.	देवकी के	कायात्	९.	धड़ से
सुतः ।	६.	पुत्र (श्रीकृष्ण) ने	अपातयत् ॥	१०.	अलग कर दिया

श्लोकार्थ—इस प्रकार बहक कर बातें करते हुये धोबी पर क्रुद्ध हुये देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण ने हाथ के अग्रभाग से उसके सिर को धड़ से अलग कर दिया ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

तस्यानुजीविनः सर्वे वासः कोशान् विसृज्य वै ।
दुद्रुवुः सर्वतो मार्गं वासांसि जगृहेऽच्युतः ॥३८॥

पदच्छेद— तस्य अनुजीविनः सर्वे वासः कोशान् विसृज्य वै ।
दुद्रुवुः सर्वतः मार्गम् वासांसि जगृहे अच्युतः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उसके	दुद्रुवुः	९.	भाग गये
अनुजीविनः	२.	अधीन कर्मचारी	सर्वतः	७.	सब ओर के
सर्वे	३.	सबके सब	मार्गम्	८.	मार्गों में
वासः	४.	कपड़ों के	वासांसि	१०.	उन वस्त्रों को
कोशान्	५.	गट्ठरों को	जगृहे	१२.	ले लिया
विसृज्य वै ।	६.	छोड़ कर	अच्युतः ॥	११.	भगवान् श्रीकृष्ण ने

श्लोकार्थ—उसके अधीन कर्मचारी सबके सब कपड़ों के गट्ठरों को छोड़ कर सब ओर के मार्गों में भाग गये । उन वस्त्रों को भगवान् श्रीकृष्ण ने ले लिया ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

वसित्वाऽऽत्मप्रिये वस्त्रे कृष्णः सङ्कर्षणस्तथा ।
शेषाण्यादत्त गोपेभ्यो विसृज्य भुवि कानिचित् ॥३९॥

पदच्छेद— वसित्वा आत्मप्रिये वस्त्रे कृष्णः सङ्कर्षणः तथा ।
शेषाणि आदत्त गोपेभ्यः विसृज्य भुवि कानिचित् ॥

शब्दार्थ—

वसित्वा	६.	पहन कर	शेषाणि	७.	बचे हुये वस्त्र
आत्मप्रिये	४.	अपने प्रिय	आदत्त	९.	दे दिये (और)
वस्त्रे	५.	वस्त्रों को	गोपेभ्यः	८.	ग्वाल वालों को
कृष्णः	१.	भगवान् श्रीकृष्ण	विसृज्य	१२.	छोड़ कर चल दिये
सङ्कर्षणः	३.	बलराम ने	भुवि	११.	भूमि पर ही
तथा ।	२.	और	कानिचित् ॥	१०.	कुछ

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण और बलराम ने अपने प्रिय वस्त्रों को पहन कर बचे हुये वस्त्र ग्वाल-वालों को दे दिये । और कुछ भूमि पर ही छोड़ कर चल दिये ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

ततस्तु वायकः प्रीतस्तयोर्वेषमकल्पयत् ।
विचित्रवर्णैश्चैलेयैराकल्पैरनुरूपतः ॥४०॥

पदच्छेद— ततः तु वायकः प्रीतः तयोः वेषम् अकल्पयत् ।
विचित्र वर्णैः चैलेयैः आकल्पैः अनुरूपतः ॥

शब्दार्थ—

ततः तु	१.	तदनन्तर	विचित्र	७.	जो अनेक
वायकः	२.	एक दर्जी ने	वर्णैः	८.	रङ्गों में
प्रीतः	३.	प्रसन्न होकर	चैलेयैः	९.	सुन्दर और
तयोः	४.	उन दोनों के	आकल्पैः	११.	लग रहा था
वेषम्	५.	ऐसा वेश	अनुरूपतः ॥	१०.	ठीक-ठीक
अकल्पयत् ।	६.	बना दिया			

श्लोकार्थ—तदनन्तर एक दर्जी ने प्रसन्न होकर उन दोनों के ऐसा वेश बना दिया । जो अनेक रङ्गों में सुन्दर और ठीक-ठीक लग रहा था ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

नानालक्षणवेषाभ्यां कृष्णरामौ विरेजतुः ।
स्वलङ्कृतौ बालगजौ पर्वणीव सितेतरौ ॥४१॥

पदच्छेद— नाना लक्षण वेषाभ्याम् कृष्ण रामौ विरेजतुः ।
सु अलङ्कृतौ बालगजौ पर्वणि इव सितेतरौ ॥

शब्दार्थ—

नाना	१.	अनेक	सु	११.	भली भाँति
लक्षण	२.	प्रकार के	अलङ्कृतौ	१२.	सजा दिये गये हों
वेषाभ्याम्	३.	वस्त्र धारण किये हुये	बालगजौ	१०.	गज शावक
कृष्ण	४.	कृष्ण और	पर्वणि	८.	उत्सव के समय
रामौ	५.	बलराम	इव	७.	जैसे
विरेजतुः ।	६.	विशेष रूप से ऐसे शोभित हुये	सितइतरौ ॥	९.	श्वेत और श्याम

श्लोकार्थ—अनेक प्रकार के वस्त्र धारण किये हुये कृष्ण और बलराम ऐसे शोभित हुये जैसे उत्सव के समय श्वेत और श्याम गज शावक सजा दिये गये हों ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

तस्य प्रसन्नो भगवान् प्रादात् सारूप्यमात्मनः ।
श्रियं च परमां लोके बलैश्वर्यस्मृतीन्द्रियम् ॥४२॥

पदच्छेद— तस्य प्रसन्नः भगवान् प्रादात् सारूप्यम् आत्मनः ।
श्रियम् च परमाम् लोके बल ऐश्वर्य स्मृति इन्द्रियम् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उस पर	च	११.	और
प्रसन्नः	२.	प्रसन्न होकर	परमाम्	५.	भरपूर
भगवान्	३.	भगवान् श्रीकृष्ण ने (उसे)	लोके	४.	इस लोक में
प्रादात्	१४.	दे दिया	बल	७.	बल
सारूप्यम्	१३.	सारूप्य मोक्ष	ऐश्वर्य	८.	ऐश्वर्य
आत्मनः ।	१२.	अपना	स्मृति	९.	स्मरण शक्ति
श्रियम्	६.	धन-सम्पत्ति	इन्द्रियम् ॥	१०.	इन्द्रिय शक्ति

श्लोकार्थ—उस पर प्रसन्न होकर भगवान् श्रीकृष्ण ने उसे इस लोक में भरपूर धन-सम्पत्ति, बल, ऐश्वर्य, स्मरण शक्ति, इन्द्रिय शक्ति और अपना सारूप्य मोक्ष दे दिया ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

तत: सुदाम्नो भवनं मालाकारस्य जग्मतुः ।
तौ दृष्ट्वा स समुत्थाय ननाम शिरसा भुवि ॥४३॥

पदच्छेद— ततः सुदाम्नः भवनम् मालाकारस्य जग्मतुः ।
तौ दृष्ट्वा सः समुत्थाय ननाम शिरसा भुवि ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर (दोनों भाई)	दृष्ट्वा	७.	देख कर
सुदाम्नः	२.	सुदामा	सः	८.	उसने
भवनम्	४.	घर	समुत्थाय	९.	उठ कर
मालाकारस्य	३.	माली के	ननाम	१२.	प्रणाम किया
जग्मतुः ।	५.	गये	शिरसा	११.	माथा टेक कर
तौ	६.	उन दोनों को	भुवि ॥	१०.	पृथ्वी पर

श्लोकार्थ—तदनन्तर दोनों भाई सुदामा माली के घर गये। उन दोनों को देख कर उसने उठ कर पृथ्वी पर माथा टेक कर प्रणाम किया ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

तयोरासनमानीय पाद्यं चार्घ्यार्हणादिभिः ।
पूजां सानुगयोश्चक्रे स्रक्ताम्बूलानुलेपनैः ॥४४॥

पदच्छेद— तयोः आसनम् आनीय पाद्यम् च अर्घ्य अर्हण आदिभिः ।
पूजाम् सः अनुगयोः चक्रे स्रक् ताम्बूल अनुलेपनैः ॥

शब्दार्थ—

तयोः	३.	उन दोनों के लिये	पूजाम्	१४.	उनकी पूजा
आसनम्	४.	आसन तथा	सः	२.	सहित
आनीय	६.	लाकर	अनुगयोः	१.	ग्वाल वालों सहित
पाद्यम्	५.	पैर धोने के लिये जल	चक्रे	१५.	की
च	७.	और	स्रक्	९.	पुष्प माला
अर्घ्यं	८.	अर्घ्य	ताम्बूल	१०.	पान तथा
अर्हण	१३.	सामग्रियों से	अनुलेपनैः ॥	११.	चन्दन
आदिभिः ।	१२.	आदि			

श्लोकार्थ—ग्वाल-वालों के सहित उन दोनों के लिये आसन तथा पैर धोने के लिये जल लाकर और अर्घ्य, पुष्प माला, पान तथा चन्दन आदि सामग्रियों से उनकी पूजा की ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

प्राह नः सार्थकं जन्म पावितं च कुलं प्रभो ।
पितृदेवर्षयो मह्यं तुष्टा ह्यागमनेन वाम् ॥४५॥

पदच्छेद— प्राह नः सार्थकम् जन्म पावितम् च कुलम् प्रभो ।
पितृ देवर्षयः मह्यम् तुष्टाः हि अगमनेन वाम् ॥

शब्दार्थ—

प्राह	१. उसने कहा	पितृ	९. पितर
नः	५. हमारा	देवर्षयः	१०. देवता और ऋषि
सार्थकम् जन्म	६. जन्म सुफल हो गया	मह्यम्	११. मुझ पर
पावितम् च	८. पवित्र कर दिया	तुष्टाः हि	१२. सन्तुष्ट हो गये
कुलम्	७. हमारे कुल को	अगमनेन	४. आने से
प्रभो ।	२. हे प्रभो !	वाम् ॥	३. आप दोनों के

श्लोकार्थ—उसने कहा है—प्रभो ! आप दोनों के आने से हमारा जन्म सफल हो गया, हमारे कुल को पवित्र कर दिया । पितर, देवता और ऋषि मुझ पर सन्तुष्ट हो गये ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

भवन्तौ किल विश्वस्य जगतः कारणं परम् ।
अवतीर्णाविहांशेन क्षेमाय च भवाय च ॥४६॥

पदच्छेद— भवन्तौ किल विश्वस्य जगतः कारणम् परम् ।
अवतीर्णौ इह अंशेन क्षेमाय च भवाय च ॥

शब्दार्थ—

भवन्तौ	१. आप दोनों	अवतीर्णौ	१२. अवतीर्ण हुये हैं
किल	२. निश्चित ही	इह	१०. यहाँ
विश्वस्य	३. सम्पूर्ण	अंशेन	११. अंशों के सहित
जगतः	४. जगत् के	क्षेमाय	७. संसार के कल्याण
कारणम्	६. कारण हैं	च	८. और
परम् ।	५. परम	भवाय च ॥	९. अभ्युदय के लिये

श्लोकार्थ—आप दोनों निश्चित ही सम्पूर्ण जगत् के परम कारण हैं । संसार के कल्याण और अभ्युदय के लिये यहाँ अंशों सहित अवतीर्ण हुये हैं ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

न हि वां विषमा दृष्टिः सुहृदोर्जगदात्मनोः ।
समयोः सर्वभूतेषु भजन्तं भजतोरपि ॥४७॥

पदच्छेद— न हि वाम् विषमा दृष्टिः सुहृदोः जगत् आत्मनोः ।
समयोः सर्व भूतेषु भजन्तम् भजतोः अपि ।।

शब्दार्थ—

न हि	१३	नहीं है	समयोः	९.	समभाव में स्थित
वाम्	१०.	आप दोनों की	सर्व	७.	सभी
विषमा	१२.	विषमता	भूतेषु	८.	प्राणियों में
दृष्टिः	११.	दृष्टि में	भजन्तम्	४.	भजन करने वालों के
सुहृदोः	२.	सुहृद् और	भजतोः	५.	भजते हुये
जगत्	१.	संसार के	अपि ।।	६.	भी
आत्मनोः ।	३.	आत्म स्वरूप (तथा)			

श्लोकार्थ—संसार के सुहृद् और आत्म स्वरूप तथा भजन करने वालों के भजते हुये भी सभी प्राणियों में समभाव में स्थित आप दोनों की दृष्टि में विषमता नहीं है ।

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

तावाज्ञापयतं भृत्यं किमहं करवाणि वाम् ।
पुंसोऽत्यनुग्रहो ह्येष भवद्भिर्यन्नियुज्यते ॥४८॥

पदच्छेद— तौ आज्ञापयतम् भृत्यम् किम् अहम् करवाणि वाम् ।
पुंसः अति अनुग्रहः हि एषः भवद्भिः यत् नियुज्यते ।।

शब्दार्थ—

तौ	१.	आप दोनों	पुंसः	८.	जीव पर
आज्ञापयतम्	३.	आज्ञा दें कि	अति	१०.	बड़ी
भृत्यम्	२.	इस दास को	अनुग्रहः	११.	कृपा है
किम्	६.	क्या (सेवा)	हि एषः	९.	यह आपकी
अहम्	४.	मैं	भवद्भिः	१३.	आप (उसे किसी कार्य में)
करवाणि	७.	करूँ	यत्	१२.	जो कि
वाम् ।	५.	आप दोनों की	नियुज्यते ।।	१४.	नियुक्त करते हैं

श्लोकार्थ—आप दोनों इस दास को आज्ञा दें कि मैं आप दोनों की क्या सेवा करूँ । जीव पर यह आप की बड़ी कृपा है जो आप उसे किसी कार्य में नियुक्त करते हैं ।।

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

इत्यभिप्रेत्य राजेन्द्र सुदामा प्रीतमानसः ।
शस्तैः सुगन्धैः कुसुमैर्माला विरचिता ददौ ॥४९॥

पदच्छेद— इति अभिप्रेत्य राजेन्द्र सुदामा प्रीत मानसः ।
शस्तैः सुगन्धैः कुसुमैः माला विरचिता ददौ ॥

शब्दार्थ—

इति	२. इस प्रकार	शस्तैः	७. उत्तम और
अभिप्रेत्य	३. अभिप्राय जान कर	सुगन्धैः	८. सुगन्धित
राजेन्द्र	१. हे राजेन्द्र !	कुसुमैः	९. पुष्पों से
सुदामा	६. सुदामा ने	माला	११. माला (उन्हें)
प्रीत	४. प्रसन्न	विरचिता	१०. बनायी गई
मानसः ।	५. चित्त	ददौ ॥	१२. पहनायी

श्लोकार्थ—हे राजेन्द्र ! इस प्रकार अभिप्राय जान कर प्रसन्न चित्त सुदामा ने उत्तम और सुगन्धित पुष्पों से बनाई गई माला उन्हें पहिनायी ॥

पञ्चाशः श्लोकः

ताभिः स्वलङ्कृतौ प्रीतौ कृष्णरामौ सहानुगौ ।
प्रणताय प्रपन्नाय ददतुर्वरदौ वरान् ॥५०॥

पदच्छेद— ताभिः सुअलङ्कृतौ प्रीतौ कृष्ण रामौ सह अनुगौ ।
प्रणताय प्रपन्नाय ददतुः वरदौ वरान् ॥

शब्दार्थ—

ताभिः	१. उन मालाओं से	प्रणताय	८. विनीत एवम्
सुअलङ्कृतौ	२. भली भाँति अलंकृत होने पर	प्रपन्नाय	९. शरणागत (सुदामा को)
प्रीतौ	३. प्रसन्न हुये	ददतुः	११. दिये
कृष्ण रामौ	७. कृष्ण और बलराम ने	वरदौ	६. वरदायक
सह	५. सहित	वरान् ॥	१०. वर
अनुगौ ।	४. ग्वाल वालों के		

श्लोकार्थ—उन मालाओं से भली-भाँति अलङ्कृत होने पर प्रसन्न हुये ग्वाल-वालों के सहित वरदायक कृष्ण और बलराम ने विनीत एवम् शरणागत सुदामा को वर दिये ॥

एकपञ्चाशः श्लोकः

सोऽपि वव्रेऽचलां भक्तिं तस्मिन्नेवाखिलात्मनि।
तद्भक्तेषु च सौहार्दं भूतेषु च दयां पराम्॥५१॥

पदच्छेद— सः अपि वव्रे अचलाम् भक्तिम् तस्मिन् एव अखिल आत्मनि।
तत् भक्तेषु च सौहार्दम् भूतेषु च दयाम् पराम्॥

शब्दार्थ—

सः अपि	१.	उस सुदामा ने भी	तत्	८.	उनके
वव्रे	१४.	माँगी	भक्तेषु	९.	भक्तों के प्रति
अचलाम्	५.	निश्चल	च	७.	और
भक्तिम्	६.	भक्ति	सौहार्दम्	१०.	सुहृद्भाव (तथा)
तस्मिन् एव	२.	उन्हीं	भूतेषु च	११.	प्राणियों के प्रति
अखिल	३.	सब के	दयाम्	१३.	दया
आत्मनि।	४.	आत्मा (भगवान् में)	पराम्॥	१२.	श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—उस सुदामा ने भी उन्हीं सबके आत्मा भगवान् में निश्चल भक्ति और उनके भक्तों के प्रति सुहृद्भाव तथा प्राणियों के प्रति श्रेष्ठ दया माँगी॥

द्विपञ्चाशः श्लोकः

इति तस्मै वरं दत्त्वा श्रियं चान्वयवर्धिनीम्।
बलमायुर्यशः कान्तिं निर्जगाम सहाग्रजः॥५२॥

पदच्छेद— इति तस्मै वरम् दत्त्वा श्रियम् च अन्वय वर्धिनीम्।
बलम् आयुः यशः कान्तिम् निर्जगाम सह अग्रजः॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	बलम्	६.	बल
तस्मै	२.	उसे	आयुः	७.	आयु
वरम् दत्त्वा	११.	वरदान देकर (भगवान्)	यशः	८.	यश
श्रियम्	५.	लक्ष्मी	कान्तिम्	१०.	कान्ति का
च	९.	और	निर्जगाम	१४.	चले गये
अन्वय	३.	वंश	सह	१३.	साथ
वर्धिनीम्।	४.	बढ़ाने वाली	अग्रजः॥	१२.	बलराम जी के

श्लोकार्थ—इस प्रकार उसे वंश बढ़ाने वाली लक्ष्मी, बल, आयु, यश और कान्ति का वरदान देकर भगवान् बलराम जी के साथ चले गये॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
पुरप्रवेशो नाम एकचत्वारिंशः अध्यायः॥४१॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

द्विचत्वारिंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—अथ व्रजन् राजपथेन माधवः स्त्रियं गृहीताङ्गविलेपभाजनम्।
विलोक्य कुब्जां युवतीं वराननां पप्रच्छ यान्तीं प्रहसन् रसप्रदः ॥१॥

पदच्छेद— अथ व्रजन् राजपथेन माधवः स्त्रियम् गृहीत अङ्ग विलेप भाजनम्।
विलोक्य कुब्जाम् युवतीम् वराननाम् पप्रच्छ यान्तीम् प्रहसन् रसप्रदः ।।

शब्दार्थ—अथ	१. इसके बाद	विलोक्य	१४. देख कर
व्रजन्	३. जाते हुये	कुब्जाम्	११. कुबड़ी
राजपथेन	२. राज मार्ग से	युवतीम्	१२. युवती
माधवः	५. भगवान् श्रीकृष्ण ने	वराननाम्	१०. उत्तम मुख वाली
स्त्रियम्	१३. स्त्री को	पप्रच्छ	१६. पूछा
गृहीत	८. लेकर	यान्तीम्	९. जाती हुई (एक)
अङ्ग विलेप	६. अङ्गों में लेप करने वाले	प्रहसन्	१५. हँसते हुये
भाजनम्।	७. चन्दन का पात्र	रसपदः ।।	४. रस देने वाले

श्लोकार्थ—इसके बाद राज मार्ग से जाते हुये रस देने वाले भगवान् श्रीकृष्ण ने अङ्गों में लेप करने वाले चन्दन का पात्र लेकर जाती हुई एक उत्तम मुख वाली कुबड़ी युवती स्त्री को देख कर हंसते हुये पूछा ।।

द्वितीयः श्लोकः

का त्वं वरोर्वेतदु हानुलेपनं कस्याङ्गने वा कथयस्व साधु नः।
देह्यावयोरङ्गविलेपमुत्तमं श्रेयस्ततस्ते न चिराद् भविष्यति ॥२॥

पदच्छेद— का त्वम् वरोरु एतत् उ ह अनुलेपनम् कस्य अङ्गने वा कथयस्व साधु नः।
देहि आवयोः अङ्ग विलेपम् उत्तमम् श्रेयः ततः ते न चिरात् भविष्यति ।।

शब्दार्थ का त्वम्	२. तुम कौन हो	देहि आवयोः	१२. हमें दे दो
वरोरु	१. हे सुन्दरि !	अङ्ग	९. अङ्गों का
तत् उह	५. यह	विलेपम्	११. लेप चन्दन
अनुलेपनम् कस्य	६. चन्दन किसका है	उत्तमम्	१०. उत्तम
अङ्गने	४. हे कल्याणी !	श्रेयः	१५. कल्याण
वा	३. अथवा	ततः ते	१३. इससे तुम्हारा
कथयस्व	८. बतला दो	न चिरात्	१४. शीघ्र
साधु नः।	७. हमें सच-सच	भविष्यति ।।	१६. होगा

श्लोकार्थ—हे सुन्दरि ! तुम कौन हो, अथवा हे कल्याणी ! यह चन्दन किसका है। हमें सच-सच बतला दो। अङ्गों का उत्तम लेप चन्दन हमें दे दो। इससे तुम्हारा शीघ्र कल्याण होगा ।।

तृतीयः श्लोकः

सैरन्ध्र्युवाच— दास्यस्म्यहं सुन्दर कंससम्मता त्रिवक्रनामा ह्यनुलेपकर्मणि ।
मद्भावितं भोजपतेरतिप्रियं विना युवां कोऽन्यतमस्तदर्हति ॥३॥

पदच्छेद— दासी अस्मि अहम् सुन्दर कंस सम्मता त्रिवक्रनामा हि अनुलेप कर्मणि ।
मत् भावितम् भोजपतेः अतिप्रियम् विना युवाम् कः अन्यतमः तत् अर्हति ॥

शब्दार्थ—

दासी अस्मि	८. दासी हूँ	मत् भावितम्	९. मेरे द्वारा तैयार किया हुआ चन्दन
अहम्	२. मैं	भोजपतेः	१०. कंस को
सुन्दर	१. हे सुन्दर !	अतिप्रियम्	११. अत्यन्त प्रिय है
कंस	६. कंस की	विना युवाम्	१२. बिना आप दोनों के
सम्मता	७. प्रिय	कः	१३. कौन
त्रिवक्रनामा	५. कुब्जा नाम की	अन्यतमः	१४. दूसरा
हि अनुलेप	३. चन्दन लगाने के	तत्	१५. इसके
कर्मणि ।	४. काम में	अर्हति ॥	१६. योग्य है

श्लोकार्थ-- हे सुन्दर ! मैं चन्दन लगाने के काम में कुब्जा नाम की कंस की प्रिय दासी हूँ । मेरे द्वारा तैयार किया हुआ चन्दन कंस को अत्यन्त प्रिय है । बिना आप दोनों के दूसरा कौन इसके योग्य है ॥

चतुर्थः श्लोकः

रूपपेशलमाधुर्यहसितालापवीक्षितैः ।
धर्षितात्मा ददौ सान्द्रमुभयोरनुलेपनम् ॥४॥

पदच्छेद— रूप पेशल माधुर्य हसित आलाप वीक्षितैः ।
धर्षित आत्मा ददौ सान्द्रम् उभयोः अनुलेपनम् ॥

शब्दार्थ—

रूप	१. भगवान् के सौन्दर्य	धर्षित	७. विह्वल
पेशल	२. सुकुमारता	आत्मा	८. आत्मा होकर कुब्जा ने
माधुर्य	३. मधुरता	ददौ	१२. दे दिया
हसित	४. हास्य	सान्द्रम्	१०. गाढ़ा
आलाप	५. आलाप और	उभयोः	९. दोनों को
वीक्षितैः ।	६ चितवन से	अनुलेपनम् ॥	११. अङ्गराग

श्लोकार्थ—भगवान् के सौन्दर्य, सुकुमारता, मधुरता, हास्य, आलाप और चितवन से विह्वल आत्मा होकर कुब्जा ने दोनों को गाढ़ा अङ्गराग दे दिया ॥

पञ्चमः श्लोकः

ततस्तावङ्गरागेण स्ववर्णेतरशोभिना ।
सम्प्राप्तपरभागेन शुशुभातेऽनुरञ्जितौ ॥५॥

पदच्छेद— ततः तौ अङ्गरागेण स्ववर्णं इतर शोभिना ।
सम्प्राप्त पर भागेन शुशुभाते अनुरञ्जितौ ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. तब	सम्प्राप्त	९. लगाने से
तौ	२. वे दोनों	पर	३. नाभि से ऊपर के
अङ्गरागेण	८. अङ्गराग	भागेन	४. भाग में
स्ववर्ण	५. अपने वर्ण से	शुशुभाते	११. सुशोभित हुये
इतर	६. भिन्न वर्ण की	अनुरञ्जितौ ॥	१०. अनुरञ्जित होकर
शोभिना ।	७. शोभा वाले (लाल-पीले रंग के)		

श्लोकार्थ—तब वे दोनों नाभि से ऊपर के भाग में अपने वर्ण से भिन्न वर्ण की शोभा वाले लाल-पीले रंग के अङ्गराग लगाने से अनुरञ्जित होकर सुशोभित हुये ॥

षष्ठः श्लोकः

प्रसन्नो भगवान् कुब्जां त्रिवक्रां रुचिराननाम् ।
ऋज्वीं कर्तुं मनश्चक्रे दर्शयन् दर्शने फलम् ॥६॥

पदच्छेद— प्रसन्नः भगवान् कुब्जाम् त्रिवक्राम् रुचिर आननाम् ।
ऋज्वीम् कर्तुम् मनः चक्रे दर्शयन् दर्शने फलम् ॥

शब्दार्थ—

प्रसन्नः	१. प्रसन्न हुये	ऋज्वीम्	९. सीधी
भगवान्	२. भगवान् ने (अपने)	कर्तुम्	१०. करने का
कुब्जाम्	८. कुब्जा को	मनः	११. विचार
त्रिवक्राम्	५. तीन जगह टेढ़ी	चक्रे	१२. किया
रुचिर	६. सुन्दर	दर्शयन्	४. दिखाने के लिये
आननम् ।	७. मुख वाली	दर्शने फलम् ॥	३. दर्शन करने का फल

श्लोकार्थ— प्रसन्न हुये भगवान् ने अपने दर्शन करने का फल दिखाने के लिये तीन जगह टेढ़ी, सुन्दर मुख वाली कुब्जा को सीधी करने का विचार किया ॥

सप्तमः श्लोकः

पद्भ्यामाक्रम्य प्रपदे द्व्यङ्गुल्युत्तानपाणिना ।
प्रगृह्य चुबुकेऽध्यात्ममुदनीनमदच्युतः ॥७॥

पदच्छेद— पद्भ्याम् आक्रम्य प्रपदे द्वि अङ्गुलि उत्तान पाणिना ।
प्रगृह्य चुबुके अध्यात्मम् उदनीनमत् अच्युतः ॥

शब्दार्थ—

पद्भ्याम्	२.	अपने पैरों से	प्रगृह्य	९.	लगायीं और उसके
आक्रम्य	४.	दबा कर	चुबुके	८.	उसकी ठोड़ी में
प्रपदे	३.	कुब्जा के पैर के दोनों पञ्जे	अध्यात्मम्	१०.	शरीर को
द्वि अङ्गुलि	७.	दो अंगुलियां	उदनीनमत्	११.	तनिक उचका दिया
उत्तान	६.	ऊँचा करके	अच्युतः ॥	१.	भगवान् श्रीकृष्ण ने
पाणिना ।	५.	हाथ			

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने पैरों से कुब्जा के पैर के पञ्जे दबा कर हाथ ऊँचा करके दो अंगुलियाँ उसकी ठोड़ी में लगायीं और उसके शरीर को तनिक उचका दिया ॥

अष्टमः श्लोकः

सा तदर्जुसमानाङ्गी बृहच्छ्रोणिपयोधरा ।
मुकुन्दस्पर्शनात् सद्यो बभूव प्रमदोत्तमा ॥८॥

पदच्छेद - सा तत् ऋजु समान अङ्गी बृहत् श्रोणि पयोधरा ।
मुकुन्द स्पर्शनात् सद्यः बभूव प्रमदा उत्तमा ॥

शब्दार्थ—

सा तत्	१.	वह	मुकुन्द	२.	भगवान् के
ऋजु	५.	सीधे और	स्पर्शनात्	३.	स्पर्श से
समान	६.	समान	सद्यः	४.	तुरन्त
अङ्गी बृहत्	७.	अङ्गोंवाली एवं विशाल	बभूव	१२.	हो गई
श्रोणि	८.	नितम्बों और	प्रमदा	११.	रमणी
पयोधरा ।	९.	कुचों वाली	उत्तमा ॥	१०.	श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—वह भगवान् के स्पर्श से तुरन्त सीधे और समान अङ्गों वाली एवं विशाल नितम्बों और कुचों वाली श्रेष्ठ रमणी हो गई ॥

नवमः श्लोकः

ततो रूपगुणौदार्यसम्पन्ना प्राह केशवम् ।
उत्तरीयान्तमाकृष्य स्मयन्ती जातहृच्छया ॥९॥

पदच्छेद— ततः रूप गुण औदार्य सम्पन्ना प्राह केशवम् ।
उत्तरीय अन्तम् आकृष्य स्मयन्ती जात हृच्छया ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	उत्तरीय	७.	दुपट्टे का
रूप गुण	२.	सौन्दर्य-गुण और	अन्तम्	८.	छोर
औदार्य	३.	उदारता से	आकृष्य	९.	खींच कर (और)
सम्पन्ना	४.	समान (तथा)	स्मयन्ती	१०.	मुस्कराती हुई
प्राह	१२.	कहा	जात	५.	मिलन की
केशवम् ।	११.	श्रीकृष्ण से	हृच्छया ॥	६.	इच्छा वाली कुब्जा ने

श्लोकार्थ—तदनन्तर सौन्दर्य, गुण और उदारता से सम्पन्न तथा मिलन की इच्छा वाली कुब्जा ने दुपट्टे का छोर खींच कर मुसकराती हुई श्रीकृष्ण से कहा ॥

दशमः श्लोकः

एहि वीर गृहं यामो न त्वां त्यक्तुमिहोत्सहे ।
त्वयोन्मथितचित्तायाः प्रसीद पुरुषर्षभ ॥१०॥

पदच्छेद— एहि वीर गृहम् यामः न त्वाम् त्यक्तुम् इह उत्सहे ।
त्वया उन्मथित चित्तायाः प्रसीद पुरुष ऋषभ ॥

शब्दार्थ—

एहि वीर	१.	हे वीर ! आइये	त्वया	९.	आप के द्वारा
गृहम् यामः	२.	घर चलें (मैं)	उन्मथित	१०.	मथे गये
न	५.	नहीं	चित्तायाः	११.	चित्त वाली मुझ पर
त्वाम्	३.	आप को	प्रसीद	१२.	प्रसन्न होइये
त्यक्तुम् इह	४.	यहाँ छोड़	पुरुष	७.	हे पुरुष
उत्सहे ।	६.	सकती	ऋषभ ॥	८.	श्रेष्ठ !

श्लोकार्थ—हे वीर ! आइये घर चलें । मैं आप को यहाँ नहीं छोड़ सकती । हे पुरुष श्रेष्ठ ! आप के द्वारा मथे गये चित्त वाली मुझ पर प्रसन्न होइये ॥

एकादशः श्लोकः

एवं स्त्रिया याच्यमानः कृष्णो रामस्य पश्यतः ।

मुखं वीक्ष्यानुगानां च प्रहसंस्तामुवाच ह ॥११॥

पदच्छेद— एवम् स्त्रिया याच्यमानः कृष्णः रामस्य पश्यतः ।

मुखम् वीक्ष्य अनुगानाम् च प्रहसन् ताम् उवाच ह ॥

शब्दार्थ—

एवम्	३.	इस प्रकार	मुखम्	८.	मुख की ओर
स्त्रिया	४.	स्त्री के द्वारा	वीक्ष्य	९.	देख कर
याच्यमानः	५.	प्रार्थना करने पर	अनुगानाम् च	७.	साथी ग्वाल वालों के
कृष्णः	६.	भगवान् श्रीकृष्ण ने	प्रहसन्	१०.	हंसते हुये
रामस्य	१.	बलराम जी के	ताम्	११.	उससे
पश्यतः ।	२.	सामने ही	उवाच ह ॥	१२.	कहा

श्लोकार्थ—बलराम जी के सामने ही इस प्रकार स्त्री के द्वारा प्रार्थना करने पर भगवान् श्रीकृष्ण ने साथी ग्वाल वालों के मुंह की ओर देख कर हंसते हुये उससे कहा ॥

द्वादशः श्लोकः

एष्यामि ते गृहं सुभ्रूः पुंसामाधिविकर्शनम् ।

साधितार्थोऽगृहाणां नः पान्थानां त्वं परायणम् ॥१२॥

पदच्छेद— एष्यामि ते गृहम् सुभ्रूः पुंसाम् आधि विकर्शनम् ।

साधित अर्थः अगृहाणाम् नः पान्थानाम् त्वम् परायणम् ॥

शब्दार्थ—

एष्यामि	६.	आऊँगा	साधित	३.	सिद्ध हो जाने पर
ते	४.	तुम्हारे	अर्थः	२.	कार्य
गृहम्	५.	घर	अगृहाणाम्	११.	गृहविहीन
सुभ्रूः	१.	हे सुन्दरी !	नः	१०.	हम जैसे
पुंसाम्	७.	पुरुषों की	पन्थानाम्	१२.	बटोहियों के लिये
आधि	८.	मानसिक व्याधि	त्वम्	१३.	तुम्हारा ही
विकर्शनम् ।	९.	मिटाने वाली	परायणम् ॥	१४.	सहारा है ॥

श्लोकार्थ—हे सुन्दरी ! कार्य सिद्ध हो जाने पर तुम्हारे घर आऊँगा । पुरुषों की मानसिक व्याधि मिटाने वाली हम जैसे गृह विहीन बटोहियों के लिये तुम्हारा ही सहारा है ॥

त्रयोदशः श्लोकः

विसृज्य माध्व्या वाण्या तां व्रजन् मार्गे वणिक्पथैः ।
नानोपायनताम्बूलस्रग्गन्धैः साग्रजोऽर्चितः ॥१३॥

पदच्छेद— विसृज्य माध्व्या वाण्या ताम् व्रजन् मार्गे वणिक्पथैः ।
नाना उपायन ताम्बूल स्रक् गन्धैः स अग्रजः अर्चितः ॥

शब्दार्थ—

विसृज्य	४.	बिदा किया और	नाना	९.	अनेक
माध्व्या	१.	मीठी-मीठी	उपायन	१०.	उपहार
वाण्या	२.	बातों से	ताम्बूल	११.	पान
ताम्	३.	उसे	स्रक्	१२.	माला
व्रजन्	६.	जाते हुये	गन्धैः	१३.	चन्दन आदि से
मार्गे	५.	मार्ग में	स अग्रजः	७.	बलराम जी के साथ श्रीकृष्ण का
वणिक्पथैः ।	८.	व्यापारियों ने	अर्चितः ॥	१४.	पूजन किया

श्लोकार्थ—भगवान् ने मीठी-मीठी बातों से उसे बिदा किया और मार्ग में जाते हुये बलराम जी के श्रीकृष्ण का व्यापारियों ने अनेक उपहार पान, माला, चन्दन आदि से पूजन किया ॥

चतुर्दशः श्लोकः

तद्दर्शनस्मरक्षोभादात्मानं नाविदन् स्त्रियः ।
विस्रस्तवासःकबरवलयालेख्यमूर्तयः ॥१४॥

पदच्छेद— तत् दर्शन स्मरक्षोभात् आत्मानम् न अविदन् स्त्रियः ।
विस्रस्त वासः कबर वलय आलेख्य मूर्तयः ॥

शब्दार्थ—

तत्	१.	उनके	विस्रस्त	१०.	ढीले पड़ जाते थे तथा
दर्शन	२.	दर्शन से (उत्पन्न)	वासः	७.	उनके वस्त्र
स्मरक्षोभात्	३.	काम वेग के कारण	कबर	८.	जूड़े
आत्मानम् न	५.	अपने को नहीं	वलय	९.	और कंगन
अविदन्	६.	जानती थीं	आलेख्य	११.	वे चित्र लिखित
स्त्रियः ।	४.	स्त्रियाँ	मूर्तयः ॥	१२.	मूर्तियों के समान हो जाती थीं

श्लोकार्थ—उनके दर्शन से उत्पन्न काम वेग के कारण स्त्रियाँ अपने को नहीं जानती थीं । उनके वस्त्र, जूड़े और कंकन ढीले पड़ जाते थे । तथा वे चित्र लिखित मूर्तियों के समान हो जाती थीं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

ततः पौरान् पृच्छमानो धनुषः स्थानमच्युतः ।
तस्मिन् प्रविष्टो ददृशे धनुरैन्द्रमिवाद्भुतम् ॥१५॥

पदच्छेद— ततः पौरान् पृच्छमानः धनुषः स्थानम् अच्युतः ।
तस्मिन् प्रविष्टः ददृशे धनुः ऐन्द्रम् इव अद्भुतम् ॥

शब्दार्थ —

ततः	१.	तदनन्तर	तस्मिन्	७.	वहाँ
पौरान्	३.	पुरवासियों से	प्रविष्टः	८.	पहुँचे (उन्होंने)
पृच्छमानः	६.	पूछते हुये	ददृशे	१२.	देखा
धनुषः	४.	धनुषयज्ञ का	धनुः	११.	धनुष
स्थानम्	५.	स्थान	ऐन्द्रम्	६.	इन्द्रधनुष के
अच्युतः ।	२.	भगवान् श्रीकृष्ण	इव अद्भुतम् ॥	१०.	समान एक अद्भुत

श्लोकार्थ—तदनन्तर भगवान् श्रीकृष्ण पुरवासियों से धनुषयज्ञ का स्थान पूछते हुये वहाँ पहुँचे । उन्होंने इन्द्रधनुष के समान एक अद्भुत धनुष देखा ॥

षोडशः श्लोकः

पुरुषैर्बहुभिर्गुप्तमर्चितं परमर्द्धिमत् ।
वार्यमाणो नृभिः कृष्णः प्रसह्य धनुराददे ॥१६॥

पदच्छेद— पुरुषैः बहुभिः गुप्तम् अर्चितम् परम् ऋद्धिमत् ।
वार्यमाणः नृभिः कृष्णः प्रसह्य धनुः आददे ॥

शब्दार्थ—

पुरुषैः	२.	पुरुषों द्वारा	वार्यमाणः	८.	रोके जाने पर भी
बहुभिः	१.	वह धनुष बहुत से	नृभिः	७.	लोगों द्वारा
गुप्तम्	३.	सुरक्षित	कृष्णः	९.	श्रीकृष्ण ने
अर्चितम्	४.	पूजित (तथा)	प्रसह्य	१०.	बल पूर्वक उस
परम	५.	महान्	धनुः	११.	धनुष को
ऋद्धिमत् ।	६.	व्यय से तैयार हुआ था	आददे ॥	१२.	उठा लिया

श्लोकार्थ—वह धनुष बहुत से पुरुषों द्वारा सुरक्षित, पूजित तथा महान् व्यय से तैयार हुआ था । लोगों द्वारा रोके जाने पर भी श्रीकृष्ण ने बल पूर्वक उस धनुष को उठा लिया ॥

सप्तदशः श्लोकः

करेण वामेन सलीलमुद्धृतं सज्यं च कृत्वा निमिषेण पश्यताम्।
नृणां विकृष्य प्रबभञ्ज मध्यतो यथेक्षुदण्डं मदकर्युरुक्रमः ॥१७॥

पदच्छेद— करेण वामेन सलीलम् उद्धृतम् सज्यम् च कृत्वा निमिषेण पश्यताम्।
नृणाम् विकृष्य प्रबभञ्ज मध्यतः यथा इक्षुदण्डम् मदकरी उरुक्रमः ॥

शब्दार्थ—

करेण	२. हाथ से	नृणाम्	७. लोगों के
वामेन	१. श्रीकृष्ण ने बाँयें	विकृष्य	१०. खींच कर
सलीलम्	३. लीला पूर्वक उसे	प्रबभञ्ज	१२. तोड़ डाला
उद्धृतम्	४. उठाया	मध्यतः	११. बीचो-बीच से (उसी प्रकार)
सज्यम् च	५. और उस पर डोरी	यथा	१३. जैसे
कृत्वा	६. चढ़ा कर	इक्षुदण्डम्	१६. ईख को तोड़ डालता है
निमिषेण	९. क्षण भर में	मदकरी	१५. मतवाला हाथी
पश्यताम्।	८. देखते-देखते	उरुक्रमः ॥	१४. बलवान्

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने बाँयें हाथ से लीला पूर्वक उसे उठाया और उस पर डोरी चढ़ा कर लोगों के देखते-देखते क्षण भर में खींच कर बीचो-बीच से उसी प्रकार तोड़ डाला, जैसे बलवान् मतवाला हाथी ईख को तोड़ डालता है ॥

अष्टादशः श्लोकः

धनुषो भज्यमानस्य शब्दः खं रोदसी दिशः।
पूरयामास यं श्रुत्वा कंसस्त्रासमुपागमत् ॥१८॥

पदच्छेद— धनुषः भज्यमानस्य शब्दः खम् रोदसी दिशः।
पूरयामास यम् श्रुत्वा कंसः त्रासम् उपागमत् ॥

शब्दार्थ—

धनुषः	२. धनुष के	पूरयामास	७. भर गई
भज्यमानस्य	१. टूटते हुये	यम्	८. जिसे
शब्दः	३. शब्द से	श्रुत्वा	९. सुन कर
खम्	४. आकाश	कंसः	१०. कंस
रोदसी	५. पृथ्वी और	त्रासम्	११. भयभीत
दिशः।	६. दिशायें	उपागमत् ॥	१२. हो गया।

श्लोकार्थ—टूटते हुये धनुष के शब्द से आकाश, पृथ्वी और दिशायें भर गईं। जिसे सुन कर कंस भयभीत हो गया ॥

एकोनविंशः श्लोकः

तद्रक्षिणः सानुचराः कुपिता आततायिनः ।
ग्रहीतुकामा आवव्रुर्गृह्यतां बध्यतामिति ॥१९॥

पदच्छेद— तत् रक्षिणः स अनुचराः कुपिताः आततायिनः ।
ग्रहीतुकामाः आवव्रुः गृह्यताम् बध्यताम् इति ॥

शब्दार्थ—

तत्	१. उसके	ग्रहीतु	६. श्रीकृष्ण को पकड़ लेने की
रक्षिणः	२. रक्षक	कामाः	७. इच्छा से
स अनुचराः	४. सहायकों के साथ	आवव्रुः	८. घेर लिया (और)
कुपिताः	५. क्रुद्ध होकर	गृह्यताम्	९. पकड़ लो
आततायिनः ।	३. आततायी असुरों ने	बध्यताम्	१०. बाँध लो
		इति ॥	११. इस प्रकार चिल्लाया

श्लोकार्थ—उसके रक्षक आततायी असुरों ने सहायकों के साथ क्रुद्ध होकर श्रीकृष्ण को पकड़ लेने की इच्छा से घेर लिया । और पकड़ लो, बाँध लो इस प्रकार चिल्लाया ॥

विंशः श्लोकः

अथ तान् दुरभिप्रायान् विलोक्य बलकेशवौ ।
क्रुद्धौ धन्वन आदाय शकले तांश्च जघ्नतुः ॥२०॥

पदच्छेद— अथ तान् दुरभि प्रायान् विलोक्य बल केशवौ ।
क्रुद्धौ धन्वनः आदाय शकले तान् च जघ्नतुः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१. तदनन्तर	क्रुद्धौ	७. क्रोधित हो गये
तान्	२. उनका	धन्वनः	८. धनुष के
दुरभिप्रायान्	३. दुष्ट अभिप्राय	आदाय	१०. लेकर
विलोक्य	४. जान कर	शकले	९. टुकड़े
बल	५. बलराम और	तान् च	११. उन्हें
केशवौ ।	६. श्रीकृष्ण	जघ्नतुः ॥	१२. मार डाला

श्लोकार्थ—तदनन्तर उनका अभिप्राय जान कर बलराम और श्रीकृष्ण क्रोधित हो गये । तथा धनुष के टुकड़े लेकर उन्हें मार डाला ॥

एकविंशः श्लोकः

बलं च कंसप्रहितं हत्वा शालामुखात्ततः ।
निष्क्रम्य चेरतुर्हृष्टौ निरीक्ष्य पुरसम्पदः ॥२१॥

पदच्छेद— बलम् च कंस प्रहितम् हत्वा शालामुखात् ततः ।
निष्क्रम्य चेरतुः हृष्टौ निरीक्ष्य पुर सम्पदः ॥

शब्दार्थ—

बलम् च	४.	सेना को भी	निष्क्रम्य	७.	निकल कर
कंस	२.	कंस का	चेरतुः	१२.	विचरने लगे
प्रहितम्	३.	भेजी गई	हृष्टौ	८.	हर्षित होकर (दोनों भाई)
हत्वा	५.	मार कर	निरीक्ष्य	११.	देखते हुये
शालामुखात्	६.	यज्ञ शाला के प्रधान द्वार से	पुर	९.	नगर की
ततः ।	१.	पश्चात्	सम्पदः ॥	१०.	शोभा को

श्लोकार्थ—पश्चात् कंस की भेजी गई सेना को भी मार कर यज्ञ शाला के प्रधान द्वार से निकल कर हर्षित होकर दोनों भाई नगर की शोभा देखते हुये विचरने लगे ॥

द्वाविंशः श्लोकः

तयोस्तदद्भुतं वीर्यं निशाम्य पुरवासिनः ।
तेजः प्रागल्भ्यं रूपं च मेनिरे विबुधोत्तमौ ॥२२॥

पदच्छेद— तयोः तत् अद्भुतम् वीर्यम् निशाम्य पुर वासिनः ।
तेजः प्रागल्भ्यम् रूपम् च मेनिरे विबुध उत्तमौ ॥

शब्दार्थ—

तयोः	३.	उन दोनों का	तेजः	७.	तेज
तत्	४.	वह	प्रागल्भ्यम्	८.	साहस
अद्भुतम्	५.	अद्भुत	रूपम्	१०.	रूप
वीर्यम्	६.	पराक्रम	च	९.	और
निशाम्य	११.	सुन कर	मेनिरे	१४.	माना
पुर	१.	नगर	विबुध	१३.	देवता
वासिनः ।	२.	निवासियों ने	उत्तमौ ॥	१२.	(उन्हें) श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—नगर निवासियों ने उन दोनों का वह अद्भुत पराक्रम, तेज, साहस और रूप सुन कर उन्हें श्रेष्ठ देवता माना ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

तयोर्विचरतोः स्वैरमादित्योऽस्तमुपेयिवान् ।
कृष्णरामौ वृतौ गोपैः पुराच्छकटमीयतुः ॥२३॥

पदच्छेद— तयोः विचरतोः स्वैरम् आदित्यः अस्तम् उपेयिवान् ।
कृष्ण रामौ वृतौ गोपैः पुरात् शकटम् ईयतुः ॥

शब्दार्थ—

तयोः	१. उन दोनों के	कृष्ण	९. कृष्ण और
विचरतोः	३. विचरण करते हुये	रामौ	१०. बलराम
स्वैरम्	२. स्वेच्छा पूर्वक	वृतौ	८. घिरे हुये
आदित्यः	४. सूर्य	गोपैः	७. ग्वाल-बालों से
अस्तम्	५. अस्त	पुरात्	११. नगर से बाहर
उपेयिवान् ।	६. हो गये (तब)	शकटम्	१२. अपने छकड़े के पास
		ईयतुः ॥	१३. चले गये

श्लोकार्थ—उन दोनों के स्वेच्छा पूर्वक विचरण करते हुये सूर्य अस्त हो गये । तब ग्वाल-बालों से घिरे हुये कृष्ण और बलराम नगर से बाहर अपने छकड़े के पास चले गये ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

गोप्यो मुकुन्दविगमे विरहातुरा या आशासताशिष ऋता मधुपुर्यभूवन् ।
सम्पश्यतां पुरुषभूषणगात्रलक्ष्मीं हित्वेतरान् नु भजतश्चकमेऽयनं श्रीः ॥२४॥

पदच्छेद— गोप्यः मुकुन्द विगमे विरह आतुरा याः आशासत आशिषः ऋताः मधुपुरि अभूवन् ।
सम्पश्यताम् पुरुष भूषण गात्रलक्ष्मीम् हित्वा इतरान् नु भजतः चकमे अयनम् श्रीः ॥

शब्दार्थ—

गोप्यः	३. गोपियों ने	सम्पश्यतम्	९. देखते हुये लोगों के लिये
मुकुन्द विगमे	१. श्रीकृष्ण की यात्रा के समय	पुरुष भूषण	७. पुरुष भूषण भगवान् के
विरह आतुराः	२. विरह से आतुर हो कर	गात्रलक्ष्मीम्	८. अङ्गों की शोभा को
याः आशासत	४. जो कही थीं वे	हित्वा	१५. छोड़ कर (चाहा और अपना)
आशिषः	५. बातें	इतरान्	१४. दूसरों को
ऋताः	१० सत्य सिद्ध	नु भजत	१३. चाहते हुये
मधुपुरि	६. मथुरा में	चकमे अयनम्	१६. निवास स्थान बना लिया
अभूवन् ।	११. हुई (जिन भगवान् को)	श्रीः ॥	१२. लक्ष्मी ने

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण की यात्रा के समय विरह से आतुर होकर गोपियों ने जो बातें कही थीं वे मथुरा में पुरुष भूषण भगवान् के अङ्गों को शोभा को देखते हुये लोगों के लिये सत्य सिद्ध हुई । जिन भगवान् को लक्ष्मी ने चाहते हुये दूसरों को छोड़ कर चाहा और निवास-स्थान बना लिया ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

अवनिक्ताङ्घ्रियुगलौ भुक्त्वा क्षीरोपसेचनम् ।
ऊषतुस्तां सुखं रात्रिं ज्ञात्वा कंसचिकीर्षितम् ॥२५॥

पदच्छेद— अवनिक्त अङ्घ्रि युगलौ भुक्त्वा क्षीर उपसेचनम् ।
ऊषतुः ताम् सुखम् रात्रिम् ज्ञात्वा कंस चिकीर्षितम् ॥

शब्दार्थ—

अवनिक्त	३. धोकर	ऊषतुः	१३. निवास किया
अङ्घ्रि	२. पैर	ताम्	१०. उस
युगलौ	१. दोनों	सुखम्	१२. सुख से
भुक्त्वा	६. भोजन करके	रात्रिम्	११. रात्रि में वहीं
क्षीर	४. दूध से बने हुये	ज्ञात्वा	९. जान कर
उपसेचनम् ।	५. पदार्थ	कंस	७. कंस के
		चिकीर्षितम् ॥	८. करने की इच्छा को

श्लोकार्थ—दोनों पैर धोकर दूध से बने हुये पदार्थ भोजन करके कंस के करने की इच्छा को जान कर उस रात्रि वहीं सुख से निवास किया ॥

षड्विंशः श्लोकः

कंसस्तु धनुषो भङ्गं रक्षिणां स्वबलस्य च ।
वधं निशम्य गोविन्दरामविक्रीडितं परम् ॥२६॥

पदच्छेद— कंसः तु धनुषः भङ्गम् रक्षिणाम् स्वबलस्य च ।
वधम् निशम्य गोविन्द राम विक्रीडितम् परम् ॥

शब्दार्थ—

कंसः तु	१. कंस तो	वधम्	७. वध
धनुषः	२. धनुष का	निशम्य	८. सुन कर (डर गया) जो
भङ्गम्	३. तोड़ना	गोविन्द	९. श्रीकृष्ण और
रक्षिणाम्	५. रक्षकों (तथा)	राम	१०. बलराम के लिये
स्वबलस्य	६. अपनी सेना का	विक्रीडितम्	१२. खिलवाड़ था
च ।	४. और	परम् ॥	११. केवल एक

श्लोकार्थ—कंस तो धनुष का तोड़ना और रक्षकों तथा अपनी सेना का बध सुन कर डर गया । जो श्रीकृष्ण और बलराम के लिये केवल एक खिलवाड़ था ॥

सप्तविंशः श्लोकः

दीर्घप्रजागरो भीतो दुर्निमित्तानि दुर्मतिः ।
बहून्यचष्टोभयथा मृत्योर्दौत्यकराणि च ॥२७॥

पदच्छेद— दीर्घ प्रजागरः भीतः दुर्निमित्तानि दुर्मतिः ।
बहूनि अचष्ट उभयथा मृत्योः दौत्यकराणि च ॥

शब्दार्थ—

दीर्घ	३.	बहुत देर तक	बहूनि	९.	बहुत से
प्रजागरः	४.	जागता रहा	अचष्ट	११.	हुये
भीतः	१.	डरा हुआ	उभयथा	६.	जाग्रत्-स्वप्न दोनों अवस्था में
दुर्निमित्तानि	१०.	अपशकुन	मृत्योः	७.	मृत्यु के
दुर्मतिः ।	२.	दुर्बुद्धि (कंस)	दौत्यकराणि	८.	सूचक
			च ॥	५.	और (उसे)

श्लोकार्थ—डरा हुआ कंस बहुत देर तक जागता रहा । और उसे जाग्रद्, स्वप्न अवस्था में मृत्यु के सूचक बहुत से अपशकुन हुये ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

अदर्शनं स्वशिरसः प्रतिरूपे च सत्यपि ।
असत्यपि द्वितीये च द्वैरूप्यं ज्योतिषां तथा ॥२८॥

पदच्छेद— अदर्शनम् स्व शिरसः प्रतिरूपे च सति अपि ।
असति अपि द्वितीये च द्वैरूप्यम् ज्योतिषाम् तथा ॥

शब्दार्थ—

अदर्शनम्	६.	दिखाई नहीं देता था	असति	१०.	नहीं रहने पर
स्व	४.	अपना	अपि	११.	भी
शिरसः	५.	सिर	द्वितीये च	९.	दूसरे रूप के
प्रतिरूपे	२.	जल आदि में परछांई	द्वैरूप्यम्	१२.	दो रूप दिखाई देते थे
च	१.	और (कंस को)	ज्योतिषाम्	८.	ज्योतियों के
सति अपि ।	३.	पड़ने पर भी	तथा ॥	७.	और

श्लोकार्थ—और कंस को जल आदि में परछांई पड़ने पर भी अपना सिर दिखाई नहीं देता था । और ज्योतियों के दूसरे रूप के नहीं रहने पर भी दो रूप दिखाई देते थे ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

छिद्रप्रतीतिश्छायायां प्राणघोषानुपश्रुतिः ।
स्वर्णप्रतीतिर्वृक्षेषु स्वपदानामदर्शनम् ॥२९॥

पदच्छेद— छिद्र प्रतीतिः छायायाम् प्राण-घोष अनुप श्रुतिः ।
स्वर्ण प्रतीतिः वृक्षेषु स्व पदानाम् अदर्शनम् ॥

शब्दार्थ—

छिद्र	२.	छिद्र	स्वर्ण	८.	सोने की
प्रतीतिः	३.	दिखाई पड़ता था	प्रतीतिः	९.	प्रतीति होती थी (तथा)
छायायाम्	१.	छाया में	वृक्षेषु	७.	वृक्षों में
प्राण-घोष	४.	प्राणों का शब्द	स्व	१०.	कीचड़ आदि में अपने
अनुप	५.	नहीं	पदानाम्	११.	पैरों के
श्रुतिः ।	६.	सुनाई देता था	अदर्शनम् ॥	१२.	चिह्न नहीं दिखाई पड़ते थे

श्लोकार्थ—छाया में छिद्र दिखाई पड़ता था। प्राणों का शब्द नहीं सुनाई देता था। और वृक्षों में सोने की प्रतीति होती थी तथा कीचड़ आदि में अपने पैरों के चिह्न नहीं दिखाई पड़ते थे ॥

त्रिंशः श्लोकः

स्वप्ने प्रेतपरिष्वङ्गः खरयानं विषादनम् ।
यायान्नलदमाल्येकस्तैलाभ्यक्तो दिगम्बरः ॥३०॥

पदच्छेद— स्वप्ने प्रेत परिष्वङ्गः खर यानम् विषादनम् ।
यायात् नलद माली एकः तैलाभ्यक्तः दिगम्बरः ॥

शब्दार्थ—

स्वप्ने	१.	उसने स्वप्न में	यायात्	१०.	जाना
प्रेत	२.	प्रेतों का	नलद	७.	अड़हुल फूल की
परिष्वङ्गः	३.	आलिङ्गन	माली	८.	माला पहने
खर	४.	गधे की	एकः	९.	अकेले
यानम्	५.	सवारी	तैलाभ्यक्तः	१२.	तैल से तर शरीर को देखा
विषादनम् ।	६.	विष खाता हुआ (तथा)	दिगम्बरः ॥	११.	नग्न तथा

श्लोकार्थ—उसने स्वप्न में प्रेतों का आलिंगन, गधे की सवारी, विष खाता हुआ तथा अड़हुल फूल की माला पहने अकेले जाना नग्न तथा तैल से तर शरीर को देखा ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

अन्यानि चेत्थंभूतानि स्वप्नजागरितानि च ।
पश्यन् मरणसन्त्रस्तो निद्रां लेभे न चिन्तया ॥३१॥

पदच्छेद— अन्यानि च इत्थम् भूतानि स्वप्न जागरितानि च ।
पश्यन् मरण संत्रस्तः निद्राम् लेभे न चिन्तया ॥

शब्दार्थ—

अन्यानि	५. और	पश्यन्	७. देखता हुआ वह
च	६. भी (स्वप्न)	मरण	८. मृत्यु से बहुत
इत्थम् भूतानि	४. इस प्रकार के	संत्रस्तः	९. डर गया
स्वप्न	१. स्वप्न	निद्राम्	११. नींद
जागरितानि	३. जाग्रत् अवस्था में	लेभे न	१२. नहीं आई
च ।	२. और	चिन्तया ॥	१०. चिन्ता के कारण उसे

श्लोकार्थ—स्वप्न और जाग्रत् अवस्था में इस प्रकार के और भी स्वप्न देखता हुआ वह डर गया । चिन्ता के कारण उसे नींद नहीं आयो ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

व्युष्टायां निशि कौरव्य सूर्ये चाद्भ्यः समुत्थिते ।
कारयामास वै कंसो मल्लक्रीडामहोत्सवम् ॥३२॥

पदच्छेद— व्युष्टायाम् निशि कौरव्य सूर्ये च अद्भ्यः समुत्थिते ।
कारयामास वै कंसः मल्ल क्रीडा महोत्सवम् ॥

शब्दार्थ—

व्युष्टायाम्	३. बीत जाने पर	कारयामास	१२. कराया
निशि	२. रात्रि के	वै	८. निश्चित रूप से
कौरव्य	१. हे परीक्षित् !	कंसः	७. कंस ने
सूर्ये च	४. और सूर्य नारायण के	मल्ल	९. मल्ल
अद्भ्यः	५. पूर्व में समुद्र से	क्रीडा	१०. क्रीड़ा (दङ्गल) का
समुत्थिते ।	६. ऊपर उठने पर	महोत्सवम् ॥	११. महोत्सव

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! रात्रि के बीत जाने पर और सूर्य नारायण के पूर्व में ऊपर उठने पर कंस ने निश्चित रूप से मल्लक्रीड़ा का दङ्गल महोत्सव कराया ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

आनर्चुः पुरुषा रङ्गं तूर्यभेर्यश्च जघ्निरे ।
मञ्चाश्चालङ्कृताः स्रग्भिः पताकाचैलतोरणैः ॥३३॥

पदच्छेद— आनर्चुः पुरुषाः रङ्गम् तूर्य भेर्यः च जघ्निरे ।
मञ्चाः च अलङ्कृताः स्रग्भिः पताका चैल तोरणैः ॥

शब्दार्थ—

आनर्चुः	३. खूब सजाया	मञ्चाः	७. मञ्च
पुरुषाः	१. लोगों ने	च	८. भी
रङ्गम्	२. रङ्ग-मञ्च को	अलङ्कृताः	१२. सजा दिये गये
तूर्य	४. तुरही	स्रग्भिः	९. मालाओं
भेर्यः च	५. और भेरियाँ	चैल	१०. झन्डियों और
जघ्निरे ।	६. बजायी जाने लगीं	तोरणैः ॥	११. बन्दनवारों से

श्लोकार्थ—लोगों ने रङ्ग मञ्च को खूब सजाया । तुरही और भेरियाँ बजायी जाने लगीं । मञ्च भी मालाओं, झन्डियों और बन्दनवारों से सजा दिये गये ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

तेषु पौरा जानपदा ब्रह्मक्षत्रपुरोगमाः ।
यथोपजोषं विविशू राजानश्च कृतासनाः ॥३४॥

पदच्छेद— तेषु पौराः जानपदाः ब्रह्म क्षत्र पुरोगमाः ।
यथा उपजोषम् विविशुः राजानः च कृत आसनाः ॥

शब्दार्थ—

तेषु	१. उन पर	यथा	७. यथा
पौराः	२. पुरवासी	उपजोषम्	८. स्थान
जानपदाः	३. ग्रामवासी	विविशुः	९. बैठ गये
ब्रह्म	४. ब्राह्मण	राजानः च	१०. और राजा लोग
क्षत्र	५. क्षत्रिय	कृत	१२. आ डटे
पुरोगमाः ।	६. आदि	आसनाः ॥	११. आसनों पर

श्लोकार्थ—उन पर पुरवासी, ग्राम वासी, ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि यथा स्थान बैठ गये । और राजा लोग आसनों पर आ डटे ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

कंसः परिवृतोऽमात्यै राजमञ्च उपाविशत् ।
मण्डलेश्वरमध्यस्थो हृदयेन विदूयता ॥३५॥

पदच्छेद— कंसः परिवृतः अमात्यैः राजमञ्चे उपाविशत् ॥
मण्डल ईश्वर मध्यस्थः हृदयेन विदूयता ॥

शब्दार्थ—

कंसः	१. कंस	मण्डल	४. मण्डल
परिवृतः	३. साथ	ईश्वर	५. के ईश्वरों (छोटे-छोटे राजाओं के)
अमात्यैः	२. मन्त्रियों के	मध्यस्थः	६. बीच में
राजमञ्चे	९. राज सिंहासन पर	हृदयेन	७. हृदय से
उपाविशत् ।	१०. बैठ गया	विदूयता ॥	८. दुःखी होता हुआ

श्लोकार्थ—कंस मन्त्रियों के साथ मण्डल के ईश्वरों (छोटे-छोटे राजाओं) के ईश्वरों के बीच में हृदय से दुःखी होता हुआ राजसिहासन पर बैठ गया ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

वाद्यमानेषु तूर्येषु मल्लतालोत्तरेषु च ।
मल्लाः स्वलङ्कृता दृप्ताः सोपाध्यायाः समाविशन् ॥३६॥

पदच्छेद— वाद्यमानेषु तूर्येषु मल्लताल उत्तरेषु च ।
मल्लाः सु अलङ्कृताः दृप्ताः स उपाध्यायाः समाविशन् ॥

शब्दार्थ—

वाद्यमानेषु	५. बजने लगे	मल्लाः	७. पहलवान
तूर्येषु	४. बाजे	सु अलङ्कृताः	८. खूब सज-धज कर
मल्लताल	१. पहलवानों के ताल	दृप्ताः	६. गर्वीले
उत्तरेषु	२. ठोकने के साथ	स उपाध्यायाः	९. अपने शिक्षकों के साथ
च ।	३. ही	समाविशन् ॥	१०. अखाड़े में आ उतरे

श्लोकार्थ—पहलवानों के ताल ठोकने के साथ ही बाजे बजने लगे। गर्वीले पहलवान खूब सज-धज कर अपने शिक्षकों के साथ अखाड़े में आ उतरे ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

चाणूरो मुष्टिकः कूटः शलस्तोशल एव च ।
त आसेदुरुपस्थानं वल्गुवाद्यप्रहर्षिताः ॥३७॥

पदच्छेद— चाणूरः मुष्टिकः कूटः शलः तोशलः एव च ।
ते आसेदुः उपस्थानम् वल्गु वाद्य प्रहर्षिताः ॥

शब्दार्थ—

चाणूर	२.	चाणूर	ते	१.	वे
मुष्टिकः	३.	मुष्टिक	आसेदुः	१२.	बैठे गये
कूटः	४.	कूट	उपस्थानम्	११.	अखाड़े में आकर
शलः	५.	शल	वल्गु	८.	मधुर
तोशलः	७.	तोशल	वाद्य	९.	बाजे की ध्वनि से
एव च ।	६.	और	प्रहर्षिताः ॥	१०.	उत्साहित होकर

श्लोकार्थ—वे चाणूर, मुष्टिक, कूट, शल और तोशल मधुर बाजे की ध्वनि से उत्साहित होकर अखाड़े में आकर बैठ गये ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

नन्दगोपादयो गोपा भोजराजसमाहुताः ।
निवेदितोपायनास्त एकस्मिन् मञ्च आविशन् ॥३८॥

पदच्छेद— नन्दगोप आदयः गोपाः भोजराज समाहुताः ।
निवेदित उपायनाः ते एकस्मिन् मञ्चे आविशन् ॥

शब्दार्थ—

नन्दगोप	४.	नन्दगोप	निवेदित	८.	देकर
आदयः	५.	आदि	उपायनाः	७.	भेंटें
गोपाः	६.	गोप	ते	१.	वे
भोजराज	२.	कंस के	एकस्मिन्	९.	एक
समाहुताः ।	३.	बुलाने पर	मञ्चे	१०.	मञ्च पर
			आविशन् ॥	११.	बैठ गये

श्लोकार्थ—वे कंस के बुलाने पर नन्दगोप आदि गोप भेंटें देकर एक मञ्च पर बैठ गये ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे मल्लरङ्गोपवर्णनम् नाम द्विचत्वारिंशः अध्यायः ॥४२॥

दशमः स्कन्धः

त्रिचत्वारिंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— अथ कृष्णश्च रामश्च कृतशौचौ परन्तप ।
मल्लदुन्दुभिनिर्घोषं श्रुत्वा द्रष्टुमुपेयतुः ॥१॥

पदच्छेद— अथ कृष्णः च रामः च कृत शौचौ परन्तप ।
मल्ल दुन्दुभि निर्घोषम् श्रुत्वा द्रष्टुम् उपेयतुः ॥

शब्दार्थ—

अथ	२.	इसके बाद	मल्ल	७.	पहलवानों के
कृष्णः च	३.	कृष्ण और	दुन्दुभि	८.	नगाड़े की
रामः च	४.	बलराम और	निर्घोषम्	९.	ध्वनि
कृत	६.	निवृत्त होकर	श्रुत्वा	१०.	सुनकर
शौचौ	५.	स्नानादि से	द्रष्टुम्	११.	रंगभूमि देखने को
परन्तप ।	१.	हे शत्रुविजयी परीक्षित् !	उपेयतुः ॥	१२.	चल पड़े

श्लोकार्थ—हे शत्रुविजयी परीक्षित् ! इसके बाद कृष्ण और बलराम स्नानादि से निवृत्त होकर पहलवालों के नगाड़े की ध्वनि सुनकर रंगभूमि देखने को चल पड़े ॥

द्वितीयः श्लोकः

रङ्गद्वारं समासाद्य तस्मिन् नागमवस्थितम् ।
अपश्यत् कुवलयापीडं कृष्णोऽम्बष्ठप्रचोदितम् ॥२॥

पदच्छेद— रङ्गद्वारम् समासाद्य तस्मिन् नागम् अवस्थितम् ।
अपश्यत् कुवलयापीडम् कृष्णः अम्बष्ठ प्रचोदितम् ॥

शब्दार्थ—

रङ्गद्वारम्	१.	रङ्गभूमि के दरवाजे पर	अपश्यत्	१०.	देखा
समासाद्य	२.	पहुँच कर	कुवलयापीडम्	७.	कुवलयापीड नामक
तस्मिन्	४.	वहाँ	कृष्णः	३.	कृष्ण ने
नागम्	८.	हाथी को	अम्बष्ठ	५.	महावत की
अवस्थितम् ।	९.	खड़े हुये	प्रचोदितम् ॥	६.	प्रेरणा से

श्लोकार्थ—रङ्गभूमि में पहुँचकर श्रीकृष्ण ने वहाँ महावत की प्रेरणा से कुवलयापीडनामक हाथी को खड़े हुये देखा ॥

तृतीयः श्लोकः

बद्ध्वा परिकरं शौरिः समुह्य कुटिलालकान् ।
उवाच हस्तिपं वाचा मेघनादगभीरया ॥३॥

पदच्छेद— बद्ध्वा परिकरम् शौरिः समुह्य कुटिल अलकान् ।
उवाच हस्तिपम् वाचा मेघताद गभीरया ।।

शब्दार्थ—

बद्ध्वा	३.	कसकर	उवाच	११.	ललकारा
परिकरम्	२.	कमर	हस्तिपम्	१०.	महावत को
शौरिः	१.	श्रीकृष्ण ने	वाचा	९.	वाणी से
समुह्य	६.	समेट कर	मेघनाद	७.	मेघध्वनि के समान
कुटिल	४.	घुंघराले	गभीरया ।।	८.	गम्भीर
अलकान् ।	५.	बालों को			

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने कमर कसकर घुंघराले बालों को समेटकर मेघध्वनि के समान गम्भीर वाणी से कहा ।।

चतुर्थः श्लोकः

अम्बष्ठाम्बष्ठ मार्गं नौ देह्यपक्रम मा चिरम् ।
नो चेत् सकुञ्जरं त्वाद्य नयामि यमसादनम् ॥४॥

पदच्छेद— अम्बष्ठ अम्बष्ठ मार्गम् नौ देहि अपक्रम मा चिरम् ।
नोचेत् सकुञ्जरम् त्वा अद्य नयामि यम सादनम् ।।

शब्दार्थ—

अम्बष्ठ	१.	महावत	नो	८.	नहीं
अम्बष्ठ	२.	महावत	चेत्	९.	तो
मार्गम्	४.	रास्ता	सकुञ्जरम्	१०.	हाथी सहित
नौ	३.	हम दोनों को	त्वा अद्य	११.	तुझे आज
देहि	५.	दो	नयामि	१४.	पहुँचा दूंगा
अपक्रम	६.	यहाँ से हट जाओ	यम	१२.	यमराज के
मा चिरम् ।	७.	देर मत करो	सादनम् ।।	१३.	घर

श्लोकार्थ—महावत, महावत ! हम दोनों को रास्ता दो । यहाँ से हट जाओ, देर मत करो, नहीं तो हाथी सहित तुझे यमराज के घर पहुँचा दूंगा ।

पञ्चमः श्लोकः

एवं निर्भर्त्सितोऽम्बष्ठः कुपितः कोपितं गजम् ।
चोदयामास कृष्णाय कालान्तकयमोपमम् ॥५॥

पदच्छेद— एवम् निर्भर्त्सितः अम्बष्ठः कुपितः कोपितम् गजम् ।
चोदयामास कृष्णाय काल अन्तक यम उपमम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	चोदयामास	१२. बढ़ाया
निर्भर्त्सितः	२. धमकाने पर	कृष्णाय	११. श्रीकृष्ण की ओर
अम्बष्ठ	३. महावत ने	काल	५. काल
कुपितः	४. क्रुद्ध होकर	अन्तक	६. मृत्यु और
कोपितम्	९. कुपित किये गये	यम	७. यमराज के
गजम् ।	१०. हाथी को	उपमम् ॥	८. समान

श्लोकार्थ—इस प्रकार धमकाने पर महावत ने क्रुद्ध होकर काल, मृत्यु और यमराज के समान कुपित किये गये हाथी को श्रीकृष्ण की ओर बढ़ाया ॥

षष्ठः श्लोकः

करीन्द्रस्तमभिद्रुत्य करेण तरसाग्रहीत् ।
कराद् विगलितः सोऽमुं निहत्याङ्घ्रिष्वलीयत ॥६॥

पदच्छेद— करीन्द्रः तम् अभिद्रुत्य करेण तरसाअग्रहीत् ।
करात् विगलितः सः अमुम् निहत्यअङ्घ्रिषु अलीयत ॥

शब्दार्थ—

करीन्द्र	१. गजराज ने	करात्	७. सूंड से
तम्	२. उन पर	विगलित	८. बाहर सरक कर
अभिद्रुत्य	३. आक्रमण करके	सः अमुम्	९. वे भगवान् हाथी पर
करेण	४. सूंड से	निहत्य	१०. प्रहार करके (उसके)
तरसा	५. फुर्ती के साथ	अङ्घ्रिषु	११. पैरों के बीच में
अग्रहीत् ।	६. पकड़ लिया	अलीयत ॥	१२. जा छिपे

श्लोकार्थ—गजराज ने उन पर आक्रमण करके सूंड से फुर्ती के साथ पकड़ लिया । सूंड से बाहर सरक कर वे भगवान् हाथी पर प्रहार करके उसके पैरों के बीच में जा छिपे ॥

सप्तमः श्लोकः

संक्रुद्धस्तमचक्षाणो घ्राणदृष्टिः स केशवम् ।
परामृशत् पुष्करेण स प्रसह्य विनिर्गतः ॥७॥

पदच्छेद— संक्रुद्धः तम् अचक्षाणः घ्राण दृष्टिः स केशवम् ।
परामृशत् पुष्करेण सः प्रसह्य विनिर्गतः ।।

संक्रुद्धः	१. अत्यन्त कुपित	केशवम् ।	७. श्रीकृष्ण को
तम्	३. उन्हें	परामृशत्	८. ढूंढ़कर पकड़ लिया
अचक्षाणः	४. सामने	पुष्करेण	१०. सूंड से
घ्राण	६. सूंघकर	सः	९. परन्तु वे (उसकी)
दृष्टिः	५. देखकर (और)	प्रसह्य	११. बलपूर्वक बाहर
सः	२. कुवलयापीड ने	विनिर्गतः ।।	१२. निकल गये

श्लोकार्थ—अत्यन्त कुपित कुवलयापीड ने उन्हें सामने देखकर और सूंघकर श्रीकृष्ण को ढूंढ़कर पकड़ लिया । परन्तु वे उसकी सूंड से बल पूर्वक बाहर निकल गये ।।

शब्दार्थ—

अष्टमः श्लोकः

पुच्छे प्रगृह्यातिबलं धनुषः पञ्चविंशतिम् ।
विचकर्ष यथा नागं सुपर्ण इव लीलया ॥८॥

पदच्छेद— पुच्छे प्रगृह्य अतिबलम् धनुषः पञ्चविंशतिम् ।
विचकर्ष यथा नागम् सुपर्णः इव लीलया ।।

शब्दार्थ—

पुच्छे	२. पूंछ	विचकर्ष	८. घसीट लाये
प्रगृह्य	३. पकड़ कर (श्रीकृष्ण)	यथा	९. जैसे
अतिबलम्	१. अत्यन्त बलवान् हाथी की	नागम्	११. सांप को (घसीटता है)
धनुषः	७. धनुष (सौ हाथ)	सुपर्णः	१०. गरुड़
पञ्च	६. पञ्चविंशतिम्	इव	५. साथ (उसे)
		लीलया ।।	४. लीला के

श्लोकार्थ—अत्यन्त बलवान् हाथी की पूंछ पकड़ कर श्रीकृष्ण लीला के साथ उसे पच्चीस धनुष (सौ हाथ) घसीट लाये, जैसे गरुड़ सांप को घसीटता है ।।

नवमः श्लोकः

स पर्यावर्तमानेन सव्यदक्षिणतोऽच्युतः ।

बभ्राम भ्राम्यमाणेन गोवत्सेनेव बालकः ॥९॥

पदच्छेद— सः पर्यावर्तमानेन सव्यदक्षिणतः अच्युतः ।
बभ्राम भ्राम्यमाणेन गोवत्सेन इव बालकः ॥

शब्दार्थ—

सः	१. वे भगवान्	बभ्राम	१२. घुमाने लगे
पर्यावर्त	१०. घुमाने के	भ्राम्य	४. घुमाये
मानेन	११. प्रमाण से	माणेन	५. जाने वाले
सव्य	८. बाँये और	गोवत्सेन	६. गाय के बछड़े के
दक्षिणतः	९. दायें की ओर	इव	७. समान (उस हाथी को)
अच्युतः ।	२. श्री कृष्ण	बालकः ॥	३. बालक के द्वारा (पूंछ पकड़ कर

श्लोकार्थ—वे भगवान् श्रीकृष्ण बालक के द्वारा पूंछ पकड़ कर घुमाये जाने-वाले गाय के बछड़े के समान उस हाथी को बाँये और दायें की ओर घुमाने के प्रमाण से घुमाने लगे ॥

दशमः श्लोकः

ततोऽभिमुखमभ्येत्य पाणिनाऽऽहत्य वारणम् ।

प्राद्रवन् पातयामास स्पृश्यमानः पदे पदे ॥१०॥

पदच्छेद— ततः अभिमुखम् अभ्येत्य पाणिना आहत्य वारणम् ।
प्राद्रवन् पातयामास स्पृश्यमानः पदे पदे ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. तदनन्तर (वे श्रीकृष्ण)	प्राद्रवन्	७. दौड़ते हुये
अभिमुखम्	२. सामने	पातयामास	११. गिराने लगे
अभ्येत्य	३. आकर	स्पृश्यमानः	१०. छूते हुये
पाणिना	४. हाथ से	पदे	८. पग
आहत्य	६. मार कर	पदे ॥	९. पग पर
वारणम् ।	५. हाथी को		

श्लोकार्थ—तदनन्तर वे श्रीकृष्ण सामने आकर हाथ से हाथी को मार कर दौड़ते हुये पग-पग पर छूते हुये गिराने लगे ॥

एकादशः श्लोकः

स धावन् क्रीडया भूमौ पतित्वा सहसोत्थितः ।
तं मत्वा पतितं क्रुद्धो दन्ताभ्यां सोऽहनत्क्षितिम् ॥११॥

पदच्छेद— सः धावन् क्रीडया भूमौ पतित्वा सहसा उत्थितः ।
तम् मत्वा पतितम् क्रुद्धः दन्ताभ्याम् सः अहनत् क्षितिम् ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	वे (श्रीकृष्ण)	तम्	८.	उन्हें
धावन्	२.	दौड़ते हुये	मत्वा	१०.	मानकर
क्रीडया	३.	खेल-खेल में	पतितम्	९.	गिरा हुआ
भूमौ	४.	भूमि पर	क्रुद्धः	११.	कुपित होकर
पतित्वा	५.	गिर कर	दन्ताभ्याम्	१२.	दोनों दाँतों से
सहसा	६.	एकाएक	सः	१३.	वह हाथी
उत्थितः ।	७.	उठ जाते थे (और)	अहनत्	१५.	मारता था
			क्षितिम् ॥	१४.	पृथ्वी को

श्लोकार्थ—वे श्रीकृष्ण दौड़ते हुये खेल-खेल में भूमि पर गिर कर एकाएक उठ जाते थे। और उन्हें गिरा हुआ मानकर कुपित होकर दोनों दाँतों से वह हाथी पृथ्वी को मारता था ॥

द्वादशः श्लोकः

स्वविक्रमे प्रतिहते कुञ्जरेन्द्रोऽत्यमर्षितः ।
चोद्यमानो महामात्रैः कृष्णमभ्यद्रवद् रुषा ॥१२॥

पदच्छेद— स्वविक्रमे प्रतिहते कुञ्जर इन्द्रः अति अमर्षितः ।
चोद्यमानः महामात्रैः कृष्णम् अभ्यद्रवत् रुषा ॥

शब्दार्थ—

स्व	१.	अपने	चोद्यमानः	८.	प्रेरित किये जाने पर
विक्रमे	२.	पराक्रम के	महामात्रैः	७.	महावत द्वारा
प्रतिहते	३.	व्यर्थ हो जाने पर	कृष्णम्	१०.	कृष्ण पर
कुञ्जर इन्द्रः	४.	गजराज	अभ्यद्रवत्	११.	टूट पड़ा
अति	५.	अत्यन्त	रुषा ॥	९.	वह क्रोधित होकर
अमर्षितः ।	६.	कुपित हुआ (फिर)			

श्लोकार्थ—अपने पराक्रम के व्यर्थ हो जाने पर गजराज अत्यन्त कुपित हुआ फिर महावत द्वारा प्रेरित किये जाने पर वह क्रोधित होकर कृष्ण पर टूट पड़ा ॥

त्रयोदशः श्लोकः

तमापतन्तमासाद्य भगवान् मधुसूदनः ।
निगृह्य पाणिना हस्तं पातयामास भूतले ॥१३॥

पदच्छेद— तम् आपतन्तम् आसाद्य भगवान् मधुसूदनः ।
निगृह्य पाणिना हस्तम् पातयामास भूतले ॥

शब्दार्थ—

तम्	३. उसे	निगृह्य	८. पकड़कर
आपतन्तम्	४. अपनी ओर झपटते हुये	पाणिना	६. हाथ से (उसकी)
आसाद्य	५. पाकर	हस्तम्	७. सूंड
भगवान्	१. भगवान्	पातयामास	१०. गिरा दिया
मधुसूदनः ।	२. श्रीकृष्ण ने	भूतले ॥	९. धरती पर

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने उसे अपनी ओर झपटते हुये पाकर हाथ से उसकी सूंड पकड़कर धरती पर गिरा दिया ॥

चतुर्दशः श्लोकः

पतितस्य पदाऽऽक्रम्य मृगेन्द्र इव लीलया ।
दन्तमुत्पाट्य तेनेभं हस्तिपांश्चाहनद्धरिः ॥१४॥

पदच्छेद— पतितस्य पदा आक्रम्य मृगेन्द्र इव लीलया ।
दन्तम् उत्पाट्य तेन इभम् हस्तिपान् च अहनत् हरिः ॥

शब्दार्थ—

पतितस्य	१. (उसके) गिर जाने पर	दन्तम्	८. दाँतों को
पदा	६. पैर से	उत्पाट्य	९. उखाड़ कर
आक्रम्य	७. दबाकर	तेन इभम्	१०. उससे हाथी और
मृगेन्द्र	३. सिंह के	हस्तिपान्	११. महावतों को
इव	४. समान	अहनत्	१२. मार दिया
लीलया ।	५. लीलापूर्वक	हरिः ॥	२. भगवान् श्रीकृष्ण ने

श्लोकार्थ—उसके गिर जाने पर भगवान् श्रीकृष्ण ने सिंह के समान लीलापूर्वक पैर से दबाकर दाँतों को उखाड़ कर उससे हाथी और महावतों को मार दिया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

मृतकं द्विपमुत्सृज्य दन्तपाणिः समाविशत् ।
अंसन्यस्तविषाणोऽसृङ्म्मदबिन्दुभिरङ्कितः ।
विरूढस्वेदकणिकावदनाम्बुरुहो बभौ ॥१५॥

पदच्छेद— मृतकम् द्विपम् उत्सृज्य दन्तपाणिः समाविशत् ।
अंसन्यस्त विषाणः असृक्मद विन्दुभिः अङ्कितः ।
विरुढ स्वेद कणिका वदन अम्बुरुहः बभौ ।।

शब्दार्थ—

मृतकम्	१. मरे हुये	विन्दुभिः	९. बूंदों से
द्विपम्	२. हाथी को	अङ्कितः	१०. चिह्नित और
उत्सृज्य	३. छोड़ कर	विरुढ	११. उत्पन्न हुई
दन्तपाणिः	४. हाथ में दांतलिये हुये उन्होंने	स्वेद	१२. पसीने के
समाविशत् ।	५. रंगभूमि में प्रवेश किया	कणिका	१३. कणों से युक्त
अंसन्यस्त	६. कन्धे पर रखे हुये	वदन	१४. मुख
विषाणः	७. दांत वाले	अम्बुरुह	१५. कमल वाले (भगवान्)
असृक्मद	८. रक्त और मद की	बभौ ।।	१६. शोभा पा रहे थे

श्लोकार्थ—मरे हुये हाथी को छोड़कर हाथ में दांत लिये उन्होंने रंग भूमि में प्रवेश किया । उस समय कन्धे पर रखे हुये दांत वाले, रक्त और मद की बूंदों से चिह्नित और उत्पन्न हुए पसीने के कणों से युक्त मुख कमल वाले भगवान् शोभा पा रहे थे ।

षोडशः श्लोकः

वृतौ गोपैः कतिपयैर्बलदेवजनार्दनौ ।
रङ्गं विविशतू राजन् गजदन्तवरायुधौ ॥१६॥

पदच्छेद— वृतौ गोपैः कतियैः बलदेव जनार्दनौ ।
रङ्गं विविशतुः राजन् गज दन्त वर आयुधौ ।।

शब्दार्थ—

वृतौ	४. युक्त	रङ्गं विविशतुः	१०. रंगभूमि में प्रवेश किया
गोपैः	३. ग्वाल वालों से	राजन्	१. हे राजन् !
कतिपयैः	२. कुछ	गजदन्त	९. हाथी के दांत लिये हुये
बलदेव	५. बलदेव और	वर	७. श्रेष्ठ
जनार्दनौ ।	६. श्रीकृष्ण ने	आयुधौ ।।	८. अस्त्र के रूप में

श्लोकार्थ—हे राजन् ! कुछ ग्वालवालों से युक्त बलदेव और श्रीकृष्ण ने श्रेष्ठ अस्त्र के रूप में हाथी के दांत लिये हुये रंगभूमि में प्रवेश किया ।।

सप्तदशः श्लोकः

मल्लानामशनिर्नृणां नरवरः स्त्रीणां स्मरो मूर्तिमान् ।
गोपानां स्वजनोऽसतां क्षितिभुजां शास्ता स्वपित्रोः शिशुः ॥
मृत्युर्भोजपतेर्विराडविदुषां तत्त्वं परं योगिनां ।
वृष्णीनां परदेवतेति विदितो रङ्गं गतः साग्रजः ॥१७॥

पदच्छेद— मल्लानाम् अशनिः नृणाम् नरवरः स्त्रीणाम् स्मरः मूर्तिमान् ।
गोपानाम् स्वजनः असताम् क्षितिभुजाम् शास्ता स्वपित्रोः शिशुः ॥
मृत्युः भोजपतेः विराट् अविदुषाम् तत्त्वम् परम् योगिनाम् ।
वृष्णीनाम् परदेवता इति विदितः रङ्गम् गतः स अग्रजः ॥

शब्दार्थ—

मल्लानाम्	५.	पहलवानों को	मृत्युः	२१.	मृत्यु
अशनिः	६.	वज्र	भोजपतेः	२०.	कंस को
नृणाम्	७.	(साधारण) मनुष्यों को	विराट्	२३.	विराट्
नरवरः	८.	नररत्न	अविदुषाम्	२२.	अज्ञानियों को
स्त्रीणाम्	९.	स्त्रियों को	तत्त्वम्	२६.	तत्त्व
स्मरः	११.	कामदेव	परम्	२५.	परम
मूर्तिमान्	१०.	मूर्तिमान्	योगिनाम्	२४.	योगियों को
गोपानाम्	१२.	गोपों को	वृष्णीनाम्	२७.	वृष्णिवंशियों को
स्वजनः	१३.	स्वजन	परदेवता	२८.	श्रेष्ठदेवता
असताम्	१४.	दुष्ट	इति	२९.	ऐसे
क्षितिभुजाम्	१५.	राजाओं को	विदितः	३०.	जान पड़े
शास्ता	१६.	शासक	रङ्गम्	१.	रङ्गभूमि में
स्व	१७.	अपने	गतः	२.	पहुँचे हुये
पित्रोः	१८.	माता-पिता को	स	४.	सहित श्रीकृष्ण
शिशुः।	१९.	बालक	अग्रजः॥	३.	बलराम जी

श्लोकार्थ—रङ्गभूमि में पहुँचे हुये बलराम जी सहित वे भगवान् श्रीकृष्ण पहलवानों को वज्र, साधारण मनुष्यों को नररत्न, स्त्रियों को मूर्तिमान् कामदेव, गोपों को स्वजन, दुष्ट राजाओं को शासक, अपने माता-पिता को बालक, कंस को मृत्यु, अज्ञानियों को विराट्, योगियों को परमतत्त्व, वृष्णिवंशियों को श्रेष्ठ देवता ऐसे जान पड़े ॥

अष्टादशः श्लोकः

हतं कुवलयापीडं दृष्ट्वा तावपि दुर्जयौ ।
कंसो मनस्व्यपि तदा भृशमुद्विविजे नृप ॥१८॥

पदच्छेद— हतम् कुवलयापीडम् दृष्ट्वा तौ अपि दुर्जयौ ।
कंसः मनस्वी अपि तदा भृशम् उद्विविजे नृप ॥

शब्दार्थ—

हतम्	३.	मारा हुआ और	कंसः	८.	कंस
कुवलयापीडम्	२.	कुवलयापीड को	मनस्वी अपि	९.	मनस्वी होने पर भी
दृष्ट्वा	७.	देखकर	तदा	१०.	उस समय
तौ	४.	उन दोनों को	भृशम्	११.	बहुत
अपि	५.	भी	उद्विविजे	१२.	घबरा गया
दुर्जयौ ।	६.	अजेय	नृप ॥	१.	हे राजन्

श्लोकार्थ—हे राजन् ! कुवलयापीड को मारा हुआ और उन दोनों को भी अजेय देखकर कंस मनस्वी होने पर भी उस समय बहुत घबरा गया ॥

एकोनविंशः श्लोकः

तौ रेजतू रङ्गगतौ महाभुजौ विचित्रवेषाभरणस्रगम्बरौ ।
यथा नटावुत्तमवेषधारिणौ मनः क्षिपन्तौ प्रभया निरीक्षताम् ॥१९॥

पदच्छेद— तौ रेजतुः रङ्ग गतौ महाभुजौ विचित्रवेष आभरण स्रक् अम्बरौ ।
यथा नटौ उत्तम वेष धारिणौ मनः क्षिपन्तौ प्रभया निरीक्षताम् ॥

शब्दार्थ—

तौ	५.	वे दोनों	यथा	११.	जैसे
रेजतुः	१०.	शोभायमान हुये	नटौ	१४.	नट (शोभित होते हैं)
रङ्गगतौ	६.	रङ्गभूमि में जाकर	उत्तम	१२.	उत्तम
महाभुजौ	१.	लम्बी-लम्बी भुजाओं वाले	वेषधारिणौ	१३.	वेष धारण किये हुये
विचित्रवेष	२.	विचित्र वेष	मनः क्षिपन्तौ	९.	मन को खींचते हुये (वैसे ही)
आभरण	३.	आभूषण	प्रभया	७.	अपनी कान्ति से
स्रक्अम्बरैः ।	४.	माला और वस्त्र वाले	निरीक्षताम् ॥	८.	देखने वालों के

श्लोकार्थ—लम्बी-लम्बी भुजाओं वाले, विचित्र वेष, आभूण, माला और वस्त्र वाले वे दोनों रङ्गभूमि में जाकर अपनी कान्ति से देखने वालों के मन को खींचते हुये—वैसे ही शोभायमान हुये जैसे उत्तम वेष धारण किये हुये नट शोभित होते हैं ॥

विंशः श्लोकः

निरीक्ष्य तावुत्तमपूरुषौ जना मञ्चस्थिता नागरराष्ट्रका नृप ।
प्रहर्षवेगोत्कलितेक्षणाननाः पपुर्न तृप्ता नयनैस्तदाननम् ॥२०॥

पदच्छेद— निरीक्ष्य तौ उत्तम पूरुषौ जनाः मञ्च स्थिताः नागर राष्ट्रकाः नृप ।
प्रहर्ष वेग उत्कलित ईक्षण आननाः पपुः न तृप्ताः नयनैः तत् आननम् ॥

शब्दार्थ—

निरीक्ष्य	३.	देखकर	प्रहर्ष वेग	७.	अत्यन्त आनन्द के वेग से
तौ उत्तम पुरुषौ	२.	उन दोनों उत्तम पुरुषों को	उत्कलित	८.	विकसित
जनाः	१०.	लोग	ईक्षण आननाः	९.	नेत्र और मुख वाले
मञ्च स्थिताः	४.	मञ्चों पर बैठे हुये	पपुः	१३.	पीने लगे (परन्तु)
नागर	५.	नगर के और	न तृप्ताः	१४.	तृप्त नहीं होते थे
राष्ट्रकाः	६.	राज्य के मनुष्य तथा	नयनैः	११.	नेत्रों से
नृप ।	१.	हे राजन्	तत् आननम् ॥	१२.	उनके मुख माधुर्य को

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उन दोनों उत्तम पुरुषों को देखकर मञ्चों पर बैठे हुये नगर के और राज्य के मनुष्य अत्यन्त आनन्द के वेग से विकसित नेत्र और मुख वाले होकर नेत्रों से उनके मुख माधुर्य को पीने लगे । परन्तु तृप्त नहीं होते थे ॥

एकविंशः श्लोकः

पिबन्त इव चक्षुर्भ्यां लिहन्त इव जिह्वया ।
जिघ्रन्त इव नासाभ्यां श्लिष्यन्त इव बाहुभिः ॥२१॥

पदच्छेद — पिबन्तः इव चक्षुर्भ्याम् लिहन्तः इव जिह्वया ।
जिघ्रन्तः इव नासाभ्याम् श्लिष्यन्तः इव बाहुभिः ॥

शब्दार्थ—

पिबन्तः	३.	पीते हुये	जिघ्रन्तः	९.	सूंघते हुये
इव	१.	मानों	इव	७.	मानों
चक्षुर्भ्याम्	२.	नेत्रों से	नासाभ्याम्	८.	नासिका से
लिहन्तः	६.	चाटते हुये	श्लिष्यन्तः	१२.	लपटाते हुये (कहने लगे)
इव	४.	मानों	इव	१०.	मानों
जिह्वया ।	५.	जीभ से	बाहुभिः ॥	११.	बाहों में

श्लोकार्थ—वे उन्हें मानों नेत्रों से पीते हुये, मानों जीभ से चाटते हुये, मानों नासिका सूंघते हुये, मानों बाहों में लपटाते हुये कहने लगे ॥

द्वाविंशः श्लोकः

ऊचुः परस्परं ते वै यथादृष्टं यथाश्रुतम् ।
तद्रूपगुणमाधुर्यप्रागल्भ्यस्मारिता इव ॥२२॥

पदच्छेद— ऊचुः परस्परम् ते वै यथा दृष्टम् यथा श्रुतम् ।
तद्रूप गुण माधुर्य प्रागल्भ्य स्मारिताः इव ॥

शब्दार्थ—

ऊचुः	१२.	कहने लगे	तद्रूप	१.	उनके सौन्दर्य
परस्परम्	११.	आपस में	गुण	२.	गुण
ते वै	७.	जिससे वे	माधुर्यं	३.	माधुर्य और
यथा दृष्टम्	८.	जैसा देखा और	प्रागल्भ्य	४.	निर्भयता ने
यथा	९.	जैसा	स्मारिताः	६.	स्मरण करा दिया
श्रुतम् ।	१०.	सुना था	इव ॥	५.	मानों (दर्शकों को)

श्लोकार्थ—उनके सौन्दर्य, गुण, माधुर्य और निर्भयता ने मानों दर्शकों को स्मरण करा दिया । जिससे वे, जैसा देखा और जैसा सुना था, आपस में कहने लगे ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

एतौ भगवतः साक्षाद्धरेर्नारायणस्य हि ।
अवतीर्णाविहांशेन वसुदेवस्य वेश्मनि ॥२३॥

पदच्छेद— एतौ भगवतः साक्षात् हरेः नारायणस्य हि ।
अवतीर्णौ इह अंशेन वसुदेवस्य वेश्मनि ॥

शब्दार्थ—

एतौ	१.	वे दोनों	अवतीर्णौ	१०.	अवतीर्ण हुये
भगवतः	३.	भगवान्	इह	७.	इस पृथ्वी पर
साक्षात्	२.	साक्षात्	अंशेन	६.	अंश से
हरेः	४.	श्री हरि	वसुदेवस्य	८.	वसुदेव के
नारायणस्य हि ।	५.	नारायण के	वेश्मनि ॥	९.	घर में

श्लोकार्थ—वे दोनों साक्षात् भगवान् श्री हरि नारायण के अंश से इस पृथ्वी पर वसुदेव के घर में अवतीर्ण हुए ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

एष वै किल देवक्यां जातो नीतश्च गोकुलम् ।
कालमेतं वसन् गूढो ववृधे नन्दवेश्मनि ॥२४॥

पदच्छेद— एषः वै किल देवक्याम् जातः नीतः च गोकुलम् ।
कालम् एतम् वसन् गूढः ववृधे नन्दवेश्मनि ॥

शब्दार्थ—

एषः	२. ये	कालम्	८. समय तक
वै किल	१. कहते हैं कि	एतम्	७. इतने
देवक्याम्	३. देवकी से	वसन्	११. निवास करते हुये
जातः	४. उत्पन्न हुये	गूढः	१०. छिप कर
नीतः	६. पहुँचा दिये गये	ववृधे	१२. इतने बड़े हुये हैं
च गोकुलम् ।	५. और गोकुल	नन्दवेश्मनि ॥	९. नन्द के घर में

श्लोकार्थ—कहते हैं कि ये देवकी से उत्पन्न हुये और गोकुल पहुँचा दिये गये । इतने समय तक नन्द के घर में छिप कर निवास करते हुये इतने बड़े हुये हैं ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

पूतनानेन नीतान्तं चक्रवातश्च दानवः ।
अर्जुनौ गुह्यकः केशी धेनुकोऽन्ये च तद्विधाः ॥२५॥

पदच्छेद— पूतना अनेन नीता अन्तम् चक्रवातः च दानवः ।
अर्जुनौ गुह्यकः केशी धेनुकः अन्ये च तत्विधाः ॥

शब्दार्थ—

पूतना	२. पूतना	अर्जुनौ	६. यमलार्जुन
अनेन	१. इन्होंने	गुह्यकः	७. शंख चूड
नीता अन्तम्	१२. नाश किया	केशी	८. केशी
चक्रवातः	३. तृणावर्त	धेनुकः	९. धेनुक
च	५. और	अन्ये च	११. और दूसरे दैत्यों का भी
दानवः ।	४. नामक दानव	तत्विधाः ॥	१०. उस प्रकार के

श्लोकार्थ—उन्होंने पूतना, तृणावर्त नामक दानव और यमलार्जुन, शंखचूड, केशी, धेनुक और उस प्रकार के दूसरे दैत्यों का भी वध किया ॥

षड्विंशः श्लोकः

गावः सपाला एतेन दावाग्नेः परिमोचिताः ।
कालियो दमितः सर्प इन्द्रश्च विमदः कृतः ॥२६॥

पदच्छेद— गावः सपालाः एतेन दावाग्नेः परिमोचिताः ।
कालियः दमितः सर्पः इन्द्रः च विमदः कृतः ॥

शब्दार्थ—

गावः	३.	गौओं को	दमितः	८.	दमन (किया)
सपालाः	२.	ग्वालों सहित	सर्पः	७.	नाग का
एतेन	१.	इन्होंने	इन्द्रः	१०.	इन्द्र का
दावाग्नेः	४.	दावानल से	च	९.	और
परिमोचिताः ।	५.	बचाया	विमदः	११.	मानमर्दन
कालियः	६.	कालिय	कृतः ॥	१२.	किया

श्लोकार्थ—इन्होंने ग्वालों सहित गौओं को दावानल से बचाया । कालिय नाग का दमन किया । और इन्द्र का मानमर्दन किया ॥

सप्तविंशः श्लोकः

सप्ताहमेकहस्तेन धृतोऽद्रिप्रवरोऽमुना ।
वर्षवाताशनिभ्यश्च परित्रातं च गोकुलम् ॥२७॥

पदच्छेद— सप्ताहम् एक हस्तेन धृतः अद्रिप्रवरः अमुना ।
वर्षवात अशनिभ्यः च परित्रातम् च गोकुलम् ॥

शब्दार्थ—

सप्ताहम्	३.	सप्ताह तक	वर्षवात	८.	वर्षा आँधी
एक	२.	एक	अशनिभ्यः	१०.	वज्रपात से
हस्तेन	४.	हाथ पर	च	७.	तथा
धृतः	६.	उठाये रखा	परित्रातम्	१२.	बचा लिया
अद्रिप्रवरः	५.	गिरिराज पर्वत को (गोवर्धन)	च	९.	और
अमुना ।	१.	इन्होंने	गोकुलम् ॥	११.	गोकुल को

श्लोकार्थ—इन्होंने एक सप्ताह तक हाथ पर गिरिराज गोवर्धन पर्वत को उठाये रखा । तथा वर्षा, आँधी और वज्रपात से गोकुल को बचा लिया ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

गोप्योऽस्य नित्यमुदितहसितप्रेक्षणं मुखम् ।
पश्यन्त्यो विविधांस्तापांस्तरन्ति स्माश्रमं मुदा ॥२८॥

पदच्छेद— गोप्यः अस्य नित्यम् उदित हसित प्रेक्षणम् मुखम् ।
पश्यन्त्यः विविधान् तापान् तरन्ति स्म आश्रमम् मुदा ॥

शब्दार्थ—

गोप्यः	१.	गोपियाँ	पश्यन्त्यः	८.	देखती हुई
अस्य	२.	इनके	विविधान्	११.	अनेक प्रकार के
नित्यम्	३.	नित्य	तापान्	१२.	तापां से
उदित	४.	मन्द	तरन्ति	१३.	मुक्त हो जाती
हसित	५.	मुसकान	स्म	१४.	थीं
प्रेक्षणम्	६.	चितवन और	आश्रमम्	१०.	अनायास ही
मुखम् ।	७.	मुख को	मुदा ॥	९.	हर्ष से

श्लोकार्थ—गोपियाँ इनके नित्य मन्द मुसकान, चितवन और मुख को देखती हुई हर्ष से अनायास ही अनेक प्रकार के तापों से मुक्त हो जाती थीं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

वदन्त्यनेन वंशोऽयं यदोः सुबहुविश्रुतः ।
श्रियं यशो महत्त्वं च लप्स्यते परिरक्षितः ॥२९॥

पदच्छेद— वदन्ति अनेन वंशः अयम् यदोः सुबहु विश्रुतः ।
श्रियम् यशः महत्त्वम् च लप्स्यते परिरक्षितः ॥

शब्दार्थ—

वदन्ति	१.	कहते हैं कि	श्रियम्	१०.	समृद्धि
अनेन	२.	इनके द्वारा	यशः	११.	यश एवम्
वंशः	६.	वंश	महत्त्वम्	१२.	गौरव को
अयम्	४.	यह	च	९.	और
यदोः	५.	यदु का	लप्स्यते	१३.	प्राप्त करेगा
सुबहु	७.	बहुत अधिक	परिरक्षितः ॥	३.	सुरक्षित
विश्रुतः ।	८.	विख्यात होगा			

श्लोकार्थ—कहते हैं कि इनके द्वारा सुरक्षित यह यदु का वंश बहुत अधिक विख्यात होगा और समृद्धि तथा गौरव को प्राप्त करेगा ॥

त्रिंशः श्लोकः

अयं चास्याग्रजः श्रीमान् रामः कमललोचनः ।
प्रलम्बो निहतो येन वत्सको ये बकादयः ॥३०॥

पदच्छेद— अयम् च अस्य अग्रजः श्रीमान् रामः कमल लोचनः ।
प्रलम्बः निहतः येन वत्सकः ये बक आदयः ॥

शब्दार्थ—

अयम् च	१. ये	**प्रलम्बः**	९. प्रलम्ब नामक
अस्य	२. इनके	**निहतः**	१०. असुर
अग्रजः	३. बड़े भाई	**येन**	८. जिन्होंने
श्रीमान्	६. श्रीमान्	**वत्सकः**	११. वत्सासुर
रामः	७. बलराम जी हैं	**ये**	१२. और दूसरे
कमल	४. कमल के समान	**बक**	१३. बक
लोचनः ।	५. नेत्र वाले	**आदयः ॥**	१४. आदि को मारा है

श्लोकार्थ—ये इनके बड़े भाई कमल के समान नेत्र वाले श्रीमान् बलराम जी हैं। जिन्होंने प्रलम्ब नामक असुर, वत्सासुर और दूसरे बक आदि को मारा है ॥

एकःत्रिंशः श्लोकः

जनेष्वेवं ब्रुवाणेषु तूर्येषु निनदत्सु च ।
कृष्णरामौ समाभाष्य चाणूरो वाक्यमब्रवीत् ॥३१॥

पदच्छेद— जनेषु एवम् ब्रुवाणेषु तूर्येषु निनदत्सु च ।
कृष्ण रामौ समाभाष्य चाणूरः वाक्यम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

जनेषु	१. लोग	**कृष्ण**	७. उस समय श्रीकृष्ण
एवम्	२. इस प्रकार	**रामौ**	८. और बलराम को
ब्रुवाणेषु	३. कह रहे थे	**समाभाष्य**	९. सम्बोधित करके
तूर्येषु	५. तुरही आदि बाजे	**चाणूरः**	१०. चाणूर ने
निनदत्सु	६. बज रहे थे	**वाक्यम्**	११. यह बात
च ।	४. और	**अब्रवीत् ॥**	१२. कही

श्लोकार्थ—लोग इस प्रकार कह रहे थे। और तुरही आदि बाजे बज रहे थे। उस समय श्रीकृष्ण और बलराम को सम्बोधित करके चाणूर ने यह बात कही ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

हे नन्दसूनो हे राम भवन्तौ वीरसंमतौ ।
नियुद्धकुशलौ श्रुत्वा राज्ञाऽऽहूतौ दिदृक्षुणा ॥३२॥

पदच्छेद— हे नन्द सूनो हे राम भवन्तौ वीर संमतौ ।
नियुद्ध कुशलौ श्रुत्वा राज्ञा आहूतौ दिदृक्षुणा ॥

शब्दार्थ—

हे नन्द सूनो	१.	हे नन्द के पुत्र (श्रीकृष्ण)	नियुद्ध	६.	तुम्हें कुश्ती लड़ने में
हे राम !	२.	हे बलराम !	कुशलौ	७.	निपुण
भवन्तौ	३.	आप दोनों	श्रुत्वा	८.	सुनकर
वीर	४.	वीरों के	राज्ञा	१०.	महाराज ने
संमतौ ।	५.	आदरणीय हो	आहूतौ	११.	तुम दोनों को बुलाया है
			दिदृक्षुणा ॥	९.	दङ्गल देखने के इच्छुक

श्लोकार्थ—हे नन्द पुत्र श्री कृष्ण ! हे बलराम ! आप वीरों के आदरणीय हो । तुम्हें कुश्ती लड़ने में निपुण सुनकर दङ्गल देखने के इच्छुक महाराजने तुम दोनों को बुलाया है ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

प्रियं राज्ञः प्रकुर्वन्त्यः श्रेयो विन्दन्ति वै प्रजाः ।
मनसा कर्मणा वाचा विपरीतमतोऽन्यथा ॥३३॥

पदच्छेद— प्रियम् राज्ञः प्रकुर्वन्त्यः श्रेयः विन्दन्ति वै प्रजाः ।
मनसा कर्मणा वाचा विपरीतम् अतः अन्यथा ॥

शब्दार्थ—

प्रियम्	५.	प्रिय	मनसा	१.	मन
राज्ञः	४.	राजा का	कर्मणा	२.	कर्म और
प्रकुर्वन्त्यः	६.	करने वाली	वाचा	३.	वाणी से
श्रेयः	८.	कल्याण	विपरीतम्	११.	विपरीत करने वाली प्रजायें
विन्दन्ति	९.	प्राप्त करती हैं	अतः	१०.	इसके
वै प्रजाः ।	७.	प्रजायें निश्चित ही	अन्यथा ॥	१२.	हानि उठाती हैं

श्लोकार्थ—मन, कर्म और वाणी से राजा का प्रिय करने वाली प्रजायें निश्चित ही कल्याण प्राप्त करती हैं ! इसके विपरीत करने वाली प्रजायें हानि उठाती हैं ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

नित्यं प्रमुदिता गोपा वत्सपाला यथा स्फुटम् ।
वनेषु मल्लयुद्धेन क्रीडन्तश्चारयन्ति गाः ॥३४॥

पदच्छेद— नित्यम् प्रमुदिताः गोपाः वत्सपालाः यथा स्फुटम् ।
वनेषु मल्ल युद्धेन क्रीडन्तः चारयन्ति गाः ॥

शब्दार्थ—

नित्यम्	५. सदा	वनेषु	७. जङ्गलों में
प्रमुदिताः	६. हर्षित रह कर	मल्ल	८. कुश्ती
गोपाः	४. ग्वाले	युद्धेन	९. लड़-लड़ कर
वत्सपालाः	३. गाय बछड़े चराने वाले	क्रीडन्तः	१०. खेलते रहते हैं (और)
यथा	२. हैं कि	चारयन्ति	१२. चराते रहते हैं
स्फुटम् ।	१. सच तो यह	गाः ॥	११. गायें

श्लोकार्थ—सच तो यह है कि गाय-बछड़े चराने वाले सदा हर्षित रह कर जङ्गलों में कुश्ती लड़-लड़ कर खेलते रहते हैं और गाय चराते रहते हैं ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

तस्माद् राज्ञः प्रियं यूयं वयं च करवामहे ।
भूतानि नः प्रसीदन्ति सर्वभूतमयो नृपः ॥३५॥

पदच्छेद— तस्मात् राज्ञः प्रियं यूयं वयं च करवामहे ।
भूतानि नः प्रसीदन्ति सर्व भूत मयः नृपः ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१. इसलिये	भूतानि	८. ऐसा करने से (सभी प्राणी)
राज्ञः	५. राजा का	नः	९. हम पर
प्रियम्	६. प्रिय	प्रसीदन्ति	१०. प्रसन्न होंगे (क्योंकि)
यूयम्	४. तुम लोग	सर्व	१२. सभी
वयम्	२. हम लोग	भूतमयः	१३. प्राणियों का स्वरूप होता है
च	३. और	नृपः ॥	११. राजा
करवामहे ।	७. करें		

श्लोकार्थ—इसलिये हम लोग और तुम लोग राजा का प्रिय करें । ऐसा करने से सभी प्राणी हम पर प्रसन्न होंगे । क्योंकि राजा सभी प्राणियों का स्वरूप होता है ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

तन्निशम्याब्रवीत् कृष्णो देशकालोचितं वचः ।
नियुद्धमात्मनोऽभीष्टं मन्यमानोऽभिनन्द्य च ॥३६॥

पदच्छेद— तत् निशम्य अब्रवीत् कृष्णः देशकाल उचितम् वचः ।
नियुद्धम् आत्मनः अभीष्टम् मन्यमानः अभिनन्द्य च ॥

शब्दार्थ—

तत्	१. यह	नियुद्धम्	४. कुश्ती को
निशम्य	२. सुनकर	आत्मनः	५. अपना
अब्रवीत्	१३. कही	अभीष्टम्	६. अभीष्ट
कृष्णः	३. भगवान् श्रीकृष्ण ने	मन्यमानः	७. मानते हुये
देशकाल	१०. देश काल के	अभिनन्द्य	८. अनुमोदन किया
उचितम्	११. अनुसार	च ॥	९. और
वचः ।	१२. बात		

श्लोकार्थ—यह सुन कर भगवान् श्रीकृष्ण ने कुश्ती को अपना अभीष्ट मानते हुये अनुमोदन किया और देश-काल के अनुसार बात कही ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

प्रजा भोजपतेरस्य वयं चापि वनेचराः ।
करवाम प्रियं नित्यं तन्नः परमनुग्रहः ॥३७॥

पदच्छेद— प्रजाः भोजपतेः अस्य वयम् च अपि वनेचराः ।
करवाम प्रियम् नित्यम् तत् नः परम् अनुग्रहः ॥

शब्दार्थ—

प्रजाः	६. प्रजा हैं (हम उनका)	करवाम	९. करें
भोजपतेः	४. कंस की	प्रियम्	८. प्रिय
अस्य	३. इस	नित्यम्	७. नित्य
वयम् च	१. हम	तत् नः	१०. यह हम पर उनका
अपि	२. भी	परम्	११. परम
वनेचराः ।	५. वनवासी	अनुग्रहः ॥	१२. अनुग्रह होगा

श्लोकार्थ—हम भी इस कंस की वनवासी प्रजा हैं । हम उनका नित्य प्रिय करें । यह हम पर उनका परम अनुग्रह होगा ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

बाला वयं तुल्यबलैः क्रीडिष्यामो यथोचितम् ।
भवेन्नियुद्धं माधर्मः स्पृशेन्मल्ल सभासदः ॥३८॥

पदच्छेद— बालाः वयम् तुल्य बलैः क्रीडिष्यामः यथा उचितम् ।
भवेत् नियुद्धम् मा अधर्मः स्पृशेत् मल्ल सभासदः ॥

शब्दार्थ—

बालाः	२. बालक हैं	भवेत्	९. होगी (इससे)
वयम्	१. हम	नियुद्धम्	८. कुश्ती
तुल्य	३. समान	मा	१३. नहीं
बलैः	४. बल वालों के साथ	अधर्मः	१२. पाप
क्रीडिष्यामः	५. खेल करेंगे	स्पृशेत्	१४. छू सकेगा
यथा	६. जो कि	मल्ल	१०. कुश्ती देखने वाले
उचितम् ।	७. उचित	सभासदः ॥	११. सभासदों को

श्लोकार्थ—हम बालक हैं । समान बल वालों के साथ खेल करेंगे । जो कि उचित कुश्ती होगी । कुश्ती देखने वाले सभासदों को पाप नहीं छू सकेगा ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

चाणूर उवाच— न बालो न किशोरस्त्वं बलश्च बलिनां वरः ।
लीलयेभो हतो येन सहस्रद्विपसत्त्वभृत् ॥३९॥

पदच्छेद— न बालः न किशोरः त्वम् बलः च बलिनाम् वरः ।
लीलया इभः हतः येन सहस्रद्विप सत्त्वभृत् ॥

शब्दार्थ—

न बालाः	५. न बालक हो	लीलया	११. खेल ही खेल में
न किशोरः	६. न किशोर हो	इभः	१०. कुवलयापीड हाथी को
त्वम्	४. तुम (भी)	हतः	१२. मार डाला
बलः च	१. बलराम	येन	७. जिन तुमने
बलिनाम्	२. बलवानों में	सहस्रद्विप	८. हजार हाथियों का
वरः ।	३. श्रेष्ठ हैं	सत्त्वभृत् ॥	९. बल रखने वाले

श्लोकार्थ—बलराम बलवानों में श्रेष्ठ हैं । तुम भी न बालक हो, न किशोर हो । जिन तुमने हजार हाथियों का बल रखने वाले कुवलयापीड हाथी को खेल ही खेल में मार डाला ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

तस्माद् भवद्भ्यां बलिभिर्योद्धव्यं नानयोऽत्र वै।
मयि विक्रम वार्ष्णेय बलेन सह मुष्टिकः ॥४०॥

पदच्छेद— तस्मात् भवद्भ्याम् बलिभिः योद्धव्यम् न अनयः अत्र वै।
मयि विक्रम वार्ष्णेय बलेन सह मुष्टिकः॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१.	इसलिए	मयि	९.	मुझ पर
भवद्भ्याम्	२.	आप दोनों को	विक्रम	१०.	जोर अजमाओ
बलिभिः	३.	बलवानों के साथ	वार्ष्णेय	८.	श्रीकृष्ण तुम
योद्धव्यम्	४.	युद्ध करना चाहिये	बलेन	११.	बलराम जी
न	७.	नहीं है	सह	१३.	साथ लड़ेंगे
अनयः	६.	अन्याय	मुष्टिकः॥	१२.	मुष्टिक के
अत्र वै।	५.	इसमें निश्चित ही			

श्लोकार्थ—इसलिये आप दोनों को बलवानों के साथ युद्ध करना चाहिये। इसमें अन्याय नहीं है। श्रीकृष्ण तुम मुझ पर जोर अजमाओ! बलराम जी मुष्टिक के साथ लड़ेंगे॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे कुवलयापीडवधः नाम त्रिचत्वारिंशः अध्यायः॥४३॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

चतुश्चत्वारिंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवं चर्चितसङ्कल्पो भगवान् मधुसूदनः।
आससादाथ चाणूरं मुष्टिकं रोहिणीसुतः ॥१॥

पदच्छेद— एवम् चर्चित सङ्कल्पः भगवान् मधुसूदनः।
आससाद अथ चाणूरम् मुष्टिकम् रोहिणी सुतः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	आससाद	१०. पास पहुँच गये
चर्चित	२. निश्चित	अथ	७. और
सङ्कल्पः	३. सङ्कल्प करके	चाणूरम्	६. चाणूर के
भगवान्	४. भगवान्	मुष्टिकम्	९. मुष्टिक के
मधुसूदनः।	५. श्रीकृष्ण	रोहिणीसुतः ॥	८. बलराम जी

श्लोकार्थ—इस प्रकार निश्चित सङ्कल्प करके भगवान् श्रीकृष्ण चाणूर के और बलराम जी मुष्टिक के पास पहुँच गये ॥

द्वितीयः श्लोकः

हस्ताभ्यां हस्तयोर्बद्ध्वा पद्भ्यामेव च पादयोः।
विचकर्षतुरन्योन्यं प्रसह्य विजिगीषया ॥२॥

पदच्छेद— हस्ताभ्याम् हस्तयोः बद्ध्वा पद्भ्याम् एव च पादयोः।
विचकर्षतुः अन्योन्यं प्रसह्य विजिगीषया ॥

शब्दार्थ—

हस्ताभ्याम्	२. (वे लोग) हाथों से	पादयोः	७. पैरों को
हस्तयोः	३. हाथों को	विचकर्षतुः	११. खींचने लगे
बद्ध्वा	८. बाँधकर	अन्योन्य	१०. परस्पर
पद्भ्याम्	५. पैरों से	प्रसह्य	९. बलपूर्वक
एव	६. ही	विजिगीषया ॥	१. एक दूसरे को जीतने की इच्छा से
च।	४. और		

श्लोकार्थ—एक दूसरे को जीतने की इच्छा से वे लोग हाथों से, हाथों को और पैरों से ही पैरों को बाँधकर बल पूर्वक परस्पर खींचने लगे ॥

तृतीयः श्लोकः

अरत्नी द्वे अरत्निभ्यां जानुभ्यां चैव जानुनी ।
शिरः शीर्ष्णोरसोरस्तावन्योन्यमभिजघ्नतुः ॥३॥

पदच्छेद— अरत्नी द्वे अरत्नीभ्याम् जानुभ्याम् च एव जानुनी ।
शिरः शीर्ष्णा उरसा उरः तौ अन्योन्यम् अभिजघ्नतुः ॥

शब्दार्थ—

अरत्नी	३. पञ्जे	शिरः	९. माथा
द्वे	२. दोनों	शीर्ष्णा	८. माथे से
अरत्नीभ्याम्	१. पञ्जों से	उरसा	१०. छाती से
जानुभ्याम्	७. घुटने	उरः तौ	११. छाती मिला कर वे
च	४. और	अन्योन्यम्	१२. परस्पर
एव	६. ही	अभिजघ्नतुः ॥	१३. चोट करने लगे
जानुनी ।	५. घुटनों से		

श्लोकार्थ—पञ्जों से दोनों पञ्जे और घुटनों से ही घुटने, माथे से माथा, छाती से छाती मिलाकर वे परस्पर चोट करने लगे ॥

चतुर्थः श्लोकः

परिभ्रामणविक्षेपपरिरम्भावपातनैः ।
उत्सर्पणापसर्पणैश्चान्योन्यं प्रत्यरुन्धताम् ॥४॥

पदच्छेद— परिभ्रामण विक्षेप परिरम्भ अवपातनैः ।
उत्सर्पण अपसर्पणैः च अन्योन्यम् प्रतिअरुन्धताम् ॥

शब्दार्थ—

परिभ्रामण	१. वे एक दूसरे को घुमाने	उत्सर्पणा	५. छूट कर निकल जाने
विक्षेप	२. दूर ढकेलने	अपसर्पणैः	७. छोड़ कर पीछे हटने आदि से
परिरम्भ	३. जोर से पकड़ने	च	६. और
अवपातनैः ।	४. पटकने	अन्योन्यम्	८. परस्पर
		प्रतिअरुन्धताम् ॥	९. रोकने लगे

श्लोकार्थ—वे एक दूसरे को घुमाने, दूर ढकेलने, और जोर से पकड़ने, पटकने, छूट कर निकल जाने और छोड़ कर पीछे हटने आदि से, परस्पर रोकने लगे ॥

पञ्चमः श्लोकः

उत्थापनैरुन्नयनैश्चालनैः स्थापनैरपि ।
परस्परं जिगीषन्तावपचक्रतुरात्मनः ॥५॥

पदच्छेद— उत्थापनैः उन्नयनैः चालनैः स्थापनैः अपि ।
परस्परम् जिगीषन्तौ अपचक्रतुः आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

उत्थापनैः	४. उठाने	परस्परम्	२. एक दूसरे को
उन्नयनैः	५. ऊपर ले जाने	जिगीषन्तौ	१. जीतने की इच्छा से वे
चालनैः	६. हिलाने	अपचक्रतुः	९. अपकार करते थे
स्थापनैः	८. स्थिर करने के द्वारा	आत्मनः ॥	३. अपने आप
अपि ।	७. और		

श्लोकार्थ—जीतने की इच्छा से वे एक दूसरे को अपने आप उठाने, ऊपर ले जाने, हिलाने और स्थिर करने के द्वारा अपकार करते थे ॥

षष्ठः श्लोकः

तद् बलाबलवद्युद्धं समेताः सर्वयोषितः ।
ऊचुः परस्परं राजन् सानुकम्पा वरूथशः ॥६॥

पदच्छेद— तत् बलाबलवत् युद्धम् समेताः सर्वं योषितः ।
ऊचुः परस्परम् राजन् स अनुकम्पा वरूथशः ॥

शब्दार्थ—

तत्	२. उस	ऊचुः	११. कहने लगीं
बलाबलवत्	३. बलवान् और निर्बल का	परस्परम्	१०. परस्पर
युद्धम्	४. युद्ध देख कर	राजन्	१. हे राजन् !
समेताः	५. वहाँ आयी हुईं	स अनुकम्पा	८. करुणा वश
सर्वं	६. सभी	वरूथशः ॥	९. अलग-अलग टोलियों में
योषितः ।	७. महिलायें		

श्लोकार्थ— हे राजन् ! उस बलवान् और निर्बल का युद्ध देख कर वहाँ आयी हुईं सभी महिलायें करुणा वश अलग-अलग टोलियों में परस्पर कहने लगीं ॥

सप्तमः श्लोकः

महानयं बताधर्म एषां राजसभासदाम् ।
ये बलावलवद्युद्धं राज्ञोऽन्विच्छन्ति पश्यतः ॥७॥

पदच्छेद— महान् अयम् बत अधर्मः एषाम् राज सभा सदाम् ।
ये बल अबलवत् युद्धम् राज्ञः अन्विच्छन्ति पश्यतः ॥

शब्दार्थ—

महान्	६. बड़ा	ये	८. (जो) के
अयम्	५. यह	बल	९. बलवान् और
बत	१. खेद है कि	अबलवत्	१०. निर्बल के
अधर्मः	७. अधर्म है कि	युद्धम्	११. युद्ध का
एषाम्	२. इस	राज्ञः	१२. राजा के
राज सभा	३. राज सभा के	अन्विच्छन्ति	१४. अनुमोदन करते हैं
सदाम्	४. सदस्यों का	पश्यतः	१३. सामने ही

श्लोकार्थ—खेद है कि इस राज सभा के सदस्यों का यह बड़ा अधर्म है, जो ये बलवान् और निर्बल के युद्ध का राजा के सामने ही अनुमोदन करते हैं ॥

अष्टमः श्लोकः

क्व वज्रसारसर्वाङ्गौ मल्लौ शैलेन्द्रसन्निभौ ।
क्व चातिसुकुमाराङ्गौ किशोरौ नाप्तयौवनौ ॥८॥

पदच्छेद— क्व वज्रसार सर्वाङ्गौ मल्लौ शैलेन्द्र सन्निभौ ।
क्व च अति सुकुमार अङ्गौ किशोरौ नआप्तयौवनौ ॥

शब्दार्थ—

क्व	१. कहाँ	क्व	८. कहाँ
वज्रसार	२. वज्र के समान कठोर	च	७. और
सर्वाङ्गौ	३. सभी अङ्गों वाले	अति	९. अत्यन्त
मल्लौ	६. दोनों पहलवान	सुकुमार	१०. सुकुमार
शैलेन्द्र	४. भारी पर्वत	अङ्गौ	११. अङ्गों वाले
सन्निभौ ।	५. जैसे दिखाई देने वाले	किशोरौ	१२. वे दोनों किशोर
		न आप्त यौवनौ ॥	१३. जो अभी जवान भी नहीं हुये हैं ।

श्लोकार्थ—कहाँ वज्र के समान कठोर सभी अङ्गों वाले, भारी पर्वत के जैसे दिखाई देने वाले दोनों पहलवान और कहाँ अत्यन्त सुकुमार अङ्गों वाले वे दोनों किशोर जो अभी जवान भी नहीं हुये हैं ॥

नवमः श्लोकः

धर्मव्यतिक्रमो ह्यस्य समाजस्य ध्रुवं भवेत् ।
यत्राधर्मः समुत्तिष्ठेन्न स्थेयं तत्र कर्हिचित् ॥९॥

पदच्छेद— धर्म व्यतिक्रमः हि अस्य समाजस्य ध्रुवम् भवेत् ।
यत्र अधर्मः सम् उत्तिष्ठेत् न स्थेयम् तत्र कर्हिचित् ।।

शब्दार्थ—

धर्म	३.	धर्म के	**यत्र**	७.	जहाँ
व्यतिक्रमः	४.	उल्लंघन करने का पाप	**अधर्मः**	८.	अधर्म
हि अस्य	१.	इस	**सम्उत्तिष्ठेत्**	९.	होता हो
समाजस्य	२.	समाज को	**न स्थेयम्**	१२.	नहीं रहना चाहिये
ध्रुवम्	५.	निश्चित ही	**तत्र**	१०.	वहाँ
भवेत् ।	६.	लगेगा	**कर्हिचित् ।।**	११.	कभी भी

श्लोकार्थ—इस समाज को धर्म के उल्लंघन करने का पाप निश्चित ही लगेगा । जहाँ अधर्म होता हो वहाँ कभी भी नहीं रहना चाहिये ।।

दशमः श्लोकः

न सभां प्रविशेत् प्राज्ञः सभ्यदोषाननुस्मरन् ।
अब्रुवन् विब्रुवन्नज्ञो नरः किल्विषमश्नुते ॥१०॥

पदच्छेद— न सभाम् प्रविशेत् प्राज्ञः सभ्यदोषान् अनुस्मरन् ।
अब्रुवन् विब्रुवन् अज्ञः नरः किल्विषम् अश्नुते ।।

शब्दार्थ—

न	६.	नहीं	**अब्रुवन्**	८.	दोषों को न कहने वाला
सभाम्	५.	सभा में	**विब्रुवन्**	९.	विरुद्ध कहने वाला और
प्रविशेत्	७.	प्रवेश करना चाहिये	**अज्ञः**	१०.	अनजान बन जाने वाला
प्राज्ञः	४.	बुद्धिमान् को	**नरः**	११.	मनुष्य
सभ्य	१.	सभासदों के	**किल्विषम्**	१२.	पाप
दोषान्	२.	दोषों को	**अश्नुते ।।**	१३.	का भागी होता है
अनुस्मरन् ।	३.	जानते हुये			

श्लोकार्थ—सभासदों के दोषों को जानते हुये बुद्धिमान् को सभा में प्रवेश नहीं करना चाहिये । क्योंकि दोषों को न कहने वाला, विरुद्ध कहने वाला, अनजान बन जाने वाला मनुष्य पाप का भागी होता है ।।

एकादशः श्लोकः

वल्गतः शत्रुमभितः कृष्णस्य वदनाम्बुजम् ।

वीक्ष्यतां श्रमवार्युप्तं पद्मकोशमिवाम्बुभिः ॥११॥

पदच्छेद— वल्गतः शत्रुम् अभितः कृष्णस्य वदन अम्बुजम् ।

वीक्ष्यताम् श्रमवारि उप्तम् पद्मकोशम् इव अम्बुभिः ॥

शब्दार्थ—

वल्गतः	३.	पैंतरा बदलते हुये	वीक्ष्यताम्	७.	देखो (उनके शरीर पर)
शत्रुम्	१.	शत्रु के	श्रमवारि	८.	पसीने की
अभितः	२.	चारों ओर	उप्तम्	९.	बूंदें
कृष्णस्य	४.	श्रीकृष्ण का	पद्मकोशम्	११.	कमल कोश पर
वदन	५.	मुख	इव	१०.	वैसी लग रही हैं (जैसी)
अम्बुजम् ।	६.	कमल	अम्बुभिः ॥	१२.	जल की बूंदें होती हैं

श्लोकार्थ—शत्रु के चारों ओर पैंतरा बदलते हुये श्रीकृष्ण का मुख कमल देखो। उनके शरीर पर पसीने की बूंदें वैसी लग रही हैं जैसो कमल कोश पर जल की बूंदें होती हैं ॥

द्वादशः श्लोकः

किं न पश्यत रामस्य मुखमाताम्रलोचनम् ।

मुष्टिकं प्रति सामर्षं हाससंरम्भशोभितम् ॥१२॥

पदच्छेद— किम् न पश्यत रामस्य मुखम् अताम्र लोचनम् ।

मुष्टिकम् प्रति स अमर्षम् हास संरम्भ शोभितम् ॥

शब्दार्थ—

किम्	१.	क्या तुम	मुष्टिकम्	८.	जो मुष्टिक के
न	६.	नहीं	प्रति	९.	प्रति
पश्यत	७.	देख रही हो	स अमर्षम्	१०.	क्रोध से युक्त (परन्तु)
रामस्य	४.	बलराम के	हास	११.	हास्य के
मुखम्	५.	मुख को	संरम्भ	१२.	आवेग से
अताम्र	२.	कुछ-कुछ लाल	शोभितम् ॥	१३.	शोभित हैं
लोचनम् ।	३.	नेत्रों वाले			

श्लोकार्थ—क्या तुम कुछ-कुछ लाल नेत्रों वाले बलराम के मुख को नहीं देख रही हो। जो मुष्टिक के प्रति क्रोध से युक्त परन्तु हास्य के आवेग से शोभित है ॥

त्रयोदशः श्लोकः

पुण्या बत व्रजभुवो यदयं नृलिङ्गगूढः पुराणपुरुषो वनचित्रमाल्यः ।
गाः पालयन् सहबलः क्वणयंश्च वेणुं विक्रीडयाञ्चति गिरित्ररमार्चिताङ्घ्रिः ॥१३॥

पदच्छेद— पुण्याः बत व्रज भुवः यद् अयम् नृलिङ्ग गूढः पुराण पुरुषः वन चित्र माल्यः ।
गाः पालयन् सहबलः क्वणयन् च वेणुम् विक्रीडया अञ्चति गिरित्ररमा अङ्घ्रिः ॥

शब्दार्थ—

पुण्याः	२. परम पवित्र है	गाः पालयन्	१०. गौयें चराते
बत व्रज भुवः	१. अहा व्रज भूमि	सहबलः	९. बलरामजी के साथ
यद् अयम्	३. जहाँ यह भगवान्	क्वणयन्	१३. बजाते
नृलिङ्ग गूढः	६. मनुष्य के वेश में छिप कर रहते हैं	च	११. और
पुराण पुरुषः	५. पुराण पुरुष	वेणुम्	१२. बांसुरी
वन चित्र	७. जंगली पुष्पों की रंगबिरंगी	विक्रीडया अञ्चति	१४. खेल खेलतेहुये विचरते हैं
माल्यः ।	८. मालायें धारण करते हैं	गिरित्ररमा अङ्घ्रि ॥	४. शंकर, लक्ष्मी के द्वारा पूजित चरण वाले

श्लोकार्थ—अहा ! व्रज भूमि परम पवित्र है । जहाँ यह भगवान् शंकर, लक्ष्मी के द्वारा पूजित चरण वाले पुराण पुरुष मनुष्य के वेश में छिप कर रहते हैं । जंगली पुष्पों की रंग बिरंगा मालायें धारण करते हैं । बलरामजी के साथ गौयें चराते और बांसुरी बजाते खेल खेलते हुये विचरते हैं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

गोप्यस्तपः किमचरन् यदमुष्य रूपं लावण्यसारमसमोर्ध्वमनन्यसिद्धम् ।
दृग्भिः पिबन्त्यनुसवाभिनवं दुरापमेकान्तधाम यशसः श्रिय ऐश्वरस्य ॥१४॥

पदच्छेद— गोप्यः तपः किम् अचरन् यत् अमुष्य रूपम् लावण्य सारम् असम ऊर्ध्वम् अनन्य सिद्धम् ।
दृग्भिः पिबन्ति अनुसव अभिनवम् दुरापम् एकान्तधाम यशसः श्रियः ऐश्वरस्य ॥

शब्दार्थ—

गोप्यः तपः	१. गोपियों ने तपस्या	दृग्भिः पिबन्ति	१४. नेत्रों से पान करती हैं
किम् अचरन्	२. कौन सी की थी	अनुसव	६. प्रतिक्षण
यत् अमुष्य	३. जो इनके श्रेष्ठ	अभिनवम्	७. नवीन
रूपम्	१३ रूप का	दुरापम्	८. दुर्लभ
लावण्य सारम्	१२. सौन्दर्य के सार भूत	एकान्तधाम	११. परम आश्रय एवम्
असम ऊर्ध्वम्	४. अद्वितीय सबसे ऊपर	यशसः श्रियः	९ यश सौन्दर्य और
अनन्य सिद्धम् ।	५. स्वयं सिद्ध	ऐश्वरस्य ॥	१०. ऐश्वर्य के

श्लोकार्थ—गोपियों ने कौन सी तपस्या की थी । जो इनके श्रेष्ठ, अद्वितीय, सबसे ऊपर, स्वयं सिद्ध, प्रतिक्षण, नवीन, दुर्लभ, यश, सौन्दर्य और ऐश्वर्य के परम आश्रय एवम् सौन्दर्य के सार-भूत रूप का नेत्रों से पान करती हैं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

या दोहनेऽवहनने मथनोपलेपप्रेङ्खेङ्खनार्भरुदितोक्षणमार्जनादौ ।
गायन्ति चैनमनुरक्तधियोऽश्रुकण्ठ्यो धन्या व्रजस्त्रिय उरुक्रमचित्तयानाः ॥१५॥

पदच्छेद— या दोहने अवहनने मथने उपलेप प्रेङ्खेङ्खन अर्भ रुदित उक्षण मार्जन आदौ ।
गायन्ति च एनम् अनुरक्तधियः अश्रु कण्ठ्यः धन्याः व्रजस्त्रियः उरुक्रम चित्तयानाः ॥

शब्दार्थ—

या दोहने	६.	जो दुहने	गायन्ति	१६.	गाती रहती हैं
अवहनने	७.	कूटने	च	१३.	और
मथने	८	मथने	एनम्	१५.	इनके गुणों को
उपलेप	९.	लीपने	अनुरक्तधियः	३.	अनुरक्त बुद्धि वाली और
प्रंङ्खईङ्खन	१०.	झूला-झुलाने	अश्रुकण्ठ्यः	४.	आँसुओं के कारण गद्-गद कण्ठ वाली
अर्भरुदित	११.	बच्चों के रोने पर	धन्याव्रजस्त्रियः	५.	व्रज स्त्रियाँ धन्य हैं
उक्षण	१२.	चुप कराने	उरुक्रम	१.	श्रीकृष्ण में
मार्जन आदौ ।	१४.	झाड़ू लगाने आदि के समय	चित्तयानाः	२.	चित्त लगाने वाली

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण में चित्त लगाने वाली अनुरक्तबुद्धि वाली आँसुओं के कारण गद्-गद कण्ठ वाली व्रज स्त्रियाँ धन्य हैं । जो दुहने, कूटने, मथने, लोपने, झूला-झुलाने और बच्चों के रोने पर चुप कराने और झाड़ू लगाने आदि के समय इनके गुणों को गाती रहती है ॥

षोडशः श्लोकः

प्रातर्व्रजाद् व्रजत आविशतश्चसायंगोभिः समं क्वणयतोऽस्य निशम्य वेणुम् ।
निर्गम्य तूर्णमबलाः पथि भूरिपुण्याःपश्यन्ति सस्मितमुखं सदयावलोकम् ॥१६॥

पदच्छेद—प्रातः व्रजात् व्रजतः आविशतः च सायम् गोभिः सायम् क्वणयतःअस्यनिशम्य वेणुम् ।
निर्गम्य तूर्णम् अबलाः पथिभूरि पुण्याः पश्यन्ति सस्मित मुखम् सदय अवलोकम् ॥

शब्दार्थ—

प्रातःकाल	१.	प्रातःकाल	निर्गम्य	१२.	निकलकर
व्रजात् व्रजतः	४.	व्रज से जाते हुये	तूर्णम् अबलाः	१०.	गोपियाँ शीघ्र घर से
आविशतः	६.	लौटते हुये	पथि	११.	मार्ग में
च सायम्	५.	और सायंकाल	भूरि पुण्याः	९.	परम पुण्यवती
गोभिः समम्	३.	गायों के साथ	पश्यन्ति	१६.	देखती रहती हैं
क्वणयतः	२.	बाँसुरी बजाते हुये	सस्मित	१३.	मन्द मुसकान एवम्
अस्य	७.	उनकी	मुखम्	१५.	श्रीकृष्ण के मुख को
निशम्य वेणुम् ।	८.	बाँसुरी की धुन सुन कर	सदय उवलोकम् ॥	१४.	दयाभरी चितवन से युक्त

श्लोकार्थ—प्राप्तःकाल बाँसुरी बजाते हुये गायों के साथ जाते हुये और सायंकाल लौटते हुये उनकी बाँसुरी को धुन सुन कर परम पुण्यवती गोपियाँ शीघ्र घर से मार्ग में निकल कर मन्द मुसकाव एवम् दयाभरी चितवन से युक्त श्रीकृष्ण के मुख को देखती रहती हैं ॥

सप्तदशः श्लोकः

एवं प्रभाषमाणासु स्त्रीषु योगेश्वरो हरिः ।
शत्रुं हन्तुं मनश्चक्रे भगवान् भरतर्षभ ॥१७॥

पदच्छेद— एवम् प्रभाष माणासु स्त्रीषु योगेश्वरः हरिः ।
शत्रुम् हन्तुम् मनः चक्रे भगवान् भरतर्षभ ॥

शब्दार्थ—

एवम्	३. इस प्रकार	शत्रुम्	९. शत्रु को
प्रभाष	४. बातें करते	हन्तुम्	१०. मार डालने का
माणासु	५. रहने पर	मनः	११. मन में निश्चय
स्त्रीषु	२. स्त्रियों के	चक्रे	१२. किया
योगेश्वरः	६. योगिराज	भगवान्	७. भगवान्
हरिः ।	८. श्रीकृष्ण ने	भरतर्षभ ॥	१. हे भरतवंशियों में शिरोमणि ।

श्लोकार्थ—हे भरतवंशियों में शिरोमणि ! स्त्रियों के इस प्रकार बातें करते रहने पर योगिराज भगवान् श्रीकृष्ण ने शत्रु को मारने का मन में निश्चय किया ॥

अष्टादशः श्लोकः

सभयाः स्त्रीगिरः श्रुत्वा पुत्रस्नेहशुचाऽऽतुरौ ।
पितरावन्वतप्येतां पुत्रयोरबुधौ बलम् ॥१८॥

पदच्छेद— सभयाः स्त्री गिरः श्रुत्वा पुत्र स्नेह शुचा आतुरौ ।
पितरौ अनुअतप्येताम् पुत्रयोः अबुध बलम् ॥

शब्दार्थ—

सभयाः	२. भयपूर्ण	पितरौ	१०. माता-पिता
स्त्री	१. स्त्रियों को	अनुअतप्येताम्	११. पश्चात्ताप करने लगे
गिरः	३. बातें	पुत्रयोः	७. पुत्रों के
श्रुत्वा	४. सुनकर	अबुधौ	९. न जानने वाले
पुत्रस्नेह	५. पुत्र स्नेह वश	बलम् ॥	८. बल को
शुचाआतुरौ ।	६. शोक से विह्वल (तथा)		

श्लोकार्थ—स्त्रियों की भय पूर्ण बातें सुनकर पुत्र स्नेहवश शोक से विह्वल तथा पुत्रों के बल को न जानने वाले माता-पिता (वसुदेव-देवकी) पश्चात्ताप करने लगे ॥

एकोनविंशः श्लोकः

तैस्तैर्नियुद्धविधिभिर्विविधैरच्युतेतरौ ।
युयुधाते यथान्योन्यं तथैव बलमुष्टिकौ ॥१९॥

पदच्छेद— तैः तैः नियुद्ध विधिभिः विविधैः अच्युत इतरौ ।
युयुधाते यथा अन्योन्यम् तथा एव बल मुष्टिकौ ॥

शब्दार्थ—

तैः तैः	२.	उन-उन	युयुधाते	९.	लड़ रहे थे
नियुद्ध	३.	कुश्ती लड़ने की	यथा	७.	जिस प्रकार
विधिभिः	४.	विधियों से	अन्योन्यम्	८.	परस्पर
विविधैः	१.	विभिन्न प्रकार की	तथा एव	१०.	उसी प्रकार
अच्युत	५.	भगवान् श्रीकृष्ण और	बल	११.	बलराम और
इतरौ ।	६.	चाणूर	मुष्टिकौ ॥	१२.	मुष्टिक भी (भिड़े हुये थे)

श्लोकार्थ—विभिन्न प्रकार की उन-उन कुश्ती लड़ने की विधियों से भगवान् श्रीकृष्ण और चाणूर लड़ रहे थे । उसी प्रकार बलराम और मुष्टिक भी भिड़े हुये थे ॥

विंशः श्लोकः

भगवद्गात्रनिष्पातैर्वज्रनिष्पेषनिष्ठुरैः ।
चाणूरो भज्यमानाङ्गो मुहुर्ग्लानिमवाप ह ॥२०॥

पदच्छेद— भगवत् गात्र निष्पातैः वज्र निष्पेष निष्ठुरैः ।
चाणूरः भज्यमान अङ्गः मुहुः ग्लानिम् अवाप ह ॥

शब्दार्थ—

भगवत्	४.	भगवान् के	चाणूरः	९.	चाणूर
गात्र	५.	अङ्गों की	भज्यमान	७.	टूटते हुये
निष्पातैः	६.	रगड़ से	अङ्गः	८.	अङ्गों वाला
वज्र	१.	वज्र की	मुहुः	१०.	बार-बार
निष्पेषु	२.	कीलों के समान	ग्लानिम्	११.	ग्लानि और व्यथा को
निष्ठुरैः ।	३.	कठोर	अवाप ह ॥	१२.	प्राप्त हुआ

श्लोकार्थ—वज्र की कीलों के समान कठोर भगवान् के अङ्गों की रगड़ से टूटते हुये अङ्गों वाला चाणूर बार-बार ग्लानि और व्यथा को प्राप्त हुआ ॥

एकविंशः श्लोकः

स श्येनवेग उत्पत्य मुष्टीकृत्य करावुभौ ।
भगवन्तं वासुदेवं क्रुद्धो वक्षस्यबाधत ॥२१॥

पदच्छेद— सः श्येनवेगः उत्पत्य मुष्टीकृत्य करौ उभौ ।
भगवन्तम् वासुदेवम् क्रुद्धः वक्षसि अबाधत ।।

शब्दार्थ—

सः	२.	उसने	भगवन्तम्	८.	भगवान्
श्येनवेग	१.	बाज के समान वेग वाले	वासुदेवम्	९.	श्रीकृष्ण की
उत्पत्य	७.	झपट कर	क्रुद्धः	३.	कुपित होकर
मुष्टीकृत्य	६.	मुट्ठी बाँध कर (और)	वक्षसि	१०.	छाती पर
करौ	५.	हाथों को	अबाधत ।।	११.	प्रहार किया
उभौ ।	४.	दोनों			

श्लोकार्थ—बाज के समान वेग वाले उसने कुपित होकर दोनों हाथों की मुट्ठी बाँध कर और झपट कर भगवान् श्रीकृष्ण की छाती पर प्रहार किया ।।

द्वाविंशः श्लोकः

नाचलत्तत्प्रहारेण मालाहत इव द्विपः ।
बाह्वोर्निगृह्य चाणूरं बहुशो भ्रामयन् हरिः ॥२२॥

पदच्छेद— न अचलत् तत् प्रहारेण माला आहतः इव द्विपः ।
बाह्वोः निगृह्य चाणूरम् बहुशः भ्रामयन् हरिः ।।

शब्दार्थ—

न अचलत्	३.	विचलित नहीं हुये	बाह्वोः	१०.	दोनों भुजायें
तत्	१.	उसके	निगृह्य	११.	पकड़ कर
प्रहारेण	२.	प्रहार से (भगवान्)	चाणूरम्	९.	चाणूर की
माला	५.	पुष्प माला की	बहुशः	१२.	बहुत वार
आहत	६.	मार से	भ्रामयन्	१३.	घुमाया
इव	४.	जैसे	हरिः ।।	८.	भगवान् (श्रीकृष्ण ने)
द्विपः ।	७.	हाथी (तब)			

श्लोकार्थ—उसके प्रहार से भगवान् श्रीकृष्ण विचलित नहीं हुये, जैसे पुष्प माला की मार से हाथी । तब भगवान् श्रीकृष्ण ने चाणूर की दोनों भुजायें पकड़ कर बहुत बार घुमाया ।।

त्रयोविंशः श्लोकः

भूपृष्ठे पोथयामास तरसा क्षीणजीवितम् ।
विस्रस्ताकल्पकेशस्रगिन्द्रध्वज इवापतत् ॥२३॥

पदच्छेद— भूपृष्ठे पोथयामास तरसा क्षीण जीवितम् ।
विस्रस्त आकल्प केश स्रक् इन्द्रध्वज इव आपतत् ॥

शब्दार्थ—

भूपृष्ठे	४. पृथ्वी पर	आकल्प	६. उसकी वेश भूषा
पोथयामास	५. पटक दिया	केश	७. केश और
तरसा	३. जोर से	स्रक्	८. मालायें
क्षीण	१. उसे अध-	इन्द्रध्वज	१०. वह इन्द्रधनुष के
जीवितम् ।	२. मरा करके	इव	११. समान
विस्रस्त	९. बिखर गयीं	आपतत् ॥	१२. गिर पड़ा

श्लोकार्थ—उसे अधमरा करके जोर से पृथ्वी पर पटक दिया । उसकी वेश भूषा केश और मालायें बिखर गयीं । वह इन्द्र ध्वज के समान गिर पड़ा ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

तथैव मुष्टिकः पूर्वं स्वमुष्ट्याभिहतेन वै ।
बलभद्रेण बलिना तलेनाभिहतो भृशम् ॥२४॥

पदच्छेद— तथा एव मुष्टिकः पूर्वम् स्वमुष्ट्या अभिहतेन वै ।
बलभद्रेण बलिना तलेन अभिहतः भृशम् ॥

शब्दार्थ—

तथा एव	१. उसी प्रकार	बलभद्रेण	७. बलरामजी ने
मुष्टिकः	२. मुष्टिक ने	बलिना	६. बलशाली
पूर्वम्	३. पहले	तलेन	९. एक तमाचा
स्वमुष्ट्या	४. अपने घूंसे से	अभिहतः	१०. लगा दिया
अभिहतेन वै ।	५. प्रहार किया (तब)	भृशम् ॥	८. बड़े जोर से (उसे)

श्लोकार्थ—उसी प्रकार मुष्टिक ने पहले अपने घूंसे से प्रहार किया । तब बलशाली बलरामजी ने बड़े जोर से उसे एक तमाचा लगा दिया ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

प्रवेपितः स रुधिरमुद्वमन् मुखतोऽर्दितः ।
व्यसुः पपातोर्व्युपस्थे वाताहत इवाङ्घ्रिपः ॥२५॥

पदच्छेद— प्रवेपितः सः रुधिरम् उद्वमन् मुखतः अर्दितः ।
व्यसुः पपातः उर्वीउपस्थे वात आहतः इव अङ्घ्रिपः ॥

शब्दार्थ—

प्रवेपितः	२.	कांपता हुआ	व्यसुः	७.	निष्प्राण होकर
सः	१.	वह मुष्टिक	पपात	१२.	गिर पड़ा
रुधिरम्	४.	रक्त	उर्वीउपस्थे	११.	पृथ्वी की गोद में
उद्वमन्	५.	गिराता हुआ	वात	८.	आँधी से
मुखतः	३.	मुंह से	आहतः	९.	उखड़े हुये
अर्दितः ।	६.	व्यथित और	इव अङ्घ्रिप ॥	१०.	वृक्ष के समान

श्लोकार्थ—वह मुष्टिक कांपता हुआ मुंह से रक्त गिराता हुआ, व्यथित और निष्प्राण होकर आंधी से उखड़े हुये वृक्ष के समान पृथ्वी की गोद में गिर पड़ा ॥

षड्विंशः श्लोकः

ततः कूटमनुप्राप्तं रामः प्रहरतां वरः ।
अवधील्लीलया राजन् सावज्ञं वाममुष्टिना ॥२६॥

पदच्छद— ततः कूटम् अनुप्राप्तम् रामः प्रहरतां वरः ।
अवधीत् लीलया राजन् स अवज्ञम् वाम मुष्टिना ॥

शब्दार्थ—

ततः	२.	तदनन्तर	अवधीत्	१२.	मार डाला
कूटम्	७.	कूट नामक पहलवान को	लीलया	८.	खेल-खेल में ही
अनुप्राप्तम्	६.	सामने आये हुये	राजन्	१.	हे राजेन्द्र !
रामः	५.	बलराम ने	स अवज्ञम्	११.	उपेक्षा पूर्वक
प्रहरताम्	३.	योद्धाओं में	वाम	९.	बायें हाथ के
वरः ।	४.	श्रेष्ठ	मुष्टिना ॥	१०.	घूंसे

श्लोकार्थ—हे राजेन्द्र ! तदनन्तर योद्धाओं में श्रेष्ठ बलराम ने सामने आये हुये कूट नामक पहलवान को खेल-खेल में ही बांये हाथ के घूंसे से उपेक्षा पूर्वक मार डाला ॥

सप्तविंशः श्लोकः

तर्ह्येव हि शलः कृष्णपदापहृतशीर्षकः ।
द्विधा विदीर्णस्तोशलक उभावपि निपेततुः ॥२७॥

पदच्छेद— तर्हि एव हि शलः कृष्ण पदा अपहृत शीर्षकः ।
द्विधा विदीर्णः तोशलकः उभौ अपि निपेततुः ॥

शब्दार्थ—

तर्हि एव हि	१.	उसी समय	द्विधा	७.	दो भागों में
शलः	६.	शल और	विदीर्णः	८.	चीरा गया
कृष्ण	२.	कृष्ण के	तोशलकः	९.	तोशल
पदा	३.	पैर (की ठोकर) से	उभौ	१०.	दोनों
अपहृत	४.	कटे हुये	अपि	११.	ही
शीर्षकः ।	५.	सिर वाला	निपेततुः ॥	१२.	गिर पड़े

श्लोकार्थ—उसी समय कृष्ण के पैर की ठोकर से कटे हुये सिर वाला शल और दो भागों में चीरा गया तोशलक दोनों ही गिर पड़े ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

चाणूरे मुष्टिके कूटे शले तोशलके हते ।
शेषाः प्रदुद्रुवुर्मल्लाः सर्वे प्राणपरीप्सवः ॥२८॥

पदच्छेद— चाणूरे मुष्टिके कूटे शले तोशलके हते ।
शेषाः प्रदुद्रुवुः मल्लाः सर्वे प्राण परीप्सवः ॥

शब्दार्थ—

चाणूरे	१.	चाणूर	शेषाः	७.	बचे हुये
मुष्टिके	२.	मुष्टिक	प्रदुद्रुवुः	१२.	भाग खड़े हुये
कूटे	३.	कूट	मल्लाः	९.	पहलवान
शले	४.	शल (और)	सर्वे	८.	सभी
तोशलके	५.	तोशलक के	प्राण	१०.	प्राण
हते ।	६.	मार दिये जाने पर	परीप्सवः ॥	११.	बचाने के लिये

श्लोकार्थ—चाणूर, मुष्टिक, कूट, शल और तोशलक के मार दिये जाने पर बचे हुये सभी पहलवान प्राण बचाने के लिये भाग खड़े हुये ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

गोपान् वयस्यानाकृष्य तैः संसृज्य विजह्रतुः ।
वाद्यमानेषु तूर्येषु वल्गन्तौ रुतनूपुरौ ॥२९॥

दपच्छेद— गोपान् वयस्यान् आकृष्य तैः संसृज्य विजह्रतुः ।
वाद्यमानेषु तूर्येषु वल्गन्तौ रुत नूपुरौ ॥

शब्दार्थ—

गोपान्	२. ग्वाल वालों को	वाद्यमानेषु	५. बजती हुई
वयस्यान्	१. दोनों भाई समवयस्क	तूर्येषु	६. तुरहियों के साथ
आकृष्य	३. खींचकर	वल्गन्तौ	९. मिलाकर
तैः संसृज्य	४. उनके साथ मिलकर	रुत	८. झनकार को
विजह्रतुः	१०. खेल करने लगे	नूपुरौ ॥	७. नूपुरों की

श्लोकार्थ—दोनों भाई समवयस्क ग्वाल वालों को खींचकर उनके साथ मिलकर बजती हुई नूपुरो कीं झनकार को मिलाकर खेल करने लगे ॥

त्रिंशः श्लोकः

जनाः प्रजहृषुः सर्वे कर्मणा रामकृष्णयोः ।
ऋते कंसं विप्रमुख्याः साधवः साधु साध्विति ॥३०॥

पदच्छेद— जनाः प्रजहृषुः सर्वे कर्मणा राम कृष्णयोः ।
ऋते कंसम् विप्रमुख्याः साधवः साधु साधु इति ॥

शब्दार्थ—

जनाः	५. लोग	ऋते	८. छोड़कर
प्रजहृषुः	६. आनन्दित हुये	कंसम्	७. केवल कंस को
सर्वे	४. सभी	विप्रमुख्याः	९. श्रेष्ठ ब्राह्मण और
कर्मणा	३. कार्यं से	साधवः	१०. साधु पुरुष
राम	१. बलराम और	साधु	११. धन्य हैं
कृष्णयोः ।	२. कृष्ण के	साधु इति ॥	१२. धन्य है ऐसा कहने लगे

श्लोकार्थ— बलराम और कृष्ण के कार्यं से सभी लोग आनन्दित हुये केवल कंस को छोड़कर । श्रेष्ठ ब्राह्मण और साधु पुरुष धन्य है, धन्य है, ऐसा कहने लगे ।

एकत्रिंशः श्लोकः

हतेषु मल्लवर्येषु विद्रुतेषु च भोजराट्।
न्यवारयत् स्वतूर्याणि वाक्यं चेदमुवाच ह ॥३१॥

पदच्छेद— हतेषु मल्लवर्येषु विद्रुतेषु च भोजराट्।
न्यवारयत् स्व तूर्याणि वाक्यम् च इदम् उवाच ह ॥

शब्दार्थ—

हतेषु	२. मार दिये जाने पर	स्व	६. अपने
मल्लवर्येषु	१. प्रधान पहलवानों के	तूर्याणि	७. बाजों को
विद्रुतेषु	४. भाग जाने पर	वाक्यम्	११. वाक्य
च	३. दूसरों के	च	९. और
भोजराट्	५. कंस ने	इदम्	१०. यह
न्यवारयत्।	८. बन्द करा दिया	उवाच ह ॥	१२. कहा

श्लोकार्थ—प्रधान पहलवानों के मार दिये जाने पर दूसरों के भाग जाने पर कंस ने अपने बाजों को बन्द करा दिया और यह वाक्य कहा ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

निःसारयत दुर्वृत्तौ वसुदेवात्मजौ पुरात्।
धनं हरत गोपानां नन्दं बध्नीत दुर्मतिम् ॥३२॥

पदच्छेद— निःसारयत दुर्वृत्तौ वसुदेव आत्मजौ पुरात्।
धनम् हरत गोपानाम् नन्दम् बध्नीत दुर्मतिम् ॥

शब्दार्थ—

निःसारयत	५. निकाल दो	धनम्	७. धन
दुर्वृत्तौ	१. दुराचारी	हरत	८. हर लो (और)
वसुदेव	२. वसुदेव के	गोपानाम्	६. गोपों का
आत्मजौ	३. दानों पुत्रों को	नन्दम्	१०. लग रहा था
पुरात्।	४. नगर से बाहर	बध्नाति	११. बाँध लो
		दुर्मतिम् ॥	९. दुर्बुद्धि

श्लोकार्थ—दुराचारी वसुदेव के दोनों पुत्रों को नगर के बाहर निकाल दो। गोपों का धन हर लो। दुर्बुद्धि नन्द को बाँध लो ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

वसुदेवस्तु दुर्मेधा हन्यतामाश्वसत्तमः ।
उग्रसेनः पिता चापि सानुगः परपक्षगः ॥३३॥

पदच्छेद— वसुदेवः तु दुर्मेधाः हन्यताम् आशु असत्तमः ।
उग्रसेनः पिता च अपि स अनुगः परपक्षकः ॥

शब्दार्थ—

बसुदेवः तु	३.	वसुदेव को	उग्रसेनः	९.	उग्रसेन को
दुर्मेधाः	१.	दुर्बुद्धि (और)	पिता	८.	पिता
हन्यताम्	५.	मार डालो	च अपि	१०.	भी (मार डालो)
आशु	४.	शीघ्र	स अनुगः	६.	अनुयायियों के साथ
असत्तमः ।	२.	दुष्ट	पर पक्षकः ॥	७.	शत्रुपक्ष से मिले हुये

श्लोकार्थ—दुर्बुद्धि और दुष्ट वसुदेव को शीघ्र मार डालो । अनुयायियों के साथ शत्रुपक्ष से मिले हुये पिता उग्रसेन को भी मार डालो ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

एवं विकत्थमाने वै कंसे प्रकुपितोऽव्ययः ।
लघिम्नोत्पत्य तरसा मञ्चमुत्तुङ्गमारुहत् ॥३४॥

पदच्छेद— एवम् विकत्थमाने वै कंसे प्रकुपितः अव्ययः ।
लघिम्ना उत्पत्य तरसा मञ्चम् उत्तुङ्गम् आरुहत् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	लघिम्ना	६.	फुर्ती से
विकत्थमाने	३.	बढ़-बढ़ कर कहने पर	उत्पत्य	८.	उछलकर
वै कंसे	१.	कंस से	तरसा	७.	वेग पूर्वक
प्रकुपितः	४.	कुपित होकर	मञ्चम्	१०.	मञ्च पर
अव्ययः ।	५.	अविनाशी भगवान् श्रीकृष्ण	उत्तुङ्गम्	९.	ऊंचे
			आरुहत् ॥	११.	जा चढ़े

श्लोकार्थ—कंस के इस प्रकार बढ़-बढ़ कर कहने पर कुपित होकर अविनाशी भगवान् श्रीकृष्ण फुर्ती से वेग पूर्वक उछल कर ऊँचे मञ्च पर जा चढ़े ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

तमाविशन्तमालोक्य मृत्युमात्मन आसनात् ।
मनस्वी सहसोत्थाय जगृहे सोऽसिचर्मणी ॥३५॥

पदच्छेद— तम् आविशन्तम् आलोक्य मृत्युम् आत्मनः आसनात् ।
मनस्वी सहसा उत्थाय जगृहे सः असि चर्मणी ॥

शब्दार्थ—

तम्	३. उन (श्रीकृष्ण) को		मनस्वी	६. मनस्वी कंस ने
आविशन्तम्	४. आते हुये		सहसा	८. एकाएक
आलोक्य	५. देख कर		उत्थाय	९. उठ कर
मृत्युम्	२. मृत्यु रूप		जगृहे	१२. उठा ली
आत्मनः	१. अपने		सः असि	१०. उसने तलवार और
आसनात् ।	७. आसन से		चर्मणी ॥	११. ढाल

श्लोकार्थ— उसने अपने मृत्यु रूप उन श्रीकृष्ण को आते हुये देख कर मनस्वी कंस ने आसन से एकाएक उठ कर तलवार और ढाल उठा ली ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

तं खड्गपाणिं विचरन्तमाशु श्येनं यथा दक्षिणसव्यमम्बरे ।
समग्रहीद् दुर्विषहोग्रतेजा यथोरगं तार्क्ष्यसुतः प्रसह्य ॥३६॥

पदच्छेद— तम् खड्गपाणिम् विचरन्तम् आशु श्येनम् यथा दक्षिण सव्यम् अम्बरे ।
समग्रहीत् दुर्विषह उग्रतेजाः यथा उरगम् तार्क्ष्यसुतः प्रसह्य ॥

शब्दार्थ—

तम्	७. उसे	समग्रहीत	११. पकड़ लिया
खड्गपाणिम्	१. हाथ में तलवार लेकर	दुर्विषह	८. अत्यन्त दुःसह
विचरन्तम्	६. पैंतरा बदलते हुये	उग्रतेजाः	९. प्रचण्ड वेग वाले (भगवान् ने)
आशु	५. शीघ्र ही फुर्ती से	यथा	१२. जैसे
श्येनम् यथा	३. बाज के समान	उरगम्	१४. सांप को (पकड़ लेता है)
दक्षिण सव्यम्	४. दाँयीं और बायीं ओर	तार्क्ष्य सुतः	१३. गरुड़
अम्बरे ।	२. आकाश में	प्रसह्य ॥	१०. वैसे ही बल पूर्वक

श्लोकार्थ—हाथ में तलवार लेकर आकाश में बाज के समान दाँयीं और बाँयीं ओर शीघ्र ही फुर्ती से उसे पैंतरा बदलते हुये अत्यन्त दुःसह प्रचण्ड वेग वाले भगवान् ने वैसे ही बल पूर्वक पकड़ लिया, जैसे गरुड़ सांप को पकड़ लेता है ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

प्रगृह्य केशेषु चलत्किरीटं निपात्य रङ्गोपरि तुङ्गमञ्चात् ।
तस्योपरिष्टात् स्वयमब्जनाभः पपात विश्वाश्रय आत्मतन्त्रः ।।३७।।

पदच्छेद— प्रगृह्य केशेषु चलत् किरीटम् निपात्य रङ्ग उपरि तुङ्ग मञ्चात् ।
तस्य उपरिष्टात् स्वयम् अब्जनाभः पपात विश्व आश्रयः आत्मतन्त्रः ।।

शब्दार्थ—

प्रगृह्य	४. पकड़ कर (श्रीकृष्ण ने)	तस्य	१२. उसके
केशेषु	३. उसके केशों को	उपरिष्टात्	१३. ऊपर
चलत्	१. गिरे हुये	स्वयम्	११. स्वयम्
किरीटम्	२. मुकुट वाले	अब्जनाभः	१०. कमलनाभ भगवान्
निपात्य	७. गिरा दिया (और)	पपात	१४. कूद पड़े
रङ्ग उपरि	६. रङ्ग भूमि में	विश्व आश्रय	८. संसार के आश्रय एवं
तुङ्ग मञ्चात् ।	५. ऊंचे मञ्च से (उसे)	आत्मतन्त्रः ।।	९. परम स्वतन्त्र

श्लोकार्थ—गिरे हुये मुकुट वाले उसके केशों को पकड़ कर श्रीकृष्ण ने ऊंचे मञ्च से उसे रङ्ग भूमि में गिरा दिया । और संसार के आश्रय एवम् परम स्वतन्त्र कमल नाभ भगवान् स्वयम् उसके ऊपर कूद पड़े ।।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

तं सम्परेतं विचकर्ष भूमौ हरिर्यथेभं जगतो विपश्यतः ।
हाहेति शब्दः सुमहांस्तदाभूदुदीरितः सर्वजनैर्नरेन्द्र ।।३८।।

पदच्छेद— तम् सम्परेतम् विचकर्ष भूमौ हरिः यथा इभम् जगतः विपश्यतः ।
हा हा इति शब्दः सुमहान् तदाभः उदीरितः सर्व जनैः नरेन्द्र ।।

शब्दार्थ—

तम्	३. कंस को (भगवान् श्रीकृष्ण)	हा हा इति	१२. हाय-हाय ऐसा
सम्परेतम्	२. मरे हुये	शब्दः सुमहान्	१३. शब्द बहुत ऊंची
विचकर्ष	५. घसीटने लगे	तदा	९. उस समय
भूमौ	४. धरती पर (उसी प्रकार)	अभूत्	१५. होने लगा
हरिः यथा	६. जैसे सिंह	उदरतः	१४. आवाज में
इभम्	७. हाथी को (घसीटता है)	सर्व	१०. सभी
जगतः विपश्यतः ।	१. सबके देखते-देखते	जनैः	११. लोगों के मुंह से
		नरेन्द्र ।।	८. हे महाराज !

श्लोकार्थ—सबके देखते-देखते मरे हुये कंस को भगवान् श्रीकृष्ण धरती पर उसी प्रकार घसीटने लगे । जैसे सिंह हाथी को घसीटता है । हे महाराज ! उस समय सभी लोगों के मुँह से हाय-हाय ऐसा शब्द बहुत ऊंची आवाज में होने लगा ।।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

स नित्यदोद्विग्नधिया तमीश्वरं पिबन् वदन् वा विचरन् स्वपञ्छ्वसन् ।
ददर्श चक्रायुधमग्रतो यस्तदेव रूपं दुरवापमाप ॥३९॥

पदच्छेद— सः नित्यदा उद्विग्नधिया तम् ईश्वरम् पिबन् वदन् वा विचरन् स्वपन् श्वसन् ।
ददर्श चक्र आयुधम् अग्रतः यः तत् एव रूपम् दुरवापम् आप ॥

शब्दार्थ—

सः नित्यदा	२.	वह नित्य ही	ददर्श	११.	देखता रहता था
उद्विग्नधिया	३.	घबराई हुई बुद्धि से	चक्र आयुधम्	९.	चक्रनामक अस्त्र लिये हुये
तम् ईश्वरम्	१०.	उन भगवान् श्रीकृष्ण को	अग्रतः	८.	अपने सामने
पिबन् वदन्	४.	खाते-पीते बोलते	यः	१.	जो
वा विचरन्	५.	या चलते	तत् एव	१२.	अतः वह उसी
स्वयम्	६.	सोते और	रूपम् दुरवापम्	१३.	रूप को दुर्लभ
श्वपन् ।	७.	सांस लेते	आप ॥	१४.	प्राप्त हुआ

श्लोकार्थ—जो वह नित्य ही घबराई हुई बुद्धि से खाते, पीते बोलते या चलते सोते ओर सांस लेते अपने सामने चक्र नामक अस्त्र लिये हुये उन भगवान् श्रीकृष्ण को देखता रहता था । अतः वह उसी दुर्लभ रूप को प्राप्त हुआ ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

तस्यानुजा भ्रातरोऽष्टौ कङ्कन्यग्रोधकादयः ।
अभ्यधावन्नभिक्रुद्धा भ्रातुर्निर्वेशकारिणः ॥४०॥

पदच्छेद— तस्य अनुजाः भ्रातरः अष्टौ कङ्क न्यग्रोधक आदयः ।
अभ्यधावन् अभिक्रुद्धाः भ्रातुः निर्वेश कारिणः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उसके	आदयः	४.	आदि
अनुजाः	६.	छोटे	अभ्यधावन्	१२.	भगवान् श्रीकृष्ण की ओर दौड़ें
भ्रातरः	७.	भाई	अभिक्रुद्धाः	८.	अत्यन्तक्रुद्ध होकर
अष्टौ	५.	आठ	भ्रातुः	९.	भाई का
कङ्क	२.	कङ्क	निर्वेश	१०.	बदला
न्यग्रोधक ।	३.	न्यग्रोधक	कारिणः ॥	११.	लेने के लिये

श्लोकार्थ—उसके कङ्क, न्यग्रोधक आदि आठ छोटे भाई अत्यन्त क्रुद्ध होकर भाई का बदला लेने के लिये भगवान् श्रीकृष्ण की ओर दौड़े ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

तथातिरभसांस्तांस्तु संयत्तान् रोहिणीसुतः ।
अहन् परिघमुद्यम्य पशूनिव मृगाधिपः ॥४१॥

पदच्छेद— तथा अति रभसान् तान् तु संयत्तान् रोहिणी सुतः ।
अहन् परिघम् उद्यम्य पशून् इव मृगाधिपः ।।

शब्दार्थ—

तथा	१. उस प्रकार	अहन्	९. मार दिया
अति	२. अत्यन्त	परिघम्	७. परिघ अस्त्र
रभसान्	३. वेग से	उद्यम्य	८. उठाकर वैसे ही
तान् तु	५. उन्हें	पशून्	१२. पशुओं को (मार देता है)
संयत्तान्	४. युद्ध के लिये तैयार	इव	१०. जैसे
रोहिणी सुतः ।	६. बलराम जी ने	मृगाधिपः ।।	११. सिंह

श्लोकार्थ—उस प्रकार अत्यन्त वेग से युद्ध के लिये तैयार उन्हें बलराम जी ने परिघ अस्त्र उठाकर वैसे ही मार दिया, जैसे सिंह पशुओं को मार देता है ।।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

नेदुर्दुन्दुभयो व्योम्नि ब्रह्मेशाद्या विभूतयः ।
पुष्पैः किरन्तस्तं प्रीताः शशंसुर्ननृतुः स्त्रियः ॥४२॥

पदच्छेद— नेदुः दुन्दभयः व्योम्नि ब्रह्मा ईश आद्याः विभूतयः ।
पुष्पैः किरन्तः तम् प्रीताः शशंसुः ननृतुः स्त्रियः ।।

शब्दार्थ—

नेदुः	३. बजने लगीं	पुष्पैः	८. पुष्पों की
दुन्दुभयः	२. दुन्दुभियाँ	किरन्तः तम्	९. वर्षा करते हुये उनकी
व्योम्नि	१. उस समय आकाश में	प्रीताः	७. प्रसन्न होकर
ब्रह्मा ईश	४. ब्रह्मा-शङ्कर	शशंसुः	१०. स्तुति करने लगे (और)
आद्याः	५. आदि	ननृतुः	१२. नाचने लगीं
विभूतयः ।	६. देवता	स्त्रियः ।।	११. और स्त्रियाँ

श्लोकार्थ—उस समय आकाश में दुन्दुभियाँ बजने लगीं । ब्रह्मा शङ्कर आदि देवता प्रसन्न होकर पुष्पों की वर्षा करते हुये उनकी स्तुति करने लगे । और स्त्रियाँ नाचने लगीं ।।

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

तेषां स्त्रियो महाराज सुहृन्मरणदुःखिताः ।
तत्राभीयुर्विनिघ्नन्त्यः शीर्षाण्यश्रुविलोचनाः ॥४३॥

पदच्छेद— तेषाम् स्त्रियः महाराज सुहृत् मरण दुःखिताः ।
तत्र अभीयुः विनिघ्नन्त्यः शीर्षाणि अश्रु विलोचनाः ॥

शब्दार्थ—

तेषाम्	२.	उनकी	तत्र	११.	वहाँ
स्त्रियः	३.	स्त्रियाँ	अभीयुः	१२.	आयीं
महाराज	१.	हे महाराज !	विनिघ्नन्त्यः	८.	पीटती हुईं
सुहृत्	४.	बन्धुओं की	शीर्षाणि	७.	सिर
मरण	५.	मृत्यु से	अश्रु	१०.	आंसू भरे
दुःखिताः ।	६.	दुःखी होकर (अपने)	विलोचनाः ॥	९.	नेत्रों में

श्लोकार्थ—हे महाराज ! उनकी स्त्रियाँ बन्धुओं की मृत्यु से दुःखी होकर अपने सिर पीटती हुई नेत्रों में आंसू भरे वहाँ आयीं ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

शयानान् वीरशय्यायां पतीनालिङ्ग्य शोचतीः ।
विलेपुः सुस्वरं नार्यो विसृजन्त्यो मुहुः शुचः ॥४४॥

पदच्छेद— शयानान् वीर शय्यायाम् पतीन् आलिङ्ग्य शोचतीः ।
विलेपुः सुस्वरम् नार्यः विसृजन्त्यः मुहुः शुचः ॥

शब्दार्थ—

शयानान्	३.	सोये हुये	विलेपुः	१२.	विलाप करने लगीं
वीर	१.	वीरों की	सुस्वरम्	११.	ऊंचे स्वर से
शय्यायाम्	२.	शय्या पर	नार्यः	७.	स्त्रियाँ
पतीन्	४.	पतियों का	विसृजन्त्यः	१०.	गिराकर
आलिङ्ग्य	५.	आलिङ्गन करके	मुहुः	८.	बार-बार
शोचतीः ।	६.	शोक मानती हुई	शुचः ॥	९.	आंसू

श्लोकार्थ—वीरों की शय्या पर सोये हुये पतियों का आलिङ्गन करके शोक मानती हुई स्त्रियाँ बार-बार आंसू गिरा कर ऊंचे स्वर से विलाप करने लगीं ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

हा नाथ प्रिय धर्मज्ञ करुणानाथवत्सल ।
त्वया हतेन निहता वयं ते सगृहप्रजाः ॥४५॥

पदच्छेद— हा नाथ प्रिय धर्मज्ञ करुण अनाथ वत्सल ।
त्वया हतेन निहताः वयम् ते सगृह प्रजाः ॥

शब्दार्थ—

हा नाथ	१.	हा नाथ	त्वया	७.	आपके
प्रिय	२.	हे प्यारे !	हतेन	८.	मार दिये जाने से
धर्मज्ञ	३.	हे धर्मज्ञ !	निहताः	१२.	मार दिये गये हैं
करुण	४.	हे करुणामय !	वयम्	११.	हम सब
अनाथ	५.	अनाथों के !	ते संगृह	९.	आपके घर और
वत्सल ।	६.	स्नेही	प्रजाः ॥	१०.	प्रजा सहित

श्लोकार्थ—हा नाथ ! हे प्यारे, हे धर्मज्ञ, हे करुणामय, हे अनाथों के स्नेही ! आपके मार दिये जाने पर आपके घर और प्रजासहित हम सब मार दिये गये हैं ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

त्वया विरहिता पत्या पुरीयं पुरुषर्षभ ।
न शोभते वयमिव निवृत्तोत्सवमङ्गला ॥४६॥

पदच्छेद— त्वया विरहिता पत्या पुरी इयम् पुरुषर्षभ ।
न शोभते वयम् इव निवृत्ता उत्सव मङ्गला ॥

शब्दार्थ—

त्वया	३.	आप	शोभते	७.	शोभित हो रही है (और)
विरहिता	५.	विरह से	वयम्	८.	हमारी
पत्या	४.	स्वामी के	इव	९.	तरह
पुरी इयम्	२.	यह नगरी	निवृत्ता	१२.	रहित हो गई है
पुरुषर्षभ ।	१.	पुरुष श्रेष्ठ	उत्सव	१०.	आनन्द
न	६.	नहीं	मङ्गला ॥	११.	मङ्गल से

श्लोकार्थ—हे पुरुषश्रेष्ठ ! यह नगरी आप स्वामी के विरह से शोभित नहीं हो रही है । और हमारी तरह आनन्द मङ्गल से रहित हो गई है ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

अनागसां त्वं भूतानां कृतवान् द्रोहमुल्वणम् ।
तेनेमां भो दशां नीतो भूतध्रुक् को लभेत शम् ॥४७॥

पदच्छेद— अनागसाम् त्वम् भूतानाम् कृतवान् द्रोहम् उल्वणम् ।
तेन इमाम् भो दशाम् नीतः भूत ध्रुक् कः लभेत शम् ॥

शब्दार्थ—

अनागसाम् त्वम्	२.	आपने निरपराध	तेन इमाम्	७.	उसी से इस
भूतानाम्	३.	प्राणियों से	भो	१.	हे स्वामी
कृतवान्	६.	किया	दशाम् नीतः	८.	गति को प्राप्त हुये
द्रोहम्	५.	द्रोह	भूतध्रुक्	९.	प्राणियों से द्रोह करने वाला
उल्वणम् ।	४.	घोर	कः	१०.	कौन मनुष्य
			लभेत् शम् ॥	११.	शान्ति पा सकता है

श्लोकार्थ—हे स्वामी ! आपने निरपराध प्राणियों से घोर द्रोह किया । उसी से इस गति को प्राप्त हुये । प्राणियों से द्रोह करने वाला कौन मनुष्य शान्ति पा सकता है ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

सर्वेषामिह भूतानामेष हि प्रभवाप्ययः ।
गोप्ता च तदवध्यायी न क्वचित् सुखमेधते ॥४८॥

पदच्छेद— सर्वेषाम् इह भूतानाम् एव हि प्रभव अप्ययः ।
गोप्ता च तत् अवध्यायी न क्वचित् सुखम् एधते ॥

शब्दार्थ—

सर्वेषाम्	३.	सभी	गोप्ता च	७.	रक्षक हैं तथा
इह	१.	यहाँ	तत्	८.	उनका
भूतानाम्	४.	प्राणियों की	अवध्यायी	९.	तिरस्कार करने वाला
एषः हि	२.	ये ही (भगवान्)	न क्वचित्	१०.	कहीं नहीं
प्रभव	५.	उत्पत्ति और	सुखम्	११.	सुख
अप्ययः ।	६.	पालन के आधार	एधते ॥	१२.	पा सकता है

श्लोकार्थ—यहाँ वे ही भगवान् सभी प्राणियों की उत्पत्ति और पालन के आधार तथा रक्षक हैं । उनका तिरस्कार करने वाला कहीं नहीं सुख पा सकता है ॥

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—राजयोषित आश्वास्य भगवाँल्लोकभावनः ।
यामाहुर्लौकिकीं संस्थां हतानां समकारयत् ॥४९॥

पदच्छेद— राजयोषितः आश्वास्य भगवान् लोक भावनः ।
याम् आहुः लौकिकीम् संस्थाम् हतानाम् समकारयत् ॥

शब्दार्थ—

राजयोषितः	४.	रानियों को	याम्	८.	जो
आश्वास्य	५.	सान्त्वना देकर	आहुः	१०.	कही गई है
भगवान्	३.	भगवान् श्रीकृष्ण ने	लौकिकीम्	७.	लोक रीति के अनुसार
लोक	१.	संसार के	संस्थाम्	९.	अन्त्येष्टि क्रिया
भावनः ।	२.	जीवन दाता	हतानाम्	६.	मरने वालों की
			समकारयत् ॥	११.	वह सब करवायी

श्लोकार्थ—संसार के जीवन दाता भगवान् श्रीकृष्ण ने रानियों को सान्त्वना देकर मरने वालों की लोक रीति के अनुसार जो अन्त्येष्टि क्रिया कही गई है, वह सब करवायी ॥

पञ्चाशः श्लोकः

मातरं पितरं चैव मोचयित्वाथ बन्धनात् ।
कृष्णरामौ ववन्दाते शिरसाऽऽस्पृश्य पादयोः ॥५०॥

पदच्छेद— मातरम् पितरम् च एव मोचयित्वा अथ बन्धनात् ।
कृष्ण रामौ ववन्दाते शिरसा आस्पृश्य पादयोः ॥

शब्दार्थ—

मातरम्	२.	माता	कृष्ण	८.	कृष्ण और
पितरम्	४.	पिता को	रामौ	९.	बलराम ने
च	३.	और	ववन्दाते	१३.	वन्दना की
एव	७.	ही	शिरसा	१०.	सिर से (उनके)
मोचयित्वा	६.	छुड़ाकर	आस्पृश्य	१२.	स्पर्श करके
अथ	१.	(तदनन्तर)	पादयोः ॥	११.	चरणों का
बन्धनात् ।	५.	बन्धन से			

श्लोकार्थ—तदनन्तर माता और पिता को बन्धन से छुड़ाकर ही कृष्ण और बलराम ने सिर से उनके चरणों का स्पर्श करके वन्दना की ॥

एकपञ्चाशः श्लोकः

देवकी वसुदेवश्च विज्ञाय जगदीश्वरौ ।
कृतसंवन्दनौ पुत्रौ सस्वजाते न शङ्कितौ ॥५१॥

पदच्छेद— देवकी वसुदेवश्च विज्ञाय जगदीश्वरौ ।
कृत संवन्दनौ पुत्रौ सस्वजाते न शङ्कितौ ॥

शब्दार्थ—

देवकी	१.	देवकी	कृत	७.	करने वाले
वसुदेवश्च	२.	वसुदेव ने और	संवन्दनौ	६.	वन्दना
विज्ञाय	५.	जान कर	पुत्रौ	८.	(अपने) पुत्रों को
जगत्	३.	उन्हें संसार के	सस्वजाते	१०.	हृदय सेलगाया
ईश्वरौ ।	४.	स्वामी	न	११.	नहीं
			शङ्कितौ ॥	६.	शंका युक्त होने के कारण

श्लोकार्थ—देवकी और वसुदेव ने उन्हें संसार के स्वामी जान कर वन्दना करने वाले अपने पुत्रों को शंकायुक्त होने के कारण हृदय से नहीं लगाया ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
कंसवधो नाम चतुश्चत्वारिंशः अध्यायः ॥४४॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

पञ्चचत्वारिंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— पितरावुपलब्धार्थौ विदित्वा पुरुषोत्तमः ।
मा भूदिति निजां मायां ततान जनमोहिनीम् ॥१॥

पदच्छेद— पितरौ उपलब्ध अर्थौ विदित्वा पुरुषोत्तमः ।
मा भूत् इति निजाम् मायाम् ततान जनमोहिनीम् ॥

शब्दार्थ—

पितरौ	२. माता-पिता को	इति	५. यह सोचकर कि
उपलब्ध अर्थौ	३. मेरा ज्ञान हो गया है	निजाम्	८. अपनी
विदित्वा	४. ऐसा समझ कर (और)	मायाम्	९. माया को
पुरुषोत्तमः ।	१. भगवान् श्रीकृष्ण ने	ततान	१०. फैला दिया
मा भूत्	६. ऐसा नहीं होना चाहिये	जनमोहिनीम् ॥	७. लोगों को मोहित करने वाली

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने माता-पिता को मेरा ज्ञान हो गया है। ऐसा समझ कर और यह सोच कर कि ऐसा नहीं होना चाहिये, लोगों को मोहित करने वाली अपनी माया को फैला दिया ॥

द्वितीयः श्लोकः

उवाच पितरावेत्य साग्रजः सात्वतर्षभः ।
प्रश्रयावनतः प्रीणन्नम्ब तातेति सादरम् ॥२॥

पदच्छेद— उवाच पितरौ एत्य स अग्रजः सात्वत ऋषभः ।
प्रश्रय अवनतः प्रीणन् अम्ब तात इति सादरम् ॥

शब्दार्थ—

उवाच	१२. कहने लगे	प्रश्रय	६. विनय से
पितरौ	४. माता-पिता के	अवनतः	७. झुक कर
एत्य	५. पास जाकर	प्रीणन्	११. प्रसन्न करते हुये
स अग्रजः	३. बड़े भाई के साथ	अम्ब तात	८. मा-पिता जी
सात्वत	१. यदुवंशियों में	इति	९. इन शब्दों से
ऋषभः ।	२. श्रेष्ठ (श्रीकृष्ण ने)	सादरम् ॥	१०. आदरपूर्वक

श्लोकार्थ—यदुवंशियों में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण बड़े भाई के साथ माता-पिता के पास जाकर विनय से झुक कर माता-पिता जी इन शब्दों से आदर पूर्वक प्रसन्न करते हुये कहने लगे ॥

तृतीयः श्लोकः

नास्मत्तो युवयोस्तात नित्योत्कण्ठितयोरपि ।
बाल्यपौगण्डकैशोराः पुत्राभ्यामभवन् क्वचित् ॥३॥

पदच्छेद— न अस्मत्तः युवयोः तात नित्य उत्कण्ठितयोः अपि ।
बाल्य पौगण्ड कैशोराः पुत्राभ्याम् अभवन् क्वचित् ॥

शब्दार्थ—

न	१२. नहीं	बाल्य	८. बाल्यावस्था
अस्मत्तः	२. हमारे लिये	पौगण्ड	९. पौगण्ड और
युवयोः	६. आप दोनों को	कैशोराः	१०. किशोरावस्था का सुख
तात	१. पिता जी-माता जी	पुत्राभ्याम्	७. पुत्रों से
नित्य	३. सदा	अभवन्	१३. प्राप्त हुये
उत्कण्ठितयोः	४. उत्कण्ठित रहने पर	क्वचित्	११. कहीं
अपि ।	५. भी		

श्लोकार्थ—पिता जी-माता जी ! हमारे लिये सदा उत्कण्ठित रहने पर भी आप दोनों को पुत्रों से बाल्यावस्था, पौगण्ड और किशोरावस्था का सुख कहीं नहीं प्राप्त हुये ॥

चतुर्थः श्लोकः

न लब्धो दैवहतयोर्वासो नौ भवदन्तिके ।
यां बालाः पितृगेहस्था विन्दन्ते लालिता मुदम् ॥४॥

पदच्छेद— न लब्धः दैव हतयोः वासः नौ भवत् अन्तिके ।
याम् बालाः पितृ गेहस्थाः विन्दन्ते लालिताः मुदम् ॥

शब्दार्थ—

न लब्धः	६. नहीं मिला	याम्	९. जिस
दैवहतयोः	१. दुर्भाग्य के मारे	बालाः	८. बालक
वासः	५. निवास	पितृगेहस्थाः	७. पिता के घर रहने वाले
नौ	२. हम लोगों को	विन्दन्ते	१२. पाते हैं (वह हमें नहीं मिला)
भवत्	३. आपके	लालिताः	१०. लाड़ प्यार के
अन्तिके ।	४. पास	मुदम् ॥	११. सुख को

श्लोकार्थ—दुर्भाग्य के मारे हम लोगों को आप के पास निवास नहीं मिला । पिता के घर रहने वाले बालक जिस लाड़प्यार के सुख को पाते हैं, वह हमें नहीं मिला ॥

पञ्चमः श्लोकः

सर्वार्थसम्भवो देहो जनितः पोषितो यतः ।
न तयोर्याति निर्वेशं पित्रोर्मर्त्यः शतायुषा ॥५॥

पदच्छेद— सर्वार्थ सम्भवः देहः जनितः पोषितः यतः ।
न तयोः याति निर्वेशम् पित्रोः मर्त्यः शत आयुषा ॥

शब्दार्थ—

सर्वार्थ	१.	सभी प्रयोजनों को	तयोः	७.	उन दोनों
सम्भवः	२.	सिद्ध करने वाला	याति	१४.	चुका सकता है
देहः	३.	शरीर	निर्वेशम्	९.	उपकार का बदला
जनितः	५	उत्पन्न एवम्	पित्रोः	८.	माता-पिता के
पोषितः	६.	पालित होता है	मर्त्यः	१०.	मनुष्य
यतः	४.	जिस माता-पिता से	शत	११.	सौ
न ।	१३.	नहीं	आयुषा ॥	१२.	वर्षों की आयु में भी

श्लोकार्थ—सभी प्रयोजनों को सिद्ध करने वाला शरीर जिस माता-पिता से उत्पन्न एवम् पालित होता है। उन दोनों माता-पिता के उपकार का बदला मनुष्य सौ वर्षों की आयु में भी नहीं चुका सकता है ॥

षष्ठः श्लोकः

यस्तयोरात्मजः कल्प आत्मना च धनेन च ।
वृत्तिं न दद्यात्तं प्रेत्य स्वमांसं खादयन्ति हि ॥६॥

पदच्छेद— यः तयोः आत्मजः कल्पः आत्मना च धनेन च ।
वृत्तिम् न दद्यात् तम् प्रेत्य स्वमांसम् खादयन्ति हि ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जो	वृत्तिम्	७.	सेवा
तयोः	३.	माता-पिता की	न दद्यात्	८.	नहीं करता है
आत्मजः	२.	पुत्र (अपने)	तम् प्रेत्य	९.	उसके मरने पर यमदूत उसे
कल्पः	४.	सामर्थ्य रहते भी	स्वमांसम्	११.	अपना मांस
आत्मना	५.	शरीर से	खादयन्ति	१२.	खिलाते हैं
च धनेन च ।	६.	और धन से भी	हि ॥	१०	निश्चित ही (उसको उसी का)

श्लोकार्थ—जो पुत्र अपने माता-पिता की सामर्थ्य रहते भी शरीर से और धन से भी सेवा नहीं करता है। उसके मरने पर यमदूत उसे निश्चित ही उसको उसी का अपना मांस खिलाते हैं ॥

सप्तमः श्लोकः

मातरं पितरं वृद्धं भार्यां साध्वीं सुतं शिशुम् ।
गुरुं विप्रं प्रपन्नं च कल्पोऽबिभ्रच्छ्वसन् मृतः ॥७॥

पदच्छेद— मातरम् पितरम् वृद्धम् भार्याम् साध्वीम् सुतम् शिशुम् ।
गुरुम् विप्रम् प्रपन्नम् च कल्पः अबिभ्रद् श्वसन् मृतः ॥

शब्दार्थ—

मातरम्	३.	माता-	गुरुम्	९.	गुरु
पितरम्	४.	पिता	विप्रम्	१०.	ब्राह्मण
वृद्धम्	२.	वृद्ध	प्रपन्नम् च	११.	और शरणगत का
भार्याम्	६.	पत्नी	कल्पः	१.	जो समर्थ होते हुये भी
साध्वीम्	५.	सती	अबिभ्रद्	१२.	पालन-पोषण नहीं करता है
सुतम्	८.	पुत्र	श्वसन्	१३.	वह जीता हुआ भी
शिशुम् ।	७.	अबोध	मृतः ॥	१४.	मृतक तुल्य है

श्लोकार्थ—जो पुरुष वृद्ध माता-पिता, सती पत्नी, अबोध पुत्र, गुरु, ब्राह्मण और शरणागत का पालन-पोषण नहीं करता है वह जीता हुआ भी मृतक के तुल्य है ॥

अष्टमः श्लोकः

तन्नावकल्पयोः कंसान्नित्यमुद्विग्नचेतसोः ।
मोघमेते व्यतिक्रान्ता दिवसा वामनर्चतोः ॥८॥

पदच्छेद— तत् नौ अकल्पयोः कंसात् नित्यम् उद्विग्न चेतसोः ।
मोघम् एते व्यतिक्रान्ताः दिवसाः वाम् अनर्चतोः ॥

शब्दार्थ—

तत्	१.	इसलिये	मोघम्	११.	व्यर्थ
नौ	६.	हम दोनों के	एते	७.	इतने
अकल्पयोः	५.	असमर्थ	व्यतिक्रान्ताः	१२.	बीत गये
कंसात्	२.	कंस से	दिवसाः	८.	दिन
नित्यम् उद्विग्न	३.	नित्य उद्विग्न	वाम्	९.	आप दोनों को
चेतसोः ।	४.	चित्त रहने के कारण	अनर्चतोः ॥	१०.	सेवा न करते हुये

श्लोकार्थ—इसलिये कंस से नित्य उद्विग्न चित्त रहने के कारण असमर्थ हम दोनों के इतने दिन आप दोनों की सेवा न करते हुये व्यर्थ बीत गये ॥

नवमः श्लोकः

तत् क्षन्तुमर्हथस्तात मातर्नौ परतन्त्रयोः ।
अकुर्वतोर्वां शुश्रूषां क्लिष्टयोर्दुर्हृदा भृशम् ॥९॥

पदच्छेद— तत् क्षन्तुम् अर्हथः तात-मातः नौ परतन्त्रयोः ।
अकुर्वतोः वाम् शुश्रूषाम् क्लिष्टयोः दुर्हृदा भृशम् ॥

शब्दार्थ—

तत्	१. इसलिये	अकुर्वतोः	८. कर सके
क्षन्तुम्	११. क्षमा	वाम्	६. हम दोनों आपकी
अर्हथः	१२. करने योग्य हैं	शुश्रूषाम्	७. सेवा
तात-मातः	२. हे पिता जी और माता जी	क्लिष्टयोः	५. क्लेश दिये गये
नौ	९. हम दोनों को आप	दुर्हृदा	३. दुष्ट हृदय कंस के द्वारा
परतन्त्रयोः ।	१०. पराधीन होने के कारण	भृशम् ॥	४. अत्यन्त

श्लोकार्थ—इसलिये हे पिता जी और माता जी ! दुष्ट हृदय कंस के द्वारा अत्यन्त क्लेश दिये गये हम आपकी सेवा न कर सके। हम दोनों को आप पराधीन होने के कारण क्षमा करने योग्य हैं ॥

दशमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— इति मायामनुष्यस्य हरेर्विश्वात्मनो गिरा ।
मोहितावङ्कमारोप्य परिष्वज्यापतुर्मुदम् ॥१०॥

पदच्छेद— इति माया मनुष्यस्य हरेः विश्वात्मनः गिरा ।
मोहितौ अङ्कम् आरोप्य परिष्वज्य आपतुः मुदम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१. इस प्रकार	मोहितौ	७. मोहित हो (देवकी-वसुदेव ने उनको)
माया	२. माया से	अङ्कम्	८. गोद में
मनुष्यस्य	३. मनुष्य बने हुये	आरोप्य	९. उठा लिया और
हरेः	५. भगवान् श्रीकृष्ण की	परिष्वज्य	१०. हृदय से चिपका कर
विश्वात्मनः	४. संसार के आत्मा	आपतुः	१२. प्राप्त किया
गिरा ।	६. वाणी से	मुदम् ॥	११. हर्ष को

श्लोकार्थ—इस प्रकार माया से मनुष्य बने हुये संसार को आत्मा भगवान् श्रीकृष्ण की वाणी से मोहित हो देवकी-वसुदेव ने उनको गोद में उठा लिया और हृदय से चिपका कर हर्ष प्राप्त किया ॥

एकादशः श्लोकः

सिञ्चन्तावश्रुधाराभिः स्नेहपाशेन चावृतौ ।
न किञ्चिदूचतू राजन् बाष्पकण्ठौ विमोहितौ ॥११॥

पदच्छेद— सिञ्चन्तौ अश्रु धाराभिः स्नेह पाशेन च आवृतौ ।
न किञ्चित् ऊचतुः राजन् बाष्प कण्ठौ विमोहितौ ॥

शब्दार्थ—

सिञ्चन्तौ	८.	भिगोते हुये	न किञ्चित्	११.	कुछ नहीं
अश्रु	६.	आँसुओं की	ऊचतुः	१२.	बोल सके
धाराभिः	७.	धारा से (उनको)	राजन्	१.	हे राजन् !
स्नेह	२.	वे स्नेह	बाष्प	९.	आँसुओं के कारण
पाशेन	३.	पाश से	कण्ठौ	१०.	गला रूंध जाने से
आवृतौ ।	४.	बंधकर	विमोहितौ ॥	५.	पूर्णतः मोहित होकर

श्लोकार्थ—हे राजन् ! वे स्नेह पाश से बंधकर पूर्णतः मोहित होकर आँसुओं की धारा से उनको भिगोते हुये आँसुओं के कारण गला रूंध जाने से कुछ नहीं बोल सके ॥

द्वादशः श्लोकः

एवमाश्वास्य पितरौ भगवान् देवकीसुतः ।
मातामहं तूग्रसेनं यदूनामकरोन्नृपम् ॥१२॥

पदच्छेद— एवम् आश्वास्य पितरौ भगवान् देवकी सुतः ।
मातामहम् तु उग्रसेनम् यदूनाम् अकरोत् नृपम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	४.	इस प्रकार	मातामहम्	७.	अपने नाना
आश्वास्य	६.	सान्त्वना देकर	तु उग्रसेनम्	८.	उग्रसेन को
पितरौ	५.	माता-पिता को	यदूनाम्	९.	यदुवंशियों का
भगवान्	३.	भगवान् ने	अकरोत्	११.	बना दिया
देवकी	१.	देवकी	नृपम् ॥	१०.	राजा
सुतः ।	२.	नन्दन			

श्लोकार्थ—देवकी-नन्दन भगवान् ने इस प्रकार माता-पिता को सान्त्वना देकर अपने नाना उग्रसेन को यदुवंशियों का राजा बना दिया ॥

त्रयोदशः श्लोकः

आह चास्मान् महाराज प्रजाश्चाज्ञप्तुमर्हसि ।
ययातिशापाद् यदुभिर्नासितव्यं नृपासने ॥१३॥

पदच्छेद — आह च अस्मान् महाराज प्रजाः च आज्ञप्तुम् अर्हसि ।
ययाति शापात् यदुभिः न आसितव्यम् नृप आसने ॥

शब्दार्थ—

आह च	१. और कहा	ययाति	७. ययाति के
अस्मान्	३. आप हम	शापात्	८. शाप के कारण
महाराज	२. हे महाराज !	यदुभिः	९. यदुवंशी
प्रजाः च	४. प्रजाओं को	न आसतव्यम्	१२. नहीं बैठ सकते हैं
आज्ञप्तुम्	५. आज्ञा	नृप	१०. राज
अर्हसि ।	६. दीजिये	आसने ॥	११. सिंहासन पर

श्लोकार्थ—और कहा हे महाराज ! आप हम प्रजाओं को आज्ञा दीजिये । ययाति के शाप के कारण यदुवंशी राजसिंहासन पर नहीं बैठ सकते हैं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

मयि भृत्य उपासीने भवतो विबुधादयः ।
बलिं हरन्त्यवनताः किमुतान्ये नराधिपाः ॥१४॥

पदच्छेद — मयि भृत्ये उपासीने भवतः बिबुध आदयः ।
बलिम् हरन्ति अवनताः किम् उत अन्ये नराधिपाः ॥

शब्दार्थ—

मयि	२. मुझ	बलिम्	८. उपहार
भृत्ये	३. दास के रहते	हरन्ति	९. देते रहेंगे
उपासीने	१. सेवा में लगे हुये	अवनता	७. सिर झुकाकर
भवतः	४. आपको	किम् उत	१२. कहना ही क्या है
विबुध	५. देवता	अन्ये	१०. दूसरे
आदयः ।	६. आदि	नराधिपाः ॥	११. राजाओं के बारे में तो

श्लोकार्थ—सेवा में लगे हुये मुझ दास के रहते आपको देवता आदि सिर झुकाकर उपहार देते रहेंगे । दूसरे राजाओं के बारे में तो कहना ही क्या है ॥

पञ्चदशः श्लोकः

सर्वान् स्वाञ्ज्ञातिसंबन्धान् दिग्भ्यः कंसभयाकुलान् ।
यदुवृष्ण्यन्धकमधुदाशार्हकुकुरादिकान् ॥१५॥

पदच्छेद— सर्वान् स्वान् ज्ञाति संबन्धान् दिग्भ्यः कंसभय आकुलान् ।
यदु वृष्णि अन्धक मधु दाशार्ह कुकुर आदिकान् ॥

शब्दार्थ—

सर्वान्	११. सभी	यदु	३. यदु
स्वान्	१०. अपने	वृष्णि	४. वृष्णि
ज्ञाति	१२. सजातीय	अन्धक	५. अन्धक
संबन्धान्	१३. सम्बन्धियों को (श्रीकृष्ण ने)	मधु	६. मधु
दिग्भ्यः	१४. सभी दिशाओं से (बुला लिया)	दाशार्ह	७. दाशार्ह और
कंसभय	१. कंस के भय से	कुकुर	८. कुकुर
आकुलान् ।	२. व्याकुल	आदिकान् ॥	९. आदि वंशों में उत्पन्न

श्लोकार्थ—कंस के भय से व्याकुल यदु, वृष्णि, अन्धक, मधु, दाशार्ह और कुकुर आदि वंशों में उत्पन्न अपने सभी सजातीय सम्बन्धियों को श्रीकृष्ण ने सभी दिशाओं से बुला लिया ॥

षोडशः श्लोकः

सभाजितान् समाश्वास्य विदेशावासकर्शितान् ।
न्यवासयत् स्वगेहेषु वित्तैः संतर्प्य विश्वकृत् ॥१६॥

पदच्छेद— सभाजितान् समाश्वास्य विदेश आवास कर्शितान् ।
न्यवासयत् स्वगेहेषु वित्तैः संतर्प्य विश्वकृत् ॥

शब्दार्थ—

सभाजितान्	५. सत्कार करके	न्यवासयत्	१०. बसा दिया
समाश्वास्य	६. सान्त्वना दी और	स्वगेहेषु	७. अपने-अपने घरों में
विदेश	२. परदेश में	वित्तैः	८. द्रव्यों से
आवास	३. निवास करते हुये	संतर्प्य	९. सन्तुष्ट करके
कर्शितान् ।	४. दुःखी उन लोगों का	विश्वकृत् ॥	१. संसार के रचयिता भगवान् ने

श्लोकार्थ—संसार के रचयिता भगवान् श्रीकृष्ण ने परदेश में निवास करने वाले दुःखी उन लोगों का सत्कार करके सान्त्वना दी और अपने-अपने घरों में द्रव्यों से सन्तुष्ट करके बसा दिया ॥

सप्तदशः श्लोकः

कृष्णसंकर्षणभुजैर्गुप्ता लब्धमनोरथाः ।
गृहेषु रेमिरे सिद्धाः कृष्णरामगतज्वराः ॥१७॥

पदच्छेद— कृष्ण संकर्षण भुजैः गुप्ताः लब्ध मनोरथाः ।
गृहेषु रेमिरे सिद्धाः कृष्ण राम गतज्वराः ॥

शब्दार्थ—

कृष्ण	१.	श्रीकृष्ण और	गृहेषु	११.	अपने-अपने घरों में
संकर्षण	२.	बलराम की	रेमिरे	१२.	विहार करने लगे
भुजैः	३.	भुजाओं से	सिद्धाः	९.	कृतार्थ और
गुप्ताः	४.	सुरक्षित (और)	कृष्ण	७.	कृष्ण और
लब्ध	५.	सफल	राम	८.	बलराम के कारण
मनोरथाः ।	६.	मनोरथ	गतज्वराः ॥	१०.	व्यथा रहित होकर

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण और बलराम की भुजाओं से सुरक्षित, सकल मनोरथ, कृष्ण और बलराम के कारण कृतार्थ और व्यथा रहित होकर अपने-अपने घरों में विहार करने लगे ॥

अष्टादशः श्लोकः

वीक्षन्तोऽहरहः प्रीता मुकुन्दवदनाम्बुजम् ।
नित्यं प्रमुदितं श्रीमत् सदयस्मितवीक्षणम् ॥१८॥

पदच्छेद— वीक्षन्तः अहरहः प्रीताः मुकुन्द वदन अम्बुजम् ।
नित्यम् प्रमुदितम् श्रीमत् सदय स्मित वीक्षणम् ॥

शब्दार्थ—

वीक्षन्तः	११.	देखते हुये यदुवंशी	नित्यम्	१.	नित्य
अहरहः	१०.	प्रतिदिन	प्रमुदितम्	२.	प्रमुदित
प्रीताः	१२.	प्रसन्न होते थे	श्रीमत्	३.	शोभा सम्पन्न
मुकुन्द	७.	श्रीकृष्ण के	सदय	४.	दया सहित
वदन	८.	मुख	स्मित	५.	हास और
अम्बुजम् ।	९.	कमल को	वीक्षणम् ॥	६.	चितवन से युक्त

श्लोकार्थ—नित्य प्रमुदित, शोभा सम्पन्न, दया सहित, हास और चितवन से युक्त श्रीकृष्ण के मुख कमल को देखते हुये यदुवंशी प्रतिदिन प्रसन्न होते थे ॥

एकोनविंशः श्लोकः

तत्र प्रवयसोऽप्यासन् युवानोऽतिबलौजसः ।
पिबन्तोऽक्षैर्मुकुन्दस्य मुखाम्बुजसुधां मुहुः ॥१९॥

पदच्छेद— तत्र प्रवयसः अपि आसन् युवानः अतिबल ओजसः ।
पिबन्तः अक्षैः मुकुन्दस्य मुख अम्बुज सुधाम् मुहुः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ पर (मथुरा में)	पिबन्तः	८.	पीते हुये
प्रवयसः	९.	वृद्ध पुरुष	अक्षैः	७.	नेत्रों से
अपि	१०.	भी	मुकुन्दस्य	२.	श्रीकृष्ण के
आसन्	१४.	थे	मुख	३.	मुख
युवानः	११.	युवक जैसे	अम्बुज	४.	कमल के
अतिबल	१२.	अत्यन्त बल और	सुधाम्	५.	अमृततुल्य (मकरन्द रस) का
ओजसः ।	१३.	उत्साह से युक्त	मुहुः ॥	६.	बार-बार

श्लोकार्थ—वहाँ पर मथुरा में श्रीकृष्ण के मुख कमल के अमृत तुल्य मकरन्द रस को बार-बार नेत्रों से पीते हुये वृद्ध पुरुष भी युवक जैसे अत्यन्त बल और उत्साह से युक्त थे ॥

विंशः श्लोकः

अथ नन्दं समासाद्य भगवान् देवकीसुतः ।
संकर्षणश्च राजेन्द्र परिष्वज्येदमूचतुः ॥२०॥

पदच्छेद— अथ नन्दम् समासाद्य भगवान् देवकी सुतः ।
संकर्षणः च राजेन्द्र परिष्वज्य इदम् ऊचतुः ॥

शब्दार्थ—

अथ	२.	अब	संकर्षणः	७.	बलराम ने
नन्दम्	८.	नन्द के	च	६.	और
समासाद्य	९.	पास जाकर	राजेन्द्र	१.	हे परीक्षित् !
भगवान्	३.	भगवान्	परिष्वज्य	१०.	गले लगने के बाद
देवकी	४.	देवकी	इदम्	११.	यह
सुतः ।	५.	नन्दन	ऊचतुः ॥	१२.	कहा

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! अब भगवान् देवकीनन्दन और बलराम ने नन्द के पास जाकर गले लगने के बाद यह कहा ॥

एकविंशः श्लोकः

पितर्युवाभ्यां स्निग्धाभ्यां पोषितौ लालितौ भृशम् ।
पित्रोरभ्यधिका प्रीतिरात्मजेष्वात्मनोऽपि हि ॥२१॥

पदच्छेद— पितः युवाभ्याम् स्निग्धाभ्याम् पोषितौ लालितो भृशम् ।
पित्रोः अभ्यधिका प्रीतिः आत्मजेषु आत्मनः अपि हि ॥

शब्दार्थ—

पितः	१. पिता जी	पित्रोः	८. पिता-माता को
युवाभ्याम्	३. आप दोनों ने	अभ्यधिका	११. अधिक
स्निग्धाभ्याम्	२. स्नेही	प्रीतिः	१२. स्नेह रहता है
पोषितौ	६. पालन किया है	आत्मजेषु	९. सन्तान पर
लालितौ	५. लालन	आत्मनः अपि	१०. अपने शरीर से भी
भृशम् ।	४. हमारा बहुत	हि ॥	७. निश्चित ही

श्लोकार्थ—पिता जो ! स्नेही आप दोनों ने हमारा बहुत लालन-पालन किया है । निश्चित ही पिता-माता को सन्तान पर अपने शरीर से भी अधिक स्नेह रहता है ॥

द्वाविंशः श्लोकः

स पिता सा च जननी यौ पुष्णीतां स्वपुत्रवत् ।
शिशून् बन्धुभिरुत्सृष्टानकल्पैः पोषरक्षणे ॥२२॥

पदच्छेद— स पिता सा च जननी यौ पुष्णीताम् स्व पुत्रवत् ।
शिशून् बन्धुभिः उत्सृष्टान् अकल्पैः पोष रक्षणे ॥

शब्दार्थ—

सः	१०. वही (उसका)	शिशून्	६. बालकों की
पिता	११. पिता है	बन्धुभिः	४. स्वजनों के द्वारा
सा च	१२. वही (उसकी)	उत्सृष्टान्	५. त्यागे गये
जननी	१३. माता है	अकल्पैः	३. असमर्थ
यौ	७. जो	पोष	१. पोषण और
पुष्णीताम्	९. पालते हैं	रक्षणे	२. रक्षा करने में
स्व पुत्रवत् ।	८. अपने पुत्र के समान		

श्लोकार्थ—पोषण और रक्षा करने में असमर्थ स्वजनों के द्वारा त्यागे गये बालकों को जो अपने पुत्र के समान पालते हैं, वही उसका पिता है, वही उसकी माता है ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

यात यूयं व्रजं तात वयं च स्नेहदुःखितान् ।
ज्ञातीन् वो द्रष्टुमेष्यामो विधाय सुहृदां सुखम् ॥२३॥

पदच्छेद— यात यूयम् व्रजम् तात वयम् च स्नेह दुःखितान् ।
ज्ञातीन् वः द्रष्टुम् एष्यामः विधाय सुहृदाम् सुखम् ॥

शब्दार्थ—

यात	४.	जाइये	ज्ञातीन्	१२.	बन्धुओं से
यूयम्	२.	आप लोग	वः	११.	आप
व्रजम्	३.	व्रज में	द्रष्टुम्	१३.	मिलने के लिये
तात	१.	हे पिता जी !	एष्यामः	१४.	आवेंगे
वयम् च	५.	और हम	विधाय	८.	करके
स्नेह	९.	स्नेह वश	सुहृदम्	६.	यहाँ (सम्बन्धियों) को
दुःखिताम् ।	१०.	दुःखी	सुखम् ॥	७.	सुखी

श्लोकार्थ—हे पिता जी ! आप लोग व्रज में जाइये और हम यहाँ के सम्बन्धियों को सुखी करके स्नेह वश दुःखी आप लोगों से मिलने आवेंगे ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

एवं सान्त्वय्य भगवान् नन्दं सव्रजमच्युतः ।
वासोऽलङ्कारकुप्याद्यैरर्हयामास सादरम् ॥२४॥

पदच्छेद— एवम् सान्त्वय्य भगवान् नन्दम् सव्रजम् अच्युतः ।
वासः अलङ्कार कुप्य आद्यैः अर्हयामास सादरम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	वासः	८	वस्त्र
सान्त्वय्य	६.	सान्त्वना देकर	अलङ्कार	९.	आभूषण और
भगवान्	२.	भगवान्	कुप्य	१०.	अनेक धातुओं के बने
नन्दम्	५.	नन्द को	आद्यैः	११.	बरतन आदि देकर
सव्रजम्	४.	व्रजवासियों सहित	अर्हयामास	१२.	सत्कार किया
अच्युतः ।	३.	श्रीकृष्ण ने	सादरम् ॥	७.	आदर के साथ

श्लोकार्थ—इस प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण ने व्रजवासियों सहित नन्द को सान्त्वना देकर आदर के साथ वस्त्र आभूषण और अनेक धातुओं के बने बरतन देकर सत्कार किया ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

इत्युक्तस्तौ परिष्वज्य नन्दः प्रणयविह्वलः ।
पूरयन्नश्रुभिर्नेत्रे सह गोपैर्व्रजं ययौ ॥२५॥

पदच्छेद— इति उक्तः तौ परिष्वज्य नन्दः प्रणय विह्वलः ।
पूरयन् अश्रुभिः नेत्रे सह गोपैः व्रजम् ययौ ॥

शब्दार्थ—

इति	१. इस प्रकार	पूरयन्	१०. भर कर
उक्तः	२. कहे जाने पर	अश्रुभिः	६. आँसू
तौ	६. उन दोनों भाइयों को	नेत्रे	८. नेत्रों में
परिष्वज्य	७. गले लगा कर (और)	सह	१२. साथ
नन्दः	३. नन्द ने	गोपैः	११. गोपों के
प्रणय	४. प्रेम से	व्रजम्	१३. व्रज में
विह्वलः ।	५. अधीर होकर	ययौ ॥	१४. चले गये

श्लोकार्थ—इस प्रकार कहे जाने पर नन्द ने प्रेम से अधीर होकर उन दोनों भाइयों को गले लगा कर और नेत्रों में आंसू भर कर गोपों के साथ व्रज में चले गये ॥

षड्विंशः श्लोकः

अथ शूरसुतो राजन् पुत्रयोः समकारयत् ।
पुरोधसा ब्राह्मणैश्च यथावद् द्विजसंस्कृतिम् ॥२६॥

पदच्छेद— अथ शूरसुतः राजन् पुत्रयोः समकारयत् ।
पुरोधसा ब्राह्मणैः च यथावत् द्विज संस्कृतिम् ॥

शब्दार्थ—

अथ	२. इसके बाद	पुरोधसा	४. पुरोहित (गर्गाचार्य)
शूरसुतः	३. वसुदेव जी ने	ब्राह्मणैः च	५. और ब्राह्मणों द्वारा
राजन्	१. हे राजन् !	यथावत्	७. विधि पूर्वक
पुत्रयोः	६. दोनों पुत्रों का	द्विजः	८. द्विज जनोचित
समकारयत् ।	१०. करवाया	संस्कृतिम् ॥	९. यज्ञोपवीत संस्कार

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इसके बाद वसुदेव जी ने पुरोहित गर्गाचार्य और ब्राह्मणों के द्वारा दोनों पुत्रों का विधि पूर्वक द्विज जनोचित यज्ञोपवीत संस्कार करवाया ॥

सप्तविंशः श्लोकः

तेभ्योऽदाद् दक्षिणा गावो रुक्ममालाः स्वलंकृताः ।
स्वलंकृतेभ्यः संपूज्य सवत्साः क्षौममालिनीः ॥२७॥

पदच्छेद— तेभ्यः अदात् दक्षिणाः गावः रुक्म मालाः स्वलंकृताः ।
सु अलंकृतेभ्यः संपूज्य सवत्साः क्षौम मालिनीः ॥

शब्दार्थ—

तेभ्यः	१०.	उन ब्राह्मणों को	सु अलंकृतेभ्यः	६.	भली भांति अलंकृत किये गये
अदात्	११.	दी	संपूज्य	९.	पूजन के बाद
दक्षिणाः	८.	दक्षिणायें	सवत्साः	५.	बछड़े सहित
गावः	७.	गाय तथा	क्षौम	३.	रेशमी वस्त्रों और
रुक्म मालाः	१.	सोने की माला पहने हुये	मालिनीः ॥	४.	मालाओं से विभूषित
स्वलंकृताः ।	२.	सुसज्जित			

श्लोकार्थ—सोने की माला पहने हुये सुसज्जित, रेशमी वस्त्रों और मालाओं से विभूषित, बछड़े सहित, भली-भाँति अलंकृत किये गये गाय तथा दक्षिणायें पूजन के बाद उन ब्राह्मणों को दीं ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

याः कृष्णरामजन्मर्क्षे मनोदत्ता महामतिः ।
ताश्चाददादनुस्मृत्य कंसेनाधर्मतो हृताः ॥२८॥

पदच्छेद— याः कृष्ण राम जन्म ऋक्षे, मनः दत्ताः महामतिः ।
ताः च अदात् अनुस्मृत्य कंसेन अधर्मतः हृताः ॥

शब्दार्थ—

याः	६.	जो गौएँ	ताः	११.	उनका
कृष्ण	२.	श्रीकृष्ण और	च	१३.	फिर से (ब्राह्मणों को)
राम	३.	बलराम के	अदात्	१४.	दे दिया
जन्म ऋक्षे	४.	जन्म नक्षत्र में	अनुस्मृत्य	१२.	स्मरण करके
मनः	५	मन से संकल्प करके	कंसेन	८.	जिन्हें कंस ने
दत्ताः	७.	दी थीं (और)	अधर्मतः	९.	अन्याय से
महामतिः ।	१	महाबुद्धिमान् वसुदेव जी ने	हृताः ॥	१०.	छीन लिया था

श्लोकार्थ—महाबुद्धिमान् वसुदेव जी ने श्रीकृष्ण और बलराम के जन्म नक्षत्र में मन से संकल्प करके जो गौएं दीं थीं और जिन्हें कंस ने अन्याय से छीन लिया था। उनका फिर से स्मरण करके ब्राह्मणों को दे दिया।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

ततश्च लब्धसंस्कारौ द्विजत्वं प्राप्य सुव्रतौ ।
गर्गाद् यदुकुलाचार्याद् गायत्रं व्रतमास्थितौ ॥२९॥

पदच्छेद— ततः च लब्ध संस्कारौ द्विजत्वम् प्राप्य सुव्रतौ ।
गर्गाद् यदुकुल आचार्यात् गायत्रम् व्रतम् आस्थितौ ॥

शब्दार्थ—

ततः च	१. तब	गर्गात्	४. गर्ग जी से
लब्ध	६. प्राप्त करके	यदुकुल	२. यदुवंश के
संस्कारौ	५. संस्कार	आचार्यात्	३. आचार्य
द्विजत्वम्	७. श्रीकृष्ण और बलराम ने (द्विजत्व)	गायत्रम्	९. गायत्री मंत्र
प्राप्य	८. करके	व्रतम्	१०. व्रत, (वेदाध्ययन में)
सुव्रतौ ।	१२. उत्तम व्रतधारी हो गये	आस्थितौ ॥	११. स्थित होकर

श्लोकार्थ—तब यदुवंश के आचार्य गर्ग जी से संस्कार प्राप्त करके श्रीकृष्ण और बलराम जी ने द्विजत्व पाकर के गायत्री मंत्र, व्रत, वेदाध्ययन में स्थित होकर उत्तम व्रतधारी हो गये ॥

त्रिंशः श्लोकः

प्रभवौ सर्वविद्यानां सर्वज्ञौ जगदीश्वरौ ।
नान्यसिद्धामलज्ञानं गूहमानौ नरेहितैः ॥३०॥

पदच्छेद— प्रभवौ सर्व विद्यानाम् सर्वज्ञौ जगत् ईश्वरौ ।
न अन्य सिद्ध अमल ज्ञानम् गूह मानौ नरेहितैः ॥

शब्दार्थ—

प्रभवौ	३. उत्पत्ति स्थान	न अन्य	७. स्वतः
सर्व	१. समस्त	सिद्ध	८. सिद्ध
विद्यानाम्	२. विद्याओं के	अमल	९ निर्मल
सर्वज्ञौ	४. सर्वज्ञ	ज्ञानम्	१०. ज्ञान को
जगत्	५. संसार के	गूहमानौ	१२. छिपाये हुये थे
ईश्वरौ ।	६. प्रभु (दोनों भाई)	नरेहितैः ॥	११. मानव लीलाओं से

श्लोकार्थ—समस्त विद्याओं के उत्पत्ति स्थान, सर्वज्ञ, संसार के प्रभु, दोनों भाई स्वतः सिद्ध, निर्मल ज्ञान को मानव लीलाओं से छिपाये हुये थे ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

अथो गुरुकुले वासमिच्छन्तावुपजग्मतुः ।
काश्यं सान्दीपनिं नाम ह्यवन्तीपुरवासिनम् ॥३१॥

पदच्छेद— अथो गुरुकुले वासम् इच्छन्तौ उपजग्मतुः ।
काश्यम् सान्दीपनिम् नाम अवन्तीपुर वासिनम् ॥

शब्दार्थ—

अथो	१. इसके बाद	काश्यम्	७. काश्यपगोत्रीय
गुरुकुले	२. गुरुकुल में	सान्दीपनिम्	८. सान्दीपनि
वासम्	३. निवास	नाम	९. नामक गुरु के
इच्छन्तौ	४. चाहने वाले (दोनों भाई)	अवन्तीपुर	५. अवन्तीपुर (उज्जैन के)
उपजग्मतुः ।	१०. पास चले गये	वासिनम् ॥	६. रहने वाले

श्लोकार्थ—इसके बाद गुरुकुल में निवास चाहने वाले दोनों भाई अवन्तीपुर उज्जैन के रहने वाले काश्य गोत्रीय सान्दीपनि नामक गुरु के पास चले गये ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

यथोपसाद्य तौ दान्तौ गुरौ वृत्तिमनिन्दिताम् ।
ग्राहयन्तावुपेतौ स्म भक्त्या देवमिवाहतौ ॥३२॥

पदच्छेद— यथा उपसाद्य तौ दान्तौ गुरौ वृत्तिम् अनिन्दिताम् ।
ग्राहयन्तौ उपेतौ स्म भक्त्या देवम् इव आहतौ ॥

शब्दार्थ—

यथा	११. विधि पूर्वक	ग्राहयन्तौ	४. करते हुये
उपसाद्य	१०. पास रह कर	उपेतौ	७. सम्पन्न
तौ	९. वे दोनों भाई	स्म	१४. सेवा करने लगे
दान्तौ	५. सुसंयत	भक्त्या	६. भक्ति से
गुरौ	१. गुरु के प्रति	देवम्	१२. देवता के
वृत्तिम्	३. आचरण	इव	१३. समान गुरु की
अनिन्दिताम् ।	२. प्रशंसनीय	आहतौ ॥	८. गुरु से आदर पाने वाले

श्लोकार्थ—गुरु के प्रति प्रशंसनीय आचरण करते हुये सुसंयत, भक्ति से सम्पन्न, गुरु से आदर पाने वाले वे दोनों भाई पास रहकर विधि पूर्वक देवता के समान गुरु की सेवा करने लगे ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तयोर्द्विजवरस्तुष्टः शुद्धभावानुवृत्तिभिः ।
प्रोवाच वेदानखिलान् साङ्गोपनिषदो गुरुः ॥३३॥

पदच्छेद— तयोः द्विजवरः तुष्टः शुद्ध भाव अनुवृत्तिभिः ।
प्रोवाच वेदान् अखिलान् साङ्ग उपनिषदः गुरुः ॥

शब्दार्थ—

तयोः	१. उनके	प्रोवाच	१२. शिक्षा दी
द्विजवर	६. श्रेष्ठ ब्राह्मण	वेदान्	११. वेदों की
तुष्टः	५. सन्तुष्ट	अखिलान्	१०. सम्पूर्ण
शुद्ध	२. शुद्ध	साङ्ग	८. छहों अंग और
भाव	३. भाव से युक्त	उपनिषद्	९. उपनिषदों के सहित
अनुवृत्तिभिः ।	४. सेवा से	गुरुः ॥	७. गुरु ने

श्लोकार्थ—उनके शुद्ध भाव से युक्त, सेवा से सन्तुष्ट, श्रेष्ठ ब्रह्मण गुरु ने छहों अंग और उपनिषदों के सहित सम्पूर्ण वेदों की शिक्षा दी ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

सरहस्यं धनुर्वेदं धर्मान् न्यायपथांस्तथा ।
तथा चान्वीक्षिकीं विद्यां राजनीतिं च षड्विधाम् ॥३४॥

पदच्छेद— सरहस्यम् धनुर्वेदं धर्मान् न्याय पथान् तथा ।
तथा च आन्वीक्षिकीम् विद्याम् राजनीतिम् च षड्विधाम् ॥

शब्दार्थ –

सरहस्यम्	१. मंत्र और देवताओं के साथ	च तथा	६. और
धनुर्वेद	२. धनुर्वेद	आन्वीक्षिकीम्	७. वेदों का तात्पर्य बोधक शास्त्र
धर्मान्	३. धर्मशास्त्र	विद्याम्	८. तर्क विद्या (न्याय शास्त्र)
न्याय पथान्	५. मीमांसादि	राजनीतिम्	१०. राजनीति की शिक्षा दी
तथा ।	४. तथा	चषड्विधाम् ।	९. एवं सन्धि विग्रह आदि

श्लोकार्थ—मंत्र ओर देवताओं के सहित धनुर्वेद, धर्मशास्त्र तथा मीमांसादि जौर वेदों का तात्पर्य बोधक शास्त्र, तर्क विद्या (न्याय शास्त्र) एवं सन्धि, विग्रह आदि राजनीति की शिक्षा दी ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

सर्वं नरवरश्रेष्ठौ सर्वविद्याप्रवर्तकौ ।
सकृन्निगदमात्रेण तौ संजगृहतुर्नृप ॥३५॥

पदच्छेद— सर्वम् नरवर श्रेष्ठौ सर्व विद्या प्रवंतकौ ।
सकृत् निगद मात्रेण तौ संजगृहतुः नृप ॥

शब्दार्थ—

सर्वम्	११. सब विद्याओं को	सकृत्	८. एक बार
नरवर	२. श्रेष्ठ मनुष्यों में भी	निगद	९. कहने
श्रेष्ठौ	३. उत्तम	मात्रेण	१०. मात्र से ही
सर्व	४. सभी	तौ	७. उन दोनों भाइयों ने
विद्या	५. विद्याओं के	संजगृहतुः	१२. ग्रहण कर लिया
प्रवंतकौ ।	६. बनाने वाले	नृप ॥	१. हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे ! राजन् ! श्रेष्ठ मनुष्यों में भी उत्तम सभी विद्याओं के बनाने वाले उन दोनों भाइयों ने एक बार कहने मात्र से ही सब विद्याओं को ग्रहण कर लिया ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

अहोरात्रैश्चतुःषष्ट्या संयत्तौ तावतीः कलाः ।
गुरुदक्षिणयाऽऽचार्यं छन्दयामासतुर्नृप ॥३६॥

पदच्छेद— अहोरात्रैः चतुःषटचा संयत्तौ तावतीः कलाः ।
गुरु दक्षिणया आचार्यं छन्दयामासतुः नृप ॥

शब्दार्थ—

अहोरात्रैः	३. दिन रात में ही	गुरु दक्षिणया	७. तब गुरु दक्षिणा लेने के लिये
चतुःषष्ट्या	२. चौंसठ	आचार्यं	८. आचार्य से
संयत्तौ	४. संयमी दोनों भाइयों ने	छन्दयामासतुः	९. प्रार्थना करने लगे
तावतीः	५. उतनी	नृप ॥	१. हे राजन् !
कलाः ।	६. कलायें सीख लीं		

श्लोकार्थ—हे राजन् ! चौंसठ दिन रात में ही संयमी दोनों भाइयों ने उतनी कलायें सीख लीं । तब गुरु दक्षिणा लेने के लिये आचार्य से प्रार्थना करने लगे ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

द्विजस्तयोस्तं महिमानमद्‌भुतं संलक्ष्य राजन्नतिमानुषीं मतिम्।

सम्मन्त्र्य पत्न्या स महार्णवे मृतं बालं प्रभासे वरयाम्बभूव ह ॥३७॥

पदच्छेद— द्विजः तयोः तम् महिमानम् अद्‌भुतम् संलक्ष्य राजन् अतिमानुषीम् मतिम्।
सम्मन्त्र्य पत्न्या सः महार्णवे मृतम् बालम् प्रभासे वरयाम्बभूव ह ॥

शब्दार्थ—

द्विजः तयोः तम्	३. ब्राह्मण ने उन दोनों की	सम्मन्त्र्य	१०. सलाह करके
महिमानम्	४. महिमा और	पत्न्या	९. पत्नी से
अद्‌भुतम्	५. अद्‌भुत	सः	२. उस
संलक्ष्य	८. जान कर	महार्णवे मृतम्	१२. महा समुद्र में मरे हुये
राजन्	१. हे राजन्!	बालम्	१३. बालक को (लाने की)
अतिमानुषीम्	६. अलौकिक	प्रभासे	११. प्रभास क्षेत्र में
मतिम्।	७. बुद्धि	वरयाम्बभूव ह ॥	१४. गुरु ने दक्षिणा माँगी

श्लोकार्थ—हे राजन्! उस ब्राह्मण ने उन दोनों की अद्‌भुत और अलौकिक बुद्धि जान कर पत्नी से सलाह करके प्रभास क्षेत्र में महासमुद्र में मरे हुये बालक को लाने की गुरु दक्षिणा माँगी ॥

अष्टत्रिंशः श्लोकः

तथेत्यथारुह्य महारथौ रथं प्रभासमासाद्य दुरन्तविक्रमौ।

वेलामुपव्रज्य निषीदतुः क्षणं सिन्धुर्विदित्वार्हणमाहरत्तयोः ॥३८॥

पदच्छेद— तथा इति अथ आरुह्य महारथौ रथम् प्रभासम् आसाद्य दुरन्त विक्रमौ।
वेलाम् उपव्रज्य निषीदतुः क्षणम् सिन्धुः विदित्वा अर्हणम् अहरत्तयोः ॥

शब्दार्थ—

तथा इति	२. अच्छा यह कह कर	वेलाम् उपव्रज्य	८. समुद्र तट पर जाकर
अथ	१. तब	निषीदतुः	१०. बैठे रहे
आरुह्य	५. चढ़ कर	क्षणम्	९. कुछ क्षण
महारथौ रथम्	४. महारथी रथ पर	सिन्धुः	११. समुद्र यह
प्रभासम्	६. प्रभास क्षेत्र में	विदित्वा	१२. जान कर
आसाद्य	७. पहुँच कर	अर्हणम्	१३. पूजन सामग्री लेकर
दुरन्तविक्रमौ।	३. अनन्त पराक्रमी	आहरत्तयोः ॥	१४. उनके पास आया

श्लोकार्थ—तब अच्छा यह कह कर अनन्त पराक्रमी महारथी रथ पर चढ़ कर प्रभास क्षेत्र में पहुँच कर समुद्र तट पर जाकर कुछ क्षण बैठे रहे। समुद्र यह जान कर पूजन सामग्री लेकर उनके पास आया ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

तमाह भगवानाशु गुरुपुत्रः प्रदीयताम् ।
योऽसाविह त्वया ग्रस्तो बालको महतोर्मिणा ॥३९॥

पदच्छेद— तम् आह भगवान् आशु गुरु पुत्रः प्रदीयताम् ।
यः असौ इह त्वया ग्रस्तः बालकः महता ऊर्मिणा ।।

शब्दार्थ—

तम्	१.	उससे	यः	७.	जिस
आह	३.	कहा	असौ	९.	गुरु पुत्र को
भगवान्	२.	भगवान् ने	इह त्वया	१०.	यहाँ तुम
आशु	४.	शीघ्र (हमें)	ग्रस्तः	१३.	बहा ले गये थे
गुरु पुत्रः	५.	गुरु के पुत्र	बालकः	८.	बालक
प्रदीयताम् ।	६.	दे दो	महता	११.	अपनी महान्
			ऊर्मिणा ।।	१२.	तरंग में

श्लोकार्थ—उससे भगवान् ने कहा शीघ्र हमें गुरु पुत्र दे दो । जिस बालक गुरु पुत्र को यहाँ तुम अपनी महान् तरंग में बहा ले गये थे ।।

चत्वारिंशः श्लोकः

समुद्र उवाच—नैवाहार्षमहं देव दैत्यः पञ्चजनो महान् ।
अन्तर्जलचरः कृष्ण शङ्खरूपधरोऽसुरः ॥४०॥

पदच्छेद— न एव अहार्षम् अहम् देव दैत्यः पञ्चजनः महान् ।
अन्तः जलचरः कृष्ण शङ्ख रूपधरः असुरः ।।

शब्दार्थ—

न एव	४.	नहीं	अन्तः	६.	भीतर
अहार्षम्	५.	लिया है	जलचरः	७.	जल में विचरण करने वाला
अहम्	३.	मैंने	कृष्ण	२.	श्रीकृष्ण
देव	१.	हे महाराज !	शङ्ख	१२.	शङ्ख का
दैत्यः	१०.	दैत्य जाति का	रूपधरः	१३.	रूप धारण करके रहता है
पञ्चजनः	८.	पञ्चजन नामक	असुरः ।।	११.	असुर
महान् ।	९.	एक बड़ा भारी			

श्लोकार्थ—हे महाराज ! श्रीकृष्ण ! मैंने नहीं लिया है । भीतर जल में विचरण करने वाला पञ्चजन नामक एक बड़ा भारी दैत्य जाति का असुर शङ्ख का रूप धारण करके रहता है ।।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

आस्ते तेनाहृतो नूनं तच्छ्रुत्वा सत्वरं प्रभुः ।
जलमाविश्य तं हत्वा नापश्यदुदरेऽर्भकम् ॥४१॥

पदच्छेद— आस्ते तेन आहृतः नूनम् तत् श्रुत्वा सत्वरम् प्रभुः ।
जलम् आविश्य तम् हत्वा न अपश्यत् उदरे अर्भकम् ॥

शब्दार्थ—

आस्ते	४. है	जलम्	८. जल में
तेन	२. उसी ने	आविश्य	९. घुसकर (और)
आहृतः	३. अपहरण किया	तम्	१०. उसे
नूनम्	१. निश्चित रूप से	हत्वा	११. मारकर
तत् श्रुत्वा	५. यह सुनकर	न अपश्यत्	१४. नहीं देखा
सत्वरम्	७. शीघ्र ही	उदरे	१२. उसके पेट में
प्रभुः ।	६. भगवान् श्रीकृष्ण ने	अर्भकम् ॥	१३. बालक को

श्लोकार्थ—निश्चित रूप से उसी ने अपहरण किया है। यह सुनकर भगवान् श्रीकृष्ण ने जल मे घुसकर और उसे मार कर उसके पेट में बालक को नहीं देखा ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

तदङ्गप्रभवं शङ्खमादाय रथमागमत् ।
ततः संयमनीं नाम यमस्य दयितां पुरीम् ॥४२॥

पदच्छेद— तत् अङ्ग प्रभवम् शङ्खम् आदाय रथम् आगमत् ।
ततः सयमनीं नाम यमस्य दयिताम् पुरीम् ॥

शब्दार्थ—

तत्	१. उसके	ततः	७. वहाँ से
अङ्ग प्रभवम्	२. अङ्गों से उत्पन्न	संयमनीम्	८. संयमनी
शङ्खम्	३. शङ्ख को	नाम	९. नामक
आदाय	४. लेकर	यमस्य	१०. यम की
रथम्	५. रथ पर	दयिताम्	११. प्रिय
आगमत् ।	६. आ गये	पुरीम् ॥	१२. पुरी में गये

श्लोकार्थ—उसके अङ्गों से उत्पन्न शङ्ख को लेकर रथ पर आ गये। वहाँ से संयमनी नामक यम की प्रिय पुरी में गये ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

गत्वा जनार्दनः शङ्खं प्रदध्मौ सहलायुधः ।
शङ्खनिर्ह्रादमाकर्ण्य प्रजासंयमनो यमः ॥४३॥

पदच्छेद— गत्वा जनार्दनः शङ्खं प्रदध्मौ सहलायुधः ।
शङ्ख निर्ह्रादम् आकर्ण्य प्रजा संयमनो यमः ॥

शब्दार्थ—

गत्वा	२.	जाकर	शङ्खं	६.	शङ्ख का
जनार्दनः	३.	श्रीकृष्ण ने	निर्ह्रादम्	७.	शब्द
शङ्खं	४.	शङ्ख	आकर्ण्य	८.	सुनकर
प्रदध्मौ	५.	बजाया	प्रजा	९.	प्रजा का
सहलायुधः ।	१.	बलराम जी के साथ	संयमनः यमः ॥	१०.	शासन करने वाले यमराज आये

श्लोकार्थ—तब बलराम जी के साथ जाकर श्रीकृष्ण ने शङ्ख बजाया । शङ्ख का शब्द सुनकर प्रजा का शासन करने वाले यमराज आये ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

तयोः सपर्यां महतीं चक्रे भक्त्युपबृंहिताम् ।
उवाचावनतः कृष्णं सर्वभूताशयालयम् ।
लीला मनुष्य हे विष्णो युवयोः करवाम किम् ॥४४॥

पदच्छेद— तयोः सपर्याम् महतीम् चक्रे भक्त्या उपबृंहिताम् ।
उवाच अवनतः कृष्णम् सर्वभूत आशय आलयम् ।
लीला मनुष्य हे विष्णो युवयोः करवाम किम् ॥

शब्दार्थ—

तयोः	१.	उनका	सर्वभूतः	७.	सभी प्राणियों के
सपर्याम्	४.	पूजा	आशयः	८.	हृदय में
महतीम्	३.	बड़ी	आलयम्	९.	विराजमान
चक्रे	५.	की और	लीला मनुष्य	१२.	लीला से मनुष्य बने हुये
भक्ति उपबृंहितम्	२.	भक्ति से भरकर विधिपूर्वक	हे विष्णो	१३.	हे परमेश्वर !
उवाच	११.	कहा	युवयोः	१४.	आप दोनों की
अवनतः	६.	विनम्र होकर	करवाम	१६.	करूँ
कृष्णम् ।	१०.	श्रीकृष्ण से	किम्	१५.	क्या सेवा

श्लोकार्थ—उनकी भक्ति से भरकर विधिपूर्वक बड़ी पूजा की और विनम्र होकर सभी प्राणियों के हृदय में विराजमान श्रीकृष्ण से कहा-लीला से मनुष्य बने हुये हे परमेश्वर ! आप दोनों की क्या सेवा करूँ ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—गुरुपुत्रमिहानीतं निजकर्मनिबन्धनम् ।
आनयस्व महाराज मच्छासनपुरस्कृतः ।।४५।।

पदच्छेद— गुरु पुत्रम् इह आनीतम् निजकर्म निबन्धनम् ।
आनयस्व महाराज मत् शासन पुरस्कृतः ।।

शब्दार्थ—

गुरु	६.	मेरे गुरु के	आनयस्व	११.	ले आओ
पुत्रम्	७.	पुत्र को	महाराज	१.	हे महाराज !
इह	४	यहाँ	मत्	८.	मेरी
आनीतम्	५.	लाये गये	शासन	९.	आज्ञा को
निजकर्म	२.	अपने कर्म	पुरस्कृतः	१०.	स्वीकार करके
निबन्धनम् ।	३.	बन्धन के अनुसार			

श्लोकार्थ—हे महाराज ! अपने कर्म बन्धन के अनुसार यहाँ लाये गये मेरे गुरु के पुत्र को मेरी आज्ञा स्वीकार करके ले आओ ।।

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

तथेति तेनोपानीतं गुरुपुत्रं यदूत्तमौ ।
दत्त्वा स्वगुरवे भूयो वृणीष्वेति तमूचतुः ।।४६।।

पदच्छेद— तथा इति तेन उपानीतम् गुरु पुत्रम् यदुउत्तमौ ।
दत्त्वा स्व गुरवे भूयः वृणीष्व इति तम् ऊचतुः ।।

शब्दार्थ—

तथा	१.	बहुत अच्छा	दत्त्वा	९.	देकर
इति	२.	इस प्रकार कहकर	स्व	७.	अपने
तेन	३.	यमराज के घर से	गुरवे	८.	गुरु को
उपानीतम्	४.	लाये गये	भूयः वृणीष्व	१२.	जो चाहें माँग लें
गुरु पुत्रम्	५.	गुरु पुत्र को	इति	११.	कि (और)
यदुउत्तमौ ।	६.	श्रीकृष्ण और बलराम ने	तम् ऊचतुः ।।	१०.	उनसे कहा

श्लोकार्थ—बहुत अच्छा, इस प्रकार कहकर यमराज के घर से लाये गये गुरुपुत्र को श्रीकृष्ण और बलराम ने अपने गुरु को देकर उनसे कहा कि और जो चाहें माँग लें ।।

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

गुरुः उवाच— सम्यक् संपादितो वत्स भवद्भ्यां गुरुनिष्क्रयः ।
को नु युष्मद्विधगुरोः कामानामवशिष्यते ॥४७॥

पदच्छेद— सम्यक् सम्पादितः वत्स भवद्भ्याम् गुरु निष्क्रयः ।
कः नु युष्मत् विधगुरोः कामानाम् अवशिष्यते ॥

शब्दार्थ—

सम्यक्	३.	भली भाँति	कः नु	९.	कौन सा
सम्पादितः	६.	दी	युष्मत्	७.	आप
वत्स	१.	हे वत्स !	विधगुरोः	८.	जैसे पुरुषोत्तम के गुरु का
भवद्भ्याम्	२.	आप दोनों ने	कामानाम्	१०.	मनोरथ
गुरु	४.	गुरु	अवशिष्यते ॥	११.	अपूर्ण रह सकता है
निष्क्रयः ।	५.	दक्षिणा			

श्लोकार्थ—हे वत्स ! आप दोनों ने भली भाँति गुरु दक्षिणा दी । आप जैसे पुरुषोत्तम के गुरु का कौन सा मनोरथ अपूर्ण रह सकता है ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

गच्छतं स्वगृहं वीरौ कीर्तिर्वामस्तु पावनी ।
छन्दांस्ययातयामानि भवन्त्विह परत्र च ॥४८॥

पदच्छेद— गच्छतम् स्वगृहम् वीरौ कीर्तिः वाम् अस्तु पावनी ।
छन्दांसि अयातय यामानि भवन्तु इह परत्र च ॥

शब्दार्थ—

गच्छतम्	३.	जाओ	छन्दांसि	७.	तुम्हारे पढ़े हुये वेद
स्वगृहम्	२.	अपने घर	अयात	१०.	सदा
वीरौ	१.	हे वीरो !	यामानि	११.	नवीन
कीर्तिः	५.	कीर्ति	भवन्तु	१२.	बने रहें
वाम् अस्तु	६.	तुम दोनों को प्राप्त हो	इह	८.	इस लोक
पावनी ।	४.	लोकों को पवित्र करने वाली	परत्र च ॥	९.	और परलोक में

श्लोकार्थ—हे वीरो ! अपने घर जाओ । लोकों को पवित्र करने वाली कीर्ति तुम दोनों को प्राप्त हो । तुम्हारे पढ़े हुये वेद इस लोक और परलोक में सदा नवीन बने रहें ॥

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

गुरुणैवमनुज्ञातौ रथेनानिलरंहसा ।
आयातौ स्वपुरं तात पर्जन्यनिनदेन वै ॥४९॥

पदच्छेद— गुरुणा एवम् अनुज्ञातौ रथेन अनिल रंहसा ।
आयातौ स्वपुरम् तात पर्जंन्य निनदेन वै ॥

शब्दार्थ—

गुरुणा	३. गुरु से	आयातौ	१२. आ गये
एवम्	२. इस प्रकार	स्वपुरम्	११. अपने नगर में
अनुज्ञातौ	४. आज्ञा लेकर	तात	१. हे परीक्षित् !
रथेन	१०. रथ से	पर्जन्य	८. मेघ के समान
अनिल	५. वायु के समान	निनदेन	९. शब्द वाले
रंहसा ।	६. वेग वाले	वै ॥	७. और

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इस प्रकार गुरु से आज्ञा लेकर वायु के समान वेग वाले और मेघ के समान शब्द वाले रथ से अपने नगर में आ गये ॥

पञ्चाशः श्लोकः

समनन्दन् प्रजाः सर्वा दृष्ट्वा रामजनार्दनौ ।
अपश्यन्त्यो बह्वहानि नष्टलब्धधना इव ॥५०॥

पदच्छेद— सम् अनन्दन् प्रजाः सर्वाः दृष्ट्वा राम जनार्दनौ ।
अपश्यन्त्यः बहु अहानि नष्ट लब्धधनाः इव ॥

शब्दार्थ—

सम् अनन्दन्	१२. बहुत आनन्दित हुईं	अपश्यन्त्यः	५. न देखती हुईं
प्रजाः	७. प्रजायें	बहु	१. बहुत
सर्वाः	६. सभी	अहानि	२. दिनों से
दृष्ट्वा	८. देख कर	नष्ट	१०. खोया हुआ
राम	३. बलराम और	लब्धधनाः	११. धन मिल गया हो
जनार्दनौ ।	४. श्रीकृष्ण को	इव ॥	९. मानों

श्लोकार्थ—बहुत दिनों से बलराम और श्रीकृष्ण को न देखती हुईं सभी प्रजायें उन्हें देख कर मानों खोया हुआ धन मिल गया हो इस प्रकार बहुत आनन्दित हुईं ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे गुरुपुत्रआनयनं नाम पञ्चचत्वारिंशः अध्यायः ॥४५॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

षट्चत्वारिंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—वृष्णीनां प्रवरो मन्त्री कृष्णस्य दयितः सखा ।
शिष्यो बृहस्पतेः साक्षादुद्धवो बुद्धिसत्तमः ॥१॥

पदच्छेद— वृष्णीनाम् प्रवरः मन्त्री कृष्णस्य दयितः सखा ।
शिष्यः बृहस्पतेः साक्षात् उद्धवः बुद्धिसत्तमः ॥

शब्दार्थ—

वृष्णीनाम्	२.	वृष्णि वंशियों में	शिष्यः	८.	शिष्य (और)
प्रवरः	३.	श्रेष्ठ	बृहस्पतेः	७.	बृहस्पति के
मन्त्री	१२.	मन्त्री थे	साक्षात्	६.	साक्षात्
कृष्णस्य	९.	श्रीकृष्ण के	उद्धवः	१.	उद्धव
दयितः	१०.	प्रिय	बुद्धि	५.	बुद्धिमान्
सखा ।	११.	मित्र (एवम्)	सत्तमः ॥	४.	परम

श्लोकार्थ उद्धव वृष्णि वंशियों में श्रेष्ठ परम बुद्धिमान् साक्षात् बृहस्पति के शिष्य, श्रीकृष्ण के प्रिय मित्र एवम् मन्त्री थे ॥

द्वितीयः श्लोकः

तमाह भगवान् प्रेष्ठं भक्तमेकान्तिनं क्वचित् ।
गृहीत्वा पाणिना पाणिं प्रपन्नार्तिहरो हरिः ॥२॥

पदच्छेद— तम् आह भगवान् प्रेष्ठम् भक्तम् एकान्तिनम् क्वचित् ।
गृहीत्वा पाणिना पाणिम् प्रपन्न आर्तिहरः हरिः ॥

शब्दार्थ—

तम्	१०.	उन उद्धव का	गृहीत्वा	१३.	लेकर
आह	१४.	कहा	पाणिना	१२.	अपने हाथ में
भगवान्	५.	भगवान्	पाणिम्	११.	हाथ
प्रेष्ठम्	७.	अत्यन्त प्रिय	प्रपन्न	२.	शरणागतों के
भक्तम्	८.	भक्त और	आर्ति	३.	दुःख
एकान्तिनम्	९.	एकान्त प्रेमी	हरः	४.	हरने वाले
क्वचित् ।	१.	एक दिन	हरिः ॥	६.	श्रीकृष्ण ने

श्लोकार्थ—एक दिन शरणागतों के दुःख हरने वाले भगवान् श्रीकृष्ण ने अत्यन्त प्रिय भक्त और एकान्त प्रेमी उन उद्धव का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा ॥

तृतीयः श्लोकः

गच्छोद्धव व्रजं सौम्य पित्रोर्नौ प्रीतिमावह ।
गोपीनां मद्वियोगाधिं मत्सन्देशैर्विमोचय ॥३॥

पदच्छेद— गच्छ उद्धव व्रजम् सौम्य पित्रोः नौ प्रीतिम् आवह ।
गोपीनाम् मत् वियोग आधिम् मत् सन्देशैः विमोचय ॥

शब्दार्थ—

गच्छ	४.	जाओ (और)	गोपीनाम्	१०.	गोपियों को
उद्धव	२.	उद्धव	मत्	११.	मेरे
व्रजम्	३.	तुम व्रज में	वियोग	१२.	वियोग की
सौम्य	१.	हे सौम्य स्वभाव !	आधिम्	१३.	व्याधि से
पित्रोः नो	५.	हमारे माता-पिता को	मत्	८.	मेरा
प्रीतिम्	६.	हर्षित	सन्देशैः	९.	सन्देश देकर
आवह ।	७.	करो (और)	विमोचय ॥	१४.	दूर करो

श्लोकार्थ—हे सौम्य स्वभाव उद्धव ! तुम व्रज में जाओ और हमारे माता-पिता को हर्षित करो । तथा मेरा सन्देश देकर गोपियों को मेरे वियोग की व्याधि से दूर करो ।

चतुर्थः श्लोकः

ता मन्मनस्का मत्प्राणा मदर्थे त्यक्तदैहिकाः ।
मामेव दयितं प्रेष्ठमात्मानं मनसा गताः ।
ये त्यक्तलोकधर्माश्च मदर्थे तान् बिभर्म्यहम् ॥४॥

पदच्छेद— ताः मत् मनस्काः मत् प्राणाः मत् अर्थे त्यक्त दैहिकाः ।
माम् एव दयितम् प्रेष्ठम् आत्मानम् मनसा गताः ।
ये त्यक्त लोक धर्माः च मत् अर्थे तान् बिर्भमि अहम् ॥

शब्दार्थ—

ताः मत् मनस्काः	१.	मुझमें मन तथा	ये	९.	जिन्होंने
मत् प्राणाः	२.	प्राण लगाने वाली	त्यक्त	१२.	त्याग दिया है
मत् अर्थे	३.	मेरे लिये	लोकधर्मान	११.	लोक धर्म को
त्यक्त दैहिकाः	४.	सगे सम्बिन्धियों को त्यागने वाली	च	८.	और
माम् एव दयितम्	५.	मुझे ही प्रिय	मत् अर्थे	१०.	मेरे लिये
प्रेष्ठम् आत्मानम्	६.	प्रियतम और आत्मा	तान्	१३.	उनका
मनसा गताः ।	७.	मानने वाली हैं	बिर्भमि अहम् ॥	१४.	मैं पोषण करता हूँ

श्लोकार्थ—वे मुझमें मन तथा प्राण लगाने वाली, मेरे लिये सगे सम्बन्धियों को त्यागने वाली, मुझे ही प्रिय, प्रियतम और आत्मा मानने वाली हैं । और जिन्होंने मेरे लिये लोक धर्म को त्याग दिया है, उनका मैं पोषण करता हूँ ॥

पञ्चमः श्लोकः

मयि ताः प्रेयसां प्रेष्ठे दूरस्थे गोकुलस्त्रियः।

स्मरन्त्योऽङ्ग विमुह्यन्ति विरहौत्कण्ठ्यविह्वलाः ॥५॥

पदच्छेद— मयि ताः प्रेयसाम् प्रेष्ठे दूरस्थे गोकुल स्त्रियः।
स्मरन्त्यः अङ्ग विमुह्यन्ति विरह औत्कण्ठ्य विह्वलाः ॥

शब्दार्थ—

मयि	८.	मेरा	स्मरन्त्यः	९.	स्मरण करके
ताः	२.	वे	अङ्ग	१.	हे प्रिय उद्धव !
प्रेयसाम्	५.	प्रिय से भी	विमुह्यन्ति	१०.	मोहित हो रही हैं और
प्रेष्ठे	६.	अत्यन्त प्रिय	विरह	११.	विरह वश
दूरस्थे	७.	दूर में स्थित	औत्कण्ठ्य	१२.	उत्कण्ठा से
गोकुल	३.	गोकुल की	विह्वलाः ॥	१३.	विह्वल हो रही हैं
स्त्रियः।	४.	स्त्रियाँ			

श्लोकार्थ—हे प्रिय उद्धव ! वे गोकुल की स्त्रियाँ प्रिय के भी अत्यन्त प्रिय, दूर में स्थित मेरा स्मरण करके मोहित हो रही हैं और विरहवश उत्कण्ठा से अति विह्वल हो रही हैं ॥

षष्ठः श्लोकः

धारयन्त्यतिकृच्छ्रेण प्रायः प्राणान् कथञ्चन।

प्रत्यागमनसन्देशैर्बल्लव्यो मे मदात्मिकाः ॥६॥

पदच्छेद— धारयन्ति अति कृच्छ्रेण प्रायः प्राणान् कथञ्चन।
प्रत्यागमन सन्देशैः बल्लव्यः मे मत् आत्मिकाः ॥

शब्दार्थ—

धारयन्ति	१२.	धारण कर रही हैं	प्रत्यागमन	५.	मेरे लौटने के
अति	८.	अत्यन्त	सन्देशैः	६.	सन्देशों से
कृच्छ्रेण	९.	कष्ट से	बल्लव्यः	४.	गोपियाँ
प्रायः	७.	प्रायः	मे	३.	मेरी
प्राणान्	११.	प्राणों को	मत्	१.	मुझ में
कथञ्चन।	१०.	किसी प्रकार	आत्मिकाः ॥	२.	तन्मय रहने वाली

श्लोकार्थ—मुझमें तन्मय रहने वाली मेरी गोपियाँ मेरे लौटने के सन्देशों को पाकर प्रायः अत्यन्त कष्ट से किसी प्रकार प्राणों को धारण कर रही हैं ॥

सप्तमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इत्युक्त उद्धवो राजन् संदेशं भर्तुराहतः ।
आदाय रथमारुह्य प्रययौ नन्दगोकुलम् ।।७।।

पदच्छेद— इति उक्तः उद्धवः राजन् संदेशम् भर्तुः आदृतः ।
आदाय रथम् आरुह्य प्रययौ नन्द गोकुलम् ।।

शब्दार्थ—

इति	२.	इस प्रकार	आदाय	८.	लेकर
उक्तः	३.	कहे जाने पर	रथम्	९.	रथ पर
उद्धवः	४.	उद्धव	आरुह्य	१०.	चढ़ कर
राजन्	१.	हे राजन् !	प्रययौ	१३.	चल पड़े
सन्देशम्	७.	सन्देश	नन्द	११.	नन्द
भर्तुः	६.	स्वामी का	गोकुलम् ।।	१२.	गाँव के लिये
आदृतः ।	५.	आदर से			

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस प्रकार कहे जाने पर उद्धव आदर से स्वामी का सन्देश लेकर रथ पर चढ़कर नन्द गाँव के लिये चल पड़े ।।

अष्टमः श्लोकः

प्राप्तो नन्दव्रजं श्रीमान् निम्लोचति विभावसौ ।
छन्नयानः प्रविशतां पशूनां खुररेणुभिः ।।८।।

पदच्छेद— प्राप्तः नन्द व्रजम् श्रीमान् निम्लोचति विभावसौ ।
छन्नयानः प्रविशताम् पशूनां खुर रेणुभिः ।।

शब्दार्थ—

प्राप्तः	६.	पहुँच गये (उस समय)	छन्नयानः	११.	उनका रथ ढक गया
नन्द	४.	नन्द के	प्रविशताम्	७.	गाँव में प्रवेश करते हुये
व्रजम्	५.	व्रज में	पशूनां	८.	पशुओं के
श्रीमान्	१.	श्रीमान् उद्धव	खुर	९.	खुरों की
निम्लोचति	३.	अस्त होने के समय	रेणुभिः ।।	१०.	धूली से
विभावसौ ।	२.	सूर्य के			

श्लोकार्थ—श्रीमान् उद्धव सूर्य के अस्त होने के समय नन्द के व्रज में पहुँच गये । उस समय गाँव में प्रवेश करते हुये, पशुओं के खुरों की धूली से उनका रथ ढक गया ।।

नवमः श्लोकः

वासितार्थेऽभियुध्यद्भिर्नादितं शुष्मिभिर्वृषैः ।
धावन्तीभिश्च वास्राभिरूधोभारैः स्ववत्सकान् ॥९॥

पदच्छेद— वासिता अर्थे अभियुध्यद्भिः नादितम् शुष्मिभिः वृषैः ।
धावन्तीभिः च वास्राभिः ऊधोभारैः स्व वत्सकान् ॥

शब्दार्थ—

वासिता	१. ऋतुमती गऊओं	धावन्तीभिः	१२. दौड़ रही थीं
अर्थे	२. के लिये	च	७. और
अभियुध्यद्भिः	३. आपस में लड़ते हुये	वास्राभिः	८. नई ब्याही हुई गौयें
नादितम्	६. गर्जना कर रहे थे	ऊधोभारैः	९. थनों के भार से दबी हुई
शुष्मिभिः	४. मतवाले	स्व	१०. अपने-अपने
वृषैः ।	५. साँड़	वत्सकान् ॥	११. बछड़ों की ओर

श्लोकार्थ—ऋतुमती गऊओं के लिये आपस में लड़ते हुये मतवाले साँड़ गर्जना कर रहे थे। और नई ब्याही हुई गौएँ थनों के भार से दबी हुई अपने-अपने बछड़ों की ओर दौड़ रही थीं ॥

दशमः श्लोकः

इतस्ततो विलङ्घद्भिर्गोवत्सैर्मण्डितं सितैः ।
गोदोहशब्दाभिरवं वेणूनां निःस्वनेन च ॥१०॥

पदच्छेद— इतः ततः विलङ्घद्भिः गोवत्सैः मण्डितम् सितैः ।
गोदोह शब्दअभिरवम् वेणूनाम् निःस्वनेन च ॥

शब्दार्थ—

इतः	१ इधर	गोदोह	७. गाय दूहने के
ततः	२. उधर	शब्दअभि	८. शब्द से
विलङ्घद्भिः	३. उछल-कूद करते हुये	रवम्	१२. शब्दायमान था
गोवत्सैः	५. बछड़ों से व्रज	वेणुनाम्	१०. बाँसुरी की
मण्डितम्	६. शोभित हो रहा था	निःस्वनेन	११. ध्वनि से
सितैः ।	४. उजले	च ॥	९. और

श्लोकार्थ—इधर-उधर उछल-कूद करते हुये उजले बछड़ों से व्रज शोभित हो रहा था। वह गाय दूहने के शब्द से और बाँसुरी की ध्वनि से शब्दायमान था ॥

एकादशः श्लोकः

गायन्तीभिश्च कर्माणि शुभानि बलकृष्णयोः ।
स्वलङ्कृताभिर्गोपीभिर्गोपैश्च सुविराजितम् ॥११॥

पदच्छेद— गायन्तीभिः च कर्माणि शुभानि बल कृष्णयोः ।
सु अलङ्कृताभिः गोपीभिः गोपैः च सुविराजितम् ॥

शब्दार्थ—

गायन्तीभिः	६. गायन करती हुई	सु	७. भलीभाँति
च	२. और	अलङ्कृताभिः	८. सजी धजी
कर्माणि	५. चरित्रों को	गोपीभिः	९. गोपियों
शुभानि	४. मंगलमय	गोपैः	११. गोपों से
बल	१. बलराम	च	१०. और
कृष्णयोः ।	३. श्रीकृष्ण के	सुविराजितम् ॥	१२. व्रज की शोभा बढ़ गई थी

श्लोकार्थ—बलराम और श्रीकृष्ण के मंगलमय चरित्रों का गायन करती हुई भली-भाँति सजी-धजी गोपियों और गोपों से व्रज की शोभा बढ़ गई थी ॥

द्वादशः श्लोकः

अग्न्यर्कातिथिगोविप्रपितृदेवार्चनान्वितैः ।
धूपदीपैश्च माल्यैश्च गोपावासैर्मनोरमम् ॥१२॥

पदच्छेद— अग्नि अर्क अतिथि गो विप्र पितृदेव अर्चन अन्वितैः ।
धूप दीपैः च माल्यैः च गोप आवासैः मनोरमम् ॥

शब्दार्थ—

अग्नि	१. अग्नि	धूप	८. धूप
अर्क	२. सूर्य	दीपैः	९. दीप
अतिथि	३. अतिथि	च	१०. और
गो विप्र	४. गो, ब्राह्मण	माल्यैः	११. मालाओं से
पितृदेव	५. पितरों, देवताओं के	च	१२. तथा
अर्चन	६. पूजन से	गोप आवासैः	१३. गोप गृहों से
अन्वितैः ।	७. युक्त	मनोरमम् ॥	१४. व्रज मनोहर लग रहा था

श्लोकार्थ—अग्नि, सूर्य, अतिथि, गो, ब्राह्मण, पितरों, देवताओं के पूजन से युक्त धूप, दीप और मालाओं से तथा गोप-गृहों से व्रज मनोहर लग रहा था ॥

त्रयोदशः श्लोकः

सर्वतः पुष्पितवनं द्विजालिकुलनादितम् ।
हंसकारण्डवाकीर्णैः पद्मषण्डैश्च मण्डितम् ॥१३॥

पदच्छेद — सर्वतः पुष्पित वनम् द्विज अलिकुल नादितम् ।
हंस कारण्डव आकीर्णैः पद्मषण्डैः च मण्डितम् ॥

शब्दार्थ—

सर्वतः	२.	चारों ओर	हंस	७.	हंसों और
पुष्पित	३.	फूलों से लदा था (उसमें)	कारण्डव	८.	बत्तखों से
वनम्	१.	वहाँ का वन	आकीर्णैः	९.	व्याप्त
द्विज	४.	पक्षी और	पद्मषण्डैः	११.	कमल सरोवरों से
अलिकुल	५.	भौंरे	च	१०.	तथा
नादितम् ।	६.	गुञ्जार कर रहे थे	मण्डितम् ॥	१२.	शोभित था

श्लोकार्थ—वहाँ का वन चारों ओर फूलों से लदा था। उसमें पक्षी और भौंरे गुञ्जार कर रहे थे। हंसो और बत्तखों से व्याप्त तथा कमल-सरोवरों से शोभित था।

चतुर्दशः श्लोकः

तमागतं समागम्य कृष्णस्यानुचरं प्रियम् ।
नन्दः प्रीतः परिष्वज्य वासुदेवधियाऽर्चयत् ॥१४॥

पदच्छेद — तम् आगतम् समागम्य कृष्णस्य अनुचरम् प्रियम् ।
नन्दः प्रीतः परिष्वज्य वासुदेव धिया अर्चयत् ॥

शब्दार्थ—

तम्	५.	उन (उद्धव से)	नन्दः	७.	नन्द जी
आगतम्	१.	आये हुये	प्रीतः	८.	प्रसन्न हुये (और उनको)
समागम्य	६.	मिलकर	परिष्वज्य	९.	गले लगाकर (उनकी)
कृष्णस्य	२.	कृष्ण के	वासुदेव	१०.	श्रीकृष्ण
अनुचरम्	४.	सेवक	धिया	११.	बुद्धि से
प्रियम् ।	३.	प्रिय	अर्चयत् ॥	१२.	पूजा की

श्लोकार्थ—आये हुये कृष्ण के प्रिय सेवक उन उद्धव से मिलकर नन्द जी प्रसन्न हुये और उनको गले लगाकर उनकी श्रीकृष्ण-बुद्धि से पूजा की ॥

पञ्चदशः श्लोकः

भोजितं परमान्नेन संविष्टं कशिपौ सुखम् ।
गतश्रमं पर्यपृच्छत् पादसंवाहनादिभिः ॥१५॥

पदच्छेद— भोजितम् परमान्नेन संविष्टं कशिपौ सुखम् ।
गतश्रमम् पर्यपृच्छत् पाद संवाहन आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

भोजितम्	२. भोजन कराया और	गतश्रमम्	९. थकावट दूर हो गई (तब)
परमान्नेन	१. उन्हें खीर का	पर्यपृच्छत्	१०. उनसे पूछा
संविष्टम्	५. लेट जाने पर	पाद	६. पैर
कशिपौ	४. पलंग पर	संवाहन	७. दबाने
सुखम् ।	३. सुख से	आदिभिः ॥	८. आदि से (जब)

श्लोकार्थ—उन्हें खीर का भोजन कराया और सुख से पलंग पर लेट जाने पर पैर दबाने आदि से जब थकावट दूर हो गई तब उनसे पूछा ॥

षोडशः श्लोकः

कच्चिदङ्ग महाभाग सखा नः शूरनन्दनः ।
आस्ते कुशल्यपत्याद्यैर्युक्तो मुक्तः सुहृद्वृतः ॥१६॥

पदच्छेद— कच्चिद् अङ्ग महाभाग सखा नः शूरनन्दनः ।
आस्ते कुशली अपत्य आद्यैः युक्तः मुक्तः सुहृद् वृतः ॥

शब्दार्थ—

कच्चिद्	३. क्या	आस्ते कुशली	१२. कुशल से तो हैं
अङ्ग	२. बन्धु (उद्धव जी)	अपत्य	९. पत्नी और सन्तान
महाभाग	१. हे परम भाग्यवान् !	आद्यैः	१०. आदि से
सखा	५. मित्र	युक्तः	११. युक्त होकर
नः	४. हमारे	मुक्तःसुहृद्	७. जेल से छूटे हुये मित्रों से
शूरनन्दनः ।	६. वसुदेव जी	वृतः ॥	८. घिरे हुये

श्लोकार्थ—हे परम भाग्यवान् बन्धु उद्धव जी ! क्या हमारे मित्र वसुदेव जी जेल से छूटे हुये, मित्रों से घिरे हुये, पत्नी और सन्तान से युक्त होकर कुशल से तो हैं ॥

सप्तदशः श्लोकः

दिष्टया कंसो हतः पापः सानुगः स्वेन पाप्मना ।
साधूनां धर्मशीलानां यदूनां द्वेष्टि यः सदा ।१७॥

पदच्छेद— दिष्टया कंसः हतः पापः सानुगः स्वेन पाप्मना ।
साधूनाम् धर्म शीलानाम् यदूनाम् द्वेष्टि यः सदा ॥

शब्दार्थ—

दिष्टया	१.	भाग्य की बात है कि	साधूनाम्	१०.	साधु और
कंसः	३.	कंस	धर्म	१२.	धार्मिक
हतः	७.	मारा गया	शीलानाम्	११.	परम
पापः	२.	पापी	यदूनाम्	१३.	यदुवंशियों से
स अनुगः	६.	अपने अनुयायियों के साथ	द्वेष्टि	१४.	द्वेष करता था
स्वेन	४.	अपने	यः	८.	वह
पाप्मना ।	५.	पाप के कारण	सदा ॥	९.	सदा

श्लोकार्थ—उद्धव जी ! भाग्य की बात है कि पापी कंस अपने पाप के कारण अपने अनुयायियों के साथ मारा गया । वह सदा साधु और परम धार्मिक यदुवंशियों से द्वेष करता था ।

अष्टादशः श्लोकः

अपि स्मरति नः कृष्णो मातरं सुहृदः सखीन् ।
गोपान् व्रजम् चात्मनाथं गावो वृन्दावनं गिरिम् ॥१८॥

पदच्छेद— अपि स्मरति नः कृष्णः मातरम् सुहृदः सखीन् ।
गोपान् व्रजम् च आत्म नाथम् गावः वृन्दावनम् गिरिम् ॥

शब्दार्थ—

अपि	१.	क्या	गोपान्	७.	गोपों
स्मरति	१४.	स्मरण करते हैं	व्रजम्	१३.	व्रज का
नः	३.	हमारा	च आत्म	११.	और उन्हीं को अपना
कृष्णः	२.	कृष्ण	नाथम्	१२.	स्वामी मानने वाले
मातरम्	४.	माता	गावः	८.	गौओं
सुहृदः	५.	मित्रों	वृन्दावनम्	९.	वृन्दावन
सखीन् ।	६.	सखाओं	गिरिम् ॥	१०.	गोवर्धन

श्लोकार्थ—क्या कृष्ण हमारा, माता, मित्रों, सखाओं, गोपों, वृन्दावन, गोवर्धन और उन्हीं को अपना मानने वाले व्रज का स्मरण करते हैं ॥

एकोनविंशः श्लोकः

अप्यायास्यति गोविन्दः स्वजनान् सकृदीक्षितुम् ।
तर्हि द्रक्ष्याम तद्वक्त्रं सुनसं सुस्मितेक्षणम् ॥१९॥

पदच्छेद— अपि आयास्यति गोविन्दः स्वजनान् सकृत् ईक्षितुम् ।
तर्हि द्रक्ष्यामः तत् वक्त्रम् सुनसम् सुस्मित ईक्षणम् ॥

शब्दार्थ—

अपि	१.	क्या	तर्हि	७.	तब-हम
आयास्यति	६.	आयेंगे	द्रक्ष्यामः	१३.	देख लेते
गोविन्दः	२	श्रीकृष्ण	तत्	११.	उनका
स्वजनान्	३.	अपने लोगों को	वक्त्रम्	१२.	मुख
सकृत्	५.	एक बार (यहाँ)	सुनसम्	८.	सुघड़ नासिका से
ईक्षितुम् ।	४.	देखने के लिये	सुस्मितम्	९.	मधुर मुसकान से और
			ईक्षणम् ॥	१०.	चितवन से युक्त

श्लोकार्थ—क्या श्रीकृष्ण अपने लोगों को देखने के लिये एक बार यहाँ आयेंगे । तब हम सुघड़ नासिका, मधुर मुसकान से और चितवन से युक्त उनका मुख देख लेते ॥

विंशः श्लोकः

दावाग्नेर्वातवर्षाच्च वृषसर्पाच्च रक्षिताः ।
दुरत्ययेभ्यो मृत्युभ्यः कृष्णेन सुमहात्मना ॥२०॥

पदच्छेद— दावाग्नेः वात वर्षात् च वृष सर्पात् च रक्षिताः ।
दुरत्ययेभ्यः मृत्युभ्यः कृष्णेन सुमहात्मना ॥

शब्दार्थ—

दावाग्नेः	४.	दावानल	रक्षिताः	१२.	रक्षा की है
वात	५.	आँधी	दुरत्ययेभ्यः	१०.	न टालने योग्य
वर्षात्	६.	जल	मृत्युभ्यः	११.	मृत्यु से (हमारी)
च	७.	और	कृष्णेन	३.	श्रीकृष्ण ने
वृष	८.	वृषासुर	सु	१.	अत्यन्त
सर्पात् च ।	९	अजगर आदि से और	महात्मना ॥	२.	महान् आत्मा

श्लोकार्थ—महान् आत्मा श्रीकृष्ण ने दावानल, आँधी, पानी, और वृषासुर, अजगर आदि से और न टालने योग्य मृत्यु से हमारी रक्षा की है ॥

एकविंशः श्लोकः

स्मरतां कृष्णवीर्याणि लीलापाङ्गनिरीक्षितम् ।
हसितं भाषितं चाङ्ग सर्वा नः शिथिलाः क्रियाः ॥२१॥

पदच्छेद— स्मरताम् कृष्ण वीर्याणि लीला अपाङ्ग निरीक्षितम् ।
हसितम् भाषितम् च अङ्ग सर्वा नः शिथिलाः क्रियाः ॥

शब्दार्थ—

स्मरताम्	९.	स्मरण करते हुये	हसितम्	७.	हास्य (और)
कृष्ण	२.	श्रीकृष्ण के	भाषितम् च	८.	मधुर भाषण का
वीर्याणि	३.	पराक्रमों	अङ्ग	१.	हे उद्धव जी !
लीला	४.	विलास पूर्ण	सर्वा नः	१०.	हमारी सभी
अपाङ्ग	५.	तिरछी	शिथिलाः	१२.	शिथिल हो गई हैं
निरीक्षितम् ।	६.	चितवन	क्रियाः ॥	११.	क्रियायें

श्लोकार्थ—हे उद्धव जी ! श्रीकृष्ण के पराक्रमों, विलास पूर्ण तिरछी चितवन, हास्य और मधुर भाषण का स्मरण करते हुये हमारी सभी क्रियायें शिथिल हो गई हैं ॥

द्वाविंशः श्लोकः

सरिच्छैलवनोद्देशान् मुकुन्दपदभूषितान् ।
आक्रीडानीक्षमाणानां मनो यति तदात्मताम् ॥२२॥

पदच्छेद— सरित् शैल वन उद्देशान् मुकुन्द पद भूषितान् ।
आक्रीडानि ईक्षमाणानाम् मनः याति तत् आत्मताम् ॥

शब्दार्थ—

सरित्	४.	नदी	आक्रीडानि	८.	खेल के स्थानों को
शैल	५.	पर्वत	ईक्षमाणानाम्	९.	देखते हुये हमारा
वन	६.	वन के	मनः	१०.	मन
उद्देशान्	७.	प्रदेशों और	याति	१३.	हो जाता है
मुकुन्द	१.	श्रीकृष्ण के	तत्	११	उन
पद	२.	चरण चिह्नों से	आत्मताम् ॥	१२.	श्रीकृष्ण मय
भूषितान् ।	३.	शोभित			

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के चरण चिह्नों से शोभित नदी, पर्वत, वन के प्रदेशों और खेल के स्थानों को देखते हुये हमारा मन उन श्रीकृष्ण मय हो जाता है ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

मन्ये कृष्णं च रामं च प्राप्ताविह सुरोत्तमौ ।
सुराणां महदर्थाय गर्गस्य वचनं यथा ॥२३॥

पदच्छेद— मन्ये कृष्णम् च रामम् प्राप्तौ इह सुर उत्तमौ ।
सुराणाम् महत् अर्थाय गर्गस्य वचनम् यथा ॥

शब्दार्थ—

मन्ये	६. मानता हूँ	सुराणाम्	३. देवताओं का
कृष्णम् च	१. मैं श्रीकृष्ण और	महत्	४. महान्
रामम्	२. बलराम को	अर्थाय	५. प्रयोजन सिद्ध करने के लिये
प्राप्तौ	७. आये हुये	गर्गस्य	१०. गर्गाचार्य ने मुझसे
इह	६. यहाँ	वचनम्	१२. कहा था
सुर उत्तमौ ।	८. देव शिरोमणि	यथा ॥	११. जैसा कि

श्लोकार्थ—मैं श्रीकृष्ण और बलराम को देवताओं का महान् प्रयोजन सिद्ध करने के लिये यहाँ आये हुये देवशिरोमणि मानता हूँ, जैसा कि गर्गाचार्य ने मुझसे कहा था ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

कंसं नागायुतप्राणं मल्लौ गजपतिं तथा ।
अवधिष्टां लीलयैव पशूनिव मृगाधिपः ॥२४॥

पदच्छेद— कंसम् नाग अयुत प्राणम् मल्लौ गजपतिम् तथा ।
अवधिष्टाम् लीलया एव पशून् इव मृग अधिपः ॥

शब्दार्थ—

कंसम्	७. कंस को	अवधिष्टाम्	१०. मार डाला
नाग	२. हाथियों का	लीलया	८. खेल-खेल में
अयुत	१. दस हजार	एव	६. ही
प्राणम्	३. बल रखने वाले	पशून्	१४. पशुओं को (मार डालता है)
मल्लौ	५. दोनों पहलवानों तथा	इव	११. जैसे
गजपतिम्	४. गजराज कुवलयापीड को	मृग	१२. सिंह
तथा ।	६. तथा	अधिपः ॥	१३. राज

श्लोकार्थ—दस हजार हाथियों का बल रखने वाले गजराज कुवलयापीड को, दोनों पहलवानों तथा कंस को खेल-खेल में ही मार डाला, जैसे सिंह पशुओं को मार डालता है ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

तालत्रयं महासारं धनुर्यष्टिमिवेभराट्।
बभञ्जैकेन हस्तेन सप्ताहमदधाद् गिरिम् ॥२५॥

पदच्छेद— ताल त्रयम् महासारम् धनुः य यष्टिम् इव इभराट्।
बभञ्जकेन हस्तेन सप्ताहम् अदधात् गिरिम् ॥

शब्दार्थ—

ताल	२.	ताल लम्बे और	बभञ्ज	५.	वैसे ही तोड़ दिया
त्रयम्	१.	तीन	एकेन	८.	उन्होंने एक
महासारम्	३.	अत्यन्तदृढ	हस्तेन	६.	हाथ से
धनुः	४.	धनुष को	सप्ताहम्	१०.	सात दिनों तक
यष्टिम्	७.	छड़ी को (तोड़ डाले)	अदधात्	१२.	उठाये रखा था
इव इभराट्।	६.	जैसे गजराज	गिरिम् ॥	११.	गिरिराज पर्वत को

श्लोकार्थ—तीन हाथ लम्बे और अत्यन्त दृढ धनुष को वैसे ही तोड़ डाला। जैसे गजराज छड़ी को तोड़ डाले। उन्होंने एक हाथ से सात दिनों तक गिरिराज पर्वत को उठाये रखा था।

षड्विंशः श्लोकः

प्रलम्बो धेनुकोऽरिष्टस्तृणावर्तो बकादयः।
दैत्याः सुरासुरजितो हता येनेह लीलया ॥२६॥

पदच्छेद— प्रलम्बः धेनुकः अरिष्टः तृणावर्तः बक आदयः।
दैत्याः सुर असुर जिताः हताः येन इह लीलया ॥

शब्दार्थ—

प्रलम्ब	४.	प्रलम्ब	दैत्याः	१०.	दैत्यों को
धेनुकः	५.	धेनुक	सुर-असुर	२.	देवता और असुरों को
अरिष्टः	६.	अरिष्टासुर	जिताः	३.	जीत लेने वाले
तृणावर्तः	७.	तृणावर्त और	हताः	१२.	मार डाला
बक	८.	बक	येन-इह	१.	जिन्होंने यहाँ पर
आदयः।	९.	आदि	लीलया ॥	११.	लीला पूर्वक

श्लोकार्थ—जिन्होंने यहाँ पर देवता और असुरों को जीत लेने वाले प्रलम्ब, धेनुक, अरिष्टासुर, तृणावर्त और बक आदि दैत्यों को लीला पूर्वक मार डाला ॥

सप्तविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इति संस्मृत्य संस्मृत्य नन्दः कृष्णानुरक्तधीः ।
अत्युत्कण्ठोऽभवत्तूष्णीं प्रेमप्रसरविह्वलः ॥२७॥

पदच्छेद— इति संस्मृत्य संस्मृत्य नन्दः कृष्ण अनुरक्तधीः ।
अति उत्कण्ठः अभवत् तूष्णीम् प्रेमप्रसर विह्वलः ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	अति	९.	अत्यन्त
संस्मृत्य	५.	स्मरण कर	उत्कण्ठः	१०.	उत्कण्ठित होकर
संस्मृत्य	६.	करके	अभवत्	१२.	हो गये
नन्दः	४.	नन्द जी	तूष्णीम्	११.	चुप
कृष्ण	२.	श्रीकृष्ण में	प्रेम-प्रसर	७.	प्रेम की बाढ़ से
अनुरक्तधीः ।	३.	अनुरक्त बुद्धि वाले	विह्वलः ॥	८.	विह्वल होने के कारण

श्लोकार्थ—इस प्रकार श्रीकृष्ण में अनुरक्त बुद्धि वाले नन्द जी स्मरण कर करके प्रेम की बाढ़ से विह्वल होने के कारण अत्यन्त उत्कण्ठित होकर चुप हो गये ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

यशोदा वर्ण्यमानानि पुत्रस्य चरितानि च ।
शृण्वन्त्यश्रूण्यवास्राक्षीत् स्नेहस्नुतपयोधरा ॥२८॥

पदच्छेद— यशोदा वर्ण्यमानानि पुत्रस्य चरितानि च ।
शृण्वन्ती अश्रूणि अवास्राक्षीत् स्नेह स्नुत पयोधरा ॥

शब्दार्थ—

यशोदा	७.	यशोदा जी	शृण्वन्ती	४.	सुनकर
वर्ण्यमानानि	१.	वर्णन किये जाते हुये	अश्रूणि	९.	आँसू
पुत्रस्य	२.	पुत्रके	अवास्राक्षीत्	१०.	बहाने लगीं
चरितानि	३.	चरित्रों को	स्नेह-स्नुत	५.	स्नेह वश दूध बहाते हुये
च ।	८.	भी	पयोधरा ॥	६.	स्तनों वाली

श्लोकार्थ—वर्णन किये जाते हुये पुत्र के चरित्रों को सुनकर स्नेह वश दूध बहाते हुये स्तनों वाली यशोदा जी भी आँसू बहाने लगीं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

तयोरित्थं भगवति कृष्णे नन्दयशोदयोः ।
वीक्ष्यानुरागं परमं नन्दमाहोद्धवो मुदा ॥२९॥

पदच्छेद— तयोः इत्थम् भगवति कृष्णे नन्द यशोदयोः ।
वीक्ष्य अनुरागम् परमम् नन्दम् आह उद्धवः मुदा ॥

शब्दार्थ—

तयोः	१. उन दोनों	**वीक्ष्य**	९. देख कर
इत्थम्	६. इस प्रकार	**अनुरागम्**	८. अनुराग
भगवति	४. भगवान्	**परमम्**	७. परम
कृष्णे	५. कृष्ण के प्रति	**नन्दम् आह**	१२. नन्द जी से कहने लगे
नन्द	२. नन्द और	**उद्धवः**	११. उद्धव जी
यशोदयोः ।	३. यशोदा का	**मुदा ॥**	१०. प्रसन्नता पूर्वक

श्लोकार्थ—उन दोनों नन्द और यशोदा का भगवान् श्रीकृष्ण के प्रति इस प्रकार परम अनुराग देख कर प्रसन्नता पूर्वक उद्धव जी नन्द जी से कहने लगे ॥

त्रिंशः श्लोकः

उद्धव उवाच— **युवां श्लाघ्यतमौ नूनं देहिनामिह मानद ।**
नारायणेऽखिलगुरौ यत् कृता मतिरीदृशी ॥३०॥

पदच्छेद— युवाम् श्लाघ्यतमौ नूनम् देहिनाम् इह मानद ।
नारायणे अखिल गुरौ यत् कृता मतिः ईदृशी ॥

शब्दार्थ—

युवाम्	४. आप दोनों	**नारायणे**	९. भगवान् में
श्लाघ्यतमौ	६. अत्यन्त भाग्यवान् हैं	**अखिल गुरौ**	८. सबके गुरु
नूनम्	५. निश्चित ही	**यत्**	७. जो (आप दोनों ने)
देहिनाम्	३. शरीरधारियों में	**कृता**	१२. लगायी है
इह	२. यहाँ	**मतिः**	११. बुद्धि
मानद ।	१. हे मान देने वाले !	**ईदृशी ॥**	१०. ऐसी

श्लोकार्थ—हे मान देने वाले ! यहाँ शरीरधारियों में आप दोनों निश्चित ही अत्यन्त भाग्यवान् हैं । जो आप दोनों ने सब के गुरु भगवान् में ऐसी बुद्धि लगायी है ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

एतौ हि विश्वस्य च बीजयोनी रामो मुकुन्दः पुरुषः प्रधानम् ।
अन्वीय भूतेषु विलक्षणस्य ज्ञानस्य चेशात इमौ पुराणौ ॥३१॥

पदच्छेद— एतौ हि विश्वस्य च बीजयोनी रामः मुकुन्दः पुरुषः प्रधानम् ।
अन्वीय भूतेषु विलक्षणस्य ज्ञानस्य च ईशाते इमौ पुराणौ ॥

शब्दार्थ—

एतौ हि	१. ये दोनों	अन्वीय	११. प्रविष्ट होकर
विश्वस्य	६. संसार के	भूतेषु	१०. समस्त शरीरों में
च बीजयोनी	७. बीज और कारण हैं	विलक्षणस्य	१२. विलक्षण
रामः	२. बलराम और	ज्ञानस्य	१३. ज्ञानमय (जीव) का
मुकुन्दः	३. श्रीकृष्ण	च ईशाते	१४. नियमन करते हैं
पुरुषः	५. पुरुष (तथा)	इमौ	८. वे दोनों
प्रधानम् ।	४. प्रधान	पुराणौ ॥	९. पुराण पुरुष

श्लोकार्थ—ये दोनों बलराम और श्रीकृष्ण प्रधान-पुरुष तथा संसार के बीज और कारण हैं। और वे दोनों पुराण-पुरुष समस्त शरीरों में विलक्षण ज्ञानमय जीव का नियमन करते हैं ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

यस्मिञ्जनः प्राणवियोगकाले क्षणं समावेश्य मनो विशुद्धम् ।
निर्हृत्य कर्माशयमाशु याति परां गतिं ब्रह्ममयोऽर्कवर्णः ॥३२॥

पदच्छेद— यस्मिन् जनः प्राण वियोग काले क्षणम् समावेश्य मनःविशुद्धम् ।
निर्हृत्य कर्माशयम् आशु याति पराम् गतिम् ब्रह्ममयः अर्कवर्णः ॥

शब्दार्थ—

यस्मिन्	७. उन (श्रीकृष्ण में)	निर्हृत्य	१०. धो बहा कर
जनः	१. जो जीव	कर्माशयम्	९. कर्म वासनाओं को
प्राण	२. मृत्यु के	आशु	११. शीघ्र ही
वियोग	३. वियोग के	याति	१६. प्राप्त करता है
काले	४. समय	पराम्	१४. परम
क्षणम्	५. क्षण भर के लिये	गतिम्	१५. गति को
समावेश्य	८. लगा देता है (वह)	ब्रह्ममयः	१३. ब्रह्ममय होकर
मनःविशुद्धम् ।	६. अपने शुद्ध मन को	अर्कवर्णः ॥	१२. सूर्य के समान तेजस्वी

श्लोकार्थ—जो जीव मृत्यु के वियोग के समय क्षण भर के लिये अपने शुद्ध मन को उन श्रीकृष्ण में लगा देता है। वह कर्मवासनाओं को धो बहा कर शीघ्र ही सूर्य के समान तेजस्वी और ब्रह्ममय होकर परम गति को प्राप्त करता है ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तस्मिन् भवन्तावखिलात्महेतौ नारायणे कारणमर्त्यमूर्तौ ।
भावं विधत्तां नितरां महात्मन् किं वावशिष्टं युवयोः सुकृत्यम् ॥३३॥

पदच्छेद— तस्मिन् भवन्तौ अखिल आत्महेतौ नारायणे कारण मर्त्य मूर्तौ ।
भावम् विधत्ताम् नितराम् महात्मन् किम् वा अवशिष्टम् युवयोः सुकृत्यम् ॥

शब्दार्थ—

तस्मिन्	६.	उन
भवन्तौ	८.	आप दोनों
अखिल	१.	सबके
आत्म हेतौ	२.	आत्मा और कारण
नारायणे	७.	नारायण में
कारण	३.	कारणवश
मर्त्य	४.	मनुष्य
मूर्तौ ।	५.	शरीर धारण करने वाले
भावम्	१०.	वात्सल्य भाव
विधत्ताम्	११.	रखते हैं
नितराम्	९.	सुहृद्
महात्मन्	१२.	हे महात्मा !
किम् वा	१४.	कौन सा
अशिष्टम्	१६.	शेष रह गया है
युवयोः	१३.	आप दोनों के लिये
सुकृत्यम् ॥	१५.	शुभ कर्म

श्लोकार्थ—सबके आत्मा और कारण, कारणवश, मनुष्य शरीर धारण करने वाले उन नारायण में आप दोनों सुहृद, वात्सल्य भाव धारण करते हैं। हे महात्मा ! आप दोनों के लिये कौन सा शुभ कर्म शेष रह गया है ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

आगमिष्यत्यदीर्घेण कालेन व्रजमच्युतः ।
प्रियं विधास्यते पित्रोर्भगवान् सात्वतां पतिः ॥३४॥

पदच्छेद— आगमिष्यति दीर्घेण कालेन व्रजम् अच्युतः ।
प्रियम् विधास्यते पित्रोः भगवान् सात्वताम् पतिः ॥

शब्दार्थ—

आगमिष्यति	८.	आयेंगे (और)
दीर्घेण	५.	थोड़े ही
कालेन	६.	दिनों में
व्रजम्	७.	व्रज में
अच्युतः ।	४.	श्रीकृष्ण
प्रियम्	१०.	प्रिय कार्य
विधास्यते	११.	करेंगे
पित्रोः	९.	माता-पिता का
भगवान्	३.	भगवान्
सात्वताम्	१.	यदुवंशियों के
पतिः ॥	२.	स्वामी

श्लोकार्थ—यदुवंशियों के स्वामी भगवान् श्रीकृष्ण थोड़े ही दिनों में व्रज में आयेंगे और माता-पिता का प्रिय कार्य करेंगे ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

हत्वा कंसं रङ्गमध्ये प्रतीपं सर्वसात्वताम् ।
यदाह वः समागत्य कृष्णः सत्यं करोति तत् ॥३५॥

पदच्छेद— हत्वा कंसम् रङ्गमध्ये प्रतीपम् सर्व सात्वताम् ।
यत् आह वः समागत्य कृष्णः सत्यम् करोति तत् ॥

शब्दार्थ—

हत्वा	७.	मार कर	यत् आह	११.	जो वहाँ आने के बारे में कहा था
कंसम्	४.	कंस को	वः	८.	आपके पास
रङ्ग	५.	रंग भूमि के	समागत्य	९.	आकर
मध्ये	६.	बीच	कृष्णः	१०.	श्रीकृष्ण ने
प्रतीपम्	३.	द्रोही	सत्यम्	१३.	सत्य
सर्व	१.	सभी	करोति	१४.	करेंगे
सात्वताम् ।	२.	यदुवंशियों के	तत् ॥	१२.	उसे

श्लोकार्थ—सभी यदुवंशियों के द्रोही कंस को रंगभूमि के बीच मार कर आपके पास आकर श्रीकृष्ण ने जो वहाँ आने के बारे में कहा था, उसे सत्य करेंगे ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

मा खिद्यतं महाभागौ द्रक्ष्यथः कृष्णमन्तिके ।
अन्तर्हृदि स भूतानामास्ते ज्योतिरिवैधसि ॥३६॥

पदच्छेद — मा खिद्यतम् महाभागौ द्रक्ष्यथः कृष्णम् अन्तिके ।
अन्तः हृदि सः भूतानाम् आस्ते ज्योतिः इव एधसि ॥

शब्दार्थ—

मा	२.	मत	अन्तः हृदि	९.	हृदय में (वैसे ही)
खिद्यतम्	३.	खेद कीजिये (आप)	सः	७.	वे
महाभागो	१.	हे महाभाग्यशालियो !	भूतानाम्	८.	प्राणियों के
द्रक्ष्यथः	६.	देखेंगे	आस्ते	१०.	विराजमान रहते हैं
कृष्णम्	४.	श्रीकृष्ण को	ज्योतिः	१२.	अग्नि रहता है
अन्तिके ।	५.	समीप में	इव एधसि ॥	११.	जैसे काष्ठ में

श्लोकार्थ—हे भाग्यशालियो ! खेद मत कोजिये । आप श्रीकृष्ण को समीप में देखेंगे । वे प्राणियों के हृदय में वैसे ही विराजमान हैं जैसे काष्ठ में अग्नि रहती है ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

न ह्यस्यास्ति प्रियः कश्चिन्नाप्रियो वास्त्यमानिनः ।
नोत्तमो नाधमो नापि समानस्यासमोऽपि वा ॥३७॥

पदच्छेद— नहि अस्य अस्ति प्रियः कश्चित् न अप्रियः वा अस्ति अमानिनः ।
न उत्तमः न अधमः न अपि समानस्य असमः अपि वा ॥

शब्दार्थ—

नहि अस्य	२.	उनका न तो	न उत्तमः	९.	न श्रेष्ठ है
अस्ति	५.	है और	न अधम	१०.	न अधम है
प्रियः	४.	प्रिय	न अपि	१४.	नहीं है
कश्चित्	३.	कोई	समानस्य	८.	सब के लिये समान होने से
न अप्रियः वा	६.	न अप्रिय अथवा	असमः	१२.	विषम
अस्ति	७.	है	अपि	१३.	भी
अमानिनः ।	१.	अभिमान न होने से	वा ॥	११.	अथवा

श्लोकार्थ—अभिमान न होने से उनका न तो कोई प्रिय है। अथवा न अप्रिय है। न श्रेष्ठ है, न अधम है, अथवा सब के लिये समान होने से विषम भी नहीं है ॥

अष्टत्रिंशः श्लोकः

न माता न पिता तस्य न भार्या न सुतादयः ।
नात्मीयो न परश्चापि न देहो जन्म एव च ॥३८॥

पदच्छेद-- न माता न पिता तस्य न भार्या न सुत आदयः ।
न आत्मीयः न परः च अपि न देहः जन्म एव च ॥

शब्दार्थ—

न माता	२.	न माता	न आत्मीयः	८.	न अपना
न पिता	३.	न पिता	न परः	९.	न पराया
तस्य	१.	उनका	न अपि	७.	और
न भार्या	४.	न पत्नी	न देहः	१०.	न शरीर तथा
न सुत	५.	न पुत्र	जन्म	११.	जन्म
आदयः ।	६.	आदि हैं	एव च ॥	१२.	ही है

श्लोकार्थ—उनका न माता, न पिता, न पत्नी, न पुत्र आदि हैं। और न अपना, न पराया, न शरीर तथा जन्म ही है ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

न चास्य कर्म वा लोके सदसन्मिश्रयोनिषु ।
क्रीडार्थः सोऽपि साधूनां परित्राणाय कल्पते ॥३९॥

पदच्छेद— न च अस्य कर्म वा लोके सद् असत् मिश्र योनिषु ।
क्रीडार्थः सः अपि साधूनाम् परित्राणाय कल्पते ॥

शब्दार्थ—

न च	३. नहीं है	क्रीडार्थः	८. लीला के लिये
अस्य कर्म	२. उनका कोई कर्म	सः	५. वे
वा लोके	१. अथवा लोक में	अपि	४. फिर भी
सद असत्	९. सात्त्विक-असात्त्विक	साधूनाम्	६. साधुओं की
मिश्र	१०. एवम् मिश्र आदि	परित्राणाय	७. रक्षा के निमित्त और
योनिषु ।	११. मनुष्य योनियों में	कल्पते ॥	१२. शरीर धारण करते हैं

श्लोकार्थ—अथवा लोक में उनका कोई कर्म नहीं है। फिर भी वे साधुओं की रक्षा के निमित्त और लीला के लिये सात्त्विक-असात्त्विक एवम् मिश्र आदि मनुष्य योनियों में शरीर धारण करते हैं ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

सत्त्वं रजस्तम इति भजते निर्गुणो गुणान् ।
क्रीडन्नतीतोऽत्र गुणैः सृजत्यवति हन्त्यजः ॥४०॥

पदच्छेद— सत्त्वम् रजःतमः इति भजते निर्गुणः गुणान् ।
क्रीडन् अतीतः अत्र गुणैः सृजति अवति हन्ति अजः ॥

शब्दार्थ—

सत्त्वम्	२. सत्त्व	क्रीडन्	१०. क्रीडा के लिये
रजःतमः	३. रज और तम	अतीतःअत्र	९. परे होने पर भी यहाँ
इति	४. इन	गुणैः	८. गुणों से
भजते	६. स्वीकार करते हैं (तथा)	सृजति	११. सृष्टि
निर्गुणः	१. निर्गुण होने पर भी वे	अवति हन्ति	१२. रक्षा और संहार करते हैं
गुणान् ।	५. गुणों को	अजः ॥	७. अजन्मा एवम्

श्लोकार्थ—निर्गुण होने पर भी वे सत्त्व, रज और तम इन गुणों को स्वीकार करते हैं। तथा अजन्मा एवम् गुणों से परे होने पर भी यहाँ क्रीडा के लिये सृष्टि, रक्षा और संहार करते हैं ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

यथा भ्रमरिकाहष्टया भ्राम्यतीव महीयते ।
चित्ते कर्तरि तत्रात्मा कर्तेवाहंधिया स्मृतः ॥४१॥

पदच्छेद— यथा भ्रमरिका दृष्ट्या भ्राम्यती इव महीयते ।
चित्ते कर्तरि तत्र आत्मा कर्ता इव अहम्धिया स्मृतः ॥

शब्दार्थ—

यथा	१.	जैसे	चित्ते	६.	चित्त में
भ्रमरिका	२.	घूमने वाली	कर्तरितत्र	८.	वैसे ही वहाँ
दृष्ट्या	३.	दृष्टि से	आत्मा	१२.	जीव अपने को
भ्राम्यती	५.	घूमती हुई	कर्ता इव	१३.	कर्ता के समान
इव	६.	सी	अहम्	१०.	अहम्
मही	४.	पृथ्वी	धिया	११.	बुद्धि होने से
यते ।	७.	जान पड़ती है	स्मृतः ॥	१४.	मान लेता है

श्लोकार्थ—जैसे घूमने वाली दृष्टि से पृथ्वी घूमती हुई, सी जान पड़ती है । वैसे ही यहाँ चित्त में अहम् बुद्धि होने से जीव अपने को कर्ता के समान मान लेता है ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

युवयोरेव नैवायमात्मजो भगवान् हरिः ।
सर्वेषामात्मजो ह्यात्मा पिता माता स ईश्वरः ॥४२॥

पदच्छेद— युवयोः एव न एव अयम् आत्मजः भगवान् हरिः ।
सर्वेषाम् आत्मजः हि आत्मा पिता, माता सः ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

युवयोः	४.	आप दोनों के	सर्वेषाम्	९.	सभी के
एव	५.	ही	आत्मजः	१०.	पुत्र
न एव	७.	नहीं हैं	हि आत्मा	११.	आत्मा
अयम्	१.	ये	पिता	१२.	पिता
आत्मजः	६.	पुत्र	माता	१३.	माता और
भगवान्	२.	भगवान्	सः	८.	वे
हरिः ।	३.	श्रीकृष्ण	ईश्वरः ॥	१४.	स्वामी हैं

श्लोकार्थ—ये भगवान् श्रीकृष्ण आप दोनों के ही पुत्र नहीं हैं । वे सभी के पुत्र, आत्मा, पिता, माता और स्वामी हैं ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

दृष्टं श्रुतं भूतभवद् भविष्यत् स्थास्नुश्चरिष्णुर्महदल्पकं च ।
विनाच्युताद् वस्तु तरां न वाच्यं सर्वं एव स परमार्थभूतः ॥४३॥

पदच्छेद— दृष्टम् श्रुतम् भूतभवत् भविष्यत् स्थास्नुः चरिष्णुः महत् अल्पकम् च ।
विना अच्युतात् वस्तुतराम् न वाच्यम् सः एव सर्वम् परमार्थ भूतः ॥

शब्दार्थ—

दृष्टम्	१.	जो कुछ देखा या	विना	८.	वह बिना
श्रुतम्	२.	सुना जाता है वह	अच्युतात्	९.	श्रीकृष्ण के
भूत-भवत्	३.	भूत-वर्तमान या	वस्तुतराम्	१०.	कुछ वस्तु
भविष्यत्	४.	भविष्य में हो (अथवा)	न वाच्यम्	११.	कहलाने के योग्य नहीं है
स्थास्नुः चरिष्णुः	५.	स्थावर या जङ्गम हो	सः एव	१३.	वे ही
महत् अल्पकम्	७.	महान् या अल्प हो	सर्वम्	१२.	सब कुछ
च ।	६.	और	परमार्थ भूतः	१४.	परमार्थ सत्य हैं

श्लोकार्थ—जो कुछ देखा या सुना जाता है । वह भूत-वर्तमान या भविष्य में हो । अथवा स्थावर-जङ्गम हो और महान् या अल्प हो । वह बिना श्रीकृष्ण के कुछ वस्तु कहलाने के योग्य नहीं है । सब कुछ वे ही परमार्थ सत्य हैं ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

एवं निशा सा ब्रुवतोर्व्यतीता नन्दस्य कृष्णानुचरस्य राजन् ।
गोप्यः समुत्थाय निरूप्य दीपान् वास्तून् समभ्यर्च्य दधीन्यमन्थन् ॥४४॥

पदच्छेद— एवम् निशा सा ब्रुवतोः व्यतीता नन्दस्य कृष्णानुचरस्य राजन् ।
गोप्यः समुत्थाय निरूप्य दीपान् वास्तून् समभ्यर्च्यं दधीनि अमन्थन् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	५.	इस प्रकार	गोप्यः	९.	गोपियाँ
निशा सा	७.	वह रात्रि	समुत्थाय	१०.	उठकर
ब्रुवतोः	६.	बात-चीत करते हुये	निरूप्य	१२.	जलाकर
व्यतीता	८.	व्यतीत हो गई (तब)	दीपान्	११.	दीपक
नन्दस्य	४.	नन्द	वास्तून्	१३.	वास्तुदेव की
कृष्ण	२.	कृष्ण के	समभ्यर्च्य	१४.	पूजा करके
अनुचरस्य	३	सखा (उद्धव) और	दधीनि	१५.	दही
राजन् ।	१.	हे परीक्षित् !	अमन्थन् ॥	१६.	मथने लगीं

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! श्रीकृष्ण के सखा उद्धव और नन्द के इस प्रकार बात चीत करते हुये वह रात्रि व्यतीत हो गई । तब गोपियां उठकर दीपक जलाकर वास्तुदेव की पूजा करके दही मथने लगीं ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

ता दीपदीप्तैर्मणिभिर्विरेजू रज्जूर्विकर्षद्भुजकङ्कणस्रजः ।
चलन्नितम्बस्तनहारकुण्डलत्विषत्कपोलारुणकुङ्कुमाननाः ॥४५॥

पदच्छेद— ताः दीप दीप्तैः मणिभिः विरेजुः रज्जूःविकर्षद् भुजकङ्कण स्रजः ।
चलत् नितम्ब स्तन-हार कुण्डलत्विषत् कपोल अरुण कुङ्कुम आननाः ॥

शब्दार्थ—

ताः दीप	१. वे दीपक की ज्योति से	चलत्	१०. हिल रहे थे
दीप्तैः	२. जगमगाते हुये	नितम्ब	८. उनके नितम्ब
मणिभिः	३. मणियों के समान	स्तन-हार	९. स्तन और हार
विरेजुः	४. शोभायमान हो रही थीं	कुण्डलत्विषत्	११. कुण्डलों की कान्ति से
रज्जूः विकर्षद्	५. रस्सी खींचते समय	कपोल अरुण	१२. कपोलों की लालिमा
भुजकङ्कण	६. भुजाओं के कंगन और	कुङ्कुम	१३. कुङ्कुममण्डित
स्रजः ।	७. मालायें भली लग रही थीं	आननाः ॥	१४. मुख की शोभा बढ़ा रही थी

श्लोकार्थ—वे दीपक की ज्योति से जगमगाते हुये मणियों के समान शोभायमान हो रही थीं। रस्सी खींचते समय भुजाओं के कंगन और मालायें भली लग रही थीं। उनके नितम्ब, स्तन और हार हिल रहे थे। कुण्डलों की कान्ति से कपोलों की लालिमा कुङ्कुममण्डित मुख की शोभा को बढ़ा रही थी ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

उद्गायतीनामरविन्दलोचनं व्रजाङ्गनानां दिवमस्पृशद् ध्वनिः ।
दध्नश्च निर्मन्थनशब्दमिश्रितो निरस्यते येन दिशाममङ्गलम् ॥४६॥

पदच्छेद— उद्गायतीनाम् अरविन्द लोचनम् व्रजाङ्गनानाम् दिवम् अस्पृशत् ध्वनिः ।
दध्नः च निर्मन्थन शब्द मिश्रितः निरस्यते येन दिशाम् अमङ्गलम् ॥

शब्दार्थ—

उद्गायनतीनाम्	३. चरित्र का गान करती हुई	दध्नः च	६. दही
अरविन्द	१. कमल	निर्मन्थन	७. मथने के
लोचनम्	२. नयन (श्रीकृष्ण के)	शब्द	८. शब्द से
व्रजाङ्गनानाम्	४. व्रज बालाओं की	मिश्रितः	९. मिल कर
दिवम्	१०. आकाश का	निरस्यते	१४. नष्ट हो रहा था
अस्पृशत्	११. स्पर्श कर रही थी	येन दिशाम्	१२. जिससे दिशाओं का
ध्वनिः ।	५. ध्वनि	अमङ्गलम् ॥	१३. अमङ्गल

श्लोकार्थ—कमल नयन श्रीकृष्ण के चरित्र का गान करती हुई व्रजबालाओं की ध्वनि दही मथने के शब्द से मिल कर आकाश को स्पर्श कर रही थी। जिससे दिशाओं का अमङ्गल नष्ट हो रहा था ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

भगवत्युदिते सूर्ये नन्दद्वारि व्रजौकसः ।
दृष्टवा रथं शातकौम्भं कस्यायमिति चाब्रुवन् ॥४७॥

पदच्छेद— भगवति उदिते सूर्ये नन्द द्वारि व्रज ओकसः ।
दृष्ट्वा रथम् शातकौम्भम् कस्य अयम् इति च अब्रुवन् ॥

शब्दार्थ—

भगवति	१. भगवान्	दृष्ट्वा	१०. देख कर
उदिते	३. उदित होने पर	रथम्	९. रथ को
सूर्ये	२. सूर्य के	शातकौम्भम्	८. सोने के
नन्द	४. नन्द के	कस्य	१२. किसका है
द्वारि	५. द्वार पर	अयम्	११. यह
व्रज	६. व्रज की	इति च	१३. इस प्रकार
ओकसः ।	७. महिलायें	अब्रुवन् ॥	१४. कहने लगीं

श्लोकार्थ—भगवान् सूर्य के उदित होने पर नन्द के द्वार पर व्रज की महिलायें सोने के रथ को देखकर यह किसका है इस प्रकार कहने लगीं ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

अक्रूर आगतः किं वा यः कंसस्यार्थसाधकः ।
येन नीतो मधुपुरीं कृष्णः कमललोचनः ॥४८॥

पदच्छेद— अक्रूरः आगतः किम् वा यः कंसस्य अर्थ साधकः ।
येन नीतः मधु पुरीम् कृष्णः कमल लोचनः ॥

शब्दार्थ—

अक्रूरः	२. अक्रूर	येन	७. जिसने
आगतः	३. आया है	नीतः	१२. पहुँचा दिया था
किम् वा	१. अथवा क्या	मधु पुरीम्	११. मथुरा
यः कंसस्य	४. जो कंस का	कृष्णः	१०. भगवान् श्रीकृष्ण को
अर्थं	५. प्रयोजन	कमल	८. कमल
साधकः ।	६. सिद्ध करने वाला था	लोचनः ॥	९. नयन

श्लोकार्थ—अथवा क्या अक्रूर आया है । जो कंस का प्रयोजन सिद्ध करने वाला था । जिसने कमल नयन भगवान् श्रीकृष्ण को मथुरा पहुँचा दिया था ॥

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

किं साधयिष्यत्यस्माभिर्भर्तुः प्रेतस्य निष्कृतिम् ।
इति स्त्रीणां वन्दतीनामुद्धवोऽगात् कृताह्निकः ।।४६।।

पदच्छेद—

किम् साधयिष्यति अस्माभिः भर्तुः प्रेतस्य निष्कृतिम् ।
इति स्त्रीणाम् वदन्तीनाम् उद्धवः अगात् कृत आह्निकः ।।

शब्दार्थ—

किम्	१.	क्या (वह अब)	इति	८.	इस प्रकार
साधयिष्यति	६.	करेगा	स्त्रीणाम्	७.	स्त्रियाँ
अस्माभिः	२.	हमें ले जाकर	वदन्तीनाम्	९.	बात चीत कर रही थीं कि
भर्तुः	४.	स्वामी कंस का	उद्धवः	११.	उद्धव जी
प्रेतस्य	३.	अपने मरे हुये	अगात्	१२.	आ पहुँचे
निष्कृतिम् ।	५.	पिण्डदान	कृतआह्निकः	१०.	नित्य कर्म से निबट कर

श्लोकार्थ—क्या वह अब हमें ले जाकर अपने मरे हुये स्वामी का पिण्ड दान करेगा। स्त्रियाँ इस प्रकार बात चीत कर रही थीं कि नित्य कर्म से निबट कर उद्धव जी आ पहुँचे।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
नन्दशोकापनयनं नाम षट्चत्वारिंशः अध्यायः ।।४६।।



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

सप्तचत्वारिंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—

तं वीक्ष्य कृष्णानुचरं व्रजस्त्रियः,
प्रलम्बबाहुं नवकञ्जलोचनम् ।
पीताम्बरं पुष्करमालिनं लस-,
न्मुखारविन्दं मणिमृष्टकुण्डलम् ॥१॥

पदच्छेद—

तम् वीक्ष्य कृष्ण अनुचरम् व्रजस्त्रियः,
प्रलम्ब बाहुम् नव कञ्ज लोचनम् ।
पीताम्बरम् पुष्कर मालिनम् लसत्,
मुखार विन्दम् मणि मृष्ट कुण्डलम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	१८.	उस उद्धव को	पीताम्बरम्	७.	पीला वस्त्र और
वीक्ष्य	१९.	देखा	पुष्करम्	८.	कमल पुष्प की
कृष्ण	१६.	श्रीकृष्ण के	मालिनम्	९	माला पहने हुये
अनुचरम्	१७.	सेवक	लसत्	१३.	शोभायमान
व्रज	१.	व्रज की	मुख	१४.	मुख
स्त्रियः	२.	स्त्रियों ने	अरविन्दम्	१५.	कमल वाले
प्रलम्ब	३.	लम्बी	मणि	१०.	मणि
बाहुम्	४.	भुजाओं वाले	मृष्ट	११.	जटित
नव कञ्ज	५.	नूतन कमल दल के समान	कुण्डलम् ॥	१२.	कुण्डलों से
लोचनम् ।	६.	नेत्र वाले			

श्लोकार्थ—व्रज की स्त्रियों ने लम्बी भुजाओं वाले नूतन कमल दल के समान नेत्र वाले पीला वस्त्र और कमल पुष्प की माला पहने हुये, मणि जटित कुण्डलों से शोभायमान श्रीकृष्ण के सेवक उस उद्धव को देखा ॥

द्वितीयः श्लोकः

शुचिस्मिताः कोऽयमपीच्यदर्शनः कुतश्च कस्याच्युतवेषभूषणः ।
इति स्म सर्वाः परिवव्रुरुत्सुकास्तमुत्तमश्लोकपदाम्बुजाश्रयम् ॥२॥

पदच्छेद— शुचिस्मिताः कः अयम् अपीच्य दर्शनः कुतः च कस्य अच्युत वेषभूषणः ।
इति स्म सर्वाः परिवव्रुः उत्सुकाः तम् उत्तमश्लोक पदअम्बुज आश्रयम् ॥

शब्दार्थ—

शुचिस्मिताः	९.	पवित्र मुसकान वाली	इति स्म	८.	इस प्रकार कहती हुईं
कः अयम्	५.	कौन है यह	सर्वाः	१०.	सभी गोपियाँ
अपीच्य	४.	बहुत सुन्दर हैं	परिवव्रुः	१६.	घेर कर खड़ी हो गईं
दर्शनः	३.	देखने में	उत्सुकाः	११.	उत्सुक होकर
कुतः च	६.	कहाँ से आया है	तम्	१५.	उस (उद्धव) को
कस्य	७.	किसका दूत है	उत्तमश्लोक	१२.	श्रीकृष्ण के
अच्युत	१.	श्रीकृष्ण जैसी	पदअम्बुज	१३.	चरण कमलों के
वेषभूषणः ।	२.	वेषभूषा धारण किये हैं (तथा)	आश्रयम् ॥	१४.	आश्रित

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण जैसी वेषभूषा धारण किये हैं । तथा देखने में बहुत सुन्दर हैं । कौन है यह कहाँ से आया है। किसका दूत है। इस प्रकार कहती हुई पवित्र मुसकान वाली सभी गोपियाँ उत्सुक होकर श्रीकृष्ण के चरण कमलों के आश्रित उस उद्धव को घेर कर खड़ी हो गईं ॥

तृतीयः श्लोकः

तं प्रश्रयेणावनताः सुसत्कृतं सव्रीडहासेक्षणसूनृतादिभिः ।
रहस्यपृच्छन्नुपविष्टमासने विज्ञाय सन्देशहरं रमापतेः ॥३॥

पदच्छेद— तम् प्रश्रयेण अवनताः सुसत्कृतम् सव्रीडहास ईक्षण सुनृत आदिभिः ।
रहसि अपृच्छन् नु उपविष्टम् आसने विज्ञाय सन्देश हरम् रमापतेः ॥

शब्दार्थ— तम्	९.	उनका	रहसि	११.	एकान्त में
प्रश्रयेण	४.	विनय से	अपृच्छन् नु	१४.	पूछने लगीं
अवनताः	५.	झुक कर	उपविष्टम्	१३.	बैठे हुये उनसे
सुसत्कृतम्	१०.	सत्कार किया (और)	आसने	१२.	आसन पर
सव्रीडहास	६.	सलज्ज-हास्य	विज्ञाय	३.	जान कर (गोपियों ने)
ईक्षण सूनृत	७.	चितवन मधुरवाणी	सन्देशहरम्	२.	सन्देश-वाहक
आदिभिः ।	८.	आदि से	रमापतेः ॥	१.	लक्ष्मीपति श्रीकृष्ण का

श्लोकार्थ—लक्ष्मीपति श्रीकृष्ण का सन्देश-वाहक जान कर गोपियों ने विनय से झुक कर सलज्ज-हास्य, चितवन, मधुरवाणी आदि से उनका सत्कार किया। और एकान्त में आसन पर बैठे हुये उनसे पूछने लगीं ॥

चतुर्थः श्लोकः

जानीमस्त्वां यदुपतेः पार्षदं समुपागतम् ।
भर्त्रेह प्रेषितः पित्रोर्भवान् प्रियचिकीर्षया ।।४।।

पदच्छेद— जानीमः त्वाम् यदुपतेः पार्षदः सम्‌उपागतम् ।
भर्त्रा इह प्रेषितः पित्रोः भवान् प्रिय चिकीर्षया ।।

शब्दार्थ—

जानीमः	५. समझती हैं	इह	११. यहाँ
त्वाम्	२. आपको (हम)	प्रेषितः	१२. भेजा है
यदुपतेः	३. यदुनाथ का	पित्रोः	७. माता-पिता का
पार्षदः	४. सेवक	भवान्	१०. आप को
सम्‌उपागतम् ।	१. यहाँ आये हुये	प्रिय	८. प्रिय
भर्त्रा	६. स्वामी ने	चिकीर्षया ।।	९. करने की इच्छा

श्लोकार्थ—यहाँ आये हुये आप को हम यदुनाथ का सेवक समझती हैं । स्वामी ने माता-पिता का प्रिय करने की इच्छा से आपको यहाँ भेजा है ।।

पञ्चमः श्लोकः

अन्यथा गोव्रजे तस्य स्मरणीयं न चक्ष्महे ।
स्नेहानुबन्धो बन्धूनां मुनेरपि सुदुस्त्यजः ।।५।।

पदच्छेद— अन्यथा गोव्रजे तस्य स्मरणीयम् न चक्ष्महे ।
स्नेह अनुबन्धः बन्धूनाम् मुनेः अपि सुदुस्त्यजः ।।

शब्दार्थ—

अन्यथा	१. अन्यथा	स्नेह	८. स्नेह
गोव्रजे	२. नन्द गाँव में	अनुबन्धः	९. बन्धन तो
तस्य	३. उनके	बन्धूनाम्	७. सगे सम्बन्धियों का
स्मरणीयम्	४. स्मरण करने योग्य कोई वस्तु	मुनेः	१०. मुनि के लिये
न	६. नहीं देती है	अपि	११. भी
चक्ष्महे ।	५. हमें दिखाई	सुदुस्त्यजः ।।	१२. कठिनाई से त्यागने योग्य होता है

श्लोकार्थ—अन्यथा नन्द गाँव में उनके स्मरण करने योग्य कोई वस्तु हमें दिखाई नहीं देती है । सगे सम्बन्धियों का स्नेह बन्धन तो मुनि के लिये भी कठिनाई से त्यागने योग्य होता है ।।

षष्ठः श्लोकः

अन्येष्वर्थकृता मैत्री यावदर्थविडम्बनम् ।
पुम्भिः स्त्रीषु कृता यद्वत् सुमनस्स्विव षट्पदैः ॥६॥

पदच्छेद— अन्येषु अर्थ कृता मैत्री यावत् अर्थ विडम्बनम् ।
पुम्भिः स्त्रीषु कृता यद्वत् सुमनस्सु इव षट्पदैः ॥

शब्दार्थ—

अन्येषु	१.	दूसरों के साथ	पुम्भिः	१३.	पुरुषों का
अर्थ	२.	प्रयोग वश	स्त्रीषु	१२.	स्त्रियों से
कृता	३.	की गई	कृता	१४.	प्रेम सम्बन्ध रहता
मैत्री	४.	मित्रता तभी तक रहती है	यद्वत्	८.	इसी प्रकार
यावत्	५.	जब-तक	सुमनस्सु	९.	पुरुषों से
अर्थ	६.	स्वार्थ का	इव	११.	समान
विडम्बनम् ।	७.	सम्बन्ध रहता है	षट्पदैः	१०.	भौंरों के

श्लोकार्थ—दूसरों के साथ प्रयोजन वश की गई मित्रता तभी-तक रहती है, जब-तक स्वार्थ का सम्बन्ध रहता है। इसी प्रकार पुरुषों से भौंरों के समान पुरुषों का और स्त्रियों का प्रेम सम्बन्ध रहता है ॥

सप्तमः श्लोकः

निस्स्वं त्यजन्ति गणिका अकल्पं नृपतिं प्रजाः ।
अधीतविद्या आचार्यमृत्विजो दत्तदक्षिणम् ॥७॥

पदच्छेद— निस्स्वं त्यजन्ति गणिकाः अकल्पं नृपति प्रजाः ।
अधीत विद्याः आचार्यम् ऋत्विजः दत्त दक्षिणम् ॥

शब्दार्थ—

निस्स्वम्	१.	धनहीन पुरुष को	अधीत	८.	पढ़ने पर (शिष्य)
त्यजन्ति	६.	त्याग देती हैं	विद्याः	७.	विद्यायें
गणिकाः	२.	वेश्यायें और	आचार्यम्	९.	आचार्य को (तथा)
अकल्पम्	३.	असमर्थ	ऋत्विजः	१२.	ऋत्विज त्याग देते हैं
नृपतिम्	४.	राजा को	दत्त	११.	दे देने पर (यजमान को)
प्रजाः ।	५.	प्रजायें	दक्षिणम्	१०.	दक्षिणा

श्लोकार्थ—धनहीन पुरुषों को वेश्यायें और असमर्थ राजा को प्रजायें त्याग देती हैं विद्यायें पढ़ लेने पर शिष्य आचार्य को तथा दक्षिणा दे देने पर यजमान को ऋत्विज त्याग देते हैं ॥

अष्टमः श्लोकः

खगा वीतफलं वृक्षं भुक्त्वा चातिथयो गृहम् ।
दग्धं मृगास्तथारण्यं जारो भुक्त्वा रतां स्त्रियम् ॥८॥

पदच्छेद— खगाः वीत फलम् वृक्षम् भुक्त्वा च अतिथयः गृहम् ।
दग्धम् मृगाः तथा अरण्यम् जारः भुक्त्वा रताम् स्त्रियम् ॥

शब्दार्थ—

खगाः	१.	पक्षी	दग्धम्	६.	जल जाने पर
वीत	३.	समाप्त हो जाने पर	मृगाः	८.	पशु
फलम्	२.	फल	तथा	११.	तथा
वृक्षम्	४.	वृक्ष को	अरण्यम्	१०.	वन को
भुक्त्वा	७.	भोजन कर लेने पर	जारः	१२.	जार पुरुष
च	५.	और	भुक्त्वा	१३.	भोग कर लेने पर
अतिथयः	६.	अतिथि लोग	रताम्	१४.	अनुरक्त
गृहम् ।	८.	(खिलाने वाले के) घर को	स्त्रियम् ॥	१५.	स्त्रियों को (छोड़ देता हैं)

श्लोकार्थ—पक्षी फल समाप्त हो जाने पर वृक्ष को, अतिथि लोग भोजन कर लेने पर खिलाने वाले के घर को, पशु जल जाने पर वन को तथा जार पुरुष भोग कर लेने पर अनुरक्त स्त्रियों को छोड़ देता है ॥

नवमः श्लोकः

इति गोप्यो हि गोविन्दे गतवाक्कायमानसाः ।
कृष्णदूते व्रजं याते उद्धवे त्यक्तलौकिकाः ॥९॥

पदच्छेद— इति गोप्यः हि गोविन्दे गत वाक् काय मानसाः ।
कृष्ण दूते व्रजे याते उद्धवे त्यक्त लौकिकाः ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	कृष्णदूते	७.	श्रीकृष्ण के दूत
गोप्यः हि	६.	गोपियाँ	व्रजे	९.	व्रज में
गोविन्दे	४.	श्रीकृष्ण	याते	१०.	आने पर
गत	५.	तल्लीन	उद्धवे	८.	उद्धव के
वाक्काय	२.	वाणी, शरीर	त्यक्त	१२.	छोड़ चुकी थीं ॥
मानसाः ।	३.	और मन से	लौकिकाः ॥	११.	लौकिक मर्यादा को

श्लोकार्थ—इस प्रकार वाणी, शरीर और मन से श्रीकृष्ण में तल्लीन गोपियां श्रीकृष्ण के दूत उद्धव के व्रज में आने पर लौकिक मर्यादा को छोड़ चुकी थीं ॥

दशमः श्लोकः

गायन्त्यः प्रियकर्माणि रुदत्यश्च गतह्रियः ।
तस्य संस्मृत्य संस्मृत्य यानि कैशोरबाल्ययोः ॥१०॥

पदच्छेद— गायन्त्यः प्रिय कर्माणि रुदत्यः च गत ह्रियः ।
तस्य संस्मृत्य संस्मृत्य यानि कैशोर बाल्ययोः ॥

शब्दार्थ—

गायन्त्यः	८.	गाने लगीं	तस्य	१.	श्रीकृष्ण ने
प्रिय कर्माणि	५.	प्रिय कार्य किये थे	संस्मृत्य	६.	उनका स्मरण
रुदत्यः	१२.	रोने लगीं	संस्मृत्य	७.	कर करके (गोपियाँ)
च	९.	और	यानि	४.	जो
गतः	११.	त्याग कर	कैशोर	३.	किशोर अवस्था तक
ह्रियः ।	१०.	लज्जा	बाल्ययोः ॥	२.	बचपन से

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने बचपन से किशोरावस्था तक जो प्रिय कार्य किये थे, उनका स्मरण कर करके गोपियाँ गाने लगीं और लज्जा त्याग कर रोने लगीं ॥

एकादशः श्लोकः

काचिन्मधुकरं दृष्ट्वा ध्यायन्ती कृष्णसङ्गमम् ।
प्रियप्रस्थापितं दूतं कल्पयित्वेदमब्रवीत् ॥११॥

पदच्छेद— काचित् मधुकरम् दृष्ट्वा ध्यायन्ती कृष्ण सङ्गमम् ।
प्रिय प्रस्थापितम् दूतम् कल्पयित्वा इदम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

काचित्	४.	कोई (गोपी)	प्रिय	७.	प्रिय (श्रीकृष्ण का)
मधुकरम्	५.	भौंरे को	प्रस्थापितम्	८.	भेजा हुआ
दृष्ट्वा	६.	देख कर (उसे)	दूतम्	९.	दूत
ध्यायन्ती	३.	ध्यान करती हुई	कल्पयित्वा	१०.	समझ कर
कृष्ण	१.	श्रीकृष्ण के	इदम्	११.	यह
सङ्गमम् ।	२.	मिलन का	अब्रवीत् ॥	१२.	कहने लगीं

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के मिलन का ध्यान करती हुई कोई गोपी भौंरें को देख कर उसे प्रिय श्रीकृष्ण का भेजा हुआ दूत समझ कर यह कहने लगीं ॥

द्वादशः श्लोकः

गोप्युवाच— मधुप कितवबन्धो मा स्पृशाङ्घ्रिं सपत्न्याः
कुचविलुलितमालाकुङ्कुमश्मश्रुभिर्नः ।
वहतु मधुपतिस्तन्मानिनीनां प्रसादं
यदुसदसि विडम्ब्यं यस्य दूतस्त्वमीदृक् ॥१२॥

पदच्छेद— मधुप कितवबन्धो मा स्पृश अङ्घ्रिम् सपत्न्याःकुच विलुलितमाला कुङ्कुमश्मश्रुभिः नः । वहतु मधुपतिः तत् मानिनी नाम् प्रसादम् यदुसदसि विडम्ब्यम् यस्य दूतःत्वम् ईदृक् ॥

शब्दार्थ— मधुप	१. हे भ्रमर !	वहतु	१६. वृथा ढोते हैं
कितवबन्धो	२. धूर्त का मित्र	मधुपतिः	११. श्रीकृष्ण
मा स्पृश	८. मत छू	तत मानिनीनाम्	१२. मथुरा की मानिनीनायिकाओं का
अङ्घ्रिम्	७. पैरों को	प्रसादम्	१५. कुङ्कुमरूप प्रसाद को
सपत्न्याःकुच	४. सौत के कुचों पर	यदुसदसि	१३. यदुवंशियों की सभा में
विलुलितमाला	५ मसली गई माला के	विडम्ब्यम्	१४. उपहास करने योग्य
कुङ्कुमश्मश्रुभिः	६. कुङ्कुम से लिप्त मूछों से	यस्य दूतःत्वम्	९. जिनका दूत तू
नः ।	३. हमारी	ईदृक् ॥	१०. ऐसा है (वे)

श्लोकार्थ—हे भ्रमर ! धूर्त का मित्र ! हमारी सौत के कुचों पर मसली गई माला के कुङ्कुम से लिप्त मूंछों से पैरों को मत छू। जिनका दूत तू ऐसा है, वे श्रीकृष्ण मथुरा की मानिनी नायिकाओं का उपहास करने योग्य कुङ्कुम रूप प्रसाद को वृथा ढोते हैं ॥

त्रयोदशः श्लोकः

सकृदधरसुधां स्वां मोहिनीं पाययित्वा सुमनस इव सद्यस्तत्यजेऽस्मान् भवादृक्।
परिचरति कथं तत्पादपद्मं तु पद्मा ह्यपि बत हृतचेता उत्तमश्लोकजल्पैः ॥१३॥

पदच्छेद—सकृत् अधर सुधाम् स्वाम् मोहिनीम् पाययित्वा सुमनस इव सद्यः तत्यजे अस्मान् भवादृक् । परिचरति कथम् तत् पादपद्मम् तु पद्मा हि अपि बत हृतचेताः उत्तमश्लोक जल्पैः ॥

शब्दार्थ— सकृत्	१. उन्होंने एक बार	परिचरति	१२. सेवा करती रहती हैं
अधर सुधाम्	३. अधरामृत	कथम् तत्	१०. कैसे उनके
स्वाम् मोहिनीम्	२. अपना मादक	पादपद्मम्	११. चरण कमलों की
पाययित्वा	४. पिला कर	तु पद्मा	९. लक्ष्मी
सुमनसः इव	५. मानों फूलों से रस लेकर	हि अपि	१५. उनका भी
सद्यः	६. तत्काल उड़ जाने वाले	बत	१३. मालूम पड़ता है
तत्यजे अस्मान्	८. हमें त्याग दिया	हृतचेताः	१६. चित्त चुरा लिया है
भवादृक्	७. आपके समान	उत्तमश्लोक जल्पैः ॥	१४. श्रीकृष्ण की मीठी बातों ने

श्लोकार्थ—उन्होंने एक बार अपना मादक अधरामृत पिला कर मानों फूलों से रस लेकर तत्काल उड़ जाने वाले आप के समान हमें त्याग दिया। लक्ष्मी कैसे उनके चरणों की सेवा करती रहती हैं। मालूम पड़ता है श्रीकृष्ण की मीठी बातों ने उनका भी चित्त चुरा लिया है ॥

चतुर्दशः श्लोकः

किमिह बहु षडङ्घ्रे गायसि त्वं यदूनामधिपतिमगृहाणामग्रतो नः पुराणम् ।
विजयसखसखीनां गीयतां तत्प्रसङ्गः क्षपितकुचरुजस्ते कल्पयन्तीष्टमिष्टाः ॥१४॥

पदच्छेद—किम् इह बहु षडङ्घ्रे गायसि त्वम् यदूनाम् अधिपतिः अगृहाणाम् अग्रतः नः पुराणम् ।
विजय सख सखीनाम् गीयताम् तत् प्रसङ्गः क्षपित कुचरुजः ते कल्पयन्ति इष्टम् इष्टाः ॥

शब्दार्थ—किं इह बहु	७. क्यों यहाँ बहुत	विजय सख	९ विजय के साथी श्रीकृष्ण की
षडङ्घ्रे	१. अरे भ्रमर !	सखीनाम्	१०. मथुरा वासिनी सखियों के सामने
गायसि	८. गुण-गान कर रहा है	गीयताम्	१२. गायनकर (उन्होंने)
त्वम्	२. तू	तत् प्रसङ्गः	११. उनकी लीलाओं का
यदूनाम् अधिपतिम्	६. यदुवंशियों के स्वामी का	क्षपित	१४. मिटा दिया है (वे)
अगृहाणाम्	३ घर-द्वार से रहित	कुचरुजः	१३. उनके हृदय की पीड़ा को
अग्रतः नः	४ हमारे आगे	ते कल्पयन्ति	१६. तुझे देंगी
पुराणम् ।	५. पुराने परिचित	इष्टमिष्टाः ॥	१५. प्रसन्न होकर मुह मांगी वस्तुयें

श्लोकार्थ—अरे भ्रमर ! घर-द्वार से रहित हमारे आगे पुराने परिचित यदुवंशियों के स्वामी का क्यों यहां बहुत गुण-गान कर रहा है। विजय के साथी श्रीकृष्ण की मथुरा वासिनी सखियों के सामने उनको लीलाओं का गायन कर, उन्होंने उनके हृदय की पीड़ा को मिटा दिया है। वे प्रसन्न होकर तुझे मुँह माँगी वस्तुयें देंगी ।

पञ्चदशः श्लोकः

दिवि भुवि च रसायां काः स्त्रियस्तद्दुरापाः कपटरुचिरहासभ्रूविजृम्भस्य याः स्युः ।
चरणरज उपास्ते यस्य भूतिर्वयं का अपि च कृपणपक्षे ह्युत्तमश्लोकशब्दः ॥१५॥

पदच्छेद—दिवि भुवि च रसायाम् काः स्त्रियः तत् दुरापाः कपट रुचिर हास भ्रू विजृम्भस्य याः स्युः ।
चरणरजः उपास्ते यस्य भूतिः वयम् का अपि च कृपणपक्षे हि उत्तम श्लोक शब्दः ॥

शब्दार्थ—दिविभुवि	१. स्वर्ग में पृथ्वी में	स्युः ।	१२. हैं
च रसायाम्	२. और पाताल में (ऐसी)	चरणरजः	१०. चरणों की धूलि की
काः स्त्रियः	३. कौन स्त्रियाँ हैं	उपास्ते	११. उपासना करती
तत् दुरापाः	८. भगवान् के लिये दुर्लभ हों	यस्यभूतिः	९. लक्ष्मी जिनकी
कपट रुचिर	५. कपट भरी मनोहर	वयम् का	१३. उनके लिये हम कौन हैं
हास भ्रू	६. मुसकान तथा भौहों के	अपि च	१४. किन्तु उनका
विजृम्भस्य	७. मटकाने वाले	कृपणपक्षेहि	१६. कृपण पक्ष में ही है
याः ।	४. जो श्रीकृष्ण की	उत्तमश्लोकशब्दः	१५. उत्तम श्लोक यह नाम

श्लोकार्थ—स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल में ऐसी कौन स्त्रियाँ हैं, जो भगवान् के लिये दुर्लभ हों। कपट भरी मनोहर मुसकान तथा भौंहों को मटकाने वाले जिन श्रीकृष्ण के चरणों की धूली की उपासना लक्ष्मी करती हैं, उनके लिये हम कौन हैं। किन्तु उनका उत्तम श्लोक यह नाम कृपण पक्ष में ही है ॥

षोडशः श्लोकः

विसृज शिरसि पादं वेद्म्यहं चाटुकारैरनुनयविदुषस्तेऽभ्येत्य दौत्यैर्मुकुन्दात् ।
स्वकृत इह विसृष्टापत्यपत्यन्यलोका व्यसृजदकृतचेताः किं नु सन्धेयमस्मिन् ॥१६

पदच्छेद—विसृज शिरसिपादम् वेद्मि अहम् चाटुकारैः अनुनय विदुषः ते अभ्येत्य दौत्यैः मुकुन्दात् ।
स्वकृत इह विसृष्ट अपत्य पति अन्य लोकाः व्यसृजत् अकृत चेताः किम् न सन्धेयम् अस्मिन् ॥

शब्दार्थ			
विसृज	२. मत टेक	स्वकृत इह	१०. अपने लिये यहाँ
शिरसि पादम्	१. पैरों पर सिर	विसृज	१३. त्यागने वाली हम लोगों को
वेद्मि अहम्	३. मैं जानती हूँ कि	अपत्य पति	११. सन्तान, पति तथा
चाटुकारैः	४. चापलूसी से	अन्यलोकाः	१२. दूसरे लोगों को
अनुनय	५ मनाने में	व्यसृजत्	१४. छोड़कर चले गये
विदुषः ते	५. तू पण्डित है	अकृतचेताः	९. वे अकृतज्ञ हैं
अभ्येत्य	८. आया है	किम् नु	१५. क्या
दौत्यैः	७. दूतकर्म सीखकर	सन्धेयम्	१६. सन्धि करनी चाहिये
मुकुन्दात् ।	६. भगवान् श्रीकृष्ण के पास से	अस्मिन् ॥	१६. उनसे

श्लोकार्थ—पैरों पर सिर मत टेक मैं जानती हूँ कि चापलूसी से मनाने में तू पण्डित है। भगवान् श्रीकृष्ण के पास से दूत कर्म सीख कर आया है। वे अकृतज्ञ हैं। अपने लिये यहाँ सन्तान, पति तथा दूसरे लोगों को त्यागने वाली हम लोगों को छोड़ कर चले गये। क्या उनसे सन्धि करनी चाहिये ॥

सप्तदशः श्लोकः

मृगयुरिव कपीन्द्रं विव्यधे लुब्धधर्मा स्त्रियमकृत विरूपां स्त्रीजितः कामयानाम् ।
बलिमपि बलिमत्त्वावेष्टयद् ध्वाङ्क्षवद् यस्तदलमसितसख्यैर्दुस्त्यजस्तत्कथार्थः॥१७

पदच्छेद— मृगयुः इव कपीन्द्रम् विव्यथे लुब्ध धर्मा स्त्रियम् अकृत विरूपाम् स्त्री जितः कामयानाम् ।
वलिम् अपि बलिम् अत्त्वा आवेष्टयत् ध्वाङ्क्षवत यः तत् अलम् असित सख्यैः दुस्त्यजः तत् कथाअर्थः ॥

शब्दार्थ			
मृगयुः इव	३. व्याध के समान (छिपकर)	बलिम् अपि	१२. राजा बलि को भी
कपीन्द्रम्	४. वानरराजबालि को	बलिम् अत्त्वा	११. बलि खाकर भी
विव्यथे	५. मार डाला था	आवेष्टयत्	१३. बाँध दिया था
लुब्धधर्मा	२. शिकारी	ध्वाङ्क्षवत्	१०. कौए के समान
स्त्रियम्	७. स्त्री (शूर्पणखा) को	यः तत्	१. जिन्होंने
अकृतविरूपाम्	९. विरूप कर दिया और	अलम्असितसख्यैः	१४. ऐसे काले व्यक्ति से मित्रता व्यर्थ है
स्त्रीजितः	८. स्त्री के वश में होकर	दुस्त्यजः तत्	१६. छोड़ देना कठिन है
कामयानाम् ।	६. कामना करती हुई	कथा अर्थः ॥	१५. किन्तु उनकी चर्चा को

श्लोकार्थ—उन्होंने शिकारी व्याध के समान छिपकर वानरराजबालि को मार डाला था। कामना करती हुई स्त्री सूर्पणखा को स्त्री के वश में होकर विरूप कर दिया और कौए के समान बलि खाकर भी राजा बलि को बाँध दिया था। ऐसे काले व्यक्ति से मित्रता व्यर्थ है। किन्तु उनकी चर्चा को छोड़ना कठिन है ॥

अष्टादशः श्लोकः

यदनुचरितलीलाकर्णपीयूषविप्रुट्सकृददनविधूतद्वन्द्वधर्मा विनष्टाः ।
सपदि गृहकुटुम्बं दीनमुत्सृज्य दीना बहव इह विहङ्गा भिक्षुचर्यां चरन्ति ॥१८॥

पदच्छेद— यत् अनुचरित लीला कर्ण पीयूष विप्रुट् सकृत् अदन विधूत द्वन्द्वधर्माः विनष्टाः ।
सपदि गृह कुटुम्बम् दीनम् उत्सृज्य दीनाः बहवः इहविहङ्गाः भिक्षुचर्याम् चरन्ति ॥

शब्दार्थ—

यत् अनुचरित	१. जिनकी की हुई	सपदि	१०. शीघ्र ही
लीला	२. लीलाओं का	गृह	११. घर और
कर्ण पीयूष	३. कर्णामृत के	कुटुम्बम् दीनम्	१२. दुःखी परिवार को
विप्रुट् सकृत्	४. एक कण का एक बार भी	उत्सृज्य	१३. छोड़ कर
अदन	५ रसास्वादन कर लेता है उसके	दीनाः बहवः	९. अकिञ्चन लोग बहुत से
विधूत	७. धुले हुये के समान	इहविहङ्गाः	१४. यहाँ पक्षियों के समान
द्वन्द्वधर्माः	६. राग-द्वेष आदि	भिक्षुचर्याम्	१५. भिक्षाटन
विनष्टाः ।	८. नष्ट हो जाते हैं (ऐसे)	चरन्ति ॥	१६. करते हैं

श्लोकार्थ—जिनकी की हुई लीलारूप कर्णामृत के एक कण का एक बार भी जो रसास्वादन कर लेता है, उसके राग-द्वेष आदि धुले हुये के समान नष्ट हो जाते हैं। ऐसे बहुत से अकिञ्चन लोग शीघ्र ही घर और दुःखी परिवार को छोड़ कर यहाँ पक्षियों के समान भिक्षाटन करते है ॥

एकोनविंशः श्लोकः

वयमृतमिव जिह्मव्याहृतं श्रद्दधानाः कुलिकरुतमिवाज्ञाः कृष्णवध्वो हरिण्यः ।
ददृशुरसकृदेतत्तन्नखस्पर्शतीव्रस्मररुज उपमन्त्रिन् भण्यतामन्यवार्ता ॥१९॥

पदच्छेद—वयम् ऋतम् इव जिह्म व्याहृतम् श्रद्दधानाः कुलिकरुतम् इव अज्ञाः कृष्णवध्वः हरिण्यः ।
ददृशुः असकृत् एतत् तत् नख स्पर्श तीव्र स्मररुज उपमन्त्रिन् भण्यताम् अन्य वार्ता ॥

शब्दार्थ— **वयम्**	२. हम लोगों ने (श्रीकृष्ण की)	हरिण्यः ।	८. हरिणियाँ
ऋतम् इव	३. सत्य के समान	ददृशुः असकृत्	१३. अनुभव किया
जिह्म व्याहृतम्	४. कपट भरी बातों पर	एतत् तत् नख	१०. और उनके नख
श्रद्दधानाः	५ श्रद्धा की	स्पर्शतीव्र	११. स्पर्श से तीव्र
कुलिकरुतम्	९. व्याध के गान पर विश्वास कर लेती है	स्मररुज	१२. काम पीडा का
इव	६. जैसे	उपमन्त्रिन्	१४. हे दूत ! भ्रमर
अज्ञाः	१. भोली-भाली	भण्यताम्	१५. दूसरी कोई
कृष्णवध्वः	७. कृष्णसार मृग की पत्नी	अन्य वार्ता ॥	१६. बात कहो

श्लोकार्थ—भोली-भाली हम लोगों ने श्रीकृष्ण की सत्य के समान कपट भरी बातों पर श्रद्धा की। जैसे कृष्ण सार मृग की पत्नी हरिणियाँ व्याध के गान पर विश्वास कर लेती हैं। और हमने उनके नख स्पर्श से तीव्र काम पीडा का अनुभव किया। हे दूत भ्रमर ! दूसरी कोई बात कहो ॥

विंशः श्लोकः

प्रियसख पुनरागाः प्रेयसा प्रेषितः किं वरय किमनुरुन्धे माननीयोऽसि मेऽङ्ग ।
नयसि कथमिहास्मान् दुस्त्यजद्वन्द्वपार्श्वं सततमुरसि सौम्य श्रीर्वधूःसाकमास्ते २०

पदच्छेद— प्रियसख पुनः आगाः प्रेयसाप्रेषितः किम् वरय किम् अनुरुन्धे माननीयः असिमे अङ्ग ।
नयसि कथम् इह अस्मान् दुस्त्यज द्वन्द्वपार्श्वं सततम् उरसि सौम्य श्रीः वधूः साकम् आस्ते ।।

शब्दार्थ— प्रियसख	१. प्रिय मित्र ! तुम	नयसि	११. ले चलना चाहते हो
पुनः गाः	२. फिर लौट आये हो	कथम् इह	९. क्या वहाँ पर
प्रेयसाप्रेषितः	४. प्रियतम ने भेजा है	अस्मान्	१०. हमें
किम्	३. क्या	दुस्त्यज	१३. लौटना कठिन है
वरय	६. माँग लो	द्वन्द्वपार्श्वं	१२. उनके पास से
किम् अनुरुन्धे	५. क्या चाहते हो	सततम् उरसि	१५ उनके वक्षः स्थल पर सदा
माननीयः असि	८. माननीय हो	सौम्य श्रीःवधूः	१४. सौम्य उनकी पत्नी लक्ष्मी
मे अङ्ग ।	७ मेरे प्रिय भ्रमर तुम	साकम् आस्ते ।।	१६. साथ रहती हैं

श्लोकार्थ— प्रिय मित्र ! तुम फिर लौट आये हो । क्या प्रियतम ने भेजा है । क्या चाहते हो माँग लो । मेरे प्रिय भ्रमर ! तुम माननीय हो । क्या वहाँ पर हमें ले चलना चाहते हो । उनके पास से लौटना कठिन है । सौम्य ! उनकी पत्नी लक्ष्मी उनके वक्षः स्थल पर सदा साथ रहती हैं ।।

एकविंशः श्लोकः

अपि बत मधुपुर्यामार्यपुत्रोऽधुनाऽऽस्ते स्मरति स पितृगेहान्सौम्य बन्धूंश्च गोपान्
क्वचिदपि स कथा नः किङ्करीणां गृणीते भुजमगुरुसुगन्धंमूर्ध्न्यधास्यत्कदानु २१

पदच्छेद—अपि बत मधुपुर्याम् आर्यपुत्र अधुना आस्ते स्मरति सःपितृगेहान् सौम्य बन्धून् च गोपान् ।
क्वचित् अपि सः कथाः नः किङ्करीणाम् गृणीते भुजम् अगुरु सुगन्धम् मूर्ध्नि अधास्यत् कदा नु ।।

शब्दार्थ—अपि बत	२. अच्छा क्या	क्वचित्	१२. कभी कुछ
मधुपुर्याम्	५. मधुपुरी में	अपि सः	१० और वे
आर्यपुत्र	३. आर्य पुत्र श्रीकृष्ण	कथाः	१३. बातें
अधुना	४. इस समय	नःकिङ्करीणाम्	११. हम दासियों की
आस्ते	६. हैं (क्या)	गृणीते	१४. करते हैं क्या
स्मरति	९ स्मरण करते हैं	भुजम्	१७. भुजा (हमारे)
सः पितृगेहान्	७ वे पिता के घरों	अगुरु सुगन्धम्	१६. अगर के सुगन्ध के समान
सौम्य	१. हे सौम्य !	मूर्ध्नि अधास्यत्	१८. सिर पर रखेंगे
बन्धून् च गोपान् ।	८. बन्धुओं और गौओं का	कदा नु ।।	१५. कब वे अपनी

श्लोकार्थ—हे सौम्य ! अच्छा, आर्य पुत्र श्रीकृष्ण इस समय मधुपुरी में हैं क्या ? वे पिता के घरों बन्धुओं और गौओं को स्मरण करते हैं । और वे हम दासियों की कभी कुछ बातें करते हैं क्या ? कब वे अपनी अगर के सुगन्ध के समान भुजा हमारे सिर पर रखेंगे ।।

द्वाविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— अथोद्धवो निशम्यैवं कृष्णदर्शनलालसाः ।
सान्त्वयन् प्रियसन्देशैर्गोपीरिदमभाषत ॥२२॥

पदच्छेद— अथ उद्धवः निशम्य एवम् कृष्णदर्शन लालसाः ।
सान्त्वयन् प्रिय सन्देशैः गोपीः इदम् अभाषत ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	सान्त्वयन्	१०.	सान्त्वना देते हुये
उद्धवः	२.	उद्धव जी ने	प्रिय	८.	प्रियतम के
निशम्य	४.	सुन कर	सन्देशैः	९.	सन्देशों से
एवम्	३.	इस प्रकार	गोपीः	७.	गोपियों को
कृष्ण दर्शन	५.	कृष्ण दर्शन की	इदम्	११.	यह
लालसाः ।	६.	लालसा वाली	अभाषत ॥	१२.	कहा

श्लोकार्थ—तदनन्तर उद्धव जी ने इस प्रकार सुन कर कृष्ण दर्शन की लालसा वाली गोपियों को प्रियतम के सन्देशों से सान्त्वना देते हुये यह कहा ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

उद्धव उवाच— अहो यूयं स्म पूर्णार्था भवत्यो लोकपूजिताः ।
वासुदेवे भगवति यासामित्यर्पितं मनः ॥२३॥

पदच्छेद— अहो यूयम् स्म पूर्णार्थाः भवत्यः लोक पूजिताः ।
वासुदेवे भगवति यासाम् इति अर्पितम् मनः ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	अहा	वासुदेवे	१०.	श्रीकृष्ण को अपना
यूयम् स्म	२.	तुम लोग	भगवति	९.	भगवान्
पूर्णार्थाः	३.	कृत कृत्य हो गई हो	यासाम्	७.	क्योंकि तुम लोगों ने
भवत्यः	४.	तुम	इति	८.	इस प्रकार
लोक	५.	संसार में	अर्पितम्	१२.	समर्पित कर दिया है
पूजिताः ।	६.	पूजनीय हो	मनः ॥	११.	हृदय

श्लोकार्थ—अह तुम लोग कृतकृत्य हो गई हो । तुम संसार में पूजनीय हो । क्योंकि तुम लोगों ने इस प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण को अपना हृदय समर्पित कर दिया है ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

दानव्रततपोहोमजपस्वाध्यायसंयमैः ।
श्रेयोभिर्विविधैश्चान्यैः कृष्णे भक्तिर्हि साध्यते ॥२४॥

पदच्छेद— दान व्रत तपः होम जप स्वाध्याय संयमैः ।
श्रेयोभिः विविधैः च अन्यैः कृष्णे भक्तिः हि साध्यते ॥

शब्दार्थ—

दान	१. दान	श्रेयोभिः	९. कल्याण के
व्रत	२. व्रत	विविधैः	११. अनेक साधनों से
तप	३. तपस्या	च	८. और
होम	४. हवन	अन्यैः	१०. अन्य
जप	५. जप	कृष्णे	१२. श्रीकृष्ण में
स्वाध्याय	६. शास्त्रों का अध्ययन	भक्तिःहि	१३. भक्ति
संयमैः ।	७. संयम	साध्यते ॥	१४. प्राप्त की है

श्लोकार्थ—आप लोगों ने दान, व्रत, तपस्या, हवन, जप, शास्त्रों का अध्ययन, संयम और कल्याण अनेक साधनों से श्रीकृष्ण में भक्ति प्राप्त की है ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

भगवत्युत्तमश्लोके भवतीभिरनुत्तमा ।
भक्तिः प्रवर्तिता दिष्ट्या मुनीनामपि दुर्लभा ॥२५॥

पदच्छेद— भगवति उत्तम श्लोके भवतीभिः अनुत्तमा ।
भक्तिःप्रवर्तिता दिष्टचा मुनीनाम् अपि दुर्लभा ॥

शब्दार्थ—

भगवति	५. भगवान् श्रीकृष्ण में	भक्तिःप्रवर्तिता	७. भक्ति प्राप्त की है जो
उत्तम	३. पवित्र	दिष्टचा	१. भाग्य की बात है कि
श्लोके	४. कीर्ति	मुनीनाम्	८ मुनियों के लिये
भवतीभिः	२. आप लोगों ने	अपि	९. भी
अनुत्तमा ।	६. सर्वोत्तम	दुर्लभा ॥	१०. दुर्लभ है

श्लोकार्थ—भाग्य की बात है कि आप लोगों ने पवित्र कीर्ति भगवान् श्रीकृष्ण में सर्वोत्तम भक्ति प्राप्त की है, जो मुनियों के लिये भी दुर्लभ है ॥

षड्विंशः श्लोकः

दिष्टया पुत्रान् पतीन् देहान् स्वजनान् भवनानि च ।
हित्वावृणीत यूयं यत् कृष्णाख्यं पुरुषं परम् ॥२६॥

पदच्छेद— दिष्टया पुत्रान् पतीन् देहान् स्वजनान् भवनानि च ।
हित्वा अवृणीत यूयम् यत् कृष्णाख्यम् पुरुषम् परम् ॥

शब्दार्थ—

दिष्टया ।	१. भाग्य की बात है कि	हित्वा	६. छोड़कर
पुत्रान्	३. अपने पुत्रों	अवृणीत	१४. वरण किया है
पतीन्	४. पतियों	यूयम्	२. तुम लोगों ने
देहान्	५. शरीरों	यत्	१०. जो कि
स्वजनान्	६. सगे सम्बन्धियों	कृष्णाख्यम्	११. श्रीकृष्ण नामक
भवनानि	८. घरों को	पुरुषम्	१३. पुरुष को पति के रूप में
च ।	७. और	परम् ॥	१२. परम

श्लोकार्थ—भाग्य की बात है कि तुम लोगों ने अपने पुत्रों, पतियों, शरीरों, सगे सम्बन्धियों और घरों को छोड़कर श्रीकृष्ण नामक परम पुरुष को पति रूप में वरण किया है ॥

सप्तविंशः श्लोकः

सर्वात्मभावोऽधिकृतो भवतीनामधोक्षजे ।
विरहेण महाभागा महान् मेऽनुग्रहः कृतः ॥२७॥

पदच्छेद— सर्व आत्म भावः अधिकृतः भवतीनाम् अधोक्षजे ।
विरहेण महाभागाः महान् मे अनुग्रहः कृतः ॥

शब्दार्थ—

सर्व	५. सम्पूर्ण	विरहेण	२. (श्रीकृष्ण के) वियोग से
आत्म भावः	६. आत्म भाव	महाभागाः	१. हे महाभाग्यवती गोपियों !
अधिकृतः	७ दिखाकर	महान् मे	८. मेरे ऊपर बड़ी
भवतीनाम्	३. आप लोगों ने	अनुग्रहः	९. कृपा
अधोक्षजे ।	४. भगवान् के प्रति	कृतः ॥	१०. की है

श्लोकार्थ—हे भाग्यवती गोपियों ! श्रीकृष्ण के वियोग में आप लोगों ने भगवान् के प्रति सम्पूर्ण आत्म भाव दिखाकर मेरे ऊपर बड़ी कृपा की है ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

श्रूयतां प्रियसन्देशो भवतीनां सुखावहः ।
यमादायागतो भद्रा अहं भर्तू रहस्करः ॥२८॥

पदच्छेद— श्रूयताम् प्रिय सन्देशः भवतीनाम् सुखावहः ।
यम् आदाय आगतः भद्राः अहम्भर्तुः रहस्करः ॥

शब्दार्थ—

श्रुयताम्	४.	सुनो जो	यम् आदाय	७.	जिसे लेकर मैं
प्रिय	२.	प्रियतम का	आगतः	८.	आया हूँ
सन्देशः	३.	सन्देश	भद्राः	१.	हे कल्याणियो !
भवतीनाम्	५.	तुम लोगों को	अहम्भर्तुः	९.	मैं स्वामी का
सुखावहः ।	६.	सुख देने वाला है (और)	रहस्करः ॥	१०.	गुप्त काम करने वाला सेवक हूँ

श्लोकार्थ—हे कल्याणियो ! प्रियतम का सन्देश सुनो । जो तुम लोगों को सुख देने वाला है । जिसे लेकर मैं आया हूँ । मैं स्वामी का गुप्त काम करने वाला सेवक हूँ ॥

एकोनविंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—भवतीनां वियोगो मे न हि सर्वात्मना क्वचित् ।
यथा भूतानि भूतेषु खं वायवग्निर्जलं मही ।
तथाहं च मनःप्राणभूतेन्द्रियगुणाश्रयः ॥२९॥

पदच्छेद— भवतीनाम् वियोगः मे न हि सर्वात्मना क्वचित् ।
यथा भूतानि भूतेषु खम् वायु अग्निः जलम् मही ।
तथा अहम् च मनः प्राण भूत इन्द्रिय गुण-आश्रयः ॥

शब्दार्थ—

भवतीनाम्	२.	तुम लोगों का	खम्-वायु	८.	आकाश-वायु
वियोगः मे	३.	वियोग मुझसे	अग्निः जलम्	९.	अग्नि, जल
न हि	५.	नहीं हो सकता	मही ।	१०.	पृथ्वी ये पाँचों
सर्वात्मना	१.	सबके आत्मा	तथा अहम्	१२.	उसी प्रकार मैं
क्वचित् ।	४.	कभी भी	च मनः	१३.	मन
यथा	६.	जैसे	प्राण-भूत	१४.	प्राण-पञ्चभूत
भूतानि	११.	भूत व्याप्त है	इन्द्रिय	१५.	इन्द्रिय और उनके
भूतेषु	७.	सभी भौतिक पदार्थों में	गुण-आश्रयः ॥	१६.	विषयों का आश्रय हूँ

श्लोकार्थ—सबके आत्मा मुझसे तुम लोगों का वियोग कभी भी नहीं हो सकता । जैसे सभी भौतिक पदार्थों में आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी ये पांचों भूत व्याप्त हैं उसी प्रकार मैं मन, प्राण, पञ्चभूत, इन्द्रिय और उनके विषयों का आश्रय हूँ ॥

त्रिंशः श्लोकः

आत्मन्येवात्मनाऽऽत्मानं सृजे हन्म्यनुपालये ।
आत्ममायानुभावेन भूतेन्द्रियगुणात्मना ॥३०॥

पदच्छेद— आत्मनि एव आत्मना आत्मानम् सृजे हन्मि अनुपालये ।
आत्ममाया अनुभावेन भूत इन्द्रिय गुण आत्मना ॥

शब्दार्थ—

आत्मनि	८.	अपने में	आत्म	१.	अपनी
एव	९.	ही	माया	२.	माया के
आत्मना	१०.	अपने से	अनुभावेन	३.	प्रभाव से
आत्मानम्	११.	अपने को	भूत	४.	भूत
सृजे	१२.	रचता	इन्द्रिय	५.	इन्द्रिय और उनके
हन्मि	१४.	समेट लेता हूँ	गुण	६.	विषयों के रूप में उनका
अनुपालये ।	१३.	पालता (और)	आत्मना ॥	७.	आश्रय तथा निमित्त बनाकर

श्लोकार्थ—अपनी माया के प्रभाव से भूत, इन्द्रिय और उनके विषयों के रूप में उनका आश्रय तथा निमित्त बनाकर अपने में ही अपने से अपने को रचता, पालता और समेट लेता हूँ ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

आत्मा ज्ञानमयः शुद्धो व्यतिरिक्तोऽगुणान्वयः ।
सुषुप्तिस्वप्नजाग्रद्भिर्मायावृत्तिभिरीयते ॥३१॥

पदच्छेद— आत्मा ज्ञानमयः शुद्धः व्यतिरिक्तः अगुण अन्वयः ।
सुषुप्ति स्वप्न जाग्रद्भिः माया वृत्तिभिः ईयते ॥

शब्दार्थ—

आत्मा	१.	आत्मा	सुषुप्ति	११.	सुषुप्ति रूप में
ज्ञानमयः	२.	ज्ञानस्वरूप	स्वप्न	१०.	स्वप्न और
शुद्धः	३.	शुद्ध	जाग्रद्भिः	९.	जाग्रत्
व्यतिरिक्तः	४.	माया के कार्यों से पृथक्	माया	७.	माया की
अगुण	५.	निर्गुण तथा अपने	वृत्तिभिः	८.	वृत्तियों के द्वारा
अन्वयः ।	६.	अवान्तर भेदों से रहित है वह	ईयते ॥	१२.	प्रतीत होती है

श्लोकार्थ—आत्मा ज्ञानस्वरूप, शुद्ध, माया के कार्यों से पृथक्, निर्गुण तथा अपने अवान्तर भेदों से रहित है। वह माया की वृत्तियों के द्वारा जाग्रत्, स्वप्न और सुषुप्ति रूप में प्रतीत होती है ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

येनेन्द्रियार्थान् ध्यायेत मृषा स्वप्नवदुत्थितः ।
तन्निरुन्ध्यादिन्द्रियाणि विनिद्रः प्रत्यपद्यत ॥३२॥

पदच्छेद— येन इन्द्रिय अर्थान् ध्यायेत् मृषा स्वप्नवत् उत्थितः ।
तत् निरुन्ध्यात् इन्द्रियाणि विनिद्राः पत्यपद्यत ॥

शब्दार्थ—

येन	१. जिससे	उत्थितः ।	११. उठा हो इस प्रकार
इन्द्रिय	२ इन्द्रियों के	तत्	७. इसलिये
अर्थान्	३ विषयों को	निरुन्ध्यात्	९. रोक ले, जैसे
ध्यायेत	६. समझे	इन्द्रियाणि	८. इन्द्रियों को
मृषा	५. मिथ्या	विनिद्रः	१०. सोकर
स्वप्नवत्	४. स्वप्न के समान	प्रत्यपद्यत ॥	१२. मुझे प्राप्त करे

श्लोकार्थ—जिससे इन्द्रियों के विषयों को स्वप्न के समान मिथ्या समझे । इसलिये इन्द्रियों को रोक ले, और जैसे सोकर उठा हो इस प्रकार मुझे प्राप्त कर ले ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

एतदन्तः समाम्नायो योगः सांख्यं मनीषिणाम् ।
त्यागस्तपो दमः सत्यं समुद्रान्ता इवापगाः ॥३३॥

पदच्छेद— एतद् अन्तः समाम्नायः योगः सांख्यम् मनीषिणाम् ।
त्यागः तपः दमः सत्यम् समुद्र अन्ताः इव आपगाः ॥

शब्दार्थ—

एतद्	५. मेरी प्राप्ति में हेतु हैं	त्यागः तपः	५. त्याग, तपस्या
अन्तः	७. अन्त	दमः सत्यम्	६. इन्द्रिय संयम और सत्य का
समाम्नायः	२. वेद	समुद्र	१२. समुद्र में इकट्ठा हो जाता है
योगः	३. योगशास्त्र	अन्ताः	११. अन्त में
सांख्यम्	४. सांख्यशास्त्र	इव	९. जैसे
मनीषिणाम् ।	१. विद्वानों का	आपगाः ॥	१०. सभी नदियों का जल

श्लोकार्थ—विद्वानों के वेद, योग शास्त्र, सांख्य शास्त्र, त्याग, तपस्या, इन्द्रिय संयम और सत्य का अन्त मेरी प्राप्ति में हेतु है। जैसे सभी नदियों का जल अन्त में समुद्र में इकट्ठा हो जाता है ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

यत्त्वहं भवतीनां वै दूरे वर्ते प्रियो दृशाम् ।
मनसः सन्निकर्षार्थं मदनुध्यानकाम्यया ॥३४॥

पदच्छेद— यत् तु अहम् भवतीनाम् वै दूरे वर्ते प्रियः दृशाम् ।
मनसः सन्निकर्ष अर्थम् मत् अनुध्यान काम्यया ॥

शब्दार्थ—

यत् तु अहम्	४.	मैं जो	मनसः	१०.	मन को
भवतीनाम्	१.	तुम्हारे	सन्निकर्ष	११.	अपने पास पहुँचाने
वै दूरे	५.	तुमसे दूर	अर्थम्	१२.	के लिये (ही करता हूँ)
वर्ते	६.	रहता हूँ (वह)	मत्	७.	मेरे
प्रियः	३.	प्रिय	अनुध्यान	८.	निरन्तर ध्यान की
दृशाम् ।	२.	नयनों का	काम्यया ॥	९.	कामना से

श्लोकार्थ—तुम्हारे नयनों का प्रिय मैं जो तुमसे दूर रहता हूँ, वह मेरे निरन्तर ध्यान की कामना से मन को अपने पास पहुँचाने के लिये ही करता हूँ ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

यथा दूरचरे प्रेष्ठे मन आविश्य वर्तते ।
स्त्रीणां च न तथा चेतः सन्निकृष्टेऽक्षिगोचरे ॥३५॥

पदच्छेद— यथा दूर चरे प्रेष्ठे मनः आविश्य वर्तते ।
स्त्रीणाम् च न तथा चेतः सन्निकृष्टे अक्षिगोचरे ॥

शब्दार्थ—

यथा	५.	जितना	स्त्रीणाम्	१.	स्त्रियों का
दूर चरे	३.	दूर में रहने वाले	च न	१२.	नहीं लगता है
प्रेष्ठे	४.	प्रियतम में	तथा	८.	उतना (उनका)
मनः	२.	मन	चेतः	९.	चित्त
आविश्य	६.	निश्चल भाव से लगा	सन्निकृष्टे	११.	रहने वाले (प्रियतम) में
वर्तते ।	७.	रहता है	अक्षिगोचरे ॥	१०.	आँखों के सामने

श्लोकार्थ—स्त्रियों का मन दूर में रहने वाले प्रियतम में जितना निश्चल भाव से लगा रहता है, उतना उनका चित्त आँखों के सामने रहने वाले प्रियतम में नहीं लगता है ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

मय्यावेश्य मनः कृत्स्नं विमुक्ताशेषवृत्ति यत् ।
अनुस्मरन्त्यो मां नित्यमचिरान्मामुपैष्यथ ॥३६॥

दपच्छेद— मयि आवेश्य मनः कृत्स्नम् विमुक्त अशेष वृत्ति यत् ।
अनुस्मरन्त्यः माम् नित्यम् अचिरात् माम् उपैष्यथ ॥

शब्दार्थं—

मयि आवेश्य	६.	मुझ में लगा कर	अनुस्मरन्त्यः	९.	स्मरण करती हुई तुम लोग
मनः	५.	मन है उसे	माम्	७.	मेरा
कृत्स्नम्	४.	सम्पूर्ण	नित्यम्	८.	नित्य
विमुक्त	२.	रहित	अचिरात्	१०.	शीघ्र
अशेष वृत्ति	१.	समस्त वृत्तियों से	माम्	११.	मुझे
यत् ।	३	जो	उपैष्यथ ॥	१२.	प्राप्त हो जाओगी

श्लोकार्थं—समस्त वृत्तियों से रहित जो सम्पूर्ण मन है उसे मुझमें लगा कर मेरा नित्य स्मरण करती हुई तुम लोग शीघ्र मुझे प्राप्त हो जाओगी ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

या मया क्रीडता रात्र्यां वनेऽस्मिन् व्रज आस्थिताः ।
अलब्धरासाः कल्याण्यो माऽऽपुर्मद्वीर्यचिन्तया ॥३७॥

पदच्छेद— या मया क्रीडता रात्र्याम् वने अस्मिन् व्रजे आस्थिताः ।
अलब्धरासाः कल्याण्यः मा आपुः मत् वीर्य चिन्तया ॥

शब्दार्थं—

याः	५.	जो गोपियाँ	अलब्धरासाः	८.	रासलीला में नहीं आ सकीं वे
मया क्रीडता	४.	जब मैंने क्रीडा की थी (तब)	कल्याण्यः	१.	हे कल्याणियो !
रात्र्याम्	३.	रात्रि के समय	मा आपुः	१२.	मुझे प्राप्त हो गईं थीं
वने	२.	वृन्दावन में	मत्	९.	मेरे
अस्मिन् व्रजे	६.	इस व्रज में	वीर्यं	१०.	पराक्रम का
आस्थिताः ।	७.	रह गई थीं	चिन्तया ॥	११.	चिन्तन करने से

श्लोकार्थं—हे कल्याणियो ! वृन्दावन में रात्रि के समय जब मैंने क्रीडा की थी तब जो गोपियाँ इस व्रज में रह गईं थीं, रासलीला में नहीं आ सकी थीं, वे मेरे पराक्रम का चिन्तन करने से मुझे प्राप्त हो गईं थीं ॥

अष्टत्रिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— एवं प्रियतमादिष्टमाकर्ण्य व्रजयोषितः ।
ता ऊचुरुद्धवं प्रीतास्तत्सन्देशागतस्मृतीः ॥३८॥

पदच्छेद— एवम् प्रियतम आदिष्टम् आकर्ण्य व्रज योषितः ।
ताः ऊचुः उद्धवम् प्रीताः तत् सन्देश आगत स्मृतीः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	ताः	५.	वे
प्रियतम	२.	प्रियतम का	ऊचुः	१२.	कहने लगीं
आदिष्टम्	३.	आदेश	उद्धवम्	११.	उद्धव जी से
आकर्ण्य	४.	सुनकर	प्रीताः	८.	आनन्दित हुईं और
व्रज	६.	व्रज की	तत् सन्देश	९.	उनके सन्देश से
योषितः ।	७.	स्त्रियाँ	आगत स्मृतिः	१०.	स्मरण हो आने से

श्लोकार्थ—इस प्रकार प्रियतम का आदेश सुनकर वे व्रज की स्त्रियाँ आनन्दित हुईं और उनके सन्देश से स्मरण हो आने से उद्धव जी से कहने लगीं ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

गोप्य ऊचुः— दिष्ट्याहितो हतः कंसो यदूनां सानुगोऽघकृत् ।
दिष्ट्याऽऽप्तैर्लब्धसर्वार्थैः कुशल्यास्तेऽच्युतोऽधुना ॥३९॥

पदच्छेद— दिष्टया अहितः हतः कंसः यदूनाम् स अनुगः अघकृत् ।
दिष्टया आप्तैः लब्ध सर्वार्थैः कुशलीआस्ते अच्युत अधुना ॥

शब्दार्थ—

दिष्टया	१.	भाग्य से	दिष्टया	८.	भाग्य से
अहितः	३.	शत्रु	आप्तैः	९.	गुरुजनों के
हतः	७.	मारा गया	लब्ध	११.	पूर्ण हो गयी
कंसः	५.	कंस	सर्वार्थैः	१०.	सभी मनोरथ
यदूनाम्	२.	यदुवंशियों	कुशली आस्ते	१४.	सकुशल रह रहे हैं
स अनुग	६.	अनुयायिओं के साथ	अच्युत	१३.	श्रीकृष्ण
अघकृत् ।	४.	पापी	अधुना ॥	१२.	अब

श्लोकार्थ—भाग्य से यदुवंशियों का शत्रु पापी कंस अनुयायिओं के साथ मारा गया। भाग्य से गुरुजनों के सभी मनोरथ पूर्ण हो गये। अब श्रीकृष्ण कुशल से रह रहे हैं ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

कच्चिद् गदाग्रजः सौम्य करोति पुरयोषिताम् ।
प्रीतिं नः स्निग्धसव्रीडहासोदारेक्षणार्चितः ॥४०॥

पदच्छेद— कच्चित् गदाग्रजः सौम्य करोति पुरयोषिताम् ।
प्रीतिम् नः स्निग्ध सव्रीड हास उदार ईक्षण अर्चितः ॥

शब्दार्थ—

कच्चित्	८.	क्या	प्रीतिम्	११.	प्रेम
गदाग्रजः	७.	श्रीकृष्ण	नः स्निग्ध	२.	हमारी प्रेम भरी
सौम्य	१.	हे सौम्य (उद्धव जी)	सव्रीडहास	३.	लजीली मुसकान
करोति	१२.	करते हैं	उदार	४.	और उन्मुक्त
पुर्	९.	नगर की	ईक्षण	५.	चितवन से
योषिताम् ।	१०.	स्त्रियों से	अर्चितः ॥	६.	पूजित

श्लोकार्थ—हे सौम्य उद्धव जी ! हमारी प्रेम भरी लजीली मुसकान और उन्मुक्त चितवन से पूजित श्रीकृष्ण क्या नगर की स्त्रियों से प्रेम करते हैं ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

कथं रतिविशेषज्ञः प्रियश्च वरयोषिताम् ।
नानुबध्येत तद्वाक्यैर्विभ्रमैश्चानुभाजितः ॥४१॥

पदच्छेद— कथम् रति विशेषज्ञः प्रियः च वर योषिताम् ।
न अनुबध्येत तत् वाक्यैः विभ्रमैः च अनुभाजितः ॥

शब्दार्थ—

कथम्	११.	क्यों	न अनुबध्येत	१२.	आकृष्ट होकर
रति	१.	रतिकला के	तत्	६.	उनके
विशेषज्ञः	२.	विशेषज्ञ	वाक्यैः	७.	नयनों
प्रियः	५.	प्यारे श्रीकृष्ण	विभ्रमैः	९.	हाव-भावों से
च वर	३.	और श्रेष्ठ	च	८.	और
योषिताम् ।	४.	स्त्रियों के	अनुभाजितः	१०.	आकृष्ट होकर

श्लोकार्थ—रतिकला के विशेषज्ञ और श्रेष्ठ स्त्रियों के प्यारे श्रीकृष्ण उनके नयनों और हाव-भावों से आकृष्ट होकर क्यों नहीं रीझेंगे ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

अपि स्मरति नः साधो गोविन्दः प्रस्तुते क्वचित् ।
गोष्ठीमध्ये पुरस्त्रीणां ग्राम्याः स्वैरकथान्तरे ॥४२॥

पदच्छेद— अपि स्मरति नः साधो गोविन्दः प्रस्तुते क्वचित् ।
गोष्ठी मध्ये पुर स्त्रीणाम् ग्राम्याः स्वैरः कथा अन्तरे ॥

शब्दार्थ—

अपि	२. क्या		गोष्ठी	६. मण्डली के
स्मरति	१४. स्मरण करते हैं		मध्ये	७. बीच
नः	१२. हमारी		पुर	४. नगर की
साधो	१. हे साधु उद्धव जी !		स्त्रीणाम्	५. स्त्रियों की
गोविन्दः	११. श्रीकृष्ण		ग्राम्याः	१३. गंवारू बातों का
प्रस्तुते	१०. चलने पर		स्वैर	८. स्वच्छन्द
क्वचित् ।	३. कभी		कथा अन्तरे ॥	९. बात-चीत

श्लोकार्थ—हे साधु उद्धव जी ! क्या कभी नगर की स्त्रियों की मण्डली के बीच स्वच्छन्द बात-चीत चलने पर श्रीकृष्ण हमारी गंवारू बातों का स्मरण करते हैं ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

ताः किं निशाः स्मरति यासु तदा प्रियाभिर्वृन्दावने कुमुदकुन्दशशाङ्करम्ये ।
रेमे क्वणच्चरणनूपुररासगोष्ठ्यामस्माभिरीडितमनोज्ञकथः कदाचित् ॥४३॥

पदच्छेद— ताः किम् निशाःस्मरति यासु तदा प्रियाभिः वृन्दावने कुमुद-कुन्द शशाङ्करम्ये ।
रेमे क्वणत् चरण नूपुर रास गोष्ठ्याम् अस्माभिः ईडित मनोज्ञकथः कदाचित् ॥

शब्दार्थ—

ताः	९. उन	**रेमे**	१६. रमण किया था
किम्	७. क्या	**क्वणत् चरण**	१. बजते हुये पैरों की
निशाःस्मरति	१०. रात्रियों का स्मरण करते हैं	**नूपुर**	२. नूपुर वाली
यासु तदा	११. जिनमें उस समय	**रासगोष्ठ्याम्**	३. रासलीला की गोष्ठी में
प्रियाभिः	१५. प्रियाओं के साथ	**अस्माभिः**	४. हम लोगों के द्वारा
वृन्दावने	१४. वृन्दावन में	**ईडित**	५. गायी गई
कुमुद-कुन्द	१२. कुमुद और कुन्द पुष्पों से	**मनोज्ञकथः**	६. सुन्दरलीला वाले श्रीकृष्ण
शशाङ्करम्ये।	१३. चन्द्रमा से रमणीय	**कदाचित् ॥**	८. कभी

श्लोकार्थ—बजते हुये पैरों के नूपुर वाली रासलीला की गोष्ठी में हम लोगों के द्वारा गायी गई सुन्दर लीला वाले श्रीकृष्ण क्या कभी उन रात्रियों का स्मरण करते हैं। जिनमें उस समय कुमुद और कुन्द पुष्पों से तथा चन्द्रमा से रमणीय वृन्दावन में प्रियाओं के साथ रमण किया था ॥

चतुःचत्वारिंशः श्लोकः

अप्येष्यतीह दाशार्हस्तप्ताः स्वकृतया शुचा ।
सञ्जीवयन् नु नो गात्रैर्यथेन्द्रो वनमम्बुदैः ॥४४॥

पदच्छेद— अपि एष्यति इह दाशार्हः तप्ताः स्वकृतया शुचा ।
सञ्जीवयन् नु नः गात्रैः यथाइन्द्रः वनम् अम्बुदैः ॥

शब्दार्थ—

अपि	१२.	क्या	सञ्जीवयन्	११.	जीवन दान देने के लिये
एष्यति	१४.	आवेंगे	नु नः	९.	हमें (अपने)
इह	१३.	यहाँ	गात्रैः	१०.	अङ्गों के स्पर्श से
दाशार्हः	१.	हे उद्धव जी !	यथा	५.	समान (श्रीकृष्ण)
तप्ताः	८.	तपी हुई	इन्द्रः	४.	इन्द्र के
स्वकृतया	६.	अपने किये हुये	वनम्	२.	वन के
शुचा ।	७.	शोक से	अम्बुजैः ॥	३.	मेघों से हरा भरा करने वाले

श्लोकार्थ—हे उद्धव जी ! वन के मेघों से हरा-भरा करने वाले इन्द्र के समान श्रीकष्ण अपने किये हुये शोक से तपी हुई हमें अपने अङ्गों के स्पर्श से जीवन दान देने के लिये यहाँ कब आवेंगे ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

कस्मात् कृष्ण इहायाति प्राप्तराज्यो हताहितः ।
नरेन्द्रकन्या उद्वाह्य प्रीतः सर्वसुहृद्वृतः ॥४५॥

पदच्छेद— कस्मात् कृष्णः इह आयाति प्राप्त राज्यः हत अहितः ।
नरेन्द्रकन्याः उद्वाह्य प्रीतः सर्व सुहृद् वृतः ॥

शब्दार्थ—

कस्मात्	१३.	क्यों	नरेन्द्र	५.	राजाओं की
कृष्णः इह	१२.	श्रीकृष्ण यहाँ	कन्याः	६.	कुमारियों से
आयाति	१४.	आयेंगे ?	उद्वाह्य	७.	विवाह करके
प्राप्त	४.	पाकर	प्रीतः	८.	प्रसन्न (एवम्)
राज्यः	३.	राज्य	सर्व	९.	सभी
हत	२.	मार कर	सुहृत्	१०.	मित्रों से
अहितः ।	१.	शत्रुओं को	वृतः ॥	११.	घिरे हुये

श्लोकार्थ—शत्रुओं को मार कर राज्य पाकर राजाओं की कुमारियों से विवाह करके प्रसन्न एवम् मित्रों से घिरे हुये श्रीकृष्ण यहाँ क्यों आयेंगे ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

क्रिमस्माभिर्वनौकोभिरन्याभिर्वा महात्मनः ।
श्रीपतेराप्तकामस्य क्रियेतार्थः कृतात्मनः ॥४६॥

पदच्छेद— किम् अस्माभिः वनौकोभिः अन्याभिः वा महात्मनः ।
श्रीपतेः आप्तकामस्य क्रियेत अर्थः कृत आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

किम्	१०.	कौन सा	श्रीपतेः	९.	लक्ष्मी पति (भगवान् का)
अस्माभिः	१.	हम	आप्त	६.	पूर्ण
वनौकोभिः	२.	वनवासिनी (ग्वालिनियों)	कामस्य	७.	कामना वाले
अन्याभिः	४.	दूसरी (राजकन्याओं से)	क्रियेत	१२.	सिद्ध होगा
वा	३.	अथवा	अर्थः	११.	काम
महात्मनः ।	५.	महात्मा श्रीकृष्ण	कृत आत्मनः ।	८.	कृतकृत्य

श्लोकार्थ—हम वनवासिनी ग्वालिनियों से अथवा दूसरी राजकन्याओं से महात्मा, पूर्ण कामना वाले, कृतकृत्य, लक्ष्मीपति भगवान् का कौन सा काम सिद्ध होगा ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

परं सौख्यं हि नैराश्यं स्वैरिण्यप्याह पिङ्गला ।
तज्जानतीनां नः कृष्णे तथाप्याशा दुरत्यया ॥४७॥

पदच्छेद— परम् सौख्यम् हि नैराश्यम् स्वैरिणी अपि आह पिङ्गला ।
तत् जानतीनाम् नः कृष्णे तथापि आशा दुरत्यया ॥

शब्दार्थ—

परम्	६.	परम	तत्	८.	यह
सौख्यम्	७.	सुख है	जानतीनाम्	९.	जानते हुये
हि नैराश्यम्	५.	निराशा ही	नः	११.	हमारी
स्वैरिणी	१.	वेश्या	कृष्णे	१२.	कृष्ण के प्रति
अपि	३.	भी	तथापि	१०.	भी
आह	४.	कहा है कि	आशा	१३.	आशा
पिङ्गला ।	२.	पिङ्गला ने	दुरत्यया ॥	१४.	नहीं छूटती है

श्लोकार्थ—वेश्या पिङ्गलाने भी कहा है कि निराशा ही परम सुख है। यह जानते हुये भी हमारी श्रीकृष्ण के प्रति आशा नहीं छूटती है ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

क उत्सहेत सन्त्यक्तुमुत्तमश्लोकसंविदम् ।
अनिच्छतोऽपि यस्य श्रीरङ्गान्न च्यवते क्वचित् ।।४८।।

पदच्छेद— कः उत्सहेत सन्त्यक्तुम् उत्तम श्लोक संविदम् ।
अनिच्छतः अपि यस्य श्रीःअङ्गात् न च्यवते क्वचित् ।।

शब्दार्थ—

कः	४.	कौन	अनिच्छतः	७.	न चाहते हुये
उत्सहेत	५.	साहस करेगा	अपि	८.	भी
सन्त्यक्तुम्	३.	छोड़ने का	यस्य	६.	जिनके
उत्तम श्लोक	१	उत्तम श्लोक भगवान् की	श्रीःअङ्गात्	९.	लक्ष्मी अङ्ग-सङ्ग
संविदम् ।	२.	प्रेम भरी बातों को	न च्यवते	११.	नहीं छोड़ती हैं
			क्वचित् ।।	१०.	कहीं

श्लोकार्थ—उत्तम श्लोक भगवान् की प्रेम भरी बातों को छोड़ने का कौन साहस करेगा । जिनके न चाहने पर भी लक्ष्मी अङ्ग-सङ्ग कहीं नहीं छोड़ती हैं ।।

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

सरिच्छैलवनोद्देशा गावो वेणुरवा इमे ।
सङ्कर्षणसहायेन कृष्णेनाचरिताः प्रभो ।।४९।।

पदच्छेद— सरित् शैल वन उद्देशाः गावः वेणुरवाः इमे ।
सङ्कर्षण सहायेन कृष्णेन आचरिताः प्रभो ।।

शब्दार्थ—

सरित्-शैल	३.	नदी-पर्वत	सङ्कर्षण	७.	बलराम जी के
वन उद्देशाः	४.	वन के प्रदेश	सहायेन	८.	साथ
गावः	५.	गौएँ और	कृष्णेन	९.	श्रीकृष्ण ने (जिनका)
वेणुरवाः	६.	वंशी के शब्द हैं	आचरिताः	१०.	सेवन किया था
इमे ।	२.	ये वे ही	प्रभो ।।	१.	हे उद्धव जी !

श्लोकार्थ- हे उद्धव जी ! ये वे हो नदी, पर्वत, वन के प्रदेश, गौएँ और बंशी के शब्द हैं । बलराम जी के साथ श्रीकृष्ण ने जिनका सेवन किया था ।।

पञ्चाशः श्लोकः

पुनः पुनः स्मारयन्ति नन्दगोपसुतं बत ।
श्रीनिकेतैस्तत्पदकैर्विस्मर्तुं नैव शक्नुमः ॥५०॥

पदच्छेद— पुनः पुनः स्मारयन्ति नन्दगोप सुतम् बत ।
श्रीनिकेतैः तत् पदकैः विस्मर्तुम् न एव शक्नुमः ॥

शब्दार्थ—

पुनः पुनः	६.	बार-बार	श्रीनिकेतैः	२.	शोभाधाम
स्मारयन्ति	७.	स्मरण कराते हैं	तत् पदकैः	३.	उनके चरण चिह्नों से युक्त ये सब
नन्दगोप	४.	हमें नन्दगोप के	विस्मर्तुम्	८.	उन्हें हम भूल
सुतम्	५.	पुत्र श्रीकृष्ण का	न एव	६.	नहीं
बत ।	१.	आनन्द की बात है कि	शक्नुमः ॥	१०.	सकती हैं

श्लोकार्थ आनन्द की बात है कि शोभाधाम उनके चरण चिह्नों से युक्त ये सब हमें नन्दगोप के पुत्र श्रीकृष्ण का बार-बार स्मरण कराते हैं । उन्हें हम भूल नहीं सकती हैं ॥

एकपञ्चाशः श्लोकः

गत्या ललितयोदारहासलीलावलोकनैः ।
माध्व्या गिरा हृतधियः कथं तं विस्मरामहे ॥५१॥

पदच्छेद— गत्या ललितया उदार हास लीला अवलोकनैः ।
माध्व्या गिरा हृतधियः कथम् तम् विस्मरामहे ॥

शब्दार्थ—

गत्या	२.	चाल	माध्व्या	७.	मधुमयी
ललितया	१.	उनकी सुन्दर	गिरा	८.	वाणी ने (हमारा)
उदार	३.	उन्मुक्त	हृतधियः	६.	चित्त चुरा लिया है
हास	४.	हंसी	कथम् तम्	१०.	कैसे उन्हें
लीला	५.	विलास पूर्ण	विस्मरामहे ॥	११	हम भूलें
अवलोकनैः ।	६.	चितवन और			

श्लोकार्थ—उनकी सुन्दर चाल, उन्मुक्त हंसी, विलास पूर्ण चितवन, मधुमयी वाणी ने हमारा चित्त चुरा लिया है । कैसे उन्हें हम भूलें ? ॥

द्विपञ्चाशः श्लोकः

हे नाथ हे रमानाथ व्रजनाथार्तिनाशन ।
मग्नमुद्धर गोविन्द गोकुलं वृजिनार्णवात् ॥५२॥

पदच्छेद-- हे नाथ हे रमानाथ व्रजनाथ आर्ति नाशन ।
मग्नम् उद्धर गोविन्द गोकुलम् वृजिन अर्णवात् ॥

शब्दार्थ—

हे नाथ	१.	हे नाथ !	मग्नम्	९.	डूबे हुये
हे रमानाथ	२.	हे रमानाथ !	उद्धर	११.	बचाइये
व्रजनाथ	३.	हे व्रज के स्वामी	गोविन्द	६.	हे गोविन्द !
आर्ति	४.	हे पीडा को	गोकुलम्	१०.	गोकुल को
नाशन ।	५.	मिटाने वाले !	वृजिन	७.	दुःख के
			अर्णवात् ॥	८.	सागर से

श्लोकार्थ— हे नाथ! हे रमानाथ ! हे व्रज के स्वामी ! हे पीड़ा को मिटाने वाले ! हे गोविन्द ! दुःख के सागर से डूबे हुये गोकुल को बचाइये ॥

त्रिपञ्चाशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—ततस्ता कृष्णसन्देशैर्व्यपेतविरहज्वराः ।
उद्धवं पूजयाचक्रुर्ज्ञात्वाऽऽत्मानमधोक्षजम् ॥५३॥

पदच्छेद— ततः ताः कृष्ण सन्देशैः व्यपेत विरह ज्वराः ।
उद्धवम् पूजयाम् चक्रुः ज्ञात्वा आत्मानम् अधोक्षजम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	उद्धवम्	१०.	उद्धव की
ताः	६.	वे गोपियाँ	पूजयाम्	११.	पूजा
कृष्ण	२.	श्रीकृष्ण के	चक्रुः	१२.	करने लगीं
सन्देशैः	३.	सन्देश से	ज्ञात्वा	९.	समझ कर
व्यपेत	४.	मिटी हुई	आत्मानम्	८.	(अपना) आत्मा
विरह ज्वराः ।	५.	वियोग जनित व्यथा वाली	अधोक्षजम् ॥	७.	श्रीकृष्ण को

श्लोकार्थ—तदनन्तर श्रीकृष्ण के सन्देश से मिटी हुई वियोग जनित व्यथा वाली वे गोपियाँ श्रीकृष्ण को अपना आत्मा समझ कर उद्धव जी की पूजा करने लगीं ॥

चतुःपञ्चाशः श्लोकः

उवास कतिचिन्मासान् गोपीनां विनुदञ्छुचः ।
कृष्णलीलाकथां गायन् रमयामास गोकुलम् ॥५४॥

पदच्छेद— उवास कतिचित् मासान् गोपीनाथ विनुदन् शुचः ।
कृष्ण लीला कथाम् गायन् रमयामास गोकुलम् ॥

शब्दार्थ—

उवास	६.	निवास किया	कृष्ण	७.	श्रीकृष्ण की
कतिचित्	१.	उद्धव ने कई	लीला	८.	लीला सम्बन्धि
मासान्	२.	महीनों तक	कथाम्	९.	कथा का
गोपीनाथ	३.	गोपियों के	गायन्	१०.	गायन करते हुये
विनुदन्	५.	मिटाते हुये (वहीं)	रमयामास	१२.	आनन्दित किया
शुचः ।	४.	शोक को	गोकुलम् ॥	११.	व्रज वासियों को

श्लोकार्थ—उद्धव ने कई महीनों तक गोपियों के शोक को मिटाते हुये वहीं निवास किया । श्रीकृष्ण की लीला सम्बन्धी कथा का गायन करते हुये व्रजवासियों को आनन्दित किया ॥

पञ्चपञ्चाशः श्लोकः

यावन्त्यहानि नन्दस्य व्रजेऽवात्सीत् स उद्धवः ।
व्रजौकसां क्षणप्रायाण्यासन् कृष्णस्य वार्तया ॥५५॥

पदच्छेद— यावन्ति अहानि नन्दस्य व्रजे अवात्सीत् सः उद्धवः ।
व्रजौकसाम् क्षण प्रायाणि आसन् कृष्णस्य वार्तया ॥

शब्दार्थ—

यावन्ति	४.	जितने	व्रजौकसाम्	७.	व्रजवासियों को
अहानि	५.	दिन	क्षण	१०.	एक क्षण
नन्दस्य व्रजे	३.	नन्द के व्रज में	प्रायाणि	११.	जैसे
अवात्सीत्	६.	रहे (उतने दिन)	आसन्	१२.	मालूम हुये
सः	१.	वे	कृष्णस्य	८.	श्रीकृष्ण की
उद्धवः ।	२.	उद्धव	वार्तया ॥	९.	चर्चा होते रहने के कारण

श्लोकार्थ—वे उद्धव नन्द के व्रज में जितने दिन रहे, उतने दिन व्रजवासियों को कृष्ण की चर्चा होते रहने के कारण एक क्षण जैसे मालूम हुये ॥

षट्पञ्चाशः श्लोकः

सरिद्वनगिरिद्रोणीवीक्षन् कुसुमितान् द्रुमान् ।
कृष्णं संस्मारयन् रेमे हरिदासो व्रजौकसाम् ॥५६॥

पदच्छेद— सरित् वनगिरि द्रोणीः वीक्षन कुसुमितान् द्रुमान् ।
कृष्णम् संस्मारयन् रेमे हरिदासः व्रज ओकसाम् ॥

शब्दार्थ—

सरित्	१.	नदी	कृष्णम्	१०.	श्रीकृष्ण का
वनगिरि	२.	वन, पर्वत	संस्मारयन्	११.	स्मरण दिलाते हुये
द्रोणीः	३.	घाटियों तथा	रेमे	१२.	विहार करने लगे
वीक्षन्	६.	देखते हुये	हरिदासः	७.	भगवान् के भक्त उद्धव जी
कुसुमितान्	४.	फूलों से लदे	व्रज	८.	व्रज
द्रुमान् ।	५.	वृक्षों को	ओकसाम् ॥	६.	वासियों को

श्लोकार्थ—नदी, वन, पर्वत, घाटियों तथा फूलों से लदे वृक्षों को देखते हुये भगवान् के भक्त उद्धव जी व्रजवासियों को श्रीकृष्ण का स्मरण दिलाते हुये विहार करने लगे ॥

सप्तपञ्चाशः श्लोकः

दृष्ट्वैवमादि गोपीनां कृष्णावेशात्मविक्लवम् ।
उद्धवः परमप्रीतस्ता नमस्यन्निदं जगौ ॥५७॥

पदच्छेद— दृष्ट्वा एवम् आदि गोपीनाम् कृष्ण आवेश आत्मविक्लवम् ।
उद्धवः परम प्रीतः ताः नमस्यन् इदम् जगौ ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	७.	देख कर	उद्धवः	८.	उद्धव जी
एवम्	३.	इस प्रकार की	परम प्रीतः	६.	अत्यन्त आनन्दित होकर
आदि	६.	आदि	ताः	१०.	उन्हें
गोपीनाम्	१.	गोपियों की	नमस्यन्	११.	नमस्कार करते हुये
कृष्ण	२.	श्रीकृष्ण में	इदम्	१२.	यह
आवेश आत्म	४.	तन्मयता और प्रेम	जगौ ॥	१३.	कहने लगे
विक्लवम् ।	५.	विकलता			

श्लोकार्थ—गोपियों की श्रीकृष्ण में इस प्रकार की तन्मयता और प्रेम विकलता आदि देख कर उद्धव जी अत्यन्त आनन्दित होकर नमस्कार करते हुये यह कहने लगे ॥

अष्टपञ्चाशः श्लोकः

एताः परं तनुभृतो भुवि गोपवध्वो गोविन्द एव निखिलात्मनि रूढभावाः।
वाञ्छन्ति यद् भवभियो मुनयो वयं च किं ब्रह्मजन्मभिरनन्तकथारसस्य ॥५८

पदच्छेद—एताः परम् तनुभृतः भुवि गोपवध्वः गोविन्द एव निखिल आत्मनि रुढभावाः।
वाञ्छन्ति यत् भवभियः मुनयः वयम् च किम् ब्रह्मजन्मभि अनन्त कथा रसस्य ॥

शब्दार्थ—एताः	४. इन	वाञ्छन्ति	१४. चाहते हैं
परम	९. श्रेष्ठ है	यत्	१०. क्योंकि उनके महाभावको
तनुभृतः	७. शरीर धारण करना	भवभियः	११. संसार के भयसे डरते हुये
भुवि	८. पृथ्वी पर सबसे	मुनयः	१२. मुनि
गोपवध्वः	५. गोप स्त्रियों का	वयम् च	१३. और हम भी
गोविन्दे	२. श्रीकृष्ण में	किम्	१८. समय ही क्या है
एव	६. ही	ब्रह्मजन्मभिः	१७. ब्रह्माकेजन्ममहाकल्पोंतकका
निखिलआत्मनि	१. सबके आत्मा	अनन्तकथा	१५. श्रीकृष्ण की कथा में
रूढभावाः।	३. भावबाँधे हुये	रसस्य ॥	१६. रस पाने वालों के लिये

श्लोकार्थ—सबके आत्मा श्रीकृष्ण में भाव बाँधे हुये इन गोप स्त्रियों का ही शरीर धारण करना पृथ्वी पर सबसे श्रेष्ठ हैं। क्योंकि उनके महाभाव को संसार के भय से डरे हुये मुनि और हम भी चाहते हैं। श्रीकृष्ण की कथा में रस पाने वालों के लिये ब्रह्मा के जन्म महाकल्पों तक का समय ही क्या है ॥

एकोनषष्टितमः श्लोकः

क्वेमाः स्त्रियो वनचरीर्व्यभिचारदुष्टाः कृष्णे क्व चैष परमात्मनि रूढभावः
नन्वीश्वरोऽनुभजतोऽविदुषोऽपि साक्षाच्छ्रेयस्तनोत्यगदराज इवोपयुक्तः ॥५९

पदच्छेद—क्व इमाः स्त्रियः वनचरीः व्यभिचार दुष्टाः कृष्णे क्व च एषः परम आत्मनि रुढभावः।
ननुईश्वरः अनुभजतः अविदुषः अपि साक्षात् श्रेयः तनोति अगदराजः इव उपयुक्तः ॥

शब्दार्थ—क्वाइमाः	१. कहाँ ये	ननुईश्वरः	८. अहो ! ईश्वर
स्त्रियः वनचरीः	३. वनवासी स्त्रियाँ और	अनुभजतः	९. भजन करने वाले
व्यभिचार दुष्टाः	२. व्यभिचार से दूषित	अविदुषः अपि	१०. अनजान मूर्खका भी
कृष्णे	६. कृष्ण में (इनका)	साक्षात् श्रेयः	११. स्वयं कल्याण
क्व च एषः	४. कहाँ यह	तनोति	१२. कर देते हैं
परम आत्मनि	५. परमात्मा	अगदराजइव	१३. जैसे अमृत (अनजान में भी पी लेने से)
रूढभावः।	७. महाभाव	उपयुक्तः ॥	१४. कल्याण करता है

श्लोकार्थ—कहाँ ये व्यभिचार से दूषित वनवासी स्त्रियाँ और कहाँ यह परमात्मा, कृष्ण में इनका महाभाव। अहो ! ईश्वर भजन करने वाले अनजान मूर्ख का भी स्वयं कल्याण कर देते हैं। जैसे अमृत अनजान में भी पी लेने पर से कल्याण ही करता है ॥

षष्टितमः श्लोकः

नायं श्रियोऽङ्ग उ नितान्तरतेः प्रसादः स्वर्योषितां नलिनगन्धरुचां कुतोऽन्याः ।
रासोत्सवेऽस्य भुजदण्डगृहीतकण्ठलब्धाशिषां य उदगाद् व्रजवल्लवीनाम् ॥६०

पदच्छेद—न अयम् श्रियः अङ्ग उ नितान्तरतेः प्रसादः स्वर्योषिताम् नलिन गन्धरुचाम् कुतः अन्याः ।
रासोत्सवे अस्य भुजदण्ड गृहीत कण्ठ लब्ध आशिषाम् यः उदगात् व्रज वल्लवीनाम् ॥

शब्दार्थ—

न अयम्	१३.	वह नहीं मिला	रासोत्सवेअस्य	१.	रासोत्सव में इन भगवान् की
श्रियः	१२.	लक्ष्मी को भी	भुजदण्ड	२.	भुजाओं को
अङ्ग उ	११.	अङ्गसंगिनी	गृहीतकण्ठ	३.	गले में डालकर
नितान्तरतेःप्रसादः	८.	परमरति का प्रसाद	लब्ध	५.	पूर्ण करने वाली
स्वर्योषिताम्	१०.	देवाङ्गनाओं को तथा	आशिषाम्	४.	मनोरथ को
नलिनगन्धरुचाम्	९.	कमल की सी गन्ध और कान्ति वाली	यःउद्गात्	७.	जो सुख प्राप्त हुआ वह
कुतः अन्याः ।	१४.	दूसरी स्त्रियों की तो बात ही क्या है	व्रजवल्लवीनाम् ॥	६.	व्रजाङ्गनाओं को

श्लोकार्थ—रासोत्सव में भगवान् की भुजाओं को गले में डालकर मनोरथ को पूर्ण करने वाली व्रजाङ्गनाओं को जो सुख प्राप्त हुआ, वह परमरति का प्रसाद कमल की सी गंध और कान्ति वाली देवाङ्गनाओं तथा अङ्ग संगिनी लक्ष्मी को भी नहीं मिला, दूसरी स्त्रियों की तो बात ही क्या है ॥

एकषष्टितमः श्लोकः

आसामहो चरणरेणुजुषामहं स्यां वृन्दावने किमपि गुल्मलतौषधीनाम् ।
या दुस्त्यजं स्वजनमार्यपथं च हित्वा भेजुर्मुकुन्दपदवीं श्रुतिभिर्विमृग्याम् ॥६१

पदच्छेद—आसाम्अहो चरणरेणु जुषाम् अहम् स्याम् वृन्दावने किम् अपि गुल्मलता ओषधीनाम् ।
याः दुस्त्यजम् स्वजन आर्य पथम् च हित्वा भेजुः मुकुन्द पदवीम् श्रुतिभिः विमृग्याम् ॥

शब्दार्थ—

आसाम् अहो	१	अहो इन व्रजाङ्गनाओं की	याः दुस्त्यजम्	९.	जिन्होंनेकठिनाईसेछोड़नेयोग्य
चरणरेणु	२.	चरण धूली का	स्वजनम्	१०.	सगेसम्बन्धियों
जुषाम्	३.	सेवन करने वाली	आर्यपथम् च	११.	और आर्यों के पथ का
अहम् स्याम्	८.	मैं हो जाऊँ	हित्वा	१२.	परित्याग करके
वृन्दावने	४.	वृन्दावन में	भेजुः	१६.	प्राप्त किया है
किमपि	७.	कुछ भी	मुकुन्दपदवीम्	१५.	भगवान् को पदवी परम प्रेम को
गुल्मलता	५.	झाड़ी-लता	स्मृतिभिः	१३.	वेदों द्वारा
ओषधीनाम् ।	६.	वनोषधियों में से	विमृग्याम् ॥	१४.	ढूंढ़ने योग्य

श्लोकार्थ—अहो इन व्रजाङ्गनाओं की चरण धूली का सेवन करने वाली वृन्दावन में झाड़ी लता वनौषधियों में से कुछ भी मैं हो जाऊँ । जिन्होंने कठिनाई से छोड़ने योग्य सगे सम्बन्धियों और आर्यों के पथ का परित्याग करके वेदों द्वारा ढूंढ़ने योग्य भगवान् की पदवी परम प्रेम को प्राप्त किया है ।

द्विषष्टितमः श्लोकः

या वै श्रियार्चितमजादिभिराप्तकामैर्योगेश्वरैरपि यदात्मनि रासगोष्ठ्याम् ।
कृष्णस्य तद् भगवतश्चरणारविन्दं न्यस्तं स्तनेषु विजहुः परिरभ्य तापम् ॥६२॥

पदच्छेद—

याः वै श्रिया अर्चितम् अजादिभिः आप्तकामैः योगेश्वरैः अपि यत् आत्मनि रास गोष्ठ्याम् ।
कृष्णस्य तत् भगवतः चरणारविन्दम् न्यस्तम् स्तनेषु विजहुः परिरभ्य तापम् ॥

शब्दार्थ—

याः वै	१४. जिन्होंने निश्चित रूप से	कृष्णस्य	६. श्रीकृष्ण के जिस
श्रिया	१. लक्ष्मी और	तत् भगवतः	५. भगवान् के उस
अर्चिताम्	९. पूजते रहते हैं उसको	चरणारविन्दम्	७. चरणारविन्द को
आदिभिः	२. ब्रह्मा आदि	न्यस्तम्	१२. रख कर (और उनका)
आप्तकामैः	३. पूर्ण काम	स्तनेषु	११. स्तनों पर
योगेश्वरैः अपि	४. योगेश्वर भी	विजहुः	१६. शान्त किया
यत् आत्मनि	८. अपने हृदय में रखकर	परिरभ्य	१३. आलिङ्गन करके
रास गोष्ठ्याम् ।	१०. रासलीला में अपने	तापम् ॥	१५. अपनी विरह व्यथा को

श्लोकार्थ—लक्ष्मी और ब्रह्मा आदि पूर्णकाम योगेश्वर भी भगवान् श्रीकृष्ण के जिस चरणारविन्द को अपने हृदय में रख कर पूजते रहते हैं, उन चरण को रासलीला में अपने स्तनों पर रख कर और उनका आलिङ्गन करके जिन्होंने निश्चित रूप से अपनी विरह व्यथा को शान्त किया ॥

त्रिषष्टितमः श्लोकः

वन्दे नन्दव्रजस्त्रीणां पादरेणुमभीक्ष्णशः ।
यासां हरिकथोद्गीतं पुनाति भुवनत्रयम् ॥६३॥

पदच्छेद— वन्दे नन्द व्रज स्त्रीणाम् पादरेणुम् अभीक्ष्णशः ।
यासाम् हरिकथा उद्गीतम् पुनाति भुवन त्रयम् ॥

शब्दार्थ—

वन्दे	६. प्रणाम करता हूँ	यासाम्	७. जिनकी
नन्द	१. नन्द के	हरिकथाम्	८. श्रीकृष्ण सम्बन्धी कथा का
व्रज	२. व्रज की	उद्गीतम्	९. गीत
स्त्रीणाम्	३. स्त्रियों की	पुनाति	१२. पवित्र करता है
पादरेणुम्	४. चरणधूली को	भुवन	११. लोकों को
अभीक्ष्णशः ।	५. मैं बार-बार	त्रयम् ॥	१०. तीनों

श्लोकार्थ—नन्द के व्रज की स्त्रियों की चरण धूली को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ। जिनकी श्रीकृष्ण सम्बन्धी कथा का गीत तीनों लोकों को पवित्र करता है ॥

चतुःषष्टितमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— अथ गोपीरनुज्ञाप्य यशोदां नन्दमेव च ।
गोपानामन्त्र्य दाशार्हो यास्यन्नारुरुहे रथम् ॥६४॥

पदच्छेद— अथ गोपीः अनुज्ञाप्य यशोदाम् नन्दम् एव च ।
गोपान् आमन्त्र्य दाशार्हः यास्यन् आरुरुहे रथम् ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	गोपान्	७.	ग्वाल-वालों से
गोपीः	२.	गोपियों	आमन्त्र्य	८.	बिदा लेकर
अनुज्ञाप्य	५.	आज्ञा लेकर	दाशार्हः	६.	उद्धव जी
यशोदाम्	४.	यशोदा से	यास्यन्	१०.	यात्रा करने के लिये
नन्दम्	३.	नन्द और	आरुरुहे	१२.	सवार हुये
एव च ।	६.	और	रथम् ॥	११.	रथ पर

श्लोकार्थ—तदनन्तर गोपियों, नन्द और यशोदा से आज्ञा लेकर और ग्वाल-वालों से बिदा लेकर उद्धव जी यात्रा करने के लिये रथ पर सवार हुये ॥

पञ्चषष्टितमः श्लोकः

तं निर्गतं समासाद्य नानोपायनपाणयः ।
नन्दादयोऽनुरागेण प्रावोचन्नश्रुलोचनाः ॥६५॥

पदच्छेद— तम् निर्गतम् समासाद्य नाना उपायन पाणयः ।
नन्द आदयः अनुरागेण प्रावोचत् अश्रुलोचनाः ॥

शब्दार्थ—

तम्	२.	उनके	नन्द	७.	नन्द
निर्गतम्	१.	व्रज से बाहर	आदयः	८.	आदि ने
समासाद्य	३.	पास जाकर	अनुरागेण	११.	प्रेम पूर्वक
नाना	५.	बहुत सी	प्रावोचत्	१२.	कहा
उपायन	६.	भेंट की सामग्री लिये हुये	अश्रु	१०.	आंसू भर कर
पाणयः ।	४.	हाथों में	लोचनाः ॥	६.	आंखों में

श्लोकार्थ—व्रज से बाहर हाँथों में बहुत सी भेंट की सामग्री लिये हुये नन्द आदि ने आँखों में आँसू भर कर प्रेम पूर्वक कहा ॥

षट्षष्टितमः श्लोकः

मनसो वृत्तयो नः स्युः कृष्णपादाम्बुजाश्रयाः ।
वाचोऽभिधायिनीर्नाम्नां कायस्तत्प्रह्वणादिषु ॥६६॥

पदच्छेद — मनसः वृत्तयः नः स्युः कृष्ण पाद अम्बुज आश्रयाः ।
वाचः अभिधायिनीः नाम्नाम् कायः तत् प्रह्वण आदिषु ॥

शब्दार्थ—

मनसः	२.	मन की	वाचः	८.	वाणी
वृत्तयः	३.	वृत्तियाँ	अभिधायिनीः	१०.	उच्चारण करती रहे
नः	१.	हमारे	नाम्नाम्	९.	उन्हीं के नामों का
स्युः	७.	हों	कायः	११	और शरीर
कृष्ण	४.	श्रीकृष्ण के	तत्	१२	उनकी
पाद अम्बुज	५.	चरण कमलों के	प्रह्वण	१३.	वन्दना
आश्रयः ।	६.	आश्रय	आश्रयः ।।	१४.	आदि में लगा रहे

श्लोकार्थ—हमारे मन की वृत्तियाँ श्रीकृष्ण के चरण कमलों के आश्रय हों। वाणी उन्हीं के नामों का उच्चारण करती रहे। और शरीर उनकी वन्दना आदि में लगा रहे।

सप्तषष्टितमः श्लोकः

कर्मभिर्भ्राम्यमाणानां यत्र क्वापीश्वरेच्छया ।
मङ्गलाचरितैर्दानै रतिर्नः कृष्ण ईश्वरे ॥६७॥

पदच्छेद— कर्मभिः भ्राम्य माणानाम् यत्र क्व अपि ईश्वर इच्छया ।
मङ्गल आचरितैः दानैः रतिः नः कृष्णे ईश्वरे ॥

शब्दार्थ—

कर्मभिः	१.	कर्मों के अनुसार	मङ्गल	८.	शुभ
भ्राम्य	२.	चक्कर	आचरितैः	९.	आचरणों से
माणानाम्	३.	काटते हुये हम	दानैः	१०.	दानों से
यत्र	६.	जहाँ	रतिः	१४.	प्रीति हो
क्व अपि	७.	कहीं भी (जन्म लें) वहाँ	नः	११.	हमारी
ईश्वर	४.	ईश्वर की	कृष्णे	१३.	श्रीकृष्ण में
इच्छया ।	५.	इच्छा से	ईश्वरे ।।	१२.	भगवान्

श्लोकार्थ—कर्मों के अनुसार चक्कर काटते हुये हम ईश्वर की इच्छा से जहाँ कहीं भी जन्म लें। वहाँ शुभ आचरणों तथा दानों से हमारी भगवान् श्रीकृष्ण में प्रीति हो ॥

अष्टषष्टितमः श्लोकः

एवं सभाजितो गोपैः कृष्णभक्त्या नराधिप ।
उद्धवः पुनरागच्छन्मथुरां कृष्णपालिताम् ॥६८॥

पदच्छेद— एवम् सभाजितः गोपैः कृष्ण भक्त्या नराधिप ।
उद्धवः पुनः आगच्छत् मथुराम् कृष्ण पालिताम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	उद्धवः	७.	उद्धव जी
सभाजितः	६.	सम्मानित होकर	पुनः	११.	पुनः
गोपैः	३.	गोपों से	आगच्छत्	१२.	आ गये
कृष्ण	४.	कृष्ण	मथुराम्	१०.	मथुरा पुरी में
भक्त्या	५.	भक्ति के द्वारा	कृष्ण	८.	श्रीकृष्ण के द्वारा
नराधिप ।	१.	हे राजन् !	पालिताम् ।	९.	सुरक्षित

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस प्रकार गोपों से कृष्ण भक्ति के द्वारा सम्मानित होकर उद्धव जी श्रीकृष्ण के द्वारा सुरक्षित मथुरा पुरी में पुनः आ गये ॥

एकोनसप्ततितमः श्लोकः

कृष्णाय प्रणिपत्याह भक्त्युद्रेकं व्रजौकसाम् ।
वसुदेवाय रामाय राज्ञे चोपायनान्यदात् ॥६९॥

पदच्छेद— कृष्णाय प्रणिपत्य आह भक्ति उद्रेकम् व्रज ओकसाम् ।
वसुदेवाय रामाय राज्ञे च उपायनानि अदात् ॥

शब्दार्थ—

कृष्णाय	१.	श्रीकृष्ण	वसुदेवाय	८.	वसुदेव
प्रणिपत्य	२.	प्रणाम करके	रामाय	९.	बलराम
आह	७.	बताई (तथा)	राज्ञे	११.	राजा उग्रसेन को
भक्ति	५.	भक्ति की	च	१०.	और
उद्रेकम्	६.	अधिकता	उपायनानि	१२	भेंट की सामग्रियाँ
व्रज	३.	व्रज	अदात् ॥	१३.	दे दीं
ओकसाम् ।	४.	वासियों की			

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण को प्रणाम करके व्रजवासियों की भक्ति की अधिकता बताई तथा श्रीकृष्ण, बलराम और राजा उग्रसेन को भेंट की सामग्रियाँ दे दीं ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
उद्धव प्रतियाने सप्तचत्वारिंशः अध्यायः ॥४७॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

अष्टचत्वारिंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— अथ विज्ञाय भगवान् सर्वात्मा सर्वदर्शनः।
सैरन्ध्र्याः कामतप्तायाः प्रियमिच्छन् गृहं ययौ ॥१॥

पदच्छेद— अथ विज्ञाय भगवान् सर्वात्मा सर्व दर्शनः।
सैरन्ध्र्याः काम तप्तायाः प्रियम् इच्छन् गृहम् ययौ ॥

शब्दार्थ—अथ	१.	तदनन्तर	सैरन्ध्र्याः	८.	कुब्जा की (व्याकुलता)
विज्ञाय	९.	जान कर (उसका)	काम	६.	काम से
भगवान्	५.	भगवान् श्रीकृष्ण	तप्तायाः	७.	संतप्त
सर्वात्मा	२.	सब के आत्मा	प्रियम्	१०.	प्रिय करने की
सर्व	३.	सब कुछ	इच्छन्	११.	इच्छा से
दर्शनः।	४.	देखने वाले	गृहम् ययौ ॥	१२.	उसके घर गये

श्लोकार्थ—तदनन्तर सबके आत्मा, सब कुछ देखने वाले भगवान् श्रीकृष्ण काम से संतप्त कुब्जा की व्याकुलता जान कर उसका प्रिय करने की इच्छा से उसके घर गये ॥

द्वितीयः श्लोकः

महार्होपस्करैराढ्यं कामोपायोपबृंहितम्।
मुक्तादामपताकाभिर्वितानशयनासनैः।
धूपैः सुरभिभिर्दीपैः स्रग्गन्धैरपि मण्डितम् ॥२॥

पदच्छेद— महार्ह उपस्करैः आढ्यम् काम उपाय उपबृंहितम्।
मुक्तादाम पताकाभिः वितान शयन आसनैः।
धूपैः सुरभिभिः दीपैः स्रक् गन्धैः अपि मण्डितम् ॥

शब्दार्थ—महार्ह	१. कुब्जा का घर बहुमूल्य	वितान	८. चंदोवों और
उपस्करैः	२. सामग्रियों से	शयन	९. शय्याओं
आढ्यम्	३. सम्पन्न	आसनैः।	१०. आसनों से
काम उपाय	४. कामोद्दीपक सामग्रियों से	धूपैः सुरभिभिः	११. सुगन्धित धूपों से
बृंहितम्।	५. भरा हुआ था (तथा)	दीपैः स्रक्	१२. दीपों पुष्पहारों (एवम्)
मुक्तादाम	६. मोतियों की झालरों से	गन्धैः अपि	१३. चन्दनादि से भी
पताकाभिः	७. पताकाओं से	मण्डितम् ॥	१४. सुशोभित था

श्लोकार्थ—कुब्जा का घर बहुमूल्य सामग्रियों से सम्पन्न कामोद्दीपक सामग्रियों से भरा हुआ था। तथा मोतियों की झालरों से, पताकाओं से, चंदोवों, शय्याओं और आसनों से सुगन्धित धूपों दीपों, पुष्पहारों एवम् चन्दनादि से भी सुशोभित था ॥

तृतीयः श्लोकः

गृहं तमायान्तमवेक्ष्य साऽऽसनात् सद्यः समुत्थाय हि जातसम्भ्रमा ।
यथोपसङ्गम्य सखीभिरच्युतं सभाजयामास सदासनादिभिः ॥३॥

पदच्छेद— गृहम् तम् अयान्तम् अवेक्ष्यासा आसनात् सद्यः समुत्थाय हि जातसम्भ्रमाः ।
यथा उपसङ्गम्य सखीभिः अच्युतम् सभाजयामास सद् आसन आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

गृहम् तम्	१.	उन्हें अपने घर	यथा	१०.	यथोचित
आयान्तम्	२.	आते हुये	उपसङ्गम्य	११.	अगवानी करके
अवेक्ष्य सा	३.	देख कर वह कुब्जा	सखीभिः	८.	सखियों के साथ
आसनात्	६.	आसन से	अच्युतम्	९.	भगवान् श्रीकृष्ण की
सद्यः	४.	तुरन्त	सभाजयामास	१४.	स्वागत सत्कार किया
समुत्थाय हि	७.	उठ खड़ी हुई (और)	सद् आसन	१२.	उत्तम आसन
जातसम्भ्रमा ।	५.	हड़बड़ा कर	आदिभिः ॥	१३.	आदि से

श्लोकार्थ—उन्हें अपने घर आते हुये देख कर वह कुब्जा तुरन्त हड़बड़ा कर आसन से उठ खड़ी हुई । और सखियों के साथ भगवान् श्रीकृष्ण की यथोचित अगवानी करके उत्तम आसन आदि से स्वागत सत्कार किया ॥

चतुर्थः श्लोकः

तथोद्धवः साधु तयाभिपूजितो न्यषीददुर्व्यामभिमृश्य चासनम् ।
कृष्णोऽपि तूर्णं शयनं महाधनं विवेश लोकाचरितान्यनुव्रतः ॥४॥

पदच्छेद— तथा उद्धवः साधु तया अभिपूजितः न्यषीदत् उर्व्याम् अभिमृश्य च आसनम् ।
कृष्णः अपि तूर्णम् शयनम् महाधनम् विवेश लोक आचरितानि अनुव्रतः ॥

शब्दार्थ—

तथा	१.	उसी प्रकार	कृष्णः अपि	९.	श्रीकृष्ण भी
उद्धवः साधु	३.	उद्धव की भलीभाँति	तूर्णम्	१२.	शीघ्र ही
तया	२.	उसने	शयनम्	१५.	शय्या पर
अभिपूजितः	४.	पूजा की	महाधनम्	१४	बहुमूल्य
न्यषीदत्	८.	बैठ गये	विवेश	१६.	जा बैठे
उर्व्याम्	७.	भूमि पर ही	लोक	११.	लोक के
अभिमृश्य	६.	छूकर	आचरितानि	१२.	आचार का
च आसनम् ।	५.	किन्तु उद्धव आसन को	अनुव्रतः ॥	१३.	अनुकरण करते हुये

श्लोकार्थ—उसी प्रकार उसने उद्धव जी की भली भाँति पूजा की किन्तु उद्धव आसन को छूकर भूमि पर बैठ गये श्रीकृष्ण भी शीघ्र ही लोक के आचार का अनुसरण करते हुये बहुमूल्य शय्या पर जा बैठे ॥

पञ्चमः श्लोकः

सा मञ्जनालेपदुकूलभूषणस्रग्गन्धताम्बूलसुधासवादिभिः ।
प्रसाधितात्मोपससार माधवं सव्रीडलीलोत्स्मितविभ्रमेक्षितैः ॥५॥

पदच्छेद—सा मञ्जन आलेप दुकूल भूषण स्रक् गन्ध ताम्बूल सुधासव आदिभिः ।
प्रसाधित आत्मा उपससार माधवम् सव्रीड लीला उत्स्मित विभ्रम ईक्षितैः ॥

शब्दार्थ—

सा मञ्जन	१.	तब वह कुब्जा स्नान	प्रसाधित आत्मा	८.	अपने को सुसज्जित करके
आलेप	२.	अङ्गराग	उपससार	१४.	पास गई
दुकूलभूषण	३.	वस्त्र आभूषण	माधवम्	१३.	भगवान् श्रीकृष्ण के
स्रक् गन्ध	४.	पुष्पहार गन्ध (इत्रादि)	सव्रीड लीला	९.	लजीली लीलामयी
ताम्बूल	५.	ताम्बूल	उत्स्मित	१०.	मुसकान तथा
सुधासव	६.	सुधासव (चूर्ण विशेष)	विभ्रम	११.	हाव-भाव से
आदिभिः ।	७.	आदि से	ईक्षितैः ॥	१२.	देखती हुई

श्लोकार्थ—तब वह कुब्जा स्नान, अङ्गराग, वस्त्र, आभूषण, पुष्पहार, गन्ध इत्यादि ताम्बूल, सुधासव चूर्ण विशेष आदि से अपने को सुसज्जित करके लजीली लीलामयी मुसकान तथा हाव-भाव से देखती हुई भगवान् श्रीकृष्ण के पास गई ॥

षष्ठः श्लोकः

आहूय कान्तां नवसङ्गमह्रिया विशङ्कितां कङ्कणभूषिते करे ।
प्रगृह्य शय्यामधिवेश्य रामया रेमेऽनुलेपार्पणपुण्यलेशया ॥६॥

पदच्छेद— आहूय कान्ताम् नवसङ्गम ह्रिया विशङ्किताम् कङ्कण भूषिते करे ।
प्रगृह्य शय्याम् अधिवेश्य रामया रेमे अनुलेप अर्पण पुण्य लेशया ॥

शब्दार्थ—

आहूय	५.	बुला कर	प्रगृह्य	८.	पकड़ कर
कान्ताम्	४.	प्रिया को	शय्याम्	९.	शय्या पर
नवसङ्गम	१.	नवीन मिलन के	अधिवेश्य	१०.	बैठा कर
ह्रिया	२.	संकोच से	रामया रेमे	१४.	सुन्दरी के साथ क्रीड़ा करने लगे
विशङ्किताम्	३.	झिझकती हुई	अनुलेप	११.	अंगराग
कङ्कण भूषिते	६.	कङ्कण से सुशोभित उसकी	अर्पण	१२.	समर्पित करने के
करे ।	७.	कलाई	पुण्यलेशया ॥	१३.	पुण्य से सम्बन्धित उस

श्लोकार्थ—नवीन मिलन के संकोच से झिझकती हुई प्रिया को बुलाकर कङ्कण से सुशोभित उसकी कलाई पकड़कर शय्या पर बैठाकर अङ्गराग समर्पित करने के पुण्य से सम्बन्धित उस सुन्दरी के साथ क्रीडा करने लगे ॥

सप्तमः श्लोकः

सानङ्गतप्तकुचयोरुरसस्तथाक्ष्णोर्जिघ्रन्त्यनन्तचरणेन रुजो मृजन्ती ।
दोर्भ्यां स्तनान्तरगतं परिरभ्य कान्तमानन्दमूर्तिमजहादतिदीर्घतापम् ॥७॥

पदच्छेद—सा अनङ्ग तप्त कुचयोः उरसः तथा अक्ष्णोः जिघ्रन्ति अनन्त चरणेन रुजःमृजन्ती ।
दोर्भ्याम् स्तन अन्तर गतम् परिरभ्य कान्तम् आनन्द मूर्तिम् अजहात् अति दीर्घ तापम् ॥

शब्दार्थ—

सा अनङ्ग	४. उसने अपने काम से	दोर्भ्याम्	१. अपनी दोनों भुजाओं से
तप्त कुचयोः	५. तपे हुये स्तन	स्तन अन्तर	११. तथा स्तनों के मध्य
उरसः तथा	६. वक्षः स्थल तथा	गतम्	१२. प्राप्त
अक्ष्णोः	७. नेत्रों पर (रखकर)	परिरभ्य	१५. गाढ़ आलिंगन करके
जिघ्रन्ति	८. सूंघती हुई	कान्तम्	१४. प्रियतम श्रीकृष्ण का
अनन्त	२. भगवान् श्रीकृष्ण के	आनन्द मूर्तिम्	१३ आनन्द मूर्ति
चरणेन	३. चरण कमलों को	अजहात्	१८. मिटा लिया
रुजः	९. अपनी व्याधि को	अतिदीर्घ	१६. बहुत दिनों से बढ़े हुये
मृजन्ती ।	१०. शान्त किया	तापम् ।।	१७. ताप को

श्लोकार्थ—अपनी दोनों भुजाओं से भगवान् श्रीकृष्ण के चरण कमलों को उसने अपने काम से तपे हुये स्तन, वृक्षः स्थल तथा नेत्रों पर रखकर अपनी व्याधि को शान्त किया। तथा स्तनों के मध्य प्राप्त आनन्द मूर्ति प्रियतम श्रीकृष्ण का गाढ़ आलिंगन करके बहुत दिनों से बढ़े हुये ताप को मिटा लिया ॥

अष्टमः श्लोकः

सैवं कैवल्यनाथं तं प्राप्य दुष्प्रापमीश्वरम् ।
अङ्गरागार्पणेनाहो दुर्भगेदमयाचत ॥८॥

पदच्छेद— सा एवम् कैवल्य नाथं तं प्राप्य दुष्प्रापम् ईश्वरम् ।
अङ्गराग अर्पणेन अहो दुर्भगा इदम् अयाचत ॥

शब्दार्थ—

सा	६. उसने	अङ्गराग	२. अङ्गराग
एवम्	४. इस प्रकार	अर्पणेन	३. समर्पण करने के कारण
कैवल्यनाथम्	५. कैवल्य मोक्ष के स्वामी	अहो	१. अहो !
तम्	७. उन	दुर्भगा	११. अभागिन ने
प्राप्य	१०. पाकर (उस)	इदम्	१२. यह वरदान
दुष्प्रापम्	८. दुर्लभ	अयाचत ।।	१३. माँगा
ईश्वरम् ।	९. भगवान् को		

श्लोकार्थ—अहो ! अङ्गराग समर्पण करने के कारण इस प्रकार कैवल्य मोक्ष के स्वामी उसने उन दुर्लभ भगवान् को पाकर उस अभागिन ने यह वरदान माँगा ॥

नवमः श्लोकः

आहोष्यतामिह प्रेष्ठ दिनानि कतिचिन्मया ।
रमस्व नोत्सहे त्यक्तुं सङ्गं तेऽम्बुरुहेक्षण ॥९॥

पदच्छेद— आह उष्यताम् इह प्रेष्ठ दिनानि कतिचित् मया ।
रमस्व न उत्सहे त्यक्तुम् सङ्गम् ते अम्बुरुह ईक्षण ॥

शब्दार्थ—

आह	१.	(वह) बोली	रमस्व	८.	क्रीडा कीजिये
उष्यताम्	७.	रहिये (और)	न उत्सहे	१४.	मैं असमर्थ हूँ
इह	६.	यहाँ	त्यक्तुम्	१३.	छोड़ने में
प्रेष्ठ	२.	हे प्रियतम !	सङ्गम्	१२.	साथ
दिनानि	४.	दिन	ते	११.	आपका
कतिचित्	३.	कुछ	अम्बुरुह	९.	हे कमल
मया ।	५.	मेरे साथ	ईक्षण ॥	१०.	नयन

श्लोकार्थ—वह बोली-हे प्रियतम ! कुछ दिन मेरे साथ यहाँ रहिये । और क्रीडा कीजिये । हे कमल नयन ! आपका साथ छोड़ने में मैं असमर्थ हूँ ॥

दशमः श्लोकः

तस्यै कामवरं दत्त्वा मानयित्वा च मानदः ।
सहोद्धवेन सर्वेशः स्वधामागमदर्चितम् ॥१०॥

पदच्छेद— तस्यै कामवरम् दत्त्वा मानयित्वा च मानदः ।
सह उद्धवेन सर्वेशः स्वधाम अगमत् अर्चितम् ॥

शब्दार्थ—

तस्यै	३.	उसका	सह	९.	साथ
कामवरम्	६.	अभीष्ट वर	उद्धवेन	८.	उद्धव के
दत्त्वा	७.	देकर	सर्वेशः	२.	सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण
मानयित्वा	४.	मान रख कर	स्वधाम	११.	अपने घर
च	५.	और	अगमत्	१२.	चले गये
मानदः ।	१.	मान देने वाले	अर्चितम् ॥	१०.	सर्व पूजित

श्लोकार्थ—मान देने वाले सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण उसका मान रख कर और अभीष्ट वर देकर उद्धव के साथ सर्वपूजित अपने घर चले गये ॥

एकादशः श्लोकः

दुराराध्यं समाराध्य विष्णुं सर्वेश्वरेश्वरम् ।
यो वृणीते मनोग्राह्यमसत्त्वात् कुमनीष्यसौ ॥११॥

पदच्छेद— दुराराध्यम् समाराध्य विष्णुम् सर्वेश्वर ईश्वरम् ।
यः वृणीते मनः ग्राह्यम् असत्त्वात् कुमनीषी असौ ॥

शब्दार्थ—

दुराराध्यम्	३. कठिनाई से (आराधना करने योग्य)		वृणीते	९. माँगता है
समाराध्य	४. आराधना करके		मनः	७. मन
विष्णुम्	५. श्रीकृष्ण की		ग्राह्यम्	८. पसन्द (विषय सुख)
सर्वेश्वर	१. समस्त ईश्वरों के		असत्त्वात्	११. तुच्छ होने के कारण
ईश्वरम् ।	२. ईश्वर तथा		कुमनीषी	१२. दुर्बुद्धि है
यः	६. जो		असौ ॥	१०. वह (उस सुख के)

श्लोकार्थ—समस्त ईश्वरों के ईश्वर तथा कठिनाई से आराधना करने योग्य श्रीकृष्ण को आराधना करके जो मन पसन्द विषय सुख माँगता है। वह सुख के तुच्छ होने के कारण दुर्बुद्धि है ॥

द्वादशः श्लोकः

अक्रूरभवनं कृष्णः सहरामोद्धवः प्रभुः ।
किञ्चिच्चिकीर्षयन् प्रागादक्रूरप्रियकाम्यया ॥१२॥

पदच्छेद— अक्रूर भवनम् कृष्णः सहराम उद्धवः प्रभुः ।
किञ्चित् चिकीर्षयन् प्रागात् अक्रूर प्रिय काम्यया ॥

शब्दार्थ—

अक्रूर	१०. अक्रूर के	किञ्चित्	४. कुछ
भवनम्	११. घर	चिकीर्षयन्	५. कार्य कराने की इच्छा से
कृष्णः	७. श्रीकृष्ण	प्रागात्	१२. गये
सहरामः	९. बलराम जी के साथ	अक्रूर	१. अक्रूर का
उद्धवः	८. उद्धव और	प्रिय	२. प्रिय करने
प्रभुः ।	६. प्रभु	काम्यया ॥	३. की कामना से

श्लोकार्थ—अक्रूर का प्रिय करने की कामना से तथा कुछ कार्य कराने की इच्छा से प्रभु श्रीकृष्ण और उद्धव बलराम जी के साथ अक्रूर के घर गये ॥

त्रयोदशः श्लोकः

स तान् नरवर श्रेष्ठानाराद् वीक्ष्य स्वबान्धवान् ।
प्रत्युत्थाय प्रमुदितः परिष्वज्याभ्यनन्दत ॥१३॥

पदच्छेद— सः तान् नरवर श्रेष्ठान् आरात् वीक्ष्य स्वबान्धवान् ।
प्रति उत्थाय प्रमुदितः परिष्वज्य अभ्यनन्दत ॥

शब्दार्थ—

सः	१. अक्रूर ने	स्वबान्धवान् ।	५. अपने बन्धुओं को
तान्	२. उन	प्रति उत्थायम्	७. उठकर
नरवर	३. मनुष्य शिरोमणियों में	प्रमुदितः	८. प्रेम पूर्वक
श्रेष्ठान्	४. श्रेष्ठ	परिष्वज्य	१०. आलिंगन किया
आरात् वीक्ष्य	६. दूर से देखकर	अभ्यनन्दत ॥	९. उनका अभिनन्दन और

श्लोकार्थ—अक्रूर ने उन मनुष्य शिरोमणियों में श्रेष्ठ अपने बन्धुओं को दूर से देखकर उठकर प्रेम पूर्वक उनका अभिनन्दन और आलिङ्गन किया ।।

चतुर्दशः श्लोकः

ननाम कृष्णं रामं च स तैरप्यभिवादितः ।
पूजयामास विधिवत् कृतासनपरिग्रहान् ॥१४॥

पदच्छेद— ननाम कृष्णम् रामम् च सः तैः अपि अभिवादितः ।
पूजयामास विधिवत् कृत आसन परिग्रहान् ॥

शब्दार्थ—

ननाम	३. नमस्कार किया	पूजयामास	११. पूजा करने लगे
कृष्णम्	१. अक्रूर ने श्रीकृष्ण और	विधिवत्	१०. उनकी विधिवत्
रामम्च	२. बलराम को	कृत	९. कर लेने पर अक्रूर
सः	५. उनको	आसन	७. आसन
तैः अपि	४. उन्होंने भी	परिग्रहान् ॥	८. ग्रहण
अभिवादितः ।	६. प्रणाम किया		

श्लोकार्थ—अक्रूर ने श्रीकृष्ण और बलराम को नमस्कार किया । उन्होंने भी उनको प्रणाम किया । आसन ग्रहणकर लेने पर अक्रूर उनकी विधिवत् पूजा करने लगे ॥

पञ्चदशः श्लोकः

पादावनेजनीरापो धारयञ्छिरसा नृप ।
अर्हणेनाम्बरैर्दिव्यैर्गन्धस्रग्भूषणोत्तमैः ॥१५॥

पदच्छेद— पाद अवनेजनीः आपः धारयन् शिरसा नृप ।
अर्हणेन अम्बरैः दिव्यैः गन्ध स्रक् भूषण उत्तमैः ॥

शब्दार्थ—

पाद	२.	चरणों के	अर्हणेन	१२.	पूजन किया
अवनेजनीः	३.	धोने से गिरे	अम्बरैः	८.	वस्त्र
आपः	४.	जल को	दिव्यैः	७.	दिव्य
धारयन्	६.	धारण करके	गन्ध	९.	गन्ध
शिरसा	५.	सिर पर	स्रक्	१०.	माला और
नृप ।	१.	हे राजन् !	भूषण उत्तमैः	११.	उत्तम आभूषणों से उनका

श्लोकार्थ— हे राजन् ! चरणों के धोने से गिरे हुये जल को सिर पर धारण करके दिव्य वस्त्र, गन्ध, माला, उत्तम आभूषणों से उनका पूजन किया ॥

षोडशः श्लोकः

अर्चित्वा शिरसाऽऽनम्य पादावङ्कगतौ मृजन् ।
प्रश्रयावनतोऽक्रूरः कृष्णरामावभाषत ॥१६॥

पदच्छेद— अर्चित्वा शिरसा आनम्य पादौ अङ्कगतौ मृजन् ।
प्रश्रय अवनतः अक्रूरः कृष्ण रामौ अभाषत ॥

शब्दार्थ—

अर्चित्वा	१.	पूजन के पश्चात् (अक्रूर ने)	प्रश्रयः	८.	विनय से
शिरसा	२.	सिर	अवनतः	९.	झुककर
आनम्य	३.	झुकाकर (प्रणाम किया और	अक्रूरः	७.	अक्रूर ने
पादौ	४.	उनके चरणों को	कृष्ण	१०.	श्रीकृष्ण और
अङ्कगतौ	५.	गोद में लेकर	रामौ	११.	बलराम जी से
मृजन् ।	६.	दबाने लगे (फिर)	अभाषत ॥	१२.	कहा

श्लोकार्थ—पूजन के पश्चात् अक्रूर ने सिर झुकाकर प्रणाम किया । और उनके चरणों को गोद में लेकर दबाने लगे । फिर अक्रूर ने विनय से झुककर श्रीकृष्ण और बलराम से कहा ॥

सप्तदशः श्लोकः

दिष्ट्या पापो हतः कंसः सानुगो वामिदं कुलम् ।
भवद्भ्यामुद्धृतं कृच्छ्राद् दुरन्ताच्च समेधितम् ॥१७॥

पदच्छेद— दिष्टचा पापः हतः कंसः स अनुगः वाम् इदम् कुलम् ।
भवद्भ्याम् उद्धृतम् कृच्छ्रात् दुरन्तात् च समेधितम् ॥

शब्दार्थ—

दिष्ट्या	१.	आनन्द की बात है कि	भवद्भ्याम्	८.	आप दोनों ने
पापः	२.	पापी	उद्धृतम्	११.	बचा लिया है
हतः	५.	मारा गया (और)	कृच्छ्रात्	१०.	संकट से
कंसः	३.	कंस	दुरन्तात्	९.	बहुत बड़े
स अनुगः	४.	अनुयायियों के साथ	च	१२.	तथा
वाम् इदम्	६.	अपने इस	समेधितम् ॥	१३.	समृद्धिशाली बनाया है
कुलम् ।	७.	यदुकुल को			

श्लोकार्थ—भगवान् आनन्द की बात है कि पापी कंस अपने अनुयायियों के साथ मारा गया । और अपने इस यदुकुल को आप दोनों ने बहुत बड़े संकट से बचा लिया है तथा समृद्धिशाली बनाया है ॥

अष्टादशः श्लोकः

युवां प्रधानपुरुषौ जगद्धेतू जगन्मयौ ।
भवद्भ्यां न विना किञ्चित् परमस्ति न चापरम् ॥१८॥

पदच्छेद— युवाम् प्रधान पुरुषौ जगत् हेतू जगन्मयौ ।
भवद्भ्याम् न विना किञ्चित् परम् अस्ति न च अपरम् ॥

शब्दार्थ—

युवाम्	१.	आप दोनों	भवद्भ्याम्	७.	आप दोनों के
प्रधान	२.	आदि	न विना	८.	बिना नहीं
पुरुषौ	३.	पुरुष	किञ्चित्	९.	कोई (वस्तु है) न
जगत्	४.	संसार के	परम् अस्ति	१०.	कारण है
हेतू	५.	कारण और	न च	११.	और न
जगन्मयौ ।	६.	संसार रूप हैं	अपरम् ॥	१२.	कार्य है

श्लोकार्थ—आप दोनों आदि पुरुष, संसार के कारण और संसार रूप हैं । आप दोनों के बिना नहीं कोई वस्तु है न कारण है, और न कार्य है ॥

एकोनविंशः श्लोकः

आत्मसृष्टमिदं विश्वमन्वाविश्य स्वशक्तिभिः ।
ईयते बहुधा ब्रह्मन् श्रुतप्रत्यक्षगोचरम् ॥१९॥

पदच्छेद— आत्मसृष्टम् इदम् विश्वम् अनुआविश्य स्व शक्तिभिः ।
ईयते बहुधा ब्रह्मन् श्रुत प्रत्यक्ष गोचरम् ॥

शब्दार्थ—

आत्मसृष्टम्	२. अपने रचे हुये	ईयते	१२. प्रतीत हो रहे हैं
इदम्	३. इस	बहुधा	११. अनेक प्रकार से
विश्वम्	४. जगत् में	ब्रह्मन्	१. हे परमात्मन् ! आप
अनुआविश्य	७. प्रविष्ट होकर	श्रुत	८. सुनी और
स्व	५. अपनी	प्रत्यक्ष	६. देखी
शक्तिभिः ।	६. शक्तियों से	गोचरम् ॥	१०. वस्तुओं के रूप में

श्लोकार्थ—हे परमात्मन् ! आप अपने रचे हुये इस जगत् में अपनी शक्तियों से प्रविष्ट होकर सुनी और देखी वस्तुओं के रूप में अनेक प्रकार से प्रतीत हो रहे हैं ॥

विंशः श्लोकः

यथा हि भूतेषु चराचरेषु मह्यादयो योनिषु भान्ति नाना ।
एवं भवान् केवल आत्मयोनिष्वात्माऽऽत्मतन्त्रो बहुधा विभाति ॥२०॥

पदच्छेद— यथा हि भूतेषु चराचरेषु मही आदयः योनिषु भान्ति नाना ।
एवम् भवान् केवल आत्मयोनिषु आत्मा आत्मतन्त्रः बहुधा विभाति ॥

शब्दार्थ—

यथा हि	१. जैसे	एवम्	६. इसी प्रकार
भूतेषु	५. प्राणियों तथा	भवान्	१२. आप
चराचरेषु	४. अपने कार्य रूप स्थावर जङ्गम	केवल	१०. केवल
मही	२. पृथ्वी	आत्मयोनिषु	१३. अपने कार्य रूप जगत् में
आदयः	३. आदि कारण तत्त्व	आत्मा	११. आत्मा
योनिषु	६. योनियों में	आत्मतन्त्रः	१४. स्वेच्छा से
भान्ति	८. प्रतीत होते हैं	बहुधा	१५. अनेक रूपों में
नाना ।	७. अनेक रूपों में	विभाति ॥	१६. प्रतीत होतो है

श्लोकार्थ—जैसे पृथ्वी आदि कारणतत्त्व अपने कार्य रूप स्थावर-जङ्गम प्राणियों तथा योनियों में अनेक रूपों में प्रतीत होते हैं। इसी प्रकार केवल आत्मा आप अपने कार्य रूप जगत् में स्वेच्छा से अनेक रूपों में प्रतीत होती है ॥

एकविंशः श्लोकः

सृजस्यथो लुम्पसि पासि विश्वं रजस्तमः सत्त्वगुणैः स्वशक्तिभिः ।
न बध्यसे तद्गुणकर्मभिर्वा ज्ञानात्मनस्ते क्व च बन्धहेतुः ॥२१॥

पदच्छेद— सृजसि अथो लुम्पसि पासि विश्वम् रजः तमः सत्त्व गुणैः स्व शक्तिभिः ।
न बध्यसे तद् गुण कर्मभिः वा ज्ञान आत्मनः ते क्व च बन्ध हेतुः ॥

शब्दार्थ—

सृजसि	५. सृष्टि करते हैं	न बध्य से	१०. नहीं पड़ते बन्धन में
अथो लुम्पसि	७. तथा संहार करते हैं	तद्गुण	८. किन्तु आप उन गुणों से
पासि	६. पालन करते हैं	कर्मभिः वा	९. अथवा कर्मों से
विश्वम्	४. संसार की	ज्ञान आत्मनः	११ ज्ञान स्वरूप
रजः तमः	१. रजोगुण -तमोगुण और	ते	१२. आपके लिये
सत्त्व गुणैः	२. सत्त्वगुण रूपी	क्व च	१४. कहाँ है
स्व शक्तिभिः ।	३. अपनी शक्तियों से आप	बन्ध हेतुः ॥	१३. बन्धन का कारण

श्लोकार्थ—हे भगवान् ! रजोगुण, तमोगुण, और सत्त्वगुण रूपी अपनी शक्तियों से आप संसार की सृष्टि, पालन तथा संहार करते हैं। किन्तु आप उन गुणों से अथवा कर्मों से बन्धन में नहीं पड़ते हैं। ज्ञान स्वरूप आपके लिये बन्धन का कारण कहाँ है ॥

द्वाविंशः श्लोकः

देहाद्युपाधेरनिरूपितत्वाद् भवो न साक्षान्न भिदाऽऽत्मनः स्यात् ।
अतो न बन्धस्तव नैव मोक्षः स्यातां निकामस्त्वयि नोऽविवेकः ॥२२॥

पदच्छेद— देह आदि उपाधेः अनिरूपितत्वात् भवः न साक्षात् न भिदा आत्मनः स्यात् ।
अतः न बन्धः तव न एव मोक्षः स्याताम् निकामः त्वयि नो अविवेक ॥

शब्दार्थ—

देह आदि	१. देह आदि	अतः न बन्धः	१०. इसलिये न बन्धन है
उपाधेः	२. उपाधि के	तव न एव मोक्षः	८. आप में न मोक्ष ही
अनिरूपितत्वात्	३ न होने के कारण	स्याताम्	९. है (तथा)
भवः न	५. न तो जन्म	निकामः	१३. बन्धन मोक्ष की कल्पना करना निरा
साक्षात् न भिदा	७ न साक्षात् भेद भाव होता है	त्वयि	११. आप में
आत्मनः	४. आत्मा का	नः	१२. हमारा
स्यात् ।	६. होता है (और)	अविवेकः ॥	१४. अविवेक है

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! देह आदि उपाधि के न होने के कारण आत्मा का न तो जन्म होता है। और न साक्षात् भेद-भाव होता है। आप में न मोक्ष है। तथा इसलिये न वन्धन है। आप में हमारा बन्धन, मोक्ष की कल्पना करना निरा अविवेक है ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

त्वयोदितोऽयं जगतो हिताय यदा यदा वेदपथः पुराणः ।
बाध्येत पाखण्डपथैरसद्भिस्तदा भवान् सत्त्वगुणं बिभर्ति ॥२३॥

पदच्छेद— त्वया उदितः अयम् जगतः हिताय यदा-यदा वेद पथः पुराणः ।
बाध्येत पाखण्ड पथैः असद्भिः तदा भवान् सत्त्व गुणम् बिभर्ति ॥

शब्दार्थ—

त्वया	२. आपने	बाध्येत	१०. बाधा पहुँचती है
उदितः	६. प्रकट किया है	पाखण्ड पथैः	९. पाखण्ड मार्गों से
अयम्	३. यह	असद्भिः	८. दुष्टों के द्वारा
जगतः हिताय	१. संसार के कल्याण के लिये	तदा	११. तब-तब
यदा-यदा	७. जब-जब इसे	भवान्	१२. आप
वेद पथः	५. वेद मार्ग	सत्त्वगुणम्	१३. सत्त्वगुणी (शरीर को)
पुराणः ।	४. सनातन	बिभर्ति ॥	१४. धारण करते हैं

श्लोकार्थ—संसार के कल्याण के लिये आपने यह सनातन वेद मार्ग प्रकट किया है। जब-जब इसे दुष्टों के द्वारा पाखण्ड मार्गों से बाधा पहुँचती है तब-तब आप सत्त्वगुणी शरीर को धारण करते हैं ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

स त्वं प्रभोऽद्य वसुदेवगृहेऽवतीर्णः स्वांशेन भारमपनेतुमिहासि भूमेः ।
अक्षौहिणीशतवधेन सुरेतरांशराज्ञाममुष्य च कुलस्य यशो वितन्वन् ॥२४॥

पदच्छेद— सः त्वम् प्रभो अद्य वसुदेव गृहे अवतीर्णः स्व अंशेन भारम् अपनेतुम् इह असि ।
अक्षौहिणी शत वधेन सुरेतर अंश राज्ञाम् अमुष्य च कुलस्य यशः वितन्वन् ॥

शब्दार्थ—

सः त्वम् प्रभो	१. हे प्रभो ! वे आप	अक्षौहिणी शत	११. सैकड़ों अक्षौहिणी सेना के
अद्य	२. इस समय	वधेन	१२. विनाश से
वसुदेव गृहे	७. वसुदेव के घर में	सुरेतर अंश	९. असुरों के वेश में उत्पन्न
अवतीर्ण	८. अवतीर्ण हुये हैं	राज्ञाम्	१०. राजाओं की
स्व अंशेन	५. अपने अंश बलराम जी के साथ	अमुष्य च	१३. इस
भारम् अपनेतुम्	४. भार दूर करने लिये	कुलस्य	१४. यदुवंश का
इह असि	६. यहाँ	यशः	१५. यश का
भूमेः ।	३. पृथ्वी का	वितन्वन् ॥	१६. विस्तार करेंगे ॥

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! वे आप इस समय पृथ्वी का भार दूर करने के लिये अपने अंश बलरामजी के साथ यहाँ वसुदेव जी के घर में अवतीर्ण हुये हैं। असुरों के वेश में उत्पन्न राजाओं की सैकड़ों अक्षौहिणी सेना के विनाश से इस यदुवंश के यश का विस्तार करेंगे ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

अद्येश नो वसतयः खलु भूरिभागा यः सर्वदेवपितृभूतनृदेवमूर्तिः ।
यत्पादशौचसलिलं त्रिजगत् पुनाति सत्त्वं जगद्गुरुरधोक्षज याः प्रविष्टः ॥२५॥

पदच्छेद— अद्य ईश नो वसतयः खलु भूरिभागाः यः सर्वदेव पितृ भूत नृदेव मूर्तिः ।
यत्पाद शौच सलिलम् त्रिजगत् पुनाति सः त्वम् जगत् गुरुः अधोक्षज याः प्रविष्टः ॥

शब्दार्थ—अद्य	१३. आज	यत्पाद शौच	६. जिनके चरणों का धोवन
ईश	२. प्रभो !	सलिलम्	७. गंगा जी
नो वसतयः	१२. हमारे घर	त्रिजगत् पुनाति	८. तीनों लोकों को पवित्र करती हैं
खलु भूरिभागाः	१४. निश्चित ही धन्य-धन्य हो गये	सः त्वम्	९. वे आप
यः सर्वदेव	३. जिनकी सभी देवता	जगत् गुरुः	१०. संसार के गुरु होकर
पितृ-भूत	४. पितर भूत गण और	अधोक्षज	१. इन्द्रियातीत
नृदेव मूर्तिः ।	५. राजाओं की मूर्ति हैं	याः प्रविष्टः ॥	११. जहाँ पधारे हैं । वे

श्लोकार्थ—इन्द्रियातीत प्रभो ! जो सभी देवता, पितर, भूत गण और राजाओं की मूर्ति हैं और जिनके चरणों की धोवन गंगा जी तीनों लोकों को पवित्र करती हैं वे आप संसार के गुरु हो कर जहाँ पधारे हैं वे हमारे घर आज निश्चित ही धन्य-धन्य हो गये ॥

षड्विंशः श्लोकः

कः पण्डितस्त्वदपरं शरणं समीयाद् भक्तप्रियादृतगिरः सुहृदः कृतज्ञात् ।
सर्वान् ददाति सुहृदो भजतोऽभिकामानात्मानमप्युपचयापचयौ न यस्य ॥२६॥

पदच्छेद—कः पण्डितः त्वद् अपरम् शरणम् समीयात् भक्तप्रिय आदृत गिरः सुहृदः कृतज्ञात् ।
सर्वान् ददाति सुहृदः भजतः अभिकामान् आत्मानम् अपि उपचय अपचयौ न यस्य ॥

शब्दार्थ—कः प्रण्डितः	१. कौन बुद्धिमान् पुरुष	सर्वान्	९. उसकी समस्त
त्वद् अपरम्	६. आपको छोड़ कर दूसरे की	ददाति	११. पूर्ण कर देते हैं तथा
शरणम् समीयात्	७. शरण में जायेगा (क्योंकि)	सुहृदः भजतः	८. प्रेमी भक्त का भजन करने वाले आप
भक्तप्रिय	२. आप भक्तों के प्रिय	अभिकामान्	१०. अभिलाषायें
आदृता गिरः	३. वचन का आदर करने वाले	आत्मानम् अपि	१५. उस आत्मा का भी
सुहृदः	४. बन्धु (एवम्)	उपचय	१३. वृद्धि और
कृतज्ञात् ।	५. कृतज्ञ	अपचयौ न	१४. क्षति नहीं होती
		यस्य ॥	१२. जिसकी

श्लोकार्थ—हे भगवान् ! कौन बुद्धिमान् पुरुष आप भक्तों के प्रिय, वचन का आदर करने वाले, बन्धु एवम् कृतज्ञ आप को छोड़ कर दूसरे की शरण में जायेगा । क्योंकि प्रेमी भक्त का भजन करने वाले आप उसकी समस्त अभिलाषायें पूर्ण कर देते हैं । तथा जिसकी वृद्धि और क्षति नहीं होती उस आत्मा का भी दान कर देते हैं ॥

सप्तविंशः श्लोकः

दिष्ट्या जनार्दन भवानिह नः प्रतीतो योगेश्वरैरपि दुरापगतिः सुरेशैः ।
छिन्ध्याशु नः सुतकलत्रधनाप्तगेहदेहादिमोहरशनां भवदीयमायाम् ॥२७॥

पदच्छेद— दिष्टचा जनार्दन भवान् इह नः प्रतीतः योगेश्वरैः अपि दुरापगतिः सुरेशैः ।
छिन्धि आशु नः सुतकलत्र धन आप्तगेह देह आदि मोहरशनाम् भवदीय मायाम् ॥

शब्दार्थ—

दिष्टचा	२. सौभाग्य की बात है कि	छिन्धि आशु	१४. शीघ्र काट दीजिये
जनार्दन	१. हे प्रभो !	नः सुतकलत्र	१०. हमारे पुत्र-स्त्री
भवान् इह नः	६. आप यहाँ हमें	धन आप्तगेह	११. धन-स्वजन-घर और
प्रतीतः	७. दृष्टि गोचर हो रहे हैं	देह आदि	१२. देह आदि के
योगेश्वरैः अपि	३. योगेश्वरों और	मोहरशनाम्	१३. मोह की रस्सी को आप
दुरापगतिः	५. दुष्प्राप्य स्वरूप वाले	भवदीय	८. आपकी
सुरेशैः ।	४. देवराजों से भी	मायाम् ॥	९. माया रूप

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! सौभाग्य की बात है कि योगेश्वरों और देवराजों से भी दुष्प्राप्य स्वरूप वाले आप यहाँ हमें दृष्टि गोचर हो रहे हैं । आप की माया रूप हमारे पुत्र-स्त्री-धन-स्वजन-घर और देह आदि के मोह रूपी रस्सी को आप शीघ्र काट दीजिये ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— इत्यर्चितः संस्तुतश्च भक्तेन भगवान् हरिः ।
अक्रूरं सस्मितं प्राह गीर्भिः सम्मोहयन्निव ॥२८॥

पदच्छेद— इति अर्चितः संस्तुतः च भक्तेन भगवान् हरिः ।
अक्रूरम् सस्मितं प्राह गीर्भिः सम्मोहयन् इव ॥

शब्दार्थ—

इति	१. इस प्रकार	अक्रूरम्	११. अक्रूर से
अर्चितः	३. पूजित	सस्मित	७. मुसकरा कर
संस्तुत	५. स्तुति किये जाने पर	प्राह	१२. कहा
च	४. और	गीर्भिः	८. अपनी वाणी से
भक्तेन	२. भक्त अक्रूर द्वारा	सम्मोहयन्	१०. मोहित करते हुये
भगवान् हरिः ।	६. भगवान् श्रीकृष्ण ने	इव ॥	९. मानों

श्लोकार्थ—इस प्रकार भक्त अक्रूर द्वारा पूजित और स्तुति किये जाने पर भगवान् श्रीकृष्ण ने मुसकरा कर अपनी वाणी से मानों मोहित करते हुये अक्रूर से कहा ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—त्वं नो गुरुः पितृव्यश्च श्लाघ्यो बन्धुश्च नित्यदा ।
वयं तु रक्ष्याः पोष्याश्च अनुकम्प्याः प्रजा हि वः ॥२९॥

पदच्छेद— त्वम् नः गुरुः पितृव्यः च श्लाघ्यः बन्धुः च नित्यदा ।
वयम् तु रक्ष्याः पोष्याः च अनुकम्प्याः प्रजा हि वः ॥

शब्दार्थ—

त्वम् नः	१.	आप हमारे	वयम् तु	७.	हम तो
गुरुः	२.	गुरु	रक्ष्याः	९.	रक्षणीय
पितृव्यः	३.	चाचा	पोष्याः च	१०.	पालनीय और
च श्लाघ्यः	४.	और प्रशंसनीय	अनुकम्प्याः	११.	अनुकम्पनीय
बन्धुः	६.	हितैषी हैं	प्रजाः	१२.	प्रजा हैं
च नित्यदा ।	५.	तथा सदा के	हि वः ॥	८.	आपकी ही

श्लोकार्थ—आप हमारे गुरु, चाचा और प्रशंसनीय सदा के हितैषी हैं । हम तो आपकी ही रक्षणीय, पालनीय, अनुकम्पनीय प्रजा हैं ॥

त्रिंशः श्लोकः

भवद्विधाः महाभागा निषेव्या अर्हसत्तमाः ।
श्रेयस्कामैर्नृभिर्नित्यं देवाः स्वार्था न साधवः ॥३०॥

पदच्छेद— भवत् विधाः महाभागाः निषेव्याः अर्हसत्तमाः ।
श्रेयः कामैः नृभिः नित्यम् देवाः स्वार्थाः न साधवः ॥

शब्दार्थ—

भवत्	३.	आप	श्रेयः कामैः	१.	कल्याण चाहने वाले
विधाः	४.	जैसे	नृभिः	२.	मनुष्यों को
महाभागाः	५.	महाभाग्यवान्	नित्यम्	७.	नित्य
निषेव्याः	८.	सेवा करनी चाहिये	देवाः	९.	देवताओं में
अर्हं सत्तमाः ।	६.	परम पूजनीय सन्तों की	स्वार्थाः	१०.	स्वार्थ रहता है
			न साधवः ॥	११	भक्तों में स्वार्थ नहीं होता है

श्लोकार्थ—कल्याण चाहने वाले मनुष्यों को आप जैसे महा भाग्यवान् परम पूजनीय सन्तों की सेवा करना चाहिये । देवताओं में स्वार्थ रहता है, भक्तों में स्वार्थ नहीं होता है ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

न ह्यम्मयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामयाः ।
ते पुनन्त्युरुकालेन दर्शनादेव साधवः ॥३१॥

दपच्छेद— नहि अम्मयानि तीर्थानि न देवाः मृच्छिलामयाः ।
ते पुनन्ति उरु कालेन दर्शनात् एव साधवः ॥

शब्दार्थ—

न	१.	न तो	ते	८.	वे (तीर्थ)
अम्मयानि	२.	जलमय	पुनन्ति	११.	पवित्र करते हैं (किन्तु)
तीर्थानि	३.	तीर्थ (ही तीर्थ हैं)	उरु	९.	बहुत
न	४.	और न	कालेन	१०.	समय के बाद
देवाः	७.	देवता हैं	दर्शनात्	१३.	दर्शन मात्र से
मृच्छिला	५.	मिट्टी और पत्थर की	एव	१४.	ही (पवित्र कर देते हैं) ।
मयाः ।	६.	बनी मूर्तियाँ ही	साधवः ॥	१२.	सन्त पुरुष

श्लोकार्थ—न तो जल मय तीर्थ हैं । और न मिट्टी और पत्थर की बनी मूर्तियाँ ही देवता हैं । वे तीर्थ बहुत समय के बाद पवित्र करते हैं । किन्तु सन्त पुरुष दर्शन मात्र से पवित्र कर देते हैं ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

स भवान् सुहृदां वै नः श्रेयाञ्छ्रेयश्चिकीर्षया ।
जिज्ञासार्थं पाण्डवानां गच्छस्व त्वं गजाह्वयम् ॥३२॥

पदच्छेद— सः भवान् सुहृदाम् वै नः श्रेयान् श्रेयः चिकीर्षया ।
जिज्ञासा अर्थम् पाण्डवानाम् गच्छस्व त्वम् गजाह्वयम् ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	सो	जिज्ञासा	१०.	कुशल मंगल
भवान्	२.	आप	अर्थम्	११.	जानने के लिये
सुहृदाम्	४.	हितैषियों में	पाण्डवानाम्	७.	पाण्डवों का
वै नः	३.	निश्चित ही हमारे	गच्छस्व	१३.	जाइये
श्रेयान्	५.	सर्वश्रेष्ठ हैं (अतः)	त्वम्	६.	आप
श्रेयः	८.	कल्याण	गजाह्वयम् ॥	१२	हस्तिनापुर
चिकीर्षया ।	९.	चाहने की इच्छा से (और)			

श्लोकार्थ— सो आप निश्चित ही हमारे हितैषियों में सर्वश्रेष्ठ हैं । अतः आप पाण्डवों का कल्याण करने की इच्छा से और कुशल मङ्गल जानने के लिये हस्तिनापुर जाइये ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

पितर्युपरते बालाः सह मात्रा सुदुःखिताः ।
आनीताः स्वपुरं राज्ञा वसन्त इति शुश्रुम ॥३३॥

पदच्छेद— पितरि उपरते बालाः सह मात्रा सुदुःखिताः ।
आनीताः स्वपुरम् राज्ञा वसन्तः इति शुश्रुमः ॥

शब्दार्थ—

पितरि	१.	पिता (पाण्डु के)	आनीताः	४.	लाये गये (तथा)
उपरते	२.	मर जाने पर	स्वपुरम्	३.	अपने घर (हस्तिनापुर में)
बालाः	७.	बालक (पाण्डव)	राज्ञा	५.	राजा (धृतराष्ट्र के) साथ
सह	६.	साथ	वसन्तः	६.	रहते हुये
मात्रा	८.	माता (कुन्ती के)	इति	११.	ऐसा
सुदुःखिता।	१०.	बड़े दुःख में पड़ गये थे	शुश्रुमः ॥	१२.	हमने सुना है

श्लोकार्थ—पिता पाण्डु के मर जाने पर अपने घर हस्तिनापुर में लाये गये । तथा राजा धृतराष्ट्र के साथ रहते हुये बालक पाण्डव माता कुन्ती के साथ बड़े दुःख में पड़ गये थे । ऐसा हमने सुना है ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

तेषु राजाम्बिकापुत्रो भ्रातृपुत्रेषु दीनधीः ।
समो न वर्तते नूनं दुष्पुत्रवशगोऽन्धदृक् ॥३४॥

पदच्छेद— तेषु राजा अम्बिकापुत्रः भ्रातृ पुत्रेषु दीन धीः ।
समः न वर्तते नूनम् दुष्पुत्र वशगः अन्ध दृक् ॥

शब्दार्थ—

तेषु	३.	उन	समः	१३.	समभाव
राजा	२.	राजा धृतराष्ट्र	न वर्तते	१४.	नहीं रखते हैं
अम्बिका पुत्रः	१.	अम्बिका पुत्र	नूनम्	१०.	निश्चित ही
भ्रातृ	४.	भाई के	दुष्पुत्र	८.	कुपुत्रों के
पुत्रेषु	५.	पुत्रों (पाण्डवों के) प्रति	वशगः	९.	वश में पड़े हुये
दीन	६.	दुष्ट	अन्ध	११.	अन्धे
धीः ।	७.	बुद्धि वाले हैं (और)	दृक् ॥	१२.	नेत्र वाले (वे धृतराष्ट्र)

श्लोकार्थ—अम्बिका पुत्र राजा धृतराष्ट्र उन भाई के पुत्रों पाण्डवों के प्रति दुष्ट बुद्धि वाले हैं । और कुपुत्रों के वश में पड़े हुये निश्चित ही अन्धे नेत्र वाले वे धृतराष्ट्र समभाव नहीं रखते हैं ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

गच्छ जानीहि तद्वृत्तमधुना साध्वसाधु वा ।
विज्ञाय तद् विधास्यामो यथा शं सुहृदां भवेत् ॥३५॥

पदच्छेद— गच्छ जानीहि तत् वृत्तम् अधुना साधु असाधु वा ।
विज्ञाय तत् विधास्यामः यथा शम् सुहृदाम् भवेत् ॥

शब्दार्थ—

गच्छ	२.	जाइये (और)	विज्ञाय	९.	जान कर
जानीहि	५.	मालूम कीजिये कि	तत्	८.	उसे
तत्	३.	उनका	विधास्यामः	१०.	वैसा हम करेंगे
वृत्तम्	४.	समाचार	यथा	११.	जिससे
अधुना	१.	इस समय (आप)	शम्	१३.	सुख
साधु	६.	अच्छा है	सुहृदाम्	१२.	बन्धुओं को
असाधु वा ।	७.	या बुरा	भवेत् ॥	१४.	मिले

श्लोकार्थ—इस समय आप जाइये और उनका समाचार मालूम कीजिये कि अच्छा है या बुरा, उसे जान कर वैसा हम करेंगे, जिससे बन्धुओं को सुख मिले ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

इत्यक्रूरं समादिश्य भगवान् हरिरीश्वरः ।
सङ्कर्षणोद्धवाभ्यां वै ततः स्वभवनं ययौ ॥३६॥

पदच्छेद— इति अक्रूरम् समादिश्य भगवान् हरिः ईश्वरः ।
सङ्कर्षण उद्धवाभ्याम् वै ततः स्व भवनम् ययौ ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	सङ्कर्षण	७.	बलराम और
अक्रूरम्	२.	अक्रूर को	उद्धवाभ्याम्	८.	उद्धव के साथ
समादिश्य	३.	आदेश देकर	वै ततः	९.	वहाँ से
भगवान्	५.	भगवान्	स्व	१०.	अपने
हरिः	६.	श्रीकृष्ण	भवनम्	११.	घर को
ईश्वरः ।	४.	सर्वशक्तिमान्	ययौ ॥	१२.	चले गये

श्लोकार्थ—इस प्रकार अक्रूर को आदेश देकर सर्वशक्तिमान् भगवान् श्रीकृष्ण बलराम और उद्धव जी के साथ वहाँ से अपने घर को चले गये ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
अष्टचत्वारिंशः अध्यायः ॥४८॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

एकोनपञ्चाशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—स गत्वा हास्तिनपुरं पौरवेन्द्रयशोऽङ्कितम्।
ददर्श तत्राम्बिकेयं सभीष्मं विदुरं पृथाम् ॥१॥

पदच्छेद — स: गत्वा हास्तिनपुरम् पौरवेन्द्र यश: अङ्कितम्।
ददर्श तत्र आम्बिकेयम् सभीष्मम् विदुरम् पृथाम् ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	उन्होंने	ददर्श	१२.	देखा
गत्वा	६.	जाकर	तत्र	७.	वहाँ
हस्तिनापुरम्	५.	हस्तिनापुर	आम्बिकेयम्	६.	धृतराष्ट्र और
पौरवेन्द्र	२.	पुरुवंशी राजाओं के	सभीष्मम्	८.	भीष्म सहित
यशः	३.	यश से	विदुरम्	१०.	विदुर तथा
अङ्कितम्।	४.	अङ्कित	पृथाम् ॥	११.	कुन्ती को

श्लोकार्थ—उन्होंने पुरुवंशो राजाओं के यश से अङ्कित हस्तिनापुर जाकर वहाँ भीष्म सहित धृतराष्ट्र और विदुर तथा कुन्ती को देखा ॥

द्वितीयः श्लोकः

सहपुत्रं च बाह्लीकं भारद्वाजं सगौतमम्।
कर्णं सुयोधनं द्रौणिं पाण्डवान् सुहृदोऽपरान् ॥२॥

पदच्छेद— सह पुत्रम् च वाह्लीकम् भारद्वाजम् स गौतमम्।
कर्णम् सुयोधनम् द्रौणिम् पाण्डवान् सुहृदः अपरान् ॥

शब्दार्थ—

सह	३.	सहित	कर्णम्	७.	कर्ण
पुत्रम्	२.	पुत्र (सोम दत्त)	सुयोधनम्	८.	दुर्योधन
च	१.	और (वे)	द्रौणिम्	६.	अश्वत्थामा
वाह्लीकम्	४.	बाह्लीक	पाण्डवान्	१०.	पाण्डवों (तथा)
भारद्वाजम्	५.	भारद्वाज (द्रोणाचार्य)	सुहृदः	१२.	इष्ट-मित्रों से मिले
सगौतमम्।	६.	गौतम (कृपाचार्य) सहित	अपरान् ॥	११.	अन्य

श्लोकार्थ—और वे पुत्र सोमदत्त सहित वाह्लीक, भारद्वाज (द्रोणाचार्य) गौतम (कृपाचार्य) सहित कर्ण, दुर्योधन, अश्वत्थामा, पाण्डवों तथा अन्य इष्ट-मित्रों से मिले ॥

तृतीयः श्लोकः

यथावदुपसङ्गम्य बन्धुभिर्गान्दिनीसुतः ।
सम्पृष्टस्तैः सुहृद्वार्तां स्वयं चापृच्छदव्ययम् ॥३॥

पदच्छेद— यथावत् उपसङ्गम्य बन्धुभिः गान्दिनी सुतः ।
सम्पृष्टः तैः सुहृद् वार्तां स्वयम् च अपृच्छत् अव्ययम् ॥

शब्दार्थ—

यथावत्	४.	भली-भाँति	सम्पृष्टः	८.	पूछे जाने पर
उपसङ्गम्य	५.	मिलकर	तैः	६.	उनके द्वारा (मथुरा वासी)
बन्धुभिः	३.	सगे सम्बन्धियों से	सुहृद्वार्तां	७.	बन्धुओं का कुशल क्षेम
गान्दिनी	१.	गान्दिनो	स्वयम् च	९.	स्वयम् भी (हस्तिनापुर वासियों को)
सुतः ।	२.	पुत्र (अक्रूर) ने	अपृच्छत्	११.	पूछा
			अव्ययम् ॥	१०.	कुशल मंगल

श्लोकार्थ—गान्दिनी पुत्र अक्रूर ने सगे सम्बन्धियों से भली-भाँति मिलकर उनके द्वारा मथुरावासी बान्धवों का कुशल क्षेम पूछे जाने पर स्वयम् भी हस्तिनापुर वासियों का कुशल मंगल पूछा ॥

चतुर्थः श्लोकः

उवास कतिचिन्मासान् राज्ञो वृत्तविवित्सया ।
दुष्प्रजस्याल्पसारस्य खलच्छन्दानुवर्तिनः ॥४॥

पदच्छेद— उवास कतिचित् मासान् राज्ञः वृत्त विवित्सया ।
दुष्प्रजस्य अल्प सारस्य खलः छन्द अनुवर्तिनः ॥

शब्दार्थ—

उवास	१२.	रह गये	दुष्प्रजस्य	१.	दुष्ट पुत्रों वाले
कतिचित्	१०.	कुछ	अल्प	२.	कम
मासान्	११.	महीनों तक (वहीं)	सारस्य	३.	बल वाले
राज्ञः	७.	राजा धृतराष्ट्र के	खलः	४.	दुष्टों की
वृत्त	८.	व्यवहार को	छन्दः	५.	सलाह के
विवित्सया ।	९.	जानने की इच्छा से (अक्रूर)	अनुवर्तिनः ॥	६.	अनुसार चलने वाले उन

श्लोकार्थ—दुष्ट पुत्रों वाले, कम बल वाले दुष्टों की सलाह के अनुसार चलने वाले उन राजा धृतराष्ट्र के व्यवहार को जानने की इच्छा से अक्रूर कुछ महीनों वहीं पर रह गये ॥

पञ्चमः श्लोकः

तेज ओजो बलं वीर्यं प्रश्रयादींश्च सद्गुणान् ।
प्रजानुरागं पार्थेषु न संहद्भिश्चिकीर्षितम् ।।५।।

पदच्छेद— तेज ओजः बलम् वीर्यम् प्रश्रय आदीन् च सद्गुणान् ।
प्रजा अनुरागम् पार्थेषु न संहद्भिः चिकीर्षितम् ।।

शब्दार्थ—

तेजः	१.	पाण्डवों के प्रभाव	प्रजा	८.	प्रजाओं का
ओजः	२.	शस्त्र कौशल	अनुरागम्	६.	प्रेम
बलम्	३.	बल	पार्थेषु	७.	पाण्डवों के प्रति
वीर्यम्	४.	वीरता (और)	न	१०.	न
प्रश्रय आदीन्	५.	विनय आदि	सहद्भिः	११.	सहन करते हुये (कौरवों ने)
च सद्गुणान् ।	६.	उत्तम गुणों और	चिकीर्षितम् ।	१२.	पाण्डवों का (अनिष्ट करना चाहा)

श्लोकार्थ—पाण्डवों के प्रभाव, शस्त्र कौशल, बल, वीरता, विनय आदि उत्तम गुणों और पाण्डवों के प्रति प्रजाओं का प्रेम न सहन करते हुये कौरवों ने पाण्डवों का अनिष्ट करना चाहा ।।

षष्ठः श्लोकः

कृतं च धार्तराष्ट्रैर्यद् गरदानाद्यपेशलम् ।
आचख्यौ सर्वमेवास्मै पृथा विदुर एव च ।।६।।

पदच्छेद— कृतम् च धार्त राष्ट्रैः यत् वरदान आदि अपेशलम् ।
आचख्यौ सर्वम् एव अस्मै पृथा विदुरः एव च ।।

शब्दार्थ—

कृतम्	६.	किये थे उन	आचख्यौ	१२.	कहा
च धार्तराष्ट्रैः	१.	और धृतराष्ट के पुत्रों (ने)	सर्वम् एव	७.	सब ही बातों का
यत्	२.	जो	अस्मै	११.	अक्रूर जी से
गरदान	३.	विषदान	पृथा	८.	कुन्ती
आदि	४.	आदि	विदुर	१०.	विदुरने ही
अपेशलम् ।	५.	अत्याचार	एव च ।।	६.	और

श्लोकार्थ—और धृतराष्ट्र के पुत्रों ने जो विष दान आदि अत्याचार किये थे, उन सब ही बातों को कुन्ती और विदुर जी ने ही अक्रूर जी से कहा ।।

सप्तमः श्लोकः

पृथा तु भ्रातरं प्राप्तमक्रूरमुपसृत्य तम् ।
उवाच जन्मनिलयं स्मरन्त्यश्रुकलेक्षणा ॥७॥

पदच्छेद— पृथा तु भ्रातरम् प्राप्तम् अक्रूरम् उपसृत्य तम् ।
उवाच जन्म निलयम् स्मरन्ती अश्रुकलेक्षणा ॥

शब्दार्थ—

पृथा तु	१.	कुन्ती तो	उवाच	१२.	बोली
भ्रातरम्	२.	भाई	जन्म	७.	जन्म
प्राप्तम्	४.	आने पर	निलयम्	८.	भूमि का
अक्रूरम्	३.	अक्रूर के	स्मरन्ती	९.	स्मरण करती हुई
उपसृत्य	६.	पास जाकर	अश्रुकल	११.	आँसू भर कर
तम् ।	५.	उनके	ईक्षणा ॥	१०.	आँखों में

श्लोकार्थ—कुन्ती तो भाई अक्रूर के आने पर उनके पास जाकर जन्म भूमि का स्मरण करती हुई आँखों में आँसू भरकर कर बोली ॥

अष्टमः श्लोकः

अपि स्मरन्ति नः सौम्य पितरौ भ्रातरश्च मे ।
भगिन्यो भ्रातृपुत्राश्च जामयः सख्य एव च ॥८॥

पदच्छेद— अपि स्मरन्ति नः सौम्य पितरौ भ्रातरः च मे ।
भगिन्यः भ्रातृ पुत्राः च जामयः सख्यः एव च ॥

शब्दार्थ—

अपि	२.	क्या	भगिन्यः	६.	बहिनें
स्मरन्ति	१३.	स्मरण करती है	भ्रातृ पुत्राः	८.	भतीजे
नः	१२.	हमारा	च	७.	और
सौम्य	१.	प्यारे भाई	जामयः	९.	कुल की स्त्रियाँ
पितरौ	४.	माँ-बाप	सख्यः	११.	सहेलियाँ
भ्रातरः च	५.	और भाई	एव च ॥	१०.	तथा
मे ।	३.	मेरे			

श्लोकार्थ—प्यारे भाई, क्या मेरे माँ-बाप और भाई-बहिनें भतीजे और कुल की स्त्रियाँ तथा सहेलियाँ हमारा स्मरण करती हैं ॥

नवमः श्लोकः

आत्रेयो भगवान् कृष्णः शरण्यो भक्तवत्सलः।
पैतृष्वसेयान् स्मरति रामश्चाम्बुरुहेक्षणः ॥९॥

पदच्छेद— आत्रेयः भगवान् कृष्णः शरण्यः भक्त वत्सलः।
पैतृष्वसेयान् स्मरति रामः च अम्बुरुह ईक्षणः ॥

शब्दार्थ—

आत्रेयः	४. हमारे भतीजे	पैतृष्वसेयान्	११. क्या फुफेरे भाइयों का
भगवान्	५. भगवान्	स्मरति	१२. स्मरण करते हैं
कृष्णः	६. श्रीकृष्ण	रामः	१०. बलराम
शरण्यः	१. शरणागत रक्षक (और)	च	७. और
भक्त	२. भक्त	अम्बुरुह	८. कमल
वत्सलः।	३. वत्सल	ईक्षणः ॥	९. नयन

श्लोकार्थ—शरणागतरक्षक और भक्तवत्सल हमारे भतीजे भगवान् श्रीकृष्ण और कमलनयन बलराम क्या फुफेरे भाइयों का स्मरण करते हैं॥

दशमः श्लोकः

सापत्नमध्ये शोचन्तीं वृकाणां हरिणीमिव।
सान्त्वयिष्यति मां वाक्यैः पितृहीनांश्च बालकान् ॥१०॥

पदच्छेद— सपत्न मध्ये शोचन्ती वृकाणाम् हरिणीम् इव।
सान्त्वयिष्यति माम् वाक्यैः पितृ हीनान् च बालकान् ॥

शब्दार्थ—

सपत्न	१. शत्रुओं के	सान्त्वयिष्यति	१२. सान्त्वना देंगे
मध्ये	२. बीच (घिर कर) वैसे ही	माम्	७. (क्या श्रीकृष्ण) मुझे
शोचन्ती	३. शोक कर रही थी	वाक्यैः	११. वचनों से
वृकाणाम्	५. भेड़ियों के बीच में	पितृ हीनान्	९. पिता से रहित
हरिणीम्	६. हरिणी हों (और बोली)	च	८. और
इव।	४. जैसे	बालकान् ॥	१०. इन बालकों को (अपने)

श्लोकार्थ—हे भाई! शत्रुओं के बीच घिर कर वैसे ही शोक कर रही थी। जैसे भेड़ियों के बीच में हरिणी हो। और बोली क्या कभी श्रीकृष्ण मुझे और पिता से रहित इन बालकों को अपने वचनों से सान्त्वना देंगे॥

एकादशः श्लोकः

कृष्ण कृष्ण महायोगिन् विश्वात्मन् विश्वभावन।
प्रपन्नां पाहि गोविन्द शिशुभिश्चावसीदतीम् ॥११॥

पदच्छेद— कृष्ण-कृष्ण महायोगिन् विश्वात्मन् विश्व भावन।
प्रपन्नाम् पाहि गोविन्द शिशुभिः च अवसीदतीम् ॥

शब्दार्थ—

कृष्ण कृष्ण	१.	हे कृष्ण हे कृष्ण !	प्रपन्नाम्	९.	शरणागत की
महायोगिन्	२.	तुम महायोगी हो	पाहि	१०.	रक्षा करो
विश्वात्मन्	३.	विश्व के आत्मा और	गोविन्द	६.	हे गोविन्द !
विश्व	४.	विश्व के	शिशुभिः च	७.	बालकों के साथ
भावन।	५.	जीवनदाता हो	अवसीदतीम् ॥	८.	दुःख भोगती हुई मुझ

श्लोकार्थ—हे कृष्ण-हे कृष्ण ! तुम महायोगी हो ! विश्व के आत्मा और विश्व के जीवनदाता हो ! हे गोविन्द ! बालकों के साथ दुःख भोगती हुई मुझ शरणागत की रक्षा करो ॥

द्वादशः श्लोकः

नान्यत्तव पदाम्भोजात् पश्यामि शरणं नृणाम्।
बिभ्यतां मृत्युसंसारादीश्वरस्यापवर्गिकात् ॥१२॥

पदच्छेद— न अन्यत् तव पदाम्भोजात् पश्यामि शरणम् नृणाम्।
बिभ्यताम् मृत्यु संसारात् ईश्वरस्य आपवर्गिकात् ॥

शब्दार्थ—

न अन्यत्	९.	अतिरिक्त कोई नहीं	बिभ्यताम्	३.	डरते हुये
तव	५.	आप	मृत्यु	१.	मृत्यु मय इस
पदाम्भोजात्	८.	चरण कमल के	संसारात्	२.	संसार से
पश्यामि	११.	देखती हूँ	ईश्वरस्य	६.	ईश्वर के
शरणम्	१०.	सहारा	आपवर्गिकात् ॥	७.	मोक्षदायक
नृणाम् ॥	४.	मनुष्यों के लिये			

श्लोकार्थ— मैं मृत्युमय इस संसार से डरते हुये मनुष्यों के लिये आप ईश्वर के मोक्षदायक चरण कमलों के अतिरिक्त कोई सहारा नहीं देखती हूँ ॥

त्रयोदशः श्लोकः

नमः कृष्णाय शुद्धाय ब्रह्मणे परमात्मने ।
योगेश्वराय योगाय त्वामहं शरणं गता ॥१३॥

पदच्छेद— नमः कृष्णाय शुद्धाय ब्रह्मणे परमात्मने ।
योगेश्वराय योगाय त्वाम् अहम् शरणम् गता ॥

शब्दार्थ—

नमः	७.	नमस्कार है	योगेश्वराय	४.	योगों के स्वामी और
कृष्णाय	६.	श्रीकृष्ण को	योगाय	५.	योगरूप
शुद्धाय	१.	शुद्ध	त्वाम्	९.	आप की
ब्रह्मणे	२.	ब्रह्म	अहम्	८.	मैं
परमात्मने ।	३.	परमात्मा	शरणम् गता ।।	१०.	शरण में आई हूँ

श्लोकार्थ—शुद्ध ब्रह्म परमात्मा, योगों के स्वामी, योग रूप श्रीकृष्ण को नमस्कार है। मैं आपकी शरण में आई हूँ ।।

चतुर्दशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— **इत्यनुस्मृत्य स्वजनं कृष्णं च जगदीश्वरम् ।**
प्रारुदद् दुःखिता राजन् भवतां प्रपितामही ॥१४॥

पदच्छेद— इति अनुस्मृत्य स्वजनम् कृष्णम् च जगदीश्वरम् ।
प्रारुदत् दुःखिता राजन् भवताम् प्रपितामही ।।

शब्दार्थ—

इति	२.	इस प्रकार	प्रारुदत्	११.	बहुत रोने लगीं
अनुस्मृत्य	७.	स्मरण करके	दुःखिता	१०.	दुःखित होकर
स्वजनम्	३.	सगे-सम्बिन्धियों	राजन्	१.	हे परीक्षित् !
कृष्णम्	६.	श्रीकृष्ण का	भवताम्	८.	आपकी
च	४.	और	प्रपितामही ।।	९.	परदादी (कुन्ती)
जगदीश्वरम् ।	५.	संसार के ईश्वर			

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इस प्रकार सगे सम्बन्धियों और संसार के ईश्वर श्रीकृष्ण का स्मरण करके आपको परदादी कुन्ती दुःखित होकर रोने लगीं ।।

पञ्चदशः श्लोकः

समदुःखसुखोऽक्रूरो विदुरश्च महायशाः ।
सान्त्वयामासतुः कुन्तीं तत्पुत्रोत्पत्तिहेतुभिः ॥१५॥

पदच्छेद— सम दुःख सुख अक्रूरः विदुरः च महायशाः ।
सान्त्वयामासतुः कुन्तीम् तत् पुत्र उत्पत्ति हेतुभिः ॥

शब्दार्थ—

सम	३. समान भाव रखने वाले	सान्त्वयामासतुः	१२. सान्त्वना देने लगे
दुःख	१. दुःख और	कुन्तीम्	७. कुन्ती को
सुख	२. सुख में	तत्	८. उसके
अक्रूरः	६. अक्रूर	पुत्र	९. पुत्रों की
विदुरः च	५. विदुर और	उत्पत्ति	१०. उत्पत्ति के
महायशाः ।	४. महान् यशस्वी	हेतुभिः ॥	११. कारण के द्वारा

श्लोकार्थ—दुःख और सुख को समान समझने वाले महान् यशस्वी विदुर और अक्रूर कुन्ती को उसके पुत्रों की उत्पत्ति के कारण के द्वारा सान्त्वना देने लगे ॥

षोडशः श्लोकः

यास्यन् राजानमभ्येत्य विषमं पुत्रलालसम् ।
अवदत् सुहृदां मध्ये बन्धुभिः सौहृदोदितम् ॥१६॥

पदच्छेद— यास्यन् राजानम् अभ्येत्य विषमम् पुत्र लालसम् ।
अवदत् सुहृदाम् मध्ये बन्धुभिः सौहृद उदितम् ॥

शब्दार्थ—

यास्यन्	१. घर जाते हुये अक्रूर ने	अवदत्	१२. कहने लगे
राजानम्	५. राजा धृतराष्ट्र के	सुहृदाम्	१०. मित्रों के
अभ्येत्य	६. पास पहुँच कर	मध्ये	११. बीच
विषमम्	३. विषम	सबन्धुभिः	७. बन्धु (बलराम आदि) का
पुत्र	२. पुत्रों के प्रति	सौहृदः	८. हितैषिता से भरा
लालसम् ।	४. पक्षपात करने वाले	उदितम् ॥	९. सन्देश

श्लोकार्थ—घर जाते हुये अक्रूर ने पुत्रों के प्रति विषम पक्षपात करने वाले राजा धृतराष्ट्र से पास पहुँच कर बन्धु बलराम आदि का हितैषिता से भरा सन्देश मित्रों के बीच कहने लगे ॥

सप्तदशः श्लोकः

अक्रूर उवाच— भो भो वैचित्रवीर्य त्वं कुरूणां कीर्तिवर्धन ।
भ्रातर्युपरते पाण्डावधुनाऽऽसनमास्थितः ॥१७॥

पदच्छेद— भो भो वैचित्रवीर्य त्वम् कुरूणाम् कीर्तिवर्धन ।
भ्रातरि उपरते पाण्डौ अधुना आसनम् आस्थितः ॥

शब्दार्थ—

भो भो	४.	हे	भ्रातरि	७.	भाई
वैचित्रवीर्य	५.	विचित्र वीर्य के पुत्र	उपरते	६.	मर जाने पर
त्वम्	६.	आप	पाण्डौ	८.	पाण्डु के
कुरूणाम्	१.	कुरुवंश की	अधुना	१०.	इस समय
कीर्ति	२.	कीर्ति को	आसनम्	११.	राज्य सिंहासन पर
वर्धन ।	३.	बढ़ाने वाले	आस्थितः ॥	१२.	विराजमान हैं

श्लोकार्थ—कुरुवंश की कीर्ति को बढ़ाने वाले हे विचित्र वीर्य के पुत्र ! आप भाई पाण्डु के मर जाने पर इस समय राज्य सिंहासन पर विराज मान हैं ॥

अष्टादशः श्लोकः

धर्मेण पालयन्नुर्वीं प्रजाः शीलेन रञ्जयन् ।
वर्तमानः समः स्वेषु श्रेयः कीर्तिमवाप्स्यसि ॥१८॥

पदच्छेद— धर्मेण पालयन् उर्वीम् प्रजाः शीलेन रञ्जयन् ।
वर्तमानः समः स्वेषु श्रेयः कीर्तिम् अवाप्स्यसि ॥

शब्दार्थ—

धर्मेषु	१.	धर्म से	वर्तमानः	६.	बर्ताव करते हुये
पालयन्	३.	पालन करते हुये	समः	८.	समान
उर्वीम्	२.	पृथ्वी का	स्वेषु	७.	अपने स्वजनों के साथ
प्रजाः	५.	प्रजाओं को	श्रेयः	१०.	कल्याण और
शीलेन	४.	सद् व्यहार से	कीर्तिम्	११.	कीर्ति को
रञ्जयन् ।	६.	प्रसन्न रखते हुये	अवाप्स्यसि ।	१२.	प्राप्त करेंगे ।

श्लोकार्थ धर्म से पृथ्वी का पालन करते हुये सद् व्यवहार से प्रजाओं को प्रसन्न रखते हुये अपने स्वजनों के साथ समान बर्ताव करते हुये कल्याण और कीर्ति को प्राप्त करेंगे ॥

एकोनविंशः श्लोकः

अन्यथा त्वाचरँल्लोके गर्हितो यास्यसे तमः ।

तस्मात् समत्वे वर्तस्व पाण्डवेष्वात्मजेषु च ॥१९॥

पदच्छेद— अन्यथा तु आचरम् लोके गर्हितः यास्यसे तमः
तस्मात् समत्वे वर्तस्व पाण्डवेषु आत्मजेषु च ॥

शब्दार्थ—

अन्यथा	१.	इसके विपरीत	तस्मात्	८.	इसलिये
तु	३.	तो	समत्वे	१२.	समानता का
आचरन्	२.	आचरण करने पर	वर्तस्व	१३.	बर्ताव कीजिये
लोके	४.	लोक में	पाण्डवेषु	११.	पाण्डवों के साथ
गर्हितः	५.	निन्दित होकर	आत्मजेषु	९.	अपने पुत्रों
यास्यसे	७.	जायेंगे	च ॥	१०.	और
तमः ।	६.	नरक में			

श्लोकार्थ—इसके विपरीत आचरण करने पर तो लोक में निन्दित होकर नरक में जायेंगे इसलिये अपने पुत्रों और पाण्डवों के साथ समानता का व्यवहार कीजिये ॥

विंशः श्लोकः

नेह चात्यन्तसंवासः कर्हिचित् केनचित् सह ।

राजन् स्वेनापि देहेन किमु जायात्मजादिभिः ॥२०॥

पदच्छेद— न इह च अत्यन्त संवासः कर्हिचित् केनचित् सह ।
राजन् स्वेन् अपि हेहे न किमु जाया आत्मज आदिषु ॥

शब्दार्थ—

न	८.	नहीं होता है	राजन्	१.	हे राजन्
इह च	२.	इस संसार में	स्वेन	९.	अपने
अत्यन्त	६.	सदा	अपि	११.	भी (बिछुड़ना पड़ता है)
संवासः	७.	रहना	देहेन	१०.	शरीर से
कर्हिचित्	३.	कभी	किमु	१५.	कहना ही क्या है
केनचित्	४.	किसी के	जाया	१२.	फिर (स्त्री)
सह ।	५.	साथ	आत्मज	१३.	पुत्र
			आदिभिः ॥	१४.	आदि से तो

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस संसार में कभी किसी के साथ सदा रहना नहीं होता है । अपने शरीर से भी बिछुड़ना पड़ता है । फिर स्त्री, पुत्र आदि से तो कहना ही क्या है ॥

एकविंशः श्लोकः

एकः प्रसूयते जन्तुरेक एव प्रलीयते।
एकोऽनुभुङ्क्ते सुकृतमेक एव च दुष्कृतम् ॥२१॥

पदच्छेद— एकः प्रसूयते जन्तुः एकः एव प्रलीयते।
एकः अनुभङ्क्ते सुकृतम् एकः एव च दुष्कृतम् ॥

शब्दार्थ—

एकः	२.	अकेला	एकः	७.	अकेला
प्रसूयते	३.	पैदा होता है और	अनुभुङ्क्ते	९.	भुगतता है
जन्तुः	१.	जीव	सुकृतम्	८.	पुण्य का फल
एकः	४.	अकेला	एकः एव	११.	अकेला ही
एव	५.	ही	च	१०.	और
प्रलीयते।	६.	मर कर जाता है	दुष्कृतम् ॥	१२.	पाप का फल भोगता है

श्लोकार्थ—जीव अकेला पैदा होता है। और अकेला ही मर कर जाता है। अकेला पुण्य का फल भुगतता है। और अकेला ही पाप का फल भोगता है ॥

द्वाविंशः श्लोकः

अधर्मोपचितं वित्तं हरन्त्यन्येऽल्पमेधसः।
सम्भोजनीयापदेशैर्जलानीव जलौकसः ॥२२॥

पदच्छेद— अधर्म उपचितम् वित्तम् हरन्ति अन्ये अल्प मेधसः।
सम्भोजनीय अपदेशैः जलानीव जल ओकसः ॥

शब्दार्थ—

अधर्म	४.	अधर्म से	सम्भोजनीय	१.	हम भरण-पोषण करने वाले हैं
उपचितम्	५.	बढ़े हुये	अपदेशैः	२.	इस प्रकार की बातें बना कर
वित्तम्	६.	धन को	जलानि इव	११.	जल को (उन्हीं के सम्बन्धी चाट जाते हैं)।
हरन्ति	८.	हरण कर लेते हैं	इव	९.	जैसे
अन्ये	७.	दूसरे	जल ओकसः ॥	१०.	जल में रहने वाले जन्तु के
अल्प मेधसः।	३.	मूर्ख प्राणी के			

श्लोकार्थ—हम भरण-पोषण करने वाले हैं—इस प्रकार की बातें बना कर मूर्ख प्राणी के अधर्म से बढ़े हुये धन को दूसरे हरण कर लेते हैं, जैसे जल में रहने वाले जन्तु के जल को उन्हीं के सम्बन्धी चाट जाते हैं।

त्रयोविंशः श्लोकः

पुष्णाति यानधर्मेण स्वबुद्ध्या तमपण्डितम् ।

तेऽकृतार्थं प्रहिण्वन्ति प्राणा रायः सुतादयः ॥२३॥

पदच्छेद— पुष्णाति यान् अधर्मेण स्वबुद्धया तम् अपण्डितम् ।
ते अकृतार्थम् प्रहिण्वन्ति प्राणा रायः सुत आदयः ॥

शब्दार्थ—

पुष्णाति	४.	पालता-पोसता है	ते	७.	वे
याम्	२.	जिसे (वह)	अकृतार्थम्	११.	असन्तुष्ट
अधर्मेण	३.	अधर्म से	प्रहिण्वन्ति	१२.	छोड़कर चले जाते हैं
स्वबुद्धया	१.	अपना समझ कर	प्राणाः	८.	प्राण
तम्	५.	उस	रायः	९.	धन और
अपण्डितम् ।	६.	मूर्ख को	सुतआदयः ॥	१०.	पुत्र आदि

श्लोकार्थ—अपना समझकर जिसे वह अधर्म से पालता-पोसता है, उस मूर्ख को वे प्राण, धन, और पुत्र आदि आदि असन्तुष्ट छोड़कर चले जाते हैं ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

स्वयं किल्विषमादाय तैस्त्यक्तो नार्थकोविदः ।

असिद्धार्थो विशत्यन्धं स्वधर्म विमुखस्तमः ॥२४॥

पदच्छेद— स्वयम् किल्विषम् आदाय तैः त्यक्तः न अर्थ कोविदः ।
असिद्ध अर्थः विशति अन्धम् स्वधर्म विमुखः तमः ॥

शब्दार्थ—

स्वयम्	७.	स्वयं	असिद्ध	१०.	प्रयोजन बिना सिद्ध
किलिवषम्	८.	पाप	अर्थः	११.	किये ही
आदाय	९.	लेकर (अपना)	विशति	१४.	प्रवेश करता है
तैः	५.	उन सगे सम्बन्धियों से	अन्धम्	१२.	घोर
त्यक्तः	६.	छोड़ा जाने पर	स्वधर्म	३.	अपने धर्म से
न अर्थः	२.	न जानने वाला	विमुखः	४.	विमुख व्यक्ति
कोविदः ।	१.	स्वार्थ को	तमः ॥	१३.	नरक में

श्लोकार्थ—स्वार्थ को न जानने वाला अपने धर्म से विमुख व्यक्ति उन सगे सम्बन्धियों से छोड़ा जाने पर स्वयं पाप लेकर अपना प्रयोजन बिना सिद्ध किये ही घोर नरक में प्रवेश करता है ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

तस्माल्लोकमिमं राजन् स्वप्नमायामनोरथम् ।
वीक्ष्यायम्यात्मनाऽऽत्मानं समः शान्तो भव प्रभो ॥२५॥

पदच्छेद— तस्मात् लोकम् इमम् राजन् स्वप्न माया मनोरथम् ।
वीक्ष्य आयम्य आत्मना आत्मानम् समः शान्तः भव प्रभो ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	३.	इसलिये	वीक्ष्य	९.	समझ कर
लोकम्	५.	लोक को	आयम्य	१२.	रोक कर
इमम्	४.	इस	आत्मना	१०.	अपने से
राजन्	१.	हे राजन् !	आत्मानम्	११	अपने चित्त को
स्वप्न	६.	स्वप्न	समः शान्तः	१३.	समत्व में शान्त
माया	७	माया और	भव	१४.	हो जाइये
मनोरथम् ।	८.	मनो राज्य	प्रभो ॥	२.	प्रभो !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! प्रभो ! इसलिये इस लोक को स्वप्न माया और मनो राज्य समझ कर अपने से अपने चित्त को रोक कर समत्व में शान्त हो जाइये ॥

षड्विंशः श्लोकः

धृतराष्ट्र उवाच—यथा वदति कल्याणीं वाचं दानपते भवान् ।
तथानया न तृप्यामि मर्त्यः प्राप्य यथामृतम् ॥२६॥

पदच्छेद— यथा वदति कल्याणीम् वाचम् दानपते भवान् ।
तथा अनया न तृप्यामि मर्त्यः प्राप्य यथा अमृतम् ॥

शब्दार्थ—

यथा	३.	जिस प्रकार	तथा	८.	उसी प्रकार
वदति	६.	कह रहे हैं	अनया	७.	उससे
कल्याणीम्	४	कल्याण की	न तृप्यामि	९.	मैं नहीं तृप्त हो रहा हूँ
वाचम्	५	बात	मर्त्यः	११.	मनुष्य
दानपते	१.	अक्रूर जी	प्राप्य	१३.	पाकर (तृप्त नहीं होता है)
भवान् ।	२	आप	यथा	१०.	जैसे
			अमृतम् ॥	१२.	अमृत को

श्लोकार्थ—अक्रूर जी आप जिस प्रकार कल्याण की बात कह रहे है। उससे उसी प्रकार मैं नहीं तृप्त हो रहा हूँ, जैसे मनुष्य अमृत को पाकर तृप्त नहीं होता है ॥

सप्तविंशः श्लोकः

तथापि सूनृता सौम्य हृदि न स्थीयते चले ।
पुत्रानुरागविषमे विद्युत् सौदामनी यथा ॥२७॥

पदच्छेद— तथापि सूनृता सौम्य हृदि न स्थीयते चले ।
पुत्र अनुराग विषमे विद्युत् सौदामनी यथा ॥

शब्दार्थ—

तथापि	१. तो भी	पुत्र	३. पुत्रों के प्रति (अत्यन्त)
सूनृता	८. आप की यह (प्रिय शिक्षा)	अनुराग	४. स्नेह के कारण
सौम्य	२. हे सौम्य अक्रूर जी	विषमे	५. विषम (तथा)
हृदि	७. हृदय में	विद्युत्	१२. बिजली नहीं ठहरती है
न स्थीयते	९. नहीं ठहर रही है	सौदामनी	११. मेघ की
चले ।	६. चञ्चल मेरे	यथा ॥	१०. जैसे

श्लोकार्थ—तो भी हे सौम्य अक्रूर जी ! पुत्रों के प्रति अत्यन्त स्नेह के कारण विषम तथा चञ्चल मेरे हृदय में आप की यह प्रिय शिक्षा नहीं ठहर रही हैं। जैसे मेघ की बिजली नहीं ठहरती है ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

ईश्वरस्य विधिं को नु विधुनोत्यन्यथा पुमान् ।
भूमेर्भारावताराय योऽवतीर्णो यदोः कुले ॥२८॥

पदच्छेद— ईश्वरस्य विधिम् कः नु विधुनोति अन्यथा पुमान् ।
भूमेः भारावताराय यः अवतीर्णः यदोः कुले ॥

शब्दार्थ—

ईश्वरस्य	१. ईश्वर के	भूमेः	८. पृथ्वी का
विधिम्	२. विधान में	भारावताराय	९. भार उतारने के लिये
कः नु	३ भला कौन	यः	७. जो
विधुनोति	६. कर सकता है	अवतीर्णः	१२. अवतीर्ण हुये हैं
अन्यथा	५. उलट-फेर	यदोः	१०. यदु के
पुमान् ।	४. पुरुष	कुले ॥	११. वंश में

श्लोकार्थ—ईश्वर के विधान में भला कौन पुरुष उलट-फेर कर सकता है। जो पृथ्वी का भार उतारने के लिये यदु के वंश में अवतीर्ण हुये हैं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

यो दुर्विमर्शपथया निजमाययेदं सृष्ट्वा गुणान् विभजते तदनुप्रविष्टः ।

तस्मै नमो दुरवबोधविहारतन्त्रसंसारचक्रगतये परमेश्वराय ॥२९॥

पदच्छेद—यः दुर्विमर्श पथया निज मायया इदम् सृष्ट्वा गुणान् विभजते तत् अनुप्रविष्टः ।

तस्मै नमः दुरवबोध विहार तन्त्र संसार चक्र गतये परमेश्वराय ।।

शब्दार्थ—

यः दुर्विमर्श	१.	जो अचिन्त्य	तस्मै	९.	उन
पथयानिज	२.	मार्ग वाली अपनी	नमः	१६.	नमस्कार है
मायया इदम्	३.	माया से इस संसार की	दुरव बोध	१३.	अचिन्त्य
सृष्ट्वा	४.	सृष्टि करके	विहार तन्त्र	१४.	लीला शक्ति वाले
गुणान्	७	गुणों (कर्म तथा कर्म फलों का)	संसार	१०.	संसार
विभजेत्	८.	विभाजन करते हैं	चक्र	११.	चक्र की
तत्	५.	इसमें	गतये	१२.	चाल में कारण रूप
अनुप्रविष्टः ।	६.	प्रवेश करते हैं और	परमेश्वराय।	१५.	परमेश्वर को

श्लोकार्थ—जो अचिन्त्य मार्ग वाली अपनी माया से इस संसार की सृष्टि करके इसमें प्रवेश करते हैं। और गुणों कर्म तथा कर्म फलों का विभाजन करते हैं, उन संसार चक्र की चाल में कारण रूप अचिन्त्य लोला शक्ति वाले परमेश्वर को नमस्कार है ।।

त्रिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— **इत्यभिप्रेत्य नृपतेरभिप्रायं स यादवः ।**

सुहृद्भिः समनुज्ञातः पुनर्यदुपुरीमगात् ॥३०॥

पदच्छेद— इति अभिप्रेत्य नृपतेः अभिप्रायम् सः यादवः ।

सुहृद्भिः समनुज्ञातः पुनः यदुपुरीम् अगात् ।।

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	सुहृद्भिः	७.	स्वजन (सम्बन्धियों) से
अभिप्रेत्य	४.	जान कर	समनुज्ञातः	८.	अनुमति लेकर
नृपतेः	२.	राजा (धृतराष्ट) का	पुनः	९.	फिर
अभिप्रायम्	३.	अभिप्राय	यदु	१०.	मथुरा
सः	५	वे	पुरीम्	११.	पुरी में
यादवः ।	६.	यादव (अक्रूर जी)	अगात् ।	१२.	लौट आये

श्लोकार्थ—इस प्रकार राजा धृतराष्ट्र का अभिप्राय जानकर वे यादव अक्रूर जी स्वजन सम्बन्धियों से अनुमति लेकर फिर से मथुरा पुरो में लौट आये ।।

एकत्रिंशः श्लोकः

शशंस रामकृष्णाभ्यां धृतराष्ट्रविचेष्टितम् ।
पाण्डवान् प्रति कौरव्य यदर्थं प्रेषितः स्वयम् ॥३१॥

पदच्छेद—

शशंस राम कृष्णाभ्याम् धृतराष्ट्र विचेष्टितम् ।
पाण्डवान् प्रति कौरव्य यदर्थम् प्रेषितः स्वयम् ॥

शब्दार्थ—

शशंश	७.	बता दिया	पाण्डवान् प्रति	२.	पाण्डवों के प्रति
राम	५.	बलराम और	कौरव्य	१.	हे परीक्षित् !
कृष्णाभ्याम्	६.	श्रीकृष्ण को	यदर्थम्	८.	जिसके लिये
धृतराष्ट्र	३.	धृतराष्ट्र का	प्रेषितः	१०.	भेजे गये थे
विचेष्टितम् ।	४.	व्यवहार	स्वयम् ॥	९.	वे स्वयम्

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! पाण्डवों के प्रति धृतराष्ट्र का व्यवहार बलराम और श्रीकृष्ण को बता दिया । जिसके लिये वे स्वयम् भेजे गये थे ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे वैयासिक्यामष्टादश साहस्र्यां पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे पूर्वार्धे एकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥४९॥

॥ दशमस्कन्धस्य पूर्वार्धं समाप्तम् ॥

श्रीकृष्णार्पणमस्तु



ईश प्रार्थना

केशव रखना मेरी लाली ।।केशव०।।
गिरधर माधव अलख निरंजन कमलापति वनमाली ।।केशव०।।

परमेश्वर नारायण श्री पति करुणामय गोपाली ।
विश्वम्भर जगपालक व्रजपति, पतित उधारननामी ।।केशव०।।

कृपासिन्धु गोपी मनरञ्जन, कंसनिकन्दन प्यारी ।
राधावर मुकुन्द मधुसूदन, अधर मुरलियाधारी ।।केशव०।।

चक्रपाणि दामोदर श्रीधर, गोकुल के रखवारी ।
मनमोहन घनश्याम जगत्पति, तीन लोक से न्यारी ।।केशव०।।

पारब्रह्म मङ्गल सुख दायक, माखन चाखन हारी ।
पाप क्षमा कर दो हम सबके, हे गोविन्द मुरारी ।।केशव०।।

हृदय तुम्हारा प्रेम सरोवर, राधा मञ्जु मराली ।
देख मनोहर दृश्य यह, नाचैं शिव दै तारी ।केशव०।।

ईश्वर प्रार्थना

ओ अनन्त तुम निखिल नियन्ता, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर हो ।
रघुनन्दन यदुनन्दन हो तुम, सम्पूर्ण देवि देवेश्वर हो ।।ओ०।।

निराकार साकार सगुण तुम, निर्गुण भी हो त्रिगुणेश्वर हो ।
अजअनादि अव्यक्त अगोचर, सर्वेश्वर परमेश्वर हो ।।ओ०।।

अखिलेश्वर तुम अविनाशी, अजरामर लोको जागर हो ।
निर्विकार निर्लिप्त निरञ्जन, भक्त हृदय नट नागर हो ।।ओ०।।

दीन बन्धु हो प्रेम सिन्धु हो, अक्षय करुणा सागर हो ।
अतुलित वैभव ऋद्धि-सिद्धि पति, सकल शक्ति के आगर हो ।।ओ०।।

जगाधार पंकिल तमसावृत, अन्त स्थल उज्ज्वल कर दो ।
विनय यही नीरस जीवन की, प्रभो प्रेम पूरण कर दो ।ओ०।।

दया सिन्धु कर उद्‌बोधन, विस्मृत प्राणी को सत्वर दो ।
भव के भय से मुक्त करो, सर्वज्ञ विभो मङ्गल कर दो ।।ओ०।।

ईश प्रार्थना

दीनबन्धु दीनों को तुमने, युग - युग दिया सहारा।
मेरे जैसे महादीन को, कैसे नाथ विसारा ।।दीन०।।

भव सागर में गिरे जनों को, नौका नाम तुम्हारा।
दीख न पड़ता मुझको भगवन्, उसका कोर किनारा ।।दीन०।।

सुख की मृग तृष्णा के पीछे, जीवन व्यर्थ गुजारा।
जीवन पथ पर भटक रहा हूँ, व्यर्थ प्रयत्न हमारा ।।दीन०।।

दया सिन्धु दीनों ने जब - जब, तुमको कभी पुकारा।
दौड़े आये शीघ्र वहाँ पर, किया दुःख से न्यारा ।।दीन०।।

दीनबन्धु कहलाते आये, यह है सुयश तुम्हारा।
करुणामय सुनो करुण प्रार्थना, पकड़ो हाथ हमारा ।।दीन०।।

ईश्वर नमस्कार

हे अनन्त प्रभु पाद पद्म में, शत - शत नमो नमः।
श्री अनन्त प्रतिमा अनन्त में, शत - शत नमो नमः ।।

तू अनन्त नभ तू अनन्त प्रभ, महाकाल विकराल तू अलभ।
चित्त अनन्त प्रज्ञा अनन्त में, शत - शत नमो नमः ।।

हे अनन्त रस दिगि दिगन्तरस, देव संसृति वाङ्मय वसन्तरस।
चन्द्र सुधा ज्योत्सना अनन्त में, शत - शत नमो नमः ।।

तू अनन्त श्रुति तू अनन्त धृति, प्रमति अनन्त हे अनन्त कलाकृत्ति।
संसृति लास्य विलास अमित गति, शत - शत नमो नमः ।।

